THE

SATKHANDĀGAMA

OF

PUSPADANTA AND BHŪTABALĪ

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VIRASENA

VOL X

Vednānikṣep–Vednānayavibhāsantā Vednānāmavidhāna Vednādravyavidhāna
Anuyogadwaras

Edited

with translation, notes and indexes

BY

Dr HIRALAL JAIN M. A., LL. B., D. Litt.

ASSISTED BY

Pandit Balchandra Siddhānta Shāstri

with the cooperation of

Dr A. N UPADHYE

M. A., D. LITT

Published by

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra
Jaina Sāhitya Uddhāraka Fund Kāryālaya.
AMRAVATI (Berar).

1954

Price rupees twelve only

विषय-सूची

प्राक् कथन

षट्खडागम भाग ९ को प्रकाशित हुए कोई पाच वर्ष व्यतीत हो गये। इस असाधारण विलम्बके पश्चात् यह दसवा भाग पाठकोंके हाथोंमें जा रहा है, इसका हमें खेद है। इस विलम्बका विशेष कारण है मुद्रणालयकी व्यवस्थामें गडबडी और विपरिवर्तन। बीच में तो हमें यही दिखाई देने लगा था कि इस भागका शेषाश सभवतः अन्यत्र मुद्रित कराना पडेगा। किन्तु फिर व्यवस्था सम्हल गई, और कार्य धीरे धीरे अग्रसर होता हुआ अब यह भाग पूर्ण हो पाया है। पाठक इसके लिये हमें क्षमा करें। उन्हें यह जानकर सतोष होगा कि मुद्रणालयकी उक्त अव्यवस्थाके कालमें भी हम प्रमादग्रस्त नहीं रहे। अगले दो भागोंका मुद्रण भिन्न भिन्न मुद्रणालयोंमें चलता रहा है जिसके फल स्वरूप अब कुछ महिनोंके भीतर ही वे भाग भी पाठकोंके हाथोंमें पहुच सकेंगे।

इस कालमें हमारा वियोग प० देवकीनन्दनजी सिद्धान्तशास्त्रीसे हो गया जिसका हमें भारी दुख है। पडितजी इस प्रकाशनके प्रारभसे ही सम्पादकमण्डलमें रहे और यथासमय हमें उनसे पर्याप्त साहाय्य मिलता रहा। इस कारण उनका वियोग हमें बहुत खटका है। किन्तु कालकी गतिसे किसीका वश नहीं। सयोग-वियोगका क्रम अनिवार्य है। इसी विचारसे सतोष धारण करना पडता है।

इसी कालान्तरमें ताम्रपट लिखित प्रतिका भी प्रकाशन हो गया। जबसे यह प्रति हमारे हस्तगत हुई तबसे हमने अपने पाठके सशोधनमें अमरावती, कारजा और आराकी हस्तलिखित प्रतियोंके साथ साथ इस मुद्रित प्रतिका भी उपयोग किया है। किन्तु हम अनेक स्थलोंपर इस सस्करणके पाठको भी स्वीकृत नहीं कर सके, जैसा कि पाठक पाद-टिप्पणमें दिये गये पाठान्तरोंसे जान सकेंगे। इस उपयोगके लिये हम उक्त प्रतियोंके अधिकारियों एव ताम्रपट प्रतिके सम्पादकों व प्रकाशकोंके अनुगृहीत हैं।

प्रस्तुत भागके तैयार करनेमें पृष्ठ २९६ तक पाठ व अनुवाद सशोधनमें हमें प फूलचन्द्रजी शास्त्रीका सहयोग मिला है जिसके लिये हम उनके आभारी हैं। तथा प बालचन्द्र जी शास्त्रीको प्रूफपाठन, पाठमिलान एव सूत्रपाठादि सकलन कार्यमें उनके चिरजीव राजकुमार और नरेन्द्रकुमारसे भी सहायता मिलती रही है। इस कार्यके लिये सम्पादक-मण्डलकी ओर से वे आशीर्वादके पात्र हैं। श्री प रतनचन्दजी मुख्तारने प्रस्तुत पुस्तकके मुद्रित फार्मोंपरसे स्वाध्याय कर अनेक सशोधन प्रस्तुत किये हैं जिनको हम साभार शुद्धि-पत्रमें सम्मिलित कर रहे हैं। शेष व्यवस्था पूर्ववत् स्थिर है।

श्रद्धेय पडित नाथूरामजी प्रेमीका इस प्रकाशन कार्यमें आदिसे ही पूर्ण सहयोग रहा है। इस भागके प्रकाशनमें जो भारी विलम्ब हुआ उससे इस प्रकाशन कार्यका कोष प्रायः समाप्त हो गया है। इससे जो आर्थिक सकट उत्पन्न हुआ उसके निवारणका भार प्रेमीजीने सहज ही स्वीकार कर लिया है। इसके लिये उनका जितना उपकार माना जाय थोडा है।

विषय-परिचय

अग्रायणीय पूर्वकी पंचम वस्तु च्यवनलब्धिके अन्तर्गत २० प्राभृतोंमें चतुर्थ प्राभृतका नाम 'कर्मप्रकृति' है। इसमें कृति व वेदना आदि २४ अनुयोगद्वार हैं। इनमेंसे कृति व वेदना नामक २ अनुयोगद्वार षट्खण्डागमके 'वेदना' नामसे प्रसिद्ध इस चतुर्थ खण्डमें वर्णित हैं। उनमें कृति अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा पूर्व प्रकाशित पुस्तक ९ में विस्तारपूर्वक की जा चुकी है। वेदना महाधिकारके अन्तर्गत निम्न १६ अनुयोगद्वार हैं— (१) वेदनानिक्षेप (२) वेदनानयविभाषणता (३) वेदनानामविधान (४) वेदनाद्रव्यविधान (५) वेदनाक्षेत्रविधान (६) वेदनाकालविधान (७) वेदनाभावविधान (८) वेदनाप्रत्ययविधान (९) वेदनास्वामित्वविधान (१०) वेदना-वेदनाविधान (११) वेदनागतिविधान (१२) वेदना-अनन्तरविधान (१३) वेदनासंनिकर्षविधान (१४) वेदनापरिमाणविधान (१५) वेदनाभागाभागविधान और (१६) वेदनाअल्पबहुत्व। प्रस्तुत पुस्तकमें इनमेंसे आदिके चार अनुयोगद्वार प्रगट किये जा रहे हैं।

१ वेदनानिक्षेप

इस अनुयोगद्वारमें वेदनाको नामवेदना, स्थापनावेदना, द्रव्यवेदना और भाववेदना; इन चार भेदोंमें निक्षिप्त किया गया है। बाह्य अर्थका अवलम्बन न करके अपने आपमें प्रवृत्त 'वेदना' शब्दको नामवेदना कहा गया है। 'वह वेदना यह है' इस प्रकार अभेदपूर्वक वेदना स्वरूपसे स्थापित पदार्थ स्थापनावेदना कहा जाता है। वह सद्भावस्थापना और असद्भावस्थापनाके भेदसे दो प्रकार है। वेदनाका अनुसरण करनेवाले पदार्थमें वेदनाके आरोपको सद्भावस्थापना और उसका अनुसरण न करनेवाले पदार्थमें उक्त वेदनाके आरोपको असद्भावस्थापना बतलाया है।

द्रव्यवेदनाके आगमद्रव्यवेदना और नोआगमद्रव्यवेदना ये दो भेद किये गये हैं। इनमेंसे नोआगमद्रव्यवेदनाके ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्त इन तीन भेदोंके अन्तर्गत ज्ञायकशरीरके भी भावी वर्तमान और समुज्झित (त्यक्त) ये तीन भेद बतलाये हैं। तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यवेदनाके कर्म व नोकर्म रूप दो भेदोंमेंसे कर्मवेदना ज्ञानावरणादिके भेदसे आठ प्रकारकी और नोकर्मवेदना सचित्त, अचित्त एवं मिश्रके भेदसे तीन प्रकारकी बतलाई गई है। इनमें सिद्ध जीवद्रव्यको सचित्त द्रव्यवेदना, पुद्गल, काल, आकाश, धर्म व अधर्म द्रव्योंको अचित्त द्रव्यवेदना तथा संसारी जीवद्रव्यको मिश्रवेदना कहा गया है।

भाववेदना आगम और नोआगम रूप दो भेदोंमें विभक्त की गई है। इनमें वेदनाअनुयोगद्वारके जानकार उपयोग युक्त जीवको आगमद्रव्यवेदना निर्दिष्ट करके नोआगमभाववेदनाके जीवभाववेदना और अजीवभाववेदना ये दो भेद बतलाये हैं। उनमें जीवभाववेदना औदयिक आदिके भेदसे पांच प्रकार तथा अजीवभाववेदना औदयिक व पारिणामिकके भेदसे दो प्रकारकी निर्दिष्ट की गई है।

२ वेदनानयविभाषणता

वेदनानिक्षेप अनुयोगद्वारमें बतलाये गये वेदनाके उन अनेक अर्थोंमेंसे यहां कौनसा अर्थ प्रकृत है, यह प्रगट करनेके लिये प्रस्तुत अनुयोगद्वारकी आवश्यकता हुई। तदनुसार यहां यह बतलाया गया है कि नैगम, संग्रह और व्यवहार, इन तीन द्रव्यार्थिक नयोंके अवलम्बनसे वेदना-निक्षेपमें निर्दिष्ट सभी प्रकारकी वेदनायें अपेक्षित हैं। ऋजुसूत्र नय एक स्थापनावेदनाको स्वीकार नहीं करता, शेष सब वेदनाओंको वह भी स्वीकार करता है। स्थापनावेदनाको स्वीकार न करनेका कारण यह है कि स्थापनानिक्षेपमें पुरुषसंकल्पके वशसे पदार्थको निज स्वरूपसे ग्रहण न करके अन्य स्वरूपसे ग्रहण किया जाता है। यह ऋजुसूत्र नयकी दृष्टिमें सम्भव नहीं है, क्योंकि, एक समयवर्ती वर्तमान पर्यायको विषय करनेवाले इस नयके अनुसार पदार्थका अन्य स्वरूपसे परिणमन हो नहीं सकता। शब्दनय नामवेदना और भाववेदनाको ही ग्रहण करता है, स्थापनावेदना और द्रव्यवेदनाको वह ग्रहण नहीं करता। यहां द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा बन्ध, उदय व सत्त्व स्वरूप नोआगमकर्मद्रव्य-वेदनाको, ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा उदयगत कर्मवेदनाको, तथा शब्दनयकी अपेक्षा कर्मके उदय व बन्धसे जनित भाववेदनाको प्रकृत बतलाया गया है।

३ वेदनानामविधान

बन्ध, उदय व सत्त्व स्वरूपसे जीवमें स्थित कर्मरूप पौद्गलिक स्कन्धोंमें कहां कहां किस किस नयका कैसा प्रयोग होता है, इस प्रकार नयाश्रित प्रयोगप्ररूपणाके लिये प्रस्तुत अनुयोगद्वारकी आवश्यकता बतलाई गई है। तदनुसार नैगम और व्यवहार नयके आश्रयसे नोआगमद्रव्यकर्मवेदना ज्ञानावरणीय आदिके भेदसे आठ प्रकारकी कही गई है, कारण यह कि यथाक्रमसे उनके अज्ञान, अदर्शन, सुख-दुखवेदन, मिथ्यात्व व कषाय, भवधारण, शरीररचना, गोत्र एवं वीर्यादिविषयक विघ्न स्वरूप आठ प्रकारके कार्य देखे जाते हैं। यह हुई वेदनाविधानकी प्ररूपणा। नामविधानकी प्ररूपणामें ज्ञानावरणीय आदि रूप कर्मद्रव्यको ही 'वेदना' कहा गया है। संग्रहनयकी अपेक्षा सामान्यसे आठों कर्मोंको एक वेदना रूपसे ग्रहण किया गया है, क्योंकि, एक ही वेदना शब्दसे समस्त वेदना-विशेषोंकी अविनाभाविनी एक वेदना जातिकी उपलब्धि होती है। ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा ज्ञाना-वरणीयवेदना आदिका निषेध कर एक मात्र वेदनीय कर्मको ही वेदना स्वीकार किया गया है, क्योंकि, लोकमें सुख-दुखके विषयमें ही वेदना शब्दका व्यवहार देखा जाता है। शब्दनयकी अपेक्षा वेदनीय कर्मद्रव्यके उदयसे उत्पन्न सुख-दुखका अथवा आठ कर्मोंके उदयसे उत्पन्न जीवपरिणामको ही वेदना कहा गया है, क्योंकि, शब्दनयका विषय द्रव्य सम्भव नहीं है।

४ वेदनाद्रव्यविधान

वेदनारूप द्रव्यके सम्बन्धमें उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट एवं जघन्य आदि पदोंकी प्ररूपणाका नाम वेदनाद्रव्यविधान है। इसमें पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये तीन अनुयोगद्वार ज्ञातव्य बतलाये गये हैं।

(१) पदमीमांसामें ज्ञानावरणीय आदि द्रव्यवेदनाके विषयमें उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य,

अजघन्य सादि अनादि ध्रुव, अध्रुव ओज युग्म[1] ओम विशिष्ट और नोमनोविशिष्ट इन १३ पदोंका यथासम्भव स्वीकार किया गया है। इसके अतिरिक्त सामान्य चूंकि विशेषका अविनाभावी है अत एव उक्त १३ पदोंमेंसे एक एक पदको मुख्य करके प्रत्येक पदके विषयमें भी शेष १२ पदोंकी सम्भावनाका विचार किया गया है। इस प्रकार ज्ञानावरणादि प्रत्येक कर्मके सम्बन्धमें १६९ { १३ + (१३ × १२) = १६९ } प्रश्न करके उक्त पदोंके विचारका निर्देश कराया गया है। उदाहरणके रूपमें ज्ञानावरणको ही ले लें। इसके सम्बन्धमें इस प्रकार विचार किया गया है—

ज्ञानावरणीयवेदना द्रव्यसे क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादि है, क्या अनादि है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या ओज है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है, और क्या नोमनोविशिष्ट है; इस प्रकार १३ प्रश्न करके उनके ऊपर क्रमशः विचार करते हुए कहा गया है कि (१) उक्त ज्ञानावरणीयवेदना द्रव्यसे कथंचित् उत्कृष्ट है, क्योंकि, गुणितकर्मांशिक सातवीं पृथिवीस्थ नारकी जीवके उस भवके अन्तिम समयमें ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट वेदना पायी जाती है। (२) कथंचित् वह अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, गुणितकर्मांशिकको छोड़कर शेष सभी जीवोंके ज्ञानावरणीयका द्रव्य अनुत्कृष्ट पाया जाता है। (३) कथंचित् वह जघन्य है, क्योंकि, क्षपितकर्मांशिक क्षीणकषाय गुणस्थानवर्ती जीवके इस गुणस्थानके अन्तिम समयमें ज्ञानावरणीयका द्रव्य जघन्य पाया जाता है। (४) कथंचित् वह अजघन्य है, क्योंकि, उक्त क्षपितकर्मांशिकको छोड़कर अन्य सब प्राणियोंमें ज्ञानावरणीयका द्रव्य अजघन्य देखा जाता है। (५) कथंचित् वह सादि है, क्योंकि, उत्कृष्ट आदि पदोंका परिवर्तन होता रहता है, वे शाश्वतिक नहीं हैं। (६) कथंचित् वह अनादि है, क्योंकि, जीव व कर्मका सम्बन्धसामान्य अनादि है, उसके सादिताकी सम्भावना नहीं है। (७) कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि, अभव्य तथा अभव्य समान भव्य जीवोंमें भी सामान्य स्वरूपसे ज्ञानावरणका विनाश सम्भव नहीं है। (८) कथंचित् वह अध्रुव है, क्योंकि, केवलज्ञानी जीवोंमें उसका विनाश देखा जाता है। इसके अतिरिक्त उक्त उत्कृष्ट आदि पदोंका शाश्वतिक अवस्थान सम्भव न होनेसे उसमें परिवर्तन भी होता ही रहता है। (९) कथंचित् वह युग्म है, क्योंकि, प्रदेशोंके रूपमें ज्ञानावरणीयका द्रव्य सम संख्यात्मक पाया जाता है। (१०) कथंचित् वह ओज है, क्योंकि, उसका द्रव्य कदाचित् विषम संख्याके रूपमें भी पाया जाता

---

१ ओजका अर्थ विषम संख्या है। इसके दो भेद हैं— कलिओज और तेजोज। जिस राशिमें ४ का भाग देनेपर ३ अंक शेष रहते हैं वह तेजोज (जैसे १५ संख्या) तथा जिसमें ४ का भाग देनेपर १ अंक शेष रहता है वह कलिओज (जैसे १३ संख्या) कही जाती है।

युग्मका अर्थ सम संख्या है। इसके दो भेद हैं— कृतयुग्म और बादरयुग्म (बादर यह शब्द सम्भवतः बिगड़ा हुआ रूप प्रतीत होता है। भगवतीसूत्र आदि श्वेताम्बर ग्रंथोंमें द्वापर शब्द पाया जाता है)। जिस राशिमें ४ का भाग देनेपर कुछ शेष नहीं रहता वह कृतयुग्म राशि कही जाती है (जैसे १६ संख्या)। जिस राशिमें ४ का भाग देनेपर २ अंक शेष रहते हैं वह बादरयुग्म कही जाती है (जैसे १० संख्या)।

है। (११) वह कथंचित् ओम है, क्योंकि, उसके प्रदेशोंमें कदाचित् हानि देखी जाती है। (१२) कथंचित् वह विशिष्ट है, क्योंकि, कदाचित् उसके प्रदेशोंमें व्ययकी अपेक्षा आयकी अधिकता देखी जाती है। (१३) कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, प्रत्येक पदके अवयवकी विवक्षामें वृद्धि और हानि दोनोंकी ही सम्भावना नहीं है।

इसी प्रकारसे उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है इत्यादि स्वरूपसे एक एक पदको विवक्षित करके उसके विषयमें भी शेष १२ पदोंकी सम्भावनाका विचार किया गया है (देखिये पृ ३० पर दी गई इन पदोंकी तालिका)।

(२) स्वामित्व अनुयोगद्वारमें ज्ञानावरणीय आदि कर्मोंके उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट आदि पद किन किन जीवोंमें किस किस प्रकारसे सम्भव हैं, इस प्रकारसे उनके स्वामियोंका विस्तारपूर्वक विचार किया गया है। उदाहरणार्थ ज्ञानावरणीयको लेकर उसकी उत्कृष्ट वेदनाके स्वामीका विचार करते हुए कहा गया है कि जो जीव बादर पृथिवीकायिक जीवोंमें साधिक २००० सागरोपमोंसे हीन कर्मस्थिति (७० कोडाकोडि सागरोपम) प्रमाण रहा है, उनमें परिभ्रमण करता हुआ जो पर्याप्तोंमें बहुत वार और अपर्याप्तोंमें थोडे वार उत्पन्न होता है (भवावास), पर्याप्तोंमें उत्पन्न होता हुआ दीर्घ आयुवालोंमें तथा अपर्याप्तोंमें उत्पन्न होता हुआ अल्प आयुवालोंमें ही जो उत्पन्न होता है (अद्धावास), तथा दीर्घ आयुवालोंमें उत्पन्न हो करके जो सर्वलघु कालमें पर्याप्तियोंको पूर्ण करता है, जब जब वह आयुको बांधता है तत्प्रायोग्य जघन्य योगके द्वारा ही बांधता है (आयुआवास), जो उपरिम स्थितियोंके निषेकके उत्कृष्ट पदको तथा अधस्तन स्थितियोंके निषेकके जघन्य पदको करता है (अपकर्षण-उत्कर्षणआवास अथवा प्रदेशविन्यासावास), बहुत बहुत वार जो उत्कृष्ट योगस्थानोंको प्राप्त होता है (योगावास), तथा बहुत बहुत वार जो मन्द संक्लेश परिणामोंको प्राप्त होता है (संक्लेशावास)। इस प्रकार उक्त जीवोंमें परिभ्रमण करके पश्चात् जो बादर त्रस पर्याप्त जीवोंमें उत्पन्न हुआ है, उनमें परिभ्रमण कराते हुए उसके विषयमें पहिलेके ही समान यहा भी भवावास, अद्धावास, आयुआवास, अपकर्षण-उत्कर्षणआवास, योगावास और संक्लेशावास, इन आवासोंकी प्ररूपणा की गई है। उक्त रीतिसे परिभ्रमण करता हुआ जो अन्तिम भवग्रहणमें सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न हुआ है, उनमें उत्पन्न हो करके प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ होते हुए जिसने उत्कृष्ट योगसे आहारको ग्रहण किया है, उत्कृष्ट वृद्धिसे जो वृद्धिंगत हुआ है, सर्वलघु अन्तर्मुहूर्त कालमें जो सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ है, वहा ३३ सागरोपम काल तक जो रहा है, बहुत बहुत वार जो उत्कृष्ट योगस्थानोंको तथा बहुत बहुत वार बहुत संक्लेश परिणामोंको जो प्राप्त हुआ है, उक्त प्रकारसे परिभ्रमण करते हुए जीवितके थोडेसे अवशिष्ट रहनेपर जो योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल रहा है, अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें जो आवलीके असंख्यातवें भाग रहा है, द्विचरम व त्रिचरम समयमें उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ है, तथा चरम व द्विचरम समयमें जो उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ है, ऐसे उपर्युक्त जीवके नारक भवके अन्तिम समयमें स्थित होनेपर ज्ञानावरणीयकी वेदना द्रव्यसे उत्कृष्ट **होती है (यही गुणितकर्मांशिक जीवका लक्षण है)।**

उक्त जीवके उतने समयमें कितने द्रव्यका संचय होता है तथा वह संचय भी उत्तरोत्तर किस क्रमसे वृद्धिगत होता है, इत्यादि अनेक विषयोंका वर्णन श्री वीरसेन स्वामीने गणित प्रक्रियाके अवलम्बनसे अपनी धवला टीकाके अन्तर्गत बहुत विस्तारसे किया है। आगे आयुकर्मको छोड़कर शेष ६ कर्मोंकी उत्कृष्ट वेदनाके स्वामित्वकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके ही समान बतला करके फिर आयु कर्मकी उत्कृष्ट वेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा करते हुए बतलाया गया है कि पूर्वकोटि प्रमाण आयुवाला जो जीव जलचर जीवोंमें पूर्वकोटि मात्र आयुको दीर्घ आयुबन्धककालमें, तत्प्रायोग्य संक्लेश और तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट योगके द्वारा बांधता है, योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल रहा है, अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलीके असंख्यातवें भाग रहा है, तत्पश्चात् क्रमसे मृत्युको प्राप्त होकर पूर्वकोटि आयुवाले जलचर जीवोंमें उत्पन्न हुआ है, वहांपर सबसे लघु अन्तर्मुहूर्तमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ है, दीर्घ आयुबन्धक कालमें तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट योगके द्वारा पूर्वकोटि प्रमाण जलचर-आयुको दुबारा बांधता है, योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल रहा है, अन्तिम गुणहानिस्थानान्तरमें आवलीके असंख्यातवें भाग रहा है तथा जो बहुत बहुत बार साता वेदनीयके बन्ध योग्य कालसे सहित हुआ है, ऐसे जीवके अनन्तर समयमें जब परभविक आयुके बन्धकी परिसमाप्ति होती है उसी समय उसके आयु कर्मकी वेदना द्रव्यसे उत्कृष्ट होती है। सभी कर्मोंकी उत्कृष्ट वेदनाका स्वामित्व भी अनुकूल वेदना कही गई है।

ज्ञानावरणीयकी जघन्य वेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा करते हुए कहा गया है कि जो जीव पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन कर्मस्थिति प्रमाण सूक्ष्म निगोद जीवोंमें रहा है उनमें परिभ्रमण करता हुआ जो अपर्याप्तोंमें बहुत बार और पर्याप्तोंमें थोड़े ही बार उत्पन्न हुआ है, जिसका अपर्याप्तकाल बहुत और पर्याप्तकाल थोड़ा रहा है जब जब आयुको बांधता है तब तब तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट योगसे बांधता है जो उपरिम स्थितियोंके निषेकके जघन्य पदको और अधस्तन स्थितियोंके निषेकके उत्कृष्ट पदको करता है, जो बहुत बहुत बार जघन्य योगस्थानको प्राप्त होता है, बहुत बहुत बार मन्द संक्लेश रूप परिणामोंसे परिणमता है इस प्रकारसे निगोद जीवोंमें परिभ्रमण करके पश्चात् जो बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंमें उत्पन्न होकर वहां सर्वलघु अन्तर्मुहूर्त कालमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ है, तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें मरणको प्राप्त होकर जो पूर्वकोटि आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ है, जिसने वहांपर गर्भसे निकलनेके पश्चात् आठ वर्षका होकर संयमको धारण किया है, कुछ कम पूर्वकोटि काल तक संयमका परिपालन करके जो जीवितके थोड़ेसे शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है जो मिथ्यात्व सम्बन्धी सबसे स्तोक असंयमकालमें रहा है, तत्पश्चात् मिथ्यात्वके साथ मरणको प्राप्त होकर जो दस हजार वर्षकी आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ है वहांपर जो सबसे छोटे अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ है, पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें जो सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ है, उक्त देवोंमें रहते हुए जो कुछ कम दस हजार वर्ष तक सम्यक्त्वका परिपालन कर जीवितके थोड़ेसे शेष रहनेपर पुनः मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है, मिथ्यात्वके साथ मरकर जो फिरसे बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंमें उत्पन्न हुआ है, वहांपर जो सबसे छोटे अन्तर्मुहूर्त कालमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ है, पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें मृत्युको प्राप्त होकर जो सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंमें उत्पन्न हुआ है, पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र

स्थितिकाण्डकघातोंके द्वारा पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र कालमें कर्मको हतसमुत्पत्तिक करके जो फिरसे भी बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंमें उत्पन्न हुआ है, इस प्रकार नाना भवग्रहणोंमें आठ संयमकाण्डकोंको पालकर चार बार कषायोंको उपशमा कर पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र संयमासंयमकाण्डकों और इतने ही सम्यक्त्वकाण्डकोंका परिपालन करके उपर्युक्त प्रकारसे परिभ्रमण करता हुआ जो फिरसे भी पूर्वकोटि आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ है, वहां सर्वलघु कालमें योनि-निष्क्रमण रूप जन्मसे उत्पन्न होकर जो आठ वर्षका हुआ है, पश्चात् संयमको प्राप्त होकर और कुछ कम पूर्वकोटि काल तक उसका परिपालन करके जो जीवितके थोड़ेसे शेष रहनेपर दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीयका क्षपणामें उद्यत हुआ है, इस प्रकारसे जो जीव छद्मस्थ अवस्थाके अन्तिम समयको प्राप्त हुआ है, उसके उक्त छद्मस्थ अवस्थाके अन्तिम समयमें ज्ञानावरणीयकी वेदना द्रव्यसे जघन्य होती है (यही क्षपितकर्मांशिकका लक्षण है)।

३ अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारमें ज्ञानावरणादि आठ कर्मोंकी जघन्य, उत्कृष्ट एवं जघन्य-उत्कृष्ट वेदनाओंका अल्पबहुत्व बतलाया गया है। इस प्रकार पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व इन ३ अनुयोगद्वारोंके पूर्ण हो जानेपर द्रव्यविधानकी चूलिकाका प्रारम्भ होता है।

इस चूलिकामें योगके अल्पबहुत्व और योगके निमित्तसे आनेवाले कर्मप्रदेशोंके भी अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करके पश्चात् अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणा, वर्गणाप्ररूपणा, स्पर्धकप्ररूपणा, अन्तरप्ररूपणा, स्थानप्ररूपणा, अनन्तरोपनिधा, परम्परोपनिधा, समयप्ररूपणा, वृद्धिप्ररूपणा और अल्पबहुत्वप्ररूपणा इन १० अनुयोगद्वारोंके द्वारा योगस्थानोंकी विस्तृत प्ररूपणा की गई है।

विषय-सूची

शुद्धि-पत्र

[पुस्तक ९]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८१	१२	पचास	पचवन
१९१	२०	पु ५,	पु १,
१९९	११	चतुरिन्द्रिय रूप	चतुरिन्द्रिय व पंचेन्द्रिय रूप
२७८	२४	प्रत्येकशरीर पर्याप्त	प्रत्येक शरीर वे पर्याप्त
३९३	१९	उत्कर्षसे दो	उत्कर्षसे साधिक दो
३२४	२२	ग्रहण	ग्रहण
३३७	२७	हुए देव व नारकीके	हुए मनुष्य व तिर्यंचके
३३९	२०	संघातन	परिशातन
३५३	२२	ही संघातन	ही असम्य संघातन
३७४	२९	जीवोंमें तीनों पदोंकी	जीवोंके पदोंकी
३८७	२१	एक कम	एक समय कम
३९०	१७	समय सात	समय कम सात
,,	३१	संघातन-परिशातन	संघातन व परिशातन
,,	३३		,,
३९१	२५	निगोद व बादर जीवोंमें	निगोद जीवोंमें
३९२	१४	संघातन कृतिका	संघातन-परिशातन कृतिका
,,	२५	संघातन-परिशातन	संघातन व परिशातन
४५१	२५	आनकर	आनकार
,,	,,	भावकरणकृति	भावकृति

[पुस्तक १०]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७	२	दम्पाहुवणा	-दप्पाहुवणा
१०	६	णामप	णामेय
१२	२	दसणावरणीयवेणा	दंसणावरणीयवेयणा
३३	११	योगस्थान	योग
३४	२५	है उन अर्थोमें	हैं उनका अर्थोमें
३५	७	खविद कम्मंसिय	खविदकम्मंसिय
,,	१८	क्षपितकर्मांशिकके क्षपित गुणित व घोलमान पर्याप्त भवोंकी अपेक्षा बहुत हैं।	क्षपितकर्मांशिक क्षपितघोलमान और गुणितघोलमान जीवोंके पर्याप्तभवोंकी अपेक्षा गुणितकर्मांशिकके पर्याप्तभव बहुत हैं।
,,	२९	क्षपितकर्मांशिकके क्षपित गुणित व घोलमान अपर्याप्त भवोंसे	क्षपितकर्मांशिक क्षपितघोलमान और गुणितघोलमान जीवोंके अपर्याप्तभवोंसे
३७	१	॥ ९ ॥ ?	॥ ९ ॥
,,	११	क्षपितकर्मांशिकके क्षपित	क्षपितकर्मांशिक, क्षपितघोलमान और

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
		गुणित और घोलमान पर्याप्त कालोंसे दीर्घ अपर्याप्तकाल थोड़े हैं।	गुणितघोलमान जीवोंके पर्याप्तकालोंसे दीर्घ हैं। अपर्याप्तकाल थोड़े हैं।
३७	१६	क्षपितकर्मांशिकके क्षपित-गुणित और घोलमान	क्षपितकर्मांशिक, क्षपितघोलमान और गुणितघोलमानके
,,	१८	हुआ भी दीर्घ	हुआ दीर्घ
३८	१५	क्षपितकर्मांशिकके क्षपित-गुणित और घोलमान	क्षपितकर्मांशिक, क्षपितघोलमान और गुणितघोलमान
३९	८	सव्वभागहारण	सव्वभागहाराण
४०	२	नद्धदव्वस्स	लद्धदव्वस्स
,,	९	होहि	होदि
४०	१८	अक सदृष्टिकी	अकसदृष्टिकी
४१	५	बंधेसमयादो	बंधसमयादो
५२	१९	स्थितिका	स्थितिके
,,	२०	असंख्यातवें भागमें	असंख्यात बहुभागका
५९	३	-णुववत्तीदो पुधभूद-	-णुववत्तीदो जोगादो पुधभूद-
५९	४	जोगो चेव जवो तस्स मज्झं जवमज्झं	जोगो चेव जवो [जोगजवो] तस्स मज्झं [जोग-] जवमज्झं
,,	१५	यवमध्य	[योग] यवमध्य
७२	८	अवहिरि देसु	अवहिरिदेसु
८८	१४	$\frac{७११}{४}$, $\frac{१४२२}{७}$	$\frac{७११}{४}$, छि नि $\frac{१४२२}{७}$
११०	४	एगससयसत्तिट्ठिदिविसेसादो	एगसमयसत्तिट्ठिदिसेसादो[३]
,,	१०	णिक्खेवाणभावादो	णिक्खेवाणमभावादो
,,	२१	गुणित और घोलमान	गुणितघोलमान
,,	३०	× × ×	३ प्रतिषु ' सत्तिट्ठिदिविसेसादो ' इति पाठ ।
११२	१२	४०५०	४०६०'
,,	३०	× × ×	प्रतिषु ४०५० इति पाठ ।
१२०	११	दंसणावरणीय-अतराइयाण	दंसणावरणीय-[वेयणीय-] अतराइयाण
,,	२६	दर्शणावरणीय व	दर्शणावरणीय, [वेदनीय] व
१२५	११	णिसेगे	णिसेगो
१३१	संदृष्टिमें	१९४	१८४
१३४	७	अवणिद	अवणिदे
१३४	२१	$\frac{७ + १ \times ७}{२}$	$\left(\frac{७ + १}{२}\right) \times ७$
१७१	१	दियड्ढ	दिवड्ढ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४२	१६	७८८	१७८८
१४३	६	कस्सवणाय	कस्सवणाए
१४८	४	वग्गमूलगुणे	वग्गमूल [ढ] गुणे
,,	१०	वर्गमूलमे गुणित	वर्गमूलका [हि] गुणित
१५२	१०	छेदण	छेदूण
,,	१५	= ७२।	= २।
१५३	११	४/४ १६/१६	४ १६ / ४ १६
१५७	२१	११७	११९७
१७०	२१	+ २/३	+ २१/३
१८५	१८	√४ = २।	√४ = २।
२१६	२९	अपुरुक्त	अपुनरुक्त
२३३	९	७२	७२२
२८७	५	वे	वि
,,	६	ओमण	ओमेण
२९३	१०	संखेज्जभागहीण	असंखेज्जभागहीण
	२८	संख्यातवें	असंख्यातवें
,,	३०	× × ×	१ प्रतिषु 'संखेज्ज' इति पाठः ।
२९९	५	चउरसो	चउरसा
३०४	२९	असंख्यातगुणा मात्र	असंख्यातगुणे उत्कृष्ट मात्र
३०५	१०	सामी	सामी
३११	९	णिप्पादियं	णिप्पादियं
३१४	१७	११४१	११४१
३२५	२	परिणामेहि	परिणामेहि
३३३	१२	सुसो	सुसो
३३४	१५	अपवर्तित कम करनेपर	अपवर्तित करनेपर
,,	२९	भाग	भाग
३७०	२	एदासि	एदासिं
३८७	६	सेसाणं	सेसाणं
,,	७	तुल्लअवण्णयणादो	तुल्लअवण्णयणादो
४०३	९	समाण	समाणाण
४०७	८	उव्विल्लिमपज्जत्तयस्स उक्कस्सुग्र	णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुग्र
,,	९	णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुग्र	उव्विल्लिमपज्जत्तयस्स उक्कस्सुग्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४०७	२३	लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट	निर्वृत्त्यपर्याप्तकके जघन्य
,,	,,	निर्वृत्त्यपर्याप्तकके जघन्य	लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट
४२६	४	णिव्वत्तिअपज्जत्तयाण	णिव्वत्तिपज्जत्तयाणं[२]
,,	१६	निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंके	निर्वृत्तिपर्याप्तकोंके
,,	२५	× × ×	२ अ आ काप्रतिषु ' णिव्वत्तिअपज्जत्तयाण ', ताप्रतौ ' णिव्वत्तिअपज्जत्तियाण ' इति पाठ ।
४२८	२०	वह एकान्तानुवृद्धि-	वह तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें व एकान्तानुवृद्धि-
,,	२१	तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें	× × ×
४२९	६	-णिव्वत्तिअपज्जत्ताणं	-णिव्वत्तिपज्जत्ताण[१]
,,	२१	निर्वृत्त्यपर्याप्तोंके	निर्वृत्तिपर्याप्तोंके
,,	३२	× × ×	१ प्रतिषु ' णिव्वत्तिअपज्जत्ताण ' इति पाठ ।
४३१	४	णिव्वत्तिअपज्जत्ताण	णिव्वत्तिपज्जत्ताण
,,	१८	निर्वृत्त्यपर्याप्तोंके	निर्वृत्तिपर्याप्तोंके
४४९	४	केत्तियमेत्तेण ? चरिमवग्गणाए	केत्तियमेत्तेण ? चरिमवग्गणमेत्तेण । [अचरिमासु वग्गणासु जीवपदेसा] विसेसाहिया । केत्तियं मेत्तेण ? चरिमवग्गणाए
,,	१८	है ? चरम वर्गणासे	है ? चरम वर्गणा मात्रसे वे विशेष अधिक हैं । उनसे अचरम वर्गणाओंमें जीवप्रदेश विशेष अधिक हैं । कितने मात्र विशेषसे वे अधिक हैं ? चरम वर्गणासे
,,	३१	× × ×	१ अ आ-काप्रतिषु त्रुटितोऽयमेतावान् पाठ ।
४५२	६	तत्स्पर्द्धकम्	तत्स्पर्द्धकम्[२]
४७०	१०	अणिज्जमाणे	आणिज्जमाणे
४७९	१५	प्रकार प्ररूपणा	प्रकार प्रमाणप्ररूपणा
४८५	४	॥ २५ ॥	॥ २७ ॥
४८८	१६	$\frac{१५+१६}{२}$	$\frac{१५+१}{२}$
४९४	२	जहण्णजोगट्ठाणफद्दएहि ऊण-	जहण्णजोगट्ठाणफद्दएहि । [अजहण्णजोगट्ठाणफद्दयाणि विसेसाहियाणि जहण्णजोगफद्दएहि] ऊण-
,,	१७	स्पर्धकोंसे हीन	स्पर्धकोंसे विशेष अधिक हैं । [उनसे अजघन्य योगस्थानोंके स्पर्धक जघन्य योगस्थानके स्पर्धकोंसे] हीन

सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

तस्स चउत्थे वेयणाखंडे

वेदणाणियोगद्दारं

कम्मट्ठवियवेयण-उवहिसमुत्तिण्णए जिणे णमिउं ।
वेयणमहाहियारं विविहहियारं परूवेमो ॥ १ ॥

वेदणा त्ति । तत्थ इमाणि वेयणाए सोलस अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति— वेदणणिक्खेवे वेदणणयविभासणदाए वेदणणामविहाणे वेदणदव्वविहाणे वेदणखेत्तविहाणे वेदणकालविहाणे वेदणभावविहाणे वेदणपच्चयविहाणे वेदणसामित्तविहाणे वेदण-वेदणविहाणे

आठ कर्मोंके निमित्तसे उत्पन्न हुई वेदनारूपी समुद्रसे पार हुए जिनोंको नमस्कार करके जो विविध अधिकारोंमें विभक्त है ऐसे वेदना नामक महाधिकारकी हम प्ररूपणा करते हैं ॥ १ ॥

अब वेदना अधिकारका प्रकरण है । उसमें वेदनाके ये सोलह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं— वेदननिक्षेप, वेदन-नयविभाषणता, वेदननामविधान, वेदनद्रव्यविधान, वेदनक्षेत्रविधान, वेदनकालविधान, वेदनभावविधान, वेदनप्रत्ययविधान, वेदनस्वामित्वविधान, वेदन-वेदन-

वेदणगइविहाणे वेदणअणंतरविहाणे वेदणसण्णियासविहाणे वेयणपरिमाणविहाणे वेयणभागाभागविहाणे वेयणअप्पाबहुगे त्ति ॥ १ ॥

पुव्वुदिट्ठत्थाहियारसंभालणट्ठं 'वेदणा त्ति' परूविदं। एदाणि सोलस णामाणि पढमाविहत्तिअंताणि। कध पुण एत्थ अंते एयारो? 'एए छच्च समाणा' इच्चेएण कयएकारत्तादो[3]।

एदेसिमहियाराणं पिंडत्थो विसयदिसादरिसणट्ठं उच्चदे— वेयणासद्दस्स अणेयत्थेसु वट्टमाणस्स अपयदत्थे ओसारिय पयदत्थजाणावणट्ठं वेयणाणिक्खेवाणियोगद्दारं आगयं। सव्वो ववहारो णयमासेज्ज अवट्ठिदो त्ति एसो णामादिणिक्खेवगयववहारो कं कं णयमस्सिदूण ट्ठिदो त्ति आसंकियस्स संकाणिराकरणट्ठं अव्वुप्पण्णजणवुप्पायणट्ठं वा वेयणणयविभासणदा आगया। बंधोदय-संतसरूवेण जीवम्मि ट्ठिदपोग्गलक्खंधेसु कस्स कस्स णयस्स कत्थ कत्थ

विधान, वेदनगतिविधान, वेदनअनन्तरविधान, वेदनसन्निकर्षविधान, वेदनपरिमाणविधान, वेदनभागाभागविधान और वेदनअल्पबहुत्व ॥ १ ॥

पूर्वोद्दिष्ट अर्थाधिकारका स्मरण करानेके लिये सूत्रमें 'वेदना' इस पदका निर्देश किया है। ये सोलह नाम प्रथमा विभक्त्यन्त हैं।

शंका— यहां इन सोलह पदोंके अन्तमें एकारका होना कैसे सम्भव है?

समाधान— 'एए छच्च समाणा' इस सूत्रसे यहा एकारका आदेश किया गया है, इसलिये वैसा होना सम्भव है।

अब विषयकी दिशा दिखलानेके लिये इन अधिकारोंका समुदयार्थ कहते हैं— वेदना शब्द अनेक अर्थोंमें वर्तमान है, उनमेंसे अप्रकृत अर्थोंको छोड़कर प्रकृत अर्थका ज्ञान करानेके लिये वेदनानिक्षेपानुयोगद्वार आया है। चूंकि सभी व्यवहार नयके आश्रयसे अवस्थित है अत यह नामादि निक्षेपगत व्यवहार किस किस नयके आश्रयसे स्थित है, एसी आशका जिसे है उसकी उस शकाका निवारण करनेके लिये अथवा अव्युत्पन्न जनोंको व्युत्पन्न करानेके लिये वेदन नयविभाषणता अधिकार आया है। जो पुद्गलस्कन्ध बन्ध, उदय और सत्त्व रूपसे जीवमें स्थित हैं उनमें किस किस नयका कहां कहां कैसा

१ प्रतिषु 'पुम्वुदिट्ठत्ताहियार' इति पाठः। २ प्रतिषु 'विहात्ति' इति पाठ। ३ प्रतिषु 'एस्कारत्तादो' इति पाठ। जयधवला भा. १, पृ. ३२६

केरिसो पओओ होदि त्ति णयमस्सिदूण पओअपरूवणट्ठं वेयणणामविहाणमागयं। वेयणदव्वमेयवियप्पं[१] ण होदि, किंतु अणेयवियप्पमिदि जाणावणट्ठं संखेज्जासंखेज्जपोग्गलपडिसेहं काऊण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धेहिंतो अणंतगुणहीणा पोग्गलक्खंधा जीवसमवेदा वेयणा होंति त्ति जाणावणट्ठं वा वेयणदव्वविहाणमागयं। संखेज्जखेत्तोगाहणमोसारिय अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमादिं कादूण जाव घणलोगो त्ति वेयणादव्वाणमोगाहणा होदि त्ति जाणावणट्ठं वेयणखेत्तविहाणमागयं। वेयणदव्वक्खंधो वेयणभावमछंडिदूण जहण्णेणुक्कस्सेण य एत्तियं कालमच्छदि त्ति जाणावणट्ठं वेयणकालविहाणमागयं। संखेज्जासंखेज्जाणंतगुणपडिसेहं काऊण वेयणदव्वक्खंधम्मि अणंताणंतभाववियप्पजाणावणट्ठं वेयणभावविहाणमागयं। वेयणदव्व-खेत्त-काल-भावा ण णिक्कारणा, किंतु सकारणा त्ति परूवणट्ठं वेयणपच्चयविहाणमागयं। जीव णोजीवा एगादिसंजोगेण अट्ठभंगा वेयणाए सामिणो होंति, ण होंति त्ति णए अस्सिदूण परूवणट्ठं वेयणसामित्तविहाणमागयं। बज्झमाण-उदिण्ण-उवसंतपयडिभेएण एगादिसंजोगगएण णए अस्सिदूण वेयणवियप्पपरूवणट्ठं वेयणवेयणविहाणमागयं। दव्वादिभेय

प्रयोग होता है इस प्रकार नयके आश्रयसे प्रयोगकी प्ररूपणा करनेके लिये वेदननाम विधान अधिकार आया है। वेदनाद्रव्य एक प्रकारका नहीं है किन्तु अनेक प्रकारका है, ऐसा ज्ञान करानेके लिये अथवा संख्यात व असंख्यात पुद्गलोंका प्रतिषेध करके अभव्य सिद्धिकोंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंसे अनन्तगुणे हीन पुद्गलस्कन्ध जीवसे समवेत होकर वेदना रूप होते हैं ऐसा ज्ञान करानेके लिये वेदनद्रव्यविधान अधिकार आया है। वेदनाद्रव्योंकी अवगाहना संख्यात-क्षेत्र नहीं है किन्तु अंगुलके असंख्यातवें भागसे लेकर घनलोक पर्यन्त है, ऐसा बतलानेके लिये वेदनक्षेत्रविधान अधिकार आया है। वेदनाद्रव्य स्कन्ध वेदनास्वभावको न छोड़कर जघन्य और उत्कृष्ट रूपसे इतने काल तक रहता है ऐसा ज्ञान करानेके लिये वेदनकालविधान अधिकार आया है। वेदनाद्रव्यस्कन्धमें संख्यातगुणे असंख्यातगुणे और अनन्तगुणे भावविकल्प नहीं हैं किन्तु अनन्तानन्त भावविकल्प हैं, ऐसा ज्ञान करानेके लिये वेदनभावविधान अधिकार आया है। वेदनाद्रव्य वेदनाक्षेत्र वेदनाकाल और वेदनाभाव निष्कारण नहीं हैं किन्तु सकारण हैं, इस बातका ज्ञान करानेके लिये वेदनप्रत्ययविधान अधिकार आया है। एक आदि संयोगसे आठ भंग रूप जीव व नोजीव वेदनाके स्वामी होते हैं या नहीं होते हैं इस प्रकार नयोंके आश्रयसे ज्ञान करानेके लिये वेदनास्वामित्वविधान अधिकार आया है। एक आदि-संयोग-गत बध्यमान उदीर्ण और उपशान्त रूप प्रकृतियोंके भेदसे जो वेदनाभेद प्राप्त होते हैं उनका नयोंके आश्रयसे ज्ञान करानेके लिये वेदन-वेदनविधान अधिकार आया है। द्रव्यादिके भेदोंसे भेदको प्राप्त

१ प्रतिषु '-मेयवियप्पं' इति पाठः।

भिण्णवेयणा किं ट्ठिदा किमट्ठिदा किं ट्ठिदाट्ठिदा त्ति णयमासेज्ज पण्णवणट्ठं वेयणगइविहाण-मागयं। अणंतरबंधो[1] णाम एगेगसमयपबद्धा, णाणासमयपबद्धा परंपरबंधो[2] णाम, ते दो वि तदुभयबंधा, एदेसिं तिण्हं पि णयसमूहमस्सिदूण पण्णवणट्ठं वेयणअणंतरविहाणमागयं। दव्व-खेत्त-काल-भावाणमुक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्णेसु एक्कं णिरुद्धं काऊण सेसपद-पण्णवणट्ठं वेयणसण्णियास[3]विहाणमागयं। पयडिकाल-खेत्ताणं भेएण मूलुत्तरपयडीणं पमाण-परूवणट्ठं वेयणपरिमाणविहाणमागयं। पगडिअट्ठदा-ट्ठिदिअट्ठदा-क्खेत्तपच्चासेसु उप्पण्णपयडीओ सव्वपयडीण-केवडिओ भागो त्ति जाणावणट्ठं वेयणभागाभागविहाणमागयं। एदासिं चेव तिविहाण पयडीणमण्णोण्णं पेक्खिऊण थोव बहुत्तपदुप्पायणट्ठं वेयणअप्पाबहुगविहाणमागयं। एवं सोलसण्हमणिओगद्दाराणं पिंडत्थपरूवणा कया।

हुई वेदना क्या स्थित है, क्या अस्थित है, या क्या स्थित अस्थित है; इस प्रकार नयके आश्रयसे परिज्ञान करानेके लिये वेदनगतिविधान अधिकार आया है। एक एक समयप्रबद्धोंका नाम अनन्तरबन्ध है, नाना समयप्रबद्धोंका नाम परम्परबन्ध है, और उन दोनों ही का नाम तदुभयबन्ध है। इन तीनोंका नयसमूहके आश्रयसे ज्ञान करानेके लिये वेदन-अनन्तरविधान अधिकार आया है। द्रव्यवेदना, क्षेत्रवेदना, कालवेदना और भाववेदना, इनके उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य पदोंमेंसे एकको विवक्षित करके शेष पदोंका ज्ञान करानेके लिये वेदनसन्निकर्षविधान अधिकार आया है। प्रकृतियोंके काल और क्षेत्रके भेदसे मूल और उत्तर प्रकृतियोंके प्रमाणका प्ररूपण करनेके लिये वेदनपरिमाणविधान अधिकार आया है। प्रकृत्यर्थता, स्थित्यर्थता (समयप्रबद्धार्थता) और क्षेत्रप्रत्याश्रयमें उत्पन्न हुई प्रकृतियां सब प्रकृतियोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं, यह बतलानेके लिये वेदनभागाभागविधान अधिकार आया है। और इन्हीं तीन प्रकारकी प्रकृतियोंका एक-दूसरेकी अपेक्षा अल्पबहुत्व बतलानेके लिये वेदनअल्पबहुत्वविधान अधिकार आया है। इस प्रकार इन सोलह अनुयोगद्वारोंकी समुदयार्थ प्ररूपणा की गई है।

१ अणंतरबंधो णाम कम्मइयवग्गणाए ट्ठिदपोग्गलक्खंधा मिच्छत्तादिकम्मभावेण परिणदपढमसमए अणंतरबंधो। अ पत्र १०७२

२ को परंपरबंधो णाम? बंधविदियसमयप्पहुडि कम्मपोग्गलक्खंधाणं जीवपदेसाणं च जो बंधो सो परंपरबंधो णाम। अ पत्र १०७२

३ सण्णियासो णाम किं? दव्व खेत्त काल-भावेसु जहण्णुक्कस्सभेदभिण्णेसु एक्कम्हि विरुद्धे [णिरुद्धे] सेसाणि किमुक्कस्साणि किमणुक्कस्साणि किं जहण्णाणि किमजहण्णाणि वा पदाणि होंति त्ति जा परिक्खा सो सण्णियासो णाम। अ पत्र १०७४ ४ आप्रतौ 'पहुडि' इति पाठः।

एत्थ सोलस अणियोगद्दाराणि त्ति एद देसामासियवयणं, अण्णेसिं पि अणियोगद्दाराणं मुत्तजीवसमवेदादीणमुवलंभादो । एदेसु अणियोगद्दारेसु पढमाणियोगद्दारपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

वेयणणिक्खेवे त्ति । चउव्विहे वेयणणिक्खेवे ॥ २ ॥

वेयणणिक्खेवे त्ति पुव्वुद्दिट्ठत्थाहियारसंभालणट्ठं भणिदमण्णहा सुहेण अवगमाभावादो। एत्थ वि पुव्वं व आआरस्स एआरादेसो दट्ठव्वो । वेयणणिक्खेवो चउव्विहो त्ति एदं पि देसामासियवयणं, पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे खेत्तकालादिवेयणाणं च दंसणादो ।

णामवेयणा ट्ठवणवेयणा दव्ववेयणा भाववेयणा चेदि ॥ ३ ॥

तत्थ अट्ठविहपज्जत्थामालंबणो वेयणासद्दो णामवेयणा । कधमप्पणो[1] अप्पाणम्हि

यहां 'सोलह अनुयोगद्वार' यह देशामर्शक वचन है क्योंकि मुक्त जीव-समवेत आदि अन्य अनुयोगद्वार भी पाये जाते हैं ।

अब इन अनुयोगद्वारोंमेंसे प्रथम अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

अब वेदनानिक्षेपका प्रकरण है । वेदनाका निक्षेप चार प्रकारका है ॥ २ ॥

यहां 'वेदनानिक्षेप' यह पद पूर्वोद्दिष्ट अर्थाधिकारका स्मरण करानेके लिये कहा है अन्यथा इसका सुखपूर्वक ज्ञान नहीं हो सकता है। यहां भी पूर्वके समान एप् छव्व समाणा इस सूत्रसे ओकारके स्थानमें एकारादेश समझना चाहिये। वेदनानिक्षेप चार प्रकारका है यह भी देशामर्शक वचन है क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर क्षेत्रवेदना व कालवेदना आदि भी देखी जाती हैं।

नामवेदना, स्थापनावेदना, द्रव्यवेदना और भाववेदना ॥ ३ ॥

उनमेंसे एक जीव अनेक जीव आदि आठ प्रकारके बाह्य अर्थका अवलम्बन न करनेवाला वेदना शब्द नामवेदना है ।

शंका—अपनी अपने आपमें प्रवृत्ति कैसे हो सकती है ?

---

१ सं०पञ्चसंग्रह मा पृ १९   २ प्रतिषु 'वेयणासद्दो' इति पाठः ।
३ प्रतिषु 'कधमप्पण्णो' इति पाठः ।

पवुत्ती ? ण, पईव-सुज्जिंदु-मणीणमप्पप्पयासयाणमुवलंभादो । कधं संकेदणिरवेक्खो सद्दो अप्पाण पयासदि ? ण, उवलभादो। ण च उवलंभमाणे अणुववण्णदा, अव्ववत्थावत्तीदो[1] । ण च सद्दो संकेदबलेणेव वज्झत्थपयासओ त्ति णियमो अत्थि, सद्देण विणा सद्दत्थाण वाचिय-वाचयभावेण संकेदकरणाणुववत्तीदो[2] । ण च सद्दे सद्दत्थाण संकेदो कीरदे, अणवत्थापसंगादो सद्दम्मि अच्छंतीए[3] सत्तीए परदो उप्पत्तिविरोहादो चणेयंतो एत्थ जोजेयव्वो ।

समाधान — नहीं, क्योंकि जैसे अपने आपको प्रकाशित करनेवाले प्रदीप, सूर्य, चन्द्र व मणि पाये जाते हैं वैसे ही यहां भी जानना चाहिये।

शंका — संकेतकी अपेक्षा किये बिना शब्द अपने आपको कैसे प्रकाशित करता है?

समाधान — नहीं, क्योंकि वैसी उपलब्धि होती है। और वैसी उपलब्धि होनेपर अनुपपत्ति मानना ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेपर अव्यवस्थाकी आपत्ति आती है। दूसरे, शब्द संकेतके बलसे ही बाह्य अर्थका प्रकाशक हो, ऐसा नियम भी नहीं है, क्योंकि, नाम शब्दके बिना शब्द और अर्थका वाच्य-वाचक रूपसे संकेत करना नहीं बन सकता है। तीसरे, शब्दमें शब्द और अर्थका संकेत किया जाता है, ऐसा मानना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेपर एक तो अनवस्था दोष आता है और दूसरे, शब्दमें स्वयं ऐसी शक्तिके रहनेपर दूसरेसे उत्पत्ति माननेमें विरोध आता है, इसलिये इस विषयमें अनेकान्तकी योजना करनी चाहिये।

विशेषार्थ — यहां नामवेदनाका निर्देश करते समय नामनिक्षेपको अनिमित्तक बतलाया गया है। इसपर यह प्रश्न हुआ है कि यदि नामनिक्षेप अनिमित्तक माना जाता है तो यह कैसे मालूम पड़े कि यह अमुक नाम है। सर्वत्र साधारणतः विवक्षित पदार्थके आधारसे विवक्षित नामका ज्ञान हो जाता है। किन्तु जब नामनिक्षेपमें नाम शब्दका आधार-भूत कोई पदार्थ ही नहीं माना जाता है तो उस नाम शब्दका ज्ञान ही कैसे हो सकेगा? इस प्रश्नका जो समाधान किया है उसका भाव यह है कि जिस प्रकार चन्द्र आदि पदार्थ स्वभावसे स्वप्रकाशक होते हैं उसी प्रकार नाम शब्द भी जानना चाहिये। वह स्वभावसे ही स्वमें प्रवृत्त है, उसे अन्य आलम्बनकी कोई आवश्यकता नहीं है। शब्द स्वतंत्र है, तभी तो शब्दका अर्थके साथ वाच्य वाचक सम्बन्ध हो सकता है। यदि शब्दमें शब्द और अर्थ दोनोंका संकेत माना जाय तो इससे अनवस्थाका प्रसंग आता है। इसलिये इस विषयमें सर्वथा एकान्त नहीं मानना चाहिये। किन्तु ऐसा समझना चाहिये कि कथंचित् कोई भी शब्द स्वयं प्रवृत्त हुआ है और कथंचित् पदार्थके आलम्बनसे प्रवृत्त हुआ है। यहां नामनिक्षेपकी प्रमुखता है, इसलिये अन्य आलम्बनका निषेध किया है।

१ प्रतिषु 'अत्थवत्तावत्तीदो' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः 'संकेदकरणाणुवुत्तीदो' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'अच्चताए' इति पाठः।

सा वेयणा एसा त्ति अभेएण अज्झवसियत्थो ट्ठवणा। सा दुविहा सब्भावासब्भावट्ठवणभेएण। तत्थ पाएण अणुहरंतदव्वभेदेण इच्छिददव्वट्ठवणा सब्भावट्ठवणवेयणा, अण्णा असब्भावट्ठवणवेयणा।

दव्ववेयणा दुविहा आगम णोआगमदव्ववेयणाभेएण। वेयणपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्ववेयणा। जाणुगसरीर-भविय तव्वदिरित्तभेएण णोआगमदव्ववेयणा तिविहा। तत्थ जाणुगसरीरं भविय-वट्टमाण-समुज्झादभेएण तिविहं। वेयणाणियोगद्दारस्स अणागमस्स उवादाणकारणत्तेण भविस्सरूवेण सट्ठियो जेण णोआगमभवियदव्ववेयणा। तव्वदिरित्तणोआगमदव्ववेयणा कम्म-णोकम्मभेएण दुविहा। तत्थ कम्मवेयणा णाणावरणादिभेएण अट्ठविहा। णोकम्मणोआगमदव्ववेयणा सचित्त-अचित्त-मिस्सयभेएण तिविहा। तत्थ सचित्तदव्ववेयणा सिद्धजीवदव्वं। अचित्तदव्ववेयणा पोग्गल-कालागास-धम्मा-धम्मदव्वाणि। मिस्सदव्ववेयणा संसारिजीवदव्वं, कम्म णोकम्मजीवसमवायस्स जीवाजीवेहिंतो पुधभावदंसणादो।

यह वेदना यह है इस प्रकार अभेद रूपसे जो अन्य पदार्थमें वेदना रूपसे अध्यवसाय होता है वह स्थापनावेदना है। वह सद्भावस्थापना और असद्भावस्थापनाके भेदसे दो प्रकारकी है। उनमेंसे जो द्रव्यका भेद प्रायः वेदनाके समान है उसमें इच्छित द्रव्य अर्थात् वेदनाद्रव्यकी स्थापना करना सद्भावस्थापनवेदना है और उससे भिन्न असद्भावस्थापनवेदना है।

द्रव्यवेदना दो प्रकारकी है— आगम-द्रव्यवेदना और नोआगम-द्रव्यवेदना। जो वेदनाप्राभृतका जानकार है किन्तु उपयोग रहित है वह आगम-द्रव्यवेदना है। नोआगम द्रव्यवेदना ज्ञायकशरीर, भव्य और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारकी है। उनमेंसे ज्ञायकशरीर यह भावी वर्तमान और त्यक्तके भेदसे तीन प्रकारका है। जो वेदनानुयोग द्वारका अजानकार है किन्तु भविष्यमें उसका उपादान कारण होगा, वह भावी नोआगम द्रव्यवेदना है। तद्व्यतिरिक्त नोआगम-द्रव्यवेदना कर्म और नोकर्मके भेदसे दो प्रकारकी है। उनमेंसे कर्मवेदना ज्ञानावरण आदिके भेदसे आठ प्रकारकी है तथा नोकर्म-नोआगम द्रव्यवेदना सचित्त अचित्त और मिश्रके भेदसे तीन प्रकारकी है। उनमेंसे सचित्त द्रव्यवेदना सिद्ध जीव-द्रव्य है। अचित्त-द्रव्यवेदना पुद्गल काल आकाश धर्म और अधर्म द्रव्य हैं। मिश्र द्रव्यवेदना संसारी जीव-द्रव्य है क्योंकि कर्म और नोकर्मका जीवके साथ हुआ सम्बन्ध जीव और अजीवसे भिन्न रूपसे देखा जाता है।

भाववेयणा आगम-णोआगमभेएण दुविहा। तत्थ वेयणाणियोगद्दारजाणओ उवजुत्तो आगमभाववेयणा। अपरा दुविहा जीवाजीवभाववेयणाभेएण। तत्थ जीवभाववेयणा ओद-इयादिभेएण पंचविहा। अट्ठकम्मजणिदा ओदइया वेयणा। तदुवसमजणिदा अउवसमिया। तक्खयजणिदा खइया। तेसिं खओवसमजणिदा ओहिणाणादिसरूवा खवोवसमिया। जीव-भविय-उवजोगादिसरूवा पारिणामिया। सुवण्ण-पुत्त-ससुवण्णकण्णादिजणिदवेयणाओ एदासु चेव पचसु पविसंति त्ति पुध ण वुत्ताओ। जा सा अजीवभाववेयणा सा दुविहा ओदइया पारिणामिया चेदि। तत्थ एक्केक्का पंचरस-पंचवण्ण दुगधट्ठफासादिभेएण अणेयविहा। एवमेदेसु अत्थेसु वेयणासद्दो वट्टदि त्ति केण अत्थेण पयदमिदि ण णव्वदे। सो वि पयदत्थो णयगहणम्मि णिलीणो त्ति ताव णयविभासा कीरदे। एव वेयणणिक्खेवे त्ति समत्तमणि-योगद्दार।

भाववेदना आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारकी है। उनमेंसे जो वेदना-नुयोगद्वारका जानकार होकर उसमें उपयोग युक्त है वह आगमभाववेदना है। नोआगम-भाववेदना जीवभाववेदना और अजीवभाववेदनाके भेदसे दो प्रकारकी है। उनमेंसे जीवभाववेदना औदयिक आदिके भेदसे पांच प्रकारकी है। आठ प्रकारके कर्मोंके उदयसे उत्पन्न हुई वेदना औदयिक वेदना है। कर्मोंके उपशमसे उत्पन्न हुई वेदना औपशमिक वेदना है। उनके क्षयसे उत्पन्न हुई वेदना क्षायिक वेदना है। उनके क्षयोपशमसे उत्पन्न हुई अवधिज्ञानादि स्वरूप वेदना क्षायोपशमिक वेदना है। और जीवत्व, भव्यत्व व उपयोग आदि स्वरूप पारिणामिक वेदना है। सुवर्ण, पुत्र व सुवर्ण सहित कन्या आदिसे उत्पन्न हुई वेदनाओंका इन पाचमें ही अन्तर्भाव हो जाता है, अत. उन्हें अलगसे नहीं कहा है।

और जो पहिले अजीवभाववेदना कही है वह दो प्रकारकी है—औदयिक और पारिणामिक। उनमें प्रत्येक पांच रस, पाच वर्ण, दो गन्ध और आठ स्पर्श आदिके भेदसे अनेक प्रकारकी है।

इस प्रकार इन अर्थोंमें वेदना शब्द वर्तमान है। किन्तु यहां कौनसा अर्थ प्रकृत है, यह नहीं जाना जाता है। वह भी प्रकृत अर्थ नयग्रहणमें लीन है। अत एव प्रथम नय-विभाषा की जाती है।

विशेषार्थ – यहां सर्व प्रथम वेदनानिक्षेप इस अधिकारका निर्देश किया गया है। वेदनानिक्षेप चार प्रकारका है— नामवेदना, स्थापनावेदना, द्रव्यवेदना और भाव-वेदना। निक्षेपके यद्यपि और अनेक भेद हैं, पर सूत्रकारने मुख्य रूपसे चारका ही ग्रहण किया है। शेषका ग्रहण देशामर्शक भावसे हो जाता है। बाह्य अर्थके आलम्बनके बिना वेदना यह शब्द नामवेदना है। इसमें वेदना शब्दकी ही प्रमुखता है। तात्पर्य यह है कि किसी अन्य पदार्थका वेदना ऐसा नाम रखना यहां नामवेदना विवक्षित नहीं है, किन्तु

१

वेयणणयविभासणदा

वेयण-णयविभासणदाए को णओ काओ वेयणाओ इच्छदि ? ॥ १ ॥

वेयणणयविभासणदाए त्ति अहियारसंभालणवयणं । को णओ इच्छदि त्ति णेदं पुच्छासुत्तं, किंतु आसंकासुत्तं । सा च आसंका अप्पिय कायव्वा ।

स्वतंत्र रूपसे वेदना ऐसा नामकरण ही नामवेदना है । किसी पदार्थमें 'वेदना' ऐसी स्थापना करना स्थापनावेदना है । इसके सद्भावस्थापना और असद्भावस्थापना ऐसे दो भेद हैं । सद्भावस्थापना तदाकार पदार्थमें की जाती है और असद्भावस्थापना अतदाकार पदार्थमें की जाती है । जो पदार्थ वेदनासे लगभग मिलता-जुलता है उसमें वेदना ऐसी स्थापना करना सद्भावस्थापनावेदना है और जो पदार्थ वेदनासे मिलता-जुलता नहीं है उसमें वेदना ऐसी स्थापना करना असद्भावस्थापनावेदना है । द्रव्यवेदनाका निर्देश सुगम है । फिर भी नोआगमद्रव्यवेदनाके तद्व्यतिरिक्तके भेदोंपर प्रकाश डालना आवश्यक है । इसके दो भेद हैं—कर्म और नोकर्म । बन्धसमयसे लेकर उदयके पूर्व तकके कर्मोंको कर्म-तद्व्यतिरिक्त-नोआगमद्रव्यवेदना इसलिये कहते हैं क्योंकि ये जीवोंके विविध अवस्थाओं व विविध प्रकारके परिणामोंके होनेमें तथा शरीर वचन व मनके होनेमें भविष्यमें निमित्त कारण होंगे । इसलिये ये तद्व्यतिरिक्तके अवान्तर भेद रूपसे द्रव्यकर्म कहे जाते हैं । तथा नोकर्म इस दूसरे भेदसे इनके सहकारी कारण लिये जाते हैं । जो स्त्री पुत्र धनादि भविष्यमें कर्मोंके उदयमें सहायक होते हैं वे तद्व्यतिरिक्तके दूसरे भेद नोकर्म हैं । इनका स्पष्ट उल्लेख कर्मकाण्डमें किया है । भाववेदनामें दूसरा भेद नोआगमभाववेदनाका जो अजीवभाववेदना है उसके दो भेद हैं— औदयिक और पारिणामिक । सो इनमेंसे औदयिक भेद द्वारा पुद्गलविपाकी कर्मोंके उदयसे जो रूप-रसादि रूप परिणमन होता है वह लिया गया है और पारिणामिक भेद द्वारा शेष पुद्गलोंका रूप-रसादि रूप परिणमन लिया गया है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

इस प्रकार वेदनानिक्षेप अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अब वेदन-नयविभाषणताका अधिकार है । कौन नय किन वेदनाओंको स्वीकार करता है ? ॥ १ ॥

वेदन-नयविभाषणता यह अधिकारका स्मरण करानेवाला वचन है । कौन नय स्वीकार करता है यह पृच्छासूत्र नहीं है किन्तु आशंकासूत्र है । यह आशंका जानकर करना चाहिये ।

णेगम-ववहार-संगहा सव्वाओ[1] ॥ २ ॥

इच्छंति त्ति पुव्वसुत्तादो अणुवट्टावेदव्वो, अण्णहा सुत्तट्ठाणुववत्तीदो। णामणिक्खेवो दव्वट्ठियणए कुदो संभवदि? एक्कम्हि चेव दव्वम्हि वट्टमाणाणं णामाणं तब्भवसामण्णम्मि तीदाणागय-वट्टमाणपज्जाएसु संचरणं पडुच्च अत्तदव्वववएसम्मि[2] अप्पहाणीकयपज्जायम्मि पउत्तिदंसणादो, जाइ-गुण-कम्मेसु वट्टमाणाणं सारिच्छसामण्णम्मि वत्तिविसेसाणुवुत्तीदो[4] लद्धदव्ववएसम्मि अप्पहाणीकयवत्तिभावम्मि पउत्तिदंसणादो, सारिच्छसामण्णप्पयणामेण विणा सद्दववहाराणुववत्तीदो च।

कधं दव्वट्ठियणए ट्ठवणणामसंभवो? पडिणिहिज्जमाणस्स पडिणिहिणा सह एयत्तज्झवसायादो सब्भावासब्भावट्ठवणभेएण सव्वत्थेसु[3] अण्णयदंसणादो च। आगम णोआगम-

---

नैगम, व्यवहार और संग्रह नय सब वेदनाओंको स्वीकार करते हैं ॥ २ ॥

स्वीकार करते हैं, इसकी पूर्व सूत्रसे अनुवृत्ति करानी चाहिये, क्योंकि, उक्त पदकी अनुवृत्ति किये विना सूत्रका अर्थ नहीं बन सकता है।

शंका— नामनिक्षेप द्रव्यार्थिक नयमें कैसे सम्भव है?

समाधान— चूंकि एक ही द्रव्यमें रहनेवाले नामों (संज्ञा शब्दों) की, जिसने अतीत, अनागत व वर्तमान पर्यायोंमें संचार करनेकी अपेक्षा 'द्रव्य' व्यपदेशको प्राप्त किया है और जो पर्यायकी प्रधानतासे रहित है ऐसे तद्भवसामान्यमें, प्रवृत्ति देखी जाती है, जाति, गुण व क्रियामें वर्तमान नामोंकी, जिसने व्यक्तिविशेषोंमें अनुवृत्ति होनेसे 'द्रव्य' व्यपदेशको प्राप्त किया है और जो व्यक्तिभावकी प्रधानतासे रहित है ऐसे सादृश्य सामान्यमें, प्रवृत्ति देखी जाती है, तथा सादृश्य सामान्यात्मक नामके विना शब्दव्यवहार भी घटित नहीं होता है, अत नामनिक्षेप द्रव्यार्थिक नयमें सम्भव है।

शंका—द्रव्यार्थिक नयमें स्थापनानिक्षेप कैसे सम्भव है?

समाधान—एक तो स्थापनामें प्रतिनिधीयमानकी प्रतिनिधिके साथ एकताका निश्चय होता है, और दूसरे सद्भावस्थापना व असद्भावस्थापनाके भेद रूपसे सब पदार्थोंमें अन्वय देखा जाता है, इसलिये द्रव्यार्थिक नयमें स्थापनानिक्षेप सम्भव है।

---

१ णेगम-संगह-ववहारा सव्वे इच्छंति। जयध (धू सू) १, पृ २५९, २७७

२ प्रतिषु 'चेव दव्वतो वट्ट-' इति पाठ। ३ प्रतिषु 'अत्थदव्व' इति पाठ।

४ काप्रतौ 'वत्तिविसेसाणुवलंभादो' इति पाठ।

दव्वाणं दव्वट्ठियणयविसयत्तं सुगमं। कधं भावो वट्टमाणकालपरिच्छिण्णो दव्वट्ठियणयविसयो ? ण, वट्टमाणकालेण वंजणपज्जायावट्ठाणमेत्तेणुवलक्खियदव्वस्स दव्वट्ठियणयविसयत्ताविरोहादो।

उजुसुदो ट्ठवणं णेच्छदि[1] ॥ ३ ॥

कुदो ? पुरिसस्स कप्पणवसेण अण्णत्थस्स अण्णत्थसरूवेण परिणामाणुवलंभादो। तब्भवसारिच्छसामण्णप्पयदव्वमिच्छंतो उजुसुदो[2] कधं ण दव्वट्ठियो ? ण, घड-पड-त्थंभादिवंजणपज्जायपरिच्छिण्णसगपुव्वावरभावविरहियउजुवट्टविसयस्स दव्वट्ठियणयत्तविरोहादो[3]।

सद्दणओ णामवेयणं भाववेयणं च इच्छदि[4] ॥ ४ ॥

आगमद्रव्यनिक्षेप व नोआगमद्रव्यनिक्षेप ये द्रव्यार्थिकनयके विषय हैं, यह बात सुगम है।

शंका—वर्तमान कालसे परिच्छिन्न भावनिक्षेप द्रव्यार्थिकनयका विषय कैसे है ?

समाधान—नहीं क्योंकि व्यञ्जन पर्यायके अवस्थान मात्र वर्तमान कालसे उपलक्षित द्रव्य द्रव्यार्थिक नयका विषय है ऐसा माननेमें कोई विरोध नहीं है।

ऋजुसूत्र नय स्थापनानिक्षेपको स्वीकार नहीं करता है ॥ ३ ॥

क्योंकि पुरुषके संकल्प वश एक पदार्थका अन्य पदार्थ रूपसे परिणमन नहीं पाया जाता है।

शंका—तद्भवसामान्य व सादृश्यसामान्य रूप द्रव्यको स्वीकार करनेवाला ऋजुसूत्र नय द्रव्यार्थिक कैसे नहीं है ?

समाधान—नहीं क्योंकि ऋजुसूत्र नय घट पट व स्तम्भादि स्वरूप व्यञ्जन पर्यायोंसे परिच्छिन्न ऐसे अपने पूर्वापर भावोंसे रहित वर्तमान मात्रको विषय करता है अतः उसे द्रव्यार्थिक नय माननेमें विरोध आता है।

शब्दनय नामवेदना और भाववेदनाको स्वीकार करता है ॥ ४ ॥

---

१ प्रतिषु 'ण्णेच्छदि' इति पाठः। २ तद्भवो ऊर्ध्वताख्यः। मवर (ध. पु.) १ पृ १६१ १०७
३ प्रतिषु 'भावविरहिय' इति पाठः। ४ प्रतिषु 'वेयणं वेयणं च' इति पाठः।
५ सद्दणयस्स णामं भावो य। जयध (ध. पु.) १ पृ २६४ १०९.

किमिदि दव्वं णेच्छदि ? पज्जायंतरसंकंतिविरोहादो सद्दभेएण अत्थपढणवावदम्मि[1] वत्थुविसेसाणं णाम-भावं[2] मोत्तूण पहाणत्ताभावादो । एसा णयपरूवणा जदि वि जुगवं वोत्तुमसत्तीदो सुत्ते पच्छा परूविदा तो वि णिक्खेवट्ठपरूवणादो पुव्वं चेव परूविदव्वा, अण्णहा णिक्खेवट्ठपरूवणाणुववत्तीदो ।

संपहि पयदवेयणापरूवण कस्सामो — एदासु वेयणासु काए पयदं ? दव्वट्ठियणयं पडुच्च[3] णोआगमकम्मदव्ववेयणाए बंधोदय-संतसरूवाए पयदं । उजुसुदणय पडुच्च उदयगदकम्मदव्ववेयणाए पयद । सद्दणय पडुच्च कम्मोदय-बंधजणिदभाववेयणाए ण पयद, भावमहिकिच्च[4] एत्थ परूवणाभावादो । एवं वेयणणयविभासणदा त्ति समत्तमणियोगद्दारं ।

--- -- ---

शंका—शब्दनय द्रव्यनिक्षेपको स्वीकार क्यों नहीं करता ?

समाधान—एक तो शब्दनयकी अपेक्षा दूसरी पर्यायका संक्रमण माननेमें विरोध आता है । दूसरे, वह शब्दभेदसे अर्थके कथन करनेमें व्यापृत रहता है, अत उसमें नाम और भावकी ही प्रधानता रहती है, पदार्थोंके भेदोंकी प्रधानता नहीं रहती, इसलिये शब्दनय द्रव्यनिक्षेपको स्वीकार नहीं करता ।

एक साथ कहनेके लिये असमर्थ होनेसे यह नयप्ररूपणा यद्यपि सूत्रमें पीछे कही गई है तो भी निक्षेपार्थप्ररूपणासे पहले ही उसे कहना चाहिये, अन्यथा निक्षेपार्थकी प्ररूपणा नहीं बन सकती है ।

अब प्रकृत वेदनाकी प्ररूपणा करते हैं—इन वेदनाओंमें कौनसी वेदना प्रकृत है ? द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा बन्ध, उदय और सत्त्व रूप नोआगमकर्मद्रव्यवेदना प्रकृत है । ऋजुसूत्रनयकी अपेक्षा उदयको प्राप्त कर्मद्रव्यवेदना प्रकृत है । शब्दनयकी अपेक्षा कर्मके उदय व बन्धसे उत्पन्न हुई भाववेदना यहा प्रकृत नहीं है, क्योंकि, यहा भावकी अपेक्षा प्ररूपणा नहीं की गई है ।

इस प्रकार वेदन-नयविभाषणता नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

--- --

१ प्रतिषु ' अत्थपदणवावदम्मि ' इति पाठ । २ प्रतिषु ' गुणभाव ' इति पाठ ।

३ अतोऽग्रे अ-आप्रत्यो ' णोआगमदव्ववेयणासु काए पयद दव्वट्ठियणय पडुच्च ' इत्यधिक पाठ ।

४ प्रतिषु ' वमहीकिच्च ' इति पाठः ।

२
वेयणणामविहाणं

वेयणाणामविहाणे त्ति । णेगम-ववहाराणं णाणावरणीयवेयणा दंसणावरणीयवेयणा वेयणीयवेयणा मोहणीयवेयणा आउववेयणा णामवेयणा गोदवेयणा अंतराइयवेयणा ॥ १ ॥

वेयणाणामविहाणं किमट्ठमागयं ? पयदवेयणाए विहाणपरूवणट्ठं तण्णामविहाण[1] परूवणट्ठं च आगदं । तत्थ ताव णेगम-ववहाराणं वेयणाविहाणं उच्चदे । तं जहा— जा सा णोआगमदव्वकम्मवेयणा सा अट्ठविहा णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेयणीय-मोहणीय-आउअ-णाम-गोद-अंतराइयभेएण । कुदो ? अट्ठविहस्स दिस्समाणस्स अण्णाणादंसण-सुहदुक्खवेयण-मिच्छत्त-कसाय भवधारण-सरीर-गोद-वीरियादिअंतराइयकज्जस्स अण्णहाणुववत्तीदो । ण च

अब वेदनानामविधानका अधिकार है । नैगम व व्यवहार नयकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयवेदना, दर्शनावरणीयवेदना, वेदनीयवेदना, मोहनीयवेदना, आयुवेदना, नामवेदना, गोत्रवेदना और अन्तरायवेदना, इस प्रकार वेदना आठ भेद रूप है ॥ १ ॥

शंका—इस सूत्रमें वेदनानामविधान यह पद किसलिये आया है ?

समाधान—प्रकृत वेदनाके विधानका कथन करनेके लिये और उसके नामका निर्देश करनेके लिये वेदनानामविधान पद आया है ।

उसमें पहले नैगम व व्यवहार नयकी अपेक्षा वेदनाका विधान करते हैं । वह इस प्रकार है— जो वह नोआगमद्रव्यकर्मवेदना कही है वह ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय वेदनीय मोहनीय आयु नाम गोत्र और अन्तरायके भेदसे आठ प्रकारकी है, क्योंकि, ऐसा नहीं माननेपर जो यह अज्ञान अदर्शन सुख दुखवेदन मिथ्यात्व व कषाय भव-धारण शरीर व गोत्र रूप एवं वीर्यादिके अन्तराय रूप आठ प्रकारका कार्य दिखाई देता है वह नहीं बन सकता है । यदि कहा जाय कि यह जो आठ प्रकारका कार्य भेद दिखाई

---

१ प्रतिषु तण्णामवीहाण इति पाठः ।

कारणभेदेण विणा कज्जभेदो अत्थि, अण्णत्थ तहाणुवलभादो। होदु कज्जभेदेण उदयगय-कम्मस्स अट्ठविहत्तं, तदो तस्सुप्पत्तीदो; ण बंध-संताणं, तक्कज्जाणुवलभादो त्ति ? ण, उदयट्ठविहत्तणेण उदयकारणसंतस्स संतकारणबंधस्स य अट्ठविहत्तसिद्धीदो। एवं वेयणाए विहाणं परूविदं।

संपहि तण्णामपरूवणं कस्सामो। तं जहा— णाणावरणीयवेयणा ज्ञानमावृणोतीति ज्ञानावरणीयं कर्मद्रव्यम्, ज्ञानावरणीयमेव वेदना ज्ञानावरणीयवेदना। एत्थ तप्पुरिससमासो ण कायव्वो, दव्वट्ठियणएसु भावस्स[1] पहाणत्ताभावादो। एदेसु णएसु पदाणं समासो वि जुज्जदे, विहत्तिलोवेण एगपदभावुवलंभादो एगत्थत्थित्तदंसणादो च[2]। वेयणासद्दो वि पादेक्कं पओत्तव्वो, अट्ठण्हं भिण्णवेयणाणं एक्कस्स वेयणासद्दस्स वाचयत्तविरोहादो।

देता है वह कारणभेदके विना भी बन जायगा, सो ऐसा मानना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, अन्यत्र ऐसा पाया नहीं जाता है। (अतः ज्ञानावरणीय आदि वेदना आठ प्रकारकी है, यही सिद्ध होता है।)

शंका—कार्यके भेदसे उदयगत कर्म आठ प्रकारका भले ही होवे, क्योंकि, उससे उसकी उत्पत्ति होती है। किन्तु बन्ध और सत्व आठ प्रकारके नहीं हो सकते, क्योंकि, उनका कार्य नहीं पाया जाता।

समाधान—नहीं, क्योंकि जब उदय आठ प्रकारका है तब उदयका कारण सत्व और सत्वका कारण बन्ध भी आठ प्रकारका सिद्ध होता है। इस प्रकार वेदनाके भेदोंकी प्ररूपणा की।

अब उसके नामोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणीयवेदना, इसका निरुक्त्यर्थ है ज्ञानका जो आवरण करता है वह ज्ञानावरणीय कर्मद्रव्य है, और 'ज्ञानावरणीय रूप वेदना ही ज्ञानावरणीयवेदना' है। यहां तत्पुरुष समास नहीं करना चाहिये, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयोंमें भावकी प्रधानता नहीं पायी जाती। इन नयोंमें पदोंका समास भी योग्य है, क्योंकि, एक तो विभक्तिका लोप हो जानेसे एकपदत्व पाया जाता है और दूसरे उनका एकत्र अस्तित्व भी देखा जाता है। यहां वेदना शब्दका भी प्रत्येकके साथ प्रयोग करना चाहिये, क्योंकि, आठों वेदनायें भिन्न भिन्न हैं इसलिये उनका एक वेदना शब्द वाचक है, ऐसा माननेमें विरोध आता है।

---

१ आप्रतौ 'तप्पुरिससमासो कायव्वो ण दव्वट्ठियणए भावस्स' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'एगत्थमत्थिदंसणादो [illegible]' इति पाठः।

संगहस्स अट्ठण्णं पि कम्माणं वेयणा ॥ २ ॥

एत्थ णेगमणए विहाणं पुव्वं व परूवेदव्वं, अविसेसादो। णामविहाणं उच्चदे। तं जहा— अट्ठण्णं पि कम्माणं वेयणा त्ति वत्तव्वं, अट्ठसु वि णाणावरणादिसयलकम्मभेद-संभवादो एक्कत्तादो वेयणासद्दादो सयलवेयणाविसेसाविणाभाविएगवेयणाजादीए उवलंभादो, अण्णहा संगहणयाणुववत्तीदो।

उजुसुदस्स [णो] णाणावरणीयवेयणा णोदंसणावरणीयवेयणा णोमोहणीयवेयणा णोआउअवेयणा णोणामवेयणा णोगोदवेयणा णो अंतराइयवेयणा वेयणीयं चेव वेयणा ॥ ३ ॥

उजुसुदस्स पज्जवट्ठियस्स कधं दव्वं विसओ? ण, वंजणपज्जायमहिट्ठियस्स दव्वस्स

संग्रहनयकी अपेक्षा आठों ही कर्मोंकी एक वेदना होती है ॥ २ ॥

यहां वेदनाका विधान पूर्वके समान कहना चाहिये क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है। अब नामविधानका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है। आठों ही कर्मोंकी वेदना ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि आठ इस संख्यामें ज्ञानावरणादि कर्मोंके सब भेद सम्भव हैं। सूत्रमें जो एक वेदना शब्द कहा है सो उससे वेदनाके सब भेदोंकी अविनाभाविनी एक वेदना जातिका ग्रहण होता है क्योंकि, इसके विना संग्रह वचन नहीं होता।

विशेषार्थ—संग्रहनयका काम एक सामान्य धर्म द्वारा अवान्तर सब भेदोंका संग्रह करना है। प्रकृतमें नैगम और व्यवहार नयकी अपेक्षा वेदना आठ प्रकारकी बतलाई है किन्तु संग्रहनय उन आठों ही कर्मोंकी एक वेदना जाति स्वीकार करता है, क्योंकि संग्रह नयमें अभेदकी प्रधानता होती है। यही कारण है कि इस नयकी अपेक्षा आठों ही कर्मोंकी वेदना एक वेदना कही है।

ऋजुसूत्रनयकी अपेक्षा [न] ज्ञानावरणीयवेदना है, न दर्शनावरणीय वेदना है, न मोहनीयवेदना है, न आयुवेदना है, न नामवेदना है, न गोत्रवेदना है और न अन्तराय वेदना है, किन्तु एक वेदनीय ही वेदना है ॥ ३ ॥

शंका—ऋजुसूत्रनय चूंकि पर्यायार्थिक है अतः उसका द्रव्य विषय कैसे हो सकता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि व्यञ्जन पर्यायको प्राप्त द्रव्य उसका विषय है ऐसा

तव्विसयत्ताविरोहादो । ण च उप्पाद-विणासलक्खणत्तं तव्विसयदव्वस्स विरुज्झदे, अप्पिद-पज्जायभावाभावलक्खण-उप्पाद-विणासवदिरित्तअवट्ठाणाणुवलंभादो । ण च पढमसमए उप्पण्णस्स बिदियादिसमएसु अवट्ठाणं, तत्थ पढम-बिदियादिसमयकप्पणाए कारणाभावादो । ण च उप्पादो चेव अवट्ठाणं, विरोहादो उप्पादलक्खणभाववदिरित्तअवट्ठाणलक्खणाणुवलंभादो च । तदो अवट्ठाणाभावादो उप्पाद-विणासलक्खणं दव्वमिदि सिद्धं ।

वेदणा णाम सुह-दुक्खाणि, लोगे तहा संववहारदंसणादो । ण च ताणि सुह-दुक्खाणि वेयणीयपोग्गलखंधं मोत्तूण अण्णकम्मदव्वेहिंतो उप्पज्जंति, फलाभावेण वेयणीयकम्माभावप्पसंगादो । तम्हा सव्वकम्माणं पडिसेहं काऊण पत्तोदयवेयणीयदव्वं चेव वेयणा त्ति उत्तं । अट्ठण्णं कम्माणमुदयगदपोग्गलक्खंधो वेदणा त्ति किमट्ठं एत्थ ण घेप्पदे ? ण, एदम्हि

माननेमें कोई विरोध नहीं आता । यदि कहा जाय कि ऋजुसूत्र नयके विषयभूत द्रव्यको उत्पाद विनाशलक्षण माननेमें विरोध आता है सो भी बात नहीं है क्योंकि, विवक्षित पर्यायका सद्भाव ही उत्पाद है और विवक्षित पर्यायका अभाव ही व्यय है। इसके सिवा अवस्थान स्वतंत्र रूपसे नहीं पाया जाता । यदि कहा जाय कि प्रथम समयमें पर्याय उत्पन्न होती है और द्वितीयादि समयोंमें उसका अवस्थान होता है सो यह बात भी नहीं बनती, क्योंकि, उसमें प्रथम द्वितीयादि समयोंकी कल्पनाका कोई कारण नहीं है । यदि कहा जाय कि उत्पाद ही अवस्थान है सो भी बात नहीं है, क्योंकि, एक तो ऐसा माननेमें विरोध आता है, दूसरे उत्पाद स्वरूप भावको छोड़कर अवस्थानका और कोई लक्षण पाया नहीं जाता । इस कारण अवस्थानका अभाव होनेसे उत्पाद व विनाश स्वरूप द्रव्य है, यह सिद्ध हुआ।

वेदनाका अर्थ सुख दुख है, क्योंकि, लोकमें वैसा व्यवहार देखा जाता है। और वे सुख दुख वेदनीय रूप पुद्गलस्कन्धके सिवा अन्य कर्मद्रव्योंसे नहीं उत्पन्न होते हैं, क्योंकि, इस प्रकार फलका अभाव होनेसे वेदनीय कर्मके अभावका प्रसंग आता है। इसलिये प्रकृतमें सब कर्मोंका प्रतिषेध करके उदयगत वेदनीय द्रव्यको ही 'वेदना' ऐसा कहा है ।

शंका—आठ कर्मोंका उदयगत पुद्गलस्कन्ध वेदना है, ऐसा यहां क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वेदनाको स्वीकार करनेवाले ऋजुसूत्र नयके अभिप्रायमें

बहिब्भाए तदसंभवादो । ण च अण्णम्हि उजुसुदे अण्णस्स उजुसुदस्स संभवो,[1] भिण्णविसयाणं णयाणमेयविसयत्तविरोहादो ।

सद्दणयस्स वेयणा चेव वेयणा ॥ ४ ॥

वेयणीयदव्वकम्मोदयजणिदसुह-दुक्खाणि अट्ठकम्माणमुदयजणिदजीवपरिणामो वा वेदणा, ण दव्वं; सद्दणयविसए दव्वाभावादो । एवं वेयणणामविहाणमिदि समत्तमणियोगद्दारं ।

वैसा मानना सम्भव नहीं है। [अर्थात् जब कि वेदनाका अर्थ सुख दुख है तो वह ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा जीवगत वेदनीयस्कन्ध ही हो सकता है- जीवगत अन्य कर्मस्कन्ध वेदना नहीं हो सकता।] और अन्य ऋजुसूत्रमें अन्य ऋजुसूत्र सम्भव नहीं है क्योंकि, भिन्न भिन्न विषयोंवाले नयोंका एक विषय माननेमें विरोध आता है। [यही कारण है कि यहां ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा वेदना शब्द द्वारा आठ कर्मोंके उदयगत पुद्गलस्कन्ध नहीं ग्रहण किये गये हैं।]

विशेषार्थ —यहां ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा 'वेदना' का क्या अर्थ है यह बतलाया गया है। सूत्रमें इस नयकी अपेक्षा केवल वेदनीय कर्मको ही वेदना कहा है जिससे ऋजुसूत्र नयका विषय विचारणीय हो गया है। ऋजुसूत्र पर्यायार्थिक नयका एक भेद है। अतः ऐसी शंका होना स्वाभाविक है कि ऋजुसूत्र नयका विषय द्रव्य कैसे हो सकता है। इस शंकाका जो समाधान किया गया है उसका भाव यह है कि एक तो व्यंजन-पर्यायकी अपेक्षा ऋजुसूत्र नयका विषय द्रव्य बन जाता है। दूसरे उत्पाद और व्ययसे द्रव्य सर्वथा स्वतंत्र पदार्थ नहीं है। इसलिये इस अपेक्षासे द्रव्यको ऋजुसूत्र नयका विषय माननेमें कोई बाधा नहीं आती। शेष कथन सुगम है।

शब्द नयकी अपेक्षा वेदना ही वेदना है ॥ ४ ॥

शब्द नयकी अपेक्षा वेदनीय द्रव्य कर्मके उदयसे उत्पन्न हुआ सुख दुख अथवा आठ कर्मोंके उदयसे उत्पन्न हुआ जीवका परिणाम वेदना कहलाता है द्रव्य नहीं, क्योंकि, शब्द नयका विषय द्रव्य नहीं है।

इस प्रकार वेदनानामविधान अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

---

१ आप्रतौ 'संभवो त्ति' इति पाठः।

वेयणदव्वविहाणं

वेयणादव्वविहाणे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति— पदमीमांसा सामित्तमप्पाबहुए त्ति ॥ १ ॥

वेयणा च सा दव्वं तं वेयणादव्वं, तस्स विहाणं उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णादिपरूवणं; विधीयते अनेनेति व्युत्पत्तेः। तं वेयणदव्वविहाणं। तत्थ इमाणि पदमीमांसादितिण्णि अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति। तत्थ पदं दुविहं— ववत्थापदं भेदपदमिदि। जस्स जम्हि अवट्ठाण तस्स तं पदं, ट्ठाणमिदि वुत्तं होदि। जहा सिद्धिखेत्तं सिद्धाणं पद। अत्थालावो[१] अत्थावगमस्स पदं। उत्तं च—

> अत्थो पदेण गम्मइ पदमिह अट्ठरहियमणभिलप्प।
> पदमत्थस्स णिमेणं[२] अत्थालावो पद कुणई[३] ॥ १ ॥

अब वेदनाद्रव्यविधानका प्रकरण है। उसमें पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये तीन अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं ॥ १ ॥

वेदना पदका द्रव्य पदके साथ कर्मधारय समास है—वेदना जो द्रव्य वह वेदना द्रव्य। इसके विधान अर्थात् भेद उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट और जघन्य आदि अनेक हैं जिनका इस अधिकारमें कथन किया गया है। विधान शब्दका व्युत्पत्त्यर्थ है 'विधीयते ऽनेन' जिसके द्वारा विधान किया जाय। यह 'वेदनाद्रव्यविधान' पदका अर्थ है। इसके ये पद-मीमांसा आदि तीन अनुयोगद्वार जानने चाहिये।

पद दो प्रकारका है— व्यवस्थापद और भेदपद। जिसका जिसमें अवस्थान है वह उसका पद अर्थात् स्थान कहलाता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। जैसे सिद्धिक्षेत्र सिद्धोंका पद है। अर्थालाप अर्थपरिज्ञानका पद है। कहा भी है—

अर्थ पदसे जाना जाता है। यहां अर्थ रहित पद उच्चारणके अयोग्य है। पद अर्थका स्थान है। अतः अर्थोच्चारण पदको उत्पन्न करता है ॥ १ ॥

---

१ धप्रतौ 'णामेच', आप्रतौ 'णमेत्त', काप्रतौ 'नामेच' इति पाठ।

२ अप्रतौ 'अत्थाळोम', आप्रतौ 'त्रुटितोऽत्र पाठ, स काप्रतौ अत्थाळोवो' इति पाठः।

३ पदमत्थस्स निमेणं पदमिह अत्थरहियमणहिलप्प। तम्हा आहरियाणं अत्थालावो पद कुणई ॥ जयध. १, पृ ९१.

भेदो विसेसो पुधत्तमिदि एयट्ठो। पद्यते गम्यते परिच्छिद्यते इति पदम्, भेदो चेव पदं भेदपदम्। एत्थ भेदपदेण उक्कस्सादिसरूवेण अहियारो। उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्ण-सादि-अणादि-धुव-अद्धुव-ओज-जुम्म-ओम-विसिट्ठ-णोमणोविसिट्ठपदभेदेण एत्थ तेरस पदाणि। एदेसिं पदाणं मीमांसा परिक्खा जत्थ कीरदि सा पदमीमांसा। उक्कस्सादि-चदुण्णं पदाणं पाओग्गजीवाणं परूवणा जत्थ कीरदि तमणियोगद्दारं सामित्तं णाम। जत्थ एदेसिं चदुण्णं पदाणं थोवबहुत्तं वुच्चदि तमप्पाबहुगं णाम।

एदं देसामासियसुत्तं, तेण एत्थ गुणगार-ओज-ट्ठाण-जीवसमुदाहारा त्ति पंच अणियोगद्दाराणि अण्णाणि वत्तव्वाणि भवंति, अण्णहा संपुण्णपरूवणाभावादो। तेण पुव्विल्लेहि सह एत्थ अट्ठ अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति। उत्तं च—

पदमीमंसा संखा गुणयारो चउत्थयं च सामित्तं।
ओजो अप्पाबहुगं ट्ठाणाणि य जीवसमुदारो ॥ २ ॥

इदि के वि आइरिया भणंति, तण्ण घडदे। कुदो? ण ताव ओजमणियोगद्दारं

भेद, विशेष और पृथक्त्व ये समानार्थक शब्द हैं। पद शब्दका निरुक्त्यर्थ है— 'पद्यते गम्यते परिच्छिद्यते' जो जाना जाय वह पद है। भेद रूप ही पद भेदपद कहलाता है। यहां उत्कृष्ट आदि रूप भेदपदका अधिकार है। उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य, अजघन्य, सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुव, ओज, युग्म, ओम, विशिष्ट और नोओम-नोविशिष्ट पदके भेदसे यहां तेरह पद हैं। इन पदोंकी मीमांसा अर्थात् परीक्षा जिस अधिकारमें की जाती है वह पदमीमांसा अनुयोगद्वार है। उत्कृष्ट आदि चार पदोंके योग्य जीवोंकी प्ररूपणा जहां की जाती है उसका नाम स्वामित्व अनुयोगद्वार है। जहां इन चार पदोंका अल्पबहुत्व कहा जाता है वह अल्पबहुत्व अनुयोगद्वार है।

यह देशामर्शक सूत्र है, इसलिये यहां संख्या, गुणकार, ओज, स्थान और जीवसमुदाहार, ये पांच अन्य अनुयोगद्वार और वक्तव्य हैं, क्योंकि, इनके बिना सम्पूर्ण प्ररूपणा नहीं हो सकती। इसलिये इन पूर्वोक्त तीन अनुयोगद्वारोंके साथ यहां आठ अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं। कहा भी है—

पदमीमांसा, संख्या, गुणकार, चौथा स्वामित्व, ओज, अल्पबहुत्व, स्थान और जीवसमुदाहार, ये आठ अनुयोगद्वार हैं ॥ २ ॥

ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। परन्तु यह घटित नहीं होता। इसीको आगे स्पष्ट करते हैं— ओज अनुयोगद्वार तो पृथग्भूत है नहीं, क्योंकि ओज और युग्म पद—

पुधभूदमत्थि, ओज-जुम्मपरूवणाविणाभाविपदमीमांसाए तस्स पवेसादो[1]। ण भवाणिओगद्दारो वि अत्थि, उवसंहारपरूवणाविणाभाविसामित्तम्मि तस्स पवेसादो[1]। ण गुणगाराणिओगद्दारं पि अत्थि, तस्स गुणगाराविणाभाविअप्पाबहुगम्मि पवेसादो[1]। ण ट्ठाणाणियोगद्दारं पि अत्थि, तस्स ट्ठाणपरूवणाविणाभाविअजहण्ण-अणुक्कस्सदव्वसामित्तम्मि पवेसादो। ण जीवसमुदाहारो वि अत्थि, तस्स वि जीवाविणाभाविचउव्विहदव्वसामित्तम्मि पवेसादो। तम्हा पदमीमांसा सामित्तमप्पाबहुअमिदि तिण्णि चेव अणियोगद्दाराणि भवंति।

पदमीमांसाए णाणावरणीयवेदणा दव्वदो किमुक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा ? ॥ २ ॥

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेण अण्णाओ णव पुच्छाओ कायव्वाओ; अण्णहा पुच्छासुत्तस्स असपुण्णत्तप्पसंगादो। ण च भूदबलिभडारओ महाकम्मपयडिपाहुडपारओ असपुण्णसुत्तकारओ, कारणाभावादो। तम्हा णाणावरणीयवेयणा किमुक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं

अविनाभाविनी पदमीमांसामें उसका अन्तर्भाव हो जाता है। सवया अनुयोगद्वार भी पृथक् नहीं है, क्योंकि, उपसंहार प्ररूपणाके अविनाभावी स्वामित्वमें उसका अन्तर्भाव हो जाता है। गुणकार अनुयोगद्वार भी भिन्न नहीं है, क्योंकि, उसका गुणकारके अविनाभावी अल्पबहुत्वमें अन्तर्भाव हो जाता है। स्थान अनुयोगद्वार भी भिन्न नहीं है, क्योंकि उसका स्थानप्ररूपणाके अविनाभावी अजघन्य अनुत्कृष्ट द्रव्यका कथन करनेवाले स्वामित्व-अनुयोगद्वारमें अन्तर्भाव हो जाता है। जीवसमुदाहार भी भिन्न नहीं है, क्योंकि, उसका भी जीवके अविनाभावी चार प्रकारके द्रव्यका कथन करनेवाले स्वामित्व अनुयोगद्वारमें अन्तर्भाव हो जाता है। इस कारण पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये तीन ही अनुयोगद्वार हैं; यह सिद्ध होता है।

पदमीमांसाका प्रकरण है। ज्ञानावरणीयवेदना द्रव्यसे क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है और क्या अजघन्य है ? ॥ २ ॥

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, अतः यहां अन्य नौ प्रश्न और करने चाहिये; क्योंकि, इनके बिना पृच्छासूत्रकी अपूर्णताका प्रसंग आता है। यदि कहा जाय कि इस तरह तो महाकर्मप्रकृतिप्राभृतके पारगामी भूतबलि भट्टारक असम्पूर्ण सूत्रके कर्ता प्राप्त होते हैं सो बात नहीं है, क्योंकि, उसका कोई कारण नहीं है। इसलिये ज्ञानावरणीयवेदना क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादि है, क्या अनादि

---

१ प्रतौ ' पदेसादो ' इति पाठः।

जहण्णा किमजहण्णा किं सादिया किमणादिया किं धुवा किमद्धुवा किमोजा किं जुम्मा किमोमा किं विसिट्ठा किण्णोमणोविसिट्ठा त्ति तेरसपदविसयमेदं पुच्छासुत्तं दट्ठव्वं। णाणावरणीयवेयणाए विसेसाभावेण सामण्णरूवाए तेरस पुच्छाओ परूविदाओ। सामण्णं विसेसाविणाभावि त्ति कट्टु एदेणेव सुत्तेण सूचिदाओ तेरसपदपुच्छाओ वत्तइस्सामो। तं जहा—

उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा किं सादिया किमणादिया किं धुवा किमद्धुवा किमोजा किं जुम्मा किमोमा किं विसिट्ठा किण्णोमणोविसिट्ठा त्ति बारस पुच्छाओ उक्कस्सपदस्स हवंति। एवं सेसपदाणं पि बारस बारस पुच्छाओ पादेक्कं कायव्वाओ। एत्थ सव्वपुच्छासमासो एगूणसत्तरिसदमेत्तो |१६९|। तम्हा एदम्हि देसामासियसुत्ते अण्णाणि तेरस सुत्ताणि पविट्ठाणि त्ति दट्ठव्वं।

उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा ॥२॥

एदं पि देसामासियसुत्तं, तेणेत्थ सेसणवपदाणि वत्तव्वाणि। देसामासियत्तादो चेव सेसतेरससुत्ताणमेत्थ अंतब्भावो वत्तव्वो। तत्थ ताव पढमसुत्तपरूवणा कीरदे। तं जहा— णाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, गुणिदकम्मंसियसत्तमपुढवीणेरइयम्मि भवट्ठिदिचरिम-

---

है, क्या ध्रुव है क्या अध्रुव है क्या ओज है क्या युग्म है, क्या ओम है क्या विशिष्ट है और क्या नो-ओम-नोविशिष्ट है इस प्रकार तेरह पदविषयक यह पृच्छासूत्र समझना चाहिये। इस प्रकार ज्ञानावरणीयवेदनाके विषयमें विशेषके बिना सामान्य रूपसे प्ररूपणा करनेपर तेरह पृच्छायें कही गई हैं। किन्तु सामान्य विशेषका अविनाभावी होता है ऐसा समझ करके इसी सूत्रसे सूचित होनेवाली अन्य तेरह पदपृच्छाओंको कहते हैं। वे इस प्रकार हैं—

उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना क्या अनुत्कृष्ट है क्या जघन्य है क्या अजघन्य है क्या सादि है क्या अनादि है क्या ध्रुव है क्या अध्रुव है क्या ओज है क्या युग्म है क्या ओम है क्या विशिष्ट है और क्या नोओम-नोविशिष्ट है, इस प्रकार बारह पृच्छायें उत्कृष्ट पदविषयक होती हैं। इसी प्रकार शेष पदोंमेंसे भी प्रत्येक पदविषयक बारह बारह पृच्छायें करनी चाहिये। यहां सब पृच्छाओंका योग एक सौ उनत्तर होता है |१६९|। इसी कारण इस देशामर्शक सूत्रमें तेरह सूत्र और प्रविष्ट हैं, ऐसा यहां समझना चाहिये।

उत्कृष्ट भी है, अनुत्कृष्ट भी है, जघन्य भी है और अजघन्य भी है ॥ २ ॥

यह भी देशामर्शक सूत्र है इसलिये यहां शेष नौ पद कहने चाहिये और देशामर्शक होनेसे ही शेष तेरह सूत्रोंका यहां अन्तर्भाव कहना चाहिये। उनमेंसे पहले प्रथम सूत्रकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणीयवेदना स्यात् उत्कृष्ट है, क्योंकि, भवस्थितिके अन्तिम समयमें वर्तमान गुणितकर्मांशिक सप्तम-पृथिवीके

समए वट्टमाणम्मि उक्कस्सदव्वुवलंभादो । सिया अणुक्कस्सा, कम्मट्ठिदिचरिमसमयगुणिदकम्मंसिय मोत्तूण अण्णत्थ सव्वत्थाणुक्कस्सदव्वुवलंभादो । सिया जहण्णा, खविदकम्मंसियखीणकसायचरिमसमए जहण्णदव्वुवलंभादो । सिया अजहण्णा, सुद्धणयखविदकम्मंसियखीणकसायचरिमसमय मोत्तूण अण्णत्थ अजहण्णदव्वुवलंभादो । सिया सादिया, उक्कस्सादिपदाणमेगसरूवेण अवट्ठाणाभावादो । कध दव्वट्ठियणए उक्कस्सादिपदविसेसाणं संभवो ? ण, णइगमे सामण्णविसेससंभवं पडि विरोहाभावादो । सिया अणादिया, जीवकम्माणं बंधसामण्णस्स आदित्तविरोहादो । सिया धुवा, अभविएसु अभवियसमाणभविएसु च णाणावरणसामण्णस्स वोच्छेदाभावादो । सिया अद्धुवा, केवलिम्हि णाणावरणवोच्छेदुवलंभादो चदुण्णं पदाण सासदभावेण अवट्ठाणाभावादो वा । सिया जुम्मा । जुम्मं सममिदि एयट्ठो । तं दुविहं कद-बादरजुम्मभेएण । तत्थ जो रासी चदुहि अवहिरिज्जदि सो कदजुम्मो

नारकीके उत्कृष्ट द्रव्य पाया जाता है । स्यात् अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, कर्मस्थितिके अन्तिम समयवर्ती गुणितकर्मांशिक नारकीको छोड़कर अन्यत्र सर्वत्र अनुत्कृष्ट द्रव्य पाया जाता है । स्यात् जघन्य है, क्योंकि, क्षपितकर्मांशिक जीवके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य द्रव्य पाया जाता है । स्यात् अजघन्य है, क्योंकि, शुद्ध नयकी अपेक्षा क्षपितकर्मांशिक जीवके क्षीणकषायके अन्तिम समयको छोड़कर अन्यत्र अजघन्य द्रव्य पाया जाता है । स्यात् सादि है, क्योंकि उत्कृष्ट आदि पदोंका एक रूपसे अवस्थान नहीं रहता ।

शंका — द्रव्यार्थिक नयमें उत्कृष्ट आदि पदविशेष कैसे सम्भव हैं ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, अनेकको विषय करनेवाले नैगम नयमें सामान्य और विशेष दोनों सम्भव हैं, इसमें कोई विरोध नहीं आता ।

स्यात् अनादि है, क्योंकि, जीव और कर्मके बन्धसामान्यको सादि माननेमें विरोध आता है । स्यात् ध्रुव है, क्योंकि, अभव्यों और अभव्य समान भव्योंमें ज्ञानावरणसामान्यका विनाश नहीं होता । स्यात् अध्रुव है, क्योंकि, केवलीमें ज्ञानावरणका व्युच्छेद पाया जाता है, अथवा उक्त चार पदोंका शाश्वत रूपसे अवस्थान नहीं रहता । स्यात् युग्म है । युग्म और सम ये एकार्थवाचक शब्द हैं । वह कृतयुग्म और बादरयुग्मके भेदसे दो प्रकारका है । उनमेंसे जो राशि चारसे अपहृत होती है वह कृतयुग्म कहलाती है । जि

१ प्रतिषु 'अविस्त' इति पाठ ।　　　　२ अप्रतौ 'समाणाभविएसु' इति पाठ ।

३ चतुष्केण ह्रियमाणश्चतुः शेषो हि यो भवेत् । अभावाद् भागशेषस्य सख्यात कृतयुग्मकः ॥ १ × × × चतुष्केण ह्रियमाणस्त्रिशेषस्त्र्योज उच्यते । द्विशेषो द्वापरयुग्मः कल्योजश्चैकशेषकः ॥ २ ॥ × × तथा च भगवतीसूत्रे — गो० ! जे ण रासी चउक्केण अवहारेण अवहीरमाणे अवहीरमाणे चउपज्जवसिए से कडजुम्मे, एवं तिपज्जवसिए तेओए, दुपज्जवसिए दावरजुम्मे, एगपज्जवसिए कलिओगे" इति । लो प्र १२, ९

जो रासी चदुहि अवहिरिज्जमाणो दोरूवग्गो होदि सो बादरजुम्मं । जो एगग्गो[1] सो कलि-ओजो । जो तिगग्गो सो तेजोजो[2] । उत्तं च—

चोद्दस बादरजुम्मं सोळस कदजुम्ममेत्थ[3] कलिओजो ।
तेरस तेजोजो खलु पण्णरसेवं खु णिण्णया ॥ १ ॥

तदो णाणावरणम्हि समदव्वसमवादो जुम्मत्त घडदे । सिया ओजा, कत्थ वि तत्थ विसमसंखदव्वुवलंभादो । सिया ओमा, कयाइ पदेसाणमवचयदंसणादो । सिया विसिट्ठा, कयाइ वयादो अहियायदंसणादो । सिया णोमणोविसिट्ठा[4], पादेक्कं पदावयवे विवक्खदे वड्ढि-हाणीण-ममाभावादो । एवं पढमसुत्तपरूवणा कदा [११] ।

संपहि विदियसुत्तत्थो वुच्चदे । तं जहा — उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा जहण्णा अणुक्कस्सा च ण होदि, पडिवक्खे तस्स अत्थित्तविरोहादो । सिया अजहण्णा, जहण्णादो उवरिमसेसदव्ववियप्पावट्ठिदे अजहण्णे उक्कस्सस्स वि संभवादो । सिया सादिया, अणु

राशिको चारसे अवहृत करनेपर दो रूप शेष रहते हैं वह बादरयुग्म कही जाती है। जिसको चारसे अवहृत करनेपर एक अंक शेष रहता है वह कलिओज राशि है। और जिसको चारसे अवहृत करनेपर तीन अंक शेष रहते हैं वह तेजोज राशि है। कहा भी है—

यहां चौदहको बादरयुग्म सोलहको कृतयुग्म तेरहको कलिओज और पन्द्रहको तेजोज राशि जानना चाहिये ॥ १ ॥

इसलिये ज्ञानावरणमें समान द्रव्यकी सम्भावना होनेसे युग्मत्व घटित होता है। स्यात् ओज रूप है क्योंकि कहींपर उसमें विसम संख्या युक्त द्रव्य पाया जाता है। स्यात् ओम है क्योंकि कदाचित् प्रदेशोंका अपचय देखा जाता है। स्यात् विशिष्ट है क्योंकि, कदाचित् व्ययकी अपेक्षा अधिक आय देखी जाती है। स्यात् नोओम नोविशिष्ट है क्योंकि प्रत्येक पदभंगकी विवक्षा होनेपर वृद्धि हानि नहीं देखी जाती। इस प्रकार प्रथम सूत्रकी प्ररूपणा की [११]।

अब द्वितीय सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है—उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना जघन्य और अनुत्कृष्ट नहीं होती क्योंकि अपने प्रतिपक्ष रूपमें उसका अस्तित्व माननेमें विरोध आता है। स्यात् अजघन्य है क्योंकि अजघन्यमें जघन्यसे ऊपरके शेष सब द्रव्य विकल्प सम्मिलित हैं इसलिये उसमें उत्कृष्ट भी सम्भव है। स्यात् सादि है, क्योंकि,

---

१ प्रतिषु 'योगग्गो' इति पाठः　　२ सम्मप्रमाण पृ २४९
३ प्रतिषु 'मेत्त' इति पाठः ।　　४ प्रतिषु 'कयाइं पदयवाणमव-' इति पाठः ।
५ प्रतिषु 'क्यारे' इति पाठः ।　　६ प्रत्योः 'सिया ण णोओमणोविसिट्ठा' इति पाठः ।

क्कस्सादो उक्कस्सदव्वुप्पत्तीए । सिया अद्धुवा, उक्कस्सपदस्स[1] सव्वकालमवट्ठाणाभावादो । [सिया] तेजोजो, चदुहि अवहिरिज्जमाणे तिण्णिरूवावट्ठाणादो । [सिया] णोमणोविसिट्ठा; वड्ढि-हाणीण तत्थ विरोहादो । एवमुक्कस्सणाणावरणीयवेयणा पचपदप्पिया [५] ।

अणुक्कस्सणाणावरणीयवेयणा सिया जहण्णा, उक्कस्सं मोत्तूण सेसहेट्ठिमासेसवियप्पे अणुक्कस्से जहण्णस्स वि समवादो । सिया अजहण्णा, अणुक्कस्सस्स अजहण्णाविणाभावित्तादो । सिया सादी, उक्कस्सादो अणुक्कस्सुप्पत्तीदो अणुक्कस्सादो वि अणुक्कस्सुप्पत्तिदंसणादो च । अणादिया [ण] होदि, अणुक्कस्सपदविसेसविवक्खादो । अणुक्कस्ससामण्णम्मि अप्पिदे वि अणादिया ण होदि, उक्कस्सादो अणुक्कस्सपदपदिदं पडि सादित्तदंसणादो । ण च णिच्चणिगोदेसु वि अणादित्त लब्भदि, तत्थाणुक्कस्सपदाण पल्लट्टणेण सादित्तुवलभादो । सिया अद्धुवा, अणुक्कस्सेक्कपदविसेसस्स सव्वदा अवट्ठाणाभावादो । सिया ओजा, कत्थ वि पदविसेसम्हि अवट्ठिदविसमसखुवलंभादो । सिया जुम्मा, कत्थ वि

अनुत्कृष्टसे उत्कृष्ट द्रव्यकी उत्पत्ति होती है । स्यात् अध्रुव है, क्योंकि, यह उत्कृष्ट पद सर्व काल अवस्थित नहीं रहता। स्यात् तेजोज है, क्योंकि, इसे चारसे अवहृत करनेपर तीन रूप अवस्थित रहते हैं । स्यात् नोओम नोविशिष्ट है, क्योंकि, उसमें वृद्धि और हानि माननेमें विरोध आता है। इस प्रकार उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना पाच पद रूप है [५] ।

अनुत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना स्यात् जघन्य है, क्योंकि, उत्कृष्ट विकल्पको छोड़कर अधस्तन शेष समस्त विकल्प रूप अनुत्कृष्ट पदमें जघन्य पद भी सम्भव है । स्यात् अजघन्य है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट पद अजघन्य पदका अविनाभावी है । स्यात् सादि है, क्योंकि, उत्कृष्टसे अनुत्कृष्टकी उत्पत्ति होती है और अनुत्कृष्टसे भी अनुत्कृष्टकी उत्पत्ति देखी जाती है। अनादि [नहीं] है, क्योंकि, यहां अनुत्कृष्ट रूप पदविशेषकी विवक्षा है। अनुत्कृष्टसामान्यकी विवक्षा होनेपर भी अनादि नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्टसे अनुत्कृष्ट पदके होनेपर सादित्व देखा जाता है । यदि कहा जाय कि इस पदका नित्यनिगोदिया जीवोंमें अनादित्व प्राप्त हो जायगा सो भी बात नहीं है, क्योंकि, वहां अनुत्कृष्ट पदोंके पलटनेसे यह सादित्व पाया जाता है । स्यात् अध्रुव है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट रूप एक पदविशेषका सर्वदा अवस्थान नहीं रहता। स्यात् ओज है, क्योंकि, अनुत्कृष्टके जितने भेद हैं उनमेंसे किसी भी पदविशेषमें विषम सख्याका सद्भाव पाया जाता है। स्यात् युग्म है,

१ प्रतिषु ' -पदस्स एदस्स ', मप्रतौ ' पदस्स पदस्स ' इति पाठ ।

दुविहसमसंखदंसणादो। सिया ओमा, कत्थ वि हाणीदो समुप्पण्णअणुक्कस्सपदुवलंभादो। सिया विसिट्ठा, कत्थ वि वड्ढीदो अणुक्कस्सपदुवलंभादो। सिया णोमणोविसिट्ठा, अणुक्कस्स-ग्गहणम्मि अणुक्कस्सपदविसेसे वा अप्पिदे वड्ढि-हाणीणमभावादो। एवं णाणावरणअणुक्कस्स वेयणा णवपदप्पिया। १। एवं तदियसुत्तपरूवणा कदा।

जहण्णा णाणावरणवेयणा सिया अणुक्कस्सा, अणुक्कस्सजहण्णस्स ओघजहण्णेण विसेसाभावादो। सिया सादिया, अजहण्णादो जहण्णपदुप्पत्तीए। सिया अद्धुवा, सासदत्तेण अवट्ठाणाभावादो। सिया जुम्मा, चदुहि अवहिरिज्जमाणे अग्गाभावादो। सिया णोमणो-विसिट्ठा, वड्ढि-हाणीणमभावादो। एवं जहण्णवेयणा पंचपयारा सरूवेण छप्पयारा वा। ५ ।। एवं चउत्थसुत्तपरूवणा।

क्योंकि, कहींपर दोनों प्रकारकी समसंख्या (ऐसी संख्या जिसे चारसे विभक्त करनेपर कुछ भी शेष न रहे या दो अंक शेष रहें) देखी जाती है। स्यात् ओम है, क्योंकि, कहींपर हानि होनेसे उत्पन्न हुआ अनुत्कृष्ट पद पाया जाता है। स्यात् विशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर वृद्धिके होनेसे उत्पन्न हुआ अनुत्कृष्ट पद पाया जाता है। स्यात् नोओम-नोविशिष्ट है क्योंकि, अनुत्कृष्ट रूप जघन्य पदकी अथवा अनुत्कृष्ट रूप पदविशेषकी विवक्षा होनेपर वृद्धि और हानि नहीं होती। इस प्रकार ज्ञानावरण अनुत्कृष्ट वेदना नौ पद रूप है। ९।। इस प्रकार तृतीय सूत्रकी प्ररूपणा की।

जघन्य ज्ञानावरणवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है क्योंकि, सामान्य जघन्य पदसे अनुत्कृष्ट रूप जघन्य पदमें कोई अन्तर नहीं है। कथंचित् सादि है क्योंकि, अजघन्यसे जघन्य पद उत्पन्न होता है। कथंचित् अध्रुव है क्योंकि, वह शाश्वत रूपसे नहीं पाया जाता। कथंचित् युग्म है क्योंकि, उसे चारसे अपहृत करनेपर कोई अंक शेष नहीं रहता। कथंचित् नोओम नोविशिष्ट है क्योंकि उसमें वृद्धि और हानि नहीं होती। इस प्रकार जघन्य वेदना पांच प्रकारकी है अथवा स्वपदके साथ छह प्रकारकी है। ५ ।। [आशय यह है कि जघन्य वेदना अन्य अजघन्य आदि रूप पदोंकी अपेक्षा पांच प्रकारकी है और इसमें जघन्य पदको जघन्य रूप मानकर मिला देनेपर वह छह प्रकारकी हो जाती है।] इस प्रकार चतुर्थ सूत्रकी प्ररूपणा की।

---

१ प्रतिषु एवं सविट्ठत इति पाठः।

२ अ-काप्रत्योः वा। ६। इति पाठः।

अजहण्णा णाणावरणवेयणा सिया उक्कस्सा, अजहण्णुक्कस्सस्स ओघुक्कस्सादो पुध अणुवलभादो। सिया अणुक्कस्सा, तदविणाभावित्तादो। सिया सादिया, पल्लट्टणेण विणा अजहण्णपदविसेसाणमवट्ठाणाभावादो। सिया अद्धुवा। कारणं सुगम। सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा। सुगम। सिया णोमणोविसिट्ठा, पदविसेस-णिरोहादो। एवमजहण्णा णवभगा दसभंगा वा |९|। एसो पचमसुत्तत्थो।

सादियणाणावरणवेयणा सिया उक्कस्सिया, सिया अणुक्कस्सिया, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया अद्धुवा। ण धुवा, सादिस्स धुवत्तविरोहादो। सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोमणोविसिट्ठा। एवं सादियवेयणाए दस भगा एक्कारस भंगा वा |१०|। एसो छट्ठसुत्तत्थो।

अणादियणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया। कधमणादियाए वेयणाए सादित्त? ण, वेयणासामण्णवेक्खाए

अजघन्य ज्ञानावरणवेदना कथचित् उत्कृष्ट है, क्योंकि, जब उत्कृष्ट पद अजघन्य रूपसे विवक्षित होता है तो वह ओघ उत्कृष्ट पदसे पृथक् नहीं पाया जाता। कथचित् अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, वह उसका अविनाभावी है। कथचित् सादि है, क्योंकि, परिवर्तन हुए विना अजघन्य पदविशेषोंका अवस्थान नहीं होता है। कथंचित् अध्रुव है। इसका [illegible]ण सुगम है। कथंचित् ओज है, कथचित् युग्म है, कथचित् ओम है, और कथंचित् [illegible]ष्ट है। इनका कारण सुगम है। कथचित् नोओम नोविशिष्ट है, क्योंकि, जिसकी [illegible]र वृद्धि नहीं हुई ऐसे पदविशेषकी विवक्षा होनेसे यह विकल्प पाया जाता है। इस [illegible]कार अजघन्यके नौ अथवा दस भग हैं |९|। यह पांचवें सूत्रका अर्थ है।

सादि ज्ञानावरणवेदना कथचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथचित् जघन्य है, कथचित् अजघन्य है, और कथचित् अध्रुव है। ध्रुव नहीं है, क्योंकि, सादिको ध्रुव माननेमें विरोध है। कथंचित् ओज है, कथंचित् युग्म है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है, और कथंचित् नोओम-नोविशिष्ट है। इस प्रकार सादि वेदनाके दस अथवा ग्यारह भंग हैं |१०|। यह छठे सूत्रका अर्थ है।

अनादि ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, कथचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है, कथंचित् अजघन्य है, और कथचित् सादि है।

शका—अनादि वेदनामें सादित्व कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जो वेदनासामान्यकी अपेक्षा अनादि है उसके उत्कृष्ट

अणादियम्मि उक्कस्सादिपदावेक्खाए सादियत्तविरोहाभावादो । सिया धुवा, वेयणासामण्णस्स विणासाभावादो । सिया अद्धुवा, पदविसेसस्स विणासदंसणादो । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोमणोविसिट्ठा । एवमणादियवेयणाए बारसभंगा [१२]। एसो सत्तमसुत्तत्थो ।

धुववेयणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोमणोविसिट्ठा। एवं धुवपदस्स बारसभंगा तेरसभंगा वा [१२]। एसो अट्ठमसुत्तत्थो ।

अद्धुवणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोमणोविसिट्ठा । एवमद्धुवपदस्स दस एक्कारस भंगा वा [१०]। एसो णवमसुत्तत्थो ।

ओजणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया

आदि पदोंकी अपेक्षा सादि होनेमें विरोध नहीं है ।

कथंचित् ध्रुव है क्योंकि वेदनासामान्यका विनाश नहीं होता । कथंचित् अध्रुव है क्योंकि पदविशेषका विनाश देखा जाता है । कथंचित् ओज है कथंचित् युग्म कथंचित् ओम है कथंचित् विशिष्ट है और कथंचित् नोओम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार अनादि वेदनाके बारह भंग हैं [१२]। यह सातवें सूत्रका अर्थ है ।

ध्रुव ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है कथंचित् अनुत्कृष्ट है कथंचित् जघन्य है कथंचित् अजघन्य है कथंचित् सादि है कथंचित् अनादि है कथंचित् अध्रुव है कथंचित् ओज है कथंचित् युग्म है कथंचित् ओम है कथंचित् विशिष्ट है और कथंचित् नोओम नोविशिष्ट है। इस प्रकार ध्रुव पदके बारह अथवा तेरह भंग हैं [१२]। यह आठवें सूत्रका अर्थ है ।

अध्रुव ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है कथंचित् अनुत्कृष्ट है कथंचित् जघन्य है कथंचित् अजघन्य है कथंचित् सादि है कथंचित् ओज है कथंचित् युग्म है, कथंचित् ओम है कथंचित् विशिष्ट है और कथंचित् नोओम-नोविशिष्ट है। इस प्रकार अध्रुव पदके दस अथवा ग्यारह भंग हैं [१०]। यह नौवें सूत्रका अर्थ है ।

ओज ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है कथंचित् अनुत्कृष्ट है कथंचित्

सादिया, सिया अद्धुवा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोमणोविसिट्ठा। एवमोजस्स अट्ठ णव भंगा वा |८|। एसो दसमसुत्तत्थो।

जुम्मणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अद्धुवा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोमणोविसिट्ठा। एवं जुम्मस्स अट्ठ णव भंगा वा |८|। एसो एक्कारसमसुत्तत्थो।

ओमणाणावरणवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा। एवमोमपदस्स छ सत्त भंगा वा |६|। एसो बारसमसुत्तत्थो।

विसिट्ठणाणावरणवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा। एवं विसिट्ठपदस्स छ सत्त भंगा वा |६|। एसो तेरसमसुत्तत्थो।

णोमणोविसिट्ठा णाणावरणवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा,

---

अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है, और कथंचित् नोओम-नोविशिष्ट है। इस प्रकार ओजके आठ अथवा नौ भंग हैं |८|। यह दसवें सूत्रका अर्थ है।

युग्म ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है, और कथंचित् नोओम-नोविशिष्ट है। इस प्रकार युग्मके आठ अथवा नौ भंग हैं |८|। यह ग्यारहवें सूत्रका अर्थ है।

ओम ज्ञानावरणवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओज है, और कथंचित् युग्म है। इस प्रकार ओम पदके छह अथवा सात भंग हैं |६|। यह बारहवें सूत्रका अर्थ है।

विशिष्ट ज्ञानावरणवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओज है, और कथंचित् युग्म है। इस प्रकार विशिष्ट पदके छह अथवा सात भंग हैं। यह तेरहवें सूत्रका अर्थ है।

नोओम-नोविशिष्ट ज्ञानावरणवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है,

सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा। एवमट्ठभंगा |८|। एसो चोद्दसमसुत्तत्थो । एदेसिं पदाणमंकविण्णासो — १३ । ५ । ९ । ५ । ९ । १० । १२ । १२ । १० । ८ । ८ । ६ । ६ । ८ । एत्थ गाहा —

> तेरस पण णव पण णव दस दोबारस दसट्ठ अट्ठेव ।
> छच्छक्कट्ठेव तहा सामण्णपदादिपदभंगा ॥ ४ ॥

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ ४ ॥

जहा णाणावरणीयस्स पदमीमांसा कदा तहा सेससत्तण्णं कम्माणं कायव्वा, विसेसा-

---

कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अनादि है, कथंचित् ध्रुव है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओज है और कथंचित् युग्म है। इस प्रकार आठ भंग हैं |८|। यह चौदहवें सूत्रका अर्थ है। इन पदोंका अंकविन्यास — १३ । ५ । ९ । ५ । ९ । १० । १२ । १२ । १० । ८ । ८ । ६ । ६ । ८ । यहां गाथा —

तेरह पांच नौ पांच नौ दस दो वार बारह दस आठ आठ छह, छह तथा आठ ये सामान्य पद आदिके पदभंग हैं ॥ ४ ॥

इसी प्रकार सात कर्मोंके उत्कृष्ट आदि पद होते हैं ॥ ४ ॥

जैसे ज्ञानावरणीय कर्मकी पदमीमांसा की है वैसे ही शेष सात कर्मोंकी करनी चाहिये क्योंकि, इससे उसमें कोई विशेषता नहीं है।

विशेषार्थ — पदमीमांसाका अर्थ है पदोंका विचार करना। जिसमें उत्कृष्ट आदि पदोंका विचार किया जाता है उसे पदमीमांसा अनुयोगद्वार कहते हैं। प्रकृतमें मुख्यतया ज्ञानावरण कर्मकी अपेक्षा उत्कृष्ट आदि तेरह पदोंका विचार किया गया है। यद्यपि सूत्र कारने कुल उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट जघन्य और अजघन्य इन चार पदोंका ही निर्देश किया है, पर देशामर्षक भावसे इनके अतिरिक्त सादि, अनादि ध्रुव अध्रुव ओज युग्म ओम विशिष्ट और नोओम-नोविशिष्ट ये नौ पद और लिये गये हैं। इस प्रकार कुल तेरह पद मिलाकर इनका ज्ञानावरण कर्मद्रव्यकी अपेक्षा विचार किया गया है। सर्वप्रथम तो यह बतलाया गया है कि ज्ञानावरण कर्ममें ये तेरह पद कैसे घटित होते हैं। फिर इसके बाद ज्ञानावरण कर्मको उत्कृष्ट आदि पदोंमेंसे एक एक रूप स्वीकार करके उसमें अन्य पद कहां कितने सम्भव हैं यह बतलाया गया है और इस प्रकार इतने विवेचनके बाद अन्य सात कर्मोंकी भी इसी प्रकार प्ररूपणा करनेकी सूचना करके पदमीमांसा प्रकरण समाप्त किया गया है। अब आगे इन्हीं विशेषताओंको कोष्टक द्वारा बतलाया जाता है—

सादिया, सिया अद्धुवा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोमणोविसिट्ठा । एवमोजस्स अट्ठ णव भंगा वा |८| । एसो दसमसुत्तत्थो ।

जुम्मणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अद्धुवा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया णोमणोविसिट्ठा । एवं जुम्मस्स अट्ठ णव भंगा वा |८|। एसो एक्कारसमसुत्तत्थो ।

ओमणाणावरणवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एवमोमपदस्स छ सत्त भंगा वा |६| । एसो वारसमसुत्तत्थो ।

विसिट्ठणाणावरणवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एवं विसिट्ठपदस्स छ सत्त भंगा वा |६| । एसो तेरसमसुत्तत्थो ।

णोमणोविसिट्ठा णाणावरणवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा,

---

अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है, और कथंचित् नोओम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार ओजके आठ अथवा नौ भंग हैं |८| । यह दसवें सूत्रका अर्थ है ।

युग्म ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है, और कथंचित् नोओम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार युग्मके आठ अथवा नौ भंग हैं |८|। यह ग्यारहवें सूत्रका अर्थ है ।

ओम ज्ञानावरणवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओज है, और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार ओम पदके छह अथवा सात भंग हैं |६|। यह बारहवें सूत्रका अर्थ है ।

विशिष्ट ज्ञानावरणवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओज है, और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार विशिष्ट पदके छह अथवा सात भंग हैं । यह तेरहवें सूत्रका अर्थ है ।

नोओम-नोविशिष्ट ज्ञानावरणवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है,

सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा। एवमट्ठभंगा [८]। एसो चोद्दसमसुत्तत्थो। एदेसिं पदाणमंकविण्णासो — १३ | ५ | ९ | ५ | ९ | १० | १२ | १२ | १० | ८ | ८ | ६ | ६ | ८ | एत्थ गाहा —

तेरस पण णव पण णव दस दोवारस दसट्ठ अट्ठेव।
छच्छक्कट्ठेव तहा सामण्णपदादिपदभंगा ॥ ४ ॥

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ ४ ॥

जहा णाणावरणीयस्स पदमीमांसा कदा तहा सेससत्तण्णं कम्माणं कायव्वा, विसेसा-

---

कथंचित् जघन्य है कथंचित् अजघन्य है कथंचित् सादि है कथंचित् अध्रुव है कथंचित् ओज है और कथंचित् युग्म है। इस प्रकार आठ भंग हैं [८]। यह चौदहवें सूत्रका अर्थ है। इन पदोंका अंकविन्यास — १३ | ५ | ९ | ५ | ९ | १ | १२ | १२ | १० | ८ | ८ | ६ | ६ | ८ | यहां गाथा —

तेरह पांच नौ पांच नौ दस दो बार बारह दस आठ आठ छह, छह तथा आठ ये सामान्य पद आदिके पदभंग हैं ॥ ४ ॥

इसी प्रकार सात कर्मोंके उत्कृष्ट आदि पद होते हैं ॥ ४ ॥

जैसे ज्ञानावरणीय कर्मकी पदमीमांसा की है वैसे ही शेष सात कर्मोंकी करनी चाहिये क्योंकि, इससे उसमें कोई विशेषता नहीं है।

विशेषार्थ — पदमीमांसाका अर्थ है पदोंका विचार करना। जिसमें उत्कृष्ट आदि पदोंका विचार किया जाता है उसे पदमीमांसा अनुयोगद्वार कहते हैं। प्रकृतमें मुख्यतया ज्ञानावरण कर्मकी अपेक्षा उत्कृष्ट आदि तेरह पदोंका विचार किया गया है। यद्यपि सूत्रकारने कुछ उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट जघन्य और अजघन्य इन चार पदोंका ही निर्देश किया है; पर देशामर्षक भावसे इनके अतिरिक्त सादि अनादि ध्रुव अध्रुव ओज युग्म ओम विशिष्ट और नोओम-नोविशिष्ट, ये नौ पद और लिये गये हैं, इस प्रकार कुल तेरह पद मिलाकर इनका ज्ञानावरण कर्मद्रव्यकी अपेक्षा विचार किया गया है। सर्वप्रथम तो यह बतलाया गया है कि ज्ञानावरण कर्ममें ये तेरह पद कैसे घटित होते हैं। फिर इसके बाद ज्ञानावरण कर्मको उत्कृष्ट आदि पदोंमेंसे एक एक रूप स्वीकार करके उसमें अन्य पद कहां कितने सम्भव हैं यह बतलाया गया है और इस प्रकार इतने विवेचनके बाद अन्य सात कर्मोंकी भी इसी प्रकार प्ररूपणा करनेकी सूचना करके पदमीमांसा प्रकरण समाप्त किया गया है। अब आगे इन्हीं विशेषताओंको कोष्ठक द्वारा बतलाया जाता है—

भावादो । एवं अंतोखित्तओजाणियोगद्दारा पदमीमांसा समत्ता ।

सामित्तं दुविहं जहण्णपदे उक्कस्सपदे ॥ ५ ॥

ज्ञानावरण—

पद	उत्कृष्ट	अनुत्कृष्ट	जघन्य	अजघन्य	सादि	अनादि	ध्रुव	अध्रुव	ओज	युग्म	ओम	विशिष्ट	नोओम.
उत्कृष्ट	,,	×	×	,,	,,	×	×	,,	,,	×	×	×	,,
अनु	×	,,	,,	,,	,,	×	×	,,	,,	,,	,,	,,	,,
जघन्य	×	,,	,,	×	,,	×	×	,,	×	,,	×	×	,,
अजघन्य	,,	,,	×	,,	,,	×	×	,,	,,	,,	,,	,,	,,
सादि	,,	,,	,,	,,	,,	×	×	,,	,,	,,	,,	,,	,,
अनादि	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ध्रुव	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
अध्रुव	,,	,,	,,	,,	,,	×	×	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ओज	,,	,,	×	,,	,,	×	×	,,	,,	×	,,	,,	,,
युग्म	×	,,	,,	,,	,,	×	×	,,	×	,,	,,	,,	,,
ओम	×	,,	×	,,	,,	×	×	,,	,,	,,	,,	,,	,,
विशिष्ट	×	,,	×	,,	,,	×	×	,,	,,	,,	,,	×	×
नोओ	,,	,,	,,	,,	,,	×	×	,,	,,	,,	×	×	,,

ज्ञानावरणके उत्कृष्ट आदि पदोंमें उनके ये अवान्तर पद जिस प्रकार बतलाये हैं उसी प्रकार शेष सात कर्मोंमें भी घटित कर लेना चाहिये । सामान्य पद सर्वत्र तेरह ही हैं, इसलिये उनका अलगसे कोष्ठक नहीं दिया है ।

इस प्रकार ओजानुयोगद्वारगर्भित पदमीमांसा समाप्त हुई ।

स्वामित्व दो प्रकारका है— जघन्य पद रूप और उत्कृष्ट पद रूप ॥ ५ ॥

पदे इदि ण एसा सत्तमी णिद्देसो, किंतु पढमा चेव आदिदेयारा[१]। पदसद्दो ठाणवाचओ घेत्तव्वो। जहण्णं पदं जस्स सामित्तस्स तं जहण्णपदं। उक्कस्सं पदं जस्स सामित्तस्स तमुक्कस्सपदं। ण च जहण्णुक्कस्ससामित्तेहिंतो वदिरित्तमण्णं सामित्तमत्थि, अणुवलंभादो। अजहण्ण-अणुक्कस्सदव्वाणं सामित्तेण सह चउव्विहं सामित्तं किण्ण वुच्चदे? ण, अजहण्ण-अणुक्कस्सदव्वसामित्ते भण्णमाणे वि जहण्णुक्कस्सविहाणं मोत्तूणण्णेण पयारेण सामित्तपरूवणाणुववत्तीदो। तम्हा दुविहं चेव सामित्तमिदि उत्तं। अथवा जहण्णपदे उक्कस्सपदे इदि सत्तमीणिद्देसो। तेण जहण्णपदे एगं सामित्तं उक्कस्सपदे अवरं सामित्तं, एवं दुविहं चेव सामित्तमिदि वत्तव्वं।

सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीयवेयणा दव्वदो उक्कस्सिया कस्स? ॥ ६ ॥

'पदे' यह सप्तमी विभक्ति नहीं है किन्तु प्रथमा विभक्ति ही है, क्योंकि इसमें एकारका आदेश हो जानेसे 'पदे' यह रूप हो गया है। यहां पद शब्द स्थानका वाचक लेना चाहिये। जिस स्वामित्वका जघन्य पद है वह जघन्यपद कहलाता है और जिस स्वामित्वका उत्कृष्ट पद है वह उत्कृष्टपद कहलाता है। और जघन्य व उत्कृष्ट स्वामित्वको छोड़कर दूसरा कोई स्वामित्व है नहीं क्योंकि, वह पाया नहीं जाता।

शंका—अजघन्य और अनुत्कृष्ट द्रव्यके स्वामित्वके साथ चार प्रकारका स्वामित्व क्यों नहीं कहते?

समाधान—नहीं क्योंकि, अजघन्य और अनुत्कृष्ट द्रव्यके स्वामित्वका कथन करनेपर भी जघन्य और उत्कृष्ट विधानको छोड़कर अन्य प्रकारसे स्वामित्वकी प्ररूपणा नहीं बनती। इस कारण सूत्रमें दो प्रकारका ही स्वामित्व है ऐसा कहा है। अथवा, 'जहण्णपदे उक्कस्सपदे' यह सप्तमी विभक्तिका निर्देश है। इसलिये जघन्य पदमें एक स्वामित्व है और उत्कृष्ट पदमें दूसरा स्वामित्व है इस तरह दो प्रकारका ही स्वामित्व है, ऐसा सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये।

अब स्वामित्वकी अपेक्षा उत्कृष्ट पदका प्रकरण है। ज्ञानावरणीयवेदना द्रव्यसे उत्कृष्ट किसके होती है? ॥ ६ ॥

---

१ अ-आप्रत्योः 'अदिदेयारा' इति पाठः।

उक्कस्सपदे जं ट्ठिय सामित्तं तेण अणुगमं णाणावरणीयस्स कस्सामो — णाणावरणीयवेयणावयणं सेसवेयणापडिसेहफलं। दव्वदो त्ति णिद्देसो खेत्तादिपडिसेहफलो। उक्कस्सणिद्देसो जहण्णादिपडिसेहफलो। एदमासंकियसुत्तं, पुच्छाए कारणाभावादो।

जो जीवो बादरपुढवीजीवेसु बेसागरोवमसहस्सेहि सादिरेगेहि ऊणियं कम्मट्ठिदिमच्छिदो[1] ॥ ७ ॥

जीवो चेव उक्कस्सदव्वसामी होदि त्ति कधं णव्वदे ? ण, मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगाणं कम्मासवाणमण्णत्थाभावादो। तेण जो जीवो त्ति जीवो विसेसियं कदो। उवरि उच्चमाणाणि सव्वाणि विसेसणाणि। बादरपुढवी दुविहा जीवाजीवभेएण। तत्थ बादरपुढवीजीवेसु अंतोमुहुत्तूणतसठिदीए[2] ऊणियं कम्मट्ठिदिमच्छिदो जीवो सो उक्कस्सदव्वसामी होदि। कुदो ? सुहुमेइंदियजोगादो बादरेइंदियजोगस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। आउकाइय-

उत्कृष्टपदमें जो स्वामित्व स्थित है उसके साथ ज्ञानावरणका अनुगम करते हैं— 'ज्ञानावरणीयवेदना' इस वचनका फल शेष वेदनाओंका प्रतिषेध करना है। 'द्रव्यसे' इस निर्देशका फल क्षेत्रादिका प्रतिषेध करना है। 'उत्कृष्ट' पदके निर्देशका फल जघन्य आदिका प्रतिषेध करना है। यह आशंकासूत्र है, क्योंकि, यहां पृच्छाका कोई कारण नहीं है।

जो जीव बादर पृथिवीकायिक जीवोंमें कुछ अधिक दो हजार सागरोपमसे कम कर्मस्थिति प्रमाण काल तक रहा हो ॥ ७ ॥

शंका — जीव ही उत्कृष्ट द्रव्यका स्वामी होता है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योग रूप कर्मोंके आस्रव अन्यत्र नहीं पाये जाते। इसीलिये 'जो जीव' इस प्रकार जीवको विशेष्य किया है और आगे कहे जानेवाले सब इसके विशेषण हैं।

बादर पृथिवी जीव और अजीवके भेदसे दो प्रकारकी है। उनमेंसे बादर पृथिवी कायिक जीवोंमें अन्तर्मुहूर्त कम त्रसस्थितिसे हीन कर्मस्थिति प्रमाण काल तक जो जीव रहा है वह उत्कृष्ट द्रव्यका स्वामी होता है, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके योगसे बादर एकेन्द्रियोंका योग असंख्यातगुणा पाया जाता है।

---

१ जो बायरतसकालेणूणं कम्मट्ठिइं तु पुढवीए। बायर [रि] पज्जत्तापज्जत्तगदीहेयरद्धासु ॥ जोग-कसाउक्कोसो बहुसो णिच्चमवि आउबंधं च। जोगजहण्णेणुवरिल्लठिइनिसेगं बहुं किच्चा ॥ कर्मप्रकृति २, ७४-७५

२ प्रतिषु 'अंतोमुहुत्तूणतस्सठिदीए' इति पाठः।

आदिबादरजीवे परिहरिदूण बादरपुढवीकाइएसु किमट्ठं हिंडाविदो ? ण, उववादएयंताणुवड्ढिजोगे परिहरिदूण पुढवीकाइएसु देसूणबावीसवाससहस्साणि परिणामजोगेहि सह पाएण अवट्ठाणुवलंभादो। दसवाससहस्सेहिंतो अहियाउअपुढवीकाइएसु बहुवारं हिंडाविय तत्थुप्पत्तीए असंभवे संते सत्त-तिण्णि-दसवाससहस्साउअ-आउकाइय-वाउकाइय-वणप्फदिकाइएसु किण्ण उप्पाइदो ? ण, तेसिं पज्जत्तापज्जत्तजोगादो पुढवीकाइयपज्जत्तापज्जत्तजोगस्स असंखेज्जगुणत्तादो। तं कुदो णव्वदे ? बादरपुढवीकाइएसु चेव भमिदो त्ति णियमण्णहाणुववत्तीदो। अहवा पहाणणिद्देसोयं तेण अण्णत्थ वि समयाविरोहेण भमिदो त्ति दट्ठव्वं। बादरपुढविकाइएसु

शंका—अप्कायिक आदि बादर जीवोंका परिहार करके बादर पृथिवीकायिक जीवोंमें किस लिये घुमाया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि उपपाद और एकान्तानुवृद्धि योगोंको छोड़कर पृथिवीकायिकोंमें कुछ कम बाईस हजार वर्ष तक परिणामयोगोंके साथ प्रायः अवस्थान पाया जाता है। आशय यह है कि अन्य एकेन्द्रिय कायवालोंकी अपेक्षा पृथिवीकायिक जीवोंकी स्थिति अधिक होती है, इसलिये वहां अधिक काल तक परिणाम योगस्थान सम्भव है। इसीसे इस जीवको अन्य एकेन्द्रिय कायवालोंमें न घुमाकर पृथिवी कायिक जीवोंमें घुमाया है।

शंका — दस हजार वर्षोंसे अधिक आयुवाले पृथिवीकायिकोंमें बहुत बार घुमाकर जब वहां पुनः उत्पन्न कराना सम्भव न हो तब सात हजार, तीन हजार व दस हजार वर्षकी आयुवाले अप्कायिक, वायुकायिक व वनस्पतिकायिक जीवोंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया ?

समाधान — नहीं क्योंकि उनके पर्याप्त व अपर्याप्त योगसे पृथिवीकायिक जीवोंका पर्याप्त व अपर्याप्त योग असंख्यातगुणा है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना ?

समाधान— बादर पृथिवीकायिकोंमें ही रहा यह *नियम अन्यथा बन नहीं* सकता इससे जाना है कि अप्कायिकादिकोंके पर्याप्त व अपर्याप्त योगसे पृथिवीकायिकोंका पर्याप्त व अपर्याप्त योग असंख्यातगुणा होता है। अथवा यह प्रधान निर्देश है इसलिये अन्य जीवोंमें भी आगमाविरोधसे रहा ऐसा इस सूत्रका आशय समझना चाहिये।

---

१ अप्रतौ -सहस्साउआ आउ इति पाठः।

सयल कम्मट्ठिदिं किण्ण हिंडाविदो ? ण, तसकाइएसु एइंदिएहिंतो असंखेज्जगुणजोगाउएसु सकिलेसबहुलेसु हिंडाविय तत्तो असंखेज्जगुणदव्वसंचयस्स तत्थेवावट्ठिदस्स अणुवलंभादो। जदि एवं तो तसकाइएसु चेव कम्मट्ठिदिं किण्ण हिंडाविदो ? ण, सादिरेयवेसागरोवमसहस्स मोत्तूण तत्थ तीससागरोवमकोडाकोडिकालमवट्ठाणाभावादो। तसकाइएसु सगट्ठिदिकालब्भंतरे उक्कस्सदव्वसंचयं काऊण पुणो बादरपुढवीकाइएसुप्पज्जिय तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो तसट्ठिदिं भमिय एइंदिएसुप्पाइय एवं कम्मट्ठिदिं किण्ण हिंडाविदो ? ण, तसट्ठिदिं समाणिय एइंदिएसु पविट्ठस्स तसेसु संचिददव्वमगालिय णिग्गमाभावादो। एदं कुदो णव्वदे ? तस-

---

शंका—बादर पृथिवीकायिकोंमें सम्पूर्ण कर्मस्थिति प्रमाण काल तक क्यों नहीं घुमाया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि एकेन्द्रियोंसे त्रसोंका योग और आयु असंख्यातगुणी होती है और वे सक्लेश बहुत होते हैं इसलिये पृथिवीकायिकोंमें घुमानेके पश्चात् त्रसोंमें घुमाया। यदि एकेन्द्रियोंमें ही रखते तो इनकी अपेक्षा त्रसोंमें जो असंख्यातगुणे द्रव्यका संचय होता है वह नहीं प्राप्त होता। यही कारण है कि सम्पूर्ण कर्मस्थिति प्रमाण काल तक एकेन्द्रियोंमें नहीं घुमाया है।

शंका—यदि ऐसा है तो त्रसकायिकोंमें ही कर्मस्थिति प्रमाण काल तक क्यों नहीं घुमाया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वहा कुछ अधिक दो हजार सागरोपम काल तक ही अवस्थान हो सकता है, पूरे तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम काल तक अवस्थान नहीं हो सकता।

शंका—त्रसकायिकोंमें अपनी स्थिति प्रमाण कालके भीतर उत्कृष्ट द्रव्यका संचय करके पुनः बादर पृथिवीकायिकोंमें उत्पन्न होकर वहा अन्तर्मुहूर्त रहकर फिर त्रसस्थिति काल तक त्रसोंमें भ्रमण करके एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न कराते। इस तरह कर्मस्थिति प्रमाण काल तक क्यों नहीं घुमाया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि त्रसस्थितिको पूर्ण करके जो जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते है उन त्रसोंमें संचित हुए द्रव्यको विना गाले निकलना नहीं होता।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

द्विदीए उवरि कम्मट्ठिदिमच्छिदो त्ति सुत्तणिद्देसादो। बादरपुढवीकाइएसु भमंतस्स परिणमण णियमपरूवणा उवरिमसुत्तेहि कीरदे—

तत्थ य संसरमाणस्स बहुवा पज्जत्तभवा थोवा अपज्जत्तभवा भवंति ॥ ८ ॥

उप्पत्तिवारा भवा, पज्जत्ताण भवा पज्जत्तभवा, ते बहुआ। पज्जत्तेसुप्पज्जणवार सलागाओ बहुवा त्ति[1] वुत्तं होदि। के पेक्खिदूण बहुआ पज्जत्तभवा? खविदकम्मंसिय-खविद गुणिद घोलमाणपज्जत्तभवे। अपज्जत्तभवा थोवा। केहिंतो? खविद-कम्मंसिय-खविद-गुणिद

समाधान—यह त्रसस्थितिसे कम कर्मस्थिति प्रमाण काल तक रहा' सूत्रके इसी निर्देशसे जाना जाता है।

अब बादर पृथिवीकायिकोंमें रहनेवाले जीवके परिणमनके नियमोंकी प्ररूपणा आगेके सूत्रों द्वारा की जाती है—

वहां परिभ्रमण करनेवाले जीवके पर्याप्तभव बहुत और अपर्याप्तभव थोड़े होते हैं ॥ ८ ॥

उत्पत्तिके वारोंका नाम भव है और पर्याप्तोंके भव पर्याप्तभव कहलाते हैं। वे बहुत हैं। पर्याप्तोंमें उत्पन्न होनेकी वारशलाकायें बहुत हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—किनकी अपेक्षा पर्याप्तभव बहुत हैं?

समाधान—क्षपितकर्मांशिकके क्षपित, गुणित व घोलमान पर्याप्तभवोंकी अपेक्षा बहुत हैं।

अपर्याप्तभव थोड़े हैं?

शंका—किनसे थोड़े हैं?

समाधान—क्षपितकर्मांशिकके क्षपित गुणित व घोलमान अपर्याप्त भवोंसे थोड़े हैं।

---

१ प्रतिषु भावा इति पाठः। १ ष. ख. १-७४

२ प्रतिषु पज्जत्तेसु पज्जणवारसलाय बहुवा त्ति त्ति इति पाठः।

घोलमाण-अपज्जत्तभवेहिंतो । गुणिदकम्मंसियस्स अपज्जत्तभवेहिंतो तस्सेव पज्जत्तभवा बहुगा त्ति किण्ण भण्णदे[1] ? ण, बादरपुढवीकाइयअपज्जत्तभवसलागाहिंतो पज्जत्तभवसलागाणं बहुत्तस्स अणुत्तसिद्धीदो । कुदो बहुत्तं णव्वदे ? बादरणिगोदपज्जत्ताण भवट्ठिदी संखेज्जवस्ससहस्समेत्ता अपज्जत्ताणमंतोमुहुत्तमेत्ता त्ति कालाणिओगद्दारसुत्तादो[2] । सति संभवे व्यभिचारे च विशेषणमर्थवद् भवति । ण चैतद्विशेषणमत्रार्थवत् व्यभिचाराभावात् । तदो पुव्विल्लो चेव अत्थो घेत्तव्वो । किमट्ठं पज्जत्तेसु[3] चेव बहुसो उप्पादिदो ? अपज्जत्तजोगेहिंतो पज्जत्तजोगाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । किमट्ठं जोगबहुत्तमिच्छिज्जदे ? ण, जोगादो पदेसबहुत्त-

शंका—गुणितकर्मांशिकके अपर्याप्त भवोंसे उसके ही पर्याप्तभव बहुत हैं, ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, बादर पृथिवीकायिककी अपर्याप्त भव शलाकाओंसे पर्याप्त-भव-शलाकायें बहुत हैं, यह विना कहे भी सिद्ध है ।

शंका—उनका बहुत्व किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

सामाधन—' बादर निगोद पर्याप्तोंकी भवस्थिति संख्यात हजार वर्ष प्रमाण है और अपर्याप्तोंकी अन्तर्मुहूर्त मात्र है ' इस कालानुयोगद्वारके सूत्रसे जाना जाता है ।

व्यभिचारके होनेपर या उसकी सम्भावना होनेपर विशेषण प्रयोजनवाला होता है ऐसा नियम है । किन्तु यह विशेषण यहां प्रयोजनवाला नहीं है, क्योंकि, व्यभिचारका अभाव है । इस कारण पूर्वोक्त अर्थ ही ग्रहण करना चाहिये ।

शंका—पर्याप्तोंमें ही बहुत बार क्यों उत्पन्न कराया ?

समाधान—चूंकि अपर्याप्तकोंके योगोंसे पर्याप्तकोंके योग असंख्यातगुणे पाये जाते हैं, अतः उन्हींमें बहुत बार उत्पन्न कराया है ।

शंका—योगोंकी बहुलता क्यों अभीष्ट है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, योगसे प्रदेशोंकी अधिकता सिद्ध होती है ।

१ अप्रती ' भाणिदे ' इति पाठ । २ कालाणुगम १५६ ३ प्रतिषु ' पडितेसु ' इति पाठः ।

सिद्धीदो । तं पि कुदो ? जोगा पयडि-पदेसा त्ति सुत्तादो[1] ।

दीहाओ पज्जत्तद्धाओ रहस्साओ अपज्जत्तद्धाओ ॥ ९ ॥

पज्जत्ताणमद्धाओ आउआणि[3] पज्जत्तद्धाओ, ताओ दीहाओ । कुदो ? खविदकम्मंसियखविद-गुणिद-घोलमाणपज्जत्तद्धाहिंतो । अपज्जत्तद्धाओ रहस्साओ । केहिंतो ? खविदकम्मंसिय-खविद-गुणिद-घोलमाणअपज्जत्तद्धाहिंतो । पज्जत्तेसुप्पज्जमाणो दीहाउएसु चेव उप्पज्जदि अपज्जत्तएसु उप्पज्जमाणो अप्पाउएसु चेव उप्पज्जदि त्ति वुत्तं होदि । अपज्जत्तद्धाहिंतो सगपज्जत्तद्धाओ दीहाओ त्ति किण्ण भण्णदे ? ण, वभिचाराभावेण विसेसणस्स

शंका—यह भी किस प्रमाणसे सिद्ध है ?

समाधान—योगसे प्रकृति और प्रदेश बन्ध होते हैं इस सूत्रसे यह सिद्ध है ।

पर्याप्त काल दीर्घ और अपर्याप्त काल थोड़े होते हैं ॥ ९ ॥[2]

पर्याप्तोंके काल अर्थात् आयु पर्याप्तकाल कहलाते हैं । वे दीर्घ हैं ।

शंका—किनसे दीर्घ हैं ?

समाधान—क्षपितकर्मांशिकके क्षपित गुणित और घोलमान पर्याप्तकालोंसे दीर्घ अपर्याप्तकाल थोड़े हैं ।

शंका—किनसे थोड़े हैं ?

समाधान—क्षपितकर्मांशिकके क्षपित गुणित और घोलमान अपर्याप्तकालोंसे थोड़े हैं ।

पर्याप्तकोंमें उत्पन्न होता हुआ भी दीर्घ आयुवालोंमें ही उत्पन्न होता है और अपर्याप्तोंमें उत्पन्न होता हुआ अल्प आयुवालोंमें ही उत्पन्न होता है यह उक्त सूत्रका अभिप्राय है ।

शंका—अपर्याप्तकालोंसे अपना पर्याप्तकाल दीर्घ है ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि इस कथनमें कोई व्यभिचार न होनेसे उक्त विशेषणके

---

१ गो. क. २५७   २ क. प्र. १, ७४

३ अप्रतौ आउअणि इति पाठः ।   ४ अप्रतौ कणा इति पाठः ।

५ अ-आ-ताप्रतिषु अप्पाउएसु इति पाठः। मप्रतौ तत्र त्रुटितः पाठः ।

वैफल्यप्रसंगात् ।

एत्थेव सुत्तम्मि णिलीणस्स बिदियसुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा— पज्जत्तएसु दीहाउएसु उप्पण्णस्स आउअभागा दो हवंति एगो पज्जत्तभागो अवरो अपज्जत्तभागो त्ति । तत्थ दीहाओ पज्जत्तद्धाओ त्ति उत्ते खविदकम्मंसिय-खविद-गुणिद-घोलमाणपज्जत्तद्धाहिंतो गुणिदकम्मंसियपज्जत्तद्धाओ दीहाओ, तेसिमपज्जत्तद्धाहिंतो एदस्स अपज्जत्तद्धाओ रहस्साओ त्ति घेत्तव्वं । पज्जत्तएसु दीहाउएसु उप्पण्णो वि सव्वलहुएण कालेण पज्जत्तीयो समाणेदि त्ति वुत्तं होदि । किमट्ठं एदाणि दो वि सुत्ताणि उच्चंति ? एयंताणुवड्ढिजोगे परिहरिय परिणामजोगग्गहणट्ठं ।

जदा जदा आउअं बंधदि तदा तदा तप्पाओग्गेण जहण्णएण जोगेण बंधदि[1] ॥ १० ॥

अपज्जत्त-पज्जत्तुववादेयंताणुवड्ढिजोगाणं परिहरणट्ठमाउअबंधपाओग्गजहण्णपरिणाम-

निष्फल होनेका प्रसंग आता है ।

अब इसी सूत्रमें गर्भित द्वितीय सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— दीर्घ आयुवाले पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुए जीवके आयुके दो भाग होते हैं एक पर्याप्तभाग और दूसरा अपर्याप्त भाग । सो यहां 'पर्याप्तकाल दीर्घ होते हैं' ऐसा कहनेपर क्षपितकर्मांशिकके क्षपितगुणित और घोलमान पर्याप्तकालोंसे गुणितकर्मांशिकके पर्याप्तकाल दीर्घ होते हैं और उनके अपर्याप्तकालोंसे इसके अपर्याप्तकाल थोड़े होते हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । दीर्घ आयुवाले पर्याप्तोंमें उत्पन्न होकर भी सबसे अल्प काल द्वारा पर्याप्तियोंको पूर्ण करता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका — ये दोनों ही सूत्र किसलिये कहे जाते हैं ?

समाधान — एकान्तानुवृद्धियोंको छोड़कर परिणामयोगोंका ग्रहण करनेके लिये उक्त दोनों सूत्र कहे गये हैं ।

जब जब आयुको बांधता है तब तब उसके योग्य जघन्य योगसे बांधता है ॥१०॥

अपर्याप्त व पर्याप्त भवसम्बन्धी उपपाद और एकान्तानुवृद्धि योगोंका निषेध करनेके लिये तथा आयुबन्धके योग्य जघन्य परिणाम योगका ग्रहण करनेके लिये उसके

१ क. प्र. २-७५.

जोगग्गहणहं ण तप्पाओग्गजहण्णजोगग्गहणं कदं । कम्मट्ठिदिपढमसमयप्पहुडि जाव तिस्से चरिमसमओ त्ति ताव गुणिदकम्मंसियपाओग्गाणं जोगट्ठाणाणं पतीए देसादिणियमेणा-वट्ठिदाए खग्गधारासरिसीए जहण्णुक्कस्सजोगा भत्थि । तत्थ आउअबंधपाओग्गजहण्ण-जोगेहि चेव आउअं बंधदि त्ति उत्तं होदि ।

किमट्ठं जहण्णजोगेण चेव आउअं बंधाविज्जदे ? णाणावरणस्स उक्कस्ससंचयट्ठं, ण अण्णहा उक्कस्ससंचओ । कुदो ? उक्कस्सजोगकाले आउए बंधाविदे जहण्णजोगेण आउअं बंधमाणस्स णाणावरणक्खयादो असंखेज्जगुणदव्वक्खयदंसणादो । एदमत्थं संदिट्ठीए जाणा वेमो — एत्थ ताव छस्सट्ठ रासीओ तिण्णि वि ओहट्टाविय एगरूवावसेसे सव्वभागहारणमण्णोण्ण ब्भासे कदे विरलणरासी उप्पज्जदि । तिस्से पमाणमट्ठसट्ठिसयं [१६८] । एदं संदिट्ठीए जहण्ण-जोगागददव्वं बत्तीसरूवेहि [३२] उक्कस्सजोगगुणगारा त्ति कप्पिदेहि गुणिदे उक्कस्सदव्वं तेवण्ण छहत्तरिमेत्तियं होदि [५३७६] । एत्थ सत्तविधबंधगस्स णाणावरणेण बद्धदव्वं सत्त

योग्य जघन्य योगका ग्रहण किया है । कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर उसके अन्तिम समय तक गुणितकर्मांशिक जीवके योग्य योगस्थानोंकी देशादिके नियमसे अवस्थित खड्गधाराके समान एक पंक्तिमें अवस्थित जघन्य व उत्कृष्ट दोनों प्रकारके योग पाये जाते हैं । उनमेंसे आयुबन्धके योग्य जघन्य योगोंसे ही आयुको बांधता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका — जघन्य योगसे ही आयुका बन्ध क्यों कराया जाता है ?

समाधान — ज्ञानावरणकर्मका उत्कृष्ट संचय करानेके लिये जघन्य योगसे ही आयुका बन्ध कराया जाता है अन्यथा उत्कृष्ट संचय नहीं हो सकता । कारण कि उत्कृष्ट योगके कालमें आयुके बंधानेपर, जघन्य योगसे आयुको बांधनेवालेके ज्ञानावरणद्रव्यका जो क्षय होता है उससे असंख्यातगुणे द्रव्यका क्षय देखा जाता है । इसी अर्थको संदृष्टि द्वारा बतलाते हैं — यहां छह सात व आठ राशियां हैं इन तीनोंको ही अपवर्तित कर एक रूपके शेष होनेपर समस्त भागहारोंका परस्पर गुणा करनेपर विरलित राशि उत्पन्न होती है । उसका प्रमाण एक सौ अड़सठ है [१६८] । यह संदृष्टिमें जघन्य योगसे प्राप्त द्रव्य है । इस उत्कृष्ट गुणकार रूपसे कल्पित बत्तीस [३२] रूपोंसे गुणित करनेपर उत्कृष्ट द्रव्य तिरेपन सौ छयत्तर [१६ × ३२=५३७६] होता है । यहां [आयुके बिना] सात कर्मोंको बांधनेवालेके ज्ञानावरण द्वारा प्राप्त द्रव्य सात सौ अड़सठ [५३७६÷७=

---

१ प्रतिषु 'जोगट्ठाण ' इति पाठः ।   २ प्रतिषु 'जोगा' इति पाठः ।

३ प्रतिषु 'छाहत्तरिमेत्तियं' इति पाठः ।

सदट्ठसट्ठिमेत्तियं |७६८| । अट्ठविहबंधगस्स णाणावरणेण लद्धदव्वं छस्सदबाहत्तरिमेत्तं, पुव्विल्ल-लद्धदव्वस्स अट्ठमभागक्खयादो |६७२| । हाणिपमाण छण्णउदी |९६| । जहण्णजोगदव्वम्मि सत्त बंधमाणस्स णाणावरणभागो चउवीस |२४| । अट्ठ बंधमाणस्स णाणावरणभागो एक्क-वीस |२१|, पुव्वदव्वस्स अट्ठमभागाभावादो । दोण्णमंतर तिण्णि । एदमुक्कस्सदव्वस्स लद्धतरम्मि सोहिदे सदिट्ठीए तिणउदी णाणावरणक्खओ होदि |९३| । रूऊणुक्कस्सजोग-गुणगारेण जहण्णजोगदव्वक्खए गुणिदे जो रासी उप्पज्जदि, जोग पडि एत्तियमेत्तदव्व-परिरक्खणट्ठमाउअ जहण्णजोगेण बंधाविद । एदमपवादसुत्त । तेण बहुसो बहुसो उक्कस्साणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि त्ति एदस्स उस्सग्गसुत्तस्स बाहयं होदि । आउअबंधकाल मोत्तूण अण्णत्थ तं पयट्टदि त्ति उत्तं होदि ।

उवरिल्लीणं ठिदीणं णिसेयस्स उक्कस्सपदे हेट्ठिल्लीणं ट्ठिदीणं णिसेयस्स जहण्णपदे[1] ॥ ११ ॥

७६८] मात्र है । आठ कर्मोंको बांधनेवालेके ज्ञानावरण द्वारा प्राप्त द्रव्य छह सौ बहत्तर [५३७६÷८=६७२] मात्र है, क्योंकि, यहा पूर्वके प्राप्त द्रव्यके आठवें भाग [$\frac{७६८}{८}$] का क्षय है । हानिका प्रमाण छयानबै [७६८-६७२=९६] है । जघन्य योग सम्बन्धी द्रव्यके रहते हुए सातको बांधनेवालेके ज्ञानावरणका भाग चौबीस [१६८÷७=२४] है । आठको बांधनेवालेके ज्ञानावरणका भाग इक्कीस [१६८÷८=२१] है, क्योंकि, यहा पूर्व द्रव्यके आठवें भाग [$\frac{२४}{८}$] का अभाव है । दोनोंका अन्तर तीन है । इसको उत्कृष्ट द्रव्यके प्राप्त हुए अन्तरमेंसे घटा देनेपर अंक संदृष्टिकी अपेक्षा तेरानबै अंक प्रमाण ९६-३=९३] ज्ञानावरणका क्षय होता है । एक कम उत्कृष्ट योगके गुणकारसे जघन्य योगके द्रव्यके क्षयको गुणित करनेपर जो राशि उत्पन्न होती है { (३२ - १) × ३ = ९३ } योगके प्रति इतने मात्र द्रव्यके रक्षणार्थ आयुको जघन्य योग द्वारा बंधाया है ।

यह अपवादसूत्र है । इसलिये ' बहुत बहुत बार उत्कृष्ट योगस्थानोंको प्राप्त होता है ' इस उत्सर्गसूत्रका वह बाधक है । आयुके बन्धकालको छोड़कर अन्यत्र वह सूत्र प्रवृत्त होता है, यह फलितार्थ है ।

उपरिम स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद होता है । और अधस्तन स्थितियोंके निषेकका जघन्य पद होता है ॥ ११ ॥

---

१ क प्र २-७५

उक्कस्सपदे उक्कस्सपदं जहण्णपदे जहण्णपद त्ति वुत्तं होदि। खविदकम्मंसिय खविद-गुणिद-घोलमाणाण उक्कड्डणादो एदस्स उक्कड्डणा बहुगी। तेसिं चेव तिण्णमोकड्डणादो एदेणोकड्डिज्जमाणदव्वं थोवं ति उत्तं होदि। गुणिदकम्मंसियमोकड्डिज्जमाणदव्वादो तेणेव उक्कड्डिज्जमाणदव्वं बहुगमिदि किण्ण भण्णदे? ण, विसोहिअद्धाए तहाणुवलंभादो। एइंदिएसु णाणावरणुक्कस्सट्ठिदिबंधो सागरोवमस्स तिण्णिसत्तभागमेत्तो। तेण बंधसमयादो पलिदोवमेत्ते काले गदे पयदसमयपबद्धस्स सव्वे परमाणू परिसडंति। तदो णत्थि उक्कड्डणाए पओजणमिदि? ण, सागरोवमतिण्णिसत्तभागमेत्ते काले अदिक्कंते पयदसमयपबद्धस्स ण सव्वे कम्मक्खंधा गलंति, उक्कड्डणाए पडुविदट्ठिदिसंतत्तादो। तं पि कुदो णव्वदे? वेसागरोवम सहस्सेहि ऊणिय कम्मट्ठिदिमच्छिदो त्ति सुत्तण्णहाणुववत्तीदो। जदि एवं तो अणंतकाल-

---

उक्कस्सपदे' से 'उक्कस्सपदं' और 'जहण्णपदे' से 'जहण्णपदं' ऐसी प्रथमा विभक्तिका अभिप्राय है। क्षपितकर्मांशिक जीवके क्षपित-गुणित और घोलमान कर्मोंके उत्कर्षणसे इसका उत्कर्षण बहुत है। और उन्हीं तीनके अपकर्षणसे इसके द्वारा अपकर्षित किया जानेवाला द्रव्य थोड़ा है, यह उसका फलितार्थ है।

शंका—गुणितकर्मांशिकके अपकर्षमाण द्रव्यसे उसके ही द्वारा उत्कर्षमाण द्रव्य बहुत है ऐसा क्यों नहीं कहते?

समाधान—नहीं क्योंकि, विशुद्धिकालमें वैसा नहीं पाया जाता।

शंका—एकेन्द्रियोंमें ज्ञानावरणका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे तीन भाग प्रमाण होता है। इसलिये बन्धसमयसे लेकर इतने कालके बीतनेपर प्रकृत समयप्रबद्धके सब परमाणु निर्जीर्ण हो जाते हैं। इस कारण प्रकृतमें ऐसे उत्कर्षणसे कुछ प्रयोजन नहीं है?

समाधान—नहीं, सागरोपमके सात भागोंमेंसे तीन भाग मात्र कालके बीतनेपर प्रकृत समयप्रबद्धके सब कर्मस्कन्ध नहीं गलते, क्योंकि उत्कर्षण द्वारा उनका स्थिति सत्त्व बढ़ा लिया जाता है।

शंका—यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—'दो हजार सागरोपमोंसे कम कर्मस्थिति प्रमाण काल तक रहा' यह सूत्र अन्यथा बन नहीं सकता अतः जाना जाता है कि स्थितिसत्त्व बढ़ा लिया जाता है।

शंका—यदि ऐसा हो तो अनन्त काल तक उत्कर्षण कराकर संचय क्यों नहीं कराते?

मुक्कड्डाविय[1] किण्ण सचओ घेप्पदे ? ण, कम्मक्खंधाणं तेत्तियमेत्तकालमुक्कड्डणसत्तीए अभावादो। त पि कुदो णव्वदे ? वत्तिकम्मट्ठिदिअणुसारिणी सत्तिकम्मट्ठिदि त्ति वयणादो। बहुसो बहुसो बहुसंकिलेस गदो त्ति सुत्तादो चेव ट्ठिदिवधबहुत्तमुक्कड्डणाबहुत्तं च सिद्धं, तदो णिरत्थयमिद सुत्तमिदि[2] ? होदि णिरत्थय जदि कसायमेत्तमुक्कड्डणाए कारण, किंतु तिव्वमिच्छत्तं अरहंत-सिद्ध-बहुसुदाइरियच्चासणा तिव्वकसाओ च उक्कड्डणाकारणं। तेण ण णिरत्थयमिदं सुत्त।

अधवा 'उवरिल्लीण ट्ठिदीण णिसेयस्स' एदस्स सुत्तस्स एवमत्थपरूवणा कायव्वा। तं जहा— बज्झमाणुक्कड्डिज्जमाणपदेसग्ग णिसिंचमाणो गुणिदकम्मसिओ अंतरंगकारण-सहाओ पढमाए ट्ठिदीए थोवं णिसिंचदि, विदियाए विसेसाहिय, तदियाए विसेसाहिय, एव

ग्रहण किया जाता ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, कर्मस्कन्धोंकी उतने काल तक उत्कर्षणशक्तिका अभाव है।

शका— वह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—'व्यक्त अवस्थाको प्राप्त हुई कर्मस्थितिका अनुसरण करनेवाली शक्ति रूप कर्मस्थिति होती है' इस वचनसे जाना जाता है।

शंका—'बहुत बहुत वार बहुत सक्लेशको प्राप्त हुआ' इस सूत्रसे ही स्थिति-बन्धकी अधिकता और उत्कर्षणकी अधिकता सिद्ध है, अत. यह सूत्र निरर्थक है ?

समाधान — यदि कषाय मात्र ही उत्कर्षणका कारण होता तो वह सूत्र निरर्थक होता। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, तीव्र मिथ्यात्व व अरहत, सिद्ध, बहुश्रुत एव आचार्यकी अत्यासना अर्थात् आसादना और तीव्र कषाय उत्कर्षणका कारण है। इस कारण यह सूत्र निरर्थक नहीं है।

अथवा 'उपरिम स्थितियोंके निषेकका' इस सूत्रके अर्थका इस प्रकार कथन करना चाहिये। यथा — बध्यमान और उत्कर्षमाण प्रदेशाग्रको निक्षिप्त करता हुआ गुणित-कर्मांशिक जीव अन्तरंग कारण वश प्रथम स्थितिमें थोड़े प्रक्षिप्त करता है। द्वितीय स्थितिमें विशेष अधिक प्रक्षिप्त करता है। तृतीय स्थितिमें विशेष अधिक प्रक्षिप्त करता

१ अ-आ का प्रतिषु 'मुक्कड्डणाविय' इति पाठ ।

२ अ का सप्रतिषु 'तदो तण्णिरत्थय', आप्रतौ 'तदो ताणिरत्थय', मप्रतौ 'तदो ण णिरत्थय-' इति पाठः।

३ पचेव अत्थिकाया छज्जीवणिकाय महव्वया पच। पवयणमाउ पयत्था तेतीसच्चासणा भणिया ॥ मूला २, १८

विसेसाहियकमेण णिसिंचदि जा उक्कस्सट्ठिदि त्ति । एसा णिसेयरचणा गुणिदकम्मंसियस्स होदि त्ति कधं णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । ण च पमाणं पमाणंतरमवेक्खदे, अणवत्थापसंगादो ।

पदेसपचयविण्णासेण विणा उक्कड्डणापदेसरचणाए इदं सुत्तं किण्ण उच्चदे ? ण, बंधाणुसारिणीए उक्कड्डणाए पुधपदेसविण्णासाणुववत्तीदो । पदेसविण्णासविसेसमट्ठमहोदूण सेसपुरिसोकड्डुक्कड्डणाहिंतो गुणिदकम्मंसिओकड्डुक्कड्डणाणं थोवबहुत्तपदुप्पायणट्ठमिदं सुत्तं किण्ण भवे ? ण, बहुसो बहुसो संकिलेसं गदो त्ति सुत्तादो एदस्स अत्थस्स सिद्धीदो । ण च तित्थयराच्चासणादणालक्खणमिच्छत्तेण विणा तिव्वकसाओ होदि, अणुवलंभादो ।

है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिके प्राप्त होने तक विशेष अधिकके क्रमसे प्रक्षेप करता है ।

शंका — यह निषेकरचना गुणितकर्मांशिक जीवके होती है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान — इसी सूत्रसे जाना जाता है । और एक प्रमाण दूसरे प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता क्योंकि ऐसा माननेपर अनवस्था दोषका प्रसंग आता है ।

शंका — यह सूत्र बंधमेंवाले प्रदेशोंकी रचनाका निर्देश नहीं करता किन्तु उत्कर्षणको प्राप्त होनेवाले प्रदेशोंकी रचनाका निर्देश करता है, ऐसा व्याख्यान क्यों नहीं करते ?

समाधान — नहीं क्योंकि, उत्कर्षण बन्धका अनुसरण करनेवाला होता है, इस लिये उसमें दूसरे प्रकारसे प्रदेशोंकी रचना नहीं बन सकती ।

शंका — प्रदेशविन्यासविशेषके लिये न होकर शेष पुरुषोंके अपकर्षण और उत्कर्षणकी अपेक्षा गुणितकर्मांशिकके अपकर्षण और उत्कर्षणके अल्पबहुत्वको बतलानेके लिये यह सूत्र क्यों नहीं हो सकता ?

समाधान — नहीं क्योंकि, बहुत बहुत बार संक्लेशको प्राप्त हुआ इस सूत्रसे उस अर्थकी सिद्धि हो जाती है । और तीर्थंकरादिकोंकी आसादना रूप मिथ्यात्वके बिना तीव्र कषाय होती नहीं क्योंकि, वैसा पाया नहीं जाता । तथा इस प्रकारकी कषाय

---

१ अ-आ-काप्रतिषु -णावं बालमुत्त इति पाठः । २ प्रतिषु क्वो इति पाठः ।

ण च एवंविहो कसाओ ट्ठिदिउक्कड्डणट्ठिदिबंधाणमणिमित्तो, एदासिं णिक्कारणप्पसंगादो। तदो तिव्वसंकिलेसो विलोमपदेसविण्णासकारणं, मंदसंकिलेसो अणुलोमविण्णासकारणमिदि घेत्तव्वं। किंफला इमा पदेसरचणा? बहुकम्मक्खंधसंचयफला। संकिलेस-विसोहीहिंतो अणुलोमो चेव पदेसविण्णासो किण्ण जायदे? ण, विरुद्धाणमेक्ककज्जकारित्तविरोहादो। एसो उच्चारणाइरियअहिप्पाओ परूविदो। एदेण किं सिद्धं? पच्चक्खाणजहण्णसंतकम्मिय-जीवम्हि मिच्छत्तस्स सगजहण्णादो णिरयगदीए असंखेज्जभागमहियत्तं सिद्धं।

भूदबलिपादाणं पुण अहिप्पाओ विलोमविण्णासस्स गुणिदकम्मंसियत्तमणुलोमविण्णा-सस्स खविदकम्मंसियत्तं कारणं, ण संकिलेस-विसोहीओ। पंचिंदियाणं सण्णीणं पज्जत्ताणं

स्थितिउत्कर्षण और स्थितिबन्धकी निमित्त न हो सो भी नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेपर उनके निष्कारण होनेका प्रसंग आता है। इसलिये तीव्र संक्लेश विलोम रूपसे प्रदेश विन्यासका कारण है और मंदसंक्लेश अनुलोम रूपसे प्रदेशविन्यासका कारण है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये।

शंका—इस प्रदेशरचनाका क्या फल है?

समाधान—बहुत कर्मस्कन्धोंका संचय करना ही इसका फल है।

शंका—संक्लेश और विशुद्धि इन दोनोंसे अनुलोम रूपसे ही प्रदेशविन्यास होता है, ऐसा क्यों नहीं मानते?

समाधान—नहीं, क्योंकि, विरुद्ध कारणोंसे एक कार्य होता है, ऐसा माननेमें विरोध आता है। यह उच्चारणाचार्यका अभिप्राय कहा है।

शंका—इससे क्या सिद्ध होता है?

समाधान—इससे त्यागके बलसे जघन्य सत्कर्मको प्राप्त हुए जीवके मिथ्यात्वका जो अपना जघन्य सत्त्व प्राप्त होता है उससे नरकगतिमें उसका सत्त्व असंख्यातवां भाग अधिक सिद्ध होता है।

किन्तु भूतबलि भट्टारकके अभिप्रायसे विलोम विन्यासका कारण गुणितकर्मांशिकत्व और अनुलोम विन्यासका कारण क्षपितकर्मांशिकत्व है, न कि संक्लेश और विशुद्धि।

शंका—पंचेन्द्रिय संज्ञी पर्याप्त जीवोंके ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय

१ प्रतिषु 'कसाओ त्ति उक्कड्डण' इति पाठः। २ प्रतिषु 'भवियत्तं' इति पाठः। ३ अ-आप्रत्योः 'खविदकम्मुसमयत्तं' इति पाठः।

णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराइयाणं तिण्णिवाससहस्समाबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं, जं बिदियसमए णिसित्तं पदेसग्गं तं विसेसहीणं, एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सेण तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ त्ति कालविहाणे उक्कस्सट्ठिदीए वि अणुलोम पदेसविण्णासुवलंभादो। एदेण कालविहाणसुत्तुद्दिट्ठपदेसविण्णासेण कधमेदं वक्खाणं ण बाहिज्जदे? ण, गुणिद-घोलमाणादिविसए वट्टमाणेण सामण्णेण कालसुत्तेण एदस्स वक्खाणस्स बाहाणुववत्तीदो। उच्चारणाए व भुजगारकालब्भंतरे चेव गुणिदत्तं किण्ण उच्चदे? ण, अप्पदरकालादो गुणिदभुजगारकालो बहुगो त्ति उवदेसमवलंबिय एदस्स सुत्तस्स पउत्तीदो।

बहुसो बहुसो उक्कस्साणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि ॥ १२ ॥

बहुसो उक्कस्सजोगट्ठाणगमणे को लाहो? बहुपदेसागमणं। कुदो? जोगादो

और अन्तराय कर्मके तीस हजार वर्ष प्रमाण आबाधाको छोड़कर जो प्रथम समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह बहुत है। जो द्वितीय समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेष हीन है। इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम तक ले जाना चाहिये। इसप्रकार कालविधानमें उत्कृष्ट स्थितिका भी अनुलोमक्रमसे प्रदेशविन्यास देखा जाता है। अतः इस कालविधानसूत्रमें कहे गये प्रदेशविन्याससे यह व्याख्यान कैसे नहीं बाधित होगा?

समाधान— नहीं क्योंकि, गुणित व घोलमान आदिके विषयमें आये हुए काल सूत्रसे इस व्याख्यानका बाधा जाना सम्भव नहीं है।

शंका— उच्चारणाके समान भुजगारकालके भीतर ही गुणितत्व क्यों नहीं कहते?

समाधान— नहीं क्योंकि, अल्पतरकालसे भुजगारकाल बहुत है इस उपदेशका अवलम्बन करके यह सूत्र प्रवृत्त हुआ है।

बहुत बहुत बार उत्कृष्ट योगस्थानोंको प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

शंका— बहुत बार उत्कृष्ट योगस्थानोंको प्राप्त करनेमें क्या लाभ है?

समाधान— उत्कृष्ट योगस्थानोंके द्वारा बहुत प्रदेशोंका आगमन होता है क्योंकि,

---

१ अप्रतौ 'गुणिदत्तं' इति पाठः। १ क. प्र. १–७५.

पदेसो बहुगो आगच्छदि त्ति वयणादो। एदं सुत्तं सामण्णविसयत्तेण आउअबंधकालं मोत्तूण अण्णत्थ पयट्टदे।

बहुसो बहुसो बहुसंकिलेसपरिणामो भवदि[1] ॥ १३ ॥

किमट्ठं बहुसो बहुसो बहुसंकिलेसपरिणामं णिज्जदे ? बहुदव्वुक्कड्डणट्ठमुक्कस्सट्ठिदिबंधट्ठं च। उक्कस्सट्ठिदी चेव किमट्ठं बंधाविज्जदे ? हेट्ठिल्लगोउच्छाणं सुहुमत्तविहाणट्ठं उवरि दूरमुक्खित्ताणं कम्मक्खंधाणं उवसामणा-णिकाचणाकरणेहि[2] ओकड्डणाणिवारणट्ठं च।

एवं संसरिदूण बादरतसपज्जत्तएसुववण्णो[3] ॥ १४ ॥

एदेण विहाणेण कम्मक्खंधाणं संचयकरणेण एइंदिएसु विगयतसट्ठिदिं कम्मट्ठिदिं

योगसे बहुत प्रदेश आता है, ऐसा वचन है।

यह सूत्र सामान्यको विषय करता है अर्थात् उत्सर्गका व्याख्यान करनेवाला है, इसलिये वह आयुके बन्धकालको छोड़कर अन्यत्र प्रवृत्त होता है।

बहुत बहुत बार बहुत संक्लेश रूप परिणामवाला होता है ॥ १३ ॥

शंका—बहुत बहुत बार बहुत संक्लेश रूप परिणामोंको क्यों प्राप्त कराया जाता है ?

समाधान—बहुत द्रव्यका उत्कर्षण करानेके लिये और उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध करानेके लिये बहुत बहुत बार संक्लेश रूप परिणामोंको प्राप्त कराया जाता है।

शंका—उत्कृष्ट स्थिति ही किसलिये बधायी जाती है ?

समाधान—अधस्तन गोपुच्छोंकी सूक्ष्मताके विधानके लिये और ऊपर दूर उत्क्षिप्त कर्मस्कन्धोंके उपशामना व निकाचना करणों द्वारा अपकर्षणका निवारण करनेके लिये उत्कृष्ट स्थिति बधायी जाती है।

इस प्रकार परिभ्रमण करके बादर त्रस पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुआ ॥ १४ ॥

इस पूर्वोक्त विधिसे कर्मस्कन्धोंका संचय करता हुआ एकेन्द्रियोंमें त्रसस्थितिसे

१ क प्र २-७५ २ प्रतिपु '-णिकाचणाकारणेहि' इति पाठः।

३ बायरतसेसु तक्कालमेवमंते य सत्तमखिईए। सव्वलहुं पज्जत्तो जोग कसायाहिओ बहुसो॥ क प्र २-७६

संसरिदूण बादरतसपज्जत्तएसुववण्णो । तसणिद्देसो थावरपडिसेहफलो । थावरत्तं किमिदि पडिसिज्झदे ? थावरजोगादो असंखेज्जगुणेण तसुक्कस्सजोगेण कम्मसंकलणट्ठं थावरकम्मट्ठिदीदो संखेज्जगुणट्ठिदीसु कम्मक्खंधे विरलिय गोवुच्छाए सुहुमत्तविहाणट्ठमुक्कड्डिदूण दोहि करणेहि ओकड्डणाणिराकरणट्ठं च । पज्जत्तणिद्देसो अपज्जत्तपडिसेहफलो । किमट्ठमपज्जत्तभावो पडिसिज्झदे ? तिविहअपज्जत्तजोगेहिंतो असंखेज्जगुणेहि तिविहपज्जत्तजोगेहि कम्मसंकलणट्ठं सुहुमणिसेगट्ठं उवसामणा-णिकाचणेहि ओकड्डणापडिसेहट्ठं च । बादरणिद्देसो सुहुमत्तपडिसेहफलो । थावरपडिसेहेणेव सुहुमत्तं पडिसिद्धमण्णस्स सुहुमाणमभावादो त्ति उत्ते— ण, सुहुमणामकम्मोदयजणिदसुहुमत्तेण विणा विग्गहगदीए वट्टमाणतसाणं सुहुम-

---

सहित कर्मस्थिति प्रमाण काल तक परिभ्रमण करके बादर त्रस पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुआ। सूत्रमें त्रस शब्दके निर्देशका फल स्थावरोंका प्रतिषेध करना है।

शंका— इस प्रकार स्थावरोंका प्रतिषेध किसलिये किया जाता है ?

समाधान— स्थावरयोगसे असंख्यातगुणे त्रसोंके उत्कृष्ट योग द्वारा कर्मोंका संचय करनेके लिए स्थावरोंकी कर्मस्थितियोंसे संख्यातगुणी कर्मस्थितियोंमें कर्मस्कन्धोंका विरलन करके गोपुच्छोंकी सूक्ष्मताका विधान करनेके लिये तथा उत्कर्षण करके दोनों करणों द्वारा अपकर्षणका निराकरण करनेके लिये स्थावरोंका प्रतिषेध किया गया है।

पर्याप्तकोंके निर्देशका फल अपर्याप्तकोंका निषेध करना है।

शंका— अपर्याप्तभावका प्रतिषेध किसलिये किया जाता है ?

समाधान — तीन प्रकारके अपर्याप्तकोंके योगोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणे तीन प्रकारके पर्याप्तकोंके योगों द्वारा कर्मका संचय करनेके लिये अप्रशस्त निषेकोंकी सूक्ष्म रूपसे रचना करनेके लिये और उपशामना एवं निकाचना करण द्वारा अपकर्षणका प्रतिषेध करनेके लिये अपर्याप्तकोंका प्रतिषेध किया गया है।

बादर शब्दके निर्देशका प्रयोजन सूक्ष्मताका प्रतिषेध करना है।

शंका—स्थावरका प्रतिषेध करनेसे ही सूक्ष्मताका प्रतिषेध हो जाता है क्योंकि सूक्ष्म जीव और दूसरी पर्यायमें नहीं पाये जाते ?

समाधान—नहीं क्योंकि यहांपर सूक्ष्म नामकर्मके उदयसे जो सूक्ष्मता उत्पन्न

---

१ मप्रतौ असंखेज्जगुणट्ठिदिसु इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु -पज्जत्त- इति पाठः।

त्तब्भुवगमादो। कध ते सुहुमा? अणंताणंतविस्ससोवचएहि उवचियओरालियणोकम्म-क्खधादो विणिग्गयदेहत्तादो। किमट्ठ सुहुमत्तं पडिसिज्झदे? जोगवड्ढिणिमित्तं णोकम्ममिदि जाणावणट्ठ पज्जत्तकालवड्ढावणट्ठ च। एद मज्झदीवयं, तेण सव्वत्थ कम्मट्ठिदीए विग्गहा-भावो दट्ठव्वो।

पज्जत्तापज्जत्तएसु उप्पज्जणसभवे सते पढमं पज्जत्तएसु चेव किमट्ठं उप्पाइदो? एसो पाएण पज्जत्तेसु चेव उप्पज्जदि, णो अपज्जत्तएसु त्ति[1] जाणावणट्ठ। एसो अत्थो भवावासेण चेव परूविदो, पुणो किमट्ठमेत्थ उत्तो? तस्सेव अत्थस्स दिढीकरणट्ठं[2]। बादरतस-

होती है उसके विना विग्रहगतिमें वर्तमान त्रसोंकी सूक्ष्मता स्वीकार की गई है।

शंका—वे सूक्ष्म कैसे हैं?

समाधान—क्योंकि, उनका शरीर अनन्तानन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित औदारिक नोकर्मस्कन्धोंसे रहित है, अत. वे सूक्ष्म हैं।

शंका—सूक्ष्मताका प्रतिषेध किसलिये किया जाता है?

समाधान—योगवृद्धिका निमित्त नोकर्म है, इस वातको जतलानेके लिये तथा पर्याप्तकालको बढ़ानेके लिये उसका प्रतिषेध किया गया है।

यह सूत्र मध्यदीपक है, अतः सर्वत्र कर्मस्थितिमें विग्रहगतिका अभाव है यह समझना चाहिये।

शका—पर्याप्तक व अपर्याप्तक इन दोनोंमें ही उत्पन्न होनेकी सम्भावना होनेपर पहिले पर्याप्तकोंमें ही किसलिये उत्पन्न कराया है?

समाधान—यह प्राय. पर्याप्तकोंमें ही उत्पन्न होता है, अपर्याप्तकोंमें उत्पन्न नहीं होता; इस यातको जतलानेके लिये पहिले पर्याप्तकोंमें ही उत्पन्न कराया है।

शका—यह अर्थ भवावासके निरूपण द्वारा ही कहा जा चुका है, उसे फिर यहा किसलिये कहा गया है?

समाधान—उसी अर्थको दृढ़ करनेके लिये यहां उसे फिरसे कहा है।

१ अप्रतौ 'अपज्जत्तएसु त्ते', आ का-सप्रतिषु 'अपज्जत्तएसु सुत्ते' इति पाठ।

२ प्रतिषु 'विढ्ढीकरणट्ठं', मप्रतौ 'दढीकरणट्ठ' इति पाठः।

पज्जत्तएसु उज्जुगदीए उक्कस्सजोगेण तप्पाओग्गउक्कस्सकसाएण च उप्पण्णपढमसमए अंतोकोडाकोडीए ट्ठिदिं बंधदि । एइंदिएसु बद्धसमयपबद्धे आबाधं मोत्तूण तिस्से उवरि उक्कड्डमाणो किं सव्वे समगुक्कड्डिज्जति आहो अण्णहा इदि उत्ते वुच्चदे— कम्मट्ठिदि आदिसमयपबद्धकम्मपोग्गलक्खंधा अंतोमुहुत्तूणतसट्ठिदिमुक्कड्डिज्जति, एत्तियमेत्तसत्तिट्ठिदि सेसादो । बिदियसमए पबद्धो तत्तो आव समउत्तरट्ठिदी ता उक्कड्डिज्जदि, तस्स समउत्तर सत्तिट्ठिदिसेसादो । एवं सव्वे समयपबद्धा समउत्तरकमेणुक्कड्डिज्जंति । जस्स समयपबद्धस्स सत्तिट्ठिदी वट्टमाणबंधट्ठिदिसमाणा सो समयपबद्धो वट्टमाणबंधचरिमट्ठिदि त्ति उक्कड्डिज्जदि । एसो समयपबद्धो कम्मट्ठिदीए केत्तियमद्धाणं चडिदूण पबद्धो ? कम्मट्ठिदिपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तूणतसट्ठिदिविसुद्धवट्टमाणबंधट्ठिदिमेत्तं चडिदूण पबद्धो । एदम्हादो उवरि समयपबद्धाणमुक्कड्डणा एदस्साणंतरादीदसमयपबद्धस्स उक्कड्डणाए तुल्ला ।

बादर त्रस पर्याप्तकोंमें ऋजुगतिसे उत्कृष्ट योग और उसके योग्य उत्कृष्ट कषायसे उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें अन्तःकोड़ाकोड़ि प्रमाण स्थितिको बांधता है ।

शंका—एकेन्द्रियोंमें बांधे हुए समयप्रबद्धोंका आबाधाको छोड़कर उसके ऊपर उत्कर्षण करता हुआ क्या सबका एक साथ उत्कर्षण करता है अथवा अन्य प्रकारसे ?

समाधान—इस प्रकार पूछनेपर उत्तर देते हैं—कर्मस्थितिके प्रथम समयमें बांधे हुए कर्म पुद्गलस्कन्धोंका अन्तर्मुहूर्त कम त्रसस्थितिके काल प्रमाण उत्कर्षण किया जाता है क्योंकि, इनकी इतनी शक्तिस्थिति शेष है । द्वितीय समयमें बांधे हुए समयप्रबद्धका उससे एक समय अधिक त्रसस्थितिकाल प्रमाण उत्कर्षण किया जाता है क्योंकि उसकी एक समय अधिक शक्तिस्थिति शेष है । इस प्रकार आगेके सब समयप्रबद्धोंका एक एक समय अधिकके क्रमसे उत्कर्षण किया जाता है । जिस समयप्रबद्धकी शक्तिस्थिति वर्तमानमें बंधे हुए कर्मकी स्थितिके समान है उस समयप्रबद्धका वर्तमानमें बंधे हुए कर्मकी अन्तिम स्थिति तक उत्कर्षण किया जाता है ।

शंका—यह समयप्रबद्ध कर्मस्थितिका कितना काल जानेपर बांधा गया है ?

समाधान—कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त कम त्रसस्थितिसे रहित वर्तमान समयप्रबद्धकी स्थिति मात्र बढ़कर बांधा गया है ।

इससे आगेके समयप्रबद्धोंका उत्कर्षण इसके अनन्तर अतीत समयप्रबद्धके उत्कर्षणके समान है ।

---

१ अप्रतौ तदुवरमी आप्रतौ समवुक्कड्डि इति पाठः ।
२ प्रतिषु -वड्डमाणबंधट्ठिदि इति पाठः ।
३ अ-आ-कापतिषु उवरिसमय इति पाठः ।

तत्थ य संसरमाणस्स बहुआ पज्जत्तभवा, थोवा अपज्जत्त-भवा ॥ १५ ॥

एदेण भवावासो परूविदो। एदस्सत्थो पुव्वं व परूवेदव्वो। एइंदिएसु परूविदाणं छण्णमावासयाण[1] पुणो परूवणा किमट्ठं कीरदे? एइदियेसु परूविदछावासया[2] चेव तसकाइएसु वि होंति णो अण्णे इदि जाणावणट्ठं।

दीहाओ पज्जत्तद्धाओ रहस्साओ अपज्जत्तद्धाओ ॥ १६ ॥

एदेण अद्धावासो परूविदो? सेसं सुगमं।

जदा जदा आउगं बंधदि तदा तदा तप्पाओग्गजहण्णएण जोगेण बंधदि ॥ १७ ॥

वहां परिभ्रमण करनेवाले उक्त जीवके पर्याप्तभव बहुत होते हैं और अपर्याप्तभव थोड़े होते हैं ॥ १५ ॥

इस सूत्र द्वारा भवावासकी प्ररूपणा की गई है। इसका अर्थ पूर्व (सूत्र ७) के समान कहना चाहिये।

शंका— एकेन्द्रियोंके कहे गये छह आवासोंका यहां फिरसे कथन किसलिये किया जाता है?

समाधान— एकेन्द्रियोंमें जो छह आवास कहे हैं वे ही त्रसकायिकोंमें भी होते हैं, अन्य नहीं, इस बातका ज्ञान करानेके लिये यहा फिरसे उनका कथन किया है।

पर्याप्तकाल दीर्घ होता है और अपर्याप्तकाल थोड़ा होता है ॥ १६ ॥

इस सूत्र द्वारा अद्धावासकी प्ररूपणा की गई है। शेष कथन सुगम है।

जब जब आयुको बांधता है तब तब उसके योग्य जघन्य योगसे बांधता है ॥ १७ ॥

---

१ आवासाया हु भवअद्धाउस्स जोगसंकिलेसो य। ओकड्डुक्कड्डणया छच्चेदे गुणिदकम्मंसे ॥ गो जी २५०

२ प्रतिषु '-परूविदत्थावासया-' इति पाठः।

एदेण आउवासासो परूविदो । सेसं सुगमं ।

उवरिल्लीणं ट्ठिदीणं णिसेयस्स उक्कस्सपदे हेट्ठिल्लीणं ट्ठिदीणं णिसेयस्स जहण्णपदे ॥ १८ ॥

एदेण ओकड्डुक्कड्डणावासो परूविदो ओकड्डुक्कड्डणा-बंधाणं पदेसविण्णासा-वासो वा । सेसं सुगमं ।

बहुसो बहुसो उक्कस्साणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि ॥ १९ ॥

एदेण जोगावासो परूविदो । सेसं सुगमं ।

बहुसो बहुसो बहुसंकिलेसपरिणामो भवदि ॥ २० ॥

एदेण संकिलेसावासो परूविदो । संकिलेसावासो पदेसविण्णासावासे किण्ण पददे ? ण संकिलेसो पदेसविण्णासस्स कारणं, किंतु गुणिदकम्मंसियत्तं तक्कारणं, तेण ण तत्थ पददे[1]।

इस सूत्र द्वारा आयु आवासकी प्ररूपणा की गई है । शेष कथन सुगम है ।

उपरिम स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद होता है और नीचेकी स्थितियोंके निषेकका जघन्य पद होता है ॥ १८ ॥

इस सूत्र द्वारा अपकर्षण-उत्कर्षण आवासका कथन किया गया है । अथवा अपकर्षण उत्कर्षण और बंधके प्रदेशविन्यासावासका कथन किया गया है । शेष कथन सुगम है ।

बहुत बहुत बार उत्कृष्ट योगस्थानोंको प्राप्त होता है ॥ १९

इसके द्वारा योगावासकी प्ररूपणा की गई है । शेष कथन सुगम है ।

बहुत बहुत बार बहुत संक्लेश परिणामवाला होता है ॥ २० ॥

इसके द्वारा संक्लेशावासकी प्ररूपणा की गई है ।

शंका—संक्लेशावासका प्रदेशविन्यासावासमें अन्तर्भाव क्यों नहीं किया गया है ?

समाधान—संक्लेश प्रदेशविन्यासका कारण नहीं है किन्तु गुणितकर्मांशिकत्व उसका कारण है । इस कारण उसका प्रदेशविन्यासावासमें अन्तर्भाव नहीं किया है ।

१ प्रतिषु किण्ण पदे ण इति पाठः ।

एवं संसरिदूण अपच्छिमे भवग्गहणे अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उववण्णो[1] ॥ २१ ॥

अपच्छिमे भवे णेरइएसु किमट्ठं[2] उप्पाइदो ? उक्कस्ससंकिलेसेण उक्कस्सट्ठिदिबंधणट्ठमुक्कस्सुक्कड्डणट्ठं च । उक्कड्डणा णाम किं ? कम्मपदेसट्ठिदिवड्ढावणमुक्कड्डणा । उदयावलियट्ठिदिपदेसा ण उक्कड्डिज्जंति । कुदो ? साभावियादो । उदयावलियबाहिरट्ठिदीओ सव्वाओ [ण] उक्कड्डिज्जंति । किंतु चरिमट्ठिदी आवलियाए असंखेज्जदिभागमइच्छिदूण आवलियाए असंखेज्जदिभागे उक्कड्डिज्जदि[3], उवरि ट्ठिदिबंधाभावादो । एसा जहण्ण-उक्कड्डणा । पुणो उवरिमट्ठिदिबंधेसु अइच्छावणा वड्ढावेदव्वा[4] जाव आवलियमेत्त पत्ता त्ति[5] । पुणो उवरि णिक्खेवो चेव वड्ढदि । अइच्छावणा णिक्खेवाभावा णत्थि उक्कड्डणा

इस प्रकार परिभ्रमण करके अन्तिम भवग्रहणमें नीचे सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न हुआ ॥ २१ ॥

शंका — अन्तिम भवमें नारकियोंमें किसलिये उत्पन्न कराया है ?

समाधान — उत्कृष्ट संक्लेशसे उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेके लिये और उत्कृष्ट उत्कर्षण करानेके लिये वहां उत्पन्न कराया है ।

शंका — उत्कर्षण किसे कहते हैं ?

समाधान — कर्मप्रदेशोंकी स्थितिको बढ़ाना उत्कर्षण कहलाता है ।

उदयावलिकी स्थितिके प्रदेशोंका उत्कर्षण नहीं किया जाता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । तथा उदयावलिके बाहिरकी सभी स्थितियोंका उत्कर्षण [नहीं] किया जाता है । किन्तु चरम स्थितिका आवलीके असंख्यातवें भागको अतिस्थापना रूपसे स्थापित करके आवलीके असंख्यातवें भागमें उत्कर्षण होता है, क्योंकि, ऊपर स्थितिबन्धका अभाव है । यह जघन्य उत्कर्षण है । पुन. उपरिम स्थितियोंमें अतिस्थापनाको आवलि मात्र प्राप्त होने तक बढ़ाना चाहिये । फिर ऊपर निक्षेपकी ही वृद्धि होती है । अतिस्थापना और निक्षेपका अभाव होनेसे नीचे उत्कर्षण नहीं होता है । उत्कृष्ट अतिस्थापना एक

१ क प्र २-७६ २ प्रतिषु 'कम्मट्ठ' इति पाठ ।

३ सत्तग्गट्ठिदिबंधो आदिट्ठिदुक्कट्टणे जहण्णेण । आवलिअसंखभागं तेत्तियमेत्तेव णिक्खिवदि ॥ लब्धिसार ६१

४ प्रतिषु 'बंधावेदव्वा' इति पाठ । ५ प्रतिषु 'मेत्त पच्छा त्ति' इति पाठ ।

हेट्ठा। उक्कस्सिया अइच्छावणा रूवाहियाविलियूणआबाधमेत्ता[1]। जहण्णिया आवलियपमाणा[2]। एदेसिं ठिदीणमोवट्टणा ओक्कड्डणा णाम। तिस्से अइच्छावणा ट्ठिदिखंडयादो अण्णत्थ आवलियमेत्ता। णवरि उदयावलियबाहिरट्ठिदीए समऊणावलियाए वेत्तिभागा अइच्छावणा। रूवाहियतिभागो णिक्खेवो। उवरिल्लीसु ट्ठिदीसु रूवाहियकमेण अइच्छावणा चेव वड्ढावेदव्वा जा उक्कस्सेण आवलियमेत्ता पत्ता त्ति। तत्तो उवरि रूवाहियकमेण ट्ठिदिं पडि णिक्खेवो वड्ढावेदव्वो[3]। जदि एवं तो णेरइएसु चेव बहुवारं किण्ण उप्पादिदो? ण एस दोसो, णेरइएसु चेव बहुवारमुप्पज्जदि, किंतु तत्थुप्पज्जणसंभवाभावे अण्णत्थुप्पत्तीदो। णेरइएसु उप्पज्जमाणो बहुवारं सत्तमपुढविणेरइएसु चेव उप्पज्जदि, अण्णत्थ तिव्वसंकिलेस-दीहाउट्ठिदीणमभावादो।

—

समय अधिक आवलिसे न्यून आबाधा प्रमाण है और जघन्य अतिस्थापना आवलि प्रमाण है।

कर्मप्रदेशोंकी स्थितियोंके अपवर्तनका नाम अपकर्षण है। उसकी अतिस्थापना स्थितिकाण्डकको छोड़कर अन्यत्र आवलि प्रमाण है। विशेषता इतनी है कि उदयावलिके बाहिरकी प्रथम स्थितिकी एक समय कम आवलीके दो त्रिभाग प्रमाण अतिस्थापना है और एक समय अधिक त्रिभाग प्रमाण निक्षेप है। इससे उपरिम स्थितियोंमें एक समय अधिकके क्रमसे उत्कृष्ट रूपसे आवलि प्रमाण अतिस्थापनाके प्राप्त होने तक अतिस्थापना बढ़ाना चाहिये। इससे आगे एक समय अधिकके क्रमसे प्रत्येक स्थितिके प्रति निक्षेप बढ़ाना चाहिये।

शंका—यदि ऐसा है तो नारकियोंमें ही बहुत बार क्यों नहीं उत्पन्न कराया?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि वह नारकियोंमें ही बहुत बार उत्पन्न होता है। किन्तु उनमें उत्पत्तिकी असम्भावना न होनेपर अन्यत्र उत्पन्न होता है। नारकियोंमें उत्पन्न होता हुआ बहुत बार सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें ही उत्पन्न होता है, क्योंकि दूसरी पृथिवियोंमें तीव्र संक्लेश और दीर्घ आयुस्थितिका अभाव है।

१ प्रतिषु 'रूवाहियावलियूणआबाधमेत्ता' इति पाठः।

२ उक्कट्टिदइगिभागं पल्लासंखेण भाजिदं तत्थ। उदयावलिस्स दिज्जदि सेसं तु निक्खिवदि॥ ओक्कड्डणदव्वं पुण चरिमे अवरं समयपबद्धं तु। उवरिमसमए विदियावलियपढमुक्कट्टणे जादे॥ ओक्कड्डणम्मि अदित्थावणा। समयाहियावलियपमाणो उक्कस्सट्ठिदिबंधो॥ लब्धिसार ५३-५४

३ णिक्खेवमदित्थावणमवरं समऊणआवलितिभागं। तेणूणावलिमेत्तं विदियावलियादिमणिसेगे॥ एत्तो समऊणावलितिभागमेत्तो दु तं खु णिक्खेवो। उवरिं आवलिवज्जिय सगट्ठिदी होदि णिक्खेवो॥ लब्धिसार ५६-५७.

तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण उक्कस्सेण जोगेण आहारिदो ॥ २२ ॥

पढमसमयतब्भवत्थस्स णिद्देसो विदिय तदियसमयतब्भवत्थपडिसेहफलो । जहण्ण-उववादजोगादिपडिसेहफलो उक्कस्सजोगणिद्देसो । कत्तारे एसा तइया । तेण आहारिदो पोग्गलक्खंधो त्ति सबंधो कायव्वो । एत्थ 'इव' सद्दो उवमट्ठो । जहा कम्मट्ठिदीए एसो जीवो पढमसमयआहारओ पढमसमयतब्भवत्थो च, विग्गहगदीए अभावादो । तहा एत्थ वि । तेण[2] सिद्धं तेण पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण उक्कस्सजोगेणेव आहारिदो, कम्मपोग्गलो गहिदो त्ति उत्तं होदि ।

उक्कस्सियाए वड्ढिए वड्ढिदो ॥ २३ ॥

बिदियसमयप्पहुडि [1]एयंताणुवड्ढिजोगो होदि, समयं पडि असंखेज्जगुणाए सेडीए

प्रथम समयमें आहारक और प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर उसने उत्कृष्ट योगके द्वारा कर्मपुद्गलको ग्रहण किया ॥ २२ ॥

'प्रथम समय तद्भवस्थ' पदके निर्देशका फल द्वितीय व तृतीय समय तद्भवस्थका प्रतिषेध करना है । जघन्य उपपाद योग आदिका प्रतिषेध करनेके लिये 'उत्कृष्ट योग' पदका निर्देश किया है । कर्ता कारकमें यह तृतीया विभक्ति है । 'उसने पुद्गलस्कन्धको ग्रहण किया' ऐसा यहां सम्बन्ध करना चाहिये । यहां सूत्रमें 'इव' शब्द उपमार्थक है । आशय यह है कि जिस प्रकार कर्मस्थितिके भीतर सर्वत्र यह जीव प्रथम समयमें आहारक होता है और प्रथम समयमें तद्भवस्थ होता है, क्योंकि, इसके विग्रहगति नहीं होती । उसी प्रकार यहां नरकगतिमें भी जानना चाहिये । इससे सिद्ध हुआ कि प्रथम समयमें आहारक और प्रथम समयमें तद्भवस्थ जीवने उत्कृष्ट योगके द्वारा ही आहरण किया, अर्थात् कर्मपुद्लको ग्रहण किया; यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ ॥ २३ ॥

उत्पन्न होनेके द्वितीय समयसे लेकर एकान्तानुवृद्धि योग होता है, क्योंकि, प्रत्येक

---

१ क प्र १, ७६   २ प्रतिषु 'वि स्ले तेण' इति पाठ ।

वड्ढिदंसणादो। तत्थ गुणगारो जहण्णुक्कस्स-तव्वदिरित्तभेएण तिविहो। तत्थ सेसदोवड्ढीओ परिहरणट्ठमुक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो त्ति भणिदं, अण्णहा उक्कस्सदव्वसंचयाणुववत्तीदो।

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥२४॥

पज्जत्तीणं समाणकालो एगसमयादिओ णत्थि त्ति परूवणट्ठमंतोमुहुत्तवयणं। तिस्से भवद्दण्णकालपडिसेहट्ठं सव्वलहुवयणं। एक्काए वि पज्जत्तीए असमत्ताए पज्जत्तएसु परिणाम जोगो ण होदि त्ति जाणावणट्ठं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो त्ति उत्तं। किं फलमिदं सुत्तं? अपज्जत्तजोगादो पज्जत्तजोगो असंखेज्जगुणो त्ति जाणावणफलं।

तत्थ भवट्ठिदी तेत्तीससागरोवमाणि ॥ २५ ॥

एदेण भवद्धावासो परूविदो। सेसं सुगमं।

समयमें असंख्यात गुणित श्रेणि रूपसे योगकी वृद्धि देखी जाती है। वहां गुणकार जघन्य उत्कृष्ट तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारका है। उनमेंसे शेष दो वृद्धियोंका परिहार करनेके लिये उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ ऐसा कहा है अन्यथा उत्कृष्ट द्रव्यका संचय नहीं बन सकता है।

अन्तर्मुहूर्त द्वारा अति शीघ्र सभी पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ २४ ॥

पर्याप्तियोंकी पूर्णताका काल एक समय आदिक नहीं है इस बातका कथन करनेके लिये सूत्रमें अन्तर्मुहूर्त पदका ग्रहण किया है। पर्याप्तियोंके भवजघन्य कालका निषेध करनेके लिये 'सव्वलहु' पद कहा है। एक भी पर्याप्तिके अपूर्ण रहनेपर पर्याप्तकोंमें परिणाम योग नहीं होता इस बातके ज्ञापनार्थ सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ऐसा कहा है।

शंका— इस सूत्रका क्या प्रयोजन है।

समाधान— अपर्याप्त योगसे पर्याप्त योग असंख्यातगुणा है यह बतलाना इस सूत्रका प्रयोजन है।

वहां भवस्थिति तेतीस सागरोपम प्रमाण है ॥ २५ ॥

इस सूत्र द्वारा भवावासकी प्ररूपणा की गई है। शेष कथन सुगम है।

---

१ प्रतिषु सव्वाहि इति पाठः। २ प्रतिषु भवावासो इति पाठः।

आउअमणुपालेंतो[1] बहुसो बहुसो उक्कस्साणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि ॥ २६ ॥

एदेण जोगावासो परूविदो ।

बहुसो बहुसो बहुसंकिलेसपरिणामो भवदि ॥ २७ ॥

एदेण संकिलेसावासो परूविदो । सेसा तिण्णि आवासया किण्ण परूविदा ? ण ताव भवावासो एत्थ संभवदि, एक्कम्हि भवे[2] बहुत्ताभावादो । ण आउआवासो परूविज्जदि, तस्स जोगावासे अंतब्भावादो । कध जोगबहुत्तमिच्छिज्जदि ? णाणावरणस्स बहुदव्वसंचयणिमित्तं । ण च आउअमुक्कस्सजोगेण बंधंतस्स णाणावरणस्सुक्कस्ससंचयो होदि, णाणावरणस्स बहुदव्वक्खयदंसणादो । तदो जोगावासादो चेव आउअं जहण्णजोगेण चेव बज्झदि

आयुका उपभोग करता हुआ बहुत बहुत बार उत्कृष्ट योगस्थानोंको प्राप्त होता है ॥ २६ ॥

इसके द्वारा योगावासकी प्ररूपणा की गई है ।

बहुत बहुत बार बहुत संक्लेश परिणामवाला होता है ॥ २७ ॥

इसके द्वारा संक्लेशावासकी प्ररूपणा की गई है ।

शंका—शेष तीन आवासोंकी प्ररूपणा क्यों नहीं की है ?

समाधान—यहां भवावास तो सम्भव नहीं है, क्योंकि, एक ही भवमें भव-बहुत्वका अभाव है । आयु-आवासकी प्ररूपणा भी नहीं की जा सकती है, क्योंकि, उसका योगावासमें अन्तर्भाव हो जाता है ।

शंका—यहां योगबहुत्व क्यों स्वीकार किया जाता है ?

समाधान—ज्ञानावरणके बहुत द्रव्यका संचय करनेके लिये यहां योगबहुत्व स्वीकार किया जाता है ।

यदि कहा जाय कि आयुको उत्कृष्ट योग द्वारा बांधनेवालेके ज्ञानावरणका उत्कृष्ट संचय होता ही है सो भी बात नहीं है, क्योंकि, इस प्रकारसे तो ज्ञानावरणके बहुत द्रव्यका क्षय देखा जाता है और इसलिये योगावाससे आयु जघन्य योग द्वारा ही बंधती

१ प्रतिषु 'आउअमणुसापालेंतो' इति पाठ । २ प्रतिषु 'भवे भवे' इति पाठ ।

त्ति घेप्पदे। तम्हा आउआवासो जोगावासे पविट्ठो त्ति पुध ण परूविदो। ण ओकड्डुक्कड्डणावासो वि परूविज्जदि, तस्स संकिलेसावासे अंतब्भावादो। एसा संगहणयविसया आवासयपरूवणा परूविदा एगभवविसया।

एवं संसरिदूण थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति जोगजवमज्झस्सुवरिमंतोमुहुत्तद्धमच्छिदो[1] ॥ २८ ॥

एत्थ जोगस्स बीइंदियपज्जत्तसव्वजहण्णजोगट्ठाणप्पहुडि अवट्ठिदपक्खेवुत्तरकमेण उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणे त्ति गदस्स पढमदुगुणवड्ढिट्ठाणादो दुगुण-चदुगुणादिकमेण गदगुणवड्ढिट्ठाणस्स करिकराकारस्स कधं जवसण्णा। जवाभावे ण तस्स मज्झं पि, असंते मज्झत्तविरोहादो त्ति? एत्थ उत्तरं वुच्चदे। तं जहा— बीइंदियपज्जत्तसव्वजहण्णपरिणामजोगट्ठाणमादिं कादूण जाव सण्णिपंचिंदियपज्जत्तउक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणे त्ति घेत्तूण पंतिया-

---

है यह जाना जाता है। अत एव आयुआवास योगावासमें अन्तर्भूत है अतः उसकी पृथक् प्ररूपणा नहीं की है। तथा यहां अपकर्षण-उत्कर्षण-आवासकी भी प्ररूपणा नहीं की जाती है, क्योंकि उसका संक्लेशावासमें अन्तर्भाव हो जाता है। यह संग्रहनयकी विषयभूत एक भवविषयक आवासकी प्ररूपणा की है।

इस प्रकार परिभ्रमण करके जीवनके थोड़ा शेष रहनेपर योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक स्थित रहा ॥ २८ ॥

शंका—यहां द्वीन्द्रिय पर्याप्तके सबसे जघन्य योगस्थानसे लेकर अवस्थित प्रक्षेप उत्तर क्रमसे उत्कृष्ट परिणाम योगस्थान तक प्राप्त हुआ जितना भी योग है जो कि पहले द्विगुणवृद्धि-स्थानसे द्विगुण-चतुर्गुण आदिके क्रमसे उत्तरोत्तर गुणवृद्धि रूप स्थानोंको प्राप्त है और जो हाथीके शुण्डादण्डके आकारका है वह योग यवाकार कैसे हो सकता है। जब वह यवाकार नहीं है तब उसका मध्य भी सम्भव नहीं है क्योंकि, जो वस्तु असत् है उसका मध्य माननेमें विरोध आता है?

समाधान—यहां उक्त शंकाका उत्तर कहते हैं। वह इस प्रकार है— द्वीन्द्रिय पर्याप्तके सबसे जघन्य परिणाम योगस्थानसे लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तके उत्कृष्ट परिणाम योगस्थान तकके सब योगोंको ग्रहण करके एक पंक्तिमें स्थापित करनेपर उन

---

१ अप्रतौ 'मुहुत्तमच्छिदो' इति पाठः। जोगजवमज्झस्सुवरिं मुहुत्तमच्छित्तु जीवियमंते। तिचरिमदुचरिमसमए पूरित्तु कसायमुक्कस्सं॥ क. प्र. १, ७७

गारेण दुइदे सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तो जोगट्ठाणायामो होदि । तत्थ सव्वजहण्णपरिणाम-जोगट्ठाणमादिं कादूण उवरि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजोगट्ठाणाणि चदुसमयपाओग्गाणि । तदो उवरि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजोगट्ठाणाणि पंचसमयपाओग्गाणि । एवं परिवाडीए उवरि पुध पुध छ-सत्त-अट्ठसमयपाओग्गाणि जोगट्ठाणाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । तदो उवरि जहाकमेण सत्त-छ-पंच-चदु-ति-दुसमयपाओग्गाणि जोगट्ठाणाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि[1] ।

एत्थ अट्ठसमयपाओग्गजोगट्ठाणाणि थोवाणि । दोसु वि पासेसु सत्तसमयपाओग्ग-जोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । दोसु वि पासेसु छसमयपाओग्गाणि जोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । दोसु वि पासेसु पंचसमयपाओग्गाणि जोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । दोसु वि पासेसु चदुसमयपाओग्गाणि जोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । उवरि तिसमयपाओग्ग-जोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । बिसमयपाओग्गाणि जोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि[2] । गुणगारो सव्वत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

सब योगस्थानोंका आयाम जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण प्राप्त होता है । उनमेंसे सबसे जघन्य परिणाम योगस्थानसे लेकर आगेके जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थान चार समय प्रायोग्य हैं । फिर इससे आगेके जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थान पांच समय प्रायोग्य हैं । इस प्रकार परिपाटी क्रमसे आगेके पृथक् पृथक् छह सात व आठ समय प्रायोग्य योगस्थान प्रत्येक जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं । फिर इससे आगे यथाक्रमसे सात, छह, पांच, चार, तीन व दो समय प्रायोग्य योगस्थान प्रत्येक जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं ।

यहां आठ समय प्रायोग्य योगस्थान थोड़े हैं । दोनों ही पार्श्वभागोंमें स्थित सात समय प्रायोग्य योगस्थान असंख्यातगुणे हैं । दोनों ही पार्श्वभागोंमें स्थित छह समय प्रायोग्य योगस्थान असंख्यातगुणे हैं । दोनों ही पार्श्वभागोंमें स्थित पांच समय प्रायोग्य योगस्थान असंख्यातगुणे हैं । दोनों ही पार्श्वभागोंमें स्थित चार समय प्रायोग्य योग-स्थान असंख्यातगुणे हैं । ऊपर तीन समय प्रायोग्य योगस्थान असंख्यातगुणे हैं । दो समय प्रायोग्य योगस्थान असंख्यातगुणे हैं । गुणकार सर्वत्र पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

---

१ प्रतिषु ' जहाकमेण सव्वत्थ पंच ' इति पाठः ।

२ अट्ठसमयस्स थोवा उभयदिसासु वि असंखसंगुणिदा । चउसमयो त्ति तहेव य उवरिं ति दुसमय-जोग्गाओ ॥ गो. क. २४३.

तत्थ एदेसिं जोगट्ठाणाणं विसेसणभूदो कालो सगसंखं पडुच्च जवाकारो, मज्झे थूलो होदूण दोसु वि पासेसु कमहाणीए गमणादो। ४।५।६।७।८।७।६।५।४।३।२। एदेहि विसेसिदजोगट्ठाणं पि एक्कारसविहं होदि, अण्णहा विसेसियसाणुववत्तीदो पुधभूदकालाणुवलंभादो। जोगो चेव जवो, तस्स मज्झं जवमज्झं, अट्ठसमइयजोगट्ठाणाणि त्ति उत्तं होदि। तस्स उवरि उवरिमजोगट्ठाणेसु सव्वजोगट्ठाणाणमसंखेज्जेसु भागेसु अंतोमुहुत्तद्धमच्छिदो। कुदो? चत्तारिवड्ढि-हाणीणं संभवदंसणादो। चदुवड्ढि-हाणिकालो अंतोमुहुत्तमिदि कध णव्वदे? असंखेज्जगुणवड्ढि-हाणिकालो अंतोमुहुत्तं, सेसवड्ढि-हाणीणं कालो आवलियाए असंखेज्जदिभागो त्ति बंधसुत्तादो। किमट्ठं तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छाविदो? जवमज्झादो उवरिम जोगाणं हेट्ठिमजोगेहिंतो बहुवुवलंभादो। जोगजवमज्झादो एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे

यहां इन योगस्थानोंका विशेषणभूत काल अपनी संख्याकी अपेक्षा यवाकार हो जाता है क्योंकि, वह मध्यमें तो स्थूल है और दोनों ही पार्श्वभागोंमें क्रमसे हानि होती गई है। ४।५।६।७।८।७।६।५।४।३।२। इस प्रकार इन चार आदि समयोंसे विशेषित योगस्थान भी ग्यारह प्रकारका है अन्यथा यह कालका विशेष्य नहीं बन सकता क्योंकि, योगसे पृथग्भूत काल नहीं पाया जाता। यहां योगको ही यव कहा है और उसका मध्य यवमध्य कहलाता है। यवमध्यसे आठ समयवाले योगस्थान लिये जाते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस यवमध्यके ऊपर सब योगोंके असंख्यात बहुभाग प्रमाण योगस्थानोंमें अन्तर्मुहूर्त काल तक स्थित रहा, क्योंकि यहां चार वृद्धियों और चार हानियोंकी सम्भावना देखी जाती है।

शंका— चार वृद्धियों और चार हानियोंका काल अन्तर्मुहूर्त है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान — असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानिका काल अन्तर्मुहूर्त है तथा शेष वृद्धियों और शेष हानियोंका काल आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण है इस बन्धसूत्रसे यह जाना जाता है कि चार वृद्धियों और चार हानियोंका काल अन्तर्मुहूर्त है।

शंका— वहां अन्तर्मुहूर्त काल तक किसलिये स्थित कराया?

समाधान—चूंकि यवमध्यसे आगेके योग पिछले योगोंसे बहुत पाये जाते हैं, अतः वहां अन्तर्मुहूर्त काल तक स्थित कराया है।

विशेषार्थ—प्रति समय मन वचन और कायके निमित्तसे जो आत्मप्रदेश परिस्पंद होता है उसे योग कहते हैं और इनके स्थानोंको योगस्थान कहते हैं। योगस्थान तीन प्रकारके होते हैं— उपपाद योगस्थान एकान्तवृद्धि योगस्थान और परिणाम योगस्थान। भवके प्रथम समयमें स्थित जीवके उपपाद योगस्थान होते हैं। इसके पश्चात्

दव्वट्ठियणयं पडुच्च जोगजवमज्झसण्णिदजीवजवमज्झादो उवरिमअद्धाणम्मि अंतोमुहुत्त-मच्छिदो त्ति किण्ण उच्चदे ? ण, जीवजवमज्झउवरिमअद्धाणम्मि हेट्ठिमअद्धाणादो विसेसा-

शरीरपर्याप्तिके पूर्ण होने तक एकान्तवृद्धि योगस्थान होते हैं। यदि लब्ध्यपर्याप्त जीव होता है तो आयुके अन्तिम तीसरे भागको छोड़कर उपपाद योगके बाद अन्यत्र एकान्तानु-वृद्धि योगस्थान होते हैं। इसके बाद शरीरपर्याप्तिके पूर्ण होनेके समयसे लेकर या लब्ध्यपर्याप्तकके अन्तिम तीसरे भागमें परिणाम योगस्थान होते हैं। ये परिणाम योगस्थान द्वीन्द्रिय पर्याप्तके जघन्य योगस्थानोंसे लेकर सज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके उत्कृष्ट योगस्थानों तक क्रमसे वृद्धिको लिये हुए होते हैं। इनमें आठ समयवाले योगस्थान सबसे थोड़े होते हैं। इनसे दोनों पार्श्वभागोंमें स्थित सात समयवाले योगस्थान असंख्यातगुणे होते हैं। इनसे दोनों पार्श्वभागोंमें स्थित छह समयवाले योगस्थान असंख्यातगुणे होते हैं। इनसे दोनों पार्श्वभागोंमें स्थित पाच समयवाले योगस्थान असंख्यातगुणे होते हैं। इनसे दोनों पार्श्वभागोंमें स्थित चार समयवाले योगस्थान असं-ख्यातगुणे होते हैं। इनसे तीन समयवाले योगस्थान असंख्यातगुणे होते हैं और इनसे दो समयवाले योगस्थान असंख्यातगुणे होते हैं। ये सब योगस्थान चार, पाच, छह, सात, आठ, सात, छह, पांच, चार, तीन और दो समयवाले होनेसे ग्यारह भागोंमें विभक्त हैं, अतः समयकी दृष्टिसे इनकी यवाकार रचना हो जाती है। आठ समयवाले योगस्थान मध्यमें रहते हैं। फिर दोनों पार्श्वभागोंमें सात समयवाले योगस्थान प्राप्त होते हैं। फिर दोनों पार्श्वभागोंमें छह समयवाले योगस्थान प्राप्त होते हैं। फिर दोनों पार्श्वभागोंमें पाच समयवाले योगस्थान प्राप्त होते हैं। फिर दोनों पार्श्वभागोंमें चार समयवाले योगस्थान प्राप्त होते हैं। फिर आगेके भागमें क्रमसे तीन समय और दो समयवाले योगस्थान प्राप्त होते हैं। इनमेंसे आठ समयवाले योगस्थानोंकी यवमध्य संज्ञा है। यवमध्यसे पहलेके योगस्थान थोड़े होते हैं और आगेके योगस्थान असंख्यातगुणे होते हैं। इन आगेके योगस्थानोंमें संख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणवृद्धि ये चारों वृद्धिया तथा ये ही चारों हानियां सम्भव हैं। इसीसे इन योगस्थानोंमें उक्त जीवको अन्तर्मुहूर्त काल तक स्थित कराया है, क्योंकि, योगस्थानोंका अन्तर्मुहूर्त काल यहीं सम्भव है। (देखिये कर्मकाण्ड गा २१८ आदि)

शंका—'जोगजवमज्झादो—' इस सूत्रका अर्थ कहते समय द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा योगयवमध्य संज्ञावाले जीवयवमध्यसे आगेके स्थानमें अन्तर्मुहूर्त काल तक स्थित रहा, ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जीवयवमध्यका आगेका स्थान पिछले स्थानसे विशेष

ट्ठिदम्मि अंतोमुहुत्तमच्छणसंभवाभावादो । कुदो ? तत्थ असंखेज्जगुणवड्ढीए अभावादो ।

जीवजवमज्झहेट्ठिमअद्धाणादो उवरिमअद्धाणस्स विसेसाहियभावपदुप्पायणट्ठं परूवणा पमाणं सेडी अवहारो[1] भागाभागो अप्पाबहुगं चेदि जोगट्ठाणट्ठिदजीवे आधारं कादूण एदेसिं छण्णमणियोगद्दाराणं परूवणा कीरदे । तं जहा—

जहण्णए जोगट्ठाणे अत्थि जीवा । एवं जाव उक्कस्सए त्ति जोगट्ठाणे जीवा अत्थि त्ति सव्वत्थ वत्तव्वं । परूवणा गदा ।

जहण्णए जोगट्ठाणे असंखेज्जा जीवा । तेसिं पमाणमसंखेज्जाओ सेडीओ। एवं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणजीवे त्ति सव्वत्थ वत्तव्वं । जहण्णजोगट्ठाणम्मि असंखेज्जसेडिमेत्ता जीवा होंति त्ति कधं णव्वदे ? उच्चदे— पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण जगपदरे भागे हिदे सव्व जोगट्ठाणाण तसपज्जत्तजीवपमाणं होदि । एदम्मि तीहि जीवगुणहाणीहि सव्वजोगट्ठाण

अधिक है । अतः वहां अन्तर्मुहूर्त काल तक स्थित रहना सम्भव नहीं है क्योंकि वहां असंख्यातगुणवृद्धि नहीं पाई जाती ।

अब जीवयवमध्यके पिछले स्थानसे आगेका स्थान विशेष अधिक है इस बातका कथन करनेके लिये प्ररूपणा प्रमाण श्रेणि अवहार भागाभाग और अल्पबहुत्व इन छह अनुयोगद्वारोंकी योगस्थानोंमें स्थित जीवोंके आधार करके प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—

जघन्य योगस्थानमें जीव हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थानके प्राप्त होने तक सब योगस्थानोंमें जीव हैं ऐसा सर्वत्र कथन करना चाहिये । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

जघन्य योगस्थानमें असंख्यात जीव हैं । उनका प्रमाण असंख्यात जगश्रेणियां है । इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थानके प्राप्त होने तक सर्वत्र जीवोंकी संख्या कहनी चाहिये ।

शंका—जघन्य योगस्थानमें असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण जीव हैं, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—इस शंकाका उत्तर कहते हैं । प्रतरांगुलके संख्यातवें भागका जगप्रतरमें भाग देनेपर सब योगस्थानोंमें स्थित त्रस पर्याप्त जीवोंका प्रमाण होता है[2] । इसमें समस्त योगस्थान अध्वानके असंख्यातवें भाग प्रमाण तीन जीवगुणहानियोंके

---

१ अप्रतौ 'सेडीए अवहारो' इति पाठः ।

२ आवलिअसंखसंखेणवहिदपदरंगुलेण हिदपदरं । कमसो तसतप्पुण्णा पुण्णूणतसा अपुण्णा हु ॥ गो. जी. १७८

ट्ठाणस्स असंखेज्जदिभागादि भागे हिदे[1] असंखेज्जसेडिमेत्ता जवमज्झजीवा आगच्छंति, सव्व-जीवे जवमज्झपमाणेण कीरमाणे तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झपमाणुवलभादो। हेट्ठिमणाणागुण-हाणिसलागाओ[2] विरलिय विगुणिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिण्णिगुणहाणीओ गुणिदे जोग-ट्ठाणद्धादो[3] असंखेज्जगुणो सेडीए असंखेज्जदिभागो होदि। तेण तसपज्जत्तरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जसेडिमेत्ता जहण्णजोगट्ठाणजीवा आगच्छंति, जगपदरभागहारस्स सेडीए असंखे-ज्जदिभागत्तुवलभादो। एदेणुवदेसेण उक्कस्सजोगट्ठाणजीवा वि असंखेज्जसेडिमेत्ता त्ति साहेदव्वा। जहण्णुक्कस्सजोगट्ठाणजीवपमाणे असंखेज्जसेडित्तेण सिद्धे सव्वजोगट्ठाणजीव-पमाणं असंखेज्जसेडित्तेण सिद्धं चेव, तत्तो इदरेसिं जीवाणं बहुत्तुवलंभादो। पमाण-परूवणा गदा।

कालका भाग देनेपर असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण यवमध्यके जीव आते हैं, क्योंकि, सब जीवोंको यवमध्यमें स्थित जीवोंके प्रमाणसे करनेपर तीन गुणहानियोंका जितना काल है उतने यवमध्य प्राप्त होते हैं। पिछली नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर द्विगुणित करनेपर अन्योन्याभ्यस्त राशि होती है। इससे तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर योगस्थानकाल असंख्यातगुणा हो कर भी जगश्रेणिका असंख्यातवा भाग होता है। उसका त्रस पर्याप्त राशिमें भाग देनेपर असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण जघन्य योग-स्थानस्थित जीव आते हैं, क्योंकि, यहांपर जगप्रतरका भागहार, जगश्रेणिका असंख्यातवा भाग पाया जाता है। इस प्रकार इस उपदेशसे उत्कृष्ट योगस्थानके जीव भी असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण होते हैं, ऐसा सिद्ध कर लेना चाहिये। इस प्रकार जघन्य व उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंकी संख्या असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण सिद्ध हो जानेपर सब योग-स्थानोंके जीवोंकी संख्या असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण सिद्ध ही है, क्योंकि, उक्त दो स्थानोंके जीवोंकी संख्याकी अपेक्षा इतर योगस्थानोंके जीवोंकी संख्या बहुत पाई जाती है।

विशेषार्थ—यहां त्रसपर्याप्त सम्बन्धी कुल योगस्थानोंमें अलग अलग और मिलकर कितने जीव हैं, यह बतलाते हुए सर्वप्रथम जघन्य आदि प्रत्येक योगस्थानके जीवोंकी संख्याकी सिद्धि की गई है और उस परसे त्रसपर्याप्त सम्बन्धी सब योगस्थानोंके जीवोंकी संख्या फलित की गई है। आवलिके संख्यातवें भागका प्रतरांगुलमें भाग देनेपर जो लब्ध आवे उसका जगप्रतरमें भाग देनेसे त्रसपर्याप्तराशि प्राप्त होती है, ऐसा नियम है। फिर भी यह राशि जगश्रेणियोंकी अपेक्षा कितनी जगश्रेणि प्रमाण है, यह देखना है। ऐसा मोटा नियम है कि समस्त त्रसपर्याप्तराशिमें तीन जीवगुणहानियोंके कालका भाग

---

१ अप्रतौ 'असंखेज्जदिभागे हिदे' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः '-सलागावो' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'जोगट्ठाणद्धाणुववत्तीदो असंखेज्जगुणो' इति पाठः।

सेडिपरूवणा दुविहा— अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणंतरोवणिधा ताव उच्चदे । तं जहा— जीवगुणहाणिसलागाहि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताहि तेरासियकमेण सव्वजोगट्ठाणद्धाणे भागे हिदे एगगुणहाणी आगच्छदि । तं विरलेदूण जहण्ण

देनेपर यवमध्यके जीव आते हैं। उदाहरणार्थ अंकसंदृष्टिकी अपेक्षा तीन जीवगुणहानियोंका काल १२ है और त्रस पर्याप्तराशिका प्रमाण १४२२ है। अतः इस राशिमें कुछ कम १२ का अर्थात् '$\frac{७११}{६४}$' का भाग देनेपर यवमध्यके जीवोंका प्रमाण १२८ होता है जो अर्थ संदृष्टिकी अपेक्षा असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण है। यहां यद्यपि मूलमें तीन गुणहानियोंके कालका भाग दिलाया गया है पर वह स्थूल कथन है। सूक्ष्म दृष्टिसे विचार करनेपर कुछ कम तीन गुणहानियोंके कालका भाग दिलानेपर ही यह संख्या प्राप्त होती है ऐसा यहां समझना चाहिये। इस प्रकार जब कि त्रस पर्याप्तराशिमें कुछ कम तीन गुणहानियोंके कालका भाग देनेपर यवमध्यके जीवोंका प्रमाण आता है तो इस राशिको यवमध्यके जीवोंके प्रमाण रूपसे करनेपर यह कुछ कम तीन गुणहानियोंकी जितनी संख्या होगी उतने यवमध्य प्रमाण प्राप्त होगी इसमें जरा भी सन्देह नहीं। अब यह देखना है कि इस राशिमेंसे जघन्य योगस्थानको प्राप्त कितने जीव हैं। इसके लिये यह नियम है कि नयस्तन गुणहानियोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे कुछ कम तीन गुणहानियोंके कालको गुणित करनेपर जो लब्ध आवे उसका समस्त त्रस पर्याप्तराशिमें भाग देनेपर जघन्य योगस्थानके जीवोंका प्रमाण आता है। उदाहरणार्थ अधस्तन गुणहानियोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि ८ है। इससे कुछ कम तीन गुणहानियोंके काल ११ $\frac{७}{६४}$ को गुणित करनेपर ८८ $\frac{७}{८}$ प्राप्त होते हैं और इसका सब त्रस पर्याप्तराशि १४२२ में भाग देनेपर १६ प्राप्त होते हैं जो सबसे जघन्य त्रस पर्याप्त योगस्थानवाले जीवोंका प्रमाण है। सबसे उत्कृष्ट त्रस पर्याप्त योगस्थानवाले जीवोंका प्रमाण भी इसी प्रकार ले आना चाहिये। अतः यह राशि असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण है क्योंकि, जगप्रतरमें जगश्रेणिके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर यह राशि आती है। अतः सम्पूर्ण त्रस पर्याप्त राशि असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण है यह अपने आप सिद्ध हो जाता है। (कर्मकाण्ड गा. २४५, २४६)

इस प्रकार प्रमाण प्ररूपणा समाप्त हुई।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकारकी है— अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा। उनमेंसे अनन्तरोपनिधाको कहते हैं। वह इस प्रकार है— पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण जीवगुणहानिशलाकाओंका त्रैराशिकक्रमसे समस्त योगस्थानकालमें भाग देनेपर एक गुणहानि आती है। उसका विरलन कर प्रत्येक एकपर जघन्य योगस्थानके जीवोंको

जोगट्ठाणजीवेसु समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि जीवपक्खेवपमाणं पावदि। एत्थ जीवपक्खेवपमाणाणुगमं कस्सामो। तं जहा — जवमज्झादो हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिण्णिगुणहाणीओ गुणिदे जोगट्ठाणद्धाणादो असंखेज्जगुणत्तं पत्तेण तसपज्जत्तरासिम्हि भागे हिदे जहण्णजोगट्ठाणजीवा असंखेज्जसेडिमेत्ता आगच्छंति। तासिं सेडीणं विक्खंभसूची सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ता। कधमेदं णव्वदे? जोगट्ठाणद्धाणागमणहेदुजगसेडिभागहारम्मि सेडीए असंखेज्जदिभागत्तुवलंभादो। तं पि कुदो णव्वदे? सव्वजोगट्ठाणाणि जहण्णजोगट्ठाणजहण्णफद्दयपमाणेण कादूण तत्थेगफद्दयवग्गणसलागाहि सेडीए असंखेज्जदि-

---

समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति जीवप्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है।

उदाहरण—जीवगुणहानिशलाका ८, सब योगस्थानोंका काल ३२; जघन्य योगस्थानके जीव १६;

३२ – ८ = ४ एक गुणहानिका काल;

४ ४ ४ ४
१ १ १ १ जीवप्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त हुआ।

अब यहां जीवप्रक्षेपके प्रमाणका विचार करते हैं। वह इस प्रकार है — यव मध्यसे पहलेकी नानागुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर योगस्थानके कालसे असंख्यातगुणा प्राप्त होता है, फिर उसका त्रस पर्याप्तराशिमें भाग देनेपर असंख्यात जगश्रेणि प्रमाण जघन्य योगस्थानके जीव आते हैं। उन श्रेणियोंकी विष्कम्भसूची जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।

उदाहरण—अधस्तन नानागुणहानिशलाका ८, तीन गुणहानियोंका काल १२; त्रस पर्याप्तराशि १४२२,

१२ × ८ = ९६; कुछ कम इसका अर्थात् ८८$\frac{7}{8}$ का १४२२ में भाग देनेपर जघन्य योगस्थानोंके जीवोंका प्रमाण १६ प्राप्त हुआ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—क्योंकि, योगस्थान सम्बन्धी कालके लानेके लिये निमित्तभूत जो जगश्रेणिका भागहार है वह जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग पाया जाता है।

शंका—वह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—क्योंकि, सब योगस्थानोंको जघन्य योगस्थानके जघन्य स्पर्द्धकोंके प्रमाण रूपसे करके उसमें एक स्पर्द्धककी श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण वर्गणा-

भागमेत्ताहि तम्हि गुणिदे सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव वग्गणाओ होंति त्ति गुरूवदेसादो ।

एत्थ सव्वजोगट्ठाणवग्गणाणयणविहाणं उच्चदे । तं जहा— रूवूणजोगट्ठाणद्धाणं सयलजोगट्ठाणद्धाणेण गुणिय वड्डियं[1] पुणो पक्खेवफद्दयसलागाहि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताहि गुणिय जहण्णजोगट्ठाणजहण्णफद्दयसलागाओ जोगट्ठाणद्धाणगुणिदाओ पक्खित्ते सव्वजोगट्ठाणाणं जहण्णफद्दयसलागाओ होंति । पुणो ताओ सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तएगफद्दयवग्गणसलागाहि गुणिदे सव्ववग्गणाओ आगच्छंति । एसा रासी सव्वो वि सेडीए असंखेज्जदिभागो । एत्थ जइ जोगट्ठाणद्धाणागमणट्ठं सेडीए ठविदभागहारो सेडिपढमवग्गमूलमेत्तो होज्ज तो जोगट्ठाणद्धाणे वग्गिदे जगसेडी उप्पज्जेज्ज । अह जइ दुगुणो तो जोगट्ठाणद्धाणं वग्गिय चदुगुणिदे जगसेडी होज्ज । अह चउगुणो, वग्गिय सोलसेहि गुणिदे सेडी होज्ज । एवं संखेज्जासंखेज्जेसु णेदव्वं जाव संदेहविच्छेदो त्ति । णवरि एत्थ जोगट्ठाणद्धाणं वग्गिय सेडीए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे वि जगसेडी ण उप्पण्णा, तिस्से असंखे

शलाकाओंसे सब योगस्थानोंको गुणित करनेपर श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र ही वर्गणायें प्राप्त होती हैं इस गुरुके उपदेशसे जाना जाता है कि योगस्थानोंका काल लानेके लिये जगश्रेणिका भागहार जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है ।

यहां सब योगस्थानोंकी वर्गणाओंके लानेका विधान कहते हैं । वह इस प्रकार है— एक कम योगस्थानके कालको समस्त योगस्थानके कालसे गुणित करके आधा कर फिर अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र प्रक्षेप-स्पर्धक शलाकाओंसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें योगस्थानके कालसे गुणित जघन्य योगस्थानकी जघन्य स्पर्धकशलाकाओंका प्रक्षेप करनेपर समस्त योगस्थानोंकी जघन्य स्पर्धकशलाकायें होती हैं । पुनः उनको श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र एक स्पर्धककी वर्गणाशलाकाओंसे गुणित करनेपर समस्त वर्गणायें आती हैं । यह सभी राशि श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । यहां योगस्थानके काल लानेके लिये श्रेणिका जो भागहार स्थापित किया जाय वह यदि जगश्रेणिके प्रथम वर्गमूल प्रमाण होवे तो योगस्थानोंके कालको वर्गित करनेपर जगश्रेणि उत्पन्न होगी । अथवा यदि वह भागहार श्रेणिके प्रथम वर्ग मूलसे दुगुणा होवे तो योगस्थानके कालको वर्गित कर चारसे गुणा करनेपर जगश्रेणि उत्पन्न होगी । अथवा यदि वह भागहार श्रेणिके प्रथम वर्गमूलसे चौगुणा होवे तो योगस्थानोंके कालको वर्गित करके सोलहसे गुणित करनेपर जगश्रेणि उत्पन्न होगी । इस प्रकार संशयके दूर होने तक संख्यातगुणे व असंख्यातगुणे तक ले जाना चाहिये । विशेष इतना है कि यहां योगस्थानोंके कालको वर्गित कर श्रेणिके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर भी जगश्रेणि उत्पन्न नहीं हुई, किन्तु उसका असंख्यातवां भाग ही उत्पन्न हुआ । इससे जाना जाता है कि जगश्रेणिका

१ प्रतिषु वडिय इति पाठः ।

छ. १२.

ज्जदिभागो चेवुप्पण्णो । एदेण णव्वदि' जहा सेडीए असंखेज्जदिभागो होंतो' वि पढम-वग्गमूलं सेडीए असंखेज्जदिभागेण गुणिदमेत्तो सेडिभागहारो होदि त्ति । जहण्णजोगट्ठाण-जीवभागहारमेगगुणहाणिणा गुणिदे जोगट्ठाणद्धाणवग्गो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदो जेण उप्पज्जदि तेणेदेण तसजीवरासिम्हि भागे हिदे सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजग-सेडीओ जीवपक्खेवपमाणाओ उप्पज्जंति त्ति सिद्धं । एवं जीवपक्खेवपमाणं परूविदं ।

संपहि अणंतरोवणिधाए अवट्ठिदभागहारो रूवाहियभागहारो रूवूणभागहारो छेद-भागहारो त्ति एदेहि चदुहि भागहारेहि जोगट्ठाणजीवा उप्पाएदव्वा । तं जहा — तत्थ ताव अवट्ठिदभागहारादो उप्पत्तिं भण्णमाणे सेडीए असंखेज्जदिभागमेगगुणहाणिं विरलिय जहण्ण-जोगट्ठाणजीवे समभागं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि एगेगजीवपक्खेवपमाणं पावदि । तत्थ एगपक्खेवं घेत्तूण जहण्णजोगट्ठाणजीवे पडिरासिय तत्थ पक्खित्ते बिदियजोगट्ठाणजीवपमाणं होदि । एदं पडिरासिय बिदियपक्खेवे पक्खित्ते तदियजोगट्ठाणजीवपमाणं होदि । एवं णेदव्वं जाव विरलणरासिमेत्तजीवपक्खेवा सव्वे पइट्ठा त्ति । ताधे दुगुणवड्ढी होदि, जहण्ण-

---

भागहार जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता हुआ भी वह जगश्रेणिके प्रथम वर्ग मूलको जगश्रेणिके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर जितना लब्ध आवे उतना है । जघन्य योगस्थानके जीवभागहारको एक गुणहानिसे गुणित करनेपर योगस्थानकालका वर्ग पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित होकर चूंकि उत्पन्न होता है अतः इसका त्रसजीवराशिमें भाग देनेपर श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र जगश्रेणियां जीवप्रक्षेप प्रमाण उत्पन्न होती हैं, यह सिद्ध है । इस प्रकार जीवप्रक्षेपप्रमाणकी प्ररूपणा की ।

अब अनन्तरोपनिधाके आधारसे अवस्थित भागहार, रूपाधिक भागहार, रूपोन भागहार और छेदभागहार, इन चार भागहारों द्वारा योगस्थानोंके जीवोंको उत्पन्न कराना चाहिये । यथा — वहां प्रथमतः अवस्थित भागहारके आधारसे योगस्थानोंके जीवोंकी उत्पत्तिका कथन करनेपर जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण एक गुणहानिका विरलन कर जघन्य योगस्थानके जीवोंको समभाग करके देनेपर प्रत्येक विरलनके प्रति एक एक जीवप्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर उनमेंसे एक प्रक्षेपको ग्रहण कर जघन्य योगस्थानके जीवोंको प्रतिराशि कर उसमें प्रक्षिप्त करनेपर द्वितीय योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । फिर इसको प्रतिराशि करके इसमें द्वितीय प्रक्षेपके मिलानेपर तृतीय योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । इस प्रकार विरलन राशि प्रमाण सब जीव-प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होने तक ले जाना चाहिये । उस समय दुगुणी वृद्धि होती है, क्योंकि,

---

१ आप्रतौ ' णव्वदे ' इति पाठः ।   २ प्रतिषु ' होंता ' इति पाठः ।

जोगट्ठाणजीवाणमुवरि तेत्तियमेत्ताणं चेव पवेसदंसणादो । पुणो दुगुणवड्डिजीवेसु तिस्से चेव विरलणाए समखंडं करिय दिण्णेसु रूवं पडि पक्खेवपमाणं पावेदि । णवरि पुव्विल्लपक्खेवादो सपहियपक्खेवो दुगुणो, विहज्जमाणरासिदुगुणत्तादो । एदम्मि पक्खेवे दुगुणवड्डिजीवे पडि रासिय पक्खित्ते तदणंतरउवरिमजोगट्ठाणजीवपमाणं होदि । एदं पडिरासिय विदियपक्खेवे पक्खित्ते तत्तो अणंतरउवरिमजोगट्ठाणजीवपमाणं होदि । एवं णेदव्वं जाव जवमज्झे त्ति । णवरि जीवपक्खेवा पढमगुणहाणिप्पहुडि उवरि सव्वत्थ गुणहाणिं पडि दुगुण-दुगुणा त्ति वत्तव्वा, अवट्ठिदभागहारत्तादो । तेणेव कारणेण गुणहाणिअद्धाणं पि अवट्ठिदभावेण दट्ठव्वं।

जघन्य योगस्थानके जीवोंके ऊपर उतने मात्र जीवोंका ही प्रवेश देखा जाता है । फिर दुगुणी वृद्धिको प्राप्त हुए जीवोंको उसी विरलनपर समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति दूसरे प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । विशेष इतना है कि पूर्वोक्त प्रक्षेपसे यह प्रक्षेप दुगुना है, क्योंकि जो राशि विभक्त करके विरलन राशिके प्रत्येक एकके प्रति दी गई है वह दूनी है । इस प्रक्षेपको दुगुणी वृद्धिको प्राप्त हुए जीवोंको प्रतिराशि करके उसके ऊपर देनेपर उससे आगेके उपरिम योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । इसको प्रतिराशि करके इसमें द्वितीय प्रक्षेपके मिलानेपर उससे आगेके उपरिम योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । विशेष इतना है कि जीवप्रक्षेप प्रथम गुणहानिसे लेकर ऊपर सर्वत्र प्रत्येक गुणहानिके प्रति दुगुने दुगुने होते जाते हैं ऐसा यहां कहना चाहिये, क्योंकि, प्रक्षेपका प्रमाण लानेके लिये जो भागहारका प्रमाण कहा है वह सर्वत्र अवस्थित अर्थात् एक रूप है और इसी कारणसे गुणहानिके कालको भी अवस्थित रूपसे जानना चाहिये ।

विशेषार्थ—अंकसंदृष्टिकी अपेक्षा उक्त विषयका खुलासा इस प्रकार है— गुणहानिका काल ४ है । इसका १ १ १ १ इस प्रकार विरलन करके उस पर जघन्य योगस्थानके जीव १६ को विभक्त कर ४ ४ ४ ४ इस क्रमसे स्थापित करनेपर प्रत्येक विरलनके प्रति ४ प्राप्त होते हैं । प्रथम प्रक्षेपका यही प्रमाण है । इसे १६ में मिलानेपर २० यह दूसरे योगस्थानके जीवोंकी संख्या होती है । इसमें ४ के मिलानेपर २४ यह तीसरे योगस्थानके जीवोंकी संख्या होती है । इस प्रकार जीवोंकी संख्याकी दूनी वृद्धि होने तक यही क्रम जानना चाहिये । फिर गुणहानिके कालका पूर्ववत् विरलन करके उसपर अन्तमें प्राप्त ३२ इस संख्याको विभक्त कर क्रमसे स्थापित करना चाहिये । इससे द्वितीय प्रक्षेपका प्रमाण ८ उत्पन्न होता है । इस प्रकार यवमध्यके जीवोंकी संख्या १२८ उत्पन्न होने तक यही क्रम जानना चाहिये । अतः यहां भागहार जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग अवस्थित रूपसे सर्वत्र विवक्षित है । इसीलिये गुणहानिका काल भी अवस्थित रूपसे ही लिया गया है, क्योंकि, इन दोनोंका परस्परमें सम्बन्ध है ।

संपदि जीवजवमज्झस्सुवरि भण्णमाणे दुगुणो पुव्वभागहारो विरलेदव्वो, अण्णहा जवमज्झपक्खेवाणुप्पत्तीदो । ण च अवट्ठिदभागहारपइज्जाविरोहो वि, जवमज्झस्स हेट्ठुवरिम-भागेसु पुध पुध अवट्ठिददोभागहारब्भुवगमादो । एदं विरलिय समखंड करिय जीवजवमज्झे दिण्णे रूवं पडि पक्खेवपमाण होदि । पुणो जवमज्झ पडिरासिय तत्थ एगपक्खेवे अवणिदे तदणंतरजोगट्ठाणजीवपमाणं होदि । त पडिरासिय विदियपक्खेवे अवणिदे तदणतरउवरिम-जोगट्ठाणजीवपमाण[1] होदि । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणजीवे त्ति ।

अब जीवयवमध्यके ऊपरके स्थानोंका कथन करनेपर पूर्व भागहारसे दुगुणे भागहारका विरलन करना चाहिये, क्योंकि, ऐसा किये बिना यवमध्यका प्रक्षेप नहीं बन सकता। दुगुणे भागहारका विरलन करनेसे अवस्थित भागहारकी प्रतिज्ञाका विरोध होगा सो भी नहीं है, क्योंकि, यवमध्यके अधस्तन और उपरिम भागोंमें पृथक् पृथक् अवस्थित रूपसे दो भागहार स्वीकार किये गये हैं । इस प्रकार इस दूने भागहारका विरलन कर समखण्ड करके जीवयवमध्यके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है। फिर यवमध्यको प्रतिराशि कर उसमेंसे एक प्रक्षेपके कम करनेपर उससे आगेके योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । उसको प्रतिराशि कर उसमेंसे द्वितीय प्रक्षेपके कम करनेपर उससे उपरिम योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है। इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका प्रमाण आने तक ले जाना चाहिये।

विशेषार्थ— पहले जो क्रम बतला आये हैं उससे जीवयवमध्यके आगेका क्रम बदल जाता है। यहां भागहारका प्रमाण पूर्वकी अपेक्षा दूना हो जाता है। जीवयवमध्यके पहले प्रत्येक योगस्थानके जीवोंका प्रमाण लानेके लिये भागहारका प्रमाण जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण बतला आये थे। किन्तु यहां वह दूना हो जाता है, अन्यथा यवमध्यके जीवोंके आधारसे आगेके प्रक्षेपका प्रमाण नहीं लाया जा सकता है। इसपर यह शंका होती है कि जब सर्वत्र अवस्थित भागहार स्वीकार किया गया है तब फिर यहां उसे दूना कैसे किया जा सकता है। इस शंकाका जो समाधान किया है उसका भाव यह है कि यवमध्यसे पूर्वकी गुणहानियोंमें सर्वत्र एक भागहार स्वीकार किया गया है और आगेकी गुणहानियोंमें दूसरा भागहार स्वीकार किया गया है। इसलिये भागहारको अवस्थित माननेमें कोई बाधा नहीं आती। फिर भी यहां इतना विशेष समझना चाहिये कि यवमध्यमें सबसे अधिक जीव होते हैं, इसलिये यवमध्यके आगेकी गुणहानियोंमें सर्वत्र प्रक्षेपको घटाते जाना चाहिये और प्रत्येक गुणहानिमें उसे आधा आधा करते जाना चाहिये। इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका प्रमाण आने तक यह क्रम जानना चाहिये।

१ प्रतिषु 'जोगट्ठाणं' इति पाठः।

अथवा दोगुणहाणीओ विरलिय जवमज्झं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि जवमज्झजीवपक्खेवपमाणं पावदि । पुणो जवमज्झं पडिरासिय दोपासट्ठिदजवमज्झेसु विरलणाए पढमपक्खेवे अवणिदे जवमज्झदोपासट्ठियपढमजोगट्ठाणजीवपमाणं होदि । पुणो ते दो वि पडिरासिय उभयत्थ बिदियपक्खेवे अवणिदे जवमज्झदोपासट्ठियबिदियजोगट्ठाणजीवपमाणं होदि । एवं णेदव्वं जाव विरलणरासीए अद्धं खीणमिदि । तदो सेसरूवधरिदं अद्धिय अण्णोण्णहेयरूवाणं परिवाडीए दिण्णे जवमज्झं पेक्खिदूण बिदियगुणहाणीए पक्खेवो होदि पुव्विल्लपक्खेवस्स दुभागत्तादो । एदे पक्खेवे पुव्वं व अवणिय णेदव्वं जाव बिदियगुणहाणिचरिमणिसेगो त्ति । एवं जाणिदूण णेदव्वं जाव जहण्णजोगट्ठाणजीवपमाणं दोसु वि पासेसु पत्तमिदि । पुणो हेट्ठा ण णिज्झदि, तत्तो परं बीइंदियपज्जत्तजोगट्ठाणाभावादो । उवरि पुव्वं व असंखेज्जगुणहाणीओ हेट्ठिमगुणहाणीममसंखेज्जदिभागमेत्ताओ पुणो वि णेदव्वाओ जाव उक्कस्सजोगट्ठाणजीवपमाणं पत्तमिदि । एवं कदे जवमज्झदोसु वि पासेसु एक्को अवट्ठिदभागहारो सिद्धो ।

अथवा दो गुणहानियोंका विरलन कर यवमध्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति यवमध्य जीवप्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर यवमध्यको प्रतिराशि करके पार्श्वमें स्थित दो योगस्थानोंके जीवोंकी अपेक्षा दो यवमध्योंमेंसे विरलनाके प्रथम प्रक्षेपको कम करनेपर यवमध्यके दोनों पार्श्वभागोंमें स्थित प्रथम योगस्थानोंके जीवोंका प्रमाण होता है । फिर उन दोनोंको ही प्रतिराशि करके उभय राशियोंमेंसे द्वितीय प्रक्षेपको कम करनेपर यवमध्यके दोनों पार्श्वोंमें स्थित द्वितीय योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । इस प्रकार विरलन राशिके अर्ध भागके क्षीण होने तक ले जाना चाहिये । तत्पश्चात् विरलन राशिके शेष अंकोंपर स्थित राशिको आधा करके अन्योन्य अंकोंको परिपाटीसे देनेपर यवमध्यकी अपेक्षा द्वितीय गुणहानिका प्रक्षेप होता है क्योंकि वह पूर्वोक्त प्रक्षेपसे आधा है । फिर इन प्रक्षेपोंको पहलेके समान दूसरी गुणहानिके अन्तिम निषेकके प्राप्त होने तक घटाते हुए ले जाना चाहिये । इस प्रकार जानकर दोनों ही पार्श्वभागोंमें जघन्य योगस्थानके जीवोंका प्रमाण प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । फिर नीचे नहीं ले जाया जा सकता है क्योंकि, उससे आगे द्वीन्द्रिय पर्याप्तके योगस्थान नहीं पाये जाते । किन्तु ऊपर पूर्वके समान अधस्तन गुणहानियोंके असंख्यातवें भाग मात्र असंख्यात गुणहानियोंको उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका प्रमाण प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार करनेपर यवमध्यके दोनों ही पार्श्वभागोंमें एक अवस्थित भागहार सिद्ध होता है ।

---

१ प्रतिषु णिज्झदि इति पाठः । २ प्रतिषु उवरि इति पाठः ।

संपहि रूवाहियभागहारेण अणंतरोवणिधा वुच्चदे— गुणहाणिणा जहण्णजोगट्ठाण-जीवेसु भागे हिदेसु पक्खेवो लब्भदि । त पडिरासिदजहण्णजोगट्ठाणजीवेसु पक्खित्ते विदिय-ट्ठाणजीवा होंति । पुणो रूवाहियपुव्वभागहारेण विदियट्ठाणजीवे खंडिय तत्थेगखंडे त चेव पडिरासिय पक्खित्ते तदियट्ठाणजीवपमाण होदि । पुणो अणतरहेट्ठिमभागहारेण रूवाहिएण एदं खंडिय लद्धे पडिरासिदजीवेसु पक्खित्ते चउत्थट्ठाणजीवा होंति । एवं णेदव्व जाव पढम-दुगुणवड्ढि त्ति । एवं पत्तेय पत्तेय जवमज्झहेट्ठिमसव्वगुणहाणीण रूवाहियभागहारो परूवेदव्वो । कुदो सगगुणहाणिणियमो रूवाहियभागहारस्स ? गुणहाणिं पडि पक्खेवाणं तुल्लत्ताभावादो ।

विशेषार्थ—पहले यवमध्यसे पूर्वकी गुणहानियोंमें प्रारम्भसे प्रत्येक योगस्थानके जीवोंकी सख्यामें प्रक्षेपको जोड़ते हुए यवमध्य तकके जीवोंकी संख्या उत्पन्न करके बतलाई गई थी और यवमध्यसे आगे सर्वत्र प्रक्षेपको घटानेकी प्रक्रियाके निर्देश द्वारा उत्कृष्ट योगस्थान तकके जीवोंकी सख्या निकाल कर बतलाई गई थी। किन्तु यहा यवमध्यसे दोनों ओर प्रक्षेपको घटाते हुए किस प्रकार प्रत्येक योगस्थानके जीवोंकी सख्या आती है, इस विधिका निर्देश किया गया है । प्रारम्भमें यहा दो गुणहानियोंके कालका विरलन करा कर यवमध्यके जीवोंको समविभक्त कर दिया गया है और एक विरलनके प्रति जितनी सख्या प्राप्त हो उतनी सख्या दोनों ओर क्रमश घटाई गई है । किन्तु यह क्रम आधे विरलनोंके समाप्त हाने तक ही चालू रखा गया है । आगे प्रत्येक गुणहानिमें प्रक्षेपका प्रमाण आधा आधा होता गया है और इस प्रकार दोनों ओर गुणहानिके अनुसार प्रत्येक योगस्थानके जीवोंकी संख्या लाई गई है । यह सब इसलिये किया गया है, क्योंकि इसमें भागहारका प्रमाण नहीं बदलता है ।

अब रूपाधिक भागहारके आधारसे अनन्तरोपनिधाका कथन करते हैं—गुणहानिके कालका जघन्य योगस्थानके जीवोंमें भाग देनेपर प्रक्षेप प्राप्त होता है । उसे प्रतिराशि रूपसे स्थित जघन्य योगस्थानके जीवोंमें मिलानेपर द्वितीय स्थानके जीव होते हैं । पुन एक अधिक पूर्व भागहारसे द्वितीय स्थानक जीवोंको भाजित कर उनमें एक खण्डको उसी दूसरे स्थानकी राशिको ही दूसरी राशि बनाकर उसमें मिला देनेपर तृतीय स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । फिर एक अधिक अनन्तर अधस्तन भागहारसे इस दूसरे स्थानकी राशिको खण्डित कर जो प्राप्त हो उसे प्रतिराशि रूपसे स्थापित तीसरे स्थानके जीवोंमें मिला देनेपर चतुर्थ स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । इस प्रकार प्रथम स्थानसे दुगुणी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार यवमध्यकी अधस्तन सब गुणहानियोंका अलग अलग एक एक गुणहानिके प्रति एक अधिकके क्रमसे भागहार कहना चाहिये ।

शका—रूपाधिक भागहारके लिये अपनी गुणहानिका नियम कैसे है ?

समाधान—क्योंकि, प्रत्येक गुणहानिके प्रक्षेप एक समान नहीं हैं, इसलिये रूपाधिक भागहारके लिये अपनी अपनी गुणहानिका नियम बन जाता है ।

एवं उवरिं पि वत्तव्वं । णवरि उक्कस्सजोगट्ठाणजीवे रूवाहियगुणहाणिणा खंडिय लद्धे पडिरासिदउक्कस्सजोगट्ठाणजीवेसु पक्खित्ते दुचरिमजोगट्ठाणजीवा होंति त्ति वत्तव्वं ।

संपहि रूवूणभागहारेण[1] अणंतरोवणिधा वुच्चदे । तं जहा— दोगुणहाणीहि जव

इसी प्रकार आगे भी कहना चाहिये। विशेष इतना है कि उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंको एक अधिक गुणहानिसे खण्डित करके जो लब्ध आवे उसे प्रतिराशि रूपसे स्थापित उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंमें मिलानेपर द्विचरम योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है ऐसा कहना चाहिये ।

विशेषार्थ—यहां रूपाधिक भागहारके क्रमसे प्रत्येक योगस्थानके जीवोंकी संख्या लाई गई है। सर्वप्रथम गुणहानिके कालका जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्यामें भाग देकर प्रथम प्रक्षेप प्राप्त किया गया है और इसे जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्यामें मिलाकर दूसरे स्थानके जीवोंकी संख्या प्राप्त की गई है। फिर इस प्रक्षेपमें एक मिलाकर उसका भाग दूसरे स्थानके जीवोंकी संख्यामें देकर दूसरा प्रक्षेप प्राप्त किया गया है और उसे दूसरे स्थानके जीवोंकी संख्यामें मिलाकर तीसरे स्थानकी संख्या प्राप्त की गई है। उदाहरणार्थ गुणहानिके काल ४ का जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्या १६ में भाग देने पर ४ लब्ध आते हैं। अतः यह प्रथम प्रक्षेप हुआ। इसे जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्या १६ में मिला देनेपर दूसरे योगस्थानके जीवोंकी संख्या २० होती है। फिर पूर्व प्रक्षेप ४ में १ मिलाकर ५ का २० में भाग देना चाहिये और इस प्रकार जो पुनः ४ लब्ध आवें उसे दूसरे योगस्थानके जीवोंकी संख्या २ में मिला देनेसे तीसरे योगस्थानके जीवोंकी संख्या २४ होती है। इस प्रकार यह क्रम सर्वत्र जानना चाहिये। इतनी विशेषता है कि यवमध्यके आगे पूर्वके समान उत्तरोत्तर अनुरूप प्रक्षेप प्राप्त करके घटाते जाना चाहिये। किन्तु अन्तिम गुणहानिमें अन्तिम स्थानसे पीछेकी तरफ प्रक्षेपका निक्षेप करते हुए लौटना चाहिये। यहां अन्तके स्थानके जीवोंकी जो संख्या हो उसमें एक अधिक गुणहानिके कालका भाग देकर प्रक्षेप प्राप्त करना चाहिये और उसे मिलाते हुए गुणहानिके प्रथम स्थान तक आना चाहिये। उदाहरणार्थ अन्तिम गुणहानिके अन्तिम स्थानके जीवोंकी संख्या ५ है। इसमें १ अधिक गुणहानिके काल ४ अर्थात् ५ का भाग देकर १ संख्या प्रमाण प्रक्षेप प्राप्त होता है। इसे अन्तिम स्थानके जीवोंकी संख्यामें मिला देनेपर द्विचरम योगस्थानके जीवोंकी संख्या होती है। इसी प्रकार आगे भी एक-एक मिलाते जाना चाहिये। यहां सर्वत्र पूर्व प्रक्षेपमें एक एक बढ़ा कर उसके भाग द्वारा नया प्रक्षेप प्राप्त किया गया है, इसलिये इसे रूपाधिक भागहार कहा है।

अब रूपोन भागहारके द्वारा अनन्तरोपनिधाका कथन करते हैं। वह इस प्रकार

---

१ प्रतिषु 'भागहारो' इति पाठः।

मज्झं खंडिय लद्धं जवमज्झादो अवणिदे तस्स दोपासट्ठिदजीवपमाणं होदि । पुणो पुव्विल्ल- भागहारादो रूवूणेण भागहारेण पुध पुध दोपासट्ठिदजीवणिसेगे खंडिय अवणिदे तदिय- णिसेगा होंति । एवं णेदव्वं जाव दोसु वि पासेसु गुणहाणिअद्धाणं समत्तं त्ति । एवं सेस- हेट्ठिम-उवरिमगुणहाणीण पि वत्तव्वं, विसेसाभावादो । रूवूणभागहारस्स एगगुणहाणिणियमत्ते कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

छेदभागहारेण अणंतरोवणिधा वुच्चदे । तं जहा — पक्खेवभागहारेण जहण्णजोगट्ठाण- जीवे खंडिय लद्धं तत्थेव पक्खित्ते विदियट्ठाणजीवा होंति । पुणो पुव्वभागहारदुभागेण जहण्णट्ठाणजीवेसु अवहिरिदेसु दो पक्खेवा लब्भंति । तेसु तत्थेव पक्खित्तेसु तदियट्ठाणजीवा

है — दो गुणहानियोंसे यवमध्यको खण्डित कर प्राप्त राशिको यवमध्यमेंसे घटानेपर उसके दोनों पार्श्वोंमें स्थित जीवोंका प्रमाण होता है । फिर पूर्वोक्त भागहारसे एक कम भागहार द्वारा पृथक् पृथक् दोनों पार्श्वस्थ जीवनिषेकोंको खण्डित कर प्राप्त राशिको उभय पार्श्वस्थ जीवनिषेकोंमेंसे कम करनेपर तृतीय स्थानके निषेक होते हैं । इस प्रकार दोनों ही पार्श्वभागोंमें गुणहानिके कालके समाप्त होने तक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार शेष अधस्तन व उपरिम गुणहानियोंका भी कथन करना चाहिये, क्योंकि, इससे उसमें कोई विशेषता नहीं है । रूपोन भागहारकी एक गुणहानिनियमतामें कारण पूर्वके ही समान कहना चाहिये ।

विशेषार्थ — आशय यह है कि जहां विवक्षित भागहारमेंसे एक कम करके उससे आगेके स्थानकी संख्या प्राप्त की जाती है वह रूपोन भागहार होता है । उदाहरणार्थ दो गुणहानियोंके काल ८ से यवमध्य १२८ के भाजित करनेपर प्राप्त हुई राशि १६ को यवमध्यमेंसे घटा देनेपर पार्श्वस्थ दोनों राशियां ११२, ११२ प्राप्त होती हैं । फिर पूर्वोक्त भागहारमेंसे १ कम करके ७ का भाग उक्त दोनों राशियोंमें देनेपर जो १६ लब्ध आये उसे घटा देनेपर तीसरे स्थानकी राशि ९६ प्राप्त होती है । फिर इस भागहारमेंसे १ कम करके ६ का भाग ९६ में देनेपर जो १६ लब्ध आये उसे घटा देनेपर चौथे स्थानकी राशि ८० प्राप्त होती है । इसी प्रकार रूपोन भागहारके द्वारा सब स्थानोंकी संख्या ले आनी चाहिये ।

अब छेदभागहार द्वारा अनन्तरोपनिधाका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है— प्रक्षेपभागहारसे जघन्य योगस्थानके जीवोंको खण्डित कर लब्ध राशिको उसीमें मिला देनेपर द्वितीय स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है । पुन: पूर्व भागहारके द्वितीय भागका जघन्य स्थानके जीवोंमें भाग देनेपर दो प्रक्षेप प्राप्त होते हैं । उनको उक्त जीवोंमें मिला

---

१ प्रतिषु ' विदियट्ठाण ' इति पाठ ।

होंति । पुव्वभागहारतिभागेण भागे हिदे तिण्णि पक्खेवा लब्भंति । तेसु सरासिम्हि पक्खित्तेसु[1] चउत्थट्ठाणजीवा होंति । एवं णेदव्वं जाव गुणहाणिअद्धाणं समत्तमिदि[2] । एवं सव्वगुणहाणीणं पि छेदभागहारो जोजेयव्वो ।

परंपरोवणिधा वुच्चदे । तं जहा— जहण्णजोगट्ठाणजीवेहिंतो सेडीए असंखेज्जदिभागं गंतूण जीवा दुगुणा होंति । पुणो वि तेत्तियं चेव अद्धाणं गंतूण जीवाणं दुगुणवड्ढी होदि । एवं णेयव्वं जाव जवमज्झे त्ति । तदो उवरि तेत्तियं चेव अद्धाणं गंतूण जीवाणं दुगुणहाणी । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणजीवे त्ति । एगजीवदुगुणहाणिमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगा गुणहाणिसलागा लब्भदि तो सव्वजोगट्ठाणद्धाणम्मि किं लब्भदि त्ति गुण-

---

देनेपर तृतीय स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है। पुनः पूर्व भागहारके त्रिभागका भाग देनेपर तीन प्रक्षेप प्राप्त होते हैं। उनको उक्त जीवोंमें मिला देनेपर चतुर्थ स्थानके जीवोंका प्रमाण होता है। इस प्रकार गुणहानिके जितने स्थान हैं उनके समाप्त होने तक ले जाना चाहिये। इस प्रकार सब गुणहानियोंके छेदभागहारको देखना चाहिये।

विशेषार्थ—अंकसंदृष्टिकी अपेक्षा प्रक्षेपभागहारका प्रमाण चार है। इसका जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्या १६ में भाग देनेपर ४ ही लब्ध आते हैं। अतः इसे १६ में मिला देनेपर दूसरे स्थानके जीवोंकी संख्या २० आती है। फिर पूर्वोक्त भागहार ४ के आधे अर्थात् २ का जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्या १६ में भाग देनेपर प्राप्त हुए दो प्रक्षेप ८ को जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्या १६ में मिला देनेपर तीसरे स्थानकी संख्या २४ आती है। फिर पूर्वोक्त भागहारके तीसरे भाग $\frac{४}{३}$ का भाग जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्यामें देनेपर प्राप्त हुए तीन प्रक्षेप १२ को पूर्वोक्त राशि १६ में मिला देनेपर चौथे स्थानकी संख्या २८ आती है। इसी प्रकार सब गुणहानियोंमें जानना चाहिये।

अब परम्परोपनिधाका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है— जघन्य योगस्थानके जीवोंसे श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण स्थान जाकर जीव दुगुणे होते हैं। फिर भी उतने ही स्थान जानेपर जीवोंकी दुगुणी वृद्धि होती है। इस प्रकार यवमध्य तक ले जाना चाहिये। उससे आगे उतने ही स्थान जाकर जीवोंकी दुगुणी हानि होती है। इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंकी संख्या प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये। एक जीव दुगुणहानि प्रमाण स्थान जाकर यदि एक गुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो सब योगस्थान अध्वानमें क्या प्राप्त होगा इस प्रकार गुणहानिका फल राशिसे गुणित इच्छा

---

१ प्रतिषु 'त सरेव पक्खित्ते' इति पाठः। २ प्रतिषु 'समुत्तमिदि' इति पाठः।
३ प्रतिषु 'जदि एगो हव' इति पाठः।

हाणिणा फलगुणिदिच्छाए अवहिरदाए सव्वगुणहाणिसलागाओ आगच्छंति । एदाओ दुगुणवड्ढिसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । कुदो णव्वदे ? परमगुरूवदेसादो ।

एत्थ तिण्णि अणिओगद्दाराणि परूवणा पमाणं अप्पाबहुगं चेदि । परूवणा सुगमा । पमाणं— णाणागुणहाणिसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ[1] । एगगुणहाणी सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ता[2], णाणागुणहाणिसलागाहि जोगट्ठाणद्धाणे ओवट्टिदे तदुवलभादो ।

अप्पाबहुगं— सव्वत्थोवाओ जवमज्झादो हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाओ । उवरिमाओ

राशिमें भाग देनेपर सब गुणहानिशलाकायें आती हैं । ये दुगुणवृद्धिशलाकायें पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र हैं ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है ।

विशेषार्थ— जहां परम्परासे हानि या वृद्धि प्राप्त की जाती है उसे परम्परोपनिधा कहते हैं । प्रकृतमें इसी बातका निर्देश किया गया है । पहले एक गुणहानिसे दूसरी गुणहानिमें जीवोंकी संख्या किस प्रकार दूनी दूनी होती जाती है, इसका निर्देश किया गया है और बादमें जीवयवमध्यसे लेकर वह संख्या प्रत्येक गुणहानिमें किस प्रकार आधी आधी होती गई है, यह बतलाया गया है और यहां परम्परासे हानि और वृद्धिके क्रमका निर्देश किया गया है ।

यहां तीन अनुयोगद्वार हैं— प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व । प्ररूपणा सुगम है । प्रमाण— नानागुणहानिशलाकायें पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र हैं और एक गुणहानि जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र है, क्योंकि, नानागुणहानिशलाकाओंसे योगस्थानके भाजित करनेपर अध्वान जगश्रेणिका असंख्यातवा भाग प्राप्त होता है ।

अल्पबहुत्व— यवमध्यसे नीचेकी नानागुणहानिशलाकायें सबसे थोड़ी हैं ।

---

१ पल्लासंखेज्जादिमा गुणहाणिसला हवंति इगिठाणे । गो क २२४ णाणागुणहाणिसला छेदासंखेज्ज भागमेत्ताओ । गो क २४८

२ पदेसगुणहाणी । सेढिअसंखेज्जदिमा ॥ गो क २२७

[1]विसेसाहियाओ । केत्तियमेत्तेण ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण । सव्वाओ विसेसाहियाओ । केत्तियमेत्तेण ? हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागमेत्तेण । एगगुणहाणिअद्धाणमसंखेज्जगुणं ।

एदम्हादो अविरुद्धाइरियवयणादो णव्वदे जहा [जीव] जवमज्झहेट्ठिमअद्धाणादो उवरिमअद्धाणं विसेसाहियमिदि ।

एत्थतणजीवअप्पाबहुगादो वा । तं जहा— जहण्णजोगट्ठाणजहण्णजीवप्पहुडि जा

उससे उपरिम नानागुणहानिशलाकायें विशेष अधिक हैं । कितनी अधिक हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण अधिक हैं । उनसे सब नानागुणहानिशलाकायें विशेष अधिक हैं । कितनी अधिक हैं ? अधस्तन नानागुणहानिशलाका प्रमाण अधिक हैं । एक गुणहानिका अध्वान असंख्यातगुणा है ।

इस प्रकार इस अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है कि जीवयवमध्यके अधस्तन स्थानसे उपरिम स्थान विशेष अधिक है ।

विशेषार्थ—यहां 'एवं संसरिदूण थोवावसेसे जीविदव्वए' इत्यादि सूत्रकी व्याख्या चालू है । इसमें 'योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा' यह कहा है । प्रश्न यह है कि यहां योगयवमध्यसे किसका ग्रहण किया जाय ? योगयवमध्यका ग्रहण किया जाय या जीवयवमध्यका । वीरसेन स्वामीने बतलाया है कि योगयवमध्यके अधस्तन भागसे उपरिम भाग असंख्यातगुणा होनेसे वहां चारों हानियां और चारों वृद्धियां सम्भव हैं और अन्तर्मुहूर्त काल तक जीवका वहां रहना सम्भव है इसलिये योगयवमध्य इस पद द्वारा उसीका ग्रहण करना चाहिये जीवयवमध्यका नहीं । इसपर यह प्रश्न हुआ कि जीवयवमध्यके उपरिम भागमें जीवका अन्तर्मुहूर्त काल तक रहना क्यों सम्भव नहीं है ? वीरसेन स्वामीने इसी प्रश्नका उत्तर देनेके लिये प्ररूपणा, प्रमाण श्रेणि अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व इन छह अनुयोगद्वारोंके द्वारा यह सिद्ध किया है कि योगयवमध्य सहित जीवयवमध्यके नीचेके भागसे उपरिम भाग मात्र विशेषाधिक है इसलिये इसके उपरिम भागमें जीवका अन्तर्मुहूर्त काल तक रहना सम्भव नहीं है । यही कारण है कि यहां योगयवमध्य पदसे उसीका ग्रहण किया गया है, जीवयवमध्यका नहीं ।

अथवा यहांके जीवोंके अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है । यथा—

जघन्य योगस्थानके जघन्य जीवनिषेकसे लेकर उत्कृष्ट योगस्थान तक जीव

---

१ अ-आप्रत्योः 'णव्वदे' इति पाठः ।

उक्कस्सजोगट्ठाणे त्ति जीवणिसेगाणं संदिट्ठी एसा । १६ । २० । २४ । २८ । ३२ । ४० । ४८ । ५६ । ६४ । ८० । ९६ । ११२ । १२८ । ११२ । ९६ । ८० । ६४ । ५६ । ४८ । ४० । ३२ । २८ । २४ । २० । १६ । १४ । १२ । १० । ८ । ७ । ६ । ५ । संदिट्ठीए गुणहाणिअद्धाणं चत्तारि । ४ ।— जोगट्ठाणद्धाण बत्तीस । ३२ । । णाणागुणहाणिसलागाओ अट्ठ । ८ । जवमज्झादो हेट्ठा तिण्णि । ३ ।, उवरि पच । ५ । । हेट्ठुवरि अण्णोण्णब्भत्थरासिपमाण अट्ठ बत्तीस । ८ । ३२ । । पक्खेवभागहारो चत्तारि । ४ ।[1] ।

संपहि अवहारकालपरूवणा कीरदे— एत्थ ताव जोगट्ठाणसव्वजीवे जवमज्झजीवपमाणेण कस्सामो । तं जहा— जवमज्झगुणहाणिखेत्त ठविय

निषेकोंकी संदृष्टि यह है—

१६	३२	६४	१२८	६४	३२	१६	८
२०	४०	८०	११२	५६	२८	१४	७
२४	४८	९६	९६	४८	२४	१२	६
२८	५६	११२	८०	४०	२०	१०	५

संदृष्टिमें गुणहानिका अध्वान चार ४, योगस्थानका अध्वान बत्तीस ३२, नानागुणहानिशलाकायें आठ ८ यवमध्यसे नीचेकी तीन ३ और ऊपरकी पांच ५, नीचे व ऊपरकी अन्योन्याभ्यस्त राशिका प्रमाण क्रमश· आठ और बत्तीस ८, ३२, तथा प्रक्षेपभागहार चार ४ है ।

अब अवहारकालका प्ररूपणा करते हैं— यहां सर्वप्रथम योगस्थानके सब जीवोंको यवमध्यके जीवोंके प्रमाणसे करते हैं । यथा— यवमध्यकी गुणहानिके क्षेत्रको

१ दव्वतिय हेट्ठुवरिमदलवारा दुगुणमुभयमण्णोण्ण । जीवजवे चोद्दससयबावीसं होदि बत्तीस ॥ चत्तारि तिण्णि कमसो पण अड अट्ठ तदो य बत्तीस । किंचूणतिगुणहाणिविभजिददव्वे दु जवमज्झ ॥ गो. जी. २४५-२४६
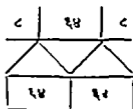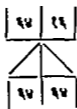
एदेहि चदुहि विहाणेहि पादिय समकरणं करिय जवमज्झपमाणेण कदे गुणहाणीए तिण्णि चदुब्भागमेत्तजवमज्झाणि जवमज्झचदुब्भागो च उप्पज्जदि । तस्सेसा संदिट्ठी | ३/४ | १/४ |। पुणो विदियादिगुणहाणिदव्वं पि पढमगुणहाणिदव्वमेत्तमसंत दादूण समीकरणे कदे एदं पि तेत्तियं चेव होदि | ३/४ | १/४ |। णवरि जहण्णजोगट्ठाणजीवे मोत्तूण विदियजोगट्ठाणजीवप्पहुडि पढमगुणहाणी घेत्तव्वा। एदे दो वि मेलाविदे दिवड्ढ गुणहाणिमेत्तजवमज्झाणि जवमज्झचदुभागो च उप्पज्जदि । तस्स संदिट्ठी

स्थापित कर और इस चार प्रकारों (मूलमें देखिये) से उसके खंड कर समीकरण करके यवमध्यके प्रमाणसे करनेपर गुणहानिके तीन बटे चार भाग मात्र यवमध्य और यवमध्यका चौथा भाग उत्पन्न होता है। उसकी यह संदृष्टि है (३/४, १/४)।

उदाहरण —यवमध्यकी गुणहानि ४१६, यवमध्य १२८,

यहां ४१६ में १२८ का भाग देनेपर ३ यवमध्य और एक यवमध्यका चौथा भाग उत्पन्न होता है। इस प्रकार यवमध्यकी गुणहानिमें कुल ३ १/४ यवमध्य होते हैं। यहां यवमध्यकी गुणहानिके द्रव्यसे तृतीय गुणहानिके अन्तिम तीन स्थानोंका द्रव्य और चौथी गुणहानिके प्रथम स्थानका द्रव्य लिया गया है ।

फिर द्वितीयादि गुणहानियोंके द्रव्यका भी इसमें प्रथम गुणहानिके द्रव्य प्रमाण असत् द्रव्य देकर, समीकरण करनेपर यह भी उतना ही होता है (३/४, १/४)। विशेष इतना है कि जघन्य योगस्थानके जीवोंको छोड़कर द्वितीय योगस्थानके जीवोंसे लेकर प्रथम गुणहानि ग्रहण करना चाहिये ।

उदाहरण— द्वितीयादि गुणहानिका द्रव्य ३४४ जो द्रव्य ऊपरसे मिलाया गया है वह ७२, कुल जोड़ ४१६, यहां भी ४१६ में १२८ का भाग देनेपर तीन यवमध्य और एक यवमध्यका चौथा भाग उत्पन्न होता है। यहां जो ७२ संख्या प्रमाण द्रव्य ऊपरसे मिलाया गया है यह प्रथम गुणहानिका द्रव्य है। इसमेंसे जघन्य योगस्थानके जीवोंका प्रमाण १६ घटा दिया गया है ।

इन दोनोंको ही मिला देनेपर डेढ़ गुणहानि मात्र यवमध्य और एक यवमध्यका द्वितीय भाग उत्पन्न होता है। उसकी संदृष्टि ६ १/२ है ।

| ६$\frac{१}{२}$ |। जवमज्झादो उवरिमदव्वं पि जवमज्झप्पमाणेण कदे एत्तियं चेव होदि | ६$\frac{१}{२}$ |। कुदो? असंतेगचरिमगुणहाणिदव्वजवमज्झदव्वपवेसादो। एदाणि दो वि दव्वाणि मेलाविदे रूवाहियतिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झाणि होंति। तत्थेगरूवमवणेदव्वं पुव्वप्पवेसिदजवमज्झस्स असंतस्स अवणयणट्ठं |१२|। एवमव्वुप्पण्णजणवुप्पायणट्ठं[1] तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झाणि होंति त्ति परूविदं। सुहुमबुद्धीए णिहालिज्जमाणे किंचूणतिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झाणि होंति। तं जहा— जहण्णजोगट्ठाणजीवेहि ऊणपढम-चरिमगुणहाणिजीवाणमेत्थासंताणमहियत्तुवलंभादो। तमहियदव्वं संदिट्ठीए चोद्दसुत्तरसदमेत्तं |११४|। अत्थदो असंखेज्जाणि[2] जवमज्झाणि।

उदाहरण — ३$\frac{१}{४}$ + ३$\frac{१}{४}$ = ६$\frac{१}{२}$ यवमध्य।

यवमध्यसे उपरिम द्रव्यको भी यवमध्यके प्रमाणसे करनेपर इतना ही होता है— ६$\frac{१}{२}$ यवमध्य, क्योंकि, यहां अविद्यमान एक अन्तिम गुणहानिका द्रव्य यवमध्योंके द्रव्यमें मिलाया गया है।

उदाहरण — यवमध्यका उपरिम द्रव्य ८०६, अन्तिम गुणहानिका द्रव्य २६, कुल जोड़ ८३२। यहां ८३२ में यवमध्यके द्रव्य १२८ का भाग देनेपर ६$\frac{१}{२}$ यवमध्य आते हैं। यवमध्यकी उपरिम गुणहानि ५ है। उनका कुल द्रव्य ८०६ मात्र होता है। किन्तु इसमें अन्तिम गुणहानिका द्रव्य २६ दुबारा मिलाकर ६$\frac{१}{२}$ यवमध्य प्राप्त किये गये हैं।

इन दोनों ही द्रव्योंको मिलानेपर एक अधिक तीन गुणहानि मात्र यवमध्य होते हैं। उनमें पूर्व प्रवेशित अविद्यमान यवमध्यको कम करनेके लिये एक अंक कम करना चाहिये १२।

इस प्रकार अव्युत्पन्न जनोंके व्युत्पादनार्थ 'तीन गुणहानि मात्र यवमध्य होते हैं' ऐसा कहा है। किन्तु सूक्ष्म बुद्धिसे देखनेपर कुछ कम तीन गुणहानि मात्र यवमध्य होते हैं। इसका कारण यह है कि यहांपर जघन्य योगस्थानके जीवोंसे कम प्रथम व अन्तिम गुणहानिके जीवोंकी, जो यहां अविद्यमान हैं, अधिकता पायी जाती है। वह अधिक द्रव्य संदृष्टिमें एक सौ चौदह ११४ मात्र है। अर्थसदृष्टिकी अपेक्षा असंख्यात यवमध्य प्रमाण है।

उदाहरण — ६$\frac{१}{२}$ + ६$\frac{१}{२}$ = १३ यवमध्य। किन्तु इनमें यवमध्यकी संख्या १२८ दो बार सम्मिलित हो गई है अतः १ यवमध्य कम कर देनेपर कुल १२ यवमध्य रहते हैं।

---

१ प्रतिषु '-मव्वुप्पण्णअण्णमप्पायणट्ठं' इति पाठः। २ सप्रतौ 'संखेज्जाणि' इति पाठः।

एदस्स भवणयणविहाणं वुच्चदे— जवमज्झस्स जदि एगरूवावणयणं लब्भदि तो चोद्दसुत्तरसदस्स किं परिहाणिं पेच्छामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेत्तियं होदि $|\frac{114}{128}|$। एदम्मि तिहि गुणहाणीहिंतो भवणिदे सेडीए असंखेज्जदिभागेणूणतिण्णिगुणहाणीओ होंति। तासिं पमाणमेदं $|11\frac{14}{128}|$। एदेण जवमज्झे गुणिदे बावीसुत्तरचोद्दससदमेत्तं संदिट्ठीए सव्वदव्वं होदि |१४२२|।

अथवा जवमज्झादो हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्तमद्धाणमजोगट्ठाणजीवाणं जदि एगं जवमज्झपमाणं लब्भदि तो किंचूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तमद्धाणजोगट्ठाणजीवाणं किं लभामो त्ति सरिसमवणिय जवमज्झहेट्ठिमअण्णोण्णब्भत्थरासिणा किंचूणदिवड्ढम्मि भागे हिदे असंखेज्जाणि जवमज्झाणि आगच्छंति। तेसिं संदिट्ठी $|\frac{11}{11}|$। किंचूणुवरिम

फिर भी यह स्थूल दृष्टिसे परिगणना है। सूक्ष्म दृष्टिसे विचार करनेपर ११४ संख्या कम होकर ११ से कुछ अधिक यवमध्य आते हैं।

अब इसकी हानिके विधानको कहते हैं— यवमध्य अर्थात् १२८ अंककी अपेक्षा यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है तो एक सौ चौदह की अपेक्षा कितनी हानि होगी इस प्रकार फल राशिसे गुणित इच्छा राशिमें प्रमाण राशिका भाग देनेपर लब्ध इतना $\frac{114}{128}$ होता है। इसको तीन गुणहानियोंमेंसे कम करनेपर जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग कम तीन गुणहानियां होती हैं। उनका प्रमाण यह है—$11\frac{14}{128}$। इससे यवम यके गुणित करनेपर संदृष्टिमें सब द्रव्य चौदहसौ बाईस होता है १४२२।

उदाहरण— यवमध्यका प्रमाण १२८, गुणहानिका काल ४,

१२८ में १ की हानि होती है तो ११४ में कितनी हानि होगी इस प्रकार त्रैराशिक करनेपर फलराशि १ का इच्छाराशि ११४ में गुणा करके उसमें प्रमाणराशि १२८ का भाग देनेपर $\frac{114}{128}$ आते हैं। फिर इसे तीन गुणहानियोंके काल १२ मेंसे कम करने पर $11\frac{14}{128}$ आते हैं और इसको यवमध्यके प्रमाण १२८ से गुणित करनेपर कुल योग स्थानके जीवोंका प्रमाण १४२२ आता है।

अथवा यवमध्यसे अधस्तन नानागुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिका जितना प्रमाण है उतने अधस्तन योगस्थानके जीवोंका यदि एक यवमध्य प्राप्त होता है तो कुछ कम डेढ़ गुणहानिका जितना प्रमाण है उतने अधस्तन योगस्थानके जीवोंका क्या प्रमाण प्राप्त होगा इस प्रकार समान राशियोंका अपनयन करके यवमध्यकी अधस्तन अन्योन्याभ्यस्त राशिका कुछ कम डेढ़ गुणहानिमें भाग देनेपर असंख्यात यवमध्य आते हैं। उनकी संदृष्टि $\frac{11}{11}$ है। कुछ कम उपरिम अन्योन्याभ्यस्त राशिका जितना प्रमाण

अण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्तुक्कस्सजोगट्ठाणजीवाण जदि जवमज्झपमाणं लब्भदि तो किंचूणदिवड्ढ-गुणहाणिमेत्तुक्कस्सजोगट्ठाणजीवाणं किं लभामो त्ति किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासिणा किंचूणदिवड्ढम्मि भागे हिदे सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजवमज्झाणि लब्भंति । तेसिं संदिट्ठी | $\frac{13}{64}$ |। दो वि सरिसच्छेद कादूण मेलाविदे एत्तियं होदि | $\frac{57}{64}$ |। एदं तिसु गुणहाणीसु अवणिदे किंचूण-तिण्णिगुणहाणिपमाण होदि । तस्स संदिट्ठी | $\frac{711}{64}$ |। एदेण जवमज्झे गुणिदे सव्वदव्वं होदि । तस्स संदिट्ठी बावीसुत्तरचोद्दससदमेत्ता |१४२२| । एद किंचूणतीहि गुणहाणीहि ओव-ट्टिदे जेण जवमज्झमागच्छदि तेण जवमज्झपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे किंचूणतिण्णि-गुणहाणिकालेण अवहिरिज्जदि त्ति सिद्धं ।

है उतने उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका यदि एक यवमध्यके बराबर प्रमाण प्राप्त होता है तो कुछ कम डेढ़ गुणहानिका जितना प्रमाण है उतने उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका क्या प्रमाण प्राप्त होगा, इस प्रकार कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशिका कुछ कम डेढ़ गुणहानिमें भाग देनेपर श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र यवमध्य प्राप्त होते हैं। उनकी संदृष्टि $\frac{13}{64}$ है। दोनोंके समान खण्ड करके मिलानेपर इतना होता है $\frac{57}{64}$ ।

उदाहरण — अधस्तन अन्योन्याभ्यस्त राशि ८ में यदि एक यवमध्य राशि है तो कुछ कम डेढ़ गुणहानिमें कितनी यवमध्य राशि होगी। यहां कुछ कम डेढ़ गुणहानिका प्रमाण = ५$\frac{१}{२}$ ।

$\frac{११}{२} \times \frac{१}{८} = \frac{११}{१६}$ यवमध्य भाग।

उपरितन प्रमाणके लिये कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि निकालनी है, अतः उपरितन ३२ अन्योन्याभ्यस्त राशिको गणितकी दृष्टिसे $\frac{१२८}{५}$ माना गया। यदि $\frac{१२८}{५}$ राशिमें एक यवमध्य राशि है तो कुछ कम डेढ़ गुणहानिमें कितनी यवमध्य राशि होगी। यहां कुछ कम डेढ़ गुणहानिका प्रमाण ५$\frac{१}{५}$,

$\frac{२६}{५} \times \frac{५}{१२८} = \frac{१३}{६४}$ यवमध्य भाग।

$\frac{११}{१६} + \frac{१३}{६४} = \frac{४४+१३}{६४} = \frac{५७}{६४}$ ।

इसको तीन गुणहानियोंमेंसे कम करनेपर तीन गुणहानियोंका कुछ कम प्रमाण होता है। उसकी संदृष्टि $१२ - \frac{५७}{६४} = \frac{७११}{६४}$ है। इससे यवमध्यको गुणित करनेपर सर्व द्रव्य होता है। उसकी संदृष्टि चौदह सौ बाईस है— $१२८ \times \frac{७११}{६४} = १४२२$ । इसे चूंकि कुछ कम तीन गुणहानियोंसे अपवर्तित करनेपर यवमध्य आता है, अतः यव-मध्यके प्रमाणसे सर्व द्रव्यके अपहृत करनेपर वह कुछ कम तीन गुणहानियोंके कालसे अपहृत होता है, यह सिद्ध होता है।

जहण्णजोगट्ठाणजीवपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे असंखेज्जगुणहाणिकालेण अवहिरिज्जदि। तं जहा — एक्कम्हि जवमज्झे जदि जवमज्झहेट्ठिमअण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्ता जहण्णजोगट्ठाणजीवा लब्भंति तो किंचूणतिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झेसु किं लभामो त्ति जवमज्झस्स जवमज्झं सरिसमिदि अवणिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा किंचूणतिण्णिगुणहाणीसु गुणिदासु असंखेज्जगुणहाणीओ उप्पज्जंति। तासिं संदिट्ठी [illegible]। एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे जहण्णजोगट्ठाणजीवा होंति [१६]।

बिदियजोगट्ठाणजीवपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे असंखेज्जगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि। तं जहा — जहण्णजोगट्ठाणजीवभागहारं विरलिय सव्वदव्वं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि जहण्णजोगट्ठाणदव्वं होदि। पुणो एदम्हादो बिदियणिसेगो एगपक्खेवेणाहिओ त्ति तेण सह भागग्गहणट्ठं भागहारपरिहाणी कीरदे। तं जहा— एदिस्से विरलणाए हेट्ठा एगगुणहाणिं विरलिय जहण्णजोगट्ठाणदव्वं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि एगेगपक्खेवपमाणं पावदि। तं घेत्तूण उवरिमरूवधरिदजहण्णजोगट्ठाणजीवेसु पक्खित्तेसु बिदियजोगट्ठाणजीवपमाणं होदि। रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवपरिहाणी च

जघन्य योगस्थानके जीवोंके प्रमाणसे सब द्रव्यका अपवर्तन करनेपर वह असंख्यात गुणहानियोंके कालसे अपवर्तित होता है। यथा— एक यवमध्यमें यदि यवमध्यकी अधस्तन अन्योन्याभ्यस्त राशिकी संख्या प्रमाण (१६ × ८ = १२८) जघन्य योगस्थानके जीव पाये जाते हैं तो कुछ कम तीन गुणहानि प्रमाण यवमध्योंमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार एक यवमध्य दूसरे यवमध्यके समान होनेसे इन दोनों गुणकोंको मिलाकर अन्योन्याभ्यस्त राशिसे कुछ कम तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर असंख्यात गुणहानियां उत्पन्न होती हैं। इनकी संदृष्टि [illegible] × ८ = [illegible]। इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर जघन्य योगस्थानवर्ती जीव होते हैं [illegible] = १६।

द्वितीय योगस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह असंख्यात गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। यथा—जघन्य योगस्थानके जीवोंके भागहारको विरलित कर सब द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर विरलन एक एकके प्रति जघन्य योगस्थानका द्रव्य प्राप्त होता है। फिर इससे द्वितीय निषेक चूंकि एक प्रक्षेप अधिक है अतः इसके साथ जघन्य योगस्थानका द्रव्य लानेके लिये भागहारको कम करते हैं। यथा— इस विरलनके नीचे एक गुणहानिको विरलित कर उसपर जघन्य योगस्थानके द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर विरलन रूपके प्रति एक एक प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है। उसको ग्रहण कर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त हुए जघन्य योगस्थानवर्ती जीवोंमें मिला देनेपर द्वितीय योगस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण होता है और एक अधिक अधस्तन विरलन प्रमाण स्थान जाकर एक रूपकी हानि प्राप्त होती है। इस

लब्भदि । एवं पुणो पुणो कादव्वं जाव उवरिमविरलणरासिधरिदसव्वजीवा विदियजोगट्ठाणजीवपमाणं पत्ते त्ति ।

एत्थ परिहीणरूवाणं पमाणं वुच्चदे । तं जहा-- रूवाहियगुणहाणिमेत्तद्धाणं गतूण जदि एगरूवपरिहाणी उवरिमविरलणाए लब्भदि तो किंचूणतिगुणण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्तउवरिमगुणहाणिविरलणाए केत्तियाणि परिहीणरूवाणि लभामो त्ति रूवाहियगुणहाणीए[1] उवरिमविरलण खंडिय लद्धं तत्थेव अवणिदे बिदियजोगट्ठाणजीवाणमवहारो होदि । तस्स संदिट्ठी $\frac{७११}{१०}$ ।

प्रकार उपरिम विरलन राशिको प्राप्त हुए सब जीवोंके द्वितीय योगस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको प्राप्त होने तक बार बार करना चाहिये ।

अब यहां कम हुए अंकोंका प्रमाण कहते हैं । यथा— एक अधिक गुणहानि प्रमाण स्थान जाकर उपरिम विरलनमें यदि एक रूपकी हानि प्राप्त होती है तो कुछ कम तिगुणी अन्योन्याभ्यस्त राशि प्रमाण उपरिम गुणहानिविरलनमें कितने परिहीन रूप प्राप्त होंगे, इस प्रकार रूपाधिक गुणहानिसे उपरिम विरलनको खण्डित कर लब्धको उसीमेंसे कम कर देनेपर द्वितीय योगस्थानके जीवोंका अवहार होता है । उसकी संदृष्टि— $\frac{७११}{१०}$ ।

विशेषार्थ— आशय यह है कि द्वितीय योगस्थानके जीवोंकी संख्या २० है । इसका कुल योगस्थानवर्ती जीवराशि १४२२ में भाग देनेपर $\frac{७११}{१०}$ आते हैं । यही कारण है कि इस द्वितीय योगस्थानके जीवोंका प्रमाण लानेके लिये इतना अवहारका प्रमाण बतलाया है । प्रथम योगस्थानके जीवोंका प्रमाण लानेके लिये जो $\frac{७११}{८}$ अवहारका प्रमाण बतला आये हैं उसमेंसे $\frac{७११}{४०}$ घटानेपर दूसरे योगस्थानकी संख्या लानेके लिये भागहारका प्रमाण होता है ।

प्रथम योगस्थानकी जीवराशि लानेके लिये भागहार $\frac{७११}{८}$; सब जीव राशि १४२२, गुणहानि आयाम ४, प्रक्षेप ४, प्रथम योगस्थानकी राशि १६,

अधस्तन विरलन
४ ४ ४ ४ = १६ प्रथम योगस्थान राशि
१ १ १ १ = ४ गुणहानि आयाम
उपरितन विरलन
४ ४ ४ ४
१६ १६ १६ १६   १६ १६
१ १ १ १ १ १ १ $\frac{७११}{८}$ स्थान

---

१ प्रतिषु 'गुणहाणीणं' इति पाठ ।

तदियजोगट्ठाणजीवपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे असंखेज्जगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा— पुव्वविरलणाए हेट्ठा गुणहाणिदुभागं विरलेदूण उवरिमविरलणपढमरूवधरिदजहण्णजोगट्ठाणजीवणिसेगं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि दो दो पक्खेवा पावेंति । तत्थ एगरूवधरिदमुवरि बिदियरूवधरिदम्मि दिण्णे तदियणिसेगपमाणं होदि । एवं हेट्ठिमसव्वरूवधरिदेसु परिवाडीए पविट्ठेसु एगरूवपरिहाणी होदि । एवं पुणो पुणो कीरमाणे एगरूवपरिहाणी होदि त्ति कट्टु तेसिं परिहीणरूवाणमाणयणविहाणं वुच्चदे— उवरिमविरलणम्मि रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो सव्विस्से उवरिमविरलणाए केवडियरूवपरिहाणिं लभामो त्ति रूवाहियगुणहाणिदुभागेण किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्त-तिसु गुणहाणीसु ओवट्टिदासु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । तं तत्थेव अवणिदे तदियणिसेगभागहारो होदि । तस्सेसा संदिट्ठी [illegible]

यहां ५ स्थान जाकर एककी हानि हुई है इसलिये [illegible] स्थान जानेपर [illegible] की हानि होगी। अतः [illegible] द्वितीय स्थानकी संख्या लानेके लिये भागहार।

तृतीय योगस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत करनेपर असंख्यात गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। यथा— पूर्व विरलनके नीचे गुणहानिके द्वितीय भागका विरलन कर उपरिम विरलनके प्रथम अंकके प्रति प्राप्त जघन्य योग स्थानवर्ती जीवनिषेकको समखण्ड करके देनेपर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति दो दो प्रक्षेप प्राप्त होते हैं। यहां अधस्तन विरलनमें एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको ऊपरके विरलनमें द्वितीय अंकके प्रति प्राप्त राशिके ऊपर देनेपर तृतीय निषेकका प्रमाण होता है। इस प्रकार अधस्तन विरलनके सब अंकोंके प्रति प्राप्त राशियोंके क्रमसे प्रविष्ट हो जानेपर एक अंककी हानि होती है। इस प्रकार पुनः पुनः करनेपर एक एक अंककी हानि होती है ऐसा मानकर उन हीन अंकोंके लानेकी विधि कहते हैं— एक अधिक अधस्तन विरलन प्रमाण स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एक अंककी हानि पायी जाती है तो पूरे उपरिम विरलनमें कितने अंकोंकी हानि प्राप्त होगी इस प्रकार एक अधिक गुणहानिके द्वितीय भागसे अन्योन्याभ्यस्त राशि प्रमाण कुछ कम तीन गुणहानियोंके अपवर्तित करनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग आता है। उसको उसी उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर तृतीय निषेकका भागहार होता है। उसकी यह संदृष्टि है [illegible]।

विशेषार्थ— यहां तृतीय योगस्थानके जीवोंका भागहार प्राप्त करना है। साधारणतः यह भागहार १४२२ में ५४ का भाग देनेसे प्राप्त हो जाता है। पर प्रथम

१ अप्रतौ 'इस्सादिय' इति पाठः ।

पुणो तिरूवाहियपुव्वभागहारस्स तिभागेण उवरिमविरलणमोवट्टिय लद्धे तत्थेव अवणिदे चउत्थणिसेयभागहारो होदि। तस्स संदिट्ठी | ७११/१४ |। एवमवणयणरूवाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि होदूण गच्छमाणाणि केत्तियमद्धाणमुवरि गंतूण पलिदोवमपमाणं पावेंति त्ति वुत्ते वुच्चदे— किंचूणतिगुणजवमज्झहेट्ठिमअण्णोण्णब्भत्थरासिणोवट्टिदपलिदोवममेत्तद्धाणं सादिरेगमुवरि चडिदे परिहाणिरूवाण पमाणं पलिदोवम होदि। एत्थ संदिट्ठिं ठविय सिस्साण पडिबोहो कायव्वो। एत्थुवउज्जंती गाहा—

अवहारेणोवट्टिदअवहिरिणिज्जम्मि ज हवे लद्ध।
तेणोवट्टिदमिट्ठ अहिय[1] लद्धीय अद्धाण ॥ ५ ॥

योगस्थानके भागहारमेंसे किस प्रक्रियासे कितना कम करनेपर यह भागहार होगा यही विधि यहां बतलाई गई है। जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्या १६ और तृतीय योग स्थानके जीवोंकी संख्या २४ है, इसलिये जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्याके लानेके लिये १४२२ संख्याका जो भागहार बतलाया है उससे यह भागहार एक तिहाई कम हो जायगा। इसीसे मूलमें एक अधिक अधस्तन विरलन प्रमाण स्थान जानेपर उपरिम विरलनमें एक स्थानकी हानि बतलाई गई है। इस प्रकार तृतीय स्थानका भागहार ७११/३२ प्राप्त होता है। इसका भाग १४२२ में देनेपर योगस्थानके तृतीय स्थानके जीवोंकी संख्या २४ लब्ध आती है।

पुनः तीन अधिक पूर्व भागहारके तृतीय भागसे उपरिम विरलनको अपवर्तित कर लब्धको उसीमेंसे कम करनेपर चतुर्थ निषेकका भागहार होता है। उसकी संदृष्टि— ७११/१४ है। इस प्रकार उत्तरोत्तर हीन किये जानेवाले अंक पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होकर जाते हुए कितने स्थान ऊपर जाकर पल्योपमके प्रमाणको प्राप्त करते हैं, ऐसा पूछनेपर कहते हैं— कुछ कम तिगुणे यवमध्य और अधस्तन अन्योन्याभ्यस्त राशिसे अपवर्तित पल्योपम मात्र स्थानोंसे कुछ अधिक स्थान ऊपर चढ़नेपर घटाये जानेवाले अंकोंका प्रमाण पल्योपम होता है। यहां संदृष्टि स्थापित कर शिष्योंको प्रतिबोध कराना चाहिये। यहां उपयुक्त गाथा—

भागहारका भज्यमान राशिमें भाग देनेपर जो लब्ध आता है उससे इष्टको भाजित करनेपर लब्धिके अधिक स्थान प्राप्त होते हैं ॥ ५ ॥

---

१ काप्रतौ 'अहिए' इति पाठ।

एवं गंतूण बिदियदुगुणवड्ढिपढमणिसेयपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे जहण्ण जोगट्ठाणजीवभागहारस्स दुभागेण अवहिरिज्जदि । कुदो ? जहण्णजोगट्ठाणजीवेहिंतो एत्थतण जीवाणं दुगुणत्तुवलंभादो । एदस्स संदिट्ठी [illegible] । पुणो तदणंतरजोगट्ठाणजीवपमाणेण अवहिरिज्जमाणे असंखेज्जगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । णवरि तदणंतरवदिक्कंत अवहारकालादो संपहियअवहारकालो विसेसहीणो । को विसेसो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तस्स संदिट्ठी [illegible] । तस्सेव तदियणिसेयभागहारसंदिट्ठी [illegible] । चउत्थणिसेगभागहार संदिट्ठी [illegible] ।

तदियगुणहाणिपढमसमयणिसेगभागहारो पढमगुणहाणिपढमणिसेगभागहारस्स चउब्भागो । कुदो ? तत्थतणदव्वादो एदस्स चउगुणत्तुवलंभादो । एवमसंखेज्जगुणहाणीओ भागहारं होदूण गच्छमाणीओ कम्हि ट्ठाणे जहण्णपरित्तासंखेज्जमेत्ताओ होंति त्ति वुत्ते वुच्चदे— जवमज्झादो हेट्ठिमकिंचूणतिगुणण्णोण्णब्भत्थरासिस्स जेत्तियाणि अद्धछेदणयाणि जहण्ण परित्तासंखेज्जअद्धछेदणएहि ऊणाणि तेत्तियमेत्तासु गुणहाणीसु चडिदासु तदित्थणिसेगस्स भागहारो

इस प्रकार जाकर द्वितीय दुगुणी वृद्धिके प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत करनेपर वह जघन्य योगस्थानवर्ती जीवोंके भागहारके द्वितीय भागसे अपहृत होता है, क्योंकि जघन्य योगस्थानवर्ती जीवोंकी अपेक्षा इस स्थानके जीव दुगुणे पाये जाते हैं। इसकी संदृष्टि— [illegible] । अब उसके अनन्तर योगस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत करनेपर असंख्यात-गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। विशेष इतना है कि इससे अनन्तर पूर्वके अवहारकालसे इस समयका अवहारकाल विशेष हीन है। विशेषका प्रमाण क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। उसकी संदृष्टि— [illegible] है। द्वितीय गुणहानिके तृतीय निषेकके भागहारकी संदृष्टि [illegible] है। चतुर्थ निषेकके भागहारकी संदृष्टि [illegible] है।

तृतीय गुणहानिके प्रथम निषेकका भागहार प्रथम गुणहानि सम्बन्धी प्रथम निषेकके भागहारके चतुर्थ भाग प्रमाण है, क्योंकि वहांके द्रव्यसे यहांका द्रव्य (तृतीय गुणहानिका प्र. निषेक) चौगुणा पाया जाता है। इस प्रकार असंख्यात गुणहानियां भागहार होकर जाती हुई किस स्थानमें जघन्य परीतासंख्यात मात्र होती हैं ऐसा पूछने पर उत्तर देते हैं— यवमध्यसे अधस्तन कुछ कम तिगुणी अन्योन्याभ्यस्त राशिके जितने अर्धच्छेद जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंसे कम हों उतनी मात्र गुणहानियोंके चढ़ने

---

१ मप्रतौ 'एवं हेण जीवाणं' इति पाठः । २ अप्रतौ 'जे णिसेगो णिसेगादीसि' इति पाठः ।

जहण्णपरित्तासंखेज्जगुणहाणिपमाणो होदि । एदम्हादो उवरिमगुणहाणिम्हि जहण्णपरित्तासंखेज्जस्स अद्धमेत्तीओ गुणहाणीओ भागहारो होदि । एवं गंतूण जवमज्झादो[1] हेट्ठा चउत्थगुणहाणिपढमणिसेगभागहारो किंचूणअडदालगुणहाणिमेत्तो । एवं चदुवीस-बारस छगुणहाणीओ उवरिमगुणहाणिपढमणिसेगाणं भागहारो होदि त्ति वत्तव्वो ।

जवमज्झपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे देसूणतिण्णिगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । तस्स संदिट्ठी | [illegible] | । संपहि तदणंतरजोगजीवपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे जवमज्झअवहारकालादो सादिरेगेण अवहिरिज्जदि । तं जहा— जवमज्झभागहारं विरलिय सव्वदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि जवमज्झपमाणं पावेदि । पुणो हेट्ठा दोगुणहाणीओ विरलिय जवमज्झं समखंडं करिय दिण्णे हेट्ठिमविरलणरूवं पडि जवमज्झपक्खेवपमाणं पावदि । पुणो एदम्मि पक्खेवे उवरिमविरलणारूवधरिदसव्वजवमज्झेसु सोहिदे सेसं बिदियणिसेगपमाणं होदि ।

संपहि उवरिमविरलणमेत्तपक्खेवे पयदणिसेगपमाणेण कस्सामो— हेट्ठिमविरलण-

---

पर वहांके निषेकका भागहार जघन्य परीतासंख्यात गुणहानि प्रमाण होता है। इससे उपरिम गुणहानिमें जघन्य परीतासंख्यातकी आधी मात्र गुणहानियां भागहार होती हैं। इस प्रकार जाकर यवमध्यसे नीचे चतुर्थ गुणहानिके प्रथम निषेकका भागहार कुछ कम अड़तालीस गुणहानि मात्र होता है। इस प्रकार चौबीस, बारह और छह गुणहानियां क्रमशः उपरिम गुणहानियोंके प्रथम निषेकोंका भागहार होता है, ऐसा कहना चाहिये।

यवमध्यके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत करनेपर कुछ कम तीन गुणहानिस्थानान्तरकालसे वह अपहृत होता है। उसकी संदृष्टि— १४२२ – १२८ = ११$\frac{७}{६४}$ = $\frac{७११}{६४}$। अब तदनन्तर योगस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत करनेपर कुछ अधिक यवमध्यके अवहारकालसे अपहृत होता है। यथा— यवमध्यके भागहारका विरलन कर सब द्रव्यको समानखण्ड करके देनेपर प्रत्येक अंकके प्रति यवमध्यका प्रमाण प्राप्त होता है। फिर नीचे दो गुणहानियोंका विरलन कर यवमध्यको समानखण्ड करके देनेपर अधस्तन विरलनके प्रत्येक अंकके प्रति यवमध्यके प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः इस प्रक्षेपको उपरिम विरलनके अंकोंपर रखे हुए सब यवमध्योंमेंसे कम करनेपर द्वितीय निषेकका प्रमाण होता है।

अब उपरिम विरलन मात्र प्रक्षेपोंको प्रकृत निषेकके प्रमाणसे करते हैं— एक

---

१ प्रतिषु 'जवमज्झदो' इति पाठः।

हाणीण पढम-विदियणिसेगाणं कमेण भागहारसंदिट्ठी $\frac{७११}{३२}$ | $\frac{७११}{२८}$ | $\frac{७११}{१६}$ | $\frac{७११}{१४}$ | $\frac{७११}{८}$ | $\frac{७११}{७}$ | $\frac{७११}{४}$ | $\frac{१४२२}{७}$ |।

अधवा जवमज्झभागहारो सपुण्णतिण्णिगुणहाणिमेत्तो । सव्वदव्वं छत्तीसाहियपण्णारससदमेत्तं त्ति मणेण संकप्पिय अवहारकालपरूवणा कीरदे । तं जहा — जवमज्झहेट्ठिमअण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिसु गुणहाणीसु गुणिदासु[1] जहण्णजोगट्ठाणजीवभागहारो होदि । तेण सव्वदव्वे भागे हिदे जहण्णजोगट्ठाणजीवा आगच्छंति । एवं पुव्वविधाणेण णेदव्वं जाव जवमज्झे त्ति । पुणो तिण्णि गुणहाणीयो विरलेदूण सव्वदव्वेसु समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि जवमज्झपमाणं पावेदि । पुणो एदस्स हेट्ठा दोगुणहाणीयो विरलिय जवमज्झं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पक्खेवपमाणं होदि । तम्मि उवरिमविरलणजवमज्झेसु पादेक्कमवणिदे सेसा तिण्णिगुणहाणिमेत्तविदियणिसेगा चेट्ठंति । तिण्णिगुणहाणिमेत्तपक्खेवेसु रूवूणदोगुणहाणिमेत्तपक्खेवेसु समुदिदेसु एगो पयदणिसेगो होदि एगा च अवहारसलागा लब्भदि ।

आगेकी गुणहानियोंके प्रथम व द्वितीय निषेकोंके भागहारोंकी संदृष्टि — द्वि गुण प्र नि $\frac{७११}{३२}$, द्वि नि $\frac{७११}{२८}$ । तृ गु प्र नि $\frac{७११}{१६}$, द्वि नि. $\frac{७११}{१४}$ । च गु प्र नि $\frac{७११}{८}$, द्वि नि. $\frac{७११}{७}$ । प गु प्र नि $\frac{७११}{४}$, $\frac{१४२२}{७}$ हैं ।

अथवा यवमध्यका भागहार पूरा तीन गुणहानि प्रमाण है । सब द्रव्य पन्द्रह सौ छत्तीस है, ऐसी मनमें कल्पना करके अवहारकालकी प्ररूपणा करते हैं । यथा — यवमध्यकी अधस्तन अन्योन्याभ्यस्त राशिसे तीन गुणहानियोंको अर्थात् तीन गुणहानियोंके कालको गुणित करनेपर जघन्य योगस्थानवर्ती जीवोंका भागहार [(४×३) × ८=९६] होता है । उसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर जघन्य योगस्थानके जीवोंका प्रमाण आता है [१५३६ ÷ ९६ = १६] । इस प्रकार पूर्व विधानके अनुसार यवमध्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये ।

पुन तीन गुणहानियोंका विरलन कर सब द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर विरलनके एक अंकके प्रति यवमध्यका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर इसके नीचे दो गुणहानियोंका विरलन कर यवमध्यको समखण्ड करके देनेपर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । उसको उपरिम विरलनके प्रत्येक यवमध्योंमेंसे कम करनेपर शेष तीन गुणहानि मात्र द्वितीय निषेक रहते हैं । तीन गुणहानि मात्र प्रक्षेपोंमेंसे एक कम दो गुणहानि मात्र प्रक्षेपोंके मिलानेपर एक प्रकृत निषेक होता है और एक अव

१ प्रतिषु ' गुणिदेसु ' इति पाठः ।

पुणो सेसा रूवाहियगुणहाणिमेत्ता पक्खेवा अत्थि, तेहि पयदणिसेगो ण होदि त्ति अण्णेगरूव पक्खेवो णत्थि। अवरसु केत्तिएसु संतेसु बिदियरूवपक्खेवो होदि त्ति वुत्ते दुरूवूणगुणहाणि मेत्तेसु संतेसु होदि। तेण रूवूणदोगुणहाणीहि रूवाहियगुणहाणिमोवट्टिय लद्धमब्भहियएगरूव पक्खेवो होदि त्ति घेत्तव्वं।

हारशलाका प्राप्त होती है। पुन शेष एक अधिक गुणहानि मात्र प्रक्षेप हैं पर उनसे प्रकृत निषेक नहीं प्राप्त होता अतः भागहारमें मिलानेके लिये अन्य एक अंकका प्रक्षेप नहीं है।

शंका—तो फिर इतर कितने प्रक्षेपोंके होनेपर दूसरे अंकका प्रक्षेप होता है?

समाधान—दो कम एक गुणहानि मात्र प्रक्षेपोंके होनेपर दूसरे अंकका प्रक्षेप होता है।

इस कारण एक कम दो गुणहानियोंसे एक अधिक गुणहानिको अपवर्तित कर जो लब्ध आवे उतना अधिक एक अंकका प्रक्षेप होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिये।

विशेषार्थ—यहां यवमध्यका भागहार तीन गुणहानियोंके काल प्रमाण और सब द्रव्य १५३६ प्रमाण निश्चित करके अन्य निषेकोंका भागहार प्राप्त किया गया है। यव मध्यका प्रमाण १२८ है और उसके पासका द्वितीय निषेकका प्रमाण ११२ है। यदि १५३६ में १२ का भाग देनेसे यवमध्यका प्रमाण १२८ प्राप्त होता है तो १५३६ में कितनेका भाग देनेसे द्वितीय निषेक ११२ प्राप्त होगा इसी बातको यहां गणित प्रक्रिया द्वारा सिद्ध करके बतलाया गया है। इस विधिसे द्वितीय निषेक ११२ का भागहार $\frac{९६}{७}$ प्राप्त हो जाता है। इसका भाग १५३६ में देनेपर द्वितीय निषेक ११२ प्राप्त होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अब इसी बातको मूलके अनुसार उदाहरण द्वारा दिखलाते हैं—

उदाहरण—

अधस्तन विरलन

$\frac{१६}{१}$ $\frac{१६}{१}$ $\frac{१६}{१}$ $\frac{१६}{१}$ $\frac{१६}{१}$ $\frac{१६}{१}$ $\frac{१६}{१}$ $\frac{१६}{१}$

उपरिम विरलन

$\frac{१२८}{१}$ $\frac{१२८}{१}$ $\frac{१२८}{१}$ $\frac{१२८}{१}$ $\frac{१२८}{१}$ $\frac{१२८}{१}$ $\frac{१२८}{१}$ $\frac{१२८}{१}$ $\frac{१२८}{१}$ $\frac{१२८}{१}$ $\frac{१२८}{१}$ $\frac{१२८}{१}$ = १५३६।

यहां एक प्रक्षेपका प्रमाण १६ है। इसे उपरिम विरलनमें स्थित प्रत्येक संख्यामेंसे कम कर देनेपर तीन गुणहानि मात्र द्वितीय निषेक प्राप्त होते हैं और तीन गुणहानि

---

१ आ-काप्रत्योः अण्णेग इति पाठः।

तदियणिसेगपमाणेणावहिरिज्जमाणे पक्खेवरूवगवेसणा कीरदे— तिण्णिगुणहाणि-आयद-जवमज्झविक्खंभखेत्तम्मि दोपक्खेवविक्खंभ-तिण्णिगुणहाणिआयदखेत्तमुवरिमभागे तच्छेदूण अवणिदे सेसं तदियणिसेगपमाणं होदि। अवणिदफालिं पक्खेवविक्खंभेण फालिय आयामेण ढोइदे पक्खेवविक्खंभ-छगुणहाणिआयदखेत्तं होदि। तत्थ दुरूवूणदोगुणहाणिमेत्तपक्खेवेहि पयदगोवुच्छा होदि त्ति छपक्खेवाहियतिण्णिपक्खेवरूवाणि लब्भंति। पुणो अट्ठपक्खेवूणदोगुणहाणिमेत्तपक्खेवेसु संतेसु चउत्थपक्खेवरूवमुप्पज्जदि। ण च एत्तियमत्थि, तदो एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणब्भहियतिण्णिरूवाणि पक्खेवो होदि। एत्थ उवउज्जंतीओ गाहाओ—

फालिसलागब्भहियाणुपरिदरूवाण जत्तिया संखा।
तत्तियपक्खेवूणा गुणहाणीरूवजणणट्ठं ॥ ६ ॥

ओजम्मि फालिसंखे गुणहाणी रूवमजुआ अहिया।
सुद्धा रूवा अहिया फाली संखम्मि जुम्मम्मि ॥ ७ ॥

मात्र प्रक्षेप शेष रहते हैं। इनमेंसे ७ प्रक्षेपोंका एक निषेक होता है तथा शेष ५ प्रक्षेप रहते हैं। इसलिये यहा द्वितीय निषेकका द्रव्य लानेके लिये १२⁄७ लिया गया है।

अब तृतीय निषेकके प्रमाणसे भाजित करनेपर भागहारमें कितने प्रक्षेप अंक प्राप्त होते हैं, इसका विचार करते हैं — तीन गुणहानि प्रमाण लम्बे और यवमध्य प्रमाण चौड़े क्षेत्रमेंसे दो प्रक्षेप प्रमाण चौड़े और तीन गुणहानि प्रमाण लम्बे क्षेत्रको उपरिम भागकी ओरसे छीलकर पृथक् कर देनेपर शेष तृतीय निषेक प्रमाण चौड़ा क्षेत्र प्राप्त होता है। निकाली हुई फालिको एक प्रक्षेपकी चौड़ाईसे फाड़कर लम्बाईमें जोड़ देनेपर एक प्रक्षेप प्रमाण चौड़ा और छह गुणहानि प्रमाण लम्बा क्षेत्र होता है। यहा दो कम दो गुणहानि मात्र प्रक्षेपोंकी एक प्रकृत गोपुच्छा होती है, इसलिये छह प्रक्षेप अधिक भागहारमें मिलानेके लिये तीन प्रक्षेप अंक प्राप्त होते हैं। आठ प्रक्षेप कम दो गुणहानि मात्र प्रक्षेपोंके होनेपर भागहारमें मिलानेके लिये चौथा प्रक्षेप अंक प्राप्त होता है। पर इतना है नहीं, इसलिये भागहारमें मिलानेके लिये एकका असंख्यातवा भाग अधिक तीन अंक प्रमाण प्रक्षेप होता है। यहा उपयोगी पड़नेवाली गाथायें ये हैं—

फालिशलाकाओंसे अधिक पूर्ववर्ती अंकोंकी जितनी संख्या हो, गुणहानिके स्थानोंको उत्पन्न करनेके लिये उतने प्रक्षेप कम करने चाहिये ॥ ६ ॥

फालियोंकी ओज अर्थात् विषम संख्याके होनेपर गुणहानिमें एक मिलानेपर अधिक स्थान आता है, एक जोड़नेपर अधिक गुणहानि आती है, और फालियोंकी सम संख्याके होनेपर शून्य जोड़नेपर अधिक गुणहानि आती है ॥ ७ ॥

तिण्णि दलेण गुणिदा फालिसलागा हवंति सव्वत्थ ।
फालिं पडि णादव्वो साहु पक्खेवरूवाणि ॥ ८ ॥

फालीसंखं तिगुणिय अद्धं काऊण सगलरूवाणि ।
पुणरवि फालीहि गुणे विसेससंखाणमेदि फुडं[1] ॥ ९ ॥

रूऊणिच्छागुणिदं पचयं सादि गुणेउ फालीहिं ।
तिण्णादितिउत्तरविसेससंखाणमेदि फुडं[1] ॥ १० ॥

एवं तिण्णि चत्तारि-पंचादिफालीओ अवणेदूणिच्छिदजोगट्ठाणवीरियपमाणेण कादूण णेदव्वं जाव जवमज्झजीवगुणहाणीए अद्धं गदे त्ति ।

पुणो तदित्थजोगवीरियपमाणेण सगदव्वे अवहिरिज्जमाणे चत्तारिगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा— जीवजवमज्झादो तदित्थजोगणिसेगो चदुब्भागूणो होदि त्ति पुव्विल्लक्खेत्तं चत्तारिफालीओ कादूण तत्थेगफालिमवणिदे सेसक्खेत्तं जीवजवमज्झतिण्णिचदुब्भागविक्खंभेण तिण्णिगुणहाणिआयामेण चेट्ठदि । अवणिदफाली वि जवमज्झचदुब्भागविक्खंभा तिण्णिगुणहाणिआयामा । पुणो एदमायामेण तिण्णि खंडाणि कादूण एदाणि तिण्णि

तीनके आधेसे गुणा करनेपर सर्वत्र फालिकी शलाकायें होती हैं । और प्रत्येक फालिके प्रति प्रक्षेप रूपोंको भले प्रकार जान लेना चाहिये (?) ॥ ८ ॥

फालियोंकी संख्याको तिगुणा कर फिर आधा करनेपर जो समस्त अंक प्राप्त होते हैं उन्हें फिर भी फालियोंकी संख्यासे गुणित करनेपर स्पष्ट रूपसे विशेषोंकी संख्या आती है (?) ॥ ९ ॥

एक कम इच्छाराशिसे गुणित प्रचयको पुनः फालियोंकी संख्यासे गुणा करनेपर स्पष्ट रूपसे तीन एक आदि तीनोत्तर विशेषोंकी संख्या आती है (?) ॥ १० ॥

इस प्रकार तीन चार, पांच आदि फालियोंको अलग कर इच्छित योगस्थानके वीर्यके प्रमाणसे करते हुए यवमध्य जीवगुणहानिका अर्ध भाग बीतने तक ले जाना चाहिये।

पुनः वहांके योगस्थानके वीर्यके प्रमाणसे योगस्थानके द्रव्यके अपहृत करनेपर वह चार गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। यथा— जीवयवमध्यसे चूंकि वहांका योगनिषेक चौथा भाग कम है अतः पूर्व क्षेत्रकी चार फालियां करके उनमेंसे एक फालिको कम कर देनेपर शेष क्षेत्र जीवयवमध्यका तीन बटे चार भाग प्रमाण चौड़ा और तीन गुणहानि प्रमाण लम्बा स्थित होता है। अलग की हुई फालि भी यवमध्यके चतुर्थ भाग प्रमाण चौड़ी और तीन गुणहानि आयामवाली होती है। पुनः इस निकाली हुई फालिके आयामकी ओरसे तीन खण्ड करके यवमध्यके चतुर्थ भाग प्रमाण चौड़े और

१ प्रत्यौ 'फुडं' इति पाठः।

वि खंडाणि जवमज्झचदुब्भागविक्खंभाणि गुणहाणिदीहाणि घेत्तूण दक्खिणदिसाए परिवाडीए[१] तिसु खंडेसु ढोइदे चत्तारिगुणहाणिआयाम पयदणिसेगविक्खंभखेत्तं जेण होदि तेण चत्तारि- गुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि त्ति उत्तं ।

पंचगुणहाणिमेत्तभागहारे उप्पाइज्जमाणे अड्ढाइज्जखंडाणि जवमज्झं कादूण तत्थेगखंडे अवणिदे सेसमिच्छिदखेत्तं होदि । अवणिदेगखंडम्मि अड्ढाइज्जदिमभागविक्खंभं दोगुणहाणि- आयदखेत्तं घेत्तूण विक्खंभं विक्खंभेण आइय पढमखंडे ढोइदे पंचगुणहाणीओ आयामो होदि । सेसखंडं मज्झम्मि फाडिय विक्खंभं विक्खंभम्मि ढोइय ट्ठविदे पंचभागविक्खंभं दोगुणहाणि- आयदं खेत्तं होदि । एदमुच्चाइदूण पंचमभागं पंचमभागम्मि आइय पासे ढोइदे एत्थ वि पंचगुणहाणीओ आयामो होदि । तेणेत्थ पंचगुणहाणीयो भागहारो । एवमण्णत्थ वि सिस्समइ- विप्फारणट्ठं भागहारपरूवणा कायव्वा । एत्थ उवउज्जती गाहा —

इच्छहिदायामेण य रूवजुदेणवहरेज्ज विक्खंभं ।
लद्धं दीहत्तजुदं इच्छिदहारो हवइ एवं ॥ ११ ॥

गुणहानि प्रमाण लम्बे इन तीनों ही खण्डोंको ग्रहण कर दक्षिण दिशामें परिपाटीसे पूर्वोक्त तीन खण्डोंमें मिलानेपर यतः चार गुणहानि प्रमाण लम्बा व प्रकृत निषेक प्रमाण चौड़ा क्षेत्र होता है, अतः 'चार गुणहानिस्थानान्तरकालसे विवक्षित योगस्थानका द्रव्य अपहृत होता है,' ऐसा कहा है ।

पांच गुणहानि मात्र भागहारके उत्पन्न कराते समय यवमध्यके अढ़ाई खण्ड करके उनमेंसे एक खण्डको अलग कर देनेपर शेष इच्छित क्षेत्र होता है । अलग किये हुए एक खण्डमेंसे अढ़ाईवें भाग विस्तृत और दो गुणहानि आयत क्षेत्रको ग्रहण कर विस्तारको विस्तारके साथ मिलाकर प्रथम खण्डमें मिला देनेपर पांच गुणहानियां आयाम होता है । शेष खण्डको मध्यमें फाड़कर विस्तारको विस्तारमें मिलाकर स्थापित करनेपर पांचवां भाग विस्तृत और दो गुणहानि आयत क्षेत्र होता है । फिर इसे उठा कर पांचवें भागको पांचवें भागके पास लाकर पार्श्व भागमें मिलानेपर यहां भी पांच गुणहानियां आयाम होता है । इस कारण यहां पांच गुणहानियां भागहार हैं । इसी प्रकार अन्यत्र भी शिष्योंकी बुद्धिको विकसित करनेके लिये भागहारकी प्ररूपणा करना चाहिये । यहां उपयुक्त गाथा—

रूपाधिक इच्छित आयामसे विस्तारको अपहृत करना चाहिये । ऐसा करनेसे जो लब्ध हो उसमें दीर्घताको मिलानेपर इच्छित भागहार होता है ॥ ११ ॥

---

१ प्रतिषु 'परिवाडीओ' इति पाठः ।

एवं णदव्वं जाव गुणहाणिअद्धाणं समत्तं त्ति ।

विदियगुणहाणिपढमणिसेयपमाणेण अवहिरिज्जमाणे छगुणहाणीयो भागहारो होदि । पुव्विल्लक्खेत्तं मज्झम्मि फालिय पासम्मि ठइदे जवमज्झविक्खंभ-छगुणहाणिआयदखेत्तु-प्पत्तीदो, एगगुणहाणिं चडिदो त्ति एगरूवं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णगुणिदरासिणा तिण्णि गुणहाणीयो गुणिदे छगुणहाणिसमुप्पत्तीदो वा । एदिस्से वि गुणहाणीए पुव्वं परूविदगणिदं किरिया सिस्समइविप्फारणट्ठं एत्था परूवेदव्वा ।

उवरिमगुणहाणिपढमणिसेयस्स बारहगुणहाणीयो भागहारो होदि, जवमज्झविक्खंभं चत्तारिफालीयो काऊण पासे ठइदे बारसगुणहाणिसमुप्पत्तीदो, दोगुणहाणीयो चडिदो त्ति दो रूवाणि विरलिय विगुणिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिण्णिगुणहाणीयो गुणिदे बारसगुण हाणिसमुप्पत्तीदो वा । उवरि सादिरेयबारसगुणहाणीयो भागहारो होदि ।

उदाहरण — इच्छित आयाम १ गुणहानि; विष्कम्भ ८ प्रक्षेप, १ + १ = ४; ८ ÷ ४ = ; १ + २ = ५ गुणहानि इच्छित द्रव्यका भागहारकाल ।

इस प्रकार गुणहानिके सब स्थानोंके समाप्त होने तक जानना चाहिये ।

द्वितीय गुणहानिके प्रथम निषेकके प्रमाणसे अपहृत करनेपर छह गुणहानियां भागहार होता है क्योंकि पहलेके क्षेत्रको मध्यमें फाड़कर पार्श्व भागमें मिलानेपर यवमध्यसे अर्धभाग प्रमाण विस्तृत और छह गुणहानि आयत क्षेत्र उत्पन्न होता है अथवा एक गुणहानि आगे गये हैं इसलिये एक रूपका विरलन करके दुगुणित कर अन्योन्यगुणित राशिसे तीन गुणहानियोंके गुणा करनेपर छह गुणहानियां उत्पन्न होती हैं। शिष्योंकी बुद्धिको विकसित करनेके लिये इस गुणहानिकी भी पूर्वमें कही गई गणित प्रक्रिया सब कहना चाहिये ।

इससे आगेकी गुणहानिके प्रथम निषेकका भागहार बारह गुणहानियां हैं क्योंकि यवमध्य प्रमाण विस्तृत क्षेत्रकी चार फालियां करके पार्श्व भागमें मिलानेपर बारह गुणहानियां उत्पन्न होती हैं अथवा दो गुणहानियां आगे गये हैं इसलिये दो संख्याका विरलन करके द्विगुणित कर परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर बारह गुणहानियां उत्पन्न होती हैं। आगे साधिक बारह गुणहानियां भागहार हैं ।

---

१ सम्प्रा चोत्तिय इति पाठ । २ प्रतिषु जवमज्झ जाविक्खंभ इति पाठः ।
३ सत्ती परूविदगणिद इति पाठः । ४ प्रतिषु कादे इति पाठः ।

उवरिमगुणहाणिपढमणिसेगस्स चउवीसगुणहाणीओ भागहारो होदि, पुव्वखेत्तस्स विक्खंभमट्ठखंडाणि काऊण तत्थ सत्त खंडाणि आयामेण ढोइदे [चउवीसगुणहाणिसमुप्पत्तीदो ।] तिगुणहाणीओ चडिदो त्ति तिण्णमण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिण्णिगुणहाणीओ गुणिदे चउवीसगुणहाणिसमुप्पत्तीदो वा । एवं जत्तिय-जत्तियगुणहाणीओ उवरि चडिदूण भागहारो इच्छिज्जदि तत्तिय-तत्तियमेत्तीओ गुणहाणिसलागाओ विरलिय विग करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिण्णिगुणहाणीओ गुणिदे तेणेव रासिणा जवमज्झविक्खंभं खंडिय पासे ढोइदे वि तदित्थ तदित्थअवहारकालो होदि त्ति दट्ठव्वं । एवमणेण विहाणेण णेदव्वं जाव दुरूवूणजहण्णपरित्तासंखेज्जच्छेदणयमेत्तीओ गुणहाणीओ उवरि चडिदाओ त्ति । एवमुवरि वि णेदव्वं । णवरि एत्तो उवरिमगुणहाणीसु सव्वत्थ असंखेज्जगुणहाणीओ अवहारकाओ होदि । उक्कस्सजोगजीवपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे असंखेज्जगुणहाणीओ अवहारो होदि, जवमज्झुवरिमसव्वगुणहाणिसलागाओ विरलिय दुगुणिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा किंचूणेण तिण्णिगुणहाणीसु गुणिदासु उक्कस्सजोगजीवभागहारुप्पत्तीदो ।

इससे आगेकी गुणहानिके प्रथम निषेकका भागहार चौबीस गुणहानियां होती हैं, क्योंकि, पूर्व क्षेत्रके विष्कम्भके आठ खण्ड करके उनमें सात खण्डोंको आयामसे मिला देनेपर [चौबीस गुणहानिया उत्पन्न होती हैं] । अथवा, तीन गुणहानिया आगे गये हैं, इसलिये तीनकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर चौबीस गुणहानिया उत्पन्न होती हैं ।

इस प्रकार जितनी जितनी गुणहानिया आगे जाकर भागहार इच्छित हो उतनी उतनी मात्र गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके अन्योन्याभ्यस्त राशिसे तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर अथवा उसी राशिसे यवमध्यके विस्तारको खण्डित करके पार्श्व भागमें मिला देनेपर भी वहा वहाका अवहारकाल होता है, ऐसा जानना चाहिये । इस प्रकार इस विधानसे रूप कम जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर गुणहानिया आगे जाने तक यह क्रम जानना चाहिये । इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिये । विशेष इतना है कि इससे आगेकी गुणहानियोंमें सर्वत्र असख्यात गुणहानिया अवहार काल होती हैं ।

उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत करनेपर असख्यात गुणहानिया अवहारकाल होती हैं, क्योंकि, यवमध्यके आगेकी सब गुणहानिशलाकाओंका विरलन करके दुगुणित कर कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशिसे तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर उत्कृष्ट योगजीवभागहार उत्पन्न होता है ।

उदाहरण—उपरिम गुणहानिया ५,

$\frac{२}{१}\ \frac{२}{१}\ \frac{२}{१}\ \frac{२}{१}\ \frac{२}{१}$ = ३२, कुछ कम अन्यो $\frac{१२८}{५}$ ।

$\frac{१२८}{५} \times \frac{१२}{१} = \frac{१५३६}{५}$ उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंकी सख्या लानेके लिये भागहार ।

भागाभागो वुच्चदे— जवमज्झजीवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो ? तिण्णिगुणहाणीओ। जहण्णजोगट्ठाणजीवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो। उक्कस्सजोगट्ठाणजीवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो। एवं सव्वत्थ वत्तव्वं।

अप्पाबहुगं तिविहं— जवमज्झादो हेट्ठा उवरि उभयत्थप्पाबहुगं चेदि। तत्थ सव्वत्थोवा जहण्णजोगट्ठाणजीवा |१६|। जवमज्झजीवा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? जवमज्झहेट्ठिमसव्वगुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो |१२८|। जवमज्झादो हेट्ठिमा जहण्णजोगट्ठाणादो उवरिमा जीवा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? किंचूणदिवड्ढगुणहाणीओ सेडीए असंखेज्जदिभागो। तस्स संदिट्ठी |१५/२|। एदेण जवमज्झं गुणिदे हेट्ठिमसव्वजीवपमाणं होदि |६००|। जवमज्झादो हेट्ठा सव्वजीवा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? जहण्णजोगजीवमेत्तेण |६१६|। अजहण्णए जोगट्ठाणे जीवा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? जहण्णजोगजीवपमाणूणजवमज्झजीवमेत्तेण |७२८|। जवमज्झप्पहुडिहेट्ठिमसव्व

अब भागाभागका कथन करते हैं— यवमध्यके जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग तीन गुणहानियां हैं। जघन्य योगस्थानके जीव सब जीवोंके कितनवें भाग प्रमाण हैं ? असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। उत्कृष्ट योगस्थानके जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? सब जीवोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। इसी प्रकार सर्वत्र कहना चाहिये।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है— यवमध्यसे अधस्तन अल्पबहुत्व, उपरिम अल्पबहुत्व और उभयत्र अल्पबहुत्व। उनमें जघन्य योगस्थानके जीव सबसे स्तोक हैं (१६)। उनसे यवमध्यके जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? यवमध्यसे अधस्तन सब गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है जो कि पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है (१२८ यवमध्यके जीव)। यवमध्यसे अधस्तन और जघन्य योगस्थानसे उपरिम जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? कुछ कम डेढ़ गुणहानियां गुणकार हैं जो कि जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। उसकी संदृष्टि $\frac{15}{2}$ है। इससे यवमध्यको गुणित करनेपर अधस्तन सब जीवोंका प्रमाण होता है— $\frac{15}{2} \times १२८ = ६००$। उनसे यवमध्यसे अधस्तन सब जीव विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं ? जघन्य योगस्थानके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ६००+१६=६१६। उनसे अजघन्य योगस्थानमें स्थित जीव विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं ? यवमध्यके जीवोंकी संख्यामेंसे जघन्य योगस्थानके जीवोंकी संख्या कम कर देनेपर जितना प्रमाण शेष रहे उतने अधिक हैं ६१६+(१२८-१६)=७२८। उनकी अपेक्षा यवमध्यसे लेकर अधस्तन सब जीव विशेष अधिक

जीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णजोगजीवमेत्तेण |७४४| ।

जवमज्झादो उवरि अप्पाबहुगं वुच्चदे । तं जहा— सव्वत्थोवा उक्कस्सए जोगट्ठाणे जीवा |५| । जवमज्झजीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? जवमज्झउवरिमसव्व-गुणहाणिसलागाणं किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तस्स संदिट्ठी |१२८/५| । एदेण उक्कस्सजोगजीवे गुणिदे जवमज्झजीवपमाणं होदि |१२८| । जवमज्झादो उवरि उक्कस्सजोगट्ठाणादो हेट्ठा जीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? किंचूणदिवड्ढगुणहाणीयो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । तासिं[1] संदिट्ठी एसा |६७३/१२८| । एदेण जवमज्झे गुणिदे अप्पिददव्वं होदि |६७३| । जवमज्झस्सुवरिमजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? उक्कस्सजोगजीवमेत्तेण |६७८| । अणुक्कस्सजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? उक्कस्स-जोगजीवपमाणूणजवमज्झमेत्तेण[2] |८०१| । जवमज्झप्पहुडिमुवरिमसव्वजोगजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? उक्कस्सजोगजीवमेत्तेण |८०६| ।

हैं । कितने अधिक हैं ? जघन्य योगस्थानके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं $७२८ + १६ = ७४४$ ।

अब यवमध्यसे आगेके अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । यथा— उत्कृष्ट योगस्थानमें जीव सबसे स्तोक हैं (५) । इनसे यवमध्यके जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? यवमध्यसे उपरिम सब गुणहानिशलाकाओंकी कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है जो कि पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । उसकी संदृष्टि— $\frac{१२८}{५}$ है । इससे उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंको गुणित करनेपर यवमध्यके जीवोंका प्रमाण होता है $\frac{१२८ \times ५}{५} = १२८$ । इनसे यवमध्यसे आगेके और उत्कृष्ट योगस्थानसे पीछेके जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? कुछ कम डेढ़ गुणहानियां गुणकार हैं जो कि जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । उनकी संदृष्टि यह है— $\frac{६७३}{१२८}$ । इससे यवमध्यको गुणित करनेपर विवक्षित द्रव्यका प्रमाण होता है $\frac{६७३ \times १२८}{१२८} = ६७३$ । इनसे यवमध्यसे आगेके जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं $६७३ + ५ = ६७८$ । अनुत्कृष्ट योगस्थानके जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंके प्रमाणसे हीन यवमध्यके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं $६७८ + (१२८ - ५) = ८०१$ । इनसे यवमध्यको लेकर आगेके सब योगस्थानोंके जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं $८०१ + ५ = ८०६$ ।

---

१ प्रतिषु ' ताओ ' इति पाठ । २ प्रतिषु ' जीवपमाणजव ' इति पाठ ।

जवमज्झादो हेट्ठुवरिमाणमप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा— सव्वत्थोवा उक्कस्सए जोगट्ठाणए जीवा । जहण्णए जोगट्ठाणे[1] जीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? जहण्णजोगट्ठाणसरिसउवरिमजीवाणं उवरिमसव्वगुणहाणिसलागाणं किंचूणमण्णोण्णब्भत्थरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो । तिस्से संदिट्ठी एसा | [illegible] |। एदेण उक्कस्सजोगजीवेसु गुणिदेसु जहण्णजोगजीवा होंति |१६| । जवमज्झजीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? जहण्णजोगसरिसजीवाणं हेट्ठा जवमज्झजीवाणमुवरि सव्वगुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तिस्से संदिट्ठी |८| । एदेण जहण्णजोगजीवेसु गुणिदेसु जवमज्झजीवा होंति |१२८| । जवमज्झादो हेट्ठा जहण्णजोगादो उवरिमजीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? किंचूणदिवड्ढगुणहाणीओ सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ | [illegible] | । एदेण जवमज्झं [गुणिदे] अप्पिददव्वं होदि |१००| । जवमज्झादो हेट्ठिमजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णजोगजीवमेत्तेण |११६| । जवमज्झादो उवरिमउक्कस्सजोगादो हेट्ठिमजीवा

अब यवमध्यसे अधस्तन और उपरिम योगस्थानोंके अल्पबहुत्वको कहते हैं। यथा— उत्कृष्ट योगस्थानके जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे जघन्य योगस्थानमें जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? जघन्य योगस्थान सदृश उपरिम जीवोंकी उपरिम सब गुणहानिशलाकाओंकी कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है जो कि पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। इसकी संदृष्टि यह है [illegible] । इससे उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंको गुणित करनेपर जघन्य योगस्थानके जीवोंका प्रमाण होता है [illegible] = १६। इससे यवमध्यके जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? जघन्य योगस्थानके सदृश जीवोंकी नीचेकी और यवमध्यके जीवोंकी ऊपरकी सब गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है जो कि पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। इसकी संदृष्टि ८ है। इससे जघन्य योगस्थानके जीवोंको गुणित करनेपर यवमध्यके जीव होते हैं १६ × ८ = १२८। इससे यवमध्यसे नीचेके और जघन्य योगसे आगेके जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? कुछ कम डेढ़ गुणहानियां गुणकार हैं जो कि जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग मात्र हैं [illegible]। इससे यवमध्यको [गुणित करनेपर] विवक्षित द्रव्यका प्रमाण होता है [illegible] × १२८ = १०० । इससे यवमध्यसे नीचेके जीव विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं ? जघन्य योगस्थानके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं १०० + १६ = ११६। इससे यवमध्यसे आगेके और उत्कृष्ट योगसे नीचेके जीव विशेष अधिक हैं। कितने

---

1 प्रतिषु ' जहण्णएजोगट्ठाणे ' इति पाठः ।

विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णुक्कस्सजोगजीवविरहिदअन्तिमदोगुणहाणिदव्वमेत्तेण |६७३| । जवमज्झादो उवरिमजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? उक्कस्सजोगजीवमेत्तेण |६७८| । अणुक्कस्सजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? उक्कस्सजोगजीवूणजवमज्झमेत्तेण |८०१| । जवमज्झप्पहुडि उवरि सव्वजोगजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? उक्कस्सजोगजीवमेत्तेण |८०६| । सव्वजोगट्ठाणजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? जवमज्झादो हेट्ठिमजीवमेत्तेण |१४२२| ।

तदो जीवजवमज्झहेट्ठिमअद्धाणादो उवरिमअद्धाण विसेसाहियमिदि सिद्धं । तेणेत्थ अंतोमुहुत्तकालमच्छणसभवो णत्थि त्ति कालजवमज्झस्स उवरिमंतोमुहुत्तद्धमच्छिदो त्ति घेत्तव्व ।

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभागमच्छिदो ॥ २९ ॥

अधिक हैं ? जघन्य और उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंसे रहित अन्तकी दो गुणहानियोंके द्रव्यका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ६१६ + ७८ – २१ = ६७३ । इनसे यवमध्यसे आगेके जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ६७३ + ५ = ६७८ । इनसे अनुत्कृष्ट जीव विशेप अधिक हैं । कितने अधिक हैं । उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंसे रहित यवमध्यके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ६७८ + (१२८ – ५) = ८०१ । इनसे यवमध्यसे लेकर आगेके सब योगस्थानोंके जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? उत्कृष्ट योगस्थानके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ८०१ + ५ = ८०६ । सब योगस्थानके जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? यवमध्यसे नीचेके जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ८०६ + ६१६ = १४२२ ।

इसलिये जीवयवमध्यसे नीचेके स्थानसे आगेका स्थान विशेष अधिक है, यह सिद्ध हुआ । अत एव यहा चूंकि अन्तर्मुहूर्त काल रहना सम्भव नहीं है इसीलिये कालयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

विशेषार्थ— यहा यवमध्यसे जीवयवमध्यका ग्रहण होता है या कालयवमध्यका ? इसी प्रश्नका निर्णय कर यह बतलाया गया है कि प्रकृतमें यवमध्य पदसे कालयवमध्यका ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि जीवयवमध्यके उपरिम भागमें अन्तर्मुहूर्त काल तक रहना सम्भव नहीं है ।

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानमें आवलिके असंख्यातवें भाग काल तक रहा ॥ २९ ॥

---

१ प्रतिषु '_विराहिदअहियगुण- ' इति पाठः ।

चरिमजीवदुगुणवड्डीए अंतोमुहुत्तं किण्ण अच्छिदो ? ण, तत्थ असंखेज्जगुणवड्डि हाणीणमभावादो। ण च एदाहि वड्डि-हाणीहि विणा अंतोमुहुत्तमच्छदि, 'असंखेज्जभाग वड्डि-संखेज्जभागवड्डि-संखेज्जगुणवड्डीणं एदासिं हाणीण च कालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो ' त्ति वयणादो। चरिमजीवदुगुणवड्डीए पुण असंखेज्जभागवड्डि-हाणीओ[1] चेव, ण सेसाओ। तेण तत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभाग चेव अच्छदि त्ति णिच्छओ कायव्वो। तत्थ असंखेज्जभागवड्डि-हाणीयो चेव अत्थि, अण्णाओ णत्थि त्ति कधं णव्वदे ? जुत्तीदो। तं जहा— बीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाण मादिं कादूण पक्खेवुत्तरकमेण जोगट्ठाणाणि वड्डमाणाणि गच्छंति जाव पक्खेवूणदुगुणजोगट्ठाणे त्ति। पुणो तस्सुवरि एगपक्खेवे वड्डिदे हेट्ठिमदुगुणवड्डिअद्धाणादो दुगुणमद्धाणं गंतूण एत्थ तणपढमदुगुणवड्डी जादा। एवं दुगुण-दुगुणमद्धाणं गंतूण सव्वदुगुणवड्डीयो उप्पज्जंति जाव

शंका—अन्तिम जीवदुगुणवृद्धिमें अन्तर्मुहूर्त काल तक क्यों नहीं रहा ?

समाधान—नहीं क्योंकि वहां असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि नहीं पाई जाती। यदि कहा जाय कि असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानिके विना भी अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है सो भी बात नहीं है क्योंकि " असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि और संख्यातगुणवृद्धिका तथा इन्हीं तीन हानियोंका जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण है " ऐसा वचन है। पर अन्तिम जीवदुगुणवृद्धिमें असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि ये दो ही होती हैं शेष वृद्धि-हानियां यहां नहीं होतीं। इसलिये वहां आवलीके असंख्यातवें भाग काल तक ही रहता है ऐसा निश्चय करना चाहिये।

शंका—वहां असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि ही होती है अन्य वृद्धि-हानियां नहीं होतीं, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—यह बात युक्तिसे जानी जाती है। यथा—द्वीन्द्रिय पर्याप्तके जघन्य परिणाम योगस्थानसे लेकर एक एक प्रक्षेप अधिकके क्रमसे योगस्थान एक प्रक्षेप कम दुगुणे योगस्थानके प्राप्त होने तक बढ़ते हुए चले जाते हैं। पुनः उसके ऊपर एक प्रक्षेपके बढ़नेपर अधस्तन दुगुणवृद्धि स्थानसे दुगुणा स्थान जाकर यहांकी प्रथम दुगुणवृद्धि हो जाती है। इस प्रकार दुगुणे दुगुणे स्थान जाकर अन्तिम दुगुणवृद्धिके

---

१ प्रतिषु -हाणीदो इति पाठः।

चरिमदुगुणवड्ढिपढमजोगो त्ति । संपधि चरिमगुणवड्ढीए हेट्ठिमसव्वगुणहाणिसलागाओ विरलिय विगुणिय अण्णोण्णब्भत्थुप्पण्णरासिणा बीइंदियपज्जत्तजहण्णपरिणामजोगट्ठाणपक्खेवभागहारे गुणिदे चरिमजोगदुगुणहाणिपढमजोगट्ठाणपक्खेवभागहारो होदि । तं विरलेदूण चरिमदुगुणवड्ढिपढमजोगट्ठाणं समखंडं कादूण दिण्णे विरलणरूवं पडि एगेगपक्खेवो पावदि । तत्थेगेगपक्खेवे तस्सुवरि वड्ढिदे असंखेज्जभागवड्ढी होदि । पुणो बिदियपक्खेवे वड्ढिदे वि असंखेज्जभागवड्ढी चेव होदूण ताव गच्छदि जाव एदम्मि पक्खेवभागहारं उक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदे तत्थ रूवूणेगखंडमेत्तपक्खेवा पविट्ठा त्ति । पुणो तस्सुवरि एगपक्खेवे वड्ढिदे संखेज्जभागवड्ढी पारभदि । पुणो तस्सुवरि अण्णेगपक्खेवे वड्ढिदे वि संखेज्जभागवड्ढी चेव । एवं दो-तिण्णि-चत्तारि आदि जाव रूवूणपक्खेवभागहारमेत्तपक्खेवा पविट्ठा त्ति । पुणो चरिमपक्खेवे पविट्ठे दुगुणवड्ढी होदि । एवं चरिमगुणहाणीए तिण्णि चेव वड्ढीयो ।

संपधि पुव्वभागहारमुक्कस्ससंखेज्जमेत्तखंडाणि कादूण तत्थेगखंडमेत्तपक्खेवेसु पविट्ठेसु जं जोगट्ठाणं तमाधारं कादूण वड्ढिगवेसणा कीरदे । तं जहा — अद्धजोगपक्खेवभागहार-

प्रथम योगस्थानके प्राप्त होने तक सब दुगुणवृद्धियां उत्पन्न होती हैं । अब अन्तिम गुणवृद्धिके नीचेकी सब गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर और उसे द्विगुणित कर जो अन्योन्याभ्यस्त-राशि उत्पन्न होती है उससे द्वीन्द्रिय पर्याप्तके जघन्य परिणाम योगस्थान सम्बन्धी प्रक्षेपभागहारको गुणित करनेपर अन्तिम योग सम्बन्धी दुगुणहानिके प्रथम योगस्थानका प्रक्षेपभागहार होता है । उसका विरलन कर अन्तिम दुगुणवृद्धिके प्रथम योगस्थानको समखण्ड करके देनेपर विरलन रूपके प्रति एक एक प्रक्षेप प्राप्त होता है । उनमेंसे एक प्रक्षेप उसके ऊपर बढ़ानेपर असंख्यातभागवृद्धि होती है । फिर द्वितीय प्रक्षेपके बढ़ानेपर भी असंख्यातभागवृद्धि ही होकर तब तक जाती है जब तक इसमें प्रक्षेपभागहारको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक कम एक खण्ड मात्र प्रक्षेप प्रविष्ट न हो जावें । पुनः उसके ऊपर एक प्रक्षेपके बढ़ानेपर संख्यातभागवृद्धि प्रारम्भ होती है । तत्पश्चात् उसके ऊपर अन्य एक प्रक्षेपके बढ़ानेपर भी संख्यातभागवृद्धि ही होती है । इस प्रकार दो, तीन, चार आदि एक कम प्रक्षेपभागहार प्रमाण प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होने तक संख्यातभागवृद्धि ही होती है । पुन: अन्तिम प्रक्षेपके प्रविष्ट होनेपर दुगुणवृद्धि होती है । इस प्रकार अन्तिम गुणहानिमें तीन ही वृद्धियां होती हैं ।

अब पूर्व भागहारके उत्कृष्ट संख्यात मात्र खण्ड करके उनमेंसे एक खण्ड मात्र प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होनेपर जो योगस्थान हो उसको आधार करके वृद्धिका विचार करते हैं ।

१ सप्रतौ ' जाव पढमदुगुण ' इति पाठ ।

मुक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदूण तत्थेगखंडे तत्थेव पक्खित्ते अप्पिदजोगट्ठाणस्स पक्खेवभागहारो होदि। एदं पक्खेवभागहारं विरलिय अप्पिदजोगट्ठाणं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि एगेगपक्खेवपमाणं पावदि। एत्थ एगपक्खेवमप्पिदजोगट्ठाणम्मि पक्खित्ते असंखेज्जभागवड्ढी होदि। एवमसंखेज्जभागवड्ढी चेव होदूण ताव[1] गच्छदि जाव पक्खेवभागहारमुक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदूण तत्थ रूवूणेगखंडमेत्तपक्खेवा पविट्ठा त्ति। पुणो एगपक्खेवे पविट्ठे संखेज्जभागवड्ढी होदि। पुव्विल्लअसंखेज्जभागवड्ढिअद्धाणादो एदमसंखेज्जभागवड्ढिअद्धाणं विसेसाहियं होदि। केत्तियमेत्तेण? अद्धजोगपक्खेवभागहारमुक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदे तत्थेयखंडमेत्तेण। एवमेत्थ संखेज्जभागवड्ढीए आदी[2] होदूण संखेज्जभागवड्ढी ताव गच्छदि जाव रूवूणउक्कस्ससंखेज्जमेत्तसेसखंडाणि सव्वाणि पविट्ठाणि त्ति। ताधे दुगुणवड्ढी होदि। ण च एत्थ दुगुणवड्ढी उप्पज्जदि, अतिमदोखंडमेत्तजोगपक्खेवाणं पवेसाभावादो।

अथवा अद्धजोगमुक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदूण तत्थेगखंडेण अब्भहियजोगट्ठाणम्मि

यथा— अर्ध योगप्रक्षेपभागहारको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित कर उनमेंसे एक खण्डको उसीमें प्रक्षेप करनेपर विवक्षित योगस्थानका प्रक्षेपभागहार होता है। इस प्रक्षेपभागहारका विरलन कर विवक्षित योगस्थानको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक विरलनके प्रति एक एक प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है। इनमेंसे एक प्रक्षेपको विवक्षित योगस्थानमें मिलानेपर असंख्यातभागवृद्धि होती है। इस प्रकार यहांके प्रक्षेपभागहारको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित कर उसमें एक कम एक खण्ड मात्र प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होने तक असंख्यातभागवृद्धि ही होकर जाती है। पुनः एक प्रक्षेपके प्रविष्ट होनेपर संख्यातभागवृद्धि होती है। पूर्वोक्त असंख्यातभागवृद्धिके स्थानसे यह असंख्यातभागवृद्धिका स्थान विशेष अधिक है। कितना अधिक है? अर्ध योगप्रक्षेपभागहारको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करनेपर उनमेंसे एक खण्ड मात्र अधिक है। इस प्रकार यहां संख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ होकर संख्यातभागवृद्धि तब तक जाती है जब तक कि एक कम उत्कृष्ट संख्यात मात्र शेष खण्ड सब सभी प्रविष्ट हो जाते। तब दुगुणवृद्धि होती है। परन्तु यहां दुगुणवृद्धि नहीं उत्पन्न होती क्योंकि अभी अन्तिम दो खण्ड मात्र प्रक्षेपोंका प्रवेश नहीं हुआ है।

अथवा अर्ध योगको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित कर उनमेंसे एक खण्ड अधिक

---

१ अप्रतौ 'ताव' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः [illegible] इति पाठः।
३ अ-काप्रत्योः 'आदी' इति पाठः।

दूण वड्ढिपरूवणा एवं कायव्वा । त जहा— रूवाहियमुक्कस्ससंखेज्जं विरलेदूण णिरुद्धजोगट्ठाण समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि अद्धजोगमुक्कस्ससंखेज्जेण खंडेदूणेगखंडपमाणं पावदि । कुदो ? अद्धजोगं पेक्खिदूण एदस्स एयखंडेण अहियत्तदंसणादो । पुणो एदस्स हेट्ठा अद्धजोगपक्खेवभागहारमुक्कस्ससंखेज्जेण खंडिय एगखंडं विरलिय उवरिमविरलणाए एगरूवधरिदखंड करिय दिण्णे रूवं पडि एगेगपक्खेवपमाण पावदि । तत्थेगपक्खेवं घेत्तूण णिरुद्धजोगट्ठाण पडिरासिय पक्खित्ते असंखेज्जभागवड्ढिजोगट्ठाण होदि । पुणो विदियपक्खेवं घेत्तूण पढमअसंखेज्जभागवड्ढिट्ठाणं पडिरासिय पक्खित्ते बिदियअसंखेज्जभागवड्ढिट्ठाणमुप्पज्जदि । एव विरलणमेत्तपक्खेवेसु परिवाडीए सव्वेसु पविट्ठेसु वि असंखेज्जभागवड्ढी ण समप्पदि । पुणो बिदियखंडं घेत्तूण हेट्ठिमविरलणाए समखंड करिय दिण्णे पुव्वं व पक्खेवपमाण पावदि ।

संपधि इमं विरलणमुक्कस्ससंखेज्जमेत्तखंडाणि कादूण तत्थ रूवूणेगखंडमेत्तपक्खेवा जाव पविसंति ताव असंखेज्जभागवड्ढी चेव । पुणो अण्णेगे पक्खेवे पविट्ठे संखेज्जभागवड्ढीए आदी होदि । कुदो ? णिरुद्धजोग उक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदे अद्धजोगमुक्कस्ससंखेज्जेण

योगस्थानको विवक्षित कर वृद्धिकी प्ररूपणा इस प्रकार करनी चाहिये । यथा— एक अधिक उत्कृष्ट संख्यातका विरलन कर विवक्षित योगस्थानको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक विरलन रूपके प्रति अर्ध योगको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित कर एक खण्ड प्रमाण प्राप्त होता है, क्योंकि, अर्ध योगकी अपेक्षा यह एक खण्ड अधिक देखा जाता है । पुन इसके नीचे अर्ध योगप्रक्षेपभागहारको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करके एक खण्डको विरलित कर उपरिम विरलनाके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति एक प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । उनमेंसे एक प्रक्षेपको ग्रहण कर विवक्षित योगको प्रतिराशि करके मिलानेपर असंख्यातभागवृद्धि रूप योगस्थान होता है । पुनः द्वितीय प्रक्षेपको ग्रहण करके प्रथम असंख्यातभागवृद्धिस्थानको प्रतिराशि कर मिलानेपर द्वितीय असंख्यातभागवृद्धिका स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार परिपाटीसे सब विरलन मात्र प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होनेपर भी असंख्यातभागवृद्धि समाप्त नहीं होती । पुन द्वितीय खण्डको ग्रहण कर अधस्तन विरलनाके समखण्ड करके देनेपर पूर्वके समान प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है ।

अब इस विरलनाके उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण खण्ड करके उनमें एक कम एक खण्ड मात्र प्रक्षेप जब तक प्रविष्ट होते हैं तब तक असंख्यातभागवृद्धि ही होती है । पश्चात् अन्य एक प्रक्षेपके प्रविष्ट होनेपर संख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ होता है, क्योंकि, विवक्षित योगको उत्कृष्ट संख्यातसे खंडित करनेपर अर्ध योगको उत्कृष्ट संख्यातसे खंडित

खंडिदेगखंडस्स तं चेव उक्कस्सेण खंडिदेगखंडस्स च भागभागुवलंभादो। अथवा उक्कस्स संखेज्जं विरलेदूण विरुद्धजोगं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तस्स संखेज्जदिभागो पावदि। पुणो हेट्ठा विरुद्धजोगपक्खेवभागहारं उक्कस्ससंखेज्जेण खंडिय तत्थेगखंडं विरलिय उवरिमेग-रूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पक्खेवपमाणं पावदि। तत्थेगपक्खेवं घेत्तूण पडिरासिदविरुद्धजोगम्मि पक्खित्ते असंखेज्जभागवड्ढी होदि। एवं ताव असंखेज्जभागवड्ढी होदूण गच्छदि जाव रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तपक्खेवा पविट्ठा त्ति। पुणो अण्णेगपक्खेवे पविट्ठे संखेज्जभागवड्ढी होदि, पुव्वभागहारमुक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदेगखंडेण पुव्वभागहारादो एदस्स भागहारस्स अहियत्तुवलंभादो। चरिमगुणहाणिअद्धाणमुक्कस्ससंखेज्जमेत्तखंडाणि कादूण तत्थ एगेगखंडस्स पढमजोगट्ठाणमादिं कादूण वड्ढिपरूवणे कीरमाणे एवं चेव तिविहा परूवणा कायव्वा। णवरि खंडं पडि एगखंडमुक्कस्ससंखेज्जमेत्तखंडाणि कादूण तत्थ एगखंडमादिउत्तरकमेण गंतूण बिदियखंडब्भंतरे संखेज्जभागवड्ढी होदि।

बिदियपरूवणाए उक्कस्ससंखेज्जभागहारो एगादिएगुत्तरकमेण खंडं पडि वड्ढावे दव्वो। बिदियखंडे विरुद्धे दुगुणवड्ढी ण उप्पज्जदि, उक्कस्सजोगादो उवरि दोण्णं खंडाणम

करनेपर एक खण्डका तथा उसको ही उसके वर्गसे खण्डित करनेपर एक खण्डका भाग नहीं पाया जाता। अथवा उत्कृष्ट संख्यातका विरलन कर विवक्षित योगको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति उसका संख्यातवां भाग प्राप्त होता है। पुनः नीचे विवक्षित योग सम्बन्धी प्रक्षेपभागहारको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित कर उसमेंसे एक खण्डका विरलन कर उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है। उनमेंसे एक प्रक्षेपको ग्रहण कर प्रतिराशिभूत विवक्षित योगमें मिलानेपर असंख्यातभागवृद्धि होती है। इस प्रकार असंख्यातभागवृद्धि होकर तब तक जाती है जब तक कि एक कम अधस्तन विरलन मात्र प्रक्षेप प्रविष्ट न हो जावें। पश्चात् अन्य एक प्रक्षेपके प्रविष्ट होनेपर संख्यातभागवृद्धि होती है क्योंकि पूर्व भागहारको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करनेपर एक खण्डसे पूर्व भागहारकी अपेक्षा यह भागहार अधिक पाया जाता है। अन्तिम गुणहानिस्थानके उत्कृष्ट संख्यात मात्र खण्ड करके उनमेंसे एक एक खण्डके प्रति प्रथम योगस्थानको विवक्षित कर वृद्धिकी प्ररूपणा करते समय इसी प्रकार ही तीन तरह प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि खण्ड खण्डके प्रति एक खण्डके उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण खण्ड करके उनमें एक खण्डसे लेकर उत्तर क्रमसे जाकर द्वितीय खण्डके भीतर संख्यातभागवृद्धि होती है।

द्वितीय प्ररूपणामें उत्कृष्ट संख्यातका भागहार एकादि एकोत्तर क्रमसे प्रत्येक खण्डके प्रति बढ़ाना चाहिये। द्वितीय खण्डके रहते हुए दुगुणवृद्धि नहीं उत्पन्न होती है

भावादो। तादिए वि णिरुद्धे ण उप्पज्जदि, तत्तो उवरि चउण्ण खंडाणमभावादो। एवं खंडं पडि दोआदिदोउत्तरकमेण खंडाभावलिंगं परूवेदव्वं। दुगुणिदहेट्ठिमखंडसलागमेत्त खंडेहि वा परूवेदव्वं। कुदो? हेट्ठिमखंडसलागमेत्तखंडाणं भागहारस्सुवरि अहियाण-मुवलंभादो हेट्ठिमखंडसलागाहि ऊणउक्कस्ससंखेज्जमेत्तखंडाण[1] चेव उवरि पवेसदंसणादो च। । २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ । १४ । १६ । १८ ।।

संपहि चरिमखंडजहण्णजोगट्ठाणणिरुंभणं कादूण वड्ढिपरूवणे कीरमाणे दुगुणुक्कस्स-संखेज्ज रूवूण विरलेदूण अप्पिदजोगट्ठाण समखंडं करिय दिण्णे पुव्वखंडेहि सरिसखंडाणि होदूण चेट्ठंति। पुव्विल्लेगखंडपक्खेवभागहार विरलेदूण उवरिमविरलणाए एगखंड घेत्तूण समखंडं कादूण दिण्णे पक्खेवपमाणं पावदि। तत्थेगपक्खेवं घेत्तूण अप्पिदजोगट्ठाणं पडि-रासिय पक्खित्ते असंखेज्जभागवड्ढी होदि। तं पडिरासिय विदिय [पक्खेवे] पक्खित्ते वि असंखेज्जभागवड्ढी चेव होदि। एवं ताव असंखेज्जभागवड्ढी गच्छदि जाव विरलणमेत्ता पक्खेवा पविट्ठा त्ति। एत्थ असंखेज्जदिभागवड्ढी एक्का चेव, उवरि जोगट्ठाणाभावादो। एदं

क्योंकि, उत्कृष्ट योगसे ऊपर दोनों खण्डोंका अभाव है। तृतीय खण्डके रहते हुए भी दुगुण वृद्धि नहीं उत्पन्न होती, क्योंकि, उससे ऊपर चार खण्डोंका अभाव है। इस प्रकार खण्ड खण्डके प्रति उत्तरोत्तर दो दो खण्डोंके अभावका हेतु कहना चाहिये। अथवा द्विगुणित अधस्तन खण्डशलाका प्रमाण खण्डोंके द्वारा इसका कथन करना चाहिये, क्योंकि, एक तो अधस्तन खण्डशलाका प्रमाण खण्डोंका भागहारके ऊपर आधिक्य पाया जाता है और दूसरे अधस्तन खण्डकी शलाकाओंसे कम उत्कृष्ट संख्यात मात्र खण्डोंका ही ऊपर प्रवेश देखा जाता है २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८।

अब अन्तिम खण्डके जघन्य योगस्थानको विवक्षित करके वृद्धिकी प्ररूपणा करते समय एक कम दुगुणे उत्कृष्ट संख्यातका विरलन कर विवक्षित योगस्थानको समखण्ड करके देनेपर पूर्व खण्डोंके सदृश खण्ड होकर स्थित होते हैं। पूर्वोक्त एक खण्ड सम्बन्धी प्रक्षेपभागहारका विरलन कर उपरिम विरलनके एक खण्डको ग्रहण कर समखण्ड करके देनेपर प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है। उसमेंसे एक प्रक्षेपको ग्रहण कर विवक्षित योगस्थानको प्रतिराशि करके मिलानेपर असंख्यातभागवृद्धि होती है। उसको प्रतिराशि कर द्वितीय प्रक्षेपको मिलानेपर भी असंख्यातभागवृद्धि ही होती है। इस प्रकार तब तक असंख्यातभागवृद्धि जाती है जब तक विरलन मात्र प्रक्षेप प्रविष्ट नहीं हो जाते। यहां एक असंख्यातभागवृद्धि ही है, क्योंकि, ऊपर योगस्थानका अभाव है। इस अन्तिम

१ प्रतिषु-' खंडाणि ' इति पाठ ।

चरिमखंडं उक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदे तत्थ रूवूणुक्कस्ससंखेज्जमेत्तखंडाणं जत्तिया समया तत्तियमेत्तजोगट्ठाणाणि उवरि जदि अत्थि तो संखेज्जभागवड्ढी होज्ज। ण च एवमणुवलंभादो। एवं पढमखंडे तिण्णिवड्ढीओ। चरिमखंडे असंखेज्जभागवड्ढी एक्का चेव। सेसखंडेसु असंखेज्जभागवड्ढी संखेज्जभागवड्ढी चेदि दो चेव वड्ढीओ। जोगट्ठाणचरिमगुणहाणीए अच्छण-कालो आवलियाए असंखेज्जदिभागो चेव, तत्थ असंखेज्जगुणवड्ढि-हाणीणमभावादो। जदि जोगट्ठाणचरिमगुणहाणीए वि आवलियाए असंखेज्जदिभागं चेव अच्छदि तो एत्तो असंखेज्जगुणहीणाए चरिमजीवगुणहाणीए अच्छणकालो णिच्छएण [आवलियाए] असंखेज्जदिभागो चेव होदि त्ति घेत्तव्वो।

जोगट्ठाणचरिमगुणहाणीए असंखेज्जदिभागो जीवगुणहाणी होदि त्ति कुदो णव्वदे? तंतजुत्तीदो। तं जहा— जदि जीवगुणहाणी चरिमजोगगुणहाणिमुक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदेगखंडमेत्ता होदि तो सव्वजीवगुणहाणिसलागाओ दुगुणुक्कस्ससंखेज्जमेत्ता चेव होज्ज,

---

खण्डको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करनेपर वहां एक कम उत्कृष्ट संख्यात मात्र खण्डोंके जितने समय हैं उतने मात्र योगस्थान यदि ऊपर हैं तो संख्यातभागवृद्धि हो सकती है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि इतने वे पाये नहीं जाते। इस प्रकार प्रथम खण्डमें तीन वृद्धियां होती हैं। अन्तिम खण्डमें एक असंख्यातभागवृद्धि ही होती है। शेष खण्डोंमें असंख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागवृद्धि ये दो ही वृद्धियां होती हैं। योगस्थानकी अन्तिम गुणहानिमें रहनेका काल आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण ही है, क्योंकि, वहां असंख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणहानि नहीं पाई जाती। जब योगस्थानकी अन्तिम गुणहानिमें भी आवलीके असंख्यातवें भाग काल तक ही रहता है तो इससे असंख्यात गुणी हीन अन्तिम जीवगुणहानिमें रहनेका काल निश्चयसे [आवलीके] असंख्यातवें भाग प्रमाण ही है ऐसा ग्रहण करना चाहिये।

शंका— योगस्थानकी अन्तिम गुणहानिके असंख्यातवें भाग प्रमाण जीवगुणहानि होती है यह बात किस प्रमाणसे जानी जाती है?

समाधान— यह बात आगमके अनुकूल युक्तिसे जानी जाती है। यथा— यदि जीवगुणहानि अन्तिम योगगुणहानिको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करनेपर एक खण्ड प्रमाण होती है तो सब जीवगुणहानिशलाकायें दुगुणे उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण ही होंगी,

---

१ अप्रतौ 'गुणहाणीण' इति पाठः।

२ अप्रतौ 'संखेज्जमेत्ताओ' आप्रतौ 'संखेज्जमेत्ताओ' इति पाठः।

सकलजोगट्ठाणद्धाणस्स सादिरेयअद्धम्मि चरिमजोगदुगुणवड्डीए अवट्ठाणादो। जदि एगखंडम्मि दो-दोजीवगुणहाणीयो लब्भंति तो सव्वजीवगुणहाणीओ चदुगुणुक्कस्ससंखेज्जमेत्ताओ होंति। अह जइ तिण्णि तो छगुणुक्कस्ससंखेज्जमेत्ताओ। अह जइ चत्तारि तो अट्ठगुणुक्कस्ससंखेज्जमेत्ताओ। ण च एवं, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीओ जीवगुणहाणीओ होंति त्ति परमगुरूवदेसादो। तेण एगखंडम्मि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवगुणहाणीहि होदव्वं। तं जहा— दुगुणुक्कस्ससंखेज्जमेत्तखंडेसु जदि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ जीवगुणहाणिसलागाओ लब्भंति तो एगखंडम्मि केत्तियाओ लभामो त्ति सरिसमवणिय दुगुणुक्कस्ससंखेज्जेण जीवगुणहाणिसलागासु ओवट्टिदासु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीओ एगखंडगयजीवदुगुणहाणिसलागाओ लब्भंति। तदो सिद्धं चरिमजोगगुणवड्डीए असंखेज्जदिभागो जीवगुणहाणि त्ति।

एदाणि णिरयभवं णिरुंभिय परूविदसव्वसुत्ताणि गुणिदकम्मंसियसव्वभवेसु पुध पुध परूवेदव्वाणि, एदेसिं सुत्ताणं देसामासियत्तदंसणादो[1]। ण च एक्कम्मि भवे जवमज्झस्सुवरि

क्योंकि, समस्त योगस्थान अध्वानके साधिक अर्ध भागमें अन्तिम योगदुगुणवृद्धिका अवस्थान है। यदि एक खण्डमें दो दो जीवगुणहानियां पायी जाती हैं, तो सब जीवगुणहानियां चौगुणे उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण होती हैं। अथवा यदि एक खण्डमें तीन तीन जीवगुणहानियां पायी जाती हैं तो सब जीवगुणहानियां छहगुणे उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण होती हैं। अथवा यदि एक खण्डमें चार जीवगुणहानियां पायी जाती हैं तो सब जीवगुणहानियां आठगुणे उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण होती हैं। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र जीवगुणहानियां होती हैं, ऐसा परमगुरुका उपदेश है। इसलिये एक खण्डमें पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र जीवगुणहानियां होना चाहिये। यथा— दुगुणे उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण खण्डोंमें यदि पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र जीवगुणहानिशलाकायें प्राप्त होती हैं तो एक खण्डमें कितनी प्राप्त होंगी, इस प्रकार समान राशियोंका अपनयन कर दुगुणे उत्कृष्ट संख्यातका जीवगुणहानिशलाकाओंमें भाग देनेपर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण एक खण्डगत जीवदुगुणहानिशलाकायें प्राप्त होती हैं। इससे सिद्ध है कि अन्तिम योगगुणवृद्धिके असंख्यातवें भाग प्रमाण जीवगुणहानि होती है।

नारक भवका आश्रयकर कहे गये ये सब सूत्र गुणितकर्मांशिकके सब भवोंमें पृथक् पृथक् कहने चाहिये, क्योंकि, ये सूत्र देशामर्शक देखे जाते हैं। यदि कहा जाय कि एक

---

१ प्रतिषु 'देसामासियदसणादो' इति पाठः।

चरिमगुणहाणीए च अंतोमुहुत्तमावलियाए असंखेज्जदिभागं चेव अच्छदि, जाव संभवो ताव तत्थेव अवट्ठाणपरूवणादो ।

दुचरिम-तिचरिमसमए उक्कस्ससंकिलेस गदो ॥ ३० ॥

दुचरिम-तिचरिमसमएसु किमट्ठमुक्कस्ससंकिलेसं णीदो'? बहुदव्वुक्कड्डणट्ठं । जदि एवं तो दोसमए मोत्तूण बहुसु समएसु णिरंतरमुक्कस्ससंकिलेसं किण्ण णीदो? ण, एदे' समए मोत्तूण णिरंतरमुक्कस्ससंकिलेसेण बहुकालमवट्ठाणाभावादो । ण वत्तव्वमिदं सुत्तं, संकिलेसावासयसुत्तेणेव परूविदत्तादो? ण एस दोसो, संकिलेसावासयसुत्तादो णेरइयचरिम

भवमें यवमध्यके ऊपर और अन्तिम गुणहानिमें अन्तर्मुहूर्त व आवलीके असंख्यातवें भाग काल तक रहता है सो ऐसा भी नहीं है, क्योंकि, जहां तक सम्भव है वहां तक वहींपर अवस्थान कहा गया है ।

द्विचरम व त्रिचरम समयमें उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ ॥ ३० ॥

शंका—द्विचरम व त्रिचरम समयोंमें उत्कृष्ट संक्लेशको किसलिये प्राप्त कराया?

समाधान—बहुत द्रव्यका उत्कर्षण करानेके लिये उन समयोंमें उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त कराया गया है ।

शंका—यदि ऐसा है तो उन दो समयोंको छोड़कर बहुत समय तक निरन्तर उत्कृष्ट संक्लेशको क्यों नहीं प्राप्त कराया गया?

समाधान—नहीं क्योंकि, इन दो समयोंको छोड़कर निरन्तर उत्कृष्ट संक्लेशके साथ बहुत काल तक रहना सम्भव नहीं है ।

शंका—इस सूत्रको नहीं कहना चाहिये क्योंकि, इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा संक्लेशावासकसूत्रसे ही हो जाती है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि संक्लेशावासकसूत्रसे जो नारक भवके

---

१ प्रतिषु 'संकिलेस णीदो' इति पाठः ।   २ प्रतिषु 'णीदो' इति पाठः ।

३ प्रतिषु 'एवसमए अवती ए वसए' इति पाठः ।

समयम्मि पत्तुक्कस्ससंकिलेसपडिसेहफलत्तादो। किमट्ठं तस्स तत्थ पडिसेहो कीरदे? ओकड्डिदे वि दव्वविणासाभावादो। हेट्ठा पुण सव्वत्थ समयाविरोहेण उक्कस्ससंकिलेसो चेव, अण्णहा संकिलेसावाससुत्तस्स विहलत्तप्पसंगादो।

चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो[1] ॥ ३१ ॥

किमट्ठं चरिम-दुचरिमसमएसु जोगं णीदो[2]? उक्कस्सजोगेण बहुदव्वसंगहट्ठं। जदि एवं तो दोहि समएहि विणा उक्कस्सजोगेण णिरंतरं बहुकालं किण्ण परिणमाविदो? ण एस दोसो, णिरंतरं तत्थ तियादिसमयपरिणामाभावादो। णारद्धव्वमिदं सुत्तं, जोगावासेण परूविद-

---

अन्तिम समयमें उत्कृष्ट संक्लेशका प्रसंग प्राप्त था उसका प्रतिषेध करना इस सूत्रका प्रयोजन है।

शंका—उत्कृष्ट संक्लेशका नरकभवके अन्तिम समयमें प्रतिषेध किसलिये किया जाता है?

समाधान—क्योंकि, वहां अपकर्षणके होनेपर भी द्रव्यका विनाश नहीं होता।

चरम समयके पहले तो सर्वत्र यथासमय उत्कृष्ट संक्लेश ही होता है, क्योंकि, ऐसा नहीं माननेपर संक्लेशावाससूत्रके निष्फल होनेका प्रसंग प्राप्त होता है।

चरम और द्विचरम सयममें उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ ॥ ३१ ॥

शंका—चरम और द्विचरम समयमें उत्कृष्ट योगको किसलिये प्राप्त कराया?

समाधान—उत्कृष्ट योगसे बहुत द्रव्यका संग्रह करानेके लिये उक्त समयोंमें उत्कृष्ट योगको प्राप्त कराया है।

शंका—यदि ऐसा है तो दो समयोंके सिवा निरन्तर बहुत काल तक उत्कृष्ट योगसे क्यों नहीं परिणमाया?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, निरन्तर उत्कृष्ट योगमें तीन आदि समय तक परिणमन करते रहना सम्भव नहीं है।

शंका—इस सूत्रकी रचना नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, योगावाससूत्रसे इस

---

१ जोगुक्कोसं चरिम-दुचरिमे समए य चरिमसमयम्मि। संपुण्णगुणियकम्मो पगयं तेणेह सामित्तं ॥ क. प्र. २-७८

२ प्रतिषु 'णीलो' इति पाठः।

रूवणादो ? ण एस दोसो, संकिलेसस्सेव उक्कस्सजोगस्स कम्मट्ठिदिअब्भंतरे पडिसेहो णत्थि त्ति परूवणफलत्तादो। हेट्ठा सव्वत्थ समयाविरोहेण उक्कस्सजोगो चेव, अण्णहा जोगावासस्स विहलत्तप्पसंगादो।

चरिमसमयतब्भवत्थो जादो। तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स णाणावरणीयवेयणा दव्वदो उक्कस्सा ॥ ३२ ॥

किमट्ठमेत्थेव उक्कस्ससामित्तं दिज्जदे ? ण, वत्तिट्ठिदिअणुसारिसत्तिट्ठिदीए अहियाए अभावादो कम्मट्ठिदीए पढमसमयम्मि बद्धकम्मक्खंधाणं उवरिमसमए अवट्ठाणाभावादो। उवरिं पि णाणावरणस्स बंधो अत्थि त्ति तदुक्कस्ससामित्तं ण दादुं जुत्तं, तं तेण विणा आगच्छ-माणउववादजोगदव्वादो गुणिदकम्मंसियउदयगयगोवुच्छाए बहुत्तुवलंभादो। आउअबंधाभि-मुहचरिमसमए उक्कस्ससामित्तं किण्ण दिज्जदे ? ण एस दोसो, आउअबंधकाले वि तक्का-

---

सूत्रके अर्थका कथन हो जाता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, संक्लेशके समान उत्कृष्ट योगका कर्मस्थितिके भीतर प्रतिषेध नहीं है यह बतलाना इस सूत्रका प्रयोजन है।

नीचे सर्वत्र यथासमय उत्कृष्ट योग ही होता है, क्योंकि ऐसा माने बिना योगावाससूत्रके निष्फल होनेका प्रसंग आता है।

चरम समयमें तद्भवस्थ हुआ। उस चरम समयमें तद्भवस्थ हुए जीवके ज्ञाना-वरणकी वेदना द्रव्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है ॥ ३२ ॥

शंका — यहीं नारकभवके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट स्वामित्व किसलिये दिया जाता है ?

समाधान— नहीं क्योंकि, व्यक्तिस्थितिका अनुसरण करनेवाली ही शक्तिस्थिति होती है उससे अधिक नहीं होती। इसका कारण यह है कि कर्मस्थितिके प्रथम समयमें बंधे हुए कर्मस्कन्धोंका कर्मस्थितिसे आगेके समयोंमें अवस्थान नहीं पाया जाता।

आगे भी ज्ञानावरण कर्मका बन्ध होता है इसलिये यदि कोई कहे कि वहां उत्कृष्ट स्वामित्व देना योग्य है सो यह बात भी नहीं है, क्योंकि, उसके बिना उपपाद योगके निमित्तसे प्राप्त होनेवाले द्रव्यसे गुणितकर्मांशिकके उदयको प्राप्त हुआ गोपुच्छाका द्रव्य बहुत पाया जाता है।

शंका—आयुबन्धके अभिमुख हुए जीवके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, एक तो आयुबन्धके कालमें भी

लियणाणावरणस्स बंधादो उदयगयगोवुच्छाए गुणिदकम्मंसियम्मि थोवत्तुवलंभादो, आउअ-बंधकालम्मि जाददव्वसंचयादो[1] उवरिं बहुदव्वसंचयदंसणादो च।

संपधि कम्मट्ठिदीए पढमसमयम्मि बद्धदव्वमुदयट्ठिदीए चेव उवलब्भदि, तस्स एगसमयसंत्तिट्ठिदिविसेसादो[2]। बिदियसमयसंचिददव्वमुदयादिदोसु ट्ठिदीसु चिट्ठदि, सत्ति-ट्ठिदिम्हि दोसमयसेसत्तादो। एवं सव्वसमयपबद्धाणं अवट्ठाणपाओग्गट्ठिदीयो वत्तव्वाओ। ण च एस णियमो वि, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तसमयपबद्धाणमक्कमेण गुणिद-घोल-माणादिसु णिज्जरोवलंभादो। संपधि चरिमसमयगुणिदकम्मंसियम्मि कम्मट्ठिदिपढमसमय-पबद्धो उक्कड्डणाए ज्झीणो। बिदियसमयपबद्धो वि ज्झीणो। एवं कम्मट्ठिदिपढमसमयप्पहुडि जाव तिण्णिवाससहस्साणि उवरि अब्भुस्सरिदूण बद्धसमयपबद्धो उक्कड्डणादो ज्झीणो, अइ-च्छावण-णिक्खेवाणभावादो। समयाहियतिण्णिवाससहस्साणि चडिदूण बद्धसमयपबद्धो उक्कड्ड-णादो ण ज्झीणो, तिण्णिवाससहस्समेत्तआबाधमइच्छिदूण उवरिमएगट्ठिदीए णिक्खेवुवलंभादो।

तात्कालिक ज्ञानावरणके बन्धसे गुणितकर्मांशिकके उदयको प्राप्त हुई गोपुच्छा स्तोक पाई जाती है और दूसरे आयुबन्धके कालमें सचित हुए द्रव्यसे आगे बहुत द्रव्यका संचय देखा जाता है, इसलिये आयुबन्धके अभिमुख हुए जीवके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट स्वामित्व नहीं दिया गया है।

कर्मस्थितिके प्रथम समयमें बंधा हुआ द्रव्य उदयस्थितिमें ही पाया जाता है, क्योंकि, उसकी शक्तिस्थिति एक समय शेष रहती है। कर्मस्थितिके द्वितीय समयमें संचित हुआ द्रव्य उदयादि दो स्थितियोंमें पाया जाता है, क्योंकि, उसकी शक्तिस्थिति दो समय शेष रहती है। इस प्रकार सब समयप्रबद्धोंकी अवस्थानके योग्य स्थितियां कहनी चाहिये। और यह नियम भी नहीं है, क्योंकि, पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण समयप्रबद्धोंकी अक्रमसे गुणित और घोलमान आदि अवस्थाओंके होनेपर निर्जरा पाई जाती है। इसलिये यह निष्कर्ष निकला कि कर्मस्थितिका प्रथम समयप्रबद्ध गुणित-कर्मांशिक जीवके अन्तिम समयमें उत्कर्षणके अयोग्य है। द्वितीय समयप्रबद्ध भी उत्कर्षणके अयोग्य है। इस प्रकार कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर तीन हजार वर्ष तक आगे जाकर बंधा हुआ समयप्रबद्ध भी उत्कर्षणके अयोग्य है, क्योंकि, इनकी अतिस्थापना और निक्षेप नहीं पाया जाता। किन्तु एक समय अधिक तीन हजार वर्ष आगे जाकर बंधा हुआ समयप्रबद्ध उत्कर्षणके अयोग्य नहीं है, क्योंकि, तीन हजार वर्ष प्रमाण आबाधाको अतिस्थापित करके आगेकी एक स्थितिमें इसका निक्षेप पाया जाता है। दो

---

१ प्रतिषु " जादवयादो " इति पाठ। २ काप्रतौ ' एगसमयस्स सचिट्ठिदि ' इति पाठ।

दुसमयाहियतिण्णिवाससहस्साणि उवरिमब्भुस्सरिय बद्धसमयपबद्धो वि उक्कड्डिज्जमाणो ण लब्भदि, तिण्णिवाससहस्साणि मइच्छाविय उवरिमट्ठिदीसु णिक्खेवदंसणादो। एवमवट्टिद मइच्छावणं काढूण तिसमउत्तरादिकमेण णिक्खेवो चेव वड्ढावेदव्वो जाव कम्मट्ठिदिअब्भंतरे बंधिय समयाहियबंधावलियकालं गालिय ट्ठिदसमयपबद्धो त्ति। अगलिदबंधावलियाणं णत्थि उक्कड्डणा ओकड्डणा वा।

जहा कम्मट्ठिदिचरिमसमयम्मि ठाइदूण उक्कड्डणपरिक्खा कदा तथा दुचरिमादि कम्मट्ठिदिपढमसमयपज्जवसाणसमयाण णिरुभणं काऊण उक्कड्डणविहाणं वत्तव्वं। एवमेदेण विहाणेण संचिदणाणावरणदव्वस्स उवसंहारो बुच्चदे। को उवसंहारो णाम ? कम्म ट्ठिदिआदिसमयप्पहुडि जाव चरिमसमओ त्ति ताव एत्थ बद्धसमयपबद्धाणं सव्वेसिं पादेक्कं वा पमाणपरिक्खा उवसंहारो णाम। तत्थ तिण्णि अणियोगद्दाराणि संचयाणुगमो-भागहार पमाणाणुगमो समयपबद्धपमाणाणुगमो चेदि। तत्थ संचयाणुगमे तिण्णि अणियोगद्दाराणि परूवणा पमाणं अप्पाबहुगं चेदि। परूवणाए अत्थि कम्मट्ठिदिआदिसमयसंचिददव्वं।

समय अधिक तीन हजार वर्ष आगे जाकर बंधा हुआ समयप्रबद्ध भी उत्कर्षणके अयोग्य नहीं है क्योंकि तीन हजार वर्षको अतिस्थापित करके आगेकी ही स्थितियोंमें इसका निक्षेप देखा जाता है। इस प्रकार अतिस्थापनाको अवस्थित करके तीन समय आदिके क्रमसे कर्मस्थितिके भीतर बांधकर एक समय अधिक बन्धावलिको गलाकर स्थित हुए समयप्रबद्धके प्राप्त होने तक निक्षेप ही बढ़ाना चाहिये। किन्तु अगलित बन्धावलियोंका न तो उत्कर्षण ही होता है और न अपकर्षण ही।

इस तरह जिस प्रकार कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें ठहरा कर उत्कर्षणका विचार किया है उसी प्रकार कर्मस्थितिके द्विचरम समयसे लेकर प्रथम समय तकके समयोंको विवक्षित करके उत्कर्षणविधिका कथन करना चाहिये।

इस प्रकार इस विधिसे संचित हुए उत्कृष्ट ज्ञानावरणके द्रव्यके उपसंहारका कथन करते हैं—

शंका—उपसंहार किसे कहते हैं ?

समाधान—कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम समय तकके इन समयोंमें बांधे गये सब समयप्रबद्धोंके अथवा प्रत्येकके प्रमाणकी परीक्षाका नाम उपसंहार है।

इसके तीन अनुयोगद्वार हैं—संचयानुगम भागहारप्रमाणानुगम और समयप्रबद्ध प्रमाणानुगम। उनमेंसे संचयानुगममें तीन अनुयोगद्वार हैं—प्ररूपणा, प्रमाण और अल्प बहुत्व। प्ररूपणाकी अपेक्षा कर्मस्थितिके प्रथम समयमें संचित द्रव्य है। द्वितीय समयमें

बिदियसमयसंचिददव्वं पि अत्थि । तदियसमयसंचिददव्वं पि अत्थि । एवं णेदव्वं जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति । एवं परूवणा गदा ।

कम्मट्ठिदिआदिसमयपबद्धस्स णेरइयचरिमसमए अणंता परमाणवो । एवं सव्वत्थ वत्तव्वं । पमाणपरूवणा गदा ।

कम्मट्ठिदिआदिसमयसंचओ थोवो । चरिमसमयसंचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं पुरदो भणिस्सामो । अपढम अचरिमसमयसंचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? किंचूणदिवड्ढगुणहाणीओ । एत्थ वि कारणं पुरदो भणिस्सामो । अचरिमसमयसंचओ विसेसाहिओ । अपढमसमयसंचओ विसेसाहिओ । कम्मट्ठिदिसंचओ विसेसाहिओ । कम्मट्ठिदिसव्वदव्वसंदिट्ठी एसा—

३३८८	१६४४	७७२	३३६	११८	९
३७०८	१८०४	८५२	३७६	१३८	१९
४०५०	१९८०	९४०	४२०	१६०	३०
४४४४	२१७२	१०३६	४६८	१८४	४२
४८६०	२३८०	११४०	५२०	२१०	५५
५३०८	२६०४	१२५२	५७६	२३८	६९
५७८८	२८४४	१३७२	६३६	२६८	८४
६३००	३१००	१५००	७००	३००	१००

एवं संचयाणुगमो समत्तो ।

संचित द्रव्य भी है । तृतीय समयमें संचित द्रव्य भी है । इस प्रकार कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार प्ररूपणा समाप्त हुई ।

जो समयप्रबद्ध कर्मस्थितिके प्रथम समयमें बंधता है उसके नारक भवके अन्तिम समयमें अनन्त परमाणु हैं । इसी प्रकार सर्वत्र कहना चाहिये । प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

कर्मस्थितिके प्रथम समयका संचय स्तोक है । उससे अन्तिम समयका संचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार अंगुलका असंख्यातवां भाग है । इसका कारण आगे कहेंगे । अप्रथम-अचरम समयका संचय उससे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार कुछ कम डेढ़ गुणहानियां है । इसका भी कारण आगे कहेंगे । अचरम समय सम्बन्धी संचय उससे विशेष अधिक है । अप्रथम समय सम्बन्धी संचय उससे विशेष अधिक है । कर्मस्थिति सम्बन्धी संचय उससे विशेष अधिक है । कर्मस्थितिके सब द्रव्यकी संदृष्टि यह है (मूलमें देखिये) । इस प्रकार संचयानुगम समाप्त हुआ ।

भागहारपमाणाणुगमो वुच्चदे। तं जहा— कम्मट्ठिदिआदिसमयसंचिदस्स अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ भागहारो होदि। कधमेदं णव्वदे? कम्मट्ठिदिआदिसमयसमयपबद्धस्स सव्वुक्कस्ससंचओ मिच्छादिट्ठिणा सव्वसंकिलिट्ठेण तिण्णिवाससहस्साणि आबाधं काढूण आबाधूणतीसकोडाकोडीसु पदेसरचणं कुणमाणेण चरिमट्ठिदीए णिसित्तदव्वमेत्तो त्ति पाहुडसुत्तम्मि परूविदत्तादो। तं जहा— कसायपाहुडे ट्ठिदिअंतियो णाम अत्थाहियारो। तस्स तिण्णि अणियोगद्दाराणि— समुक्कित्तणा सामित्तमप्पाबहुगं चेदि। तत्थ समुक्कित्तणाए अत्थि उक्कस्सट्ठिदिपत्तयं णिसेयट्ठिदिपत्तयं अधाणिसेयट्ठिदिपत्तयं उदयट्ठिदिपत्तयं चेदि। तत्थ जो समयपबद्धो कम्मट्ठिदिमच्छिदूण णिस्सेविज्जमाणो तस्स पोग्गलक्खंधाणमुदयट्ठिदिपत्ताणमग्गट्ठिदिपत्तयमिदि सण्णा। जं कम्मं जिस्से ट्ठिदीए णिसित्तं समोकड्डुक्कड्डणाहि हेट्ठिम-उवरिमट्ठिदीणं गंतूण पुणो ओकड्डुक्कड्डुणवसेण ताए चेव ट्ठिदीए होदूण जहाणिसित्तेहि सह उदए दिस्सदि तण्णिसेगट्ठिदिपत्तयं णाम। जं कम्मं जिस्से ट्ठिदीए णिसित्तमणोकड्डिदमणुक्कड्डिद च होदूण तिस्से चेव ट्ठिदीए उदए दिस्सदि तमधाणिसेगट्ठिदि

अब भागहारप्रमाणानुगमका कथन करते हैं। यथा— कर्मस्थितिके प्रथम समयमें संचित द्रव्यका भागहार अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है जो असंख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणियोंके जितने समय हैं उतना है।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— कर्मस्थितिके प्रथम समयमें बंधे हुए समयप्रबद्धका सबसे उत्कृष्ट संचय सर्वसंक्लिष्ट मिथ्यादृष्टिके द्वारा तीन हजार वर्ष प्रमाण आबाधा करके आबाधासे हीन तीस कोडाकोडियोंकी प्रदेशरचना करते हुए चरम स्थितिमें निषिक्त द्रव्य प्रमाण है ऐसा प्राभृतसूत्रमें कहा गया है। यथा— कषायप्राभृतमें स्थित्यन्तिक नामक एक अर्थाधिकार है। उसके तीन अनुयोगद्वार हैं— समुत्कीर्तना स्वामित्व और अल्पबहुत्व। उनमेंसे समुत्कीर्तना अधिकारमें उत्कृष्टस्थितिप्राप्त निषेकस्थितिप्राप्त अधानिषेकस्थिति प्राप्त और उदयस्थितिप्राप्त द्रव्यका निर्देश किया है। उनमें जो समयप्रबद्ध कर्मस्थिति काल तक रहकर निर्जीर्ण होनेवाला है उसके उदयस्थितिको प्राप्त हुए पुद्गलस्कन्धोंकी अग्रस्थितिप्राप्त संज्ञा है। जो कर्म जिस स्थितिमें निषिक्त है वह अपकर्षण और उत्कर्षण द्वारा अधस्तन व उपरिम स्थितिको प्राप्त होकर फिरसे अपकर्षण व उत्कर्षण द्वारा उसी स्थितिको प्राप्त होकर यथानिषिक्त परमाणुओंके साथ उदयमें दिखता है वह निषेकस्थितिप्राप्त कहलाता है। जो कर्म जिस स्थितिमें निषिक्त होकर अपकर्षण व उत्कर्षणके बिना उसी स्थितिमें उदयमें दिखता है वह अधानिषेकस्थितिप्राप्त कहलाता है। तथा

पत्तयं णाम। जं कम्म जत्थ वा तत्थ वा उदए दिस्सदि तमुदयट्ठिदिपत्तयं णाम। तत्थ मिच्छत्तस्स अग्गट्ठिदिपत्तयमेक्को वा दो वा परमाणू। एवं जावुक्कस्सेण सण्णिपचिंदियपज्जत्तेण सव्वसंकिलिट्ठेण कम्मट्ठिदि-चरिमसमए णिसित्तमेत्तमिदि कसायपाहुडे वुत्तं।

एगसमयपबद्धस्स णिसेगरचणाए अणवगयाए चरिमणिसेगपमाणं ण णव्वदि त्ति तप्पमाणणिण्णयजणणट्ठमेगसमयपबद्धस्स ताव णिसेगपरूवणा कीरदे। तत्थ छअणिओगद्दाराणि — परूवणा पमाण सेडी अवहारो भागाभागो अप्पाबहुगं चेदि। सण्णिमिच्छादिट्ठिपज्जत्त सव्वसंकिलिट्ठेण बज्झमाणमिच्छत्तस्स ताव पदेसरचणाए परूवणा कीरदे। तं जहा— सत्तवाससहस्साणि आबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं अत्थि, जं विदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं पि अत्थि। एवं णेदव्वं जाव सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिचरिमसमओ त्ति। परूवणा गदा[1]।

पढमाए ट्ठिदीए जे णिसित्ता परमाणू ते अणंता। एवं णेदव्वं जावुक्कस्सट्ठिदि त्ति। पमाणं गदं।

जो कर्म जहां तहां उदयमें देखा जाता है वह उदयस्थितिप्राप्त कहा जाता है। उनमेंसे मिथ्यात्व कर्मका अग्रस्थितिको प्राप्त हुआ द्रव्य एक अथवा दो परमाणु होते हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे सर्वसंक्लिष्ट संज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्तक द्वारा कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें जितना द्रव्य निषिक्त होता है उतना होता है, ऐसा कषायप्राभृतमें कहा है। (इससे जाना जाता है कि उक्त भागहार अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।)

एक समयप्रबद्धकी निषेकरचनाके अज्ञात होनेपर चूंकि अन्तिम निषेकका प्रमाण नहीं जाना जा सकता है अतः उसके प्रमाणका निर्णय करानेके लिये एक समयप्रबद्धके निषेकोंकी प्ररूपणा करते हैं। उसमें छह अनुयोगद्वार हैं— प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व। उसमें भी सर्वप्रथम संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्त सर्व संक्लिष्ट जीवके द्वारा बांधे जानेवाले मिथ्यात्व कर्मकी प्रदेशरचनाकी प्ररूपणा करते हैं। यथा— सात हजार वर्ष प्रमाण आबाधाको छोड़कर जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त होता है वह है, जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निषिक्त होता है वह भी है। इस प्रकार सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपमके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये। प्ररूपणा समाप्त हुई।

प्रथम स्थितिमें जो परमाणु निषिक्त होते हैं वे अनन्त हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये। प्रमाणकी प्ररूपणा समाप्त हुई।

---

१ अप्रतौ 'कदा' इति पाठः।

सेडिपरूवणा दुविहा— अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि । अणंतरोवणिधाए सत्तवाससहस्साणि आबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं । जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं । एवं विसेसहीणक्कमेण णेदव्वं जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति । णिसेगभागहारेण पढमणिसेगे भागे हिदे जं लद्धं तत्तियमेत्तदव्वं हीयमाणं गच्छदि जाव णिसेगभागहारस्स अद्धं गदं त्ति । तत्थ दुगुणहाणी होदि । एवं सव्वगुणहाणीणं वत्तव्वं । णवरि एत्थ अवट्ठिदभागहारो रूवूणभागहारो रूवाहियभागहारो छेदभागहारो त्ति एदे चत्तारि वि भागहारा जाणिय वत्तव्वा । एवमणंतरोवणिधा गदा ।

परंपरोवणिधाए पढमसमयणिसित्तपदेसग्गादो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहाणी । एवं णेदव्वं जाव चरिमदुगुणहाणि त्ति । एत्थ तिण्णि अणियोगद्दाराणि—

श्रेणिकी प्ररूपणा दो प्रकारकी है— अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा । अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा सात हजार वर्ष आबाधाको छोड़कर जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त होता है वह बहुत है । जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निषिक्त होता है वह विशेष हीन है । इस प्रकार विशेष हीनके क्रमसे कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये । निषेकभागहारका प्रथम निषेकमें भाग देनेपर जो द्रव्य प्राप्त हो उतना द्रव्य प्रत्येक निषेकके प्रति हीन होता हुआ निषेकभागहारका अर्ध भाग व्यतीत होने तक जाता है । वहां दुगुणी हानि होती है । इसी प्रकार सब गुणहानियोंका कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि यहां अवस्थित भागहार, रूपोन भागहार, रूपाधिक भागहार और छेद भागहार इन चारों ही भागहारोंको जानकर कहना चाहिये । इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

विशेषार्थ— उपनिधाका अर्थ मार्गणा है इसलिये अनन्तरोपनिधाका अर्थ हुआ अव्यवहित समीपके स्थानका विचार करना । प्रत्येक गुणहानिके जितने निषेक होते हैं उनमेंसे प्रथम निषेकसे दूसरे निषेकमें और दूसरे निषेकसे तीसरे निषेकमें कितना कितना द्रव्य कम होता जाता है इसका यहां विचार किया गया है । नियम यह है कि प्रथम गुणहानिके प्रथम निषेकके द्रव्यसे अगली गुणहानिके प्रथम निषेकका द्रव्य आधा रह जाता है और यह क्रम अन्तिम गुणहानि तक चालू रहता है । इसलिये प्रत्येक गुणहानिमें प्रथम निषेकसे दूसरे निषेकमें जितना द्रव्य घटता है उतना ही उत्तरोत्तर उस गुणहानिके अन्तिम निषेक तक घटता जाता है । प्रथम गुणहानिके प्रथम निषेकसे दूसरे निषेकमें कितना द्रव्य घटता है इसका निर्देश मूलमें किया ही है ।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा प्रथम समयमें निषिक्त प्रदेशाग्रसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण स्थान जाकर दुगुणी हानि होती है । इस प्रकार अन्तिम दुगुणहानि तक ले जाना चाहिये ।

विशेषार्थ—परम्परोपनिधामें एक गुणहानिसे दूसरी गुणहानिमें कितना द्रव्य कम

परूवणा पमाणमप्पाबहुगं चेदि। अत्थि एगेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि, णाणापदेसगुणहाणि-सलागाओ च अत्थि। परूवणा गदा।

एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि। णाणापदेसदुगुण-हाणिट्ठाणंतरसलागाओ पलिदोवमपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो पलिदोवमछेदणएहिंतो थोवाओ पलिदोवमपढमवग्गमूलच्छेदणएहिंतो पुण बहुआओ। कधमेदं णव्वदे? णाणागुण-हाणिसलागाओ विरलिय विग करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूल-समुप्पत्तीदो। एदं पि कुदो णव्वदे? बाहिरवग्गणाए पदेसविरइयसुत्तादो। तं जहा— तत्थ पदेसविरइयअत्थाहियारे छअणिओगद्दाराणि— जहण्णिया अग्गट्ठिदी, अग्गट्ठिदिविसेसो, अग्गट्ठिदिट्ठाणाणि, उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी, भागाभाग, अप्पाबहुगं चेदि[2]। तत्थ जमप्पाबहुअं

हो जाता है, इसका विचार किया गया है। प्रत्येक गुणहानिमें पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण निषेक होते हैं, इसलिये इतने स्थान जानेपर दूनी हानि हो जाती है। यह बत लाना उक्त कथनका तात्पर्य है।

यहां तीन अनुयोगद्वार हैं— प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व। एक-एक प्रदेश-गुणहानिस्थानान्तर हैं और नानाप्रदेशगुणहानिशलाकायें भी हैं। प्ररूपणा समाप्त हुई।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके असंख्यात प्रथमवर्गमूल प्रमाण है। नानाप्रदेशद्विगुणहानिस्थानान्तरशलाकायें पल्योपमके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं जो पल्योपमके अर्धच्छेदोंसे तो स्तोक हैं, पर पल्योपमके प्रथम वर्गमूलके अर्धच्छेदोंसे बहुत हैं।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— क्योंकि, नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन करके दुगुणित करनेके पश्चात् उनको परस्पर गुणित करनेपर पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलोंकी उत्पत्ति होती है।

शंका— यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— बाह्य वर्गणामें प्रदेशविरचित सूत्रसे यह जाना जाता है। यथा— वहां प्रदेशविरचित अर्थाधिकारमें छह अनुयोगद्वार बतलाये हैं— जघन्य अग्रस्थिति, अग्र-स्थितिविशेष, अग्रस्थितिस्थान, उत्कृष्ट अग्रस्थिति, भागाभाग और अल्पबहुत्व। उनमें

---

१ काप्रतौ 'णाणापदेसगुणहाणि' इति पाठः। २ ष ख पु १४, पृ ३५२.

तं तिविहं— जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे चेदि। तत्थ जहण्णुक्कस्सपदेस अप्पाबहुगे भण्णमाणे सव्वत्थोवं चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं [९]। चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गमसंखेज्जगुणं [१००]। पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं [५१२]। अपढम-अचरिमगुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गमसंखेज्जगुणं त्ति भणिदं [५०७९]। संपहि एत्थ अप्पाबहुगे चरिमगुणहाणिदव्वस्सुवरि पढमणिसेगो असंखेज्जगुणो त्ति भणिदं। तत्थ चरिमगुणहाणिदव्वं असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्तचरिमणिसेगं। तस्स संदिट्ठी [९ । ',]। पढमणिसेगो पुण किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्तचरिमणिसेगो [९ । '१२']। असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्तदिवड्ढगुणहाणीहिंतो किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासिस्स असंखेज्जगुणत्तण्णहाणुववत्तीदो णव्वदे णाणागुणहाणिसलागाओ पढमवग्गमूलच्छेदणएहिंतो बहुगाओ त्ति। बहुगीओ होंतीओ विसेसाहियाओ चेव, ण दुगुणाओ अण्णोण्णब्भत्थरासिस्स पलिदोवमपमाणप्पसंगादो। पलिदोवमवग्गसलागछेदणयमादिं कादूण जाव पलिदोवमबिदियवग्गमूलच्छेदणयपज्जवसाणाओ

जो अल्पबहुत्व है वह तीन प्रकारका बतलाया है— जघन्य पद, उत्कृष्ट पद और जघन्य उत्कृष्ट पद। इनमेंसे जघन्य-उत्कृष्टप्रदेशाग्रअल्पबहुत्वका कथन करते समय अन्तिम स्थितिमें प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है ९। इससे अन्तिम गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है १००। इससे प्रथम स्थितिमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ५१२। इससे अप्रथम अचरम गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ५०७९ ऐसा कहा है। इस प्रकार इस अल्पबहुत्वमें अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका निर्देश करके उससे प्रथम निषेकका द्रव्य असंख्यातगुणा है ऐसा कहा है। उसमें अन्तिम गुणहानिका द्रव्य पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण अन्तिम निषेकोंका जितना द्रव्य हो उतना है। उसकी संदृष्टि— ९×२८। और प्रथम निषेक कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि मात्र अन्तिम निषेकोंका जितना प्रमाण हो उतना है ९ × ५१२। पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलों प्रमाण डेढ़ गुणहानियोंसे चूंकि कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि असंख्यातगुणी अन्यथा बन नहीं सकती अतः इसीसे जाना जाता है कि नाना गुणहानिशलाकायें पल्योपमके प्रथम वर्गमूलके अर्धच्छेदोंसे बहुत हैं। बहुत होतीं हुईं भी वे प्रथम वर्गमूलके अर्धच्छेदोंसे विशेष अधिक ही हैं दुगुणी नहीं हैं, क्योंकि, उन्हें दूनी मान लेने पर अन्योन्याभ्यस्त राशिके पल्योपमके प्रमाण प्राप्त होनेका प्रसंग आता है। पल्योपमकी वर्गशलाकाओंके अर्धच्छेदसे लेकर पल्योपमके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद पर्यन्त सब अर्धच्छेदोंकी शलाकाओंको

न्वद्धछेदणयसलागाओ मेलाविय पलिदोवमपढमवग्गमूलच्छेदणएसु पक्खित्ते णाणागुणहाणि-सलागाणं पमाण होदि । कधमेदासिं मेलावणं कीरदे ? पलिदोवमवग्गसलागपमाणवग्गमादिं कादूण जाव पलिदोवमबिदियवग्गमूले त्ति ताव एदेसिं वग्गाण सलागाओ विरलिय बिग करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा पलिदोवमपढमवग्गमूलछेदणए ओवट्टिय लद्ध रूवूणभागहारेण गुणिदे इच्छिदद्धच्छेदणयसलागाण मेलाओ होदि । णाणागुणहाणिसलागाओ पलिदोवमवग्गसलाग-छेदणएहि ऊणपलिदोवमछेदणयमेत्ताओ चेव होंति, ऊणा अहिया वा ण होंति त्ति कधं णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो । एवं मोहणीयस्स णाणागुणहाणिसलागाण पमाणपरूवणा कदा ।

मिलाकर पल्योपमके प्रथम वर्गमूलके अर्धच्छेदोंमें मिलानेपर नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण होता है ।

शंका — इनको कैसे मिलाया जाता है ?

समाधान — पल्योपमकी वर्गशलाका प्रमाण वर्गसे लेकर पल्योपमके द्वितीय वर्गमूल तक इन वर्गोंकी शलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके अन्योन्याभ्यस्त राशिसे पल्योपमके प्रथम वर्गमूलके अर्धच्छेदोंको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उसे रूपोनभाग-हारसे गुणित करनेपर इच्छित अर्धच्छेदशलाकाओंका योग होता है ।

शंका — नानागुणहानिशलाकायें पल्योपमकी वर्गशलाकाओंके अर्धच्छेदोंसे हीन पल्योपमके जितने अर्धच्छेद हों इतनी ही हैं, कम व अधिक नहीं हैं, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान — यह अविरूद्ध आचार्यके वचनसे जाना जाता है ।

इस प्रकार मोहनीयकी नानागुणहानिशलाकाओंके प्रमाणकी प्ररूपणा की ।

विशेषार्थ — यहां परम्परोपनिधाके प्रसंगसे एक गुणहानिके निषेकोंकी सख्या वतलाकर मोहनीयकी नानागुणहानियोंका ठीक प्रमाण कितना है, यह युक्तिपूर्वक सिद्ध करके वतलाया गया है । साधारणतः मोहनीयकी गुणहानिशलाकायें पल्योपमके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भाग प्रमाण मानी जाती हैं । पर इससे वास्तविक सख्या ज्ञात नहीं होती । इसलिये इस सख्याका ठीक ज्ञान करानेके लिये बतलाया है कि यह संख्या पल्योपमके अर्धच्छेदोंसे तो कम है पर पल्योपमके प्रथम वर्गमूलके अर्धच्छेदोंसे अधिक है । इतना क्यों है, इसी बातको सिद्ध करनेके लिये युक्ति दी गई है । युक्ति वर्गणा-खण्डके प्रदेशविरचित अल्पबहुत्वके आधारसे दी गई है । वहा वतलाया है कि अन्तिम गुणहानिके समूचे द्रव्यसे प्रथम गुणहानिके प्रथम निषेकका द्रव्य असख्यातगुणा है । यहा तीन बातें ज्ञातव्य हैं — अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका प्रमाण, प्रथम गुणहानिके प्रथम निषेकके द्रव्यका प्रमाण और इन दोनोंके तारतम्यका वास्तविक ज्ञान । एक गुणहानिमें पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण निषेक होते हैं । साधारणत इन निषेकोंके

संपहि सत्तरूवाणि विरलिय मोहणीयणाणागुणहाणिसलागाओ समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दससागरोवमकोडाकोडीणं गुणहाणिसलागाओ पलिदोवमपढमवग्गमूलस्स हेट्ठा तदिय छट्ठ-णव-बारसम-पण्णारसमादितदियादि-तिउत्तरवग्गाणमद्धछेदणयसमासमेत्तीओ पावेंति। तत्थ तिण्णिरूवधरिददव्वच्छेदणयाणं समासे कदे तीससागरोवमकोडाकोडिट्ठिदिणाणावरणीयस्स गुणहाणिसलागाओ विदिय-तदिय पंचम-छट्ठट्ठम-णवमादि-दो दोवग्गाणमेगंतरिदाणमद्धछेदणयसमासमेत्तीओ होंति।

एवं दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराइयाणं वत्तव्वं, णाणावरणीएण समाणट्ठिदित्तादो। दोरूवधरिदसमासो णामा-गोदाणं णाणागुणहाणिसलागाओ होंति, वीससागरोवमकोडाकोडि

प्रमाणको अन्तिम निषेकके द्रव्यसे गुणाकार करनेपर अन्तिम गुणहानिका द्रव्य होता है। यथार्थतः इसमें अन्तिम गुणहानिके प्रचय द्रव्यका जितना प्रमाण प्राप्त होगा, उतना और मिलाना पड़ेगा तब अन्तिम गुणहानिका समस्त द्रव्य प्राप्त होगा। यह तो अन्तिम गुणहानिका द्रव्य है। प्रथम गुणहानिके प्रथम निषेकका द्रव्य अन्तिम निषेकके द्रव्यको नानागुणहानिशलाकाओंकी कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशिसे गुणा करनेपर प्राप्त होता है। यह प्रथम निषेकका द्रव्य है। जैसा कि अल्पबहुत्वसे ज्ञात होता है कि अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे प्रथम निषेकका द्रव्य असंख्यातगुणा है यह बात तभी बन सकती है जब कि डेढ़गुणहानिगुणित पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलके प्रमाणसे नाना गुणहानियोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि असंख्यातगुणी मान ली जाती है। यतः यह असंख्यातगुणी है इससे ज्ञात होता है कि नानागुणहानिशलाकायें पल्योपमके प्रथम वर्गमूलके अर्धच्छेदोंसे साधिक हैं।

अब सात रूपोंका विरलन करके मोहनीयकी नानागुणहानिशलाकाओंको सम खण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति दस कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंकी गुणहानिशलाकायें प्राप्त होती हैं जो पल्योपमके प्रथम वर्गमूलसे नीचे तीसरे छठे नौवें बारहवें व पन्द्रहवें आदि इस प्रकार तीसरेसे लेकर उत्तरोत्तर तीन अधिक वर्गोंके अर्धच्छेदोंके योग रूप होती हैं। उनमेंसे तीन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यके अर्धच्छेदोंका योग करनेपर तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण स्थितिवाले ज्ञानावरणीय कर्मकी गुणहानिशलाकायें दूसरा तीसरा पांचवां छठा व आठवां नौवां आदि एकान्तरित दो दो वर्गोंके अर्धच्छेदोंके योग मात्र होती हैं।

इसी प्रकार दर्शनावरणीय वेदनीय और अन्तराय कर्मोंकी नाना गुणहानिशलाकायें कहनी चाहिये क्योंकि ज्ञानावरणीयके समान उनकी स्थिति होती है। दो दो अंकोंके प्रति प्राप्त नानागुणहानिशलाकाओंका जितना योग हो उतनी नाम व गोत्र कर्मकी नानागुणहानिशलाकायें होती हैं क्योंकि, उनकी स्थिति बीस कोड़ाकोड़ि

ट्ठिदित्तादो । एगरूवधरिदस्स संखेज्जदिभागो आउअस्स णाणागुणहाणिसलागाओ । चदुरूव-धरिददव्वसमासो चदुकसायणाणागुणहाणिसलागाओ होंति । कारणं सुगम । एव पलिदोवम-ट्ठिदीण णाणागुणहाणिसलागाओ तेरासियकमेण उप्पादेदव्वाओ ।

णाणावरणीयस्स अण्णोण्णब्भत्थरासीदो दिवड्ढगुणहाणीओ असंखेज्जगुणाओ त्ति [एदम्हादो, उवरि] परूविदपदेसविरइयअप्पाबहुगादो[1] च णव्वदे जहा णाणावरणीयणाणा-गुणहाणिसलागाओ पलिदोवमबिदियवग्गमूलद्धछेदणएहिंतो विसेसाहियाओ त्ति । तं जहा— सव्वत्थोवो चरिमणिसेगो। पढमणिसेगो असंखेज्जगुणो। चरिमगुणहाणिदव्वमसंखेज्जगुणमिदि । एद पदेसविरइयअप्पाबहुग । एदाहि णाणागुणहाणिसलागाहि सग-सगकम्मट्ठिदिमोवट्टिदे गुणहाणिपमाणं सव्वकम्मेसु सखाए उवगदसमभावमुप्पज्जदे ।

सव्वत्थोवाओ आउअस्स णाणागुणहाणिसलागाओ । णामा-गोदाण संखेज्जगुणाओ । णाण-दंसणावरणीय-अंतराइयाण गुणहाणिसलागाओ विसेसाहियाओ । मोहणीयगुणहाणि-

---

सागरोपम प्रमाण है । एक अंकके प्रति प्राप्त राशिके संख्यातवें भाग प्रमाण आयु कर्मकी नानागुणहानिशलाकायें हैं। चार अंकोंके प्रति प्राप्त राशिका जितना योग हो उतनी चार कषायोंकी नानागुणहानिशलाकायें होती हैं। इसका कारण सुगम है। इसी प्रकार पल्योपम मात्र स्थितिवाले कर्मोंकी नानागुणहानिशलाकाओंको त्रैराशिक क्रमसे उत्पन्न कराना चाहिये ।

ज्ञानावरणीयकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे डेढ़ गुणहानियां असख्यातगुणी हैं, इससे और आगे कहे गये प्रदेशविरचित अल्पबहुत्वसे जाना जाता है कि ज्ञानावरणीयकी नानागुणहानिशलाकायें पल्योपमके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेदोंसे विशेष अधिक हैं। यथा— "अन्तिम निषेक सबसे स्तोक है। उससे प्रथम निषेक असख्यातगुणा है। उससे अन्तिम गुणहानिका द्रव्य असंख्यातगुणा है।" यह प्रदेशविरचित अल्पबहुत्व है।

इन नानागुणहानिशलाकाओंसे अपने अपने कर्मकी स्थितिको अपवर्तित करनेपर सब कर्मोंमें संख्यासे समभावको प्राप्त गुणहानिका प्रमाण अर्थात् गुणहानिके कालका प्रमाण उत्पन्न होता है।

आयुकर्मकी नानागुणहानिशलाकायें सबसे स्तोक हैं। उनसे नाम व गोत्र कर्मकी नानागुणहानिशलाकायें संख्यातगुणी हैं। उनसे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय व अन्तरायकी गुणहानिशलाकायें विशेष अधिक हैं। उनसे मोहनीयकी गुणहानिशलाकायें संख्यातगुणी हैं।

---

१ प्रतिषु ' त्ति य परूविद- इति पाठः ।

सलागाओ असंखेज्जगुणाओ । कारणं सुगमं ।

सव्वत्थोवो आउअस्स अण्णोण्णब्भत्थरासी । णामा-गोदाणमण्णोण्णब्भत्थरासी असंखेज्जगुणो । तिसियाणमण्णोण्णब्भत्थरासी अण्णोण्णेण समो होदूण असंखेज्जगुणो । मोहणीयस्स अण्णोण्णब्भत्थरासी असंखेज्जगुणो । एवं पमाणपरूवणा गदा ।

सव्वत्थोवाओ सव्वेसिं कम्माणं णाणागुणहाणिसलागाओ । एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । अप्पाबहुगं गदं ।

२८८	१४४	७२	३६	१८	९
३२०	१६०	८०	४०	२०	१०
३५२	१७६	८८	४४	२२	११
३८४	१९२	९६	४८	२४	१२
४१६	२०८	१०४	५२	२६	१३
४४८	२२४	११२	५६	२८	१४
४८०	२४०	१२०	६०	३०	१५
५१२	२५६	१२८	६४	३२	१६

एदिस्से संदिट्ठीए विण्णासकमो ताव उच्चदे । तं जहा — तेसट्ठि-सदमेत्तसमयपबद्धो

इसका कारण सुगम है ।

आयु कर्मकी अन्योन्याभ्यस्त राशि सबसे स्तोक है । उससे नाम व गोत्रकी अन्योन्याभ्यस्त राशि असंख्यातगुणी है । उससे तीस कोड़ाकोड़ि प्रमाण स्थितिवाले नाना परस्पर मादिकी अन्योन्याभ्यस्त राशि परस्पर समान हो करके असंख्यातगुणी है । उससे मोहनीयकी अन्योन्याभ्यस्त राशि असंख्यातगुणी है । इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

सब कर्मोंकी नानागुणहानिशलाकायें सबसे स्तोक हैं । उनसे एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल मात्र है । अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब सर्वप्रथम इस संदृष्टि (मूलमें देखिये) का विन्यासक्रम कहते हैं । यथा—

गहिदो ६३००। कम्मट्ठिदिदीहत्तमट्ठेतालीसं ४८। छ णाणागुणहाणिसलागाओ। देहि अट्ठेतालीसकम्मट्ठिदिमोवट्टिदे लद्धमट्ठ गुणहाणी होदि ८। गुणहाणीए दुगुणिदाए[1] णिसेगभागहारो होदि १६। पंचसदाणि बारसुत्तराणि[2] पढमणिसेगो ५१२। णिसेगभागहारेण पढमणिसेगे भागे हिदे लद्धं बत्तीसं गोवुच्छविसेसो ३२। एदस्सद्धं विदियगुणहाणिगोवुच्छविसेसो १६। एदस्सद्धं तदियगुणहाणिगोवुच्छविसेसो ८। एवं गुणहाणिं पडि अद्धद्धेण हीयमाणो गच्छदि जाव कम्मट्ठिदिचरिमगुणहाणि त्ति। अण्णोण्णब्भत्थरासी चउसट्ठी ६४। एवं[3] सदिट्ठिं ठविय संपहि अवहारो वुच्चदे—

मोहणीयस्स पढमट्ठिदिपदेसग्गेण समयपबद्धो केवचिरेण कालेण[4] अवहिरिज्जदि? दिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि। त जहा— पढमगुणहाणिपढमणिसेगं ठविय गुणहाणीए गुणिदे गुणहाणिमेत्तपढमणिसेगा होंति ५१२। ८। पढमणिसेगादो विदियणिसेगो एगगोवुच्छविसेसेण परिहीणो। तदिओ दोहि, चउत्थो तीहि परिहीणो। एवं गतूण

यहां संदृष्टिमें समयप्रबद्धका प्रमाण तिरेसठ सौ ६३०० ग्रहण किया है। कर्मस्थितिकी दीर्घताका प्रमाण अड़तालीस ४८ है। नानागुणहानिशलाकायें छह हैं। इनसे ४८ समय प्रमाण कर्मस्थितिको अपवर्तित करनेपर लब्ध आठ समय प्रमाण एक गुणहानि होती है। गुणहानिको द्विगुणित करनेपर निषेकभागहारका प्रमाण १६ होता है। प्रथम निषेकका प्रमाण पांच सौ बारह ५१२ है। निषेकभागहारका प्रथम निषेकमें भाग देनेपर लब्ध बत्तीस ३२ गोपुच्छविशेषका प्रमाण है। इससे आधा १६ द्वितीय गुणहानिका गोपुच्छ विशेष है। इससे आधा ८ तृतीय गुणहानिका गोपुच्छविशेष है। इस प्रकार कर्मस्थितिकी अन्तिम गुणहानि तक एक एक गुणहानिके प्रति गोपुच्छविशेष आधा आधा हीन होता हुआ चला जाता है। अन्योन्याभ्यस्त राशिका प्रमाण चौंसठ ६४ है। इस प्रकार संदृष्टिको स्थापित कर अब अवहारकालको कहते हैं—

मोहनीयका एक समयप्रबद्ध उसके प्रथम स्थितिप्रदेशाग्रके द्वारा कितने कालसे अपहृत होता है? डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालके द्वारा अपहृत होता है। यथा— प्रथम गुणहानिके प्रथम निषेकको स्थापित कर गुणहानिसे अर्थात् एक गुणहानिके कालसे गुणित करनेपर गुणहानि प्रमाण प्रथम निषेक होते (५१२ × ८ = ८ प्रथम निषेक) हैं। प्रथम निषेककी अपेक्षा द्वितीय निषेक एक गोपुच्छविशेषसे हीन है। तृतीय निषेक दो गोपुच्छविशेषोंसे और चतुर्थ निषेक तीन गोपुच्छविशेषोंसे हीन है। इस प्रकार जाकर

१ अप्रतौ ' गुणहाणिदाए ', आ काप्रत्योः ' गुणिदाए ' इति पाठः।
२ प्रतिषु ' पंचमदाणि बारसुत्तरसदाणि ' इति पाठः।
३ काप्रतौ ' एद ' इति पाठः। ४ अप्रतौ ' कालादो ' इति पाठः।

पढमगुणहाणिचरिमणिसेगो रूवूणगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसेहि ऊणो। तेण रूवूणगुणहाणिसंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा अहिया होंति। एदेसिमेगादिएगुत्तरवड्ढीए रूवूणगुणहाणिमेत्तट्ठाणगदगोवुच्छविसेसाणमवणयणं कस्सामो। तं जहा— एदेसिं मूलग्गसमासे कदे रूवूणगुणहाणिमद्धमेत्ता पढमणिसेगद्धभागा होंति। पुणो ते दो दो एक्कदो कदे एगरूवचदुब्भागेणूणगुणहाणिचदुब्भागमेत्तपढमणिसेगा होंति। पुणो एदेसु पढमणिसेगेसु गुणहाणिमेत्तपढमणिसेगेहिंतो अवणिदेसु गुणहाणितिण्णिचदुब्भागमेत्तपढमणिसेया चदुब्भागेणब्भहिया चेट्ठंति, गुणहाणीए किंचूणगुणहाणिचदुब्भागाभावादो। तेसिमेसा संदिट्ठी ठवेदव्वा। ५१२। ५१२। ५१२। ५१२। ५१२। ५१२। १२८। पढमगुणहाणिदव्वे पढमणिसेगपमाणेण कदे एत्तियं होदि। सेसगुणहाणिदव्वे वि अप्पप्पणो [पढम] णिसेयपमाणेण कदे एवं चेव होदि। तम्मि मेलाविदे चरिमगुणहाणिदव्वेणूणपढमगुणहाणिदव्वमेत्तं[1] होदि। पुणो चरिमगुणहाणिदव्वे पक्खित्ते पढम-

---

प्रथम गुणहानिका अन्तिम निषेक एक कम गुणहानि प्रमाण गोपुच्छविशेषोंसे हीन है। इसलिये प्रत्येक गुणहानिमें एक कम गुणहानिके संकलन प्रमाण गोपुच्छविशेष अधिक होते हैं। अब एकादि एकोत्तर वृद्धि रूप इन एक कम गुणहानि प्रमाण स्थानगत गोपुच्छविशेषोंका अपनयन करते हैं। यथा— मूलसे लेकर अग्र तकके इन गोपुच्छविशेषोंका जोड़ करनेपर एक कम गुणहानिके आधे भाग प्रमाण जो प्रथम निषेक हैं उनके आधे भाग प्रमाण होते हैं ($\frac{५१२}{२} \times \frac{७}{२}$ = ८९६)। पुनः उन दो दो भागोंको इकट्ठा करनेपर एक चौथाई कम गुणहानिके चतुर्थ भाग मात्र प्रथम निषेक होते हैं [$\frac{५१२}{१} \times \frac{७}{४}$ = ५१२ × (२ − $\frac{१}{४}$) = ८९६]। फिर इन प्रथम निषेकोंको गुणहानि प्रमाण प्रथम निषेकोंमेंसे कम करनेपर एक चतुर्थ भाग अधिक गुणहानिके तीन चतुर्थ भाग मात्र प्रथम निषेक शेष रहते हैं क्योंकि, गुणहानिमें गुणहानिके कुछ कम एक चतुर्थ भागका अभाव है। उनकी यह संदृष्टि स्थापित करनी चाहिये— प्रथम गुणहानिका द्रव्य ३२०० उसे प्रथम निषेकके प्रमाणसे विभाजित करनेपर वह इस रूपमें प्राप्त होता है— ५१२, ५१२, ५१२, ५१२, ५१२, ५१२, १२८। प्रथम गुणहानिके द्रव्यको प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर इतना होता है।

शेष गुणहानियोंके द्रव्यको भी अपने अपने [प्रथम] निषेकके प्रमाणसे करनेपर इसी प्रकार ही होता है। इसको (सब गुणहानियोंके द्रव्यको) मिलानेपर वह सब अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे हीन प्रथम गुणहानिका द्रव्य मात्र होता है (११०० + ८०० + ५०० + ९०० + १०० = ३१ = ३२ − १००)। पुनः इसमें अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको मिलानेपर प्रथम गुणहानिके द्रव्यके बराबर होता है। ३१०० + १०० = ३२०० प्रथम

---

[1] प्रतिषु -दव्वेण य पढमगुणहाणिदव्वमेत्तं इति पाठः।

गुणहाणिदव्वमेत्तं होदि। चरिमगुणहाणिदव्वपक्खेवो किमट्ठं कीरदे ? संपुण्णदिवड्ढगुणहाणि उप्पायणट्ठं। तं पि कुदो ? अव्वुप्पण्णसाहुजणवुप्पायणट्ठं[1]। तस्स संदिट्ठी। ५१२। ५१२। ५१२। ५१२। ५१२। ५१२। १२८। पढमगुणहाणितिण्णिचउब्भागमेत्तपढमणिसेगेसु बिदियादिगुणहाणिसमुप्पण्णगुणहाणितिण्णिचदुब्भागमेत्तपढमणिसेगेसु पक्खित्तेसु दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपढमणिसेया होंति, अवणिदपढमणिसेयद्धत्तादो। दिवड्ढगुणहाणीए पमाणं संदिट्ठीए बारस |१२|। एदेण पढमणिसेगे गुणिदे समयपबद्धपमाणमेत्तियं होदि |६१४४|।

खेत्तदो पढमणिसेगविक्खंभं दिवड्ढगुणहाणिआयदखेत्तं होदि |▭|। जेण पढम-

गुणहानिका द्रव्य।

शंका—अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका प्रक्षेप किसलिये किया जाता है ?

समाधान—सम्पूर्ण डेढ़ गुणहानिको उत्पन्न करानेके लिये उसका प्रक्षेप किया गया है।

शंका—वह भी किसलिये ?

समाधान—अव्युत्पन्न साधु जनोंको व्युत्पन्न करानेके लिये वैसा किया गया है।

उसकी संदृष्टि— ५१२ + ५१२ + ५१२ + ५१२ + ५१२ + ५१२ + १२८ = ३२००।

प्रथम गुणहानिके तीन चतुर्थ भाग मात्र प्रथम निषेकोंमें द्वितीयादि गुणहानियोंके प्रथम गुणहानि रूपसे उत्पन्न हुए तीन चतुर्थ भाग मात्र प्रथम निषेकोंके मिलानेपर डेढ़ गुणहानि प्रमाण प्रथम निषेक होते हैं, क्योंकि, प्रथम निषेकका अर्ध भाग इसमें कम किया गया है। संदृष्टिमें डेढ़ गुणहानिका प्रमाण बारह १२ है। इससे प्रथम निषेकको गुणित करनेपर समयप्रबद्धका प्रमाण इतना होता है— ५१२ × १२ = ६१४४।

विशेषार्थ—प्रथम गुणहानिके द्रव्यमें सवा छह प्रथम निषेक प्राप्त होते हैं। द्वितीयादि सब गुणहानियोंके द्रव्यमें अन्तिम गुणहानिका द्रव्य दूसरी बार मिलानेपर भी इतने ही प्रथम निषेक प्राप्त होते हैं। इनको जोड़ने पर साधिक डेढ़ गुणहानि प्रमाण प्रथम निषेक आते हैं। पर यहा आधा निषेक कम कर दिया है, इसलिये सब निषेक डेढ़ गुणहानि प्रमाण बतलाये हैं। इस हिसाबसे समयप्रबद्धका कुल द्रव्य ६१४४ होता है, क्योंकि, ५१२ को १२ से गुणा करनेपर इतना ही द्रव्य प्राप्त होता है।

क्षेत्रकी अपेक्षा प्रथम निषेकोंका विस्तार डेढ़ गुणहानि प्रमाण आयत क्षेत्र होता है।

---

१ प्रतिषु 'जणमुप्पायणट्ठं' इति पाठ.।

णिसेगपमाणेण कदे एत्तियं होदि तेण सव्वदव्वे पढमणिसेगेण अवहिरिज्जमाणे दिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि त्ति वुत्तं ।

बिदियणिसेयपमाणेण सव्वदव्वं सादिरेयदिवड्ढगुणहाणीए अवहिरिज्जदि । तं जहा — पुव्वुत्तदिवड्ढखेत्तम्मि एगगोवुच्छविसेसविक्खंभ-दिवड्ढगुणहाणिदीहरफालिं[1] तच्छेदूण अवणिदे सेसखेत्तं बिदियगोवुच्छविक्खंभ-दिवड्ढगुणहाणिदीहरं होदूण चेट्ठदि । संपहि अवणिदफालिं पयदगोवुच्छपमाणेण कीरमाणे एगं पि पयदगोवुच्छं ण होदि, गुणहाणिअद्धरूवूणमेत्तगोवुच्छविसेसाणमभावादो । तेणेदस्स विगलरूवमाधारं होदि । तस्स पमाणमाणिज्जदे । तं जहा — रूवूणणिसेगभागहारमेत्तगोवुच्छविसेसाणं जदि विरलणाए एगरूवपक्खेवो लब्भदि तो दिवड्ढगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसाणं किं लभामो त्ति सरिसमवणिय रूवूणणिसेगभागहारेण दिवड्ढगुणहाणीए ओवट्टिदाए एगरूवस्स सादिरेयतिण्णिचदुब्भागा आगच्छंति । ते दिवड्ढगुणहाणीए पक्खिविय सव्वदव्वे भागे हिदे बिदियणिसेगो आगच्छदि । तेण सादिरेयदिवड्ढगुणहाणीए अवहिरिज्जदि त्ति सिद्धं ।

अतः प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर सब द्रव्य इतना होता है अत एव सब द्रव्यको प्रथम निषेकसे अपहृत करनेपर डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है, ऐसा कहा है ।

द्वितीय निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्य साधिक डेढ़ गुणहानि द्वारा अपहृत होता है । यथा— पूर्वोक्त डेढ़ गुणहानि क्षेत्रमेंसे एक गोपुच्छविशेष प्रमाण विस्तारवाली और डेढ़ गुणहानि प्रमाण दीर्घ फालि रूप क्षेत्रको छील कर अलग करनेपर शेष क्षेत्र द्वितीय गोपुच्छ मात्र विस्तारवाला व डेढ़ गुणहानि प्रमाण दीर्घ रह जाता है । अब अलग की हुई फालिको प्रकृत गोपुच्छ (द्वितीय निषेक) के प्रमाणसे करनेपर एक भी प्रकृत गोपुच्छ नहीं होता क्योंकि, गुणहानिके आधेमेंसे एक कम गोपुच्छविशेषोंका वहां अभाव है । इसलिये इसका विकल रूप आधार होता है । अब उसका प्रमाण लाते हैं । यथा— एक कम निषेकभागहार प्रमाण गोपुच्छविशेषोंका विरलन करनेपर यदि डेढ़ गुणहानिमें एक अंकका प्रक्षेप प्राप्त होता है तो डेढ़ गुणहानि मात्र गोपुच्छविशेषोंका विरलन करनेपर क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार समान राशिका अपनयन कर एक कम निषेकभागहारका डेढ़ गुणहानिमें भाग देनेपर एक अंकका साधिक तीन बटे चार भाग आता है । उसे डेढ़ गुणहानिमें मिलाकर उसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय निषेक आते हैं । इसीलिये द्वितीय निषेककी अपेक्षा सब द्रव्य साधिक डेढ़ गुणहानिसे अपहृत होता है यह सिद्ध होता है ।

---

१ प्रतिषु 'दीहरपाली' अप्रतौ 'दीहरप्पाली' इति पाठः ।

तदियणिसेयपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे सादिरेयदिवड्ढगुणहाणीए अवहिरिज्जदि । एत्थ वि पुव्वक्खेत्तम्मि दोफालीओ तच्छिय अवणिदे सेसं पयदगोवुच्छविक्खंभं दिवड्ढगुणहाणिआयाम होदूण चेट्ठदि । अवणिददोफालीसु दोपक्खेवरूवाणि ण वुप्पज्जंति, दुगुणफालिसलागमेत्तरूवेहि ऊणगुणहाणीए अभावादो । तेण सादिरेयदिवड्ढरूवाणि पक्खेवो होदि । एवं जत्तिय जत्तियगोवुच्छाओ उवरि चडिय भागहारो इच्छदि दिवड्ढ तत्तिय-तत्तियमेत्तफालीओ काऊण तेरासियकमेण पक्खेवरूवसाहणं कायव्वं ।

संपहि एगगुणहाणिअद्धमेत्तं चडिय ट्ठिदणिसेयपमाणेण सव्वदव्व दोगुणहाणिकालेण अवहिरिज्जदि । त जहा—

पढमणिसेगविक्खंभं दिवड्ढगुणहाणिआयामं खेत्त ठविय विक्खंभेण चत्तारिफालीओ करिय तत्थ चउत्थफालिमायामेण तिण्णिफालीओ काऊण

विशेषार्थ—कुल द्रव्य ६१४४ है । इसमें द्वितीय निषेक ४८० का भाग देनेपर १२$\frac{४}{५}$ आते हैं । यही कारण है कि यहां सब द्रव्यमें द्वितीय निषेकका भाग देनेपर वह साधिक डेढ़ गुणहानिसे अपहृत होता है, यह सिद्ध किया है ।

तृतीय निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत करनेपर वह साधिक डेढ़ गुणहानिसे अपहृत होता है । यहां भी पूर्व क्षेत्रमेंसे दो फालियोंको छील करके अलग करनेपर शेष क्षेत्र प्रकृत गोपुच्छ (तृतीय निषेक) प्रमाण विस्तृत और डेढ़ गुणहानि आयत होकर स्थित रहता है । अलग की हुई दो फालियोंमें दो प्रक्षेप अंक नहीं उत्पन्न होते हैं, क्योंकि, दुगुणी फालिशलाका मात्र रूपोंसे अर्थात् चार गोपुच्छविशेषोंसे रहित गुणहानिका यहां अभाव है । इस कारण यहां साधिक डेढ़ अंक प्रमाण प्रक्षेप है ।

विशेषार्थ—तृतीय निषेकका प्रमाण ४४८ है । इसका ६१४४ में भाग देनेपर १३$\frac{५}{७}$ आते हैं । इसीसे यहां सब द्रव्यको तृतीय निषेकके प्रमाणसे करनेपर वह साधिक डेढ़ गुणहानिसे अपहृत होता है, ऐसा कहा है ।

इस प्रकार जितनी जितनी गोपुच्छायें ऊपर चढ़कर भागहार इच्छित हो, डेढ़ गुणहानि प्रमाण उतनी उतनी फालियोंको करके त्रैराशिक क्रमसे प्रक्षेप अंकोंकी सिद्धि करनी चाहिये ।

अब एक गुणहानिका आधा भाग मात्र स्थान आगे जाकर स्थित निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत करनेपर वह दो गुणहानियोंके कालसे अपहृत होता है । यथा— प्रथम निषेक प्रमाण चौड़े और डेढ़ गुणहानि प्रमाण लम्बे क्षेत्रको स्थापित कर विस्तारकी अपेक्षा चार फालियां करके उनमेंसे चतुर्थ फालिकी आयामकी ओरसे तीन

विक्खंभं विक्खंभे ओएदूण[1] तिण्णि वि फालीयो पासे ठविदे पयदगोवुच्छविक्खंभ दोगुणहाणि आयदखेत्तं होदि। तेण दोगुणहाणिट्ठाणंतरेण अवहिरिज्जदि त्ति वुत्तं।

अथवा तेरासियकमेण पक्खेवरूवाणि भणिस्सामो। तं जहा— णिसेगभागहारतिण्णि चदुब्भागमेत्तगोवुच्छविसेसेसु जदि एगो पयदणिसेगो लब्भदि तो णिसेयभागहारचदुब्भागमेत्त-गोवुच्छविसेसविक्खंभ दिवड्ढगुणहाणिआयदखेत्तम्मि किं लभामो त्ति सरिसमवणिय पमाणेण भागे हिदे गुणहाणिअद्धमेत्तपक्खेवरूवाणि लब्भंति। ताणि दिवड्ढगुणहाणिम्हि पक्खित्ते दोगुणहाणीओ होंति |३२।१२।१।१२।४।१६|। अथवा णिसेयभागहारतिण्णि-चदुब्भागमेत्तगोवुच्छविसेसु जदि एगा पयदगोवुच्छा लब्भदि तो दिवड्ढगुणहाणिगुणिदणिसेय-भागहारमेत्तगोवुच्छविसेसु किं लभामो त्ति सरिसमवणिय पमाणेणिच्छाए ओवट्टिदाए दोगुण-हाणीयो लब्भंति |३२।१२।३।१।३२।१२।१२| लद्ध |१६|[2]। एदेण सव्वदव्वे

फालियां करके विस्तारको विस्तारमें मिलाकर तीनों फालियोंको पार्श्व भागमें स्थापित करनेपर प्रकृत गोपुच्छ प्रमाण विस्तारवाला और दो गुणहानि प्रमाण आयत क्षेत्र होता है। इस कारण प्रकृत निषेककी अपेक्षा दोगुणहानिस्थानान्तरकालसे सब द्रव्य अपहृत होता है ऐसा कहा है।

अथवा त्रैराशिक क्रमसे प्रक्षेप अंकोंको कहते हैं। यथा— निषेकभागहारके तीन चतुर्थ भाग मात्र गोपुच्छविशेषोंमें यदि एक प्रकृत निषेक प्राप्त होता है तो निषेकभाग हारके एक चतुर्थ भाग मात्र गोपुच्छविशेष विस्तारवाले और डेढ़ गुणहानि प्रमाण आयत क्षेत्रमें क्या प्राप्त होगा इस प्रकार सदृशका अपनयन करके प्रमाण राशिका भाग देनेपर गुणहानिके अर्ध भाग मात्र प्रक्षेप अंक प्राप्त होते हैं। उनको डेढ़ गुणहानिमें मिलानेपर दो गुणहानियां होती हैं। $\frac{x \frac{3}{4} x}{1}$ = ४ प्रक्षेप अंक, १२ + ४ = १६ दो गुणहानि।

अथवा निषेकभागहारके तीन चतुर्थ भाग मात्र गोपुच्छविशेषोंमें यदि एक प्रकृत गोपुच्छा (प्रकृत निषेक) प्राप्त होती है तो डेढ़गुणहानिगुणित निषेकभागहार मात्र गोपुच्छविशेषोंमें कितनी प्रकृत गोपुच्छायें प्राप्त होंगी इस प्रकार सदृशका अप-नयन कर प्रमाणसे इच्छाको अपवर्तित करनेपर दो गुणहानियां प्राप्त होती हैं।

गो वि. ३२ नि भा १६ इसका तीन चतुर्थांश १२, $\frac{3 \times 1 \times 1}{}$ = १६,

लब्ध १६ होता है। इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर इच्छित निषेक आता है—

---

१ अप्रतौ ओएदूण इति पाठः। २ अप्रतौ |१६।८।१६| इति पाठः।

भागे हिदे इच्छिदणिसेगो आगच्छदि | ३८४ |। उवरि जाणिदूण भागहारो वत्तव्वो।

विदियगुणहाणिपढमणिसेयपमाणेण सव्वदव्वं तिण्णिगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि। तं जहा— पढमगुणहाणि-पढमणिसेयादो विदियगुणहाणि-पढमणिसेगो अद्धं होदि त्ति दिवड्ढखेत्तं ठविय मज्झम्मि दोफालीयो करिय [१] एगफालीए सीसे बिदियफालिं संधिय ठविदे तिण्णिगुणहाणिआयाम-विदियगुणहाणिपढमणिसेगविक्खंभखेत्तं होदि। अधवा एगगुणहाणिं चडिदो त्ति एगरूवं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा दिवड्ढं गुणिदे तिण्णिगुणहाणीओ होंति | २४ |। एदेहि सव्वदव्वे भागे हिदे विदियगुणहाणि-पढमणिसेगो लब्भदि | २५६ |। उवरि जाणिय वत्तव्वं।

तदियगुणहाणिपढमणिसेगेण सव्वदव्वं छगुणहाणिकालेण अवहिरिज्जदि, विदियगुणहाणिपढमणिसेयविक्खंभं तिण्णिगुणहाणिआयदखेत्तं मज्झम्मि दोफालीयो करिय सीसे[२] संधिदे

६१४४ ÷ १६ = ३८४। इसी प्रकार आगे जानकर भागहार कहना चाहिये।

द्वितीय गुणहानिके प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्य तीन गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। यथा— प्रथम गुणहानिके प्रथम निषेकसे द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेक आधा है। अत एव डेढ़ गुणहानि मात्र क्षेत्रको अर्थात् डेढ़ गुणहानि प्रमाण आयामवाले व प्रथम गुणहानिके प्रथम निषेक प्रमाण विस्तारवाले क्षेत्रको स्थापित कर मध्यमें दो फालिया करके (संदृष्टि मूलमें देखिये) एक फालिके शीर्षपर द्वितीय फालिको जोड़कर स्थापित करनेपर तीन गुणहानि आयत और द्वितीय गुणहानिके प्रथम निषेक प्रमाण विस्तृत क्षेत्र होता है।

अथवा एक गुणहानिके आगे गये हैं अत एक अंकका विरलन कर दुगुणा करके परस्पर गुणा करनेपर जो प्राप्त हो उससे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर तीन गुणहानिया होती हैं (१ × २ × १२ = २४)। इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेक प्राप्त होता है— ६१४४ ÷ २४ = २५६। आगे जानकर कहना चाहिये।

तृतीय गुणहानिके प्रथम निषेकसे सब द्रव्य छह गुणहानियोंके कालसे अपहृत होता है, क्योंकि, द्वितीय गुणहानिके प्रथम निषेक प्रमाण विस्तारवाले और तीन गुणहानि आयत क्षेत्रकी मध्यमें दो फालिया करके शीर्षमें जोड़ देनेपर छह गुणहानि मात्र

---

१ प्रतिषु [ ] एवंविधात्र संदृष्टि।

२ अ-काप्रत्योः 'सीरसे', आप्रतौ 'सरिसे' इति पाठः।

छगुणहाणिमेत्तायामसमुप्पत्तीदो [संदृष्टि] । अथवा दिवड्ढखेत्तं विक्खंभेण चत्तारि फालीओ कादूण एगफालीए उवरि सेसतिण्णिफालीओ कमेण संधिय ठविदे छगुणहाणिआयदं खेत्तं होदि। अथवा दोगुणहाणीओ चडिदो त्ति दोरूवे विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कादूण दिवड्ढ गुणहाणिं गुणिदे छग्गुणहाणीओ होंति [४८]। एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे तदियगुणहाणि-पढमणिसेगो लब्भदि [१२८]। एवं जत्तिय-जत्तियगुणहाणीओ उवरि चडिदूण भागहारो इच्छिज्जदि तत्तिय-तत्तियमेत्तगुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा दिवड्ढ गुणिदे गुणगाररूवद्धमेत्ततिण्णिगुणहाणीओ लब्भंति। ताओ तदित्थणिसेगस्स भागहारो होदि। अथवा अण्णोण्णब्भत्थरासिणा दिवड्ढखेत्तं विक्खंभेण खंडिय एगखंडस्स सिरे सेसखंडेसु

आयामकी उत्पत्ति होती है (संदृष्टि मूलमें देखिये)।

अथवा डेढ़ गुणहानि मात्र क्षेत्रकी विस्तारकी अपेक्षा चार फालियां करके एक फालिके ऊपर शेष तीन फालियोंको क्रमसे जोड़ करके स्थापित करनेपर छह गुणहानि आयत क्षेत्र होता है।

अथवा दो गुणहानियां आगे गये हैं अतः दो संख्याका विरलन करके दुगुणा कर परस्पर गुणा करनेपर जो प्राप्त हो उससे डेढ़ गुणहानियोंको गुणित करनेपर छह गुणहानियां प्राप्त होती हैं— १ × २ = २, २ × २ × १२ = ४८। इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर तृतीय गुणहानिका प्रथम निषेक आता है— ६१४४ ÷ ४८ = १२८।

इस प्रकार जितनी जितनी गुणहानियां आगे जाकर भागहार इच्छित हो उतनी उतनी गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके परस्पर गुणा करनेपर जो राशि प्राप्त हो उससे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर गुणकारसंख्याके आधे अंकों प्रमाण तीन गुणहानियां प्राप्त होती हैं। वे वहांके निषेकका भागहार होती हैं। [उदाहरणार्थ चतुर्थ गुणहानिके प्रथम निषेकका द्रव्य लाना है इसलिये—

२ × २ × २ = ८ × १ = १२ प्रमाण १२ गुणहानि या गुणकार ८ का आधा ४ को तीन गुणहानि २४ से गुणा करनेपर १२ गुणहानिकी ९६ संख्या लब्ध आती है। इसका सब द्रव्य ६१४४ में भाग देनेपर चतुर्थ गुणहानिका प्रथम निषेक ६४ आता है।]

अथवा अन्योन्याभ्यस्त राशिसे डेढ़ गुणहानि प्रमाण क्षेत्रको विस्तारसे खण्डित कर एक खण्डके सिरपर शेष खण्डोंको परिपाटीसे जोड़नेपर इच्छित गुणहानिके प्रथम

---

१ प्रतिषु [संदृष्टि] एवंविधात्र संदृष्टिः।

परिवाडीए सधिदेसु इच्छिदगुणहाणिपढमणिसेगविक्खंभं अण्णोण्णब्भत्थरासिअद्धमेत्ततिण्णि-गुणहाणिआयामं खेत्तं होदि । एवं जाणिदूण णेदव्वं जाव कम्मट्ठिदिचरिमणिसेगो त्ति । एवं दिवड्ढगुणहाणिभागहारो गुणहाणिं पडि दुगुण दुगुणक्कमेण वड्ढमाणो कम्हि पलिदोवमपमाणं पावेदि त्ति वुत्ते पलिदोवम-वे-तिभागणाणागुणहाणिसलागाणमद्धछेदणयमेत्तगुणहाणीयो उवरि चडिदे होदि, दिवड्ढगुणहाणिआगमणट्ठं पलिदोवमस्स ठविदभागहारेण पलिदोवम-वे-तिभागणाणा-गुणहाणिसलागाणं समाणत्तुवलभादो । एदेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे पलिदोवममेत्तकालेण अवहिरिज्जदि । एवं पलिदोवमस्स दुभाग-तिभाग चदुब्भागादिभागहारा सधिदव्वा । जदि वि सछेदमेदमद्धाणमुप्पज्जदि तो वि बालजणवुप्पायणट्ठमेदं वत्तव्वं । तदुवरिमगुणहाणिपढम-णिसेगेण सव्वदव्वं दोपलिदोवमट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । एवं संखेज्जरूवच्छेदणय-मेत्तगुणहाणीओ उवरि चडिदगुणहाणिपढमणिसेयपमाणेण सव्वदव्वं कम्मट्ठिदिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । एदस्सुवरि जहण्णपरित्तासंखेज्जच्छेदणयमेत्तगुणहाणीयो चडिदट्ठिदगुणहाणीए

निषेक प्रमाण विस्तृत और अन्योन्याभ्यस्त राशिके अर्ध भाग मात्र तीन गुणहानि आयत क्षेत्र होता है । इस प्रकार जानकर कर्मस्थितिके अन्तिम निषेक तक ले जाना चाहिये ।

शंका—इस प्रकार डेढ़ गुणहानि प्रमाण भागहार प्रत्येक गुणहानिके प्रति उत्तरोत्तर दूना दूना होता हुआ किस स्थानमें पल्योपमके प्रमाणको प्राप्त होता है ?

समाधान—इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि पल्योपमके दो त्रिभाग मात्र नाना-गुणहानिशलाकाओंके अर्धच्छेदोंके बराबर गुणहानियां आगे जानेपर वह पल्योपमके प्रमाणको प्राप्त होता है, क्योंकि, डेढ़ गुणहानियोंके लानेके लिये पल्योपमके स्थापित भागहारके साथ पल्योपमकी दो त्रिभाग मात्र नानागुणहानिशलाकाओंकी समानता पायी जाती है ।

इससे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह पल्योपम मात्र कालसे अपहृत होता है । इसी प्रकार पल्योपमके द्वितीय भाग, तृतीय भाग व चतुर्थ भाग आदि रूप भाग-हारोंको सिद्ध कर लेना चाहिये । यद्यपि यह सछेद स्थान उत्पन्न होता है तो भी इसे बाल-जनोंके व्युत्पादनार्थ कहना चाहिये ।

उससे आगेकी गुणहानिके प्रथम निषेकसे सब द्रव्य दो पल्योपमस्थानान्तर-कालसे अपहृत होता है । इस प्रकार संख्यात अंकोंके अर्धच्छेद मात्र गुणहानियां आगे जाकर प्राप्त हुई गुणहानिके प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्य कर्मस्थितिस्थानान्तर-कालसे अपहृत होता है । इससे आगे जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेद मात्र गुणहानियां

---

१ अप्रतौ 'बालट्ठुण' इति पाठः । २ प्रतिषु 'दो वि पलिदोवम' इति पाठः ।

पढमणिसेगेण सव्वदव्वं असंखेज्जकम्मट्ठिदिकालेण अवहिरिज्जदि । एदम्हादो उवरिमसव्वणिसेगाणं असंखेज्जकम्मट्ठिदीओ भागहारो होदि । एवं गंतूण कम्मट्ठिदिचरिमणिसेगपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि त्ति वुत्ते अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण असंखेज्जओसप्पिणि-उस्सप्पिणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि, अण्णोण्णब्भत्थरासिणा असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलेण दिवड्ढगुणहाणिअसंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलं गुणिय सव्वदव्वे भागे हिदे चरिमणिसेगुप्पत्तीदो । एत्थ भागहारसंदिट्ठी एसा |७६८| । एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे चरिमणिसेगो आगच्छदि । एत्थ सव्वदव्वपमाणमेदं |६१४४| । एसा असब्भूदपरूवणा, कदजुम्मासु गुणहाणीसु णिसेगट्ठिदीसु च अट्ठण्णं चरिमणिसेगमसाणुववत्तीदो, अद्धद्धेण गदगुणहाणिदव्वेसु दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपढमणिसेगाणमसंभवादो च ।

संपहि फुडत्थपरूवणाए कीरमाणाए—

१४४	१४४	२१६	३२	२५६	२५६	१६	१६ ५६ ८ १२० १५२ १९४ २१६ २५६	१६	२५६	१६	२५६ ३०८ १७६ १४४ ११२ ८० ४८ ०
२५६	२५६	२५६	२५६	१२८	२५६	१२८		२५६		२५६	

भागे जाकर स्थित हुए गुणहानिके प्रथम निषेकसे सब द्रव्य असंख्यात कर्मस्थितिकालसे अपहृत होता है । इससे आगे सब निषेकोंका असंख्यात कर्मस्थितियां भागहार होती हैं । इस प्रकार जाकर कर्मस्थितिके अन्तिम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालसे अपहृत होता है ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि वह अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है क्योंकि, पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण अन्योन्याभ्यस्त राशिसे पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल मात्र डेढ़ गुणहानिको गुणित करके सब द्रव्यमें भाग देनेपर अन्तिम निषेक उत्पन्न होता है । यहां भागहारकी संदृष्टि यह है— ७६८ । इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर अन्तिम निषेक आता है । यहां सब द्रव्यका प्रमाण यह है— ६१४४ । यह असद्भूतप्ररूपणा है क्योंकि एक तो कृतयुग्म रूप गुणहानियों और निषेकस्थितियोंमें आठ संख्या प्रमाण अन्तिम निषेक बन नहीं सकता । दूसरे प्रत्येक गुणहानिका द्रव्य उत्तरोत्तर आधा आधा होता गया है अतः सब द्रव्यमें डेढ़ गुणहानि मात्र प्रथम निषेकोंकी सम्भावना भी नहीं है ।

अब स्पष्ट अर्थकी प्ररूपणा करते समय इन चार प्रकारोंसे (संदृष्टि मूलमें

एदेहि चउहि पयारेहि पढमगुणहाणिखेत्त फाडिय[1] दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपढमणिसेगा उप्पादेदव्वा ।

सोलसय छप्पण्णं तत्तो गोवुच्छविसेसएण अहियाणि ।
जाव दु बे-सद-सोलस तत्तो य बि-सद छप्पण्ण ॥ १२ ॥
अडदाल सीदि बारसअहियसद तह सद च चोद्दाल ।
छावत्तरि सदमेयं अट्ठुत्तर-बिसद-छप्पण्ण ॥ १३ ॥

एदाहि दोहि गाहाहि तत्थ चउत्थखेत्तखंडपमाणं जाणिदव्वं । एदेण कमेण सव्वदव्वे पढमणिसेयपमाणेण कदे सादिरेयदिवड्ढगुणहाणीओ होति, चरिमगुणहाणिदव्व पक्खिविय उप्पाइदत्तादो । त चेदं | १२ / १ / २ | ।

संपाध एत्थ चरिमगुणहाणिदव्वस्स अवणयणक्कमो वुच्चदे । तं जहा— किंचूण-ण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्तचरिमणिसेगाण जदि एगो पढमणिसेगो लब्भदि तो चरिमगुणहाणि-दव्वम्मि किंचूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेगम्मि किं लभामो त्ति | ९ | ५१२ / ० | १ | ९ | १०० / ९ | सरिसमवणिय किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासिणा एगरूवस्स असंखेज्जेहि भागेहि[2] ऊणदिवड्ढ ओ-

---

देखिये) प्रथम गुणहानिके क्षेत्रको फाड़ कर डेढ़ गुणहानि मात्र प्रथम निषेकोंको उत्पन्न कराना चाहिये ।

सोलह, छप्पन, इससे आगे दो सौ सोलह प्राप्त होने तक एक गोपुच्छविशेष (३२) से उत्तरोत्तर अधिक, इसके पश्चात् दो सौ छप्पन तथा अड़तालीस, अस्सी, एक सौ बारह, एक सौ चवालीस, एक सौ छयत्तर, दो सौ आठ और दो सौ छप्पन, ये चतुर्थ क्षेत्रके खण्डोंका प्रमाण है ॥ १२-१३ ॥

इन दो गाथाओं द्वारा यहां चतुर्थ क्षेत्रके खण्डोका प्रमाण जानना चाहिये । इस क्रमसे सब द्रव्यको प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर साधिक डेढ़ गुणहानियां होती हैं, क्योंकि, यह द्रव्य अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको मिलाकर उत्पन्न कराया गया है । साधिक डेढ़ गुणहानिका प्रमाण यह है— १२½ ।

अब यहां अन्तिम गुणहानिके द्रव्यके अपनयनक्रमको कहते हैं । यथा—कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि मात्र अन्तिम निषेकोंका यदि एक प्रथम निषेक प्राप्त होता है तो अन्तिम गुणहानिके द्रव्यके कुछ कम डेढ़ गुणहानि मात्र अन्तिम निषेकोंमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार सदृशका अपनयन करके कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशिसे एकका असंख्यातवा भाग कम डेढ़ गुणहानिको भाजित करनेपर एकका असंख्यातवा भाग

---

१ प्रतिषु 'पादिय' इति पाठ ।   २ अप्रतौ 'भागे हिदे ऊण' इति पाठ ।

घट्टिदे एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि, दिवड्ढगुणहाणीहिंतो मोहणीयअण्णोण्णब्भत्थरासीए असंखेज्जगुणत्तादो। एद पढमणिसेगस्स असंखेज्जदिभागं पढमणिसेगद्धम्मि अवणिदे मोहणीयस्स सादिरेयदिवड्ढगुणहाणिमेत्तपढमणिसेया होंति। एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो अवणिय पमाणो संदिट्ठीए एसो $\frac{२५}{१२८}$। अवणिदे सेसमेद $\frac{१०७५}{१२८}$।

णाणावरणीयपढमणिसेयपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे किंचूणदिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि। तं कधं? सण्णिपंचिंदियपज्जत्तसव्वसंकिलिट्ठउक्कस्सजोगम्मि ट्ठाइदी तीस सागरोवमकोडाकोडिट्ठिदिं बंधमाणो तम्हि समए आगदकम्मपरमाणूण मद्धं चरिमगुणहाणिदव्वेणब्भहियं पढमगुणहाणीए णिसिंचदि। विदियादिगुणहाणीसु चरिमगुणहाणिदव्वेणूणमद्धं णिसिंचदि। तेण विदियादिगुणहाणिदव्वम्मि चरिमगुणहाणिदव्वे पक्खित्ते पढमगुणहाणिदव्वपमाण होदि।

जाता है क्योंकि, डेढ़ गुणहानिसे मोहनीयकी अन्योन्याभ्यस्त राशि असंख्यातगुणी है। इस प्रथम निषेकके असंख्यातवें भागको प्रथम निषेकके अर्ध भागमेंसे कम कर देनेपर मोहनीयके साधिक डेढ़ गुणहानि मात्र प्रथम निषेक होते हैं। कम किया गया एकका असंख्यातवां भाग संदृष्टिमें यह है- $\frac{२५}{१२८}$। इसको सार्ध डेढ़ गुणहानिमेंसे कम करनेपर शेष यह रहता है- $\frac{१०७५}{१२८}$।

उदाहरण— कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि $\frac{५१२}{९}$, अन्तिम गुणहानिकी अपेक्षा कुछ कम डेढ़ गुणहानि $\frac{१००}{९}$,

$\frac{१०० \times ९}{९} + \frac{५१२ \times ९}{९} = \frac{१०० \times ९}{९} \times \frac{९}{५१२ \times ९} = \frac{१००}{५१२} = \frac{२५}{१२८}$।

$\frac{१}{२} - \frac{२५}{१२८} = \frac{३९}{१२८}$, $\frac{१२}{१} + \frac{३९}{१२८} = \frac{१५७५}{१२८}$ साधिक डेढ़ गुणहानि। सब द्रव्यमें इतने प्रथम निषेक होते हैं।

ज्ञानावरणीयके प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर कुछ कम डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। वह कैसे? संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त सर्वसंक्लिष्ट व उत्कृष्ट योग युक्त मिथ्यादृष्टि जीव तीस कोड़ाकोडि सागरोपम प्रमाण स्थितिको बांधता हुआ उस समयमें आये हुए कर्मपरमाणुओंमेंसे अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे अधिक अर्ध भागको प्रथम गुणहानिमें देता है। द्वितीयादिक गुणहानियोंमें अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे हीन अर्ध भागको देता है। इसीलिये द्वितीयादिक गुणहानियोंके द्रव्यमें अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको मिलानेपर प्रथम गुणहानिके द्रव्यका प्रमाण होता है।

---

१ प्रतिषु 'सादिरेयाणि दिवड्ढ' इति पाठः।

संपधि पढमगुणहाणिदव्वे पढमणिसेयपमाणेण कीरमाणे गुणहाणितिण्णिचदुब्भाग-मेत्तपढमणिसेगा पढमणिसेगचदुब्भागो च लब्भदि । तस्स संदिट्ठि [६ $\frac{१}{४}$] । विदियागुणहाणिदव्वं पि पढमणिसेयपमाणेण कदे एत्तियं चेव होदि [६ $\frac{१}{४}$], पक्खित्तचरिमगुणहाणिदव्वत्तादो । पुणो दो वि तिण्णिचदुब्भागेसु मेलाविदेसु दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपढमणिसेया होंति [५१२ | १२]। दो वि चदुब्भागम्मि मेलाविदे पढमणिसेयस्स अद्धं होदि [५१२ | $\frac{१}{२}$]। एदं[3] तत्थ पक्खित्ते एत्तियं होदि [५१२ | १२ $\frac{१}{२}$] ।

संपधि चरिमगुणहाणिणिसेगेसु सव्वत्थ चरिमणिसेगे अवणिद गुणहाणिमेत्ता चरिमणिसेगा लब्भंति [९ | ८] । पुणो रूवूणगुणहाणिसकलणमेत्ता गोवुच्छविसेसा अहिया अत्थि । ते वि चरिमणिसेयपमाणेण कस्सामो । त जहा— एगं गोवुच्छविसेसं घेत्तूण रूवूणगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसेसु पक्खित्तेसु गुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसा होंति । एवं सव्वेसिं मूलग-

---

अब प्रथम गुणहानिके द्रव्यको प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर गुणहानिके तीन चतुर्थ भाग ($\frac{८ \times ३}{४}$ = ६) मात्र प्रथम निषेक और प्रथम निषेकका चतुर्थ भाग ($\frac{५१२}{४}$ = १२८) प्राप्त होता है । उसकी संदृष्टि ६¼ है। द्वितीयादि गुणहानियोंके द्रव्यको भी प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर इतना ही होता है— ६¼, क्योंकि, इसमें अन्तिम गुणहानिका द्रव्य मिलाया गया है। पुन दोनों ही तीन चतुर्थ भागोंको मिलानेपर डेढ़ गुणहानि मात्र प्रथम निषेक होते हैं—५१२ × १२; और दोनों ही चतुर्थ भागोंको मिलानेपर प्रथम निषेकका अर्ध भाग होता है— ५१२ × ½। इस अर्ध भागको डेढ़ गुण हानि मात्र प्रथम निषेकोंमें मिलानेपर इतना होता है— ५१२ × $\frac{२५}{२}$ ।

अब अन्तिम गुणहानिके निषेकोंमेंसे सर्वत्र अन्तिम निषेकको कम करनेपर गुणहानि मात्र अन्तिम निषेक प्राप्त होते हैं— ९ × ८। पुनः एक कम गुणहानिके सकलन मात्र [८ - १ = ७, इसका सकलन $\frac{७ + १ \times ७}{२}$ = २८] गोपुच्छविशेष अधिक हैं। उनको भी अन्तिम निषेकके प्रमाणसे करते हैं। यथा- एक गोपुच्छविशेषको ग्रहण कर उसमें एक कम गुणहानि मात्र गोपुच्छविशेषोंको मिलानेपर गुणहानि मात्र गोपुच्छविशेष होते हैं। इस प्रकार सबका मूल और अग्रको जोड कर समीकरण करना चाहिये। इस

---

१ अप्रतौ 'कीरमाणे गूतिण्णि' आ-काप्रत्यो 'कीरमाणे गूणतिण्णा' इति पाठ

२ अप्रतौ 'पुणो वि दो वि' इति पाठ । ३ प्रतिषु 'एव' इति पाठ ।

समासेण समकरणं कायव्वं। एवं कदे रूवूणगुणहाणिअद्धमेत्ता गोवुच्छविसेसा चत्तारि |८|८|८|४|। गुणहाणिअद्धमेत्तगोवुच्छविसेसेसु दुरूवूणगुणहाणिअद्धमेत्तगोउच्छविसेसे घेत्तूण तत्थ एगेगगोवुच्छविसेसे दोरूऊणगुणहाणिअद्धमेत्तगोवुच्छपुंजेसु पक्खित्तेसु दुरूवूणगुणहाणिअद्धमेत्ता चरिमणिसेगा होंति। पुणो रूवाहियगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसेसु जदि एगो चरिमणिसेगो लब्भदि तो उव्वरिदेगगोवुच्छविसेसम्मि किं लभामो त्ति सरिसमवणिय पमाणेणिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि $\frac{१}{१}$ । $\frac{१}{१\;१}$ । एदम्मि गुणहाणिमेत्तचरिमणिसेगेसु पक्खित्ते किंचूणदिवड्डगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेगा होंति $\frac{८ \;\; ११}{१\;१}$ ।

एदमेदं घेत्तूण द्वविय पुणो अण्णोण्णब्भत्थरासिं विरलेदूण पढमणिसेगं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि गोवुच्छविसेसूणचरिमणिसेगो पावदि। पुणो हेट्ठा गुणहाणिं विरलिय एगरूवपरिदं दादूण समकरणं करिय परिहाणिरूवेसु तेरासियकमेण आणिदेसु रूवाहियगुणहाणिओवट्टिद अण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्ताणि होंति। एत्थ णाणावरणादीणमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागो

प्रकार करनेपर एक कम गुणहानिके अर्ध भाग मात्र गोपुच्छविशेष होते हैं— ८, ८ ८, ४। गुणहानिके अर्ध भाग प्रमाण गोपुच्छविशेषोंमेंसे दो कम गुणहानिके अर्ध भाग मात्र गोपुच्छविशेषोंको ग्रहण कर उनमेंसे एक एक गोपुच्छविशेषको दो कम गुणहानिके अर्ध भाग मात्र गोपुच्छपुंजोंमें मिलानेपर दो कम गुणहानिके अर्ध भाग मात्र अन्तिम निषेक होते हैं। पुनः एक अधिक गुणहानिके बराबर गोपुच्छविशेषोंमें यदि एक अन्तिम निषेक पाया जाता है तो बचे हुए एक गोपुच्छविशेषमें क्या पाया जायगा इस प्रकार सदृशका अपनयन करके प्रमाणसे इच्छाको अपवर्तित करनेपर एकका असंख्यातवां भाग आता है— $\frac{१}{१}$। ११ इसे गुणहानि मात्र अन्तिम निषेकोंमें मिलानेपर कुछ कम डेढ़ गुणहानि मात्र अन्तिम निषेक होते हैं— ८ + $\frac{१}{१}$ = ११$\frac{१}{१}$। इसको इसी प्रकार स्थापित करके पश्चात् अन्योन्याभ्यस्त राशिका विरलन करके प्रथम निषेकको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति गोपुच्छविशेषसे हीन अन्तिम निषेक प्राप्त होता है। पश्चात् नीचे गुणहानिका विरलन करके ऊपर एक विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यको देकर समीकरण करके परिहीन रूपोंको त्रैराशिकक्रमसे लानेपर वे एक अधिक गुणहानिसे अपवर्तित अन्योन्याभ्यस्त राशि मात्र होते हैं। यहां ज्ञानावरणादिकका एकका असंख्यातवां भाग आता है क्योंकि, उनकी

---

१ प्रतिषु 'पक्खिविदेहिरेग' ; मप्रतौ 'पक्खिविदेग' इति पाठः।
२ प्रतिषु $\frac{१\;२}{१\;१}$ इति पाठः।   ३ प्रतिषु $\frac{१ \;\; ११}{१\;१}$ इति पाठः।

आगच्छदि, अण्णोण्णब्भत्थरासीदो गुणहाणीए असंखेज्जगुणत्तादो। मोहणीयस्स असंखेज्जाणि रूवाणि लब्भंति, गुणहाणीदो अण्णोण्णब्भत्थरासिस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। एदमवणिय सेसेण चरिमणिसेगेसु गुणिदे पढमणिसेगो होदि | ९ | ५१२/९ |। एत्तियमेत्तचरिमणिसेगाणं जदि एगो पढमणिसेगो लब्भदि तो चरिमगुणहाणिदव्वस्स किंचूणदिवड्डगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेगाण किं लभामो त्ति पमाणेणिच्छाए ओवट्टिदाए असंखेज्जाणि रूवाणि लब्भंति। कुदो [णव्वदे]? पदेसविरइयअप्पाबहुगादो। तं जहा— सव्वत्थोवो चरिमणिसेगो। पढमणिसेगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासी। चरिमगुणहाणिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अण्णोण्णब्भत्थरासिणोवट्टिददिवड्डगुणहाणीओ। तेण असंखेज्जरूवागमणं सिद्धं। एदेसु असंखेज्जरूवेसु अद्धरूवाहियदिवड्डगुणहाणीसु सोहिदेसु णाणावरणादीणं पढमणिसेगस्स भागहारो किंचूणदिवड्डगुणहाणिमेत्तो जादो।

संपहि दिवड्डगुणहाणीयो विरलिय सव्वदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमनिसेगो पावदि। हेट्ठा णिसेगभागहारं विरलेदूण पढमणिसेगं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि गोवुच्छाविसेसो पावदि। तम्मि उवरिमविरलणमेत्तपढमणिसेगेसु

अन्योन्याभ्यस्त राशिसे गुणहानि असंख्यातगुणी है। और मोहनीयके असंख्यात अंक प्राप्त होते हैं, क्योंकि, उसकी गुणहानिसे अन्योन्याभ्यस्त राशि असंख्यातगुणी पायी जाती है। इसको कम करके शेषसे अन्तिम निषेकको गुणित करनेपर प्रथम निषेक होता है— $९ \times \frac{५१२}{९}$। इतने मात्र अन्तिम निषेकोंका यदि एक प्रथम निषेक प्राप्त होता है तो अन्तिम गुणहानि सम्बन्धी द्रव्यके कुछ कम डेढ़ गुणहानि मात्र अन्तिम निषेकोंका क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे इच्छाको अपवर्तित करनेपर असंख्यात अंक प्राप्त होते हैं।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— यह प्रदेशविरचित अल्पबहुत्वसे जाना जाता है। यथा— "अन्तिम निषेक सबसे स्तोक है। उससे प्रथम निषेक असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। उससे अन्तिम गुणहानिका द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अन्योन्याभ्यस्त राशिसे अपवर्तित डेढ़ गुणहानि गुणकार है।" इससे असंख्यात अंकोंका आगमन सिद्ध है।

इन असंख्यात अंकोंको अर्ध रूप अधिक डेढ़ गुणहानिमेंसे घटा देनेपर ज्ञानावरणादिके प्रथम निषेकका भागहार कुछ कम डेढ़ गुणहानि मात्र हो जाता है।

अब डेढ़ गुणहानिका विरलन करके सब द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति प्रथम निषेक प्राप्त होता है। इसके नीचे निषेकभागहारका विरलन करके प्रथम निषेकको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति गोपुच्छविशेष प्राप्त होता है। उसको उपरिम विरलन मात्र प्रथम निषेकोंमेंसे

विसेसाणं जदि एगो तदियणिसेगो लब्भदि तो दिवड्ढगुणहाणिमेत्तदोदोविसेसाणं किं लभामो त्ति भागं घेत्तूण लद्धे पक्खित्ते तदियणिसेगभागहारो होदि $\frac{१५७५}{११२}$। एवं णेदव्वं जाव पढमगुणहाणिचरिमणिसेओ त्ति।

पुणो पुव्वविरलणं दुगुणं $\frac{१५७५}{६४}$ विरलिय सव्वदव्वं समखंडं करिय दिण्णे बिदियगुणहाणिपढमणिसेगो होदि। सेसं जाणिदूण वत्तव्वं। तदियगुणहाणिपढमणिसेगभागहारो पुव्वभागहारादो चउग्गुणो $\frac{१५७५}{३२}$। चउत्थगुणहाणिपढमणिसेगभागहारो अट्ठगुणो होदि $\frac{१५७५}{१६}$। पंचमगुणहाणिपढमणिसेगभागहारो पुव्वभागहारादो सोलसगुणो $\frac{१५७५}{८}$। एवमसंखेज्जगुणहाणीयो गंतूण चरिमगुणहाणिपढमणिसेयस्स भागहारो वुच्चदे— रूवूण-

....

निषेकभागहारके एक कम अर्ध भाग मात्र विशेषोंका यदि एक तृतीय निषेक प्राप्त होता है तो डेढ़ गुणहानि मात्र दो दो विशेषोंका क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार भागको ग्रहण कर लब्धमें मिलानेपर तृतीय निषेकभागहार होता है $\frac{१५७५}{११२}$।

उदाहरण— $\frac{१५७५ \times ६४}{१२८} - \frac{७ \times ६४}{१} = \frac{१५७५ \times ६४}{१२८} \times \frac{१}{७ \times ६४} = \frac{२२५}{१२८}$,

$\frac{१५७५}{१२८} + \frac{२२५}{१२८} = \frac{१८००}{१२८} = \frac{१५७५}{११२}$ तृतीय निषेकका भागहार।

इस प्रकार प्रथम गुणहानिके अन्तिम निषेकके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये।

पुनः पूर्व विरलनको दुगुणा ($\frac{१५७५}{६४}$) कर विरलन करके सब द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेक होता है। शेषका कथन जानकर करना चाहिये। तृतीय गुणहानिके प्रथम निषेकका भागहार पूर्व भागहारसे चौगुणा है $\frac{१५७५}{३२}$।

उदाहरण— पूर्वभागहार $\frac{१५७५}{१२८}$, $\frac{१५७५}{१२८} \times \frac{४}{१} = \frac{१५७५}{३२}$।

चतुर्थ गुणहानिके प्रथम निषेकका भागहार पूर्व भागहारसे आठगुणा है $\frac{१५७५}{१६}$। पंचम गुणहानिके प्रथम निषेकका भागहार पूर्व भागहारसे सोलहगुणा है $\frac{१५७५}{८}$। इस प्रकार असंख्यात गुणहानियां जाकर अन्तिम गुणहानिके प्रथम निषेकका भागहार

णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिगुणिददिवड्ढगुणहाणीओ विरलिय सव्वदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि चरिमगुणहाणिपढमणिसेगो होदि। भागहारसंदिट्ठी $\frac{१५७५}{४}$।

पुणो तदणंतरबिदियणिसेगभागहारे भण्णमाणे पुव्वविरलणाए हेट्ठा णिसेगभागहारं विरलिय पढमणिसेगं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि गोवुच्छविसेसो पावदि। एदेण पमाणेण उवरिमविरलणरूवधरिदेसु अवणिदे तमधियदव्वं होदि। एदं तप्पमाणेण करिय अधियदव्वस्स विरलणरूवुप्पत्ती वुच्चदे। तं जहा — रूवूणणिसेगभागहारमेत्तविसेसेसु जदि एगा पक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तविसेसेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धे तत्थेव पक्खित्ते भागहारो होदि $\frac{११०}{१५}$। एवं णेदव्वं जाव चरिमणिसेओ त्ति।

कहा जाता है— एक कम नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन करके दुगुणा कर जो अन्योन्याभ्यस्त राशि उत्पन्न हो उससे गुणित डेढ़ गुणहानियोंका विरलन करके सब द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति अन्तिम गुणहानिका प्रथम निषेक प्राप्त होता है। भागहारसंदृष्टि $\frac{१५७५}{४}$ है।

उदाहरण— एक कम नानागुणहानि ५, इसकी अन्योन्याभ्यस्त राशि ३२।
$\frac{१५७५}{१२८} \times \frac{३२}{१} = \frac{१५७५}{४}$ अन्तिम गुणहानिके प्रथम निषेकका भागहार।

पुनः तदनन्तर द्वितीय निषेकके भागहारको कहते समय पूर्व विरलनके नीचे निषेकभागहारका [illegible] करके प्रथम निषेकका समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति गोपुच्छविशेष प्राप्त होता है। इस प्रमाणसे उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यमेंसे गोपुच्छविशेषोंको कम करनेपर वह अधिक द्रव्य होता है। इसको उसके प्रमाणसे करके अधिक द्रव्यके विरलन रूपोंकी उत्पत्ति कहते हैं। यथा— एक कम निषेकभागहार मात्र विशेषोंमें यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलन मात्र विशेषोंमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छा राशिमें प्रमाण राशिका भाग देनेपर जो लब्ध हो उसको उसी पूर्व विरलन राशिमें मिला देनेपर भागहार होता है $\frac{११०}{१५}$।

उदाहरण— एक कम निषेकभागहार १५, उपरिम विरलन $\frac{११०}{१६}$।

$\frac{११०}{१६} \div \frac{१५}{१} = \frac{११}{१६} \times \frac{१}{१२} = \frac{५२}{१६}$; $\frac{११०}{१६} + \frac{५२}{१६} = \frac{१७२}{१६} = \frac{११०}{१५}$ अन्तिम गुणहानिके द्वितीय निषेकका भागहार।

इस प्रकार अन्तिम निषेक तक भागहारका क्रम ले जाना चाहिये।

संपहि चरिमणिसेयपमाणेण सव्वदव्वं अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण[1] कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा— चरिमगुणहाणिदव्वे चरिमणिसेयपमाणेण कदे एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेण अहियरूवूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेया होंति । तस्स संदिट्ठी | ११ १/९ | ।

संपहि चरिमगुणहाणिदव्वप्पहुडि सेसगुणहाणिदव्वाणि दुगुण-दुगुणकमेण गच्छंति जाव पढमगुणहाणिदव्वं | १०० | २०० | ४०० | ८०० | १६०० | ३२०० | त्ति, चरिमगुणहाणिदव्वे रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिणा गुणिदे सव्वदव्वसमुप्पत्तीदो । रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिणा सव्वदव्वे भागे हिदे चरिमगुणहाणिदव्वमागच्छदि । किंचूणदिवड्ढगुणहाणीए रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिं गुणिय सव्वदव्वे भागे हिदे चरिमणिसेगो आगच्छदि । कुदो ? चरिमगुणहाणिदव्वम्मि किंचूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेगुवलंभादो । एदस्स संदिट्ठी | ६३०० / ९ | । एसो भागहारो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ । तं जहा— णाणागुणहाणिसलागोवट्टिदरूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिं विरलिय रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिं चेव समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि णाणागुणहाणिसलागपमाणं पावदि । तत्थ एगरूवधरिदरासिणा

अब अन्तिम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्य अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र कालसे अपहृत होता है, यह बतलाते हैं । यथा— अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको अन्तिम निषेकके प्रमाणसे करनेपर एकका असंख्यातवां भाग अधिक एक कम डेढ़ गुणहानि मात्र अन्तिम निषेक होते हैं । उसकी संदृष्टि - ११ १/९ ।

अब अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे लेकर शेष गुणहानियोंका द्रव्य प्रथम गुणहानिके द्रव्यके प्राप्त होने तक दूना दूना होता जाता है— १००, २००, ४००, ८००, १६००, ३२००; क्योंकि, अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिसे गुणित करनेपर सब द्रव्यकी उत्पत्ति होती है । एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिका सब द्रव्यमें भाग देनेपर अन्तिम गुणहानिका द्रव्य आता है । कुछ कम डेढ़ गुणहानिसे एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिको गुणित कर सब द्रव्यमें भाग देनेपर अन्तिम निषेक आता है, क्योंकि, अन्तिम गुणहानिके द्रव्यमें कुछ कम डेढ़ गुणहानि मात्र अन्तिम निषेक पाये जाते हैं । इसकी संदृष्टि ६३००/९ । यह भागहार अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी मात्र है । यथा— नानागुणहानिशलाकाओंसे भाजित एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिका विरलन करके एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिको ही समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति नानागुणहानियोंकी शलाकाओंका प्रमाण प्राप्त होता है । उनमेंसे एक अंकके प्रति प्राप्त राशिसे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर डेढ़ कम

---

१ प्रतिषु '-भागहारमेत्तेण' इति पाठः ।

दिवड्ढगुणहाणिं गुणिदे दिवड्ढकम्मट्ठिदी उप्पज्जदि। वेरूवपक्खेवेण गुणिदे तिण्णिकम्मट्ठिदीओ उप्पज्जंति। एवं गंतूण जहण्णपरित्तासंखेज्जस्स तिभागमेत्तरूवपक्खेवरासिणा गुणिदे असंखेज्जकम्मट्ठिदीओ उप्पज्जंति। एवं णेदव्वं जाव णिस्संदेहो साहुजणो जादो त्ति। तेण चरिमणिसेगभागहारो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो त्ति सिद्धं। अवहारपरूवणा गदा।

जधा अवहारकालो तधा भागाभागं, सव्वणिसेयाणं सव्वदव्वस्स असंखेज्जदिभागत्तादो। भागाभागपरूवणा गदा।

सव्वत्थोवो चरिमणिसेगो [९]। पढमणिसेगो असंखेज्जगुणो [५१२]। को गुणगारो? किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासी [५१२/९]। अपढम-अचरिमदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? एगरूवेण एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेण च परिहीणदिवड्ढगुणहाणी गुणगारो [५७६७/५१२]। कुदो? पढमणिसेयस्स गुणगारम्मि जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो चरिमणिसेगादियपढमणिसेगस्स किं लभामो त्ति पमाणेणिच्छाए ओवट्टिदाए [५२१/५१२] एगरूवस्स

स्थिति उत्पन्न होती है १२ × ६ = ७२। दो विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त राशिसे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर तीन कर्मस्थितियां उत्पन्न होती हैं १२ × १२ = १४४। इस प्रकार जाकर जघन्य परीतासंख्यातके दो तीन भाग मात्र विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त राशिसे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर असंख्यात कर्मस्थितियां उत्पन्न होती हैं। इस प्रकार साधुजनके सन्देह रहित हो जाने तक ले जाना चाहिये। इसलिये अन्तिम निषेकका भागहार अंगुलका असंख्यातवां भाग है यह सिद्ध होता है। अवहारप्ररूपणा समाप्त हुई।

जिस प्रकार अवहारकाल है उसी प्रकार भागाभाग है क्योंकि सब निषेक सब द्रव्यके असंख्यातवें भाग मात्र हैं। भागाभागप्ररूपणा समाप्त हुई।

अन्तिम निषेक (९) सबसे स्तोक है। प्रथम निषेक (५१२) उससे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? गुणकार कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि है— ६४ — ७ $\frac{१}{९}$ = $\frac{५१२}{९}$। उससे अप्रथम-अचरम द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? एक और एकके असंख्यातवें भागसे हीन डेढ़ गुणहानि गुणकार है— $\frac{५७६७}{५१२}$ = ११$\frac{१३५}{५१२}$। इसका कारण यह है कि प्रथम निषेकके गुणकारमें यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो अन्तिम निषेकसे अधिक प्रथम निषेकके गुणकारमें कितने अंकोंकी हानि पायी जायगी इस प्रकार प्रमाण राशिसे इच्छा राशिको भाजित करनेपर एकका असंख्यातवां भाग अधिक

असंखेज्जदिभागेणाहियएकरूवस्स परिहाणिदंसणादो $\left[१\frac{९}{५१२}\right]$ । एदम्मि एत्तो $\left[१२\frac{३९}{१२८}\right]$ अवणिदे गुणगारो आगच्छदि । तस्स पमाणमेद $\left[\frac{५७७९}{५१२}\right]$ । एदेण पढमणिसेगे गुणिदे एत्तिय होदि [५७७९] । अपढमदव्वं विसेसाहियं, चरिमणिसेगपवेसादो [५७८८] । अचरिमदव्वं विसेसाहियं, चरिमणिसेगेणूणपढमणिसेगप्पवेसादो [६२९१] । सव्वासु ट्ठिदीसु दव्वं विसेसाहियं, चरिमणिसेगप्पवेसादो [६३००] । एवमप्पाबहुगपरूवणा गदा ।

जेणेवमेगसमयपबद्धस्स रचणा होदि तेण कम्मट्ठिदिआदिसमयपबद्धसंचयस्स भागहारो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो त्ति सिद्धो । पाहुडे अग्गट्ठिदिपत्तगम्मि भण्णमाणे एगसमयपबद्धस्स कम्मट्ठिदिणिमित्तदव्वस्स कालो दुधा गच्छदि सांतरवेदगकालेण णिरंतरवेदगकालेण च । तत्थ बद्धसमयादो आवलियाअदिक्कंतो समयपबद्धो णियमेण ओकड्डिदूण वेदिज्जदि । तदो उवरि णिरंतर पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालं णियमेण वेदिज्जदि ।

एक अंककी हानि देखी जाती है— $\frac{५२१}{५१२} = १\frac{९}{५१२}$ । इसको इसमें ($१२\frac{३९}{१२८}$) से घटा देनेपर गुणकार आता है । उसका प्रमाण यह है-- $\frac{६३००}{५१२} - \frac{५२१}{५/२} = \frac{५७७९}{५१२}$ । इससे प्रथम निषेकको गुणित करनेपर इतना होता है— $\frac{५७७९ \times ५१२}{५१२} = ५७७९$ । अप्रथम-अचरम द्रव्यसे अप्रथम द्रव्य विशेष अधिक है, क्योंकि, उसमें अन्तिम निषेक प्रविष्ट है— ५७७९ + ९ = ५७’८ । उससे अचरम द्रव्य विशेष अधिक है, क्योंकि उसमें चरम निषेकसे रहित प्रथम निषेक प्रविष्ट है— ७८८ + ५१२ – ९ = ६२९१ । उससे सब स्थितियोंका द्रव्य विशेष अधिक है, क्योंकि, उसमें अन्तिम निषेक प्रविष्ट है— ६२९१+९=६३०० । इस प्रकार अल्पबहुत्वप्ररूपणा समाप्त हुई ।

यत एक समयप्रबद्धकी रचना इस प्रकारकी होती है, अत एव कर्मस्थितिके प्रथम समयप्रबद्धके संचयका भागहार अंगुलका असंख्यातवां भाग है, यह सिद्ध होता है ।

प्राभृतमें अग्रस्थितिप्राप्त द्रव्यका कथन करते समय कर्मस्थितिमें निक्षिप्त हुए समयप्रबद्ध प्रमाण द्रव्यका काल सान्तरवेदककाल और निरन्तरवेदककालके रूपमें दो प्रकारसे जाता हुआ बतलाया है । उनमेंसे बन्धसमयसे लेकर एक आवलिके पश्चात् प्रत्येक समयप्रबद्ध अपवर्तित होकर नियमसे वेदा जाता है, जो कि इसके आगे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक नियमसे निरन्तर वेदा जाता

एसो णिरंतरो वेदगकालो णाम । तदो उवरिमसमए णियमा अवेदगकालो जहण्णेण एग समओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो[1]। तदो णियमा एगसमयमादिं कादूण जावुक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो त्ति णिरंतरवेदगकालो होदि । एवं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तवेदगकालेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तअवेदगकालेण च समयपबद्धो गच्छदि जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमयं पत्तो त्ति ।

चारित्तमोहणीयक्खवणाए अट्ठमी जा मूलगाहा तिस्से चत्तारि भासगाहाओ । तत्थ तदियभासगाहाए वि एसो चेव अत्थो परूविदो । तं जहा— असामण्णाओ ट्ठिदीओ एक्का वा दो वा तिण्णि वा, एवं णिरंतरमुक्कस्सेण जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो त्ति गच्छंति त्ति । चउत्थगाहाए वि खवगस्स सामण्णट्ठिदीणमंतरमुक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो त्ति परूविदं । तेण कम्मट्ठिदिअब्भंतरे बद्धसमयपबद्धाणं णिरंतरमवट्ठाणाभावादो भागहारपरूवणा ण घडदि त्ति ? ण एस दोसो, उक्कड्डणाए संचिददव्वस्स गुणिदकम्मं सियचरिमसमए भागहारपरूवणादो । होदि एस दोसो जदि ट्ठिदिपडिबद्धपदेसाणं भागहार

है। इसको निरन्तरवेदककाल कहते हैं। इससे आगेके समयमें अवेदककाल आता है जो जघन्यसे एक समय और उत्कृष्ट रूपसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है। तत्पश्चात् एक समयसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक नियमसे निरन्तरवेदककाल होता है। इस प्रकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र वेदककाल और पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र अवेदककालसे कर्मस्थितिके अन्तिम समय प्राप्त होने तक समयप्रबद्ध जाता है।

चारित्रमोहनीयकी क्षपणामें जो मूल गाथा आयी है उसकी चार भाष्यगाथायें हैं। उनमेंसे तीसरी भाष्यगाथामें भी इसी अर्थकी प्ररूपणा की गई है। यथा— असामान्य स्थितियां एक हैं दो हैं अथवा तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक निरन्तर जाती हैं।

शंका — चतुर्थ गाथामें भी क्षपककी सामान्य स्थितियोंका अन्तर उत्कृष्ट रूपसे आवलीका असंख्यातवां भाग कहा गया है। इसलिये कर्मस्थितिके भीतर बांधे गये समयप्रबद्धोंका निरन्तर अवस्थान न होनेसे भागहारकी प्ररूपणा घटित नहीं होती है?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है क्योंकि उत्कर्षणा द्वारा संचित हुए द्रव्यका गुणितकर्मांशिकके अन्तिम समयमें भागहार कहा गया है। यदि यहां स्थितिके सम्बन्धसे प्रदेशोंकी भागहारप्ररूपणा की जाती तो यह दोष हो सकता था। किन्तु यहां

---

१ प्रतिषु 'संखेज्जदिभागो' इति पाठः ।

परूवणा कीरदि । ण च एत्थ ठिदिणियमो अत्थि । तेण णिरंतरभागहारपरूवणा ण सांतर-णिरंतरवेदगकालेण सह विरुज्झदे । उक्कड्डुणाए उवरिमट्ठिदीओ पत्ताणं एगसमयपबद्ध पदेसाणं कधं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालमोक्कड्डुणुदयाभावो जुज्जदे ? ण, उव-सामणादिकरणवसेण तेसिं तदविरोहादो । ओकड्डुणाए णट्ठदव्वं सुट्ठु त्थोवं त्ति तमप्पहाणं करिय एत्थ ताव भागहारो उच्चदे — कम्मट्ठिदिआदिमसमयपबद्धसंचयस्स भागहारो परूविदो । एण्हिं कम्मट्ठिदिविदियसमयसंचयस्स भागहारो उच्चदे । तं जहा— कम्मट्ठिदि-पढमसमयसंचिददव्वभागहारं विरलिय सव्वदव्वं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि चरिमणिसेगपमाणं पावदि । पुणो एदस्स भागहारस्स अद्धं विरलिय सव्वदव्वं समखंडं करिय दिण्णे दो दो चरिमणिसेगा[1] रूवं पडि पावेंति । ण च दोहि चरिमणिसेगेहि चेव कम्मट्ठिदिबिदियसमयसंचओ होदि, तस्स चरिम दुचरिमणिसेगपमाणत्तादो । तम्हा दोण्णं चरिमणिसेगाणमुवरि जहा एगो गोवुच्छविसेसो अहियो होदि तहा अवहारकालस्स

स्थितिका नियम नहीं है । इस कारण निरन्तर भागहारकी प्ररूपणा सान्तर व निरन्तर वेदककालके साथ विरोधको नहीं प्राप्त होती ।

शंका—उत्कर्षणा द्वारा उपरिम स्थितियोंको प्राप्त हुए एक समयप्रबद्धके प्रदेशोंका पल्योपमके असंख्यातवें भाग काल तक अपकर्षण और उदयका अभाव कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उपशामना आदि करणोंके द्वारा उनका उतने काल तक अपकर्षणका अभाव और उदयाभाव माननेमें कोई विरोध नहीं आता ।

अपकर्षणा द्वारा नष्ट हुवा द्रव्य बहुत स्तोक है, इस कारण उसे गौण करके यहां सर्वप्रथम भागहारका कथन करते हैं— कर्मस्थितिके प्रथम समयमें बन्धको प्राप्त हुए संचयके भागहारकी प्ररूपणा की जा चुकी है । यहां कर्मस्थितिके द्वितीय समयमें हुये संचयका भागहार कहते हैं । यथा— कर्मस्थितिके प्रथम समयमें संचित द्रव्यके भागहारका विरलन करके सब द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति अन्तिम निषेकका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर इस भागहारके अर्ध भागका विरलन करके सब द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति दो दो अन्तिम निषेक प्राप्त होते हैं । किन्तु मात्र दो अन्तिम निषेकोंके द्वारा कर्मस्थितिके द्वितीय समयका संचय नहीं होता, क्योंकि, वह चरम और द्विचरम निषेक प्रमाण है । इस कारण दोनों अन्तिम निषेकोंके ऊपर जिस प्रकार एक गोपुच्छविशेष अधिक होवे उस प्रकार अवहारकालकी परिहानि की जाती है । यथा— नीचे एक अधिक गुणहानिको जितने स्थान आगेके विवक्षित हों उनसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसे जितने स्थान

१ अ-आप्रत्योः 'चरिमणिसेगो' इति पाठः ।

परिहाणी कीरदे । तं जहा — हेट्ठा रूवाहियगुणहाणिं चडिदद्धाणगुणं रूवूणचडिदद्धाण-संकलणाए ओवट्टिय विरलिय एगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एगेगगोवुच्छ-विसेसो पावदि । एत्थ एगविसेसं घेत्तूण उवरिमविरलणाए विदियरूवधरिदम्मि दिण्णे चरिम-दुचरिमणिसेयपमाणं कम्मट्ठिदिविदियसमयसंचयतुल्लं होदि । एवं सेसविसेसे वि उवरिमरूव-धरिदेसु दादूण समकरणं करिय परिहाणिरूवाणि उप्पाएदव्वाणि । तं जहा — रूवाहिय-गुणहाणिणा दुगुणेण रूवूणगुणगारसंकलणाए ओवट्टिय लद्धेरूवाहियेण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए परिहाणि-रूवाणि लब्भंति । पुणो तेसु तत्तो सोहिदेसु भागहारो होदि । एदेण समयपबद्धे भागे[3] हिदे चरिम-दुचरिमणिसेगपमाणं होदि ।

का भागहार लाना है — एक कम उसके संकलनका भाग देनेपर जो लब्ध हो उसका विरलन करके एक अंकके ऊपर रखी हुई राशिको समखण्ड करके देनेपर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति एक एक गोपुच्छविशेष प्राप्त होता है। यहां एक विशेषको ग्रहण कर उपरिम विरलनके द्वितीय अंकके प्रति प्राप्त राशिके ऊपर देनेपर चरम और द्विचरम निषेकोंका प्रमाण कर्मस्थितिके द्वितीय समय सम्बन्धी संचयके तुल्य होता है। इसी प्रकार शेष विशेषोंको भी उपरिम विरलन अंकोंके ऊपर देकर समीकरण करके हीन अंकोंको उत्पन्न कराना चाहिये। यथा— एक अधिक गुणहानिको दूना कर उससे एक कम गुणकारके संकलनको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे एक अधिक करनेसे यदि एक अंककी हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिको प्रमाणराशिसे अपवर्तित करनेपर परिहीन अंक प्राप्त होते हैं। पुनः उनको उक्त राशि मेंसे घटानेपर भागहार प्राप्त होता है। इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर चरम और द्विचरम निषेकोंका प्रमाण होता है।

उदाहरण— पूर्व भागहारका अर्ध भाग १५०, गुणहानि ८, चढ़ित अध्वान २, एक कम चढ़ित अध्वान संकलन १।

११०० + १५० = १८ दो अन्तिम निषेक।

८ + १ = ९, ९ × २ = १८, १८ + १ = १९ विरलन राशि

१ १ १ १ १ १ १ १८

१ १ १ १ १ १ १ १८

१५० ÷ १९ = $\frac{१५०}{१९}$ १५० − $\frac{१५०}{१९}$ = १३१ $\frac{११}{१९}$ चरम-द्विचरम निषेक प्राप्त कर लेका भागहार।

११ ० + $\frac{११००}{१९}$ = १९ चरम-द्विचरम निषेक।

---

१ अप्रतौ 'णिक्खेयर' इति पाठः।

२ अप्रतौ 'दुरूवधरमोवट्टि-' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'समयपबद्धेण भागे' इति पाठः।

एवं रूवाहियगुणहाणिं चडिदद्धाणेण गुणिय चडिदद्धाणरूवूणसकलणाए ओवट्टिय रूवाहियं करिय एदेण फलगुणिदिच्छामोवट्टिय परिहाणिरूवाणमुप्पत्ती सव्वत्थ वत्तव्वा। अथवा दुरूवाहियणिसेगभागहारं रूवूणचडिदद्धाणेण ओवट्टिय रूवाहियं करिय फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए परिहाणिरूवाणि लब्भंति। अथवा रूवूणचडिदद्धाणद्धेण रूवाहियगुणहाणिमोवट्टिय रूवाहियं काऊण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए परिहाणिरूवाणि लब्भंति। अथवा रूवाहियगुणहाणिणा चरिमणिसेयभागहारं गुणिय विरलिय समयपबद्धं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि एगेगगोवुच्छविसेसो पावदि त्ति कादूण चडिदद्धाणेण रूवाहियगुणहाणिं गुणिय चडिदद्धाणरूवूणसकलणं तत्थेव पक्खिविय पुव्वविरलणाए ओवट्टिदाए इच्छिदसमयपबद्धसंचयस्स भागहारो होदि। एवं चदुहि पयोगेहि एगसमयपबद्धसंचयस्स भागहारो

इस प्रकार एक अधिक गुणहानिको आगेके जितने स्थान विवक्षित हों उनसे गुणित कर आगेके जितने स्थान विवक्षित हों उनकी एक कम संकलनासे अपवर्तित करके जो प्राप्त हो उसमें एक मिलाकर इससे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर परिहीन रूपोंकी उत्पत्ति सर्वत्र कहना चाहिये।

अथवा, दो अधिक निषेकभागहारको एक कम आगेके जितने स्थान विवक्षित हों उनसे अपवर्तित कर जो प्राप्त हो उसमें एक मिलाकर उससे फलगुणित इच्छाके भाजित करनेपर परिहीन अंक प्राप्त होते हैं।

उदाहरण— निषेकभागहार १६, चडित अध्वान २,

$$१६ + २ = १८, १८ - १ = १८, १८ + १ = १९,$$

$$३५० - १९ = \frac{३५०}{१९}, ३५० - \frac{३५०}{१९} = ३३१\frac{११}{१९}$$

अथवा एक कम आगेके जितने स्थान विवक्षित हों उनके अर्ध भागसे एक अधिक गुणहानिको भाजित कर जो प्राप्त हो उसमें एक मिलाकर उससे फलगुणित इच्छाको भाजित करनेपर परिहीन रूप प्राप्त होते हैं।

उदाहरण— चडित अध्वान २, गुणहानि ८,

$$२ - १ = १, १ \times \frac{१}{२} = \frac{१}{२}, ८ + १ = ९ - \frac{१}{२} = १८, १८ + १ = १९;$$

$$३५० — १९ = \frac{३५०}{१९}, ३५० - \frac{३५०}{१९} = ३३१\frac{११}{१९}।$$

अथवा, एक अधिक गुणहानिसे अन्तिम निषेकके भागहारको गुणित करके विरलित कर समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति एक एक गोपुच्छविशेष प्राप्त होता है, ऐसा समझकर आगेके जितने स्थान विवक्षित हों उनसे एक अधिक गुणहानिको गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उसमें ही आगेके जितने स्थान विवक्षित हों उनके एक कम संकलनको मिलाकर पूर्व विरलनके अपवर्तित करनेपर इच्छित समयप्रबद्धके संचयका भागहार होता है।

संचेदव्वो। विदियसमयपबद्धसंचयस्स भागहारसंदिट्ठी $\frac{११००}{१९}$ ।

संपहि तिण्णिसमए उवरि चडिय बद्धसमयपबद्धसंचयस्स भागहारे भण्णमाणे चरिमणिसेगभागहारतिभागं विरलिय समयपबद्धं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तिण्णि तिण्णि चरिमणिसेगा पावेंति। पुणो हेट्ठा दुगुणरूवाहियगुणहाणिं रूवूणचडिदद्धाणेण खंडिदं विरलिय उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि रूवूणचडिदद्धाणसंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा पावेंति। तेसु उवरिमविरलणरूवधरिदतिसु चरिमणिसेगेसु पक्खित्तेसु इच्छिदसंचयो होदि, रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवपरिहाणी च लब्भदि। एवं समकरणे कदे परिहाणिरूवाणं पमाणमुच्चदे— रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं लभामो त्ति फलगुणिदिच्छाए पमाणेणोवट्टिदाए परिहाणिरूवाणि लब्भंति। पुव्वं व एदाणि चदुहि पयारेहि आणिय उवरिमविरलणाए अवणिदेसु इच्छिदसंचयभागहारो होदि $\frac{११००}{२०}$ । एदेण समयपबद्धे भागे

उदाहरण— अन्तिम निषेकभागहार ७०० गुणहानि ८, चढित अध्वान २;
$८ + १ = ९;\ ५० \times ९ = ११$ ।
$८ + १ = ९; ९ \times २ = १८; १८ + १ = १९;$
$११०० + १९ = \frac{११००}{१९}$ इच्छित भागहार

इस तरह चार प्रकारसे एक समयप्रबद्धके संचयका भागहार सिद्ध करना चाहिये। द्वितीय समयप्रबद्धके संचयके भागहारकी संदृष्टि— $\frac{११००}{१९}$ ।

अब तीन समय आगे जाकर बांधे समयप्रबद्धके संचयके भागहारको लाते समय अन्तिम निषेकके भागहारके त्रिभागका विरलन करके समयप्रबद्धको समखण्ड करके देने पर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तीन तीन अन्तिम निषेक प्राप्त होते हैं। पश्चात् उसके नीचे आगेके जितने स्थान विवक्षित हों एक कम उनसे भाजित एक अधिक गुणहानिके दूनेका विरलन करके उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति एक कम आगेके जितने स्थान विवक्षित हों उनके संकलन मात्र गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं। उनको उपरिम विरलनपर रखे हुए तीन अन्तिम निषेकोंमें मिलानेपर इच्छित संचयका प्रमाण होता है तथा एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जाकर एक अंककी हानि भी पायी जाती है। इस प्रकार समीकरण करनेपर कम हुए अंकका प्रमाण कहते हैं— एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें कितने अंकोंकी हानि पायी जावेगी इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे अपवर्तित करनेपर परिहीन अंक प्राप्त होते हैं। पूर्वके समान इनको उक्त चारों प्रकारोंसे लाकर उपरिम विरलनमेंसे घटा देनेपर इच्छित संचयका भागहार होता है— $\frac{११००}{२०}$ । इसका समयप्रबद्धमें

---

१ अ-काप्रत्योः 'समयाहं विरलिय' एसो 'भागहारतिभागं विरलिय' इति पाठः।

हिदे इच्छिददव्वं होदि। एवं सव्वत्थ अव्वामोहेण चदुहि पयोरेहि भागहारो साहेयव्वो।

संपधि एगादिएगुत्तरकमेण वड्ढमाणा केत्तियमद्धाणं गंतूण रूवाहियगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसा होंति जेण रूवाहियचडिदद्धाणेण[1] चरिमणिसेगभागहारस्स ओवट्टणा कीरदे? कम्मट्ठिदिपढमसमयप्पहुडि गुणहाणिअद्धवग्गमूलगुणे[2] रूवाहिए उवरि चडिदे होदि। त जहा— तत्थ ताव गुणहाणिपमाणं संदिट्ठीए बारसुत्तर-पंच सद ५१२। गुणहाणिअद्धमेदं २५६। एदमद्धवग्गमूलं १६। अद्धपमाणमेदं[3] ३२। गुणहाणिअद्धवग्गमूलमणवट्ठिदभागहारो णाम, एदस्स अवट्ठाणाभावादो। एसो पढमरूवे उप्पाइज्जमाणे असंखेज्जपलिदोवमबिदियवग्गमूलमेत्तो, सव्वकम्मगुणहाणीण असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणत्तादो। उवरि हायमाणो गच्छदि जाव एगरूवं पत्तो त्ति। एदीए संदिट्ठीए अत्थो साहेदव्वो। त जहा— अणवट्ठिद-

---

भाग देनेपर इच्छित द्रव्य होता है। इस प्रकार व्यामोहसे रहित होकर सर्वत्र चार प्रकारसे भागहार सिद्ध करना चाहिये।

उदाहरण— अन्तिम निषेकका भागहार ७००, चडित अध्वान ३।

$६३०० \div \frac{७००}{३} = २७$ तीन अन्तिम निषेक।

$३ - १ = २$; $८ + १ = ९$; $९ \times २ = १८$; $१८ - २ = ९$,

$२७ \div ९ = ३$ चडित अध्वानके संकलन मात्र गोपुच्छविशेष।

$२७ + ३ = ३०$ इच्छित संचय।

अब एक आदि उत्तरोत्तर एक अधिक क्रमसे बढ़ते हुए कितने स्थान जाकर एक अधिक गुणहानि मात्र गोपुच्छविशेष होते हैं, जिससे एक अधिक आगेके विवक्षित स्थानोंसे अन्तिम निषेकके भागहारकी अपवर्तना की जाती है? कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर गुणहानिके अर्ध भागके वर्गमूलसे गुणित कर एक अधिक आगे जानेपर उक्त गोपुच्छविशेष एक अधिक गुणहानि मात्र होते हैं। यथा— गुणहानिका प्रमाण संदृष्टिमें पांच सौ बारह ५१२ है। गुणहानिका आधा यह है— २५६। यह अर्ध भागका वर्गमूल है— १६। अद्धाका प्रमाण यह है — ३२। गुणहानिके अर्ध भागका वर्गमूल अनवस्थित भागहार है, क्योंकि, यह अवस्थित नहीं पाया जाता। प्रथम रूपके उत्पन्न कराते समय यह असंख्यात पल्योपमके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण होता है, क्योंकि, सब गुणहानियां असंख्यात पल्योपमोंके प्रथम वर्गमूलोंके बराबर हैं। आगे यह एक रूप प्राप्त होने तक हीन होता हुआ चला जाता है।

---

१ अप्रतौ 'चडिदद्धाणीण', आप्रतौ 'चडिदद्धाणाणं', काप्रतौ 'चडिदद्धाणीण', मप्रतौ 'चडिदद्धाणेण' इति पाठ । २ अप्रतौ 'गुणवग्गे' इति पाठ । ३ आप्रतौ 'एदमेत्थ' काप्रतौ 'एदमत्थ' इति पाठ ।

भागहारेण गुणहाणिअद्धाणे खंडिदे भागहारादो[1] दुगुणमागच्छदि [३२]। एदमेदं रूवाहियमुवरि चडिदूण बद्धसमयपबद्धसंचयस्स भागहारो रूवाहियचडिदद्धाणेण चरिमणिसेगभागहारे खंडिदे तत्थ एयखंडमेत्तो होदि। तं कधं णव्वदे? उच्चदे— चरिमणिसेगमादिं कादूण चडिदद्धाणगच्छगोवुच्छविसेसुत्तरसंकलणखेत्तं ठविय

११२

एत्थ चरिमणिसेगविक्खंभ चडिदद्धाणदीहखेत्तं तच्छेदूण पुध ठविदे तत्थ चडिदद्धाणमेत्तचरिमणिसेगा लब्भंति[2] [९।३२]। पुणो अवसिट्ठसेसखेत्तमेवं

१
३२
३२
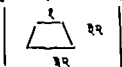
ठविय मज्झम्मि फालिय अधोसिरं करिय विदियपासे ढोइदे गुणहाणिअद्धवग्गमूलं अद्धरूवाहियं विक्खंभो। आयामो पुण रूवूणचडिदद्धाणमेत्तो। पुणो अणवट्ठिदभागहारविक्खंभेण एदम्मि आयामे गुणिदे गुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसा होंति। पुणो तत्थ उप्पण्णअणवट्ठिदभागहारमेत्तगोवुच्छविसेसेसु एगगोवुच्छविसेसं घेत्तूण पक्खित्ते एगो चरिमणिसेगो उप्पज्जदि। तम्मि पुव्विल्लणिसेगेसु

इस संदृष्टिका अर्थ कहते हैं। यथा— अनवस्थित भागहारका गुणहानिके प्रमाणमें भाग देनेपर भागहारसे दुगुणा आता है ३२। इस अन्यमें एक मिलानेपर जो प्रमाण हो उतना आगे जाकर बांधे हुए समयप्रबद्धके संचयका भागहार एक अधिक जितने स्थान आगे गये हों उससे अन्तिम निषेकके भागहारको भाजित करनेपर उनमें एक खण्डके बराबर होता है।

शंका — यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— इस शंकाका उत्तर कहते हैं। यहां अन्तिम निषेक प्रमाण विस्तार वाले और जितने स्थान आगे गये हैं उतने आयामवाले क्षेत्रको छीलकर अलग रखने पर उसमें जितने स्थान आगे गये हैं उतने अन्तिम निषेक प्राप्त होते हैं ९ × ३२। पुनः निकाले हुए शेष क्षेत्रको इस प्रकार (संदृष्टि मूलमें देखिये) स्थापित कर बीचमेंसे फाड़कर और [उलटा कर] दूसरे क्षेत्रके पार्श्व भागमें मिला देनेपर एकका आधा अधिक गुणहानिके अर्ध भागके वर्गमूल प्रमाण विष्कम्भ होता है और आयाम एक कम जितने स्थान आगे गये हैं उतना होता है। फिर अनवस्थित भागहार रूप विष्कम्भसे उक्त मात्र आयामके गुणित करनेपर गुणहानि मात्र गोपुच्छविशेष होते हैं ३२ × १६ = ५१२। पुनः उन बचे हुए अनवस्थित भागहार मात्र गोपुच्छविशेषोंमेंसे एक गोपुच्छविशेष ग्रहण कर मिला देनेपर एक अन्तिम निषेक उत्पन्न होता है। उसको पूर्व निषेकोंमें मिलाने

१ अप्रतौ 'भागहारो' इति पाठः। २ अप्रतौ 'णिसेगा' इति पाठः।

पक्खित्ते रूवाहियचडिदद्धाणमेत्तचरिमणिसेगा होंति । पुणो एदाहि चरिमणिसेगसलागाहि चरिमणिसेगभागहारमोवट्टिय उवट्ठिदगोवुच्छविसेसाणमागमणट्ठं किंचूणं कदे इच्छिदभागहारो होदि ।

एत्थ अत्थपरूवणा कीरदे । तं जहा— अणवट्ठिदभागहारं वग्गिय दुगुणेदूण गुणहाणिम्हि भागे हिदे पक्खेवरूवाणि आगच्छंति । दुगुणिदभागहारे पक्खेवरूवेहि गुणिदे अद्धमागच्छदि । संपहि रूवूणुप्पण्णद्धाणस्स[1] पुध परूवणा कीरदे । त जहा— जम्हि अद्धाणे एगादिएगुत्तरवड्ढीए गदगोवुच्छविसेसा सव्वे मेलिदूण रूवाहियगुणहाणिमेत्ता होंति तम्हि एगरूवमुप्पज्जदि । एत्थ रूवाहियगुणहाणी गोवुच्छविसेसाण संकलणसदिट्ठी [९][2] ।

धणमट्ठुत्तरगुणिदे विगुणादीउत्तरूणवग्गजुदे ।
मूलं पुरिमूलूण विगुणुत्तरभागिदे गच्छो ॥ १४ ॥

एदीए गाहाए गच्छाणयण वत्तव्वं । तं जहा— धणमट्ठहि गुणिदे सदिट्ठीए बाहत्तरि [७२] । उत्तर गुणिदे एसा चेव होदि, उत्तरस्स एगत्तादो । दुगुणमादिमुत्तरूण [१]

पर एक अधिक जितने स्थान आगे गये हैं उतने अन्तिम निषेक होते हैं । पुन. इन अन्तिम निषेकोंकी शलाकाओंसे अन्तिम निषेकके भागहारको अपवर्तित कर उपस्थित गोपुच्छ विशेषोंके लानेके लिये कुछ कम करनेपर इच्छित भागहार होता है ।

यहा अर्थप्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— अनवस्थित भागहारका वर्ग करके दुगुणित कर गुणहानिमें भाग देनेपर प्रक्षेप रूप आते हैं । दुगुणित भागहारको प्रक्षेपरूपोंसे गुणित करनेपर अध्वान आता है । अब उत्पन्न हुए एक अध्वानकी पृथक् प्ररूपणा करते हैं । यथा— जिस अध्वानमें एकसे लेकर उत्तरोत्तर एक अधिक वृद्धिको प्राप्त हुए गोपुच्छविशेष सब मिलकर एक अधिक गुणहानि मात्र होते हैं उसमें एक रूप उत्पन्न होता है । यहांपर एक अधिक गुणहानि (९) गोपुच्छविशेषोंके संकलनकी सदृष्टि है ।

धनको आठसे और फिर उत्तरसे गुणा करके उसमें, द्विगुणित आदिमेंसे उत्तरको कम करके जो राशि प्राप्त हो उसके वर्गको जोड़ दे । फिर इसके वर्गमूलमेंसे पहलेके प्रक्षेपके वर्गमूलको कम करके शेष रही राशिमें द्विगुणित उत्तरका भाग देने पर गच्छका प्रमाण आता है ॥ १४ ॥

इस गाथा द्वारा गच्छ लानेकी विधि कहनी चाहिये । यथा— धनको आठसे गुणित करनेपर सदृष्टिकी अपेक्षा बहत्तर ७२ होते हैं । इसे उत्तरसे गुणा करनेपर यही संख्या होती है, क्योंकि, यहा उत्तरका प्रमाण एक है । आदिको दूना करके फिर उसमेंसे उत्तरको कम करके (१ × २ = २, २ − १ = १) वर्गित कर मिलानेपर इतना

---

१ प्रतिषु 'रूउप्पण्णद्धाणस्स' इति पाठः । २ प्रतिषु [६ / ९], मप्रतौ [९] इति पाठ ।

धणिय पक्खित्ते एत्तियं होदि | ७३ |। एसा करणिसुद्धं वग्गमूलं ण देदि त्ति एवं चेव ठवेदव्वा। पुव्विल्लपक्खेवमूलमेक्को | १ |। पुव्विल्लरासी जदि रूवगया तो तत्थ एदस्स अवणयणं कीरदे। सा पुण करणिगया त्ति एदिस्से ण तत्थ अवणयणं काउं सक्किज्जदि त्ति पुध ठवेदव्वा | $\overset{+}{१}$ |। सो धणमाणादो एदिस्से रिणसण्णा। पुणो विगुणेण उत्तरेण भागे घेप्पमाणे करणीए करणी चेव रूवगयस्स[1] रूवगयं चेव भागहारो होदि त्ति णायादो करणी[2] चदुहि छेत्तव्वा, रूवगयं[3] दोहि। | $\frac{७३}{४} \frac{\overset{+}{१}}{२}$ | एसो रूवाहियगुणहाणिमेत्तसंकलणाए गच्छो। एसो चेव रूवाहिओ चरिमट्ठाणं होदि।

संपहि एदम्हादो गच्छादो रूवाहियगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसाणमुप्पत्ती उच्चदे। तं जहा— संकलणरासिम्मि छेदो रासी द्धावर्गो (?) हि त्ति दो गच्छे ठवेदव्वा | $\frac{७३}{४} \frac{\overset{+}{१}}{२} \frac{७३}{४} \frac{\overset{+}{१}}{२}$ |। एत्थ एगरासी रूवं पक्खिविय अद्धेदव्वा त्ति रिणरूवं अण्णरूवम्हि अवणिय अद्धिदे

अर्थात् ७२ + १ = ७३ होता है। इससे करणिशुद्ध वर्गमूल नहीं प्राप्त होता, इसलिये इसे इसी प्रकार रहने देना चाहिये। पहलेके प्रक्षेपका वर्गमूल एक है १। पहलेकी राशि यदि रूपगत अर्थात् प्रत्येक हो तो उसमेंसे इसे घटा देना चाहिये। परन्तु वह करणिगत है इसलिये इसे उसमेंसे नहीं घटाया जा सकता है। अत एव इसे अलग स्थापित कर देना चाहिये $\overset{+}{१}$। शोध्यमान अर्थात् घटाने योग्य होनेसे इसकी ऋण संज्ञा है। फिर दुगुने उत्तरका भाग ग्रहण करते समय करणिगतका करणिगत ही भागहार होता है और रूपगतका रूपगत ही भागहार होता है इस नियमके अनुसार करणिमें चारसे और रूपगतमें दोसे भाग लेना चाहिये। $\frac{७३}{४} \frac{\overset{+}{१}}{२}$ यह एक अधिक गुणहानि मात्र संकलनका गच्छ है। यही एकाधिक करनेपर आगेका स्थान होता है।

अब इस गच्छके आधारसे एक अधिक गुणहानि मात्र गोपुच्छविशेषोंकी उत्पत्ति का कथन करते हैं। यथा— संकलन राशिमेंसे छेद राशि (?) इसलिये दो गच्छ स्थापित करना चाहिये $\frac{७३}{४} \frac{\overset{+}{१}}{२} \frac{७३}{४} \frac{\overset{+}{१}}{२}$। यहां इस राशिमें एक मिलाकर आधी करनी चाहिये। इसलिये ऋणके एक अंकको अन्यतम रूप राशि मेंसे घटा कर आधा करनेपर इतना $\sqrt{\frac{७३}{१६}} + \frac{१}{४}$ होता है। इससे गच्छको गुणित-

---

१ प्रतिषु 'एवमिच्छमस्स' इति पाठः। २ प्रतिषु 'अण' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'रूवगयं' इति पाठः।
४ मप्रतौ 'तमगा' इति पाठः।

एत्तियं होदि $\frac{७३}{१६}\ \frac{१}{४}$ । एदेहि गच्छं दुप्पडिरासिय गुणिदे सो रासी उप्पज्जदि

$\frac{५३२९}{६४}\ \frac{+७३}{६४}\ \frac{७३}{६४}\ \frac{+१}{८}$ एत्थ वाम-दाहिणदिसाठिदकरणिगयधण-रिणाण सरिसाणमवणयणं काऊण सेसकरणिगयस्स मूलमेत्तियं होदि $\frac{७३}{८}$ । एत्थ हेट्ठिमरिणमेगरूवट्ठमभाग सोहिय अट्ठहि भागे हिदे रूवाहियगुणहाणिमेत्ता गोवुच्छविसेससंकलणा होदि ९ ।

संपहि बिदियरूवे उप्पाइज्जमाणे गुणहाणिपमाणं चउसट्ठि ६४ । गुणहाणि-चदुब्भागो १६ । चदुब्भागवग्गमूलं ४ । चदुब्भागवग्गमूलेण गुणहाणिअद्धाणम्मि भागे हिदे भागहारादो चदुगुणमागच्छदि १६ । एदं रूवाहियमुवरि चडिदूण बधमाणस्स रूवाहियचडिदद्धाणमेत्तरूवोवट्टिदचरिमणिसेगभागहारो होदि । तं जहा— संकलणक्खेत्तं ठविय चरिमणिसियपमाणेण तच्छिय पुध ठविदे चडिदद्धाणमेत्तचरिमणिसेगा होंति ९ । १७ । सेसखेत्तं भागहारचदुगुणमेत्तसम-त्तिभुज चेट्ठदि । पुणो एद मज्झे छेत्तण समकरणे कदे भाग-

राशि करके गुणा करनेपर यह राशि उत्पन्न होती है $\sqrt{\frac{५३२९}{६४}}\ \sqrt{\frac{७३}{६४}} + \sqrt{\frac{७३}{६४}}\ \frac{+१}{८}$

यहां वाम और दक्षिण दिशामें स्थित करणिगत धन और ऋणके सदृश अंकोंका अपनयन कर शेष करणिगतका मूल इतना $\frac{७३}{८}$ होता है । इसमेंसे अधस्तन ऋण एक बटे आठको कम करके आठका भाग देने पर एक अधिक गुणहानि मात्र गोपुच्छ विशेषोंका संकलन होता है $\frac{७३}{८} - \frac{१}{८} = ७२,\ ७२ - ८ = ९$ ।

अब द्वितीय रूपके उत्पन्न करानेपर गुणहानिका प्रमाण ६४ है । गुणहानिका चौथा भाग १६ है । चौथे भागका वर्गमूल ४ है । चौथे भागके वर्गमूलसे गुणहानिअध्वानमें भाग देनेपर भागहारसे चौगुना १६ आता है । एक अधिक ऊपर जाकर इसे बांधनेवालेके रूपाधिक जितने स्थान आगे गये हों तन्मात्र अंकोंसे भाग देनेपर अन्तिम निषेकका भागहार होता है । यथा— संकलन क्षेत्रकी स्थापना करके अन्तिम निषेक प्रमाण छीलकर पृथक् रखनेपर जितने स्थान आगे गये हों उतने अन्तिम निषेक होते हैं ९ × १७ । शेष क्षेत्र भागहारसे चौगुना सम त्रिभुजाकार स्थित रहता है । फिर इसे बीचमें चीरकर समीकरण करनेपर भागहारसे चौगुना आयामवाला और दुगुना विस्तारवाला होकर

हारचदुगुणमेत्तायामदुगुणविक्खंभं होदूण चेट्ठदि | ४ | ११ / ४ | ११ |। दोण्णं खंडाणं विक्खंभा-

यामाणं पुध पुध संवग्ग काऊण उव्वरिदभागहारदुगुणमेत्तगोवुच्छविसेसेसु सेसगोवुच्छविसेसे घेत्तूण पक्खित्ते दोचरिमणिसेगा उप्पज्जंति । ते चरिमट्ठाणमेत्तचरिमणिसेगेसु पक्खिविय [९ | १९] चरिमणिसेगसलागाहि चरिमणिसेगभागहारे ओवट्टिदे इच्छिदभागहारो होदि । णवरि उव्वरिदविसेसागमणट्ठं किंचूण कायव्वं ।

संपहि एत्थ पुधट्ठाणपरूवणा कीरदे । तं जहा— दुगुणरूवाहियगुणहाणि मेत्तगोवुच्छविसेससंकलणं ठविय [१८] अट्ठहि उत्तरेहि य गुणिय उत्तरूवदुगुणादि पक्खित्ते एत्तियं होदि [१४५]। एदाए करणिपक्खेवमूलं | + / १ | । एदाओ दो वि रासीओ

समयाविरोहेण अच्छिदे गच्छो होदि | १४५ / ४ | + / १ / २ | । एत्थ रूवे पक्खित्ते चरिमट्ठाणं होदि ।

एदम्हादो गच्छादो सकलणायणविवरणं उप्पज्जदे । तं जहा— गच्छम्मि रिणरूवम्मि

स्थित रहता है $\frac{४ \mid ११}{४ \mid ११}$ । फिर दोनों खण्डोंके विष्कम्भ और आयामका अलग अलग संवर्ग करके शेष बचे भागहारके दूने मात्र गोपुच्छविशेषोंमेंसे दो गोपुच्छ-विशेषोंको ग्रहण कर मिलानेपर दो अन्तिम निषेक उत्पन्न होते हैं। उन्हें जितने स्थान आगे गये हों उतने अन्तिम निषेकोंमें मिलाकर ९ १९ अन्तिम निषेकोंकी शलाकाओंसे अन्तिम निषेकके भागहारमें भाग देनेपर इच्छित भागहार होता है। इतनी विशेषता है कि शेष बचे विशेषोंको लानेके लिये कुछ कम करना चाहिये।

अब यहां पृथक् स्थान का कथन करते हैं। यथा— एक अधिक गुणहानिको दूना करके जो संख्या उत्पन्न हो उतने गोपुच्छविशेषोंका संकलन (१८) स्थापित कर आठसे और उत्तरसे गुणित करके उसमें एक कम दूने आदि (एक) का वर्ग मिलानेपर इतना होता है १४५। [एक अधिक गुणहानिका दुगुणा ८ + १ = ९, ९ × २ = १८। १८ × ८ = १४४, उत्तरका प्रमाण १ १४४ × १ = १४४, (१ × २ = २, २ − १ = १), (१) = १, १४४ + १ = १४५।] यह करणिप्रक्षेपका मूल है $+\frac{}{१}$

[प्रक्षिप्तके प्रक्षेपका वर्गमूल १ है जो १४५ के वर्गमूलकी जगह प्राप्त है।] इन दोनों

राशियोंको यथाविधि स्थापित करनेपर गच्छ होता है $\sqrt{\frac{१४५}{४}} + \frac{१}{२}$ । इसमें एक मिलानेपर आगेका विवक्षित स्थान होता है।

अब इस गच्छके आधारसे संकलनके लानेका विवरण कहते हैं। यथा— [यहां दो गच्छ स्थापित करना चाहिये और उनमेंसे एक गच्छमें एक मिलाकर आधा करना चाहिये।] ऋण राशिके अर्ध भागको पदमेंसे कम कर शेष धनके अर्ध भागको

---

१ प्रतिषु चरिमेण इति पाठः। २ अप्रतौ पुधट्ठाण इति पाठः। ३ ताप्रतौ करणे इति पाठः। ४ ताप्रतौ अ(त)च्छिदे इति पाठः। ५ अ-काप्रत्योः सकलणायणविवरणं ताप्रतौ संकलणाणविवरण (?) मे इति पाठः।

फाडिय सेसधणद्धरूवं पक्खिविय अद्धिए एदं | १४५/१६ | १/४ |। एदेहि दोहि वि पुध पुध पडिरासिय गच्छ दुगुणिदे एत्तियं होदि | २१०२५/६४ | +१४५/६४ | +१४५/६४ | +१/८ |[1]। एत्थ वाम दाहिण-दिसाट्ठिदरासीणं धण रिणाणमवणयणं काऊण मूलं घेत्तूण रिणट्ठमभागमवणिय अट्ठहि भागे हिदे दोचरिमणिसेगा आगच्छंति | १८ |।

तिसु पक्खेवरूवेसु उप्पाइज्जमाणेसु गुणहाणिपमाणं छण्णउदी | ९६ |। एदस्स छब्भागो | १६ |। छब्भागमूलं | ४ |। एदेण अणवट्ठिदभागहारेण गुणहाणिम्हि भागे हिदे भागहारादो छगुणमागच्छदि। पुणो एदं रूवाहियमुवरि चडिदूण बंधमाणस्स ओवट्टण-रूवाणं पमाणं तिरूवाहियचडिदद्धाणं होदि। कुदो ? संकलणखेत्तं ठविय मज्झम्हि फाडिय समकरणे[2] कदे भागहारादो तिगुणविक्खंभ छग्गुणायामखेत्तुप्पत्तिदंसणादो। एदस्स खेत्तस्स

गच्छमें मिलाकर आधा करनेपर इतना होता है $\sqrt{\frac{१४५}{१६}} + \frac{१}{४}$। फिर इन दोनों ही राशियोंसे अलग अलग दुप्रतिराशि रूपसे स्थित गच्छको गुणित करनेपर इतना होता है $\sqrt{\frac{२१०२५}{६४}} - \sqrt{\frac{१४५}{६४}} + \sqrt{\frac{१४५}{६४}} - \frac{१}{८}$। यहां वाम और दक्षिण दिशामें स्थित धन और ऋण राशियोंका अपनयन करनेके पश्चात् वर्गमूल ग्रहण कर ऋण रूप एक बटे आठको घटा कर आठका भाग देनेपर दो अन्तिम निषेक आते हैं १८। [$\sqrt{\frac{२१०२५}{६४}} - \frac{१}{८} = \frac{१४५}{८} - \frac{१}{८} = \frac{१४४}{८} = १४४ - ८ = १८$, यह दो अन्तिम निषेक प्रमाण गोपुच्छविशेषोंका सकलन है। अर्थात् कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर $\sqrt{\frac{१४५}{४}} + \frac{१}{२}$ स्थान आगे जानेपर गोपुच्छविशेष दो अन्तिम निषेक प्रमाण होते हैं]।

तीन प्रक्षेप अंकोंको उत्पन्न कराते समय गुणहानिका प्रमाण छयानबै ९६ है। इसका छठा भाग १६ है। छठे भागका वर्गमूल ४ है। यह अनवस्थित भागहार है। इससे गुणहानिके भाजित करनेपर भागहारसे छहगुना आता है। फिर इससे एक अधिक स्थान आगे जाकर बांधनेवालेके अपवर्तन रूप अंकोंका प्रमाण तीन अंक अधिक जितने स्थान आगे गये हों उतना होता है, क्योंकि, संकलनक्षेत्रको स्थापित करके और बीचसे फाड़कर समीकरण करनेपर भागहारसे तिगुने विस्तारवाले और छहगुने आयामवाले क्षेत्रकी उत्पत्ति देखी जाती है। फिर इस क्षेत्रके विस्तारको

१ अप्रतौ | २१०२५/६४ | +१४५/६४ | +१/८ | एवंविधात्र संदृष्टिः । २ मप्रतिमाश्रित्य कृतसंशोधने ' समकरणी कदे ' इति पाठः ।

विक्खंभं तीहि खंडिय

४	२१
४	२४
४	२५

पुध पुध विक्खंभायामसंवग्गं काऊण उव्वरिदविसेसेसु तिण्णि विसेसे घेत्तूण पक्खित्ते तिगुणरूवाहियगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसा तिण्णिरूवुप्पत्तिणिमित्ता होंति। एदेसु रूवेसु चडिदद्धाणम्मि पक्खित्तेसु ओवट्टणरूवपमाणं होदि। तं चेदं [२८]। संपहि पुधद्धाणे[1] आणिज्जमाणे पुव्वं व किरिया कायव्वा। णवरि करणिगच्छो एसो

	+
२१७	१
४	२

। एदं रूवाहियं चडिदद्धाणं होदि।

तीनसे खण्डित कर ' तथा विष्कम्भ और आयामका अलग अलग संवर्ग करके शेष बचे हुए विशेषोंमें [२१, २१ ÷ १ = २१ √२१ = ४ २१ ÷ ४ = २४ = ४ × ६, २४ + १ = २५ स्थान २५ + ३ = २८ अपवर्तन अंक, १ से २१ अंक तकका जोड़ ५२५, (२५ × ९) + (१२ × २४) = ५१३, ५२५ - ५१३ = १२ बचे हुए विशेष] से तीन विशेषोंको ग्रहण करके मिलानेपर तीन अंकोंकी उत्पत्तिके निमित्तभूत एक अधिक गुणहानिसे तिगुने गोपुच्छविशेष होते हैं। फिर इन अंकोंको जितने स्थान आगे गये हैं उनमें मिलानेपर अपवर्तन रूप अंकोंका प्रमाण होता है। वह यह है २८। अब पृथक् अध्वानको लाते समय पहलेके समान क्रिया करनी चाहिये। इतनी विशेषता है कि यहांपर करणिगत गच्छका प्रमाण यह है $\sqrt{\frac{२१७}{४}} - \frac{१}{२}$। यह एक अधिक आगेका स्थान होता है।

विशेषार्थ — एक अधिक गुणहानिके तिगुने प्रमाण गोपुच्छविशेषसंचयका स्थान — एक अधिक गुणहानि ८ + १ = ९ का तिगुना ९ × ३ = २७, २७ × ८ = २१६, २१६ + १ = २१७, २१७ का वर्गमूल √२१७ यह करणिगत है। √२१७ में से १ घटाकर आधा करनेपर $\sqrt{\frac{२१७}{४}} - \frac{१}{२}$ गच्छका प्रमाण आता है, और एक अधिक करनेपर आगेका स्थान होता है। $\sqrt{\frac{२१७}{४}} - \frac{१}{२}$ का संक्रमण लानेके लिये इस राशिको दो जगह अलग अलग स्थापित करके उनमेंसे एक राशिमें एक जोड़कर $\sqrt{\frac{२१७}{४}} + \frac{१}{२}$। आधा करनेपर $\sqrt{\frac{२१७}{१६}} + \frac{१}{४}$ आता है। इससे पूर्वराशिको गुणा करनेपर $\sqrt{\frac{४७०८९}{६४}}$ $- \sqrt{\frac{२१७}{१६}} + \sqrt{\frac{२१७}{१६}} - \frac{१}{८} = \sqrt{\frac{४७०८९}{६४}} - \frac{१}{८} = \frac{२१७}{८} - \frac{१}{८} = \frac{२१६}{८} = २७$।

---

१ अ-काप्रत्योः 'पुधट्ठाणे' इति पाठः।

चत्तारिरूवुप्पत्तिमिच्छिज्जमाणे गुणहाणिपमाणमेदं [१२८] । एदस्स अट्ठमभागो [१६] । एदस्स वग्गमूलं [४] । एदेण गुणहाणिमोवट्टिदे भागहारादो अट्ठगुणमागच्छदि। एद रूवाहियं चडिदद्धाणं । पुणो चडिदद्धाणमेत्तचरिमणिसेगेसु तच्छेदूण अवणिदेसु एत्तिया चरिमणिसेगा होंति [९ | ३३] । पुणो सेसतिकोणखेत्तं मज्झे फाडिय समकरणे कदे भागहारादो चदुग्गुणविक्खंभमट्ठगुणायामं खेत्तं होदि

४	३२
४	३२
४	३२
४	३२

[1] । एत्थ विक्खंभायामाणं पुध पुध संवग्गं काऊण चत्तारिविसेसेसु पक्खित्तेसु चत्तारिचरिमणिसेगा होंति। एदेसु चडिदद्धाणम्मि पक्खित्तेसु ओवट्टणरूवाणं पमाणं होदि [३७] ।

पंचरूवेसु उप्पाइज्जमाणेसु गुणहाणिपमाणं [१६०] । दसमभागो [१६] । एदस्स

चार अंकोंकी उत्पत्ति चाहनेपर गुणहानिका प्रमाण यह है १२८ । इसका आठवां भाग १६ है। इसका वर्गमूल ४ है। इससे गुणहानिको भाजित करनेपर भागहारसे आठगुना आता है । यह एक अधिक आगेका स्थान है। फिर जितने स्थान आगे गये हैं उतने अन्तिम निषेकोंको छील कर पृथक् कर देनेपर इतने अन्तिम निषेक होते हैं ९, ३३। फिर शेष बचे त्रिकोण क्षेत्रको बीचसे फाड़ कर समीकरण करनेपर भागहारसे चौगुने विस्तारवाला और आठगुने आयामवाला क्षेत्र होता है

४	३२
४	३२
४	३२
४	३२

। फिर यहां विष्कम्भ और आयामका अलग अलग सवर्ग करके चार विशेषोंके मिलानेपर चार अन्तिम विषेक होते हैं। इन्हें जितने स्थान आगे गये हैं उनमें मिलानेपर अपवर्तन रूप अंकोंका प्रमाण होता है ३७।

विशेषार्थ — गुणहानि १२८, $१२८ \div ८ = १६$ $\sqrt{१६} = ४$, $१२८ \div ४ = ३२ = ४ \times ८$, $३२ + १ = ३३$, $(९ \times ३३) + (३२ \times १६) = ८०९$, ९ से ४१ तक अंकोंका जोड़ ८२५, $८२५ - ८०९ = १६$ शेष बचे गोपुच्छाविशेष। $३३ + ४ = ३७$ अपवर्तन अंक। यहांपर करणिगत गच्छका प्रमाण यह है— $\sqrt{\frac{२९९}{४}} - \frac{१}{२}$, इससे १ अधिक आगेका विवक्षित स्थान होता है।

पाच अंकोंको उत्पन्न करानेपर गुणहानिका प्रमाण १६० है। दसवां भाग

---

१ प्रतिषु संदृष्टिरियं 'चत्तारिचरिमणिसेगा होंति' इत्यत पश्चादुपलभ्यते ।

वग्गमूलेण गुणहाणिम्मि भागे हिदे भागहारादो दसगुणमागच्छदि [४०]। सेसं पुव्वं व वत्तव्वं ।

छरूवेसु उप्पाइज्जमाणेसु गुणहाणिपमाणं [१९२]। बारसमभागो [१६]। एदस्स वग्गमूलेण [गुणहाणिम्मि] भागे हिदे भागहारादो बारसगुणमागच्छदि [४८]। सेसं पुव्वं व वत्तव्वं ।

सत्तरूवेसु उप्पाइज्जमाणेसु गुणहाणिपमाणं [२२४]। गुणहाणिचोद्दसमभागो [१६]। एदस्स वग्गमूलेण गुणहाणिम्मि[1] भागे हिदे भागहारादो चोद्दसगुणमागच्छदि। रूवाहियमेव परिहरदाणं होदि [५७]। सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

अट्ठरूवपक्खेवे इच्छिज्जमाणे गुणहाणिपमाणं [२५६]। सोलसमभागो [१६]। एदस्स वग्गमूलेण गुणहाणिम्हि भागे हिदे भागहारादो सोलसगुणमागच्छदि। एवं रूवाहियं परिहरदाणं होदि। सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

---

१६ है। इसके वर्गमूलका गुणहानिमें भाग देनेपर भागहारका दसगुणा आता है ४०। शेष कथन पहलेके समान करना चाहिये। [१६० ÷ १० = १६, √१६ = ४ १६० — ४ = ४० = ४ × १० ४० + १ = ४१ स्थान, (९ × ४१) + (१० × ४०) = ११६९, ९ से ४९ तक अंकोंका जोड़ ११८९, ११८९ - ११६९ = २० शेष गो बि। ४१ + ५ = ४६ अपवर्तन अंक। करणिगत गच्छ $\sqrt{\frac{१११}{४}} - \frac{१}{२}$ ।]

छह अंकोंको उत्पन्न कराते समय गुणहानिका प्रमाण १९२ है। बारहवां भाग १६ है। इसके वर्गमूलका [गुणहानिमें] भाग देनेपर भागहारसे बारहगुणा ४८ आता है। शेष कथन पहलेके ही समान करना चाहिये। [१९२ ÷ १२ = १६, √१६ = ४ १९२ — ४ = ४८ = १२ × ४ ४८ + १ = ४९ स्थान, (९ × ४९) + (१४ × ४८) = १५९३, ९ से ५७ तक अंकोंका जोड़ १६१७ १६१७ - १५९३ = २४ शेष गो बि। ४९ + ६ = ५५ अपवर्तन अंक। करणिगत गच्छ $\sqrt{\frac{७१२}{४}}$ $\frac{१}{२}$ ।

सात रूपोंके उत्पन्न कराते समय गुणहानिका प्रमाण २२४ और गुणहानिका चौदहवां भाग १६ है। इसके वर्गमूलका गुणहानिमें भाग देनेपर भागहारसे चौदह गुणा आता है (२२४ ÷ ४ = ५६)। यह एक अधिक भागेका स्थान होता है। (५६ + १ = ५७)। शेष जानकर कहना चाहिये।

आठ अंकोंके प्रक्षेपकी इच्छा करनेपर गुणहानिका प्रमाण २५६ और इसका सोलहवां भाग १६ है। इसके वर्गमूलका गुणहानिमें भाग देनेपर भागहारसे सोलहगुणा आता है। इसमें एक मिलानेपर भागेका स्थान होता है। शेष जानकर कहना चाहिये।

---

१ प्रतिषु 'इमे चोद्दस', ताम्रप्रतौ '[इमे] चोद्दस' इति पाठः।

एवमुवरिमरूवाणि णव दस एक्कारस बारसादीणि उप्पाएदव्वाणि । णवरि दुगुणिद-रूवेहि गुणहाणिमोवट्टिय लद्धस्स वग्गमूलमणवट्ठिदभागहारो होदि त्ति सव्वत्थ वत्तव्वं । जहण्णपरित्तासंखेज्जमेत्तरूवाणि केत्तियमद्धाणं गतूण उप्पज्जंति त्ति उत्ते दुगुणजहण्णपरित्ता-संखेज्जेण भागहारं गुणिय रूवे पक्खित्ते जो रासी उप्पज्जदि सो चडिदद्धाणं । सेसमेत्थ जाणिय वत्तव्वं । एवमावलिय-पदरावलियादिरूवाणमुप्पत्ती[1] जाणिदूण वत्तव्वा । एवमोवट्टण-रूवेसु वड्ढमाणेसु भागहारे च झीयमाणे केत्तियमद्धाणमुवरि चडिदूण बद्धसमयपबद्धसंचयस्स पलिदोवमं भागहारो होदि त्ति उत्ते पलिदोवमवग्गसलागाणं बेत्तिभागेण सादिरेगेण गुण-हाणिम्हि ओवट्टिदे लद्धं रूवाहियमेत्तं कम्मट्ठिदिपढमसमयादो उवरि चडिदूण बद्धदव्व-संचयस्स पलिदोवमं भागहारो होदि । तं जहा— पलिदोवमेण चरिमणिसेगभागहारे ओवट्टिदे पक्खेवरूवसहिदं चडिदद्धाणं होदि, पलिदोवमवग्गसलागाणं सादिरेयबेत्तिभागेहि गुणहाणिअद्धाणे भागे हिदे लद्धरूवाहियचडिदद्धाणसमुप्पत्तीदो । तेण पलिदोवमवग्गसलागाणं बेत्तिभागं विरलिय गुणहाणिअद्धाणं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि पक्खेवरूवसहिदं चडिदद्धाणं पावदि ।

इसी प्रकार नौ, दस, ग्यारह और बारह आदि उपरिम अंकोंको उत्पन्न कराना चाहिये । विशेष इतना है कि दुगुणित अंकोंका गुणहानिमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसका वर्गमूल अनवस्थित भागहार होता है, ऐसा सर्वत्र कहना चाहिये । कितना अध्वान जाकर जघन्य परीतासंख्यात प्रमाण अंक उत्पन्न होते हैं, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि दूने जघन्य परीतासंख्यातसे भागहारको गुणित करके और उसमें एकका प्रक्षेप करनेपर जो राशि उत्पन्न होती है वह आगेका स्थान है । शेष यहां जानकर कहना चाहिये । इसी प्रकार आवली और प्रतरावली आदि रूपोंकी उत्पत्तिको जानकर कहना चाहिये । इस प्रकार अपवर्तन रूपोंके बढ़नेपर और भागहारके क्षीयमान होनेपर कितने स्थान आगे जाकर बांधे गये समयप्रबद्धके संचयका पल्योपम भागहार होता है, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि पल्योपमकी वर्गशलाकाओंके साधिक दो त्रिभागका गुणहानिमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसमें एक मिलाकर प्राप्त हुई राशि मात्र कर्मस्थितिके प्रथम समयसे आगे जाकर बांधे हुए द्रव्यका पल्योपम भागहार होता है । यथा– पल्योपम द्वारा अन्तिम निषेकके भागहारको अपवर्तित करनेपर प्रक्षेप रूपसे सहित आगेका स्थान होता है, क्योंकि, पल्योपमकी वर्गशलाकाओंके साधिक दो त्रिभागोंका गुणहानिअध्वानमें भाग देनेपर लब्ध हुई राशिसे एक अधिक आगेका विवक्षित स्थान उत्पन्न होता है । इसीलिये पल्योपमकी वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंका विरलन करके गुणहानिअध्वानको समखण्ड करके देनेपर विरलन राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रक्षेप अंक सहित आगेका विवक्षित अध्वान प्राप्त होता है ।

१ अप्रतौ ' मेव ' इति पाठः । २ मप्रतिषु ' एद- ' इति पाठः । ३ मप्रतौ ' रूवाणिमुप्पत्ती ' इति पाठः ।

एत्थ जधा पक्खेवरूवाणि हाइदूण चडिदद्धाणं चेव गुणगारमागच्छदि तधा परूवणं कस्सामो। तं जहा— उक्कस्सभागहारं वग्गिय दुगुणिय गुणहाणिअद्धाणे भागे हिदे पक्खेवरूवाणि आगच्छंति। तेसिं ठवणा [१११][1]। पुणो दुगुणिदपक्खेवरूवेहि अवट्ठिद भागहारे गुणिदे अद्धाणपमाणं होदि। पुणो एगरूवे पक्खित्ते चडिदद्धाणं होदि। तस्स ठवणा [१/११२ | २ | १ | १][2]। दुगुणिदअवट्ठिदभागहारेण रूवाहिएण पक्खेवरूवाणि गुणिय पच्छा एगरूवे पक्खित्ते पक्खेवरूवसहिदचडिदद्धाणं होदि। एदस्स आगमणट्ठं गुणहाणीए भागहारो पलिदोवमवग्गसलागाए बेत्तिभागो। एदस्स ठवणा [७/१ | ७][3] एवं होदि त्ति कादूण पक्खेवरूवम्हि एगरूवधरिदे भागे हिदे अवट्ठिदभागहारो दुगुणो एगरूवेण एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेण अहियो आगच्छदि। पुणो तं विरलिय उवरिमेगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे पक्खेवरूवपमाणं पावदि। तमुवरिमरूवधरिदे अवणिदे अवणिदसेसं[4] चडिदद्धाणं होदि। हेट्ठिमविरलणरूवूणमेत्तपक्खेवरूवाणं जदि एगा अवहारपक्खेवसलागा

यहां जिस प्रकारसे प्रक्षेप अंक हीन होकर भागेका विवक्षित अध्वान ही गुणकार आता है उस प्रकारसे प्ररूपणा करते हैं। यथा— उत्कृष्ट भागहारका वर्ग करके द्विगुणित कर गुणहानिअध्वानमें भाग देनेपर प्रक्षेप अंक आते हैं। उनकी स्थापना १११। फिर द्विगुणित प्रक्षेप अंकोंसे अवस्थित भागहारको गुणित करनेपर अध्वानका प्रमाण होता है। पुनः उसमें एक अंक प्रक्षेप करनेपर भागेका विवक्षित अध्वान होता है। उसकी स्थापना— (मूलमें देखिये)। द्विगुणित अवस्थित भागहारमें एक मिलाकर उससे प्रक्षेप रूपोंको गुणित कर पश्चात् उसमें एक अंक मिलानेपर प्रक्षेपरूप सहित भागेका विवक्षित अध्वान होता है। इसके निकालनेके लिये गुणहानिका भागहार पल्योपमकी वर्गशलाकाओंके दो त्रिभाग मात्र है। इसकी स्थापना [२] ऐसी है ऐसा मानकर एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त प्रक्षेप रूपमें भाग देनेपर एक और एकके असंख्यातवें भागसे अधिक दूना अवस्थित भागहार आता है। पश्चात् उसका विरलन कर उपरिम एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रक्षेप रूपोंका प्रमाण प्राप्त होता है। इसको उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यमेंसे कम करनेपर शेष भागेका विवक्षित अध्वान होता है। अधस्तन विरलनमेंसे एक कम करके तन्मात्र प्रक्षेप रूपोंकी यदि एक अवहारप्रक्षेप

---

१ अप्रतौ [१/१११] आप्रतौ [७/८१] ताम्रप्रतौ [७/१११] मप्रतौ [१२] इति पाठः।

२ अ-आप्रत्योः [२/१११ | २ | १ | १] ताप्रतौ २ १-१। [८/१११] इति पाठः।

३ अप्रतौ [७/४/१ | २], आप्रतौ [२/४/१ | २] ताप्रतौ [८/४/१] २ इति पाठः। ४ मप्रतौ 'अवणिदेसु अवणिदेसु अवणिदे सेसं' इति पाठः।

लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्ताण किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स दुभागो[1] एगरूवासंखेज्जदिभागेण ऊणो आगच्छदि। तं पलिदोवमवग्गसलागाण वेत्तिभागे पक्खिविय गुणहाणिम्हि ओवट्टिदे चडिदद्धाणं होदि। पुणो एत्थ पक्खेवरूवाणि दादूण चरिमणिसेगभागहारे ओवट्टिदे पलिदोवममागच्छदि त्ति सिद्धं।

अधवा वग्गसलागाणं वेत्तिभागाणं उवरि सादिरेग एवं वा आणेदव्वं। तं जहा— ओवट्टणरूवेहि गुणहाणिम्हि ओवट्टिदे वग्गसलागाण वेत्तिभागो आगच्छदि। तं विरलेदूण गुणहाणिं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि ओवट्टणरूवपमाणं पावदि। पुणो एत्थ रूवाहियपक्खेवरूवाणं अवणयण कस्सामो। त जहा— रूवाहियपक्खेवरूवेहि एगरूवधरिदं भागं घेत्तूण लद्धं हेट्ठा विरलेदूण उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि रूवाहियपक्खेवरूवाणि पावंति। एदाणि उवरिमरूवधरिदेसु अवणिदे अवणिदसेसं लद्धपमाणं होदि। अवणिदरूवाहियपक्खेवरूवाणि लद्धपमाणेण कीरमाणे रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्ताण जदि एगपक्खेवसलागा लब्भदि तो ओवट्टीणंरूवोवट्टिदगुणहाणिमेत्तुवरिमविरलणम्हि किं लभामो त्ति हेट्ठिमविरलण रूवूण कीरमाणे छेदमेत्तं अवणेदव्वं।

शलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलन मात्र द्रव्यमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक रूपके असंख्यातवें भागसे हीन एक रूपका द्वितीय भाग आता है। उसको पल्योपमकी वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंमें मिलाकर उससे गुणहानिको अपवर्तित करनेपर आगेका विवक्षित अध्वान होता है। फिर इसमें प्रक्षेप रूपोंको देकर अन्तिम निषेकभागहारको अपवर्तित करनेपर पल्योपम आता है, ऐसा सिद्ध होता है।

अथवा [पल्योपमकी] वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंके ऊपर साधिक इस प्रकार लाना चाहिये। यथा— अपवर्तन रूपोंका गुणहानिमें भाग देनेपर वर्गशलाकाओंका दो त्रिभाग आता है। उसका विरलन करके गुणहानिको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति अपवर्तन रूपोंका प्रमाण प्राप्त होता है। अब यहां एक अधिक प्रक्षेप रूपोंका अपनयन करते हैं। यथा— एक रूपसे अधिक प्रक्षेप रूपोंका एक विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यमें भाग देकर जो लब्ध हो उसका नीचे विरलन करके उपरिम एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति रूपाधिक प्रक्षेप रूप प्राप्त होते हैं। इनको उपरिम विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यमेंसे कम करनेपर जो शेष रहे वह लब्धका प्रमाण होता है। कम किये गये एक अधिक प्रक्षेप रूपोंको लब्धके प्रमाणसे करनेपर एक कम अधस्तन विरलन मात्र अंकोंकी यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो अपवर्तन रूपोंसे अपवर्तित गुणहानि मात्र उपरिम विरलन राशिमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार अधस्तन विरलनमेंसे एक कम करते हुए छेद मात्र कम

---

१ ताप्रतौ 'ओवट्टिदाए एगरूवस्स दुभागो' इत्यय पाठस्त्रुटित। २ अ-काप्रत्योः 'ओवट्टीण' इति पाठ।

अवणिदे हेट्ठुवरि[1] रूवाहियपक्खेवरूवाणि लद्धं च होदूण चिट्ठदि । एदेण उवरिमविरलणम्हि भागम्हि घेप्पमाणे हेट्ठिमरूवाहियपक्खेवरूवाणि उवरिमगुणहाणीए गुणगाराणि होंति । पुणो हेट्ठुवरिमलद्ध गुणहाणी च अण्णोण्णं ओवट्टिज्जमाणे हेट्ठा एगरूवं उवरिमागहारमेत्ताणि । पुणो रूवाहियपक्खेवरूवेसु एगरूवमवणिदे भागहारमेत्तं ओसरदि, अवसेसपक्खेवरूवाणि भागहारेण गुणिदे लद्धसलागा होदि । पुणो हेट्ठिमछेदं ओवट्टणरूवाणि ताणि लद्धं पक्खेवरूवाणि एगरूवं च अणुवलंभाणि[2] विरलेदूण लद्धसलागा लद्धमेत्तविरलिदरूवाणं दिज्जमाणे अद्धद्धरूवं पावदि । पुणो ओसरिदभागहारमेत्तरूवाणि दुगुणभागहारमेत्तरूवाणं दिज्जमाणे एदाणं पि अद्धद्धरूवं पावदि । पुणो रूवाहियपक्खेवरूवाणि दुगुणभागहारेणूणाणि अणादेयाणि चेट्ठंति । पुणो तेसिं पि दादुमिच्छिय एगरूवधरिदं सयलविरलणमेत्तखंडाणि कादूण तत्थ दुगुणभागहारेणूणरूवाहियपक्खेवरूवमेत्ताणि खंडाणि घेत्तूण अणादेयरूवेसु रूवं पडि दादूण एवं सेसरूवधरिदेसु वि घेत्तूण समकरणं कादव्वं । एवं कदे रूवं पडि अद्धरूवं ओवट्टण-रूवमेत्तखंडाणि कादूण दुगुणभागहारेणब्भहियलद्धमेत्तखंडाणि होंति । जदि दुगुणभागहारे-णूणरूवाहियपक्खेवरूवमेत्तखंडाणि होंति तो अद्धरूवं होदि । ण च एत्तियमत्थि । तेण

करना चाहिये। कम करनेपर नीचे व ऊपर एक अधिक प्रक्षेप रूप और लब्ध होकर स्थित होता है। इसका उपरिम विरलन राशिमें भाग देनेपर नीचेके एक अधिक प्रक्षेप रूप उपरिम गुणहानिके गुणकार होते हैं। पुनः अधस्तन व उपरिम लब्ध और गुणहानि इनको परस्परमें अपवर्तित करनेपर नीचे एक रूप ऊपर भागहार मात्र होते हैं। पुनः एक अधिक प्रक्षेप रूपोंमेंसे एक रूपको कम करनेपर भागहार मात्र कम होता है। शेष प्रक्षेप रूपोंको भागहारसे गुणित करनेपर लब्धका आधा होता है। पुनः अधस्तन छेदको उन अपवर्तित रूपोंको लब्धको प्रक्षेप रूपों व एक रूपको अनुपलभमान विरलित करके लब्धके अर्ध भागको लब्ध मात्र विरलित रूपोंके ऊपर देनेपर आधा आधा रूप प्राप्त होता है (?)। पुनः अलग किये गये भागहार मात्र रूपोंको दुगुणे भागहार प्रमाण रूपोंके ऊपर देनेपर इनके प्रति भी आधा आधा रूप प्राप्त होता है। पुनः एक अधिक प्रक्षेप अंक दुगुण भागहारसे कम होकर अनादेय स्थित रहते हैं। फिर उनके भी देनेकी इच्छा करके एक रूपपर रखी हुई राशिके समस्त विरलन राशि प्रमाण खण्ड करके उनमेंसे दुगुण भागहारसे हीन एक अधिक प्रक्षेप रूपों प्रमाण खण्डोंको ग्रहण करके अनादेय रूपोंमेंसे प्रत्येक रूपके प्रति देकर इसी प्रकार शेष रूपधरितोंमेंसे भी ग्रहण करके समकरण करना चाहिये। ऐसा करनेपर प्रत्येक अंकके प्रति अर्ध रूपके अपवर्तन रूपों प्रमाण खण्ड करके दुगुणे भागहारसे अधिक लब्ध प्रमाण खण्ड होते हैं। यदि दुगुणे भागहारसे हीन एक अधिक प्रक्षेप रूपों प्रमाण खण्ड होते हैं तो अर्ध रूप होता है। परन्तु इतना

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'अवणिदे हेट्ठीव.' ताप्रतौ 'अवणिदे हेट्ठी' इति पाठः ।

२ आ-काप्रत्योः 'अणुवलंभाणि' ताप्रतौ 'अणुवलंभम्मि' (ता.) 'अणुवलंभाणि' इति पाठः ।

किंचूणद्धरूवं वग्गसलागबेत्तिभागाणमुवरि पक्खित्ते लद्धागमणट्ठं भागहारो होदि।

अधवा पलिदोवमवग्गसलागबेत्तिभागाणमुवरि केत्तिएण वि अधियं जादे भागहारो होदि। त पुण ताव एत्तियमिदि ण णव्वदे। त पुण पच्छा जाणाविज्जदे। तं ताव वग्गसलागबेत्तिभागाण उवरि[2] पक्खिविय भागहारमिदि कप्पिऊण विरलिय समखंडं कादूण दिण्णे रूव पडि लद्धपमाणं पावदि।

पुणो एत्थ रूवाहियपक्खेवरूवाणि लद्धरूवेहि सह जहा एगभागहारेण गच्छंति तहा किरियं करिस्सामो। त जहा— रूवाहियपक्खेवरूवेहि एगरूवधरिद लद्धपमाणं भागं हरिय हेट्ठा विरलेदूण एगरूवधरिदं समखंड कादूण दिण्णे रूव पडि रूवाहिय-पक्खेवरूवाणि पावेंति। एदाणि उवरिमरूवधरिदेसु दादूण समकरणं कायव्वं। संपहि परिहीणरूवपमाणाणयणं उच्चदे। त जहा— रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं उवरि गंतूण जदि एगा परिहाणिसलागा लब्भदि तो सयलउवरिमविरलणम्हि केत्तियाणि परिहाणिरूवाणि लभामो त्ति रूवाहिय कीरमाणे छेदमेत्तं पक्खिविदव्व। पक्खित्ते उवरि ओवट्टणरूवाणि हेट्ठा रूवाहियपक्खेवरूवाणि एदेहि भागहारमोवट्टिदे हेट्ठिमच्छेदो भागहारस्स गुणगारो होदि। पुणो ओवट्टणरूवाणि विरलिय भागहारगुणिदरूवाहियपक्खेवरूवाणि[4] पुव्वं व

है नहीं, अत एव कुछ कम अर्ध रूपका वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंके ऊपर प्रक्षेप करनेपर लब्धको लानेके लिये भागहार होता है।

अथवा, पल्योपमकी वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंके ऊपर कुछ प्रमाणसे अधिक होनेपर भागहार होता है। परन्तु वह इतना है, ऐसा नहीं जाना जाता है। उसे पीछे ज्ञात कराया जाता है। उसका वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंके ऊपर प्रक्षेप करके भागहारकी कल्पना कर विरलित करके समखण्ड करके देनेपर रूपके प्रति लब्धका प्रमाण प्राप्त होता है।

अब यहां एक अधिक प्रक्षेप रूप लब्ध रूपोंके साथ जिस प्रकार एक भागहारसे जाते हैं उस प्रकारकी क्रियाको करते हैं। वह इस प्रकार है— एक अधिक प्रक्षेप रूपोंसे एक रूपधरित लब्ध प्रमाण भागको अपहृत करके नीचे विरलित कर एक रूपधरित राशिको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक अंकके प्रति एक अधिक प्रक्षेप रूप प्राप्त होते हैं। इनको उपरिम रूपधरित राशियोंपर देकर समकरण करना चाहिये। अब परिहीन रूपोंके लानेके विधानको कहते हैं। वह इस प्रकार है— एक अधिक अधस्तन विरलन राशि प्रमाण अध्वान ऊपर जाकर यदि एक परिहानि-शलाका प्राप्त होती है तो समस्त उपरिम विरलन राशिमें कितने परिहानि रूप प्राप्त होंगे, इस प्रकार रूप अधिक करते समय छेद मात्रका प्रक्षेप करना चाहिये। उक्त प्रकारसे प्रक्षेप करनेपर ऊपर अपवर्तन रूप व नीचे रूप अधिक प्रक्षेप रूप, इनसे भागहारको अपवर्तित करनेपर अधस्तन छेद भागहारका गुणकार होता है। फिर अपवर्तन रूपोंका विरलन करके भागहारसे गुणित रूप अधिक प्रक्षेप- रूपोंको

---

१ अ-काप्रत्योः 'सलागा' इति पाठः। २ अप्रतौ 'उवरिम' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'अद्ध' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'भागहारगुणियपक्खेवरूवाणि' इति पाठः।

कादूण किंचूणद्धरूवं दरिसेयव्वं। एवं भागहारम्हि अवणिदे अवणिदसेसं वग्गसलागाणं बेत्तिभागा होंति। एदेहि गुणहाणिमोवट्टिदे रूवाहियपक्खेवरूवसहिदलद्धमागच्छदि। अथवा किंचूणद्धरूवं एवं वा आणेदव्वं। तं जहा— वग्गसलागाणं बेत्तिभागे विरलिय गुणहाणिं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि ओवट्टणरूवपमाणं पावदि। पुणो एत्थ रूवाहियपक्खेवाणं अवणयणं[1] कीरमाणे भागहारवड्ढी कीरदे। तं जहा— तेहि चेव रूवाहियपक्खेवरूवेहि एगरूवधरिदमोवट्टिय हेट्ठा विरलिय उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे रूवाहियपक्खेवरूवाणि पावेंति। पुणो एदेण पमाणेण उवरिमसव्वरूवधरिदेसु अवणिदे अवणिदसेसं लद्धपमाणं होदि। पुणो अवणिददव्वं सेसपमाणेण कीरमाणे रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्ताणं जदि एक्का पक्खेवसलागा लब्भदि तो वग्गसलागबेत्तिभागाणं किं लभामो त्ति रूवूणं कीरमाणे छेदमेत्तमवणेदव्वं। अवणिदे हेट्ठा उवरिं च रूवाहियपक्खेवरूवाणि लद्धं च होदि। एदेण भागे हिदे हेट्ठिमछेदो वग्गसलागबेत्तिभागाणं गुणगारो होदि। एवं गुणिदे किमट्ठुप्पण्णं त्ति ण णव्वदे। तेण वग्गसलाग

पूर्वके समान देकर कुछ कम अर्ध रूपको दिखलाना चाहिये। इसको भागहारमेंसे कम करनेपर शेष वर्गशलाकाओंके दो त्रिभाग होते हैं। इनसे गुणहानिको अपवर्तित करनेपर एक अधिक प्रक्षेप रूपों सहित लब्ध आता है। अथवा, कुछ कम अर्ध रूपको इस प्रकारसे लाना चाहिये। यथा— वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंका विरलन करके गुणहानिको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक अंकके प्रति अपवर्तन रूपोंका प्रमाण प्राप्त होता है।

अब यहां एक अधिक प्रक्षेप रूपोंका अपनयन करनेपर भागहारकी वृद्धि की जाती है। वह इस प्रकार है— एक अधिक उन्हीं प्रक्षेप रूपोंसे एक रूपधरित राशिको अपवर्तित करके नीचे विरलित कर उपरिम एक रूपधरित राशिको समखण्ड करके देनेपर एक अधिक प्रक्षेप रूप प्राप्त होते हैं। पुनः इस प्रमाणसे ऊपरकी सब रूपोंपर रखी हुई राशियोंमेंसे कम करनेपर अपनयनसे शेष रहा लब्धका प्रमाण होता है। फिर कम किये गये द्रव्यको शेषके प्रमाणसे करनेपर एक कम अधस्तन विरलन मात्र स्थानक यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंमें कितनी प्रक्षेपशलाकायें प्राप्त होंगी इस प्रकार रूपसे कम करके समप छेद मात्रको कम करना चाहिये। इस प्रकार कम करनेपर नीचे व ऊपर एक अधिक प्रक्षेप रूप व लब्ध होता है। इसका भाग देनेपर अधस्तन छेद वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंका गुणकार होता है। इस प्रकारसे गुणित करनेपर यहां क्या उत्पन्न होता है यह ज्ञात नहीं होता। इसलिये वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंके ऊपर

---

१ अप्रतिपाठोऽयम्। अ-आप्रत्योः 'रूवाहियपक्खे सेसपक्खेवाणमवणयणं' इति पाठः।

२ अ-आप्रत्योः 'एसो पक्खेवसलागा, तम्हि एसो पक्खेवसलागे' इति पाठः।

बेत्तिभागाणं उवरि पुव्विल्लकिंचूणद्धरूवं पक्खित्ते भागहारो होदि। एवं पक्खित्ते रूवाहिय-पक्खेवरूवेहि गुणिदकिंचूणद्धरूवं पविसदि[1]। तं ताव पविट्ठअभावदव्वं पच्छा अवणेदव्व। रूवाहियपक्खेवरूवेसु रूवं अवणिदे भागहारमेत्त ओसरदि। सेसपक्खेवरूवेहि भागहार गुणिदे लद्धस्सद्धं होदि। हेट्ठिमछेदभूदलद्ध विरलिय लद्धस्सद्धं समखंड कादूण दिण्णे अद्धद्धरूवं पावदि। पुणो अवणिदभागहारमेत्तरूवाणि वि समखंड कादूण दिण्णे लद्धेण भागहारं खंडेदूण एगेगं खंडं पावदि। पुणो अद्धरूवेण सह सरिसछेदं कादूण मेलाविदे हेट्ठा उवरिं च दुगुणलद्ध दुगुणभागहारेणाहियलद्धं च होदूण रूव पडि चेट्ठदि। पुणो एदेसु सव्वरूवधरिदेसु पुव्वपविट्ठअभावदव्वं केत्तियमिदि भणिदे हेट्ठा दुगुणोवट्टणरूवाणि उवरि रूवाहियपक्खेवरूवाणि दुगुणभागहारेणब्भहियलद्धं च गुणगार-गुणिज्जमाणसरूवेण ट्ठिदं एद[2] सव्वरूवधरिदेसु अवणिज्जमाण होदि। एदं चेव लद्धेण खंडिदे एगेगरूव-धरिदस्सुवरि अवणिज्जमाणं होदि। पुणो एगेगरूवधरिदं सरिसछेदं कीरमाणे ओवट्टण-रूवेहि हेट्ठुवरि गुणिय रूवाहियपक्खेवाणि अवणिदे पविट्ठअभावदव्वं फिट्टदि। अवणिद-सेसं पि ओवट्टिज्जमाणे हेट्ठिम-उवरिम-उवरिमलद्धाणि अवणिदे सेस अद्धरूवं ओवट्टण-

......

पूर्वोक्त कुछ कम अर्ध रूपका प्रक्षेप करनेपर भागहार होता। इस प्रकारसे प्रक्षेप करनेपर एक अधिक प्रक्षेप रूपोंसे गुणित कुछ कम अर्ध रूप प्रविष्ट होता है। उस प्रविष्ट अभाव द्रव्यको पीछे कम करना चाहिये। एक अधिक प्रक्षेप रूपोंमेंसे एक अंकको कम करनेपर भागहार मात्र कम होता है। शेष प्रक्षेप रूपोंसे भागहारको गुणित करनेपर लब्धका आधा होता है। अधस्तन छेदभूत लब्धका विरलन करके लब्धके अर्ध भागको समखण्ड करके देनेपर अर्ध अर्ध रूप प्राप्त होता है। पश्चात् कम किये गये भागहार प्रमाण रूपोंको भी समखण्ड करके देनेपर लब्धसे भागहारको खण्डित कर एक एक खण्ड प्राप्त होता है। फिर अर्ध रूपके साथ समच्छेद करके मिलानेपर नीचे व ऊपर दुगुणा लब्ध और दुगुणे भागहारसे अधिक लब्ध होकर रूपके प्रति स्थित होता है। अब इन समस्त रूपधरित राशियोंमें पूर्व प्रविष्ट अभाव द्रव्य कितना है, ऐसा पूछे जानेपर उत्तर देते हैं कि नीचे दुगुणे अपवर्तन रूप, ऊपर एक अधिक प्रक्षेप रूप और गुणकार व गुण्य स्वरूपसे स्थित एव दुगुणे भागहारसे अधिक लब्ध, यह सब रूपधरितोंमें अपनीयमान द्रव्य है। इसको ही लब्धसे खण्डित करनेपर एक एक रूपधरित राशिके ऊपर अपनीयमान द्रव्य होता है। पुन एक एक रूपधरितको समच्छेद करते समय अपवर्तन रूपोंसे नीचे व ऊपर गुणित करके एक अधिक प्रक्षेपोंको कम करनेपर प्रविष्ट अभाव द्रव्य फिट जाता है। कम करनेसे शेष रहे द्रव्यका भी अपवर्तन करते समय अधस्तन व उपरिम-उपरिम लब्धोंको

---

१ ताप्रतिपाठोऽयम्। अ-काप्रत्योः 'परिसदि' इति पाठ। २ अप्रतौ 'एवं' इति पाठः।

रूवेहि खंडिय दुगुणियभागहारेणब्भहियपक्खेवसलागाणि[1] रूवं पडि पावेंति। एवं वग्गसलागबेत्तिभागाणमुवरि पक्खित्ते भागहारो होदि। कम्मट्ठिदिभागहारो केत्तियमद्धाणं चडिदूण बद्धदव्वस्स भागहारो होदि त्ति वुत्ते कम्मट्ठिदिपलिदोवमसलागाहि पलिदोवमवग्गसलागाणं बेत्तिभागे गुणिय गुणहाणिमोवट्टिय लद्धम्मि पक्खेवरूवेसु अवणिदे चडिदद्धाणं होदि। तदद्धाणयणट्ठं भागहारम्मि किंचूणेगरूवद्धपक्खेवो पुव्वं व कायव्वो।

एत्थ पढमरूऊणुप्पण्णद्धाणं किं बहुअ, जम्हि अद्धाणे पलिदोवमं भागहारो जादो किं तमद्धाणं बहुगमिदि वुत्ते उच्चदे— रूऊणुप्पण्णद्धाणादो असंखेज्जपलिदोवमबिदियवग्गमूलमेत्तादो पलिदोवमभागहारद्धाणमसंखेज्जगुणं, असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणत्तादो। णाणावरणादीणं पुण पलिदोवमभागहारद्धाणादो[2] रूऊणुप्पण्णद्धाणमसंखेज्जगुणं, असंखेज्जबिदियवग्गमूलत्तणेण दोण्णमद्धाणाणं भेदाभावे वि सांतर-णिरंतरवग्गट्ठाणगुणगारेण कयभेदत्तादो। एदेण कमेण गुणहाणीए अणवट्ठिदभागहारो जहण्णपरित्तासंखेज्जमेत्तो जादो। ताधे पक्खेवरूवाणं किं पमाणं? दुगुणेण जहण्णपरित्ता-

---

भाजित करनेपर शेष अर्ध रूपको अपवर्तन रूपोंसे खण्डित करके दुगुणे भागहारसे अधिक लब्ध मात्र खण्ड प्रत्येक अंकके प्रति प्राप्त होते हैं। इसका वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंके ऊपर प्रक्षेप करनेपर भागहार होता है। कर्मस्थितिका भागहार कितना अध्वान जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार होता है, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि कर्मस्थितिकी पल्योपमशलाकाओंसे पल्योपमकी वर्गशलाकाओंके दो त्रिभागोंको गुणित करके गुणहानिको अपवर्तित कर लब्धमेंसे प्रक्षेप रूपोंको कम कर देनेपर आगेका विवक्षित अध्वान होता है। उसको प्राप्त करनेके लिये भागहारमें कुछ कम एक रूपके अर्ध भागका प्रक्षेप पहिलेके ही समान करना चाहिये।

अब प्रथम रूपोनत्पन्न अध्वान बहुत है अथवा जिस अध्वानमें पल्योपम भागहार होता है वह अध्वान क्या बहुत है? ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं— असंख्यात पल्योपम द्वितीय वर्गमूलके बराबर रूपोनत्पन्न अध्वानकी अपेक्षा पल्योपम भागहारका अध्वान असंख्यातगुणा है क्योंकि वह असंख्यात पल्योपमोंके प्रथम वर्गमूलके बराबर है। परन्तु ज्ञानावरणादिकोंका रूपोनत्पन्न अध्वान पल्योपमभागहारके अध्वानसे असंख्यातगुणा है क्योंकि, असंख्यात द्वितीय वर्गमूल स्वरूपसे दोनों अध्वानोंमें कोई भेद न होनेपर भी सान्तर-निरन्तर वर्गस्थानोंके गुणकारसे उनमें भेद किया गया है। इस क्रमसे गुणहानिका अनवस्थित भागहार जघन्य परीतासंख्यातके बराबर हो जाता है।

शंका—तब प्रक्षेप रूपोंका प्रमाण कितना होता है?

समाधान—जघन्य परीतासंख्यातके वर्गको दूना करके उसका गुणहानिअध्वानमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र प्रक्षेप रूप होते हैं।

---

१ प्रतिषु 'पक्खेवसलागणि' इति पाठः। २ प्रतिषु 'भागहारद्धाणादो' इति पाठः।

संखेज्जवग्गेण गुणहाणिअद्धाणे भागे हिदे भागलद्धमेत्ताणि पक्खेवरूवाणि होंति। अणवट्ठिदभागहारे चदुरूवपमाणे जादे पक्खेवरूवाण किं पमाणं ? गुणहाणिअद्धाणस्स बत्तीसदिमभागो पक्खेवरूवाणि। अणवट्ठिदभागहारे दोरूवमेत्ते जादे पक्खेवरूवाणं पमाणं गुणहाणीए अट्ठमभागो। अणवट्ठिदभागहारे एगरूवमेत्ते जादे पक्खेवरूवाणि गुणहाणिदुभागमेत्ताणि होंति। एदाणि चडिदद्धाणम्मि पक्खित्ते दिवड्ढगुणहाणीओ होंति। एदाहि चरिमणिसेगभागहारे ओवट्टिदे रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासी तदित्थसचयस्स भागहारो होदि।

सपधि समयाहियगुणहाणिमुवरि चडिदूण बद्धसमयपबद्धसचयस्स किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासी[1] भागहारो होदि। त जहा— [2]अण्णोण्णब्भत्थरासिं रूवूणं विरलेदूण समयपबद्धदव्व समखडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स चरिमगुणहाणिदव्वं पावदि। पुणो दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगेण |१८| चरिमगुणहाणिदव्वे भागे हिदे भागलद्धमेद $\frac{५०}{९}$[3] पुव्वविरलणाए हेट्ठा विरलेदूण उवरिमएगरूवधरिदं समखडं करिय दिण्णे विरलणरूव पडि दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगो पावेदि। एत्थ एगरूवधरिद घेत्तूण उवरिमविरलणाए एगरूवधरिदचरिमगुणहाणिदव्वम्मि

शका—अनवस्थित भागहारके चार अंक प्रमाण होनेपर प्रक्षेप रूपोंका प्रमाण कितना होता है ?

समाधान—उक्त प्रक्षेप रूप उस समय गुणहानिअध्वानके बत्तीसवें भाग मात्र होते हैं।

अनवस्थित भागहारके दो अंक प्रमाण होनेपर प्रक्षेप रूपोंका प्रमाण गुणहानिके आठवें भाग मात्र होता है। अनवस्थित भागहारका प्रमाण एक अक मात्र होनेपर प्रक्षेप अक गुणहानिके द्वितीय भाग प्रमाण होते हैं। इनको आगेके विवक्षित अध्वानमें मिलानेपर डेढ़ गुणहानिया होती हैं। इनके द्वारा चरम निषेकभागहारको अपवर्तित करनेपर एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशि वहांके सचयका भागहार होता है।

अब एक समय अधिक गुणहानि प्रमाण स्थान आगे जाकर बाधे गये समयप्रबद्धके सचयका भागहार कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि होती है। यथा—रूप कम अन्योन्याभ्यस्त राशिका विरलन करके समयप्रबद्धके द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति अन्तिम गुणहानिका द्रव्य प्राप्त होता है। पश्चात् द्विचरम गुणहानिके चरम निषेकका चरम गुणहानिके द्रव्यमें भाग देनेपर लब्ध हुए ५९ इसका पूर्व विरलनके नीचे विरलन करके उपरिम विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर विरलन राशिके प्रत्येक एकके प्रति द्विचरम गुणहानिका चरम निषेक प्राप्त होता है। यहा एक अकके प्रति प्राप्त द्रव्यको ग्रहण करके उपरिम विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त चरम गुणहानिके द्रव्यमें स्थापित करनेपर इच्छित द्रव्यका प्रमाण होता

१ प्रतिषु 'किंचूणरूवूणण्णोण्ण' इति पाठः। २ प्रतिष्वत प्राक् 'णाणावरणीय ... करिय' इत्यधिक ५।८ प्राप्यते। ३ प्रतिषु ५० इति पाठः।

ठविदे इच्छिदव्वपमाणं होदि । एवं बिदियं तदिये, तदियं चउत्थे, चउत्थं पंचमे पक्खिविय णेदव्वं जाव हेट्ठिमविरलणसव्वरूवधरिदं उवरिमविरलणचरिमगुणहाणिदव्वेसु पविट्ठं त्ति । एत्थ एगरूवपरिहाणी लब्भदि । पुणो तदणंतरएगरूवधरिदं हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे तदणंतररूवधरिदप्पहुडि पुव्वं व पक्खित्ते[1] एत्थ बिदियरूवपरिहाणी लब्भदि । एवं उवरिमविरलणसव्वदव्वस्स समकरणे कदे परिहीणरूवाणमाणयणविहाणं वुच्चदे । तं जहा — रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो रूवूणअण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्तुवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति

$\frac{५९}{९}$	१	६३

पमाणेण फलगुणिदिच्छामोवट्टिय लद्धं उवरिमविरलणम्मि सोहिदे सेसमिच्छिदभागहारो होदि । तस्स संदिट्ठी $\frac{२१५०}{५९}$ ।

संपहि मोहणीयस्स एत्थ अवणिदरूवाणि असंखेज्जाणि हवंति गुणहाणितिण्णिचदुब्भागेण रूवाहिएण रूवूणअण्णोण्णब्भत्थरासिम्मि ओवट्टिदे असंखेज्जरूवागमणदंसणादो । सेसकम्माणं पुण अवणिदपमाणमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागो, भागहारभूदगुणहाणितिण्णि

है । इस प्रकार द्वितीयको तृतीयमें तृतीयको चतुर्थमें चतुर्थको पंचममें मिलाकर अधस्तन विरलन सम्बन्धी सब अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यके उपरिम विरलन सम्बन्धी चरम गुणहानिके द्रव्योंमें प्रविष्ट होने तक ले जाना चाहिये । यहां एक अंककी हानि पायी जाती है । फिर तदनन्तर एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको अधस्तन विरलनके ऊपर समखण्ड करके देकर इसे उपरिम विरलनमें तदनन्तर अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यसे लेकर पहिलेके समान मिलानेपर यहां द्वितीय अंककी हानि पायी जाती है । इस प्रकार उपरिम विरलन राशि सम्बन्धी सब द्रव्यका समीकरण करनेपर कम हुए अंकोंके लानेका विधान कहते हैं । यथा — एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशि मात्र उपरिम विरलनमें कितने अंकोंकी हानि होगी इस प्रकार फल राशिसे गुणित इच्छा राशिको प्रमाण राशिसे अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उसे उपरिम विरलनमेंसे कम कर देनेपर शेष रहा इच्छित भागहार होता है । उसकी संदृष्टि —

उदाहरण — यदि [illegible] + १ पर एक अंककी हानि होती है तो ६३ पर कितने अंकोंकी हानि होगी — ६३ × १ ÷ [illegible] = [illegible] । ६३ − [illegible] = [illegible] इच्छित भागहार ।

अब यहां मोहनीय कर्मके हीन हुए अंक असंख्यात हैं क्योंकि गुणहानिके एक अधिक तीन चतुर्थ भागका एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिमें भाग देनेपर असंख्यात रूपोंका आगमन देखा जाता है । परन्तु शेष कर्मोंके कम हुए अंकोंका प्रमाण एक रूपके असंख्यातवें भाग मात्र होता है क्योंकि, भागहारभूत गुणहानिके तीन चतुर्थ

1 प्रतिषु 'पक्खित्ते' इति पाठः ।

चदुब्भागं पेक्खिदूण उवरिमविरलणअण्णोण्णब्भत्थरासीए असंखेज्जगुणहीणत्तादो। $\frac{३१५०}{५९}$ एदेण समयपबद्धे भागे हिदे दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगेण सह चरिमगुणहाणिदव्वमागच्छदि |११८|।

पुणो कम्मट्ठिदिआदिसमयप्पहुडि दुसमयाहियगुणहाणिमेत्तद्धाणमुवरि चडिदूण बद्धसचयस्स भागहारो वुच्चदे। तं जहा– धुवरासिदुभागं $\frac{२५}{९}$ विरलेदूण उवरिमपढमरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दो दो गोवुच्छाओ पावेंति। पुणो एत्थ दोगोवुच्छविसेसागमणट्ठं विदियविरलणाए हेट्ठा रूवाहियगुणहाणिं दुगुणं विरलिय विदियविरलणाए एगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स दो दो गोवुच्छविसेसा पावेंति। पुणो एत्थ एगेगरूवधरिदं घेत्तूण मज्झिमविरलणाए विदियरूवधरिदप्पहुडि दादूण समकरणे कीरमाणे मज्झिमविरलणाए परिहीणरूवाणं पमाणं वुच्चदे। तं जहा— दुगुणरूवाहियगुणहाणिं सरूवं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी[1] लब्भदि तो मज्झिमविरलणद्धाणम्हि केत्तियाणि परिहाणिरूवाणि लभामो त्ति | १९ | १ | $\frac{२५}{९}$ | पमाणेण फलगुणिदिच्छामोवट्टिय लद्धं मज्झिमविरलणाए अवणिदे इच्छिद- $\frac{२५}{९}$ भागहारो होदि

भागकी अपेक्षा उपरिम विरलन रूप अन्योन्याभ्यस्त राशि असख्यातगुणी हीन है। $\frac{३१५०}{५९}$ इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर द्विचरम गुणहानि सम्बन्धी चरम निषेकके साथ चरम गुणहानिका द्रव्य आता है ६३०० – $\frac{३१५०}{५९}$ = ११८।

अब कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर दो समय अधिक गुणहानि मात्र स्थान आगे जाकर बांधे हुए द्रव्यके सचयका भागहार कहते है। यथा— ध्रुव राशिके द्वितीय भाग ($\frac{२५}{९}$) का विरलन करके उपरिम विरलनके प्रथम अकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति दो दो गोपुच्छ प्राप्त होते हैं। फिर यहा दो गोपुच्छविशेषोंके लानेके लिये द्वितीय विरलनके नीचे एक अधिक गुणहानिके दूनेका विरलन करके द्वितीय विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक अकके प्रति दो दो गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं। फिर यहा एक एक अकके प्रति प्राप्त द्रव्यको ग्रहण कर मध्यम विरलनके द्वितीय आदि अकके प्रति प्राप्त द्रव्यमें देकर समीकरण करनेपर मध्यम विरलनमें कम हुए अकोंका प्रमाण कहते हैं। यथा— एक अधिक गुणहानिके दुगुणे प्रमाणमें एक अक और मिलानेपर जो [(८ + १) × २ + १ = १९] प्राप्त हो उतने स्थान जाकर यदि एक अककी हानि पायी जाती है तो मध्यम विरलनके अध्वानमें कितने हीन अक प्राप्त होंगे, इस प्रकार फल राशिसे गुणित इच्छा राशिको प्र[illegible] राशिसे अपवर्तित कर लब्धको मध्यम विरलनमेंसे कम कर देनेपर इच्छित भा[illegible] है
$\frac{२५}{९}$ × १ – १९ = $\frac{२५}{१७१}$, $\frac{२५}{९}$ = $\frac{४७५}{१७१}$, $\frac{४७५}{१७१}$ – $\frac{२५}{१७१}$ = $\frac{४५०}{१७१}$ = $\frac{५०}{१९}$।

[1] अ-काप्रत्योः 'परिहीणे', ताप्रतौ 'परिहीण' इति पाठः।

$\frac{५०}{१९}$ । एवमद्धाणं रूवाहियं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं लभामो त्ति $\frac{६१}{१९}$ । १ । ६३ पमाणेण फलगुणिदमिच्छामोवट्टिय लद्धमुवरिमविरलणम्मि सोहिदे पयदसंचयस्स भागहारो होदि $\frac{३१५०}{६१}$ । एदेण समयपबद्धे भागे हिदे दुचरिमगुणहाणिचरिम-दुचरिमणिसेगेहि सह चरिमगुणहाणिदव्वमागच्छदि १३८ । एवमुवरि जाणिदूण तीहि विरलणाहि भागहारो साधेदव्वो । णवरि तिसमयाहियगुणहाणिमुवरि चडिदूण बद्धसंचयस्स भागहारसंदिट्ठी $\frac{३१५}{८}$ । चदुसमयाहियगुणहाणिमुवरि चडिदूण बद्धसंचयस्स भागहारसंदिट्ठी $\frac{१५७५}{४६}$ । पंचसमयाहियगुणहाणिमुवरि चडिदूण बद्धसंचयस्स भागहारसंदिट्ठी $\frac{६३०}{२१}$ । छस्समयाहियगुणहाणिमुवरि चडिदूण बद्धसंचयस्स भागहारसंदिट्ठी $\frac{३१५०}{११९}$ । सत्तसमयाहियगुणहाणिमुवरि चडिदूण बद्धसंचयस्स भागहारसंदिट्ठी $\frac{१५७५}{६७}$ । एवं गंतूण कम्मट्ठिदिपढमसमयादो दोगुणहाणिमेत्तद्धाणं चडिदूण बद्धदव्वभागहारो [रूवूण] अण्णोण्णब्भत्थरासिस्स तिभागो होदि २१ । दोगुणहाणीओ

एक अधिक पद स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें कितने अंकोंकी हानि पायी जावेगी इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर लब्धको उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर प्रकृत संचयका भागहार होता है— [illegible] । इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर द्विचरम गुणहानिके चरम और द्विचरम निषेकोंके साथ चरम गुणहानिका द्रव्य आता है— [illegible] = १३८ = (१००+१८+२०)। इस प्रकार आगे जाकर तीन विरलनोंसे भागहारको सिद्ध करना चाहिये। विशेषता केवल इतनी है कि तीन समय अधिक गुणहानि प्रमाण स्थान आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके संचय सम्बन्धी भागहारकी संदृष्टि $\frac{३१५}{८}$ है। चार समय अधिक एक गुणहानि प्रमाण स्थान आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके संचय सम्बन्धी भागहारकी संदृष्टि $\frac{१५७५}{४६}$ है। पांच समय अधिक एक गुणहानि प्रमाण स्थान आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके संचय सम्बन्धी भागहारकी संदृष्टि $\frac{६३०}{२१}$ है। छह समय अधिक एक गुणहानि प्रमाण स्थान आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके संचय सम्बन्धी भागहारकी संदृष्टि $\frac{३१५०}{११९}$ है। सात समय अधिक एक गुणहानि प्रमाण स्थान आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके संचय सम्बन्धी भागहारकी संदृष्टि $\frac{१५७५}{६७}$ है। इस प्रकार जाकर कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर दो गुणहानि मात्र स्थान आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके संचयका भागहार [एक कम] अन्योन्याभ्यस्त राशिके तृतीय भाग मात्र होता है $\frac{६४-१}{३} = २१$। चूंकि दो गुणहानियां जाता है अतः दो अंकोंका विरलन कर दुगुणा

• ३ ११.

चड़िदो त्ति दोरूवाणि विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थं करिय रूवमवणिदे तिण्णि रूवाणि लब्भंति, तेहि रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिम्मि ओवट्टिदे तस्स तिभागोवलभादो। एदेण समयपबद्धे भागे हिदे पढम-विदियगुणहाणीयो चडिऊण बद्धदव्वसचओ आगच्छदि | ३०० ||

संपहि समयाहियदोगुणहाणीयो चडिऊण बधमाणस्स रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासितिभागो किंचूणो भागहारो होदि। त जहा— रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासितिभागं विरलेदूण समयपबद्ध समखंड करिय दिण्णे चरिम [-दुचरिम] गुणहाणिदव्वं पावदि। पुणो तदणंतरतिचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगेण सह आगमणमिच्छिय | ३६ | एदेण चरिम दुचरिम-गुणहाणिदव्वे भागे हिदे धुवरासी आगच्छदि | २५/३ |। एदं विरलेदूण उवरिमविरलणेगरूवधरिद समखंड करिय दिण्णे तिचरिमगुणहाणि-चरिमणिसेगो पावदि। तं विदिय-रूवधरिदप्पहुडि दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाण पमाण वुच्चदे— रूवाहिय-हेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाण गतूण जदि[1] एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं

करके और परस्पर गुणा करके उसमेंसे एक अंकको कम करनेपर तीन अंक प्राप्त होते हैं, क्योंकि, उनका एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिमें भाग देनेपर उसका तृतीय भाग आता है— [(६४ - १) - (२ × २ - १) = २१]। इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर प्रथम व द्वितीय गुणहानिया आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका संचय आता है— ६३०० — २१ = ३००।

अब एक समय अधिक दो गुणहानि प्रमाण स्थान आगे जाकर बाधे जानेवाले द्रव्यका भागहार एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके तृतीय भागसे कुछ कम होता है। वह इस प्रकारसे— एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके तृतीय भागका विरलन करके समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर अन्तिम [व द्विचरम] गुणहानिका द्रव्य प्राप्त होता है [$\frac{६४-१}{३}$ = २१, ६३०० - २१ = ३०० चरम और द्विचरम गुणहानियोंका द्रव्य]। पुन॰ चूंकि तदनन्तर त्रिचरम गुणहानिके चरम निषेकके साथ लाना अभीष्ट है, अत॰ इस (३६) का चरम और द्विचरम गुणहानियोंके द्रव्यमें भाग देनेपर ध्रुवराशि आती है—३००–३६=$\frac{२५}{३}$। इसका विरलन करके उपरिम विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर त्रिचरम गुणहानिका चरम निषेक प्राप्त होता है [३०८=$\frac{११०}{३}$; $\frac{११०}{३}$–$\frac{२}{३}$=३६ त्रिचरम गुणहानिका चरम निषेक]। फिर उसे [उपरिम विरलनके] द्वितीय आदि अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यमें देकर समीकरण करनेपर हीन हुए अंकोंका प्रमाण बतलाते हैं— एक अधिक अधस्तन विरलन प्रमाण स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो ऊपरकी विरलन राशिमें कितने अंकोंकी

---

१ प्रतिषु ' लद्ध ' इति पाठः। २ अ-काप्रत्यो 'समयाहियाहिदो' इति पाठ। ३ अ-काप्रत्यो॰ 'बद्धी' इति पाठ।

लब्भामो त्ति [२८/३ | १ | २१] पमाणेण फलगुणिदमिच्छामोवट्टिय लद्धे उवरिमविरलणाए सोहिदे पयदसंचय- भागहारो होदि [७५/४]। एदेण समयपबद्धे भागे हिदे पयद- दव्वमागच्छदि [३३६]।

पुणो दुसमयाहियदोगुणहाणीओ चडिय बद्धदव्वभागहारे आणिज्जमाणे धुवरासि- दुभागं विरलिय उवरिमविरलणेगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे दो दोचरिमणिसेया होदूणे- गेगरूवस्सुवरि पावेंति। एत्थेगचरिमणिसेगस्सुवरि एगविसेसमिच्छामो त्ति विदियविरलणाए हेट्ठा रूवाहियगुणहाणिं दुगुणं विरलेदूण एगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे एगेगगोवुच्छ- विसेसो पावदि। एत्थ वि पुव्वं व समकरणे कीरमाणे जाणि णिरावाररूवाणि तेसिं आणयणं वुच्चदे— रूवाहियगुणहाणिं दुगुणं रूवाहियं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो मज्झिमविरलणाए किं लभामो त्ति [१९ | १ | २५/६] पमाणेण फलगुणिदमिच्छामोवट्टिदे परिहाणिरूवाणि लब्भंति। पुणो तेसु मज्झिमविरलणाए अवणिदेसु भागहारो होदि [७५/१९]। पुणो रूवाहियमज्झिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवावणयणं लब्भदि

हानि पायी जावेगी इस प्रकार प्रमाण राशिका फलगुणित इच्छा राशिमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसे ऊपरकी विरलन राशिमेंसे कम कर देनेपर प्रकृत संचयका भागहार होता है— २१ × १ ÷ २८/३ = ९/४। २१ − ९/४ = ७५/४। इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर प्रकृत द्रव्य आता है— ६३०० ÷ ७५/४ = ३३६।

पुनः दो समय अधिक दो गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार निकालनेमें ध्रुव राशिके द्वितीय भागका विरलन करके उपरिम विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके ऊपर दो दो अन्तिम निषेक होकर प्राप्त होते हैं [३०० ÷ २५/६ = ७२ = ३६ × २]। यहां चूंकि एक अन्तिम निषेकके ऊपर एक विशेषकी इच्छा है अतः द्वितीय विरलन राशिके नीचे एक अधिक दूनी गुणहानिका {(८ + १) = ९ × २ = १८} विरलन करके एक अंकके प्रति प्राप्त प्रमाणको समखण्ड करके देनेपर एक एक गोपुच्छविशेष प्राप्त होता है [७२ ÷ १८ = ४]। यहांपर भी पहलेके ही समान समीकरण करनेपर जो निराधार अंक हैं उनके लानेकी प्रक्रिया बतलाते हैं— एक अधिक गुणहानिको दुगुणा करके उसमें एक अंक और मिलानेपर जो प्राप्त हो उतने [८ + १ × २ + १ = १९] स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो मध्यम विरलन राशिमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छा राशिको प्रमाण राशिसे अपवर्तित करनेपर हानिप्राप्त अंक पाये जाते हैं। उनको मध्यम विरलन राशिमेंसे कम कर देनेपर भागहारका प्रमाण होता है— २५/६ × १ ÷ १९ = २५/११४। २५/६ − २५/११४ = ७५/१९। फिर एक अधिक मध्यम विरलन राशि प्रमाण स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार फल राशिके

ण्णब्भत्थरासिणा रूवूणेण रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिम्हि ओवट्टिदे पयददव्वभागहारो होदि [९]। एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे कम्मट्ठिदिपढमसमयप्पहुडि तिण्णिगुणहाणीओ चडिदूण बद्धसमयपबद्धमुक्कड्डिय' चरिददव्वं होदि [७००]।

संपहि समयाहियतिण्णिगुणहाणीओ चडिय बद्धदव्वसंचयभागहारो रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासीए सत्तमभागो किंचूणो। तं जहा— रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिसत्तमभागं विरलेदूण समयपबद्धं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तिण्णिगुणहाणिदव्वं पावेदि। पुणो एत्थ चदुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगेण सह आगमणमिच्छिय [७२] एदेण उवरिमएगरूवधरिदे [७००] भागे हिदे धुवरासी होदि [१७१/१८]। एदं विरलिय उवरिमविरलणेगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि [चदु] चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगो पावेदि। पुणो उवरिमरूवधरिदेसु दादूण समकरणे कीरमाणे जाणि परिहीणरूवाणि तेसिं पमाणपरूवणा कीरदे। तं जहा— हेट्ठिमविरलणं रूवाहियं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिसत्तमागम्मि किं लभामो त्ति [१९३/१८ | १|९] पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धे उवरिमविरलणम्मि सोहिदे पयद दव्वभागहारो

गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उसमें एक कम करके शेषका एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिमें भाग देनेपर प्रकृत द्रव्यका भागहार होता है— × × = ८, ८ - १ = ७, ६४ - १ = ६३, ६३ ÷ ७ = ९। इसका समस्त द्रव्यमें भाग देनेपर कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर तीन गुणहानियां जाकर बांधे गये समयप्रबद्धका निर्जीर्ण होकर शेष रहा द्रव्य होता है— ६३०० ÷ ९ = ७००।

अब एक समय अधिक तीन गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके संचयका भागहार एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके सातवें भागसे कुछ कम होता है। वह इस प्रकारसे— एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके सातवें भागका विरलन कर समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति तीन गुणहानियोंका द्रव्य प्राप्त होता है। परन्तु चूंकि यहां चतुश्चरम गुणहानिके चरम निषेकके साथ लाना अभीष्ट है अत एव इस (७२) का उपरिम विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त राशिमें भाग देनेपर ध्रुवराशि होती है— ७०० ÷ ७२ = १७१/१८। इसका विरलन करके उपरिम विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति [चतु] चरम गुणहानिका चरम निषेक प्राप्त होता है। उसे उपरिम अंकोंके प्रति प्राप्त राशियोंमें देकर समीकरण करनेपर जो हीन अंक हैं उनके प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— एक अधिक अधस्तन विरलन जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके सातवें भागमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे अपवर्तित करके लब्धको उपरिम विरलन राशिमेंसे कम कर देनेपर प्रकृत द्रव्यका भागहार होता है—

अप्रतौ 'मुक्कड्डिय' इति पाठः।

$\frac{१५}{८}$ | $\frac{१}{९}$ | पमाणेण फलगुणिदमिच्छामोवट्टिय लद्धे अवणिदे अप्पिददव्वभागहारो होदि $\frac{२१}{५}$ । अथवा, चत्तारिगुणहाणीओ चडिदाओ त्ति चत्तारि रूवाणि विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा रूवूणेण रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिमोवट्टिदे भागहारो होदि $\frac{२१}{५}$ । एदेण समयपबद्धे भागे हिदे चत्तारिगुणहाणीओ चडिदूण बद्धदव्वसंचओ होदि १५०० ।

पुणो समयाहियचत्तारिगुणहाणीयो चडिय बद्धसमयपबद्धभागहारो रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिस्स पण्णारसभागो किंचूणो होदि । त जहा— पुव्वभागहार विरलेदूण समयपबद्ध समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पुव्वं भणिददव्वं होदि । पुणो एत्थ एगरूवधरिदे १५०० पंचचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगेण १४४ भागे हिदे लद्धं धुवरासी होदि $\frac{१२५}{१२}$ । एदेण समकरणे कीरमाणे णट्ठरूवपमाणं उच्चदे । त जहा— रूवाहिय-धुवरासिमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलण-

---

फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे अपवर्तित करके लब्धको एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके सप्तम भागमेंसे घटा देनेपर विवक्षित द्रव्यका भागहार होता है— (६४ − १) − ७ = ९, ९ × १ − $\frac{१५}{८}$ = $\frac{७२}{१५}$, ९ − $\frac{७२}{१५}$ = $\frac{२१}{५}$ । अथवा, चार गुणहानिया आगे गये हैं, अतः चार अंकोंका विरलन करके दुगुणा करे । पश्चात् उन्हें परस्पर गुणित करनेसे प्राप्त हुई राशिमेंसे एक कम करके शेषका एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिमें भाग देनेपर उक्त भागहार होता है— $\frac{२}{१}$ × $\frac{२}{१}$ × $\frac{२}{१}$ × $\frac{२}{१}$ = १६, १६ − १ = १५, ६४ − १ = ६३, ६३ − १५ = $\frac{२१}{५}$ । इसका समय प्रबद्धमें भाग देनेपर चार गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका संचय होता है— ६३०० − $\frac{२१}{५}$ = १५०० ।

पुन. एक समय अधिक चार गुणहानिया आगे जाकर बांधे गये समय प्रबद्धका भागहार एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके पन्द्रहवें भागसे कुछ कम होता है । वह इस प्रकारसे — पूर्व भागहारका विरलन कर समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति पूर्वोक्त द्रव्य आता है । अब यहा एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यमें पचचरम गुणहानिके चरम निषेकका भाग देनेपर जो लब्ध हो वह ध्रुवराशि स्वरूप होता है— १५०० − १४४ = $\frac{१२५}{१२}$ । इससे समीकरण करनेपर नष्ट अंकोंका प्रमाण कहते हैं । वह इस प्रकार है— एक अधिक ध्रुव राशि प्रमाण स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलन प्रमाण स्थानोंमें वह कितनी पायी

होदि $\frac{१५७१}{१९३}$ [1] । एदेण समयपबद्धे भागे हिदे अप्पिददव्वमागच्छदि | ७७२ | ।

पुणो दुसमयाहियतिण्णिगुणहाणीओ उवरि चढिय बद्धदव्वभागहारो उच्चदे । तं जहा— धुवरासिदुभाग विरलिय एगरूवधरिद समखंड करिय दिण्णे रूवं पडि दो होचरिमणिसेगा पावेंति । पुणो एत्थ एगविसेसेण अहियमिच्छिय एदिस्से विरलणाए हेट्ठा रूवाहियगुणहाणिं दुगुण विरलिय मज्झिमविरलणेगरूवधरिद समखड करिय दिण्णे एगेगविसेसो पावेदि । तमुवरिमेगेगरूवधरिदेसु दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाणयणविहाण वुच्चदे । त जहा— हेट्ठिमविरलणं रूवाहियं गतूग जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो मज्झिमविरलणम्मि किं लभामो त्ति | १९ | १ | $\frac{१७५}{३६}$ | पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय मज्झिमविरलणाए लद्धे अवणिदे एत्तिय होदि | $\frac{१७५}{३८}$ | । पुणो एद रूवाहिय गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिसत्तमभागम्मि किं

$\frac{६४-१}{७} = ९$, $९ \times १ - \frac{३१}{१९३} = \frac{१६२}{१९३}$, $९ = \frac{१७३७}{१९३}$, $\frac{१७३७}{१९३} - \frac{१६२}{१९३} = \frac{१५७५}{१९३}$ । इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर विवक्षित द्रव्य आता है— $६३०० - \frac{१५७५}{१९३} = ७७२$ ।

पुनः दो समय अधिक तीन गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार कहते हैं । वह इस प्रकार है— ध्रुवराशिके द्वितीय भागका विरलन करके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति दो दो अन्तिम निषेक प्राप्त होते हैं [$७०० - \frac{१७५}{३६} = १४४$] । चूंकि यहां एक विशेषसे अधिक की इच्छा है, अत. इस विरलन राशिके नीचे एक अधिक गुणहानिके दूनेका विरलन करके मध्यम विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक विशेष प्राप्त होता है [$८ + १ \times २ = १८$; $१४४ - १८ = ८$] । उसको उपरिम एक एक अंकके प्रति प्राप्त राशिमें देकर समीकरण करनेपर हीन अंकोंके लानेकी विधि बतलाते हैं । वह इस प्रकार है— एक अधिक अधस्तन विरलन जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो मध्यम विरलन राशिमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे अपवर्तित करके लब्धको मध्यम विरलन राशिमेंसे घटा देनेपर इतना होता है— $\frac{१७५}{३६} \times १ - १९ = \frac{१७५}{६८४}$, $\frac{१७५}{३६} - \frac{१७५}{६८४} = \frac{३१५०}{६८४} = \frac{१७५}{३८}$ । पुन. इससे एक अधिक जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके सातवें भागमें वह कितनी

१ अ-आप्रत्योः $\frac{१५७५}{१९२}$, ताप्रतौ $\frac{१५७५}{१९२}$ इति पाठः ।

२ काप्रतौ १६९ इति पाठ ।

लब्भदि त्ति २१३'/४८ | १/९ पमाणेण फलगुणिदइच्छमोवट्टिय लद्धे उवरिमविरलणाए अवणिदे अप्पिदभागहारो होदि १५७५/२१३ । एदेण समयपबद्धे भागे हिदे अप्पिददव्वमागच्छदि ८५२ ।

धुवरासितिभाग-चदुब्भागादि मज्झिमविरलणं च णादूण उवरि सव्वत्थ वत्तव्वं । णवरि तिसमयाहियतिण्णिगुणहाणीओ उवरि चडिय बद्धदव्वभागहारसंदिट्ठी २१५/४७ । चदुसमयाहियतिण्णिगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बद्धदव्वभागहारो १५७५/२५९[1] । पंचसमयाहियतिण्णिगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बद्धदव्वभागहारो [२१५/१७ । छस्समयाहियतिण्णिगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बद्धदव्वभागहारो] १५७१/२१२ । सत्तसमयाहियतिण्णिगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बद्धदव्वभागहारो २२५/४९ । एवमट्ठ-णव-दससमयाहियाओ कमेण णेदव्वं जाव चउत्थगुणहाणिं चडिदो त्ति । तत्थ चरिमभागहारो उच्चदे । तं जहा— ७/८ एदं रूवाहियं गंतूण जदि रूवपरिहाणी लब्भदि तो रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिसत्तम ७/८ भागम्मि किं लभामो त्ति

पायी जावेगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे अपवर्तित करके लब्धको उपरिम विरलनमेंसे घटा देनेपर विवक्षित भागहार होता है— [illegible] । ९ × १ ÷ [illegible] = [illegible], ९ − [illegible] = [illegible] । इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर विवक्षित द्रव्य आता है— ६३ [illegible] ÷ [illegible] = ८५२ ।

ध्रुवराशिके तृतीय भाग व चतुर्थ भाग आदि तथा मध्यम विरलन राशिको जानकर आगे सर्वत्र प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि तीन समय अधिक तीन गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यके भागहारकी संदृष्टि [illegible] है । चार समय अधिक तीन गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार [illegible], पांच समय अधिक तीन गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार [[illegible] छह समय अधिक तीन गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार] [illegible] और सात समय अधिक तीन गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार [illegible] है । इसी प्रकार आठ नौ और दस समय आदिकी अधिकताके क्रमसे चतुर्थ गुणहानि प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । उनमें अन्तिम भागहारको कहते हैं । वह इस प्रकार है— एक अधिक इतना ( ) जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके सातवें भागमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार

१ प्रतौ २११ इत्येतस्य स्थाने ३११ इति पाठः । २ [illegible] । अ-आ प्रत्योः '१५/५' इति पाठः ।

[१५८]

[$\frac{१५}{८}$ | १ | ९][1] पमाणेण फलगुणिदमिच्छामोवट्टिय लद्धे अवणिदे अप्पिददव्वभागहारो होदि [$\frac{२१}{५}$]। अधवा, चत्तारिगुणहाणीओ चडिदाओ त्ति चत्तारि रूवाणि विरलिय विग करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा रूवूणेण रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिमोवट्टिदे भागहारो होदि [$\frac{२१}{५}$]। एदेण समयपबद्धे भागे हिदे चत्तारिगुणहाणीओ चडिदूण बद्धदव्वसंचओ होदि [१५००]।

पुणो समयाहियचत्तारिगुणहाणीयो चडिय बद्धसमयपबद्धभागहारो रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिस्स पण्णारसभागो किंचूणो होदि। तं जहा— पुव्वभागहारं विरलेदूण समयपबद्धं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पुव्वं भणिददव्वं होदि। पुणो एत्थ एगरूवधरिदे [१५००] पंचचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगेण [१४४] भागे हिदे लद्धं धुवरासी होदि [$\frac{१२५}{१२}$]। एदेण समकरणे कीरमाणे णट्ठरूवपमाणं उच्चदे। तं जहा— रूवाहियधुवरासिमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलण-

---

फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे अपवर्तित करके लब्धको एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके सप्तम भागमेंसे घटा देनेपर विवक्षित द्रव्यका भागहार होता है— (६४ − १) − ७ = ९, ९ × १ − $\frac{१५}{८}$ = $\frac{७२}{१५}$, ९ − $\frac{७२}{१५}$ = $\frac{२१}{५}$। अथवा, चार गुणहानिया आगे गये हैं, अत. चार अकोंका विरलन करके दुगुणा करे। पश्चात् उन्हें परस्पर गुणित करनेसे प्राप्त हुई राशिमेंसे एक कम करके शेषका एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिमें भाग देनेपर उक्त भागहार होता है— $\frac{२}{१}$ × $\frac{२}{१}$ × $\frac{२}{१}$ × $\frac{२}{१}$ = १६, १६ − १ = १५, ६४ − १ = ६३, ६३ − १५ = $\frac{२१}{५}$। इसका समय प्रबद्धमें भाग देनेपर चार गुणहानिया आगे जाकर बाधे गये द्रव्यका सचय होता है— ६३०० − $\frac{२१}{५}$ = १५००।

पुन एक समय अधिक चार गुणहानिया आगे जाकर बांधे गये समय प्रबद्धका भागहार एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके पन्द्रहवें भागसे कुछ कम होता है। वह इस प्रकारसे — पूर्व भागहारका विरलन कर समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर एक अकके प्रति पूर्वोक्त द्रव्य आता है। अब यहा एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यमें पचचरम गुणहानिके चरम निषेकका भाग देनेपर जो लब्ध हो वह ध्रुवराशि स्वरूप होता है— १५०० − १४४ = $\frac{१२५}{१२}$। इससे समीकरण करनेपर नष्ट अंकोंका प्रमाण कहते हैं। वह इस प्रकार है— एक अधिक ध्रुव राशि प्रमाण स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलन प्रमाण स्थानोंमें वह कितनी पायी

---

१ ताप्रतौ [$\frac{२५}{८}$ | १ | ९] इति पाठ ।

भेयद्धाणम्मि केत्तियाणि परिहाणिरूवाणि लभामो त्ति | १२७/१२ | १ | २१/५ | पमाणेण फलगुणिदमिच्छामोवट्टिय लद्धमुवरिमविरलणम्मि सोहिदे भागहारो होदि | ५२५/१२७ |।

पुणो चत्तारिगुणहाणीयो दुसमयाहियाओ उवरि चडिदूण पदभागहारो उच्चदे। तं जहा— धुवरासिदुभाग विरलिय उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दो-दोचरिमणिसेगा पावेंति। पुणो एत्थ एगविसेसागममिच्छिय हेट्ठा दुगुण रूवाहियगुणहाणिं विरलिय उवरिमेगरूवधरिदं समखंडं करिय दादूण उवरिमविरलणएगरूवधरिदम्मि पक्खिविय समकरणे कदे आणि परिहाणिरूवाणि तेसिमाणयणं उच्चदे। तं जहा— हेट्ठिमविरलणं रूवाहियं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं लब्भदि त्ति | १९ | १ | १२५/२४ |[1] पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय मज्झिमविरलणाए अवणिदे इच्छिद भागहारो होदि | ६७५/७६ |[1]। एदेण उवरिमएगरूवधरिदे भागे हिदे जहासरूवेण दो णिसेया आगच्छंति। पुणो एदे उवरिमएगेग-

---

जायेगी इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे अपवर्तित कर लब्धको उपरिम विरलनमेंसे कम कर देनेपर विवक्षित भागहार होता है— [illegible] × १ ÷ [illegible] = [illegible]; [illegible] = [illegible]। [illegible] − [illegible] = [illegible] = [illegible]।

पुनः दो समय अधिक चार गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये समयप्रबद्धका भागहार कहते हैं। वह इस प्रकार है— ध्रुवराशिके द्वितीय भागका विरलन कर उपरिम विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति दो दो चरम निषेक प्राप्त होते हैं [१५०० + [illegible] = २८८]। पुनः यहां चूंकि एक विशेषका लाना अभीष्ट है अत एव नीचे एक अधिक गुणहानिके दूनेका विरलन कर उपरिम विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देकर उपरिम विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यमें मिलाकर समीकरण करनेपर जो हीन अंक हैं उनके लानेकी विधि कहते हैं। वह इस प्रकार है— एक अधिक अधस्तन विरलन जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जायेगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे अपवर्तित करके लब्धको मध्यम विरलनमेंसे घटा देनेपर इच्छित भागहार होता है— ([illegible] × १ + १९ = [illegible]; [illegible] − [illegible] = [illegible]) = [illegible]। इसका उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त राशिमें भाग देनेपर यथास्वरूपसे दो निषेक आते हैं [(१५०० + [illegible]) = ([illegible] × [illegible]) = १०४ = (१४४ + १६०)]। फिर इनको उपरिम एक

---

१ प्रतिषु [illegible] इति पाठः। २ अप्रतौ [illegible]। अ-आप्रत्योः | ११ | १ | १२५/२४ | इति पाठः।
३ अ-आप्रत्योः | २०० / १ | इति पाठः।

रूवधरिदेसु पक्खिविय समकरणं करिय परिहाणिरूवाणयणं वुच्चदे । तं जहा— रूवाहिय-मज्झिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति $\frac{४५१}{७६}$ | १ | $\frac{२१}{५}$ पमाणेण फलगुणिदिच्छमोवट्टिय लद्धे उवरिमविरलणाए अवणिदे इच्छिददव्वभागहारो होदि $\frac{१५७५}{४५१}$ ।

तिसमयाहियचत्तारिगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बद्धदव्वभागहारो $\frac{१०५}{३३}$ । चदुसमयाहियचत्तारिगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बद्धदव्वभागहारो $\frac{५०५}{१८१}$ । पंचसमयाहियचत्तारिगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बद्धदव्वभागहारो $\frac{३१५}{११९}$ । छसमयाहियचत्तारिगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बद्धदव्वभागहारो $\frac{५२५}{२१७}$ । सत्तसमयाहियचत्तारिगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बद्धदव्वभागहारो $\frac{५२५}{२३७}$ । एवं णेदव्वं जाव गुणहाणिअद्धाणं समत्तमिदि ।

पंचगुणहाणीओ चडिदूण बद्धदव्वभागहारो उच्चदे । तं जहा— $\frac{१५}{१६}$ एदमद्धाणं रूवाहियं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो

एक अंकके प्रति प्राप्त अंकोंमें मिलाकर समीकरण करके हीन अंकोंके लानेकी विधि बतलाते हैं । वह इस प्रकार है— एक अधिक मध्यम विरलन प्रमाण स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे अपवर्तित कर लब्धको उपरिम विरलनमेंसे घटा देनेपर इच्छित द्रव्यका भागहार होता है— $\frac{२१}{५} \times १ - \frac{४५१}{७६}$ $= \frac{१५९६}{२२५५}$, $\frac{९४७१}{२२५५} - \frac{१५९६}{२२५५} = \frac{७८७५}{२२५५} = \frac{१५७५}{४५१}$ ।

तीन समय अधिक चार गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार $\frac{१०५}{३३}$; चार समय अधिक चार गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार $\frac{५०५}{१८१}$; पांच समय अधिक चार गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार $\frac{३१५}{११९}$; छह समय अधिक चार गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार $\frac{५२५}{२१७}$, व सात समय अधिक चार गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार $\frac{५२५}{२३७}$ है । इस प्रकार गुणहानिअध्वानके समाप्त होने तक ले जाना चाहिये ।

पांच गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार कहते हैं । वह इस प्रकार है— एक अधिक $\frac{१५}{१६}$ इतना अध्वान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित

जहा— रूवाहियधुवरासिमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धे उवरिमविरलणम्मि अवणिदे इच्छिदभागहारो होदि $\frac{१५७५}{८४७}$ । पुणो एदेण समयपबद्धे भागे हिदे पढमगुणहाणिचरिमणिसेगेण सह बिदियादिगुणहाणिदव्वमागच्छदि ३३८८ ।

पुणो कम्मट्ठिदिचरिमगुणहाणिबिदियसमयम्मि ठाइदूण बद्धदव्वभागहारो उच्चदे। तं जहा— धुवरासिदुभाग विरलेदूण उवरिमेगरूपधरिद समखंड करिय दिण्णे एक्केक्कं पडि दो-दो णिसेया पावेंति। पुणो हेट्ठा दुगुणरूवाहियगुणहाणिं विरलिय मज्झिमविरलणेगरूवधरिदं समखंड करिय दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाण पमाणं वुच्चदे। त जहा— रूवाहियतदियविरलणमेत्तद्धाण गतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो धुवरासिदुभागम्मि किं लभामो त्ति | १९ | १ | $\frac{७७५}{१४४}$ |[1] पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धे [उवरिम विरलणाए अवणिदे] इच्छिद-भागहारो होदि $\frac{७७५}{१५२}$ । तदो एदं रूवाहियं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं लभामो त्ति

कहते हैं। वह इस प्रकार है— एक अधिक ध्रुवराशि प्रमाण स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर लब्धको उपरिम विरलनमेंसे घटा देनेपर इच्छित भागहार होता है— [$\frac{७७५}{७२} + १ = \frac{८४७}{७२}$, $\frac{६३}{१} \times १ \times \frac{७२}{८४७} = \frac{४५३६}{८४७}$, $\frac{६३}{१} - \frac{४५३६}{८४७} = \frac{४८८२५}{८४७} =$] $\frac{१५७५}{८४७}$ । पुन. इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर प्रथम गुणहानिके अन्तिम निषेकके साथ द्वितीयादिक गुणहानियोंका द्रव्य आता है— $६३०० - \frac{१५७५}{८४७} = ३३८८ = (२८८ + १६०० + ८०० + ४०० + २०० + १००)$।

पुनः कर्मस्थितिकी अन्तिम गुणहानिके द्वितीय समयमें स्थित होकर बांधे गये द्रव्यका भागहार कहते हैं। वह इस प्रकार है— ध्रुवराशिके द्वितीय भागका विरलन करके उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति दो दो निषेक प्राप्त होते हैं। पुन. नीचे एक अधिक गुणहानिके दूनेका विरलन कर मध्यम विरलनके एक एक अकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देकर समीकरण करनेपर हीन अकोंका प्रमाण बतलाते हैं। वह इस प्रकार है— एक अधिक तृतीय विरलन राशिके बराबर स्थान जाकर यदि एक अककी हानि पायी जाती है तो ध्रुवराशिके द्वितीय भागमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर लब्धको [मध्यम विरलनमेंसे घटा देनेपर] इच्छित भागहार होता है— [$८ + १ \times २ = १८$ तृतीय विरलन राशि, $१८ + १ = १९$; $\frac{७७५}{७२} \times \frac{१}{२} = \frac{७७५}{१४४}$ ध्रुवराशिका द्वितीय भाग, $\frac{७७५}{१४४} \times १ \times \frac{१}{१९} = \frac{७७५}{२७३६}$, $\frac{७७५}{१४४} - \frac{७७५}{२७३६} =$] $\frac{७७५}{१५२}$ । पश्चात् एक एक अधिक इतना जाकर यदि एक अकको हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे

१ प्रतिषु | १६ | १ | $\frac{१७५}{१४४}$ | इति पाठ ।

णिसेगपमाणेण कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेगा होंति । पुणो दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगे वि तप्पमाणेण कीरमाणे दोचरिमणिसेयमेत्तो होदि । पुणो एदेसु दिवड्ढगुणहाणिम्मि पक्खित्तेसु दुरूवाहियदिवड्ढगुणहाणिमेत्ताणि भागहारोवट्टणरूवाणि लब्भंति । एदेहि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागे ओवट्टिदे इच्छिदव्वभागहारो होदि $\frac{३१५०}{५९}$ ।

संपधि दुसमयाहियगुणहाणिमुवरि चडिदूण बद्धदव्वभागहारो होदि एसो $\frac{३१५०}{६९}$ । एवं संकलणागारेण वड्ढमाणगोवुच्छविसेसा केत्तियमद्धाणमुवरि चडिदे चरिमणिसेयमेत्ता होंति त्ति उत्ते गुणहाणिवग्गमूलं रूवाहियं गंतूण होंति । एत्थ गुणहाणिपमाणमेदं |२५६| । एदस्स वग्गमूलं |१६| । एदेण गुणहाणिम्हि भागे हिदे लद्धमेदं |१६| । एत्तियमेत्तमद्धाणं रूवाहियमुवरि चडिदूण बद्धसमयपबद्धस्स भागहारोवट्टणरूवाणि दुगुणिदचडिदद्धाणं रूवाहियं दिवड्ढगुणहाणिम्हि पक्खित्तमेत्ताणि होंति ।

निषेक होते हैं । पुन द्विचरम गुणहानिके चरम निषेकको भी उसके प्रमाणसे करनेपर वह दो चरम निषेक प्रमाण होता है । फिर इनको डेढ़ गुणहानिमें मिला देनेपर दो अंक अधिक डेढ़ गुणहानि प्रमाण भागहारके अपवर्तन अंक पाये जाते हैं । इनके द्वारा अंगुलके असख्यातवें भागको अपवर्तित करनेपर इच्छित द्रव्य (१०० + १८) का भागहार होता है— $\frac{३१५०}{५९}$ । [अन्तिम गुणहानिका द्रव्य १००, अन्तिम निषेक ९, डेढ़ गुणहानि $\frac{१००}{९}$, द्विचरम गुणहानिका अन्तिम निषेक १८; १८ − ९ = २; $\frac{१००}{९} + २ = \frac{११८}{९}$ दो अंक अधिक डेढ़ गुणहानि; अन्तिम गुणहानिके अंतिम निषेकका भागहार जो अंगुलका असख्यातवा भाग है उसकी संदृष्टि $\frac{६३००}{९}$, $\frac{६३००}{९} = ७००$ को $\frac{११८}{९}$ से अपवर्तित करनेपर $\frac{७०० \times ९}{११८} = \frac{३१५०}{५९}$ एक समय अधिक गुणहानिके द्रव्यका भागहार ।]

अब दो समय अधिक गुणहानि मात्र आगे जाकर बांधे गये द्रव्य (१०० + १८ + २०) का भागहार यह होता है— $\frac{३१५०}{६९}$ । इस प्रकार संकलन स्वरूपसे बढ़नेवाले गोपुच्छविशेष कितना अध्वान आगे जानेपर अन्तिम निषेकके बराबर होते हैं, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि वे एक अधिक गुणहानिके वर्गमूल प्रमाण जाकर अन्तिम निषेकके बराबर होते हैं । यहां गुणहानिका प्रमाण यह है— २५६ । इसका वर्गमूल यह है— १६ । इसका गुणहानिमें भाग देनेपर यह लब्ध होता है— १६ । एक अधिक इतना मात्र अध्वान आगे जाकर बांधे गये समयप्रबद्ध सम्बन्धी भागहारके अपवर्तन अंक जितने स्थान आगे गये हैं उनको दुगुणा कर एक अंक मिलानेपर जो प्राप्त हो उसको डेढ़ गुणहानिमें मिला देनेपर प्राप्त राशि प्रमाण होते हैं । समीकरणका

---

१ प्रतिषु 'भागहारोवट्टमाण' इति पाठः । २ काप्रतौ $\frac{३१५०}{५६}$ इति पाठ । ३ प्रतिषु 'एसा' इति पाठ । ४ प्रतिषु 'वट्टमाण' इति पाठः ।

समकरणविहाणं जाणिय वत्तव्वं ।

संपहि बिदियरूवे उप्पाइज्जमाणे गुणहाणिपमाणं |१२८|। गुणहाणिअद्धवग्गमूलं |८|। एदेण गुणहाणिम्हि भागे हिदे भागहारादो दुगुणमागच्छदि |१६| । एदं रूवाहियमुवरि चडिदूण पदृदव्वस्स भागहारो दुगुणचडिदद्धाण दुरूवाहियं दिवड्ढगुणहाणिम्हि पक्खिविय अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण ओवट्टिदे होदि । तिसु रूवेसु उप्पाइज्जमाणेसु गुणहाणिपमाणं ४८ । गुणहाणितिभागवग्गमूलं |४| । चत्तारिरूवाहियं इच्छिज्जमाणे गुणहाणिपमाणं ६४ । गुणहाणिचदुब्भागवग्गमूलं |४| । पंचरूवाणि इच्छिज्जमाणे गुणहाणिपमाणं |८०| । पंचभागवग्गमूलं |४| । छरूवाणि इच्छिज्जमाणे गुणहाणिपमाणं |९६| । छब्भागवग्गमूलं |४| । सत्तरूवाणि इच्छिज्जमाणे गुणहाणिपमाणं |११२| । सत्तमभागवग्गमूलं |४| । अट्ठरूवाणि इच्छिज्जमाणे गुणहाणिपमाणं |१२८| । अट्ठमभागवग्गमूलं |४| । एवं कम्मट्ठिदिबिदियगुणहाणि पज्जंतरउ पढमगुणहाणिम्मि जो विधी सो एत्थ वि कायव्वो । णवरि पढमगुणहाणिम्हि दुगुणिदपक्खेवरूवेहि वग्गरासिं गुणिय सरिहीए गुणहाणिअद्धाणमुप्पाइदं । एत्थ पुण पक्खेवरूवेहि चेव वग्गरासिं गुणिय गुणहाणि

विभाग ज्ञात कर करना चाहिये ।

अब द्वितीय अंकके उत्पन्न करानेमें गुणहानिका प्रमाण १२८ और गुणहानिके अर्ध भागके वर्गमूलका प्रमाण ८ है । इसका गुणहानिमें भाग देनेपर भागहारसे दूना प्राप्त आता है — १६ । एक अधिक इतना आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार दो अंकोंसे अधिक आगे गये हुए अध्वानक दूनेको डेढ़ गुणहानिमें मिलाकर अंगुलके असंख्यातवें भागसे अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतना होता है । तीन अंकोंके उत्पन्न करानेमें गुणहानिका प्रमाण ४८ और गुणहानिके तृतीय भागके वर्गमूलका प्रमाण ४ है । चार अंकोंकी इच्छा करनेपर गुणहानिका प्रमाण ६४ और गुणहानिके चतुर्थ भागके वर्गमूलका प्रमाण ४ है । पांच अंकोंकी इच्छा करनेपर गुणहानिका प्रमाण ८० और गुणहानिके पांचवें भागके वर्गमूलका प्रमाण ४ है । छह अंकोंकी इच्छा करनेपर गुणहानिका प्रमाण ९६ और उसके छठे भागके वर्गमूलका प्रमाण ४ है । सात अंकोंकी इच्छा करनेपर गुणहानिका प्रमाण ११२ और उसके सातवें भागका वर्गमूल ४ है । आठ अंकोंकी इच्छा करनेपर गुणहानिका प्रमाण १२८ और उसके आठवें भागका वर्गमूल ४ है । इसी प्रकार कर्मस्थितिकी द्वितीय गुणहानि तक जानेवालेके प्रथम गुणहानिमें जो विधि कही गई है उसीको यहां भी करना चाहिये । विशेष इतना है कि प्रथम गुणहानिमें दूने प्रक्षेप अंकोंसे वर्गराशिको गुणित करके सदृशमें गुणहानिअध्वानको उत्पन्न कराया गया है । परन्तु यहां प्रक्षेप अंकोंसे ही वर्गराशिको गुणित करके गुणहानिअध्वानको उत्पन्न कराना चाहिये ।

१ अ-काप्रत्योः इच्छिज्जमाणे (प्रति) इति पाठः ।

अद्धाणं उप्पादेदव्वं। तं कध? चरिमगुणहाणिगोवुच्छविसेसेहिंतो दुचरिमगुणहाणिगोवुच्छविसेसाणं दुगुणत्तुवलभादो। अधवा, दुगुणिदपक्खेवरूवाणि एगगुणहाणिं चडिदो त्ति एगरूवं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा ओवट्टिय वग्गरासिम्मि गुणिदे गुणहाणिअद्धाणं उप्पज्जदि। एवं गंतूण कम्मट्ठिदिपढमसमयादो दोगुणहाणीयो चडिदूण बद्धदव्वं कम्मट्ठिदिचरिमसमए चरिम दुचरिमगुणहाणिदव्वमेत्तं चिट्ठदि। तक्काले भागहारोवट्टिदरूवाणि तिण्णिदिवड्ढगुणहाणिमेत्ताणि हवंति। तं जहा— दोगुणहाणीओ चडिदो त्ति दोरूवाणि विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थं करिय रूवूणेण दिवड्ढगुणहाणिम्मि गुणिदाए तिण्णिदिवड्ढगुणहाणीयो समुप्पज्जंति त्ति | ६३०० / ३०० |। एदेण समयपबद्धे भागे हिदे इच्छिददव्वमागच्छदि। पुणो समयाहियवेगुणहाणीओ उवरि चडिदूण बद्धसमयपबद्धभागहारो चदुरूवाहियतीहि दिवड्ढगुणहाणीहि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागे ओवट्टिदे होदि | ६३०० / ३३६ |[1]।

एवं भागहारे गच्छमाणे गोवुच्छविसेसेहिंतो रूवुप्पण्णुद्देसं[2] भणिस्सामो। एत्थ ताव

शंका—उसका क्या कारण है?

समाधान—उसका कारण यह है कि अन्तिम गुणहानिके गोपुच्छविशेषोंकी अपेक्षा द्विचरम गुणहानिके गोपुच्छविशेष दुगुणे पाये जाते हैं।

अथवा, चूंकि एक गुणहानि आगे गया है, अत एव एक अंकका विरलन कर दुगुणा करके परस्पर गुणित करनेसे जो प्राप्त हो उससे दुगुणे प्रक्षेप अंकोंको अपवर्तित करके वर्गराशिको गुणित करनेपर गुणहानिअध्वान उत्पन्न होता है। इस प्रकार जाकर कर्मस्थितिके प्रथम समयसे दो गुणहानियां आगे जाकर बांधा गया द्रव्य कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें चरम और द्विचरम गुणहानियोंके द्रव्यके बराबर रहता है। उस समयमें भागहारके अपवर्तित अंक तीन डेढ़ गुणहानि मात्र होते हैं। यथा— चूंकि दो गुणहानियां आगे गया है, अत एव दो अंकोंका विरलन कर दुगुणा करके परस्पर गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उसमेंसे एक अंक कम करके शेषसे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर तीन डेढ़ गुणहानियां उत्पन्न होती हैं। ६३००/३०० इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर इच्छित द्रव्य आता है [डेढ़ गुणहानि ३००/९, ३००/९ × (२ × २ − १) = ९००/९, ७०० − ३००/९ = ७००×९/३०० = ६३००/३००, ६३०० − ६३००/३०० = ३००]। पुनः एक समय अधिक दो गुणहानियां आगे जाकर बांधे गये समयप्रबद्धका भागहार चार अंकोंसे अधिक तीन डेढ़ गुणहानियों [३००/९ + ४ = ३३६/९] के द्वारा अंगुलके असंख्यातवें भागको अपवर्तित करनेपर होता है ६३००/३३६ ।

इस प्रकार भागहारके जानेपर गोपुच्छविशेषोंमेंसे रूपोत्पन्न उद्देशको कहते हैं।

---

१ प्रतिषु | ६३०० | इति पाठः । २ ताप्रतौ 'रूवुणुप्पण्णुद्देसं' इति पाठः ।

परमादिगुणहाणीणं चडिदद्धाणुप्पायणविहाणं उच्चदे— दुगुणिदरूवेहि ओवट्टिदगुणहाणि-मूलेण गुणहाणिम्हि भागे हिदाए लद्धं रूवाहियं चडिदद्धाणं होदि। चरिमगुणहाणिगोवुच्छविसेसेहिंतो समुप्पज्जमाणाण रूवाण [दुगुणिदपक्खेवरूवेहिंतो गुणहाणिमोवट्टिदे लद्धवग्गमूलं घेत्तूण गुणहाणिम्हि भागे हिदे लद्ध रूवाहियं चडिदद्धाणं होदि।] दुचरिमगुणहाणिगोवुच्छविसेसेहिंतो समुप्पज्जमाणरूवाण दुगुणिदपक्खेवरूवेहि गुणहाणिमोवट्टिय लद्ध दुगुणिय वग्गमूलं घेत्तूण तेण गुणहाणिम्हि भागे हिदे लद्ध रूवाहियं चडिदद्धाणं होदि। तिचरिमगुणहाणिगोवुच्छविसेसेहिंतो समुप्पज्जमाणरूवाण दुगुणिदपक्खेवरूवेहि गुणहाणिमोवट्टिय लद्धं चदुहि गुणिय वग्गमूलं घेत्तूण तेण पुणो गुणहाणिमोवट्टिय रूवे पक्खित्ते चडिदद्धाणं होदि। चदुचरिमगुणहाणिगोवुच्छविसेसेहिंतो समुप्पज्जमाणरूवाणं [दु] गुणिदपक्खेवरूवेहि गुणहाणिमोवट्टिय लद्धमट्ठहि गुणिय वग्गमूलं घेत्तूण तेण गुणहाणि

यहां पहिले प्रथमादिक गुणहानियोंके गये हुए अध्वानके लानेकी विधि बतलाते हैं— दुगुणे अंकोंसे अपवर्तित गुणहानिके वर्गमूलका गुणहानिमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसमें एक अंकके मिलानेपर गया हुआ अध्वान होता है। चरम गुणहानिके गोपुच्छविशेषोंसे उत्पन्न होनेवाले अंकोंके [दुगुणे प्रक्षेप अंकोंसे गुणहानिको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उसके वर्गमूलको ग्रहण करके उसका गुणहानिमें भाग देनेपर जो प्राप्त हो उसमें एक अंकके मिलानेपर गया हुआ अध्वान होता है। चरम गुणहानिमें गोपुच्छविशेष १, इसका दुगुणा १ × २ = २, गुणहानि ८, ८ ÷ २ = ४, √४ = २, ८ ÷ २ = ४, ४ + १ = ५ अध्वान]।

द्विचरम गुणहानिके गोपुच्छविशेषोंसे उत्पन्न होनेवाले अंकोंके दुगुणे प्रक्षेप अंकोंसे गुणहानिको अपवर्तित कर लब्धको दुगुणा करके वर्गमूल ग्रहण कर उसका गुणहानिमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसमें एक अंकके मिलानेपर गया हुआ अध्वान होता है [द्वि. च. गुणहानि गो. वि. २, २ × २ = ४, ८ ÷ ४ = २, २ × २ = ४ √४ = २, ८ ÷ २ = ४, ४ + १ = ५ अध्वान]।

त्रिचरम गुणहानिके गोपुच्छविशेषोंसे उत्पन्न होनेवाले अंकोंके दुगुणे प्रक्षेप अंकोंसे गुणहानिको अपवर्तित करके लब्धको चारसे गुणित कर वर्गमूल ग्रहण करके उससे पुनः गुणहानिको अपवर्तित कर लब्धमें एक अंकके मिलानेपर गया हुआ अध्वान होता है [४ × २ = ८, ८ ÷ ८ = १ १ × ४ = ४, √४ = २, ८ ÷ २ = ४ ४ + १ = ५ अध्वान]। चतुश्चरम गुणहानिके गोपुच्छविशेषोंसे उत्पन्न होनेवाले अंकोंके दुगुणे प्रक्षेप अंकोंसे गुणहानिको अपवर्तित कर लब्धको आठसे गुणित करके वर्गमूलको ग्रहण कर उससे गुणहानिको अपवर्तित करके लब्धमें एक अंकके

१ मे. १४.

मोवट्टिय लद्धं रूवाहियं कदे चडिदद्धाण होदि । एव गुणहाणिं पडि दुगुणिदपक्खेवरूवो-वट्टिदगुणहाणीए गुणगारो दुगुण-दुगुणकमेण णेदव्वो। एदस्स वग्गमूलमणवट्ठिदभाग-हारो होदि त्ति घेत्तव्वो जाव कम्मट्ठिदिचरिमगुणहाणि त्ति।

एत्थ तदियगुणहाणिम्हि एगरूवमुप्पाइज्जमाणे गुणहाणिपमाण |१२८|। दुगुण-गुणहाणिवग्गमूलं |१६|। एदेण चडिदद्धाणं साधेदव्व। दोरूवाणिमुप्पाइज्जमाणे गुण-हाणिपमाणं |२५६|। एदिस्से वग्गमूलं |१६|। तिण्णिरूवाणिमुप्पाइज्जमाणे गुणहाणिपमाण |३८४|। एदिस्से बेतिभागवग्गमूल |१६|। चत्तारिरूवाणिमुप्पाइज्जमाणे गुणहाणिपमाणं |१२८|। गुणहाणिअद्धवग्गमूल |८|। पचरूवाणिमुप्पाइज्जमाणे गुणहाणिपमाण |६४०|। गुणहाणिबेपचभागवग्गमूल |१६|। छरूवाणिमुप्पाइज्जमाणे गुणहाणिपमाण |७६८|। गुणहाणितिभागवग्गमूलं |१६|। सत्तरूवाणिमुप्पाइज्जमाणे गुणहाणिपमाणं |८९६|[1]। गुणहाणिबेसत्तभागवग्गमूल |१६|। अट्ठरूवाणिमुप्पाइज्जमाणे गुणहाणिपमाण |६४|[2]। एदिस्से चदुब्भागवग्गमूलं |४|। एव सेसरूवाण पि जाणिदूण अणवट्ठिदभागहारं उप्पाइय चडिदद्धाणं साहेदव्वं।

मिलानेपर गया हुआ अध्वान होता है [$८ \times २ = १६$, $८ - १६ = \frac{१}{२}$, $\frac{१}{२} \times ८ = ४$, $\sqrt{४} = २$, $८ - २ = ४$, $४ + १ = ५$]। इस प्रकार प्रत्येक गुणहानिके प्रति दुगुणे प्रक्षेप अंकोंसे अपवर्तित गुणहानिके गुणकारको उत्तरोत्तर दुगुणे दुगुणे क्रमसे ले जाना चाहिये। इसका वर्गमूल अनवस्थित भागहार होता है, ऐसा कर्मस्थितिकी अन्तिम गुणहानि तक ग्रहण करना चाहिये।

यहां तृतीय गुणहानिमें एक अंकके उत्पन्न करानेमें गुणहानिका प्रमाण १२८ और दुगुणी गुणहानिके वर्गमूलका प्रमाण १६ है। इससे गत अध्वानको सिद्ध करना चाहिये। दो अंकोंको उत्पन्न करानेमें गुणहानिका प्रमाण २५६ और इसका वर्गमूल १६ है। तीन अंकोंको उत्पन्न करानेमें गुणहानिका प्रमाण ३८४ और इसके दो त्रिभागका वर्गमूल १६ है। चार अंकोंको उत्पन्न करानेमें गुणहानिका प्रमाण १२८ और गुणहानिके अर्ध भागका वर्गमूल ८ है। पांच अंकोंको उत्पन्न करानेमें गुणहानिका प्रमाण ६४० और गुणहानिके दो बटे पांचका वर्गमूल १६ है। छह अंकोंको उत्पन्न करानेमें गुणहानिका प्रमाण ७६८ और गुणहानिके तृतीय भागका वर्गमूल १६ है। सात अंकोंको उत्पन्न करानेमें गुणहानिका प्रमाण ८९६ और गुणहानिके दो बटे सातका वर्गमूल १६ है। आठ अंकोंको उत्पन्न करानेमें गुणहानिका प्रमाण ६४ और इसके चतुर्थ भागका वर्गमूल ४ है। इस प्रकार जानकर शेष अंकोंके भी अनवस्थित भागहारको उत्पन्न कराकर गत अध्वानको सिद्ध करना चाहिये।

---

१ प्रतिषु 'गुणहाणिलद्ध' इति पाठ । २ अप्रतौ |७९६| इति पाठः।

कम्मट्ठिदिपढमसमयादो तिण्णिगुणहाणीओ चडिदूण बद्धदव्वस्स भागहारोवट्टणरूव-पमाणं सत्तदिवड्ढगुणहाणीओ $\frac{६३००}{७००}$ । समयाहियतिण्णिगुणहाणीओ चडिदूण बद्धदव्व भागहारो $\frac{६३००}{७०२}$ । एवमुवरि वि भागहारविधी जाणिदूण वत्तव्वा । कम्मट्ठिदिपढमसमयादो जहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणएहि ऊणसव्वगुणहाणिसलागमेत्तगुणहाणीसु बद्धसमयपबद्धाणं कम्मट्ठिदिचरिमसमए असंखेज्जदिभागो चेव अच्छदि। सेसअसंखेज्जा भागा णट्ठा । उवरिमाण पुण संखेज्जदिभागा सेसो, संखेज्जा भागा णट्ठा । एत्थ कारणं जाणिय वत्तव्वं । एवं णेदूण कम्मट्ठिदिचरिमगुणहाणिं मोत्तूण सेससव्वगुणहाणीओ चडिदूण बद्ध दव्वभागहारो दोरूवाणि एगरूवमण्णोण्णब्भत्थरासिअद्धेण रूवूणेण खंडिदएगखंडं च होदि $\begin{vmatrix} २ \\ १ \\ ३१ \end{vmatrix}$ । एदेण समयपबद्धे भागे हिदे बिदियादिसव्वगुणहाणीणं दव्वमागच्छदि ।

संपहि समयाहियमुवरि चडिदूण बद्धदव्वभागहारो वुच्चदे । तं जहा— बिदियादि गुणहाणिदव्वभागहारं विरलिय समयपबद्धं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बिदियादि

कर्मस्थितिके प्रथम समयसे तीन गुणहानियां जाकर बांधे गये द्रव्यके भागहारके अपवर्तन अंकोंका प्रमाण सात डेढ़ गुणहानियां ७ × [illegible] = [illegible], ६३०० ÷ [illegible] = ६३/७ है । एक समय अधिक तीन गुणहानियां जाकर बांधे गये द्रव्यके भागहारके अपवर्तन अंकोंका प्रमाण ६३००/७०२ है । इसी प्रकार आगे भी भागहारकी विधिको जानकर कहना चाहिये । कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंसे हीन समस्त गुणहानिशलाकाओंके बराबर गुणहानियोंमें बांधे गये समयप्रबद्धोंका असंख्यातवां भाग ही कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें रहता है । शेष असंख्यात बहुभाग नष्ट हो जाता है । इससे आगेकी गुणहानियोंमें बांधे गये समयप्रबद्धोंका संख्यातवां भाग ही रहता है शेष संख्यात बहुभाग नष्ट हो जाता है । यहां कारणकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये । इस प्रकार जाकर कर्मस्थितिकी अन्तिम गुणहानिको छोड़कर शेष सब गुणहानियां जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार दो अंक और एक अंकको एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके अर्ध भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड अधिक होता है—२ १/३१ । इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर द्वितीयादिक सब गुणहानियोंका द्रव्य आता है [६३०० ÷ ६३/३१ = ३१००] ।

अब एक समय अधिक आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार कहते हैं । वह इस प्रकार है—द्वितीयादिक गुणहानियों सम्बन्धी द्रव्यके भागहारका विरलन कर समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति द्वितीयादिक गुणहानियोंका

---

१ प्रतिषु 'रूव' इति पाठः ।

गुणहाणिदव्वं पावदि । पुणो एत्थ एगरूवधरिदं पढमगुणहाणिचरिमणिसेगेणोवट्टिय लद्धं विरलेदूण उवरिमएगरूवधरिदं[1] समखंड करिय दिण्णे रूवं पडि चरिमणिसेगो पावदि । तमुवरि दादूण समकरण करिय परिहाणिरूवाणयणं वुच्चदे । तं जहा— हेट्ठिमविरलणा किंचूण-दिवड्ढगुणहाणिमेत्ता, पढमगुणहाणिचरिमणिसेगेण बिदियादिगुणहाणिदव्वे भागे हिदे किंचूण-दिवड्ढगुणहाणिपमाणुवलभादो । एदाए रूवाहियविरलणाए उवरिमविरलणम्मि भागे हिदे दिवड्ढगुणहाणिअद्धेण किंचूणेण एगरूवं खंडिदेगखंडं लब्भदि । एदं[2] मोहणीयं पडुच्च दोरूवहेट्ठिमअंसादो असंखेज्जगुणं, दिवड्ढगुणहाणिअद्धादो अण्णोण्णब्भत्थरासिअद्धस्स असंखेज्जगुणत्तादो । सेसकम्मेसु णिरुद्धेसु एदम्हादो दोरूवाणं हेट्ठिमअंसो असंखेज्जगुणो, सेसकम्माणं अण्णोण्णब्भत्थरासिअद्धादो दिवड्ढगुणहाणिअद्धस्स असंखेज्जगुणत्तादो । तेणेदम्हि सोहिदे मोहणीय- [स्स एगरूवस्स] असंखेज्जदिभागूणदोरूवमेत्ता, सेसकम्माणमेग-रूवस्स असंखेज्जदिभागाहियदोरूवमेत्ता विरलणरासी होदि । एवमेगरूवमेगरूवस्स असं-

---

द्रव्य प्राप्त होता है । पुनः इसमें एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको प्रथम गुणहानिके अन्तिम निषेकसे अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उसका विरलन कर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एक अंकके प्रति अन्तिम निषेक प्राप्त होता है । उसको ऊपर देकर समीकरण करके हीन अंकोंके लानेकी विधि कहते हैं । वह इस प्रकार है— अधस्तन विरलनका प्रमाण कुछ कम डेढ़ गुणहानि है, क्योंकि, प्रथम गुणहानिके अन्तिम निषेकका द्वितीयादिक गुणहानियोंके द्रव्यमें भाग देनेपर कुछ कम डेढ़ गुणहानिका प्रमाण [३१०० ÷ २८८ = १० $\frac{३२०}{२८८}$] पाया जाता है । एक अधिक इस विरलन राशिका उपरिम विरलन राशिमें भाग देनेपर कुछ कम डेढ़ गुणहानिके अर्ध भागसे एक अंकको खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड लब्ध होता है [$\frac{३१००}{२८८}$ + १ = $\frac{३३८८}{२८८}$, ($\frac{६३००}{३५}$ ÷ $\frac{३३८८}{२८८}$) = ($\frac{६३००}{३५}$ × $\frac{२८८}{३३८८}$) = $\frac{६४८}{३७५७}$ = कुछ कम $\frac{१}{२}$ = (१ ÷ कुछ कम डेढ़ गुणहानि)] । यह मोहनीय कर्मकी अपेक्षा दो अंकोंके नीचेके अंशसे असंख्यातगुणा है, क्योंकि, डेढ़ गुणहानियोंके अर्ध भागसे उसकी अन्योन्याभ्यस्त राशिका अर्ध भाग असंख्यातगुणा है । शेष कर्मोंकी विवक्षा करनेपर इसकी अपेक्षा दो अंकोंके नीचेका अंश असंख्यातगुणा है, क्योंकि, शेष कर्मोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिके अर्ध भागकी अपेक्षा डेढ़ गुणहानियोंका अर्ध भाग असंख्यातगुणा है । उसमेंसे इसको कम करनेपर मोहनीयकी विरलन राशि [एक अंकके] असंख्यातवें भागसे हीन दो अंक प्रमाण और शेष कर्मोंकी विरलन राशि एक अंकके असंख्यातवें भागसे अधिक दो अंक प्रमाण होती है ।

शंका— इस प्रकार एक अंक और एक अंकका असंख्यात बहुभाग भागहार

---

१ प्रतिषु 'एगरूवं' इति पाठः । २ अप्रतौ 'एवं' इति पाठः । ३ प्रतिषु 'असखेज्जगुणदिवड्ढ' इति पाठः ।

संखेज्जा भागा च भागहारो होदूण गच्छमाणो कम्हि पदेसे एगरूवमेगरूवस्स संखेज्जा भागा च भागहारो होदि त्ति उत्ते उच्चदे— चरिमगुणहाणिअद्धाणं दुगुणेणुक्कस्स संखेज्जेण रूवूणेण खंडिय तत्थ किंचूणदिवड्ढखंडाणि उवरि चडिदूण बद्धदव्वस्स एगरूवमेगरूवस्स संखेज्जा[1] भागा च भागहारो होदि । तं जहा— एगसमयपबद्धमस्सिदूण पढमगुणहाणिम्हि पदिददव्वस्स चरिमणिसेगे अवणिय मूलग्गसमासेण गोवुच्छविसेसाण समकरणे कदे रूवूणगुणहाणिअद्धेण गुणिदगुणहाणिमेत्ता गोवुच्छविसेसा होंति |१२|७/२|८| । चरिमणिसेगा पुण गुणहाणिमेत्ता |२८८|८| । एदाणि दो वि दव्वाणि दुगुणुक्कस्ससंखेज्जेण रूवूणेण खंडिदे एगखंडदव्वं होदि |१२|७/२|८/२१|२८८|८/२१|। दुगुणुक्कस्ससंखेज्जेण रूवूणेण गुणहाणिम्मि भागे हिदे तत्थ एगभागं रूवूणं गच्छं[2] करिय गोवुच्छविसेसादिउत्तरसंकलणमाणिय पुव्वुत्त गोवुच्छविसेसेहिंतो एत्तियमेत्तगोवुच्छविसेसे घेत्तूण दुगुणुक्कस्ससंखेज्जेण रूवूणेण खंडिदगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेगेसु पक्खित्तेसु एगखंडदव्वं जहासरूवं होदि । पुणो

होकर जाता हुआ किस प्रदेशमें एक अंक और एक अंकका संख्यात बहु भाग भागहार होता है ?

समाधान— उपर्युक्त शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि अन्तिम गुणहानिके अध्वानको एक कम दुगुणे उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित कर उसमेंसे कुछ कम डेढ़ खण्ड आगे जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार एक अंक और एक अंकका संख्यात बहुभाग होता है। वह इस प्रकारसे— एक समयप्रबद्धका आश्रय करके प्रथम गुणहानिमें प्राप्त हुए द्रव्यके अन्तिम निषेकको कम कर मूलाग्रसमाससे (नीचेसे ऊपर तक जोड़ कर) गोपुच्छविशेषोंका समीकरण करनेपर एक कम गुणहानिके अर्ध भागसे गुणित गुणहानि प्रमाण गोपुच्छविशेष होते हैं— [गोपुच्छविशेष १२ गुणहानि ८,] १२ × ७/२ × ८ । परन्तु अन्तिम निषेक गुणहानिके बराबर अर्थात् जितना गुणहानिका प्रमाण होता है उतने होते हैं— अन्तिम निषेक २८८, गुणहानि ८; २८८ × ८ । इन दोनों ही द्रव्योंको एक कम दुगुणे उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करनेपर उनमेंसे एक खण्ड प्रमाण द्रव्य होता है— १२ × ७/२ × ८ × १/२१ = १६; २८८ × ८/२१ = २३०४/२१ ।

एक कम दुगुणे उत्कृष्ट संख्यातका गुणहानिमें भाग देनेपर उनमेंसे एक कम एक भागको गच्छ करके गोपुच्छविशेष आदि उत्तर संकलनको लाकर पूर्वोक्त गोपुच्छविशेषोंमेंसे इतने मात्र गोपुच्छविशेषोंको ग्रहण कर एक कम दुगुणे उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित गुणहानि प्रमाण अन्तिम निषेकोंमें मिलानेपर यथास्वरूपसे एक खण्ड द्रव्य होता है। फिर उस

१ प्रतिषु 'असंखेज्जा' इति पाठः । २ प्रतौ 'एगरूवं गच्छं' इति पाठः ।

सेसगोवुच्छविसेसाओ संकलणसरूवेण हेट्ठा रइदूण गच्छद्धाणं भणिस्सामो | ३२ | ८/२९ |। एदे गोवुच्छविसेसा बिदियखंडम्मि आदी होंति। एगेगो गोवुच्छविसेसो उत्तरं। आदीदो अंतधणं दुगुणं रूवूणं | ३२ | ८/२९ | २ |। आदि-अंतधणाणि एक्कदो काऊण अद्धिय रूवाहियगुणहाणिमेत्त- गोवुच्छविसेसे पक्खित्ते बिदियखंडमज्झिमधणं होदि। एदेण उवट्ठिद[1]गोवुच्छविसेसेसु ओवट्टिदे किंचूणेगखंडमेत्तद्धाणं लब्भदि। एसा थूलद्धपरूवणा। सुहुमद्धाणं धणमट्ठुत्तरगुणिदे[2] एदीए गाहाए आणेदव्वं।

संपहि एदमद्धाणं पि सोहिय भागहारपसाहणं भणिस्सामो। तं जहा— | ३२००/२९ | एदेण उवरिमविरलणाए एगरूवधरिदबिदियादिगुणहाणिसव्वदव्वे भागे हिदे रूवूणदुगुणुक्कस्ससंखेज्जमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणमागच्छदि | ३१/३२ | २९ |। एदं विरलिय एगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे इच्छिददव्वमागच्छदि। एदमुवरि पक्खिविय समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाणमाणयणं वुच्चदे। तं जहा—

गोपुच्छविशेषोंको संकलन स्वरूपसे नीचे रचकर गच्छका अध्वान कहते हैं— [गो. वि ३२ × गु हा ८ - (उ सं १५ × २ - १)] ये गोपुच्छविशेष द्वितीय खण्डमें आदि होते हैं। एक एक गोपुच्छविशेष उत्तर है। आदि धनसे अन्तधन एक कम दुगुणा है— आदि $\frac{३२ \times ८}{२९}$, $\frac{३२ \times ८ \times २}{२९}$ = अन्तधन। आदि और अन्त धनको इकट्ठा करके आधा कर एक अधिक गुणहाणि प्रमाण गोपुच्छविशेषको मिलानेपर द्वितीय खण्डका मध्यम धन होता है। इससे उपस्थित गोपुच्छविशेषोंको अपवर्तित करनेपर कुछ कम एक खण्ड प्रमाण अध्वान पाया जाता है। यह स्थूल अध्वानकी प्ररूपणा है। सूक्ष्म-अध्वानको " धणमट्ठुत्तरगुणिदे- " इत्यादि गाथा (देखो पीछे पृ १५० गा १४) के द्वारा लाना चाहिये।

अब इस अध्वानको भी कम करके भागहारके प्रसाधनको कहते हैं। यथा— $\frac{३२००}{२९}$ इसका उपरिम विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त द्वितीयादिक गुणहानियोंके सब द्रव्यमें भाग देनेपर एक अंकके असंख्यातवें भागसे हीन एक कम दुगुणा उत्कृष्ट सख्यात आता है— ३१०० - $\frac{३२००}{२९}$ = $\frac{३१ \times २९}{३२}$ = २८$\frac{३}{३२}$, (एक कम दुगुणा उत्कृष्ट संख्यात १५ × २ - १ = २९; एक अंकका असंख्यातवां भाग $\frac{३१}{३२}$, २९ - $\frac{३१}{३२}$ = २८$\frac{१}{३२}$)। इसका विरलन कर एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर इच्छित द्रव्य आता है। इसको ऊपर मिलाकर समीकरण करनेपर हीन अंकोंके लानेकी विधि बतलाते हैं। वह इस प्रकार है— एक अंकसे अधिक अधस्तन विर-

---

१ ताप्रतौ 'उव्विट्टिद' इति पाठ। २ अप्रतौ 'घणद्धाण घण धण', काप्रतौ 'घद्द्धाण घण धण'; ताप्रतौ 'पुघद (द्ध) द्धाण धण घण' इति पाठः।

करिय दिण्णे रूवं पडि तिभागपमाणं पावदि । तमुवरि दादूण समकरणं कायव्वं । रूवाहियतिण्णं रूवाणं जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो दोण्णं रूवाणं किं लभामो त्ति |४|१|२| पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिदे लद्धमद्धरूवं $\frac{१}{२}$ । एदम्मि दोरूवेसु सोहिदे सुद्धसेसमेत्तियं होदि $१\frac{१}{२}$ । संपहि गुणहाणिअद्धं विसेसाहियमुवरि चडिदूण बंधमाणस्स सति-भागरूवं भागहारो होदि, रूवाहियदोरूवेहि दोरूवेसु ओवट्टिदेसु एगरूवबेतिभागस्स $\frac{२}{३}$ दोसु रूवेसु परिहाणिदसणादो $१\frac{१}{३}$ । पुणो गुणहाणितिण्णिचदुब्भागमुवरि चडिदूण बंधमाणस्स एगरूवमेग-रूवस्स सत्तमभागो च भागहारो होदि । तं जहा— सतिभागमेगरूवं विरलिय उवरि एगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे इच्छिददव्वं पावदि । एद रूवाहियं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो दोण्णं रूवाणं किं लभामो त्ति | $\frac{७}{३}$ | १ | २ | लद्ध $\frac{६}{७}$ । एदम्मि दोसु रूवेसु सोहिदे सुद्धसेसमेदं $१\frac{१}{७}$ । तस्स समयपबद्धस्स गुणिदकम्मंसिओ[1] णेरइयचरिमसमए पढमगुणहाणिदव्वस्स तीहि चदुब्भागेहि

एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति तृतीय भागका प्रमाण प्राप्त होता है। उसको ऊपर देकर समीकरण करना चाहिये। एक अधिक तीन अंकोंके यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो दो अंकोंके प्रति वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर आधा अंक लब्ध होता है— $\frac{२ \times १}{४} = \frac{१}{२}$ । इसको दो अंकोंमेंसे कम करनेपर शेष इतना होता है— $१\frac{१}{२}$ । अब गुणहानिके अर्ध भागसे विशेष अधिक आगे जाकर बांधे जानेवाले द्रव्यका भागहार तृतीय भाग सहित एक अंक होता है, क्योंकि, एक अधिक दो अंकोंके द्वारा दो अंकोंको अपवर्तित करनेपर दो अंकोंमें एक अंकके दो त्रिभाग- ($\frac{२}{३}$) की हानि देखी जाती है— $२ - \frac{२}{३} = १\frac{१}{३}$ । पुनः गुणहानिके तीन चतुर्थ भाग आगे जाकर बांधे जानेवाले द्रव्यका भागहार एक अंक और एक अंकका सातवां भाग होता है। वह इस प्रकारसे— तृतीय भाग सहित एक अंकका विरलन कर ऊपर एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर इच्छित द्रव्य प्राप्त होता है। एक अधिक इतना ($\frac{७}{३}$) जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो दो अंकोंके वह कितनी पायी जावेगी, [इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर] लब्ध इतना होता है— $\frac{३}{७} \times \frac{१}{१} - \frac{२}{१} = \frac{६}{७}$ । इसको दो अंकोंमेंसे कम कर देनेपर शेष यह रहता है— $२ - \frac{६}{७} = १\frac{१}{७}$ । उस समयप्रबद्धमेंसे गुणितकर्मांशिक जीव नारक भवके अन्तिम समयमें प्रथम गुणहानि सम्बन्धी द्रव्यके तीन चतुर्थ भागोंके साथ

[1] प्रतिषु 'समयपबद्धस्स गुणहाणिगुणिदकम्मसिओ' इति पाठः ।

सह विदियादिगुणहाणिदव्वं धरेदि, समयपबद्धमट्ठमभागेण धरेदि त्ति उत्तं होदि। एगमेगरूवमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो गच्छमाणो केत्तियदव्वे वड्ढिदे एगरूवमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागो च भागहारो होदि त्ति उत्ते उच्चदे — गुणहाणिं जहण्णपरित्तासंखेज्जस्स अद्धेण रूवाहिएण खंडिदूण तत्थ एगखंडं मोत्तूण बहुखंडाणि विसेसाहियाणि हेट्ठदो उवरि चडिदूण बद्धदव्वस्स एगरूवमेगरूवं विसेसाहियजहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडिदेगखंडं च भागहारो होदि। तं जहा — $\frac{९}{८}$ एदं विरलिय रूवाहियं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि $\frac{१७}{८}$ किं लभामो त्ति | $\frac{१७}{८}$ | १ | २ | पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेत्तियं होदि $\frac{१६}{१७}$। एदम्मि दोसु रूवेसु सोहिदे एगरूवं रूवाहियजहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडिदेगरूवं च भागहारो १ $\frac{१}{१७}$ होदि। एदेण समयपबद्धे भागे हिदे दुरूवाहियजहण्णपरित्तासंखेज्जेण समयपबद्धं खंडिदूण तत्थ एगखंडं मोत्तूण बहुखंडाणि भागच्छंति। एत्तो प्पहुडि उवरि जे बद्धा समयपबद्धा तेसिमसंखेज्जदिभागो चेव णट्ठो, सेसमसंखेज्जा भागा च

द्वितीयादिक गुणहानियोंके द्रव्यको धारण करता है। अभिप्राय यह कि वह आठवें भागसे हीन समयप्रबद्धको धारण करता है। [प्रथम गुणहानिका द्रव्य $\frac{1}{2}$ समयप्रबद्ध, द्वितीयादिक गुणहानिका द्रव्य $\frac{1}{2}$ समयप्रबद्ध, $\frac{1}{2} \times \frac{3}{4} + \frac{1}{2} = \frac{7}{8}$।]

शंका — इस प्रकार एक अंक और एक अंकका असंख्यातवां भाग भागहार जाता हुआ कितने द्रव्यकी वृद्धि होनेपर एक अंक और एक अंकका असंख्यातवां भाग भागहार होता है ?

समाधान — ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि जघन्य परीतासंख्यातके अर्ध भागमें एक मिलानेपर जो प्राप्त हो उससे गुणहानिको खण्डित कर उसमेंसे एक खण्डको छोड़कर विशेषाधिक बहुभाग प्रमाण नीचेसे ऊपर जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार एक अंक और एक अंकको विशेषाधिक जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित करनेपर एक खण्ड भागहार होता है। वह इस प्रकारसे — एक अधिक रचना ($\frac{९}{८}$) विरलन कर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर लब्ध इतना होता है — $२ \times १ \div \frac{१७}{८} = \frac{१६}{१७}$। इसको दो अंकोंमेंसे कम कर देनेपर एक पूर्ण अंक और एक अधिक जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित एक अंक भागहार होता है — $२ - \frac{१६}{१७} = १\frac{१}{१७}$।

इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर दो अधिक जघन्य परीतासंख्यातसे समयप्रबद्धको खण्डित कर उसमेंसे एक खण्डको छोड़कर बहुखण्ड आते हैं। यहांसे लेकर आगे जो समयप्रबद्ध बांधे गये हैं उनका असंख्यातवां भाग ही नष्ट हुआ

णट्ठा। णवरि णारगचरिमसमयप्पहुडि हेट्ठा समयाहियआबाधामेत्तसमयपबद्धाणमेक्को वि ण णट्ठो परमाणू, अप्पहाणीकयओकड्डणदव्वत्तादो।

संपहि आबाहं पहाणं कादूण भण्णमाणे आबाधाब्भंतरे बद्धसमयपबद्धाणमोकड्डणादो चेव विणासो। एगाए वि गोवुच्छाए जधा[1] णिसेगसरूवेण गलणं णत्थि, णारगचरिमसमयप्पहुडि उवरि णिक्खित्तपढमादिगोउच्छत्तादो। संपहि आबाधाब्भंतरे बद्धसमयपबद्धाणमोकड्डणाए णट्ठदव्वपरिक्खा कीरदे। तं जहा— एत्थ ताव तं चउव्विहं एगसमयपबद्धस्स एगसमयओकड्डिदादो एगसमयगलिदं, एगसमयपबद्धस्स एगसमयओकड्डिदादो णाणासमयगलिदं, एगसमयपबद्धस्स णाणासमयओकड्डिदादो णाणासमयगलिदं, णाणासमयपबद्धाणं णाणासमयओकड्डिदादो णाणासमयगलिदं चेदि। तिण्हं वाससहस्साणं समयपंतिं ठवेदूण कमेण चदुण्णं णट्ठदव्वाणं परूवणे कीरमाणे णारगचरिमसमयं मोत्तूण तिण्णि वाससहस्साणि हेट्ठा ओसरिय जो बद्धो समयपबद्धो तस्स ताव उच्चदे— एगसमयपबद्धं ठविय तस्स हेट्ठा ओकड्डुक्कड्डणभागहारे ठविदे एगसमयओकड्डिददव्वं होदि। तं सव्वमुदयावलियबाहिरे गोवुच्छागारेण णिसिंचदि त्ति पढमणिसेयपमाणेण कदे दिवड्ढगुणहाणि-

---

है, शेष असंख्यात बहुभाग नष्ट नहीं हुआ है। विशेष इतना है कि नारक भवके अन्तिम समयसे लेकर नीचे एक समय अधिक आबाधा प्रमाण समयप्रबद्धोंका एक भी परमाणु नष्ट नहीं हुआ है, क्योंकि, यहां अपकर्षण द्रव्यको अप्रधान किया गया है।

अब आबाधाको प्रधान करके कथन करनेपर आबाधाके भीतर बांधे गये समयप्रबद्धोंका अपकर्षण द्वारा ही विनाश होता है। कारण यह कि निषेक स्वरूपसे एक भी गोपुच्छका गलन नहीं है, क्योंकि, नारक भवके अन्तिम समयसे लेकर आगे प्रथमादिक गोपुच्छोंका निक्षेप किया गया है। अब आबाधाके भीतर बांधे गये समयप्रबद्धोंके अपकर्षण द्वारा नष्ट हुए द्रव्यकी परीक्षा करते हैं। वह इस प्रकार है— यहां उक्त द्रव्य एक समयप्रबद्धके एक समयमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे एक समयमें गलित हुआ, एक समयप्रबद्धके एक समयमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नानासमयोंमें गलित हुआ, एक समयप्रबद्धके नाना समयोंमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें गलित हुआ, तथा नाना समयप्रबद्धोंके नाना समयोंमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें गलित हुआ, इस प्रकारसे चार प्रकारका है। तीन हजार वर्षोंकी समयपाक्तिको स्थापित करके क्रमसे चारों नष्ट द्रव्योंकी प्ररूपणा करनेमें नारक भवके अन्तिम समयको छोड़कर तीन हजार वर्ष नीचे उतर कर जो समयप्रबद्ध बांधा गया है उसके सम्बन्धमें प्ररूपणा करते हैं— एक समयप्रबद्धको स्थापित कर उसके नीचे अपकर्षण-उत्कर्षणभागहारको स्थापित करनेपर एक समयमें अपकृष्ट द्रव्यका प्रमाण होता है। उस सबको चूंकि उदयावलीके बाहिर गोपुच्छाकारसे देता है, अत एव प्रथम निषेक प्रमाणसे करनेपर डेढ़ गुणहानि प्रमाण प्रथम निषेक होते हैं। इसीलिये डेढ़

---

१ अ-काप्रत्योः 'छद्द' इति पाठः। २ काप्रतौ 'जथा' इति पाठः।

णेरइयणिसेया होंति। तेण दिवड्ढगुणहाणिणा ओकड्डिददव्वे भागे हिदे एगसमयपबद्धस्स एगसमयओकड्डिदस्स पढमसमयणिक्खित्तभागो आगच्छदि। पुणो तस्सेव बिदियसमयगलिदे आणिज्ज-[1] माणे दिवड्ढगुणहाणीओ विरलिय एगसमयपबद्धस्स एगसमयओकड्डिददव्वं समखंडं करिय दिण्णे पढमसमयगलिददव्वपमाणं पावदि।

संपहि एदस्स हेट्ठा णिसेगभागहारं विरलिय पढमसमयगलिदं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि गोवुच्छविसेसो पावदि। तं उवरिमविरलणसव्वरूवधरिदेसु अवणिय पक्खित्तगोवुच्छपमाणेण कीरमाणे समुप्पण्णसलागाणं पमाणमाणिज्जदे। तं जहा— रूवूण-हेट्ठिमविरलणमेत्तविसेसेसु जदि एगा सलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तविसेसेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिदे पक्खेवसलागाओ लब्भंति। ताओ उवरिम-विरलणाए पक्खिविय एगसमयओकड्डिददव्वे भागे हिदे तत्तो बिदियसमयगलिददव्व-मागच्छदि। पुणो णिसेयभागहारस्स अद्धेण रूवूणेण दिवड्ढगुणहाणीओ ओवट्टिय जं लद्ध

गुणहानिका अपकृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर एक समयप्रबद्धके एक समयमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे प्रथम समयमें नष्ट हुआ द्रव्य आता है। फिर उक्त द्रव्यमेंसे ही द्वितीय समयमें नष्ट द्रव्यका प्रमाण लानेके लिये डेढ़ गुणहानियोंका विरलन कर एक समयप्रबद्धके एक समयमें अपकृष्ट द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रथम समयमें नष्ट द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

अब इसके नीचे निषेकभागहारका विरलन कर प्रथम समयमें नष्ट हुए द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक अंकके प्रति गोपुच्छविशेष प्राप्त होता है। इसको उपरिम विरलन राशिके सब अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्योंमेंसे कम करके प्रक्षिप्त गोपुच्छके प्रमाणसे करनेपर उत्पन्न हुई शलाकाओंका प्रमाण लाते हैं। वह इस प्रकार है— एक कम अधस्तन विरलन प्रमाण विशेषोंमें यदि एक शलाका पायी जाती है तो उपरिम विरलन प्रमाण विशेषोंमें कितनी शलाकायें पायी जावेंगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर प्रक्षेपशलाकायें प्राप्त होती हैं। उनको उपरिम विरलनमें मिलाकर एक समयमें अपकृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर उसमेंसे द्वितीय समयमें नष्ट हुआ द्रव्य आता है। [समयप्रबद्धमेंसे अपकृष्ट द्रव्यका प्रमाण ६१४४ डेढ़ गुणहानि १२ निषेकभागहार १६, $\frac{६१४४}{१} \times \frac{१}{१२} = ५१२$ प्रथम निषेक, $५१२ \div १६ = ३२$ चयका प्रमाण; एक कम निषेकभागहार १५ पर यदि एककी हानि होती है तो १२ पर कितनेकी हानि होगी- $\frac{१२}{१५} = \frac{४}{५}$, $१२ + \frac{४}{५} = \frac{६४}{५}$ द्वितीय निषेकका भागाहार। $\frac{६१४४ \times ५}{६४} = ४८०$ द्वितीय निषेक]। फिर एक कम निषेकभागहारके अर्ध भागसे डेढ़ गुणहानियोंको

---

१ [illegible] ' इति पाठः।

तमुवरिमविरलणाए पक्खिविय तेणेगसमयओकड्डिददव्वे भागे हिदे तत्तो तदियसमए गलिद-दव्वं होदि। एवं णेदव्वं जाव णेरइयदुचरिमसमए ओकड्डणाए गलिददव्वं ति। एवं सव्वसमयपवद्धाणमेगसमओकड्डिदएगसमयगलिददव्वपरूवणा कायव्वा। णवरि णेरइयदुचरिम-समयप्पहुडि हेट्ठिमदोसु आवलियासु बद्धदव्वाणमेसो विचारो णत्थि, चरिमावलियाए ओकड्डणाभावादो दुचरिमावलियाए ओकड्डिददव्वस्स असंखेज्जलोगपडिभागेण विणासुव-लंभादो[1]। एवमेगसमयपवद्धएगसमयओकड्डिदएगसमयगलिदस्स परूवणा गदा।

संपधि एगसमयपवद्धएगसमयओकड्डिदणाणासमयगलिदं वत्तइस्सामो। तं जहा— णेरइयचरिमसमयं मोत्तूण तिण्णिवाससहस्साणि हेट्ठा ओसरिय जो बद्धो समयपबद्धो[2] त बंधावलियादिक्कंतमोकड्डियं[3] उदयावलियाए असंखेज्जलोगपडिभागिग दव्वं पक्खिविय पुणो उदयावलियबाहिरे सेसदव्वं गोवुच्छागारेण णिसिंचदि। तत्थ णेरइयदुचरिमसमयादो हेट्ठा णिक्खित्तदव्वं णट्ठमिदि तस्साणयणे भण्णमाणे एगसमयपवद्धस्स पढमसमयओकड्डिद-

---

अपवर्तित कर जो लब्ध हो उसको उपरिम विरलनमें मिलाकर उसका एक समयमें अपकृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर उसमेंसे तृतीय समयमें नष्ट द्रव्य होता है [नि भा. १६; डेढ़ गु हा. $\frac{६३००}{५१२}$, उपरिम विरलन $\frac{६३००}{५१२}$, $\frac{६३००}{५१२} - \left(\frac{१६}{२} - १\right) = \frac{९००}{५१२}$; $\frac{६३००}{५१२} + \frac{९००}{५१२} = \frac{७२००}{५१२}$; $६३०० - \frac{७२००}{५१२}$ = ४४८ तृतीय समयमें नष्ट द्रव्य]। इस प्रकार नारक भवके द्विचरम समयमें अपकर्षण द्वारा नष्ट द्रव्य तक ले जाना चाहिये। इसी प्रकार सब समयप्रबद्धोंके एक समयमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे एक समयमें नष्ट हुए द्रव्यकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेषता इतनी है कि नारक भवके द्विचरम समयसे लेकर नीचेकी दो आवलियोंमें बाधे गये द्रव्योंके सम्बन्धमें यह विचार नहीं है, क्योंकि, चरम आवलीमें अपकर्षणका अभाव है व द्विचरम आवलीमें अपकर्षण प्राप्त द्रव्यका असंख्यात लोक प्रतिभागसे विनाश पाया जाता है। इस प्रकार एक समयप्रबद्धके एक समयमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे एक समयमें नष्ट हुए द्रव्यकी प्ररूपणा समाप्त हुई।

अब एक समयप्रबद्धके एक समयमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें नष्ट द्रव्यकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— नारक भवके अन्तिम समयको छोड़कर तीन हजार वर्ष नीचे आकर जो समयप्रबद्ध बांधा गया है, बंधावलीसे रहित उसका अपकर्षण कर उदयावलीमें असंख्यात लोक प्रतिभागको प्राप्त द्रव्यमें मिलाकर फिर उदयावलीके बाहिर शेष द्रव्यको गोपुच्छके आकारसे देता है। इसमें नारक भवके द्विचरम समयसे नीचे निक्षिप्त द्रव्य चूंकि नष्ट हो चुका है अत एव उसके लानेकी प्ररूपणामें एक समयप्रबद्धके प्रथम समयमें अपकृष्ट द्रव्यको स्थापित

---

१ ताप्रती 'विणास (सु) वलंभादो' इति पाठ। २ प्रतिषु 'बद्धो सो समयपबद्धो' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'मोवट्टिय' इति पाठः।

दव्वं ठविय दिवड्ढगुणहाणीए ओवट्टिदे पढमसमयगलिददव्वमागच्छदि । पुणो वेआवलियाहि परिहीणतीहि वाससहस्सेहि दिवड्ढगुणहाणीओ ओवट्टिय एगसमयपबद्धएगसमयओकड्डिददव्वे भागे हिदे दोआवलिऊणतिण्णिवाससहस्समेत्तपढमणिसेया आगच्छंति । समयाहियदोआवलियूणतिण्णिवाससहस्साणं संकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा अहिया जादा त्ति तेसिमवणयणविहाणं उच्चदे । तं जहा— दोआवलिऊणतीहि वाससहस्सेहि गुणिदणिसेय भागहारं विरलिय उवरिमएगरूवधरिदपमाणमण्णं समखंडं करिय दिण्णे एगगोवुच्छविसेसो पावदि । पुणो रूवाहियदोआवलियूणतिण्णिवाससहस्साणं संकलणाए ओवट्टिय पुव्वदिण्णं दिण्णे संकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा विरलणरूवं पडि पावेंति । ते घेत्तूण उवरिमविरलणसव्वरूवधरिदेसु अवणिदेसु सेसमिच्छिददव्वं होदि ।

अवणिदगोवुच्छविसेसे पयददव्वपमाणेण कीरमाणे उप्पण्णपक्खेवरूवाणं पमाणं उच्चदे— रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तपयदगोवुच्छविसेसेसु जदि एगा पक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धमुवरिमविरलणाए पक्खिविय पढमसमयओकड्डिददव्वे भागे हिदे एगसमयपबद्धस्स पढमसमय

कर डेढ़ गुणहानि द्वारा अपवर्तित करनेपर प्रथम समयमें नष्ट हुआ द्रव्य आता है । फिर दो आवलियों रहित तीन हजार वर्षोंसे डेढ़ गुणहानियोंको अपवर्तित करके एक समयप्रबद्धके एक समयमें अपकृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर दो आवलियोंसे रहित तीन हजार वर्ष प्रमाण प्रथम निषेक आते हैं । एक समय अधिक दो आवलियोंसे रहित तीन हजार वर्षोंके संकलन प्रमाण गोपुच्छविशेष चूंकि अधिक हैं अत एव उनके कम करनेकी विधि कहते हैं । वह इस प्रकार है— दो आवलियोंसे रहित तीन हजार वर्षोंसे गुणित निषेकभागहारका विरलन कर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यके बराबर अन्य द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक गोपुच्छविशेष प्राप्त होता है । फिर एक अधिक दो आवलियोंसे कम तीन हजार वर्षोंकी संकलनासे अपवर्तित कर पूर्व देय राशिको देनेपर विरलन अंकके प्रति संकलन प्रमाण गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं । उनको ग्रहण कर उपरिम विरलन राशिके सब अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्योंमेंसे कम कर देनेपर शेष इच्छित द्रव्य होता है ।

कम किये गये गोपुच्छविशेषोंको प्रकृत द्रव्यके प्रमाणसे करनेपर उत्पन्न हुए प्रक्षेप अंकोंका प्रमाण कहते हैं— एक कम अधस्तन विरलन प्रमाण प्रकृत गोपुच्छविशेषोंमें यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलन प्रमाण उक्त गोपुच्छविशेषोंमें कितनी प्रक्षेपशलाकायें प्राप्त होंगी इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर लब्धको उपरिम विरलनमें मिलाकर प्रथम समयमें अपकृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर एक समयप्रबद्धके प्रथम समयमें अपकृष्ट

ओकड्डिदणाणासमयगलिददव्वमागच्छदि ।

संपधि तस्सेव णिरुद्धसमयपबद्धस्स बिदियसमयओकड्डिदणाणासमयगलिदभागहारे भण्णमाणे पढमसमयगलिदभागहारं रूवाहियदोआवलियूणतीहि वाससहस्सेहि ओवट्टिय लद्धं विरलेदूण बिदियसमयओकड्डिददव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि ओवट्टणरूवमेत्त-पढमणिसेगा पावेंति । पुणो हेट्ठा ओवट्टणरूवगुणिदणिसेगभागहारं रूवूणोवट्टणरूवसंकल-णाए ओवट्टिद विरलिय उवरिमएगरूवधरिदपमाणमण्णं समखंडं करिय दिण्णे रूव पडि संकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा पावेंति । पुणो एदेण पमाणेण उवरिमसव्वधरिदेसु अवणिदे इच्छिदपमाणं होदि । रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तगोवुच्छविसेसाण जदि एगरूवपक्खेवो लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धमुवरिम-विरलणाए पक्खिविय बिदियसमयओकड्डिददव्वे भागे हिदे बिदियसमयमोकड्डिदणाणा-समयगलिददव्वं होदि ।

एवं तदिय-चउत्थ-पंचमादिसमयओकड्डिदणाणासमयगलिदाण परूवणा कायव्वा जाव णेरइयचरिमसमयादो हेट्ठा दुसमयाहियआवलियमेत्तमोदरिय ट्ठिदसमयम्हि ओकड्डिदूण

द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें नष्ट हुआ द्रव्य आता है। अब उसी विवक्षित समय-प्रबद्धके द्वितीय समयमें अपकृष्ट नाना समयोंमें नष्ट हुए द्रव्यके भागहारकी प्ररूपणामें प्रथम समयमें नष्ट द्रव्यके भागहारको एक अधिक दो आवलियोंसे कम तीन हजार वर्षोंसे अपवर्तित कर लब्धका विरलन करके द्वितीय समयमें अपकृष्ट द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक अंकके प्रति अपवर्तन अंकोंके बराबर प्रथम निषेक प्राप्त होते हैं। फिर नीचे अपवर्तन रूपोंसे गुणित निषेकभागहारको एक कम अपवर्तन रूपोंके संकलनसे अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उसका विरलन कर उपरिम रूपोंके प्रति प्राप्त द्रव्यके बराबर अन्य द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक अंकके प्रति संकलन प्रमाण गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं। फिर इस प्रमाणसे उपरिम सब अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्योंमेंसे कम करनेपर इच्छित प्रमाण होता है । एक कम अधस्तन विरलन प्रमाण गोपुच्छविशेषोंके यदि एक अंकका प्रक्षेप पाया जाता है तो उपरिम विरलन प्रमाण गोपुच्छविशेषोंमें कितने अंकोंका प्रक्षेप पाया जावेगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर लब्धको उपरिम विरलनमें मिलाकर द्वितीय समय सम्बन्धी अपकृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय समयमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें नष्ट हुआ द्रव्य आता है ।

इसी प्रकार तृतीय, चतुर्थ और पंचम आदि समयोंमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें नष्ट द्रव्योंकी प्ररूपणा करना चाहिये जब तक कि नारक भवके अन्तिम समयसे नीचे दो समय अधिक आवली प्रमाण उतर कर स्थित समयमें

---

१ अ-काप्रत्योः 'समओओकड्डिद' इति पाठः ।

णिवदिदव्वं ति । एवं सरूवदोआवलियूणआबाधामेत्तसव्वसमयपबद्धाणं पुध पुध परूवणा कायव्वा । एवमेगसमयपबद्धएगसमयओकड्डिददव्वणाणासमयगलिदस्स परूवणा कदा ।

संपहि एगसमयपबद्धणाणासमयओकड्डिददव्वणाणासमयगलिदस्स परूवणा कीरदे । तं जहा — एगसमयपबद्धं ठविय ओकड्डुक्कड्डणभागहारगुणिददिवड्ढगुणहाणीहि[1] भागे हिदे एगसमयपबद्धएगसमयओकड्डिददव्वपढमसमयगलिददव्वमागच्छदि । पुणो ओकड्डुक्कड्डणभागहारगुणिददिवड्ढगुणहाणीओ दोआवलियूणआबाधासंकलणाए ओवट्टिय लद्धं विरलेदूण एगसमयपबद्धं समखंडं करिय दिण्णे संकलणमेत्तपढमणिसेया विरलणरूवं पडि पावेंति । पुणो एदेसिं जहासरूवेण आगमणमिच्छामो त्ति एदिस्से विरलणाए हेट्ठा पुव्विल्लसंकलणाए गुणिदणिसेयभागहारं विरलिय उवरिमेगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि एगेगगोवुच्छविसेसो पावदि । पुणो गोवुच्छविसेसाणं जहासरूवेण आगमणमिच्छामो त्ति रूवूणगच्छसंकलणासंकलणाए इमं भागहारमोवट्टिय लद्धं विरलेदूण उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे संकलणासंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा पावेंति । पुणो तेण पमाणेण

अपकर्षण करके नष्ट कराया गया द्रव्य प्राप्त होता है। इस प्रकार एक अंक सहित दो आवलियोंसे हीन आबाधाके बराबर सब समयप्रबद्धोंकी पृथक् पृथक् प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार एक समयप्रबद्धके एक समयमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें नष्ट द्रव्यकी प्ररूपणा की गई है।

अब एक समयप्रबद्धके नाना समयोंमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें नष्ट हुए द्रव्यकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है — एक समयप्रबद्धको स्थापित कर उसमें अपकर्षण उत्कर्षणभागहारसे गुणित डेढ़ गुणहानियोंका भाग देनेपर एक समयप्रबद्धके एक समयमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे प्रथम समयमें नष्ट हुआ द्रव्य आता है। पुनः अपकर्षण उत्कर्षणभागहारसे गुणित डेढ़ गुणहानियोंको दो आवलियोंसे हीन आबाधाके संकलनसे अपवर्तित कर लब्धका विरलन कर एक समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर संकलनके बराबर प्रथम निषेक प्रत्येक विरलन अंकके प्रति प्राप्त होते हैं। फिर चूंकि यथास्वरूपसे इनका लाना अभीष्ट है अतएव इस विरलनके नीचे पूर्वोक्त संकलनसे गुणित निषेकभागहारका विरलन कर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक विरलन अंकके प्रति एक एक गोपुच्छविशेष प्राप्त होता है। फिर चूंकि गोपुच्छविशेषोंका यथास्वरूपसे लाना अभीष्ट है अतः एक कम गच्छके संकलनासंकलनसे इस भागहारको अपवर्तित कर लब्धका विरलन करके उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक अंकके प्रति संकलनासंकलनके प्रमाण गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं। पुनः इस प्रमाणसे उपरिम सब अंकोंके प्रति प्राप्त

---

१ अ-काप्रत्योः 'ओकड्डुक्कड्डण-' इति पाठः। २ प्रतौ 'समखंडिय' इति पाठः।

उवरिमसव्वरूवधरिदेसु [अवणिदे] अवणिदसेसमिच्छिदपमाणं होदि ।

संपहि अवणिदगोवुच्छाविसेसे पयददव्वपमाणेण कीरमाणे उप्पण्णसलागाणमाणयणं उच्चदे । त जहा— रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तगोवुच्छविसेसेसु जदि एगरूवपक्खेवो लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तगोवुच्छाविसेसेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमवहरिय लद्धं उवरिमविरलणाए पक्खिविय समयपबद्धे भागे हिदे एगसमयपबद्धणाणासमयओकड्डिद-णाणासमयगलिददव्वमागच्छदि । णवरि पढमसमयओकड्डिददव्वादो विदियादिसमएसु ओकड्डिददव्वं विसेसहीणं होदि त्ति ण सव्वगोवुच्छाओ समाणाओ । तेणेसो विसेसो जाणेदव्वो । एव सव्वसमयपबद्धाणं पुध पुध णाणासमयओकड्डिदणाणासमयगलिदाणं भागहारो वत्तव्वो । णवरि अणंतरादीदसकलण-संकलणाण[2] गच्छादो रूवूणो त्ति घेत्तव्वो । एवमेगसमयपबद्ध-[णाणासमयओकड्डिद]णाणासमयगलिदपमाणपरूवणा कदा ।

संपधि णाणासमयपबद्धणाणासमयओकड्डिदणाणासमयगलिददव्वस्स परूवणा कीरदे । तं जहा — ओकड्डुक्कड्डणभागहारगुणिददिवड्ढगुणहाणीओ दोआवलिऊणआबाहासंकलणा-सकलणाए ओवट्टिय लद्धं विरलेदूण समयपबद्ध समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स

द्रव्योंमेंसे कम करनेपर शेष रहा इच्छित द्रव्यका प्रमाण होता है ।

अब कम किये गये गोपुच्छाविशेषोंको प्रकृत द्रव्यके प्रमाणसे करनेमें उत्पन्न शलाकाओंके लानेकी विधि बतलाते हैं । वह इस प्रकार है— एक कम अधस्तन विरलन प्रमाण गोपुच्छाविशेषोंमें यदि एक अंकका प्रक्षेप पाया जाता है तो उपरिम विरलन प्रमाण गोपुच्छविशेषोंमें कितने अंकोंका प्रक्षेप पाया जायगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर लब्धको उपरिम विरलनमें मिलाकर समयप्रबद्धमें भाग देनेपर एक समयप्रबद्धके नाना समयोंमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें नष्ट हुआ द्रव्य आता है । विशेष इतना है कि प्रथम समयमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसें द्वितीयादिक समयोंमें अपकृष्ट द्रव्य चूंकि विशेष हीन होता है, अत एव सब गोपुच्छ समान नहीं हैं । इसलिये यह विशेषता जानने योग्य है । इसी प्रकार सब समयप्रबद्धोंके नाना समयोंमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें नष्ट द्रव्योंके भागहारकी पृथक् पृथक् प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि अनन्तर अतीत तीन वार सकलनके गच्छसे वह एक कम होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । इस प्रकार एक समयप्रबद्धके [नाना समयोंमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे] नाना समयोंमें नष्ट द्रव्यकी प्ररूपणा की गई है ।

अब नाना समयप्रबद्धोंके नाना समयोंमे अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें नष्ट द्रव्यकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— अपकर्षण-उत्कर्षणभागहारसे गुणित डेढ गुणहानियोंको दो आवलियोंसे हीन आबाधाके सकलनासकलनसे अपवर्तित कर लब्धका विरलन करके समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर एक

१ प्रतिषु ' उवरिमविरलणमेत्तपक्खेवेसु ' इति पाठ । २ प्रतिषु ' संकलणासकलणासकलणाणं ' इति पाठ ।

सयलपक्खेवभागहारमेत्तपढमणिसेगा पावेंति । पुणो एदेसिं जहासरूवेण आगमणमिच्छामो त्ति सयलपक्खेवभागहारस्स रूवूणगच्छुप्पण्णस्स इमं भागहारं ओवट्टिय विरलेदूण उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे सयलपक्खेवभागहारमेत्तगोवुच्छविसेसा पावेंति । पुणो एदेण पमाणेण उवरिमसव्वरूवधरिदेसु अवणिदे इच्छिददव्वं होदि । पुणो अवणिददव्वे तप्पमाणेण कीरमाणे[1] उप्पण्णरूवपमाणं वुच्चदे । तं जहा— रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तगोवुच्छविसेसेसु जदि एगरूवपक्खेवो लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तेसु किं लभामो[2] त्ति पमाणेण फलगुणिद इच्छमोवट्टिय लद्धमुवरिमविरलणाए पक्खिविय समयपबद्धे भागे हिदे णाणासमयपबद्ध णाणासमयओकड्डिदणाणासमयगलिददव्वमागच्छदि । एवं णाणासमयपबद्धणाणासमयओक- ड्डिदणाणासमयगलिददव्वस्स परूवणा गदा । एवं भागहारपमाणाणुगमो समत्तो ।

संपहि समयपबद्धपमाणाणुगमो वुच्चदे । तं जहा— णेरइयचरिमसमए उदय गदगोवुच्छा एगसमयपबद्धमेत्ता, तत्थ पढमणिसेगप्पहुडि जाव चरिमणिसेगो त्ति सव्व णिसेगाणमुवलंभादो । बिदियसमयगोवुच्छा किंचूणसमयपबद्धमेत्ता, तत्थ पढमणिसेगा

एक अंकके प्रति सकलप्रक्षेपभागहार प्रमाण प्रथम निषेक प्राप्त होते हैं। फिर चूंकि इनका यथास्वरूपसे लाना अभीष्ट है, अत एव एक कम गच्छसे उत्पन्न सकल प्रक्षेपभागहारसे इस भागहारको अपवर्तित कर लब्धका विरलन करके उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर सकलप्रक्षेपभागहार प्रमाण गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं। फिर इस प्रमाणसे उपरिम सब अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्योंमेंसे कम करनेपर इच्छित द्रव्य होता है। पुनः कम किये गये द्रव्यको उसके प्रमाणसे करनेपर उत्पन्न अंकोंका प्रमाण कहते हैं। वह इस प्रकार है— एक कम अधस्तन विरलन प्रमाण गोपुच्छविशेषोंमें यदि एक अंकका प्रक्षेप पाया जाता है तो उपरिम विरलन प्रमाण गोपुच्छविशेषोंमें वह कितना पाया जावेगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर लब्धको उपरिम विरलनमें मिलाकर समयप्रबद्धमें भाग देनेपर नाना समयप्रबद्धोंके नाना समयोंमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें नष्ट हुआ द्रव्य आता है। इस प्रकार नाना समयप्रबद्धोंके नाना समयोंमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें नष्ट द्रव्यकी प्ररूपणा समाप्त हुई। इस प्रकार भागहारप्रमाणानुगम समाप्त हुआ।

अब समयप्रबद्धप्रमाणानुगमकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकारसे— चरमसमयवर्ती नारकीकी उदयगत गोपुच्छा एक समयप्रबद्ध प्रमाण है, क्योंकि उसमें प्रथम निषेकसे लेकर अन्तिम निषेक तक सब निषेक पाये जाते हैं। द्वितीय समयमें स्थित संचय गोपुच्छा कुछ कम एक समयप्रबद्ध प्रमाण है क्योंकि उसमें

---

१ प्रतिषु 'कीरमाणेण' इति पाठः । २ प्रतिषु 'किंचे संचयं लभामो' इति पाठः ।

भावादो । तदियसमयगोवुच्छा[1] किंचूणसमयपबद्धमेत्ता, पढम-बिदियणिसेगाभावादो । चउत्थसमयगोवुच्छा[2] वि किंचूणसमयपबद्धमेत्ता, पढम-बिदिय तदियणिसेगाभावादो[3] । एवं णेदव्वं जाव गुणहाणिचरिमसमओ त्ति ।

संपधि रूवाहियगुणहाणिमेत्तद्धाणं चडिदूण ट्ठिदसंचयगोवुच्छा चरिमगुणहाणिदव्वेणूणसमयपबद्धमेत्ता । एत्तो उवरि एगादिएगुत्तरक्कमेण बिदियगुणहाणिगोवुच्छाओ अवणिय णेदव्वं जाव बिदियगुणहाणिचरिमसमओ त्ति । पुणो दोगुणहाणीओ समयाहियाओ चडिदूण ट्ठिदसंचयगोवुच्छा चरिम-दुचरिमगुणहाणिदव्वेणूणसमयपबद्धस्स चदुब्भागमेत्ता । उवरि एगादिएगुत्तरकमेण तदियगुणहाणिगोवुच्छाणमवणयणं कादूण णेदव्वं । एवं जाणिदूण वत्तव्वं जाव चरिमगुणहाणिचरिमसंचयगोवुच्छा त्ति । णवरि उवरि चडिदगुणहाणिसलागमेत्तचरिमादिगुणहाणिदव्वं समयपबद्धम्मि सोहिय गुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासिणा समयपबद्धे भागे हिदे इच्छिदगुणहाणीए पढमसंचयगोवुच्छा आगच्छदि त्ति वत्तव्वं ।

प्रथम निषेकका अभाव है । तृतीय समयमें स्थित संचय गोपुच्छा कुछ कम समयप्रबद्ध प्रमाण है, क्योंकि, उसमें प्रथम और द्वितीय निषेकोंका अभाव है । चतुर्थ समयमें स्थित गोपुच्छा भी कुछ कम समयप्रबद्ध प्रमाण है, क्योंकि, उसमें प्रथम, द्वितीय और तृतीय निषेकोंका अभाव है । इस प्रकार गुणहानिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये ।

अब एक अधिक गुणहानि प्रमाण अध्वान जाकर स्थित संचय गोपुच्छा अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे कम एक समयप्रबद्ध प्रमाण है । इससे आगे एकको आदि लेकर एक अधिक क्रमसे द्वितीय गुणहानिकी गोपुच्छाओंको कम करके द्वितीय गुणहानिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये । पुन. एक समयसे अधिक दो गुणहानियां जाकर स्थित संचय गोपुच्छा चरम और द्विचरम गुणहानिके द्रव्यसे हीन एक समयप्रबद्धके चतुर्थ भाग प्रमाण है । इससे आगे एकको आदि लेकर एक अधिक क्रमसे तृतीय गुणहानिकी गोपुच्छाओंको कम करके ले जाना चाहिये । इस प्रकार अन्तिम गुणहानिकी अन्तिम सचय गोपुच्छा तक जानकर कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि आगे गत गुणहानियोंकी शलाकाओंके बराबर चरम आदि गुणहानियोंके द्रव्यको समयप्रबद्धमेंसे कम करके गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर इच्छित गुणहानिकी प्रथम संचय गोपुच्छा आती है, ऐसा कहना चाहिये ।

उदाहरण— चरमसमयवर्ती नारकीके द्वारा चरम समयसे चार गुणहानि पहिले जो समयप्रबद्ध बाधा गया था उसकी चार गुणहानिया उदयमें आचुकी हैं, दो

---

१ ताप्रतिपाठोऽयम् । अप्रतौ ' तदियम्मयसंचिदगोवुच्छा ', काप्रतौ ' तदियसमयसचयगोवुच्छा ' इति पाठ । २ अप्रतौ ' चउत्थसमगोवुच्छ ' इति पाठ । ३ प्रतिषु ' - तदियगोवुच्छामावादो ' इति पाठः ।

उवरि उदयगोवुच्छा समयपबद्धमेत्त ठविय [११००] गुणहाणीए गुणिदे गुणहाणिमेत्तसमयपबद्धमेत्ता होंति [६३०० | ८] । पुणो रूवूणगुणहाणीए संकलणाए पढमणिसेगे गुणिदे रूवूणगुणहाणिसंकलणमेत्तपढमणिसेगा होंति [५१२ | ७ | ८/२] । पुणो एदे दुरूवूणगुणहाणिसंकलणा-संकलणमेत्तगोवुच्छविसेसेहि[1] ऊणा त्ति कट्टु गोवुच्छविसेसे

एकाद्युत्तरपदवृद्धो रूपाद्यैर्भाजितश्च पदवृद्धैः[2] ।

गच्छस्सम्पातफलं समाहतं[3] सन्निपातफलम्[4] ॥ १५ ॥

एदीए अज्जाए आणिय पढमणिसेगपमाणेण कदे एत्तियं होदि [५१२ | ६ | ७/१२] । एवमेदाओ तिण्णि वि रासीओ पुधं ठवेदव्वाओ । सव्वगुणहाणिदव्वमप्पप्पणो पढमणिसेगपमाणेण कदे दुविहरिणेण सह एत्तिया चेव होंति । णवरि गोवुच्छाओ गोउच्छ-

---

गुणहानियोंका द्रव्य स्थित है । चार गुणहानियोंका द्रव्य— ३२०० + १६०० + ८०० + ४०० = ६००० । ६४०० − ६००० = ४००; चार गुणहानियोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि $२ \times २ \times २ \times २ = १६$, ६४०० + १६ = ४० ।

अब उदयगोपुच्छको समयप्रबद्ध (११००) प्रमाण स्थापित करके गुणहानिसे गुणित करनेपर वह गुणहानि मात्र समयप्रबद्धोंके बराबर होती है ११००×८ । फिर एक कम गुणहानिके संकलनसे प्रथम निषेकको गुणित करनेपर एक कम गुणहानिके संकलन प्रमाण प्रथम निषेक होते हैं— [प्रथम निषेक ५१२, एक कम गुणहानि ७, उसका संकलन $७ \times \frac{८}{२} = २८$] $\frac{५१२ \times ७ \times ८}{२}$ । पुनः ये उपर्युक्त निषेक दो अंकोंसे कम गुणहानिके दो बार संकलन प्रमाण गोपुच्छविशेषोंसे हीन हैं ऐसा करके गोपुच्छविशेषोंको

एकको आदि लेकर एक अधिक क्रमसे पद प्रमाण वृद्धिको प्राप्त संख्यामें, अन्तमें स्थापित एकको आदि लेकर पद प्रमाण वृद्धिगत संख्याका भाग देनेपर गच्छके बराबर सम्पातफल अर्थात् प्रत्येक भंगका प्रमाण आता है। इसको आगे आगे स्थापित संख्याओंसे गुणित करनेपर सन्निपातफल अर्थात् द्विसंयोगी आदिक भंगोंका प्रमाण प्राप्त होता है ॥ १५ ॥

इस आर्या (गाथा) के अनुसार लाकर [$\frac{६}{१} \times \frac{७}{२} \times \frac{८}{३} = ५६$, १२×५६] प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर इतने होते हैं $\frac{५१२ \times ६ \times ७}{१२}$ । इस प्रकार इन तीनों ही राशियोंको पृथक् स्थापित करना चाहिये । सब गुणहानियोंके द्रव्यको अपने अपने प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर दो प्रकारके ऋणके साथ इतने ही होते हैं।

---

१ अप्रतौ 'संकलणासंकलणमेत्तविसेसेहि' इति पाठः। २ अ-आप्रत्योः 'भिसेसी' काप्रतौ 'विसेसेमि' इति पाठः। ३ अ-आप्रत्योः 'समाहित' इति पाठः। ४ ध. अ. पत्र ५१ । १६१ क. पा. १, ६ ।

विसेसा च अद्धद्धेण गच्छंति

६३००	८	३१००	८	१५००	८	७००	८

३००	८	१००	८	५१२	७८/२	२५६	७८/२	१२८	७८/२	६४	७८/२	३२	७८/२

१६	७८/२	५१२	६७/१२	२५६	६७/१२	१२८	६७/१२	६४	६७/१२	३२	६७/१२	१६	६७/१२

एदाणि दो वि रिणाणि धणंते[1] ठविय एदेसिं संकलणं कस्सामो। त जहा— रूवाहियणाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा दुरूवाहियणाणागुणहाणिसलागाहि ऊणेण णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विग करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा रूवूणेणोवट्टिदेण गुणहाणिमेत्तसमयपबद्धे गुणिदे सव्वदव्वमागच्छदि | ६३०० | ८ | १२०/६३ |। पुणो णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा रूवूणेण अण्णोण्णब्भत्थरासिअद्धोवट्टिदेण दो वि रिणरासीओ गुणिदे एत्तिय

विशेषता इतनी है कि गोपुच्छ और गोपुच्छविशेष आधे आधे स्वरूपसे जाते हैं— ६३०० × ८, ३१०० × ८, १५०० × ८, ७०० × ८, ३०० × ८, १०० × ८। ५१२ × ($\frac{७}{१}$ × $\frac{८}{२}$), २५६ × ($\frac{७}{१}$ × $\frac{८}{२}$), १२८ × ($\frac{७}{१}$ × $\frac{८}{२}$), ६४ × ($\frac{७}{१}$ × $\frac{८}{२}$), ३२ × ($\frac{७}{१}$ × $\frac{८}{२}$), १६ × ($\frac{७}{१}$ × $\frac{८}{२}$)। ५१२ × ($\frac{६ \times ७}{१२}$), २५६ × ($\frac{६ \times ७}{१२}$), १२८ × ($\frac{६ \times ७}{१२}$), ६४ × ($\frac{६ \times ७}{१२}$), ३२ × ($\frac{६ \times ७}{१२}$), १६ × ($\frac{६ \times ७}{१२}$)। इन दोनों ही ऋण राशियोंको धनके अन्तमें स्थापित करके इनका संकलन करते हैं। वह इस प्रकार है— एक अधिक नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके परस्पर गुणा करनेपर जो राशि प्राप्त हो उसमेंसे दो अधिक नानागुणहानिशलाकाओंको कम करके शेषको, नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके परस्पर गुणित करनेपर प्राप्त राशिमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे अपवर्तित करना चाहिये। इस प्रकार जो लब्ध हो उससे गुणहानि प्रमाण समयप्रबद्धको गुणित करनेपर समस्त द्रव्य आता है— [एक अधिक नानागुणहानिशलाकाएं ६ + १ = ७, $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ इनकी अन्योन्याभ्यस्त राशि १२८, दो अधिक नानागुणहानिशलाका ६ + २ = ८, १२८ − ८ = १२०, ना गु शलाका ६, $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{२}{१}$ इनकी अन्योन्याभ्यस्त राशि ६४, ६४ − १ = ६३] ६३०० × ८ × $\frac{१२०}{६३}$ = (६३०० × ८) + (३१०० × ८) + (१५०० × ८) + (७०० × ८) + (३०० × ८) + (१०० × ८) = ९६०००। फिर नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके परस्पर गुणा करनेपर जो राशि प्राप्त हो उसमेंसे एक कम करके शेषको अन्योन्याभ्यस्त राशिके अर्ध भागसे अपवर्तित करे। ऐसा करनेसे जो लब्ध हो उससे दोनों ही ऋण राशियोंको गुणित करनेपर इतना होता है—५१२ × ($\frac{७ \times ८}{२}$) × $\frac{६३}{३२}$ = (५१२ × २८) + (२५६ × २८) + (१२८ × २८) + (६४ × २८) + (३२ × २८) + (१६ × २८) = २८२२४। ५१२ × ($\frac{६ \times ७}{१२}$) × $\frac{६३}{३२}$ = (५१२ × $\frac{४२}{१२}$) + (२५६ × $\frac{४२}{१२}$) + (१२८ × $\frac{४२}{१२}$) + (६४ ×

१ ताप्रतो 'धण ते' इति पाठः।

होदि |५१२|७८|६३|५१२|६७|६३| । पुणो हेट्ठिमरिणरासिमुवरिमरिणरासिम्हि सोहिय | |१|३२| |१२|३२| समयपबद्धपमाणेण कदे एगरूवस्स असं-
खेज्जदिभागेणूणअट्ठारह-दसभागेहि गुणहाणिगुणिदमेत्ता समयपबद्धा लब्भंति । तेसिं संदिट्ठी एसा |६३००|७|४२|८| । एदेसु किंचूणदोगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धेसु सोहिदेसु गुण- |१००| |६| | हाणीए सादिरेयअट्ठारसभागेणूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्ता समयपबद्धा आगच्छंति । तेसिं संदिट्ठी एसा |११५५ / ५१२|[1] ।

अथवा, चरिमसमयणेरइयस्स चरिमगुणहाणिदव्वम्मि रूवूणगुणहाणीए संकलणा-संकलणमेत्तगोउच्छविसेसेसु अवणिदेसु |७|८|९/६| अवसेसं गुणहाणिसंकलणमेत्तचरिमणिसेगा होंति। तेसिं पमाणमेदं |९|८|९/२| । पुव्विल्लरूवूणगुणहाणिसंकलणासंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसेसु चरिमणिसेय |२| पमाणेण कदेसु रूऊणगुणहाणिसंकलणाए

$\frac{५२}{१२}$) + (१२ × $\frac{५२}{१२}$) + (११ × $\frac{५२}{१२}$) = १५२८ । फिर नीचेकी ऋण राशिको ऊपरकी ऋण राशिमेंसे घटाकर समयप्रबद्धके प्रमाणसे करनेपर एक अंकके असंख्यातवें भागसे कम अठारह बटे दस भागोंसे गुणहानिगुणित मात्र समयप्रबद्ध पाये जाते हैं। इसकी संदृष्टि यह है— [(५१२ × $\frac{७ × ८}{२}$ × $\frac{११}{१२}$)-(५१२ × $\frac{१ × ७}{१२}$ × $\frac{३}{२}$)= ८ × (७ × ८ × ११) - (८ × ७ × ११) = ७ × (७ × ८ × ११) = $\frac{}{१२}$ × ७ × ८ × $\frac{}{१००}$ =] $\frac{}{१००}$ × ७ × $\frac{४२}{६}$ × ८। इनको कुछ कम दो गुणहानि प्रमाण समयप्रबद्धोंमेंसे घटानेपर गुणहानिके साधिक अठारहवें भागसे कम डेढ़ गुणहानि प्रमाण समयप्रबद्ध आते हैं। इसकी संदृष्टि यह है— ११५५ ।

अथवा चरम समयवर्ती नारकीकी अन्तिम गुणहानिके द्रव्यमेंसे एक कम गुणहानिके संकलनासंकलन प्रमाण $\frac{}{२}$ × ६ × $\frac{}{३}$ = ८४ गोपुच्छविशेषोंको कम करनेपर अवशेष गुणहानिके संकलन मात्र अन्तिम निषेक होते हैं। उनका प्रमाण यह है— अन्तिम निषेक ९, गुणहानिसंकलन ८ × ३।९ × ($\frac{८ × ९}{२}$)। पूर्वोक्त एक कम गुणहानिके संकलनसंकलन प्रमाण गोपुच्छविशेषोंको चरम निषेकके प्रमाणसे करनेपर एक कम गुणहानिके संकलनके तृतीय भाग प्रमाण चरम निषेक होते हैं—

---

१ प्रतिषु |११ / १२७ / ५१२| ।

तिभागमेत्तचरिमणिसेगा होंति | ९ | ७ | $\frac{८}{६}$ |[1]। पुणो दुचरिमगुणहाणिट्ठिददव्वमेदम्हादो दुगुणं होदूण गुणहाणिमेत्तचरिमगुणहाणि-दव्वेण अधियं होदि। पुणो तिचरिमगुणहाणि-दव्वमेदम्हादो चउग्गुणं होदूण गुणहाणिमेत्तचरिम दुचरिमगुणहाणिदव्वेण अहियं होदि। पुणो चदुचरिमगुणहाणिदव्वमेदम्हादो अट्ठगुण होदूण गुणहाणिमेत्तचरिम-दुचरिम [-तिचरिम-गुणहाणि-] दव्वेण अहिय होदि। एव णेदव्व जाव चरिमसमयणेरइयपढमगुणहाणि त्ति। संपहि एदेसिं सकलणे कीरमाणे चरिमगुणहाणिदव्वस्स मेलावणं कादव्व। कदे गुण-हाणिसंकलणाए तिभागमसखेज्जदिमागूणचदुहि गुणिदमेत्ता चरिमणिसेगा होंति | ९ | ८ | $\frac{९}{६}$ | ४ |।

पूर्वोक्त गोपुच्छ ८४; अन्तिम निषेक ९, एक कम गुणहानिका संकलन $\frac{७ \times ८}{२}$ = २८, इसका तृतीय भाग $\frac{२८}{३}$, ८४ = (९ × $\frac{२८}{३}$)।

विशेषार्थ — अन्तिम गुणहानिका द्रव्य ९ + १९ + ३० + ४२ + ५५ + ६९ + ८४ + १०० = ४०८ है। इसमें ऊपर कम कराये गये गोपुच्छविशेषोंका प्रमाण इस प्रकार है—

द्रव्य	प्रथम निषेक	गो विशेष
९	१ × ९	०
१९	२ × ९	१
३०	३ × ९	३
४२	४ × ९	६
५५	५ × ९	१०
६९	६ × ९	१५
८४	७ × ९	२१
१००	८ × ९	२८
४०८	३२४	८४

फिर द्विचरम गुणहानिमें स्थित द्रव्य इससे दुगुणा होकर गुणहानि मात्र अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे अधिक होता है [द्विचरम गुणहानिका द्रव्य ११८ + १३८ + १६० + १८४ + २१० + २३८ + २६८ + ३०० = १६१६, ४०८ × २ = ८१६, ८ × १०० = ८००, ८१६ + ८०० = १६१६)। त्रिचरम गुणहानिका द्रव्य इससे चौगुणा होकर गुणहानि प्रमाण चरम और द्विचरम गुणहानियोंके द्रव्यसे अधिक होता है [त्रिचरम गुणहानिका द्रव्य ४०३२ = (४०८ × ४) + (८ × १००) + (८ × २००)]। चतुश्चरम गुणहानिका द्रव्य इससे आठगुणा होकर गुणहानि प्रमाण चरम, द्विचरम और त्रिचरम गुणहानियोंके द्रव्यसे अधिक होता है [चतुश्चरम गुणहानिका द्रव्य ८८६४ = (४०८ × ८) + (८ × १००) + (८ × २००) + (८ × ४००)। इस प्रकार चरम समयवर्ती नारकीकी प्रथम गुणहानि तक ले जाना चाहिये। अब इनका संकलन करनेमें अन्तिम गुणहानिके द्रव्य (४०८) को मिलाना चाहिये। ऐसा करनेपर गुणहानिके संकलनके तृतीय भागको असख्यातवें भाग ($\frac{३}{२}$) से हीन चार अंकोंसे $\frac{२४}{२}$ गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतने मात्र अन्तिम निषेक होते हैं— अन्तिम निषेक ९, गुणहानिसंकलनका तृतीय भाग $\frac{८ \times ९}{६}$ = १२; ९ × ($\frac{८ \times ९}{६}$ × $\frac{४}{१}$)। फिर नाना-

१ प्रतिषु | ९ | ७ | $\frac{८}{५}$ |।

पुणो णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा रूवूणेण एदे गुणिदे दुगुण-दुगुणकमेण गदसव्वगुणहाणिगोवुच्छविसेससंचओ होदि । पुणो एदम्मि समयपबद्धपमाणेण कदे रूवाहियगुणहाणीए सादिरेयअट्ठारसभागमेत्तसमयपबद्धा होंति। पुणो एदे पुध ठविय | ६३०० | ९ | $\frac{८}{१८}$ | णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा रूवाहिय णाणागुणहाणिसलागूणेण गुणहाणिमेत्तचरिमगुणहाणिदव्वे गुणिदे अवसेसगुणहाणीणमुवरिल्लसव्वदव्वमागच्छदि | १० | ८ ५७ |। एदम्मि समयपबद्धपमाणेण कदे असंखेज्जदिभागूणगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धा आगच्छंति । एदे पुव्विल्लम्मि पक्खित्ते[1] गुणहाणीए सादिरेयअट्ठारसभागेणूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धा होंति।

गुणहानिशलाकाओंको विरलित कर दुगुणा करके उनकी एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिसे इसको गुणित करनेपर दुगुणे दुगुणे क्रमसे गये हुए सब गुणहानियोंके गोपुच्छ विशेषोंका संचय होता है [अर्थात् ४०८ संख्या चरम गुणहानिमें एक बार द्विचरममें दो बार, त्रिचरममें चार बार, चतुश्चरममें आठ बार, पंचचरममें सोलह बार और प्रथम गुणहानिमें यह बत्तीस बार है, इस प्रकारसे यहां गुणहानियोंमें उक्त संख्या १ + २ + ४ + ८ + १६ + ३२ = ६३ बार सम्मिलित है ।] इसको समयप्रबद्धके प्रमाणसे करनेपर एक अधिक गुणहानिसे साधिक अठारहवें भाग प्रमाण समयप्रबद्ध होते हैं— ६३०० × ९ × $\frac{८}{१८}$ [४०८ × ६३ = ६३०० × ९ × $\frac{३४}{७५}$] इनको पृथक् स्थापित करके नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके उनकी एक अधिक नानागुणहानिशलाकाओंसे हीन अन्योन्याभ्यस्त राशिसे गुणहानि प्रमाण अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको गुणित करनेपर शेष गुणहानियोंका अवशिष्ट द्रव्य आता है— १०० × ८ × (६४ ७)।

विशेषार्थ— चूंकि चरम गुणहानिका द्रव्य १० × ८ द्विचरम गुणहानिमें एक बार, त्रिचरममें (१० × ८) + (२ × ८) इस प्रकार ३ बार चतुश्चरममें (१०० × ८) + (२० × ८) + (४०० × ८) इस प्रकार ७ बार पंचचरममें (१० × ८) + (२० × ८) + (४००×८) + (८०० × ८) इस प्रकार १५ बार, और प्रथम गुणहानिमें (१० × ८) + (२ ० × ८) + (४०० × ८) + (८ ० × ८) + (१६ × ८) इस प्रकार ३१ बार सम्मिलित है, अत एव यहां इनके जोड़से (१ + ३ + ७ + १५ + ३१ =) प्राप्त ५७ संख्यासे चरम गुणहानिके द्रव्यको गुणित (१०० × ८ × ५७) किया गया है।

इसको समयप्रबद्धके प्रमाणसे करनेपर असंख्यातवें भागसे हीन गुणहानिके बराबर समयप्रबद्ध आते हैं। इनको पूर्व द्रव्यमें मिलानेपर गुणहानिके साधिक अठारहवें भागसे हीन डेढ़ गुणहानि प्रमाण समयप्रबद्ध होते हैं। [१२ - [illegible] = ११ [illegible], ११ [illegible] × ६१ ० = ७११ ५.]।

---

१ अ-काप्रत्योः 'पक्खित्ते', ताप्रतौ 'पक्खित्त-' इति पाठः।

णेत्तद्धाणं चडिदूण बद्धदव्वभागहारो किंचूणदोरूवाणि, सयलचरिमगुणहाणिदव्वधारणादो। दोगुणहाणीओ चडिदूण बद्धदव्वभागहारो किंचूणेगरूवतिभागसहिदएगरूवं, चरिम-दुचरिम-गुणहाणिदव्वधारणादो। एवमुवरि सव्वत्थ सादिरेगमेगरूवभागहारो होदि। भागहार-परूवणा गदा।

एदं सव्वं पि दव्वं घेत्तूण समयपबद्धपमाणेण कदे कम्मट्ठिदीए असंखेज्जभाग-मेत्ता समयपबद्धा होंति, किंचूणदिवड्ढरूवूणणाणागुणहाणिसलागाहि गुणहाणिगुणिदमेत्त-पमाणत्तादो। अथवा, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता, सव्वसमयपबद्धाणमुक्कस्स-संचयस्स एक्कम्हि काले असंभवादो। एवमुवसंहारपरूवणा समत्ता।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सा ॥ ३२ ॥

तदो उक्कस्सादो वदिरित्तं ज दव्व तमणुक्कस्सवेयणा होदि। तं जहा— ओकड्डणवसेण उक्कस्सदव्वे एगपरमाणुणा परिहीणे अणुक्कस्सुक्कस्स होदि। एत्थ का परिहाणी? अणंतभागपरिहाणी, उक्कस्सदव्वेण उक्कस्सदव्वे भागे हिदे एगरूवोवलंभादो। ओकड्डणवसेण दोपरमाणुपरिहीणे[3] विदियमणुक्कस्सट्ठाणमुप्पज्जदि। एसा वि अणंतभाग-

---

जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार कुछ कम दो अंक है, क्योंकि, उसमें अन्तिम गुणहानिका समस्त द्रव्य निहित है। दो गुणहानियां जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार कुछ कम एक अंकके तृतीय भागसे सहित एक अंक है, क्योंकि, उसमें चरम और द्विचरम गुणहानियोंका द्रव्य निहित है। इसी प्रकारसे आगे सब जगह साधिक एक अंक भागहार होता है। भागहारकी प्ररूपणा समाप्त हुई।

इस सब द्रव्यको ग्रहण कर समयप्रबद्धके प्रमाणसे करनेपर कर्मस्थितिके असंख्यातवें भाग मात्र समयप्रबद्ध होते हैं, क्योंकि, वे कुछ कम डेढ़ अंकसे हीन नानागुणहानिकी शलाकाओंसे गुणहानिको गुणित करनेपर [$(6 - \frac{3}{2}) 8 \times$] जो प्राप्त हो उतने मात्र हैं। अथवा वे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र हैं, क्योंकि, सब समयप्रबद्धोंके उत्कृष्ट संचयकी एक कालमें सम्भावना नहीं है। इस प्रकार उपसंहारप्ररूपणा समाप्त हुई।

ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट वेदनासे भिन्न अनुत्कृष्ट द्रव्य वेदना है ॥ ३२ ॥

उससे अर्थात् उत्कृष्ट द्रव्यसे भिन्न जो द्रव्य है वह अनुत्कृष्ट द्रव्य वेदना है। यथा— अपकर्षण वश उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे एक परमाणुके हीन होनेपर अनुत्कृष्ट द्रव्य उत्कृष्ट स्थान होता है।

शंका— यहां कौनसी हानि होती है?

समाधान— अनन्तभागहानि होती है, क्योंकि, उत्कृष्ट द्रव्यमें उत्कृष्ट द्रव्यका भाग देनेपर एक अंक प्राप्त होता है।

अपकर्षण वश दो परमाणुओंकी हानि होनेपर द्वितीय अनुत्कृष्ट स्थान उत्पन्न होता है। यह भी अनन्तभागहानि है, क्योंकि, उत्कृष्ट द्रव्यके द्विरूप [illegible]

परिहाणी। कुदो? उक्कस्सदव्वदुभागेण उक्कस्सदव्वे भागे हिदे दोरूवोवलंभादो। पुणो उक्कस्सदव्वादो थोकुव्वमवसेण तिण्णं परमाणूणं वियोगे जादे अणंतभागपरिहाणी चेव, उक्कस्सदव्वतिभागेण उक्कस्सदव्वे भागे हिदे तिण्णिरूवुवलंभादो। एवमणंतभागहाणी चेव होदूण गच्छदि जाव जहण्णपरित्ताणंतेण उक्कस्सदव्वं खंडिय एगखंडं उक्कस्सदव्वादो परिहीणं त्ति। पुणो जहण्णपरित्ताणंतं विरलिय उक्कस्सदव्वं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स परिहीणदव्वपमाणं पावदि। पुणो हेट्ठिमद्धाणमिच्छामो त्ति एगरूवधरिदपमाणं हेट्ठा विरलिय अणंतेणं[1] तप्पमाणं दव्वं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि एगेगपरमाणू पावदि। पुणो तं उवरिमरूवधरिदेसु समयाविरोहेण पक्खित्ते परिहीणदव्वं होदि एगरूवपरिहाणी च लब्भदि। हेट्ठिमविरलणादो उवरिमविरलणा अणंत गुणहीण त्ति एत्थ एगरूवपरिहाणी ण लब्भदि। पुणो केत्तिय लब्भदि त्ति उत्ते उच्चदे— हेट्ठिमविरलणं रूवाहियं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं

भागका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर दो अंक प्राप्त होते हैं। पुनः उत्कृष्ट द्रव्य मेंसे अपकर्षण वश तीन परमाणुओंका वियोग होनेपर अनन्तभागहानि ही होती है क्योंकि उत्कृष्ट द्रव्यके तृतीय भागका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर तीन अंक प्राप्त होते हैं। इस प्रकार जघन्य परीतानन्तसे उत्कृष्ट द्रव्यको खण्डित कर जो एक भाग प्राप्त हो उतना उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे हीन होने तक अनन्तभागहानि ही होकर जाती है। फिर जघन्य परीतानन्तका विरलन कर उत्कृष्ट द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति जितना द्रव्य हीन होता है उसका प्रमाण प्राप्त होता है। किन्तु यहां नीचेका स्थान लाना इष्ट है इसलिये पूर्वोक्त विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त प्रमाणको नीचे विरलित कर दूसरे एकके प्रति प्राप्त हुए तत्प्रमाण द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर विरलनके प्रत्येक अंकके प्रति एक एक परमाणु प्राप्त होता है। पुनः उसको यथाविधि उपरिम विरलनके प्रत्येक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यमें मिलानेपर परिहीन द्रव्य होता है और एक अंककी हानि भी प्राप्त होती है। किन्तु अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन चूंकि अनन्त गुणी हीन है अतः यहां एक अंककी हानि नहीं पायी जाती।

शंका— तो फिर कितनी हानि पायी जाती है?

समाधान— उत्तरमें कहते हैं कि एक अधिक अधस्तन विरलन प्रमाण स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें कितनी

---

[1] प्रतिषु 'अणंतेणं' इति पाठः।

अथवा, कम्मट्ठिदिसव्वसमयपबद्धाणं संचियभावेण भागहारपरूवणाए परूविद-उक्कस्ससंचओ अक्कमेण ण लब्भदि त्ति भणंताणमाइरियाणमहिप्पाएण भण्णमाणे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता समयपबद्धा होंति, ण किंचूणदिवड्ढमेत्ता; सव्वसमयपबद्धाण-मुक्कस्ससंचयाणुवलभादो। एवं समयपबद्धाणुगमो समत्तो।

गुणिदकम्मंसियस्स उवरिल्लीण [ठिदीणं] णिसेयस्स उक्कस्सपद हेट्ठिल्लीणं ठिदीणं णिसेयस्स जहण्णपदं होदि त्ति कट्टु उवसहारे भण्णमाणे कम्मट्ठिदिआदिसमय-पबद्धसंचयस्स भागहारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो होदि। होंतो वि दिवड्ढगुण हाणिमेत्तो, समयपबद्ध चरिमणिसेयपमाणेण कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेगुवलंभादो। कम्मट्ठिदिआदिसमयपबद्धसचओ चरिमणिसेयपमाणमेत्तो होदि त्ति कधं णव्वदे ? सण्णि-पंचिंदियपज्जत्तएण उक्कस्सजोगेण उक्कस्ससंकिलिट्ठेण उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधमाणेण जेत्तिया परमाणू कम्मट्ठिदिचरिमसमए णिसित्ता तेत्तियमेत्तमग्गट्ठिदिपत्तय होदि त्ति कसायपाहुडे उवदिट्ठत्तादो। पदेसविरइयअप्पाबहुएण कध ण विरोधो ? [ण,] गुणिद-घोलमाणादि-पदेसरचणमस्सिदूण तप्पवुत्तीदो।

अथवा, कर्मस्थितिके सब समयप्रबद्धोंकी सचित स्वरूपसे भागहारकी प्ररूपणामें बतलाया गया उत्कृष्ट सचय युगपत् प्राप्त नहीं होता है, ऐसा कहनेवाले आचार्योंके अभिप्रायसे कथन करनेपर पल्योपमके असख्यातवें भाग मात्र समयप्रबद्ध होते हैं, न कि कुछ कम डेढ़ गुणहानि प्रमाण, क्योंकि, सब समयप्रबद्धोंका उत्कृष्ट सचय पाया नहीं जाता। इस प्रकार समयप्रबद्धानुगम समाप्त हुआ।

गुणितकर्मांशिक जीवके उपरिम स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद और अधस्तन स्थितियोंके निषेकका जघन्य पद होता है, ऐसा मानकर उपसहारकी प्ररूपणामें कर्मस्थितिके आदिम समयप्रबद्धके संचयका भागहार पल्योपमके असख्यातवें भाग मात्र होता है। उतना होकर भी वह डेढ़ गुणहानि प्रमाण है, क्योंकि, समयप्रबद्धको अन्तिम निषेकके प्रमाणसे करनेपर डेढ़ गुण-हानि मात्र अन्तिम निषेक पाये जाते हैं।

शका— कर्मस्थितिके आदिम समयप्रबद्धका सचय अन्तिम निषेक प्रमाण होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— वह "जो सज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्तक जीव उत्कृष्ट योगसे सहित है, उत्कृष्ट सक्लेशको प्राप्त है, उत्कृष्ट स्थितिको बाध रहा है, उसके द्वारा जितने परमाणु कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें निषिक्त किये जाते हैं उतने मात्र अग्रस्थिति प्राप्त होते हैं" इस कषायप्राभृतमें प्राप्त उपदेशसे जाना जाता है।

शका— ऐसा होनेपर प्रदेशविरचित अल्पबहुत्वके साथ विरोध क्यों न होगा ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उक्त अल्पबहुत्वकी प्रवृत्ति गुणित घोलमानादि प्रदेशरचनाका आश्रय करके हुई है।

१ ताम्रप्रतिपाठोऽयम्। अ-काप्रत्योः 'सेडिय', मप्रतौ 'सेधिय', इति पाठः।

बिदियसमयसंचयस्स भागहारो दिवड्ढगुणहाणीणमद्धं सादिरेयं । तं जहा — दिवड्ढगुणहाणीणमद्धं विरलिय समयपबद्धं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दो चरिमणिसेगा पावेंति । पुणो हेट्ठा णिसेयभागहारं दुगुणं विरलिय एगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि गोवुच्छविसेसो पावदि । एदेण पमाणेण उवरिमसव्वरूवधरिदेसु अवणिदे चरिम-दुचरिमणिसेयपमाणं होदि । अवणिदगोवुच्छविसेसे तप्पमाणेण कीरमाणे लद्धसलागपमाणाणयणं वुच्चदे — रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तविसेसेसु जदि एगरूवपक्खेवो लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धे दिवड्ढगुणहाणि-अद्धम्मि पक्खिविय समयपबद्धे भागे हिदे बिदियसमयसंचओ आगच्छदि । एवं भागहार-परूवणा जाणिय कायव्वा जाव णेरइयचरिमसमयसंचिददव्वे त्ति । णवरि एगगुणहाणि-

द्वितीय समय सम्बन्धी संचयका भागहार साधिक डेढ़ गुणहानियोंका अर्ध भाग है। वह इस प्रकारसे — डेढ़ गुणहानियोंके अर्ध भागका विरलन कर समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक अंकके प्रति दो चरम निषेक प्राप्त होते हैं। पुनः नीचे दुगुणे निषेकभागहारका विरलन कर एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक अंकके प्रति गोपुच्छविशेष प्राप्त होता है। इस प्रमाणसे ऊपरके सब अंकोंके प्रति प्राप्त राशियोंके कम करनेपर चरम और द्विचरम निषेकोंका प्रमाण होता है। कम किये गये गोपुच्छविशेषको उसके प्रमाणसे करनेपर प्राप्त शलाकाओंके प्रमाणके लानेकी विधि बतलाते हैं — एक कम अधस्तन विरलन प्रमाण विशेषोंमें यदि एक अंकका प्रक्षेप पाया जाता है तो उपरिम विरलन प्रमाण विशेषोंमें कितने अंकोंका प्रक्षेप पाया जावेगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर लब्धको डेढ़ गुणहानियोंके अर्ध भागमें मिलाकर समयप्रबद्धमें भाग देनेपर द्वितीय समय सम्बन्धी संचय आता है।

उदाहरण — डेढ़ गुणहानि $\frac{६३००}{५१२}$। इसका अर्ध भाग $\frac{६३००}{१०२४}$; $६३०० \div \frac{६३००}{१०२४} = १०२४ = (५१२ \times २)$; दुगुणा निषेकभागहार $१६ \times २ = ३२$ (अधस्तन विरलन) $१०२४ \div ३२ = ३२$ गोपुच्छविशेष। एक कम अधस्तन विरलन $(३२ - १ = ३१)$ प्रमाण विशेषोंमें यदि १ अंकका प्रक्षेप होता है तो उपरिम विरलन $(\frac{६३००}{१०२४})$ प्रमाण विशेषोंमें कितने अंकोंका प्रक्षेप होगा — $\frac{६३००}{१०२४} \times \frac{१}{१} \times \frac{१}{३१} = \frac{६३००}{१०२४ \times ३१} = \frac{६३००}{३१७४४}$; $\frac{६३००}{१०२४} + \frac{६३००}{१०२४ \times ३१} = \frac{३२ \times ६३००}{१०२४ \times ३१}$; $६३०० \div \frac{३२ \times ६३००}{१०२४ \times ३१} = ९९२ =$ $(५१२ + ४८०)$ द्वितीय समय सम्बन्धी संचय।

इस प्रकार भागहारकी प्ररूपणा नारकीके अन्तिम समय सम्बन्धी संचय तक जानकर करना चाहिये। विशेष इतना है कि एक गुणहानि प्रमाण स्थान

१ प्रतिषु 'इच्छागुणिदफलमि-' इति पाठः।

मेत्तद्धाण चडिदूण बद्धदव्वभागहारो किंचूणदोरूवाणि, सयलचरिमगुणहाणिदव्वधारणादो। दोगुणहाणीओ चडिदूण बद्धदव्वभागहारो किंचूणेगरूवतिभागमहियएगरूवं, चरिम-दुचरिम-गुणहाणिदव्वधारणादो। एवमुवरि सव्वत्थ सादिरेगमेगरूवभागहारो होदि। भागहार-परूवणा गदा।

एदं सव्वं पि दव्वं घेत्तूण समयपबद्धपमाणेण कदे कम्मट्ठिदीए असंखेज्जभाग-मेत्ता समयपबद्धा होंति, किंचूणदिवड्ढरूवूणणाणागुणहाणिसलागाहि गुणहाणिगुणिदमेत्त-पमाणत्तादो। अधवा, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता, सव्वसमयपबद्धाणमुक्कस्स-संचयस्स एक्कम्हि काले असंभवादो[2]। एवमुवसंहारपरूवणा समत्ता।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सा ॥ ३३ ॥

तदो उक्कस्सादो वदिरित्तं जं दव्वं तमणुक्कस्सवेयणा होदि। तं जहा— ओकड्डणवसेण उक्कस्सदव्वे एगपरमाणुणा परिहीणे अणुक्कस्सुक्कस्सं होदि। एत्थ का परिहाणी? अणंतभागपरिहाणी, उक्कस्सदव्वेण उक्कस्सदव्वे भागे हिदे एगरूवोवलभादो। ओकड्डणवसेण दोपरमाणुपरिहीणे[3] विदियमणुक्कस्सट्ठाणमुप्पज्जदि। एसा वि अणंतभाग-

---

जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार कुछ कम दो अंक है, क्योंकि, उसमें अन्तिम गुणहानिका समस्त द्रव्य निहित है। दो गुणहानिया जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार कुछ कम एक अंकके तृतीय भागसे सहित एक अंक है, क्योंकि, उसमें चरम और द्विचरम गुणहानियोंका द्रव्य निहित है। इसी प्रकारसे आगे सब जगह साधिक एक अंक भागहार होता है। भागहारकी प्ररूपणा समाप्त हुई।

इस सब द्रव्यको ग्रहण कर समयप्रबद्धके प्रमाणसे करनेपर कर्मस्थितिके असंख्यातवें भाग मात्र समयप्रबद्ध होते हैं, क्योंकि, वे कुछ कम डेढ़ अंकोंसे हीन नानागुणहानिकी शलाकाओंसे गुणहानिको गुणित करनेपर [(६ - $\frac{3}{2}$) ८ ×] जो प्राप्त हो उतने मात्र हैं। अथवा वे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र हैं, क्योंकि, सब समयप्रबद्धोंके उत्कृष्ट संचयकी एक कालमें सम्भावना नहीं है। इस प्रकार उप-संहारप्ररूपणा समाप्त हुई।

ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट वेदनासे भिन्न अनुत्कृष्ट द्रव्य वेदना है ॥ ३२ ॥

उससे अर्थात् उत्कृष्ट द्रव्यसे भिन्न जो द्रव्य है वह अनुत्कृष्ट द्रव्य वेदना है। यथा— अपकर्षण वश उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे एक परमाणुके हीन होनेपर अनुत्कृष्ट द्रव्यका उत्कृष्ट स्थान होता है।

शंका— यहां कौनसी हानि होती है?

समाधान— अनन्तभागहानि होती है, क्योंकि, उत्कृष्ट द्रव्यमें उत्कृष्ट द्रव्यका भाग देनेपर एक अंक प्राप्त होता है।

अपकर्षण वश दो परमाणुओंकी हानि होनेपर द्वितीय अनुत्कृष्ट स्थान उत्पन्न होता है। यह भी अनन्तभागहानि है, क्योंकि, उत्कृष्ट द्रव्यके द्वितीय

---

१ प्रतिषु 'दिवड्ढरूवूणेण' इति पाठ। २ अप्रतौ 'समवादो' इति पाठ। ३ अ-काप्रत्योः 'परिहीणो' इति पाठ।

परिहाणी। कुदो? उक्कस्सदव्वदुभागेण उक्कस्सदव्वे भागे हिदे दोरूवोवलंभादो। पुणो उक्कस्सदव्वादो ओकड्डणवसेण तिण्णं परमाणूणं वियोगे जादे अणंतभागपरिहाणी चेव, उक्कस्सदव्वतिभागेण उक्कस्सदव्वे भागे हिदे तिण्णिरूवुवलंभादो। एवमणंतभागहाणी चेव होदूण गच्छदि जाव जहण्णपरित्ताणंतेण उक्कस्सदव्वं खंडिय एगखंडे उक्कस्सदव्वादो परिहीणे त्ति। पुणो जहण्णपरित्ताणंतं विरलिय उक्कस्सदव्वं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स परिहीणदव्वपमाणं पावदि। पुणो हेट्ठिमद्धाणमिच्छामो त्ति एगरूवधरिदपमाणं हेट्ठा विरलिय अण्णेगं[1] तप्पमाणं दव्वं समखंडं करिय दिण्णे विरलण रूवं पडि एगेगपरमाणू पावदि। पुणो तं उवरिमरूवधरिदेसु समयाविरोहेण पक्खित्ते परिहीणदव्वं होदि एगरूवपरिहाणी च लब्भदि। हेट्ठिमविरलणादो उवरिमविरलणा अणंतगुणहीण त्ति एत्थ एगरूवपरिहाणी ण लब्भदि। पुणो केत्तिय लब्भदि त्ति उत्ते उच्चदे— हेट्ठिमविरलण रूवाहियं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं

भागका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर दो अंक प्राप्त होते हैं। पुनः उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे अपकर्षण वश तीन परमाणुओंका वियोग होनेपर अनन्तभागहानि ही होती है क्योंकि उत्कृष्ट द्रव्यके तृतीय भागका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर तीन अंक प्राप्त होते हैं। इस प्रकार जघन्य परीतानन्तसे उत्कृष्ट द्रव्यको भाजित कर जो एक भाग प्राप्त हो उतना उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे हीन होने तक अनन्तभागहानि ही होकर जाती है। फिर जघन्य परीतानन्तका विरलन कर उत्कृष्ट द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति जितना द्रव्य हीन होता है उसका प्रमाण प्राप्त होता है। किन्तु यहां नीचेका स्थान लाना इष्ट है इसलिये पूर्वोक्त विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त प्रमाणको नीचे विरलित कर दूसरे एकके प्रति प्राप्त हुए तत्प्रमाण द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर विरलनके प्रत्येक अंकके प्रति एक एक परमाणु प्राप्त होता है। पुनः उसको यथाविधि उपरिम विरलनके प्रत्येक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यमें मिलानेपर परिहीन द्रव्य होता है और एक अंककी हानि भी प्राप्त होती है। किन्तु अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन चूंकि अनन्तगुणा हीन है अतः यहां एक अंककी हानि नहीं पायी जाती।

शंका— तो फिर कितनी हानि पायी जाती है?

समाधान— उत्तरमें कहते हैं कि एक अधिक अधस्तन विरलन प्रमाण स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें कितनी

---

१ प्रतिषु 'अण्णे' इति पाठः।

लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स अणंतिमभागो आगच्छदि। पुणो एदं¹ जहण्णपरित्ताणंतम्मि सोहिय सुद्धसेसेण उक्कस्सदव्वे भागे हिदे पुव्विल्ललद्धादो² परमाणुत्तरमागच्छदि। एदम्मि उक्कस्सदव्वादो सोहिदे अणंतरहेट्ठिमट्ठाणमुप्पज्जदि। असंखेज्जाणंताणं विच्चाले उप्पत्तीदो एसा अवत्तव्वपरिहाणी। अणंतभागहाणी वा, उक्कस्सअसंखेज्जादो उवरिमसंखाए वट्टमाणत्तादो। पुणो एगरूवधरिदद्दुभागं विरलिय उवरिमेगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे दो-दो परमाणू पावेंति। ते उवरिमविरलणरूवधरिदेसु समयाविरोहेण दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाण पमाणं वुच्चदे। तं जहा— रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धं उवरिमविरलणाए अवणिय उक्कस्सदव्वे भागे हिदे परिहाणिदव्वमागच्छदि। तम्मि उक्कस्सदव्वम्मि सोहिदे सुद्धसेसं अणंतरट्ठाणं होदि। एवं परमाणुत्तरादिकमेण णेदव्वं जाव अणंतभागहाणीए चरिमवियप्पो त्ति।

हानि प्राप्त होगी, इस प्रकार फल राशिसे इच्छा राशिको गुणित कर उसमें प्रमाण राशिका भाग देनेपर एक अंकका अनन्तवां भाग आता है।

पुन इसको जघन्य परीतानन्तमेंसे कम करके जो शेष रहे उसका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर पूर्वोक्त लब्धसे एक परमाणु अधिक आता है। इसको उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे कम करनेपर अनन्तर अधस्तन स्थान उत्पन्न होता है। असंख्यातभागहानि और अनन्तभागहानिके बीचमें उत्पन्न होनेके कारण यह अवक्तव्यहानि है। अथवा इसे अनन्तभागहानि भी कह सकते हैं, क्योंकि, वह उत्कृष्ट असंख्यातसे उपरिम संख्यामें वर्तमान है। पुन एक अंकके प्रति प्राप्त राशिके द्वितीय भागका विरलन कर उपरिम विरलन अंकके प्रति प्राप्त राशिको सम खण्ड करके देनेपर दो दो परमाणु प्राप्त होते हैं। उनको उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यमें यथाविधि देकर समीकरण करनेपर जो हीन अंक आते हैं उनका प्रमाण कहते हैं। यथा— एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर जो प्राप्त हो उसे उपरिम विरलनमेंसे घटाकर शेषका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर परिहीन द्रव्य आता है। उसको उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे कम करनेपर जो शेष रहे वह अनन्तर स्थान होता है। इस प्रकार एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे अनन्तभागहानिके अन्तिम विकल्प तक ले जाना चाहिये।

---

१ ताप्रती 'एग (दं)' इति पाठ। २ प्रतिषु 'पुम्विल्लद्धादो' इति पाठ।

संपहि उक्कस्ससमसंखेज्जासंखेज्जं विरलेदूण एगरूवधरिदं समखंडं करिय दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाणं पमाणं वुच्चदे। तं जहा— रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवं लब्भदि। तम्मि उवरिमविरलणाए अवणिदे[1] उक्कस्ससमसंखेज्जासंखेज्जं होदि। तेणुक्कस्सदव्वे भागे हिदे असंखेज्जभागहाणिदव्वमागच्छदि। तम्मि उक्कस्सदव्वादो सोहिदे असंखेज्जभागहाणिट्ठाणं होदि। संपहि एदमुक्कस्ससमसंखेज्जासंखेज्जं[2] विरलेदूण उक्कस्सदव्वं समखंडं करिय दिण्णे असंखेज्जभागहाणिदव्वं होदि। हेट्ठा एगरूवधरिदपमाणं विरलेदूण पढमरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एगेगपरमाणू पावदि। तमुवरिमरूवधरिदेसु समयाविरोहेण दादूण समकरणे कदे परिहीणरूवपमाणं वुच्चदे। तं जहा— रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय उवरिमविरलणाए अवणिय लद्धेण उक्कस्सदव्वे भागे हिदे असंखेज्जभागहाणिदव्वं होदि। तम्मि उक्कस्सदव्वम्मि सोहिदे बिदियमसंखेज्जभागहाणिट्ठाणं होदि। एवं

अब उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातका विरलन कर एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देकर समीकरण करनेपर जो परिहीन अंक आते हैं उनका प्रमाण कहते हैं। यथा— एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अंक प्राप्त होता है। उसको उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात होता है। उसका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर असंख्यात भाग हीन द्रव्य आता है। उसको उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे कम करनेपर असंख्यातभागहानिका स्थान होता है।

अब इस उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातका विरलन कर उत्कृष्ट द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर असंख्यात भाग हीन द्रव्य होता है। नीचे एक अंकके प्रति प्राप्त प्रमाणका विरलन कर प्रथम अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति एक एक परमाणु प्राप्त होता है। उसको उपरिम विरलनके द्रव्यमें यथाविधि देकर समीकरण करनेपर जो परिहीन अंक आते हैं उनका प्रमाण कहते हैं। यथा— एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर उपरिम विरलनमेंसे कम करके लब्धका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर असंख्यात भाग हीन द्रव्य होता है। उसको उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे कम करनेपर असंख्यातभागहानिका द्वितीय स्थान होता है। इस

---

१ प्रतिषु 'भवणिदे' इति पाठः। २ अ-काप्रत्योः '-मसंखेज्जासंखेज्जं' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'बिदिय-' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'वीहिदे (सोहिदे)' इति पाठः।

तदियादिअसंखेज्जभागहाणिट्ठाणेसु उप्पाइज्जमाणेसु छेदभागहारो चेव होदूण गच्छदि। संपधि य उवरिमविरलणाए रूवूणाए एगरूवधरिदं खंडिय तत्थेगखंडमेत्तवियप्पेसु गदेसु समभागहारो होदि, रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए उवरिमविरलणाए[2] ओवट्टिदाए एगरूवोव-लंभादो। एवं छेदभागहार-समभागहारेहि ताव णेदव्वं जाव उक्कस्सदव्वादो एगो गोवुच्छ-विसेसो परिहीणो त्ति।

तत्थ को भागहारो होदि त्ति उत्ते उच्चदे— अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिद-दिवड्ढगुणहाणीयो रूवाहियगुणहाणीए पदुप्पण्णाओ। तं जहा— उक्कस्सदव्वे दिवड्ढगुण-हाणिगुणिदअंगुलस्स[2] असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे चरिमणिसेगो आगच्छदि। तम्मि रूवाहियगुणहाणिणा ओवट्टिदे एगो गोवुच्छविसेसो आगच्छदि त्ति। एवं परमाणुत्तरादिकमेण गंतूणुक्कस्सदव्वादो एगसमयपबद्धे परिहीणे का परिहाणी? असंखेज्जभागपरिहाणी, किंचूणदिवड्ढगुणहाणीहि उक्कस्सदव्वे भागे हिदे एगसमयपबद्धुवलंभादो। एदेसिमणु-

प्रकार तृतीय आदि असंख्यातभागहानिस्थानोंके उत्पन्न कराते समय छेदभाग-हार ही होकर जाता है।

अब एक कम उपरिम विरलनसे एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त राशिको खण्डित कर उसमें एक खण्ड प्रमाण विकल्पोंके बीतनेपर समभागहार होता है, क्योंकि, एक अधिक अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलनको अपवर्तित करनेपर एक अंक पाया जाता है। इस प्रकार छेदभागहार और समभागहारसे तब तक ले जाना चाहिये जब तक कि उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे एक गोपुच्छविशेष हीन नहीं हो जाता।

शंका— वहां कौनसा भागहार होता है?

समाधान— इसके उत्तरमें कहते हैं कि एक अधिक गुणहानिसे व अंगुलके असंख्यातवें भागसे गुणित डेढ़ गुणहानिया भागहार होती हैं। यथा— उत्कृष्ट द्रव्यमें डेढ़ गुणहानिगुणित अंगुलके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर अन्तिम निषेक आता है। उसको एक अधिक गुणहानिसे अपवर्तित करनेपर एक गोपुच्छविशेष आता है।

शंका— इस प्रकार एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे आकर उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे एक समयप्रबद्धके हीन होनेपर कौनसी हानि होती है?

समाधान— असंख्यातभागहानि होती है, क्योंकि, कुछ कम डेढ़ गुण-हानिका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर एक समयप्रबद्ध पाया जाता है।

---

१ प्रतिषु 'विरलणा' इति पाठः। २ प्रतिषु 'गुणहाणीदव्वमंगुलस्स', मप्रतौ 'गुणहाणीदमंगुलस्स' इति पाठः।

क्कस्सपदेसट्ठाणाणं गुणिदकम्मंसिओ सामी, अविणट्ठगुणिदकिरियाए आगयाणं पि ओकड्डुक्कड्डणवसेण एगसमयपबद्धमेत्तपरमाणूणं वड्ढि-हाणिदंसणादो। गुणिदकम्मंसियम्मि एदेहिंतो अहियाणि ट्ठाणाणि किण्ण होंति? ण, गुणिदकम्मंसिए उक्कस्सेण एगो चेव समयपबद्धो वड्ढदि हायदि त्ति आइरियपरंपरागयउवएसादो। एदम्हादो गुणिदकम्मंसिय अणुक्कस्सजहण्णपदेसट्ठाणादो गुणिद-घोलमाणउक्कस्सपदेसट्ठाणं विसेसाहियं होदि। होंतं पि असंखेज्जदिभागुत्तरं। एदं मोत्तूण गुणिदकम्मंसियजहण्णपदेसट्ठाणपमाणं गुणिद घोलमाणअणुक्कस्सपदेसट्ठाणं घेत्तूण[1] परमाणुहीण-दुपरमाणुहीणादिसरूवेण ऊणं करिय णेदव्वं जाव गुणिद-घोलमाणउक्कस्सपदेसट्ठाणादो असंखेज्जगुणहीणं तस्सेव जहण्णपदेसट्ठाणं त्ति। एदेसिमप्पणो गुणिदकम्मंसियजहण्णपदेसट्ठाणसमाणगुणिद-घोलमाणपदेसट्ठाणादो अणंतभागहीण-असंखेज्जभागहीण-संखेज्जभागहीण संखेज्जगुणहीण असंखेज्जगुणहीणसरूवेण परिहीणट्ठाणाणं गुणिदघोलमाणो सामी। कुदो? गुणिद-घोलमाणट्ठाणाणं पंचवड्ढि-पंच हाणीओ होंति त्ति गुरूवएसादो। पुणो एदम्हादो गुणिद-घोलमाणजहण्ण-अणुक्कस्स

इन अनुत्कृष्ट प्रदेशस्थानोंका गुणितकर्मांशिक जीव स्वामी होता है, क्योंकि विनाशको नहीं प्राप्त हुई गुणित क्रियासे जो कर्म आते हैं उनमें अपकर्षण और उत्कर्षणके वश एक समयप्रबद्ध मात्र परमाणुओंकी वृद्धि व हानि देखी जाती है।

शंका— गुणितकर्मांशिक जीवके इनसे अधिक स्थान क्यों नहीं होते?

समाधान— नहीं, क्योंकि गुणितकर्मांशिक अवस्थामें उत्कृष्ट रूपसे एक समयप्रबद्ध ही बढ़ता और घटता है, ऐसा आचार्यपरम्परागत उपदेश है।

गुणितकर्मांशिकके इस अनुत्कृष्ट जघन्य प्रदेशस्थानसे गुणितघोलमानका उत्कृष्ट प्रदेशस्थान विशेष अधिक है। विशेष अधिक होकर भी असंख्यातवें भागसे अधिक होता है। इसको छोड़कर और गुणितकर्मांशिकके जघन्य प्रदेशस्थानके बराबर गुणितघोलमान अनुत्कृष्ट प्रदेशस्थानको ग्रहण करके एक परमाणु हीन दो परमाणु हीन इत्यादि रूपसे कम करके जब तक गुणितघोलमानके उत्कृष्ट प्रदेशस्थानसे असंख्यातगुणा हीन उसका ही जघन्य प्रदेशस्थान नहीं प्राप्त होता तब तक ले जाना चाहिये।

अपने इन गुणितकर्मांशिक सम्बन्धी जघन्य प्रदेशस्थानके समान गुणित घोलमानके प्रदेशस्थानसे अनन्त भाग हीन असंख्यात भाग हीन संख्यात भाग हीन संख्यातगुणे हीन व असंख्यातगुणे हीन स्वरूपसे परिहीन स्थानोंका गुणितघोलमान स्वामी है, क्योंकि, गुणितघोलमान सम्बन्धी स्थानोंके पांच वृद्धियां व पांच हानियां होती हैं ऐसा गुरुका उपदेश है। पुनः गुणितघोलमानके इस जघन्य

---

१ प्रती 'वेत्तूण' इति पाठः।

ट्ठाणादो खविद-घोलमाणउक्कस्सपदेसट्ठाणमसंखेज्जगुणं होदि। एदं मोत्तूण गुणिद-घोलमाणजहण्णट्ठाणसमाण खविद-घोलमाणट्ठाणं घेत्तूण एग-दोपरमाणुआदिकमेण ऊणं करिय अणतभागहाणी-असखेज्जभागहाणीहि णेदव्व जाव खविद-घोलमाणएइंदियजहण्णदव्वे त्ति। पुणो एदेण समाण खीणकसायचरिमसमयदव्वं घेत्तूण अणतभागहाणि-असंखेज्जभागहाणीहि ऊणं करिय णेदव्व जाव खविद-घोलमाणओघजहण्णदव्वे त्ति। पुणो एदेण सरिसखविदकम्मंसियदव्व घेत्तूण दोहि परिहाणीहि णेदव्वं जाव खविदकम्मंसियओघजहण्णदव्वे त्ति। खविदकम्मंसिये किमट्ठ दो चेव हाणीओ? ण एस दोसो, खविद-गुणिदकम्मंसिएसु एगसमयपबद्धपरमाणुमेत्ताण चेव पदेसट्ठाणाणमुवलंभादो।

एत्थ गुणिदकम्मंसिय-गुणिदघोलमाण-खविदघोलमाण-खविदकम्मंसिए[1] जीवे अस्सिदूण पुणरुत्तट्ठाणपरूवण कस्सामो– खीणकसायजहण्णदव्वस्सुवरि परमाणुत्तर-दुपरमाणुत्तरकमेण अणतभागवड्ढीए अणताणि अपुणरुत्तट्ठाणाणि गतूण असंखेज्जभागवड्ढी पारभदि। पुणो परमाणुत्तरकमेण असंखेज्जभागवड्ढीए अणतेसु ठाणेसु णिरतरं गदेसु खविद-घोलमाणजहण्णदव्व खविदकम्मंसियअजहण्णदव्वसमाणं दिस्सदि। त पुणरुत्तट्ठाण होदि। पुणो परमाणु-

---

अनुत्कृष्ट स्थानसे क्षपितघोलमानका उत्कृष्ट प्रदेशस्थान असंख्यातगुणा है। इसे छोड़कर और गुणितघोलमानके जघन्य स्थानके सदृश क्षपितघोलमानके स्थानको ग्रहण कर एक दो परमाणु आदिके क्रमसे हीन करके अनन्तभागहानि और असख्यात भागहानिसे क्षपितघोलमान एकेन्द्रियके जघन्य द्रव्य तक ले जाना चाहिये।

पुन इसके समान क्षीणकषायके अन्तिम समय सम्बन्धी द्रव्यको ग्रहण कर अनन्तभागहानि और असख्यातभागहानिसे हीन करके क्षपितघोलमानके ओघ जघन्य द्रव्य तक ले जाना चाहिये। फिर इसके सदृश क्षपितकर्मांशिकके जघन्य द्रव्यको ग्रहण कर दो हानियों द्वारा क्षपितकर्मांशिकके ओघ जघन्य द्रव्य तक ले जाना चाहिये।

शंका— क्षपितकर्मांशिकके केवल दो ही हानिया क्यों होती हैं?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, क्षपितकर्मांशिक और गुणितकर्मांशिक जीवमें एक समयप्रबद्धके परमाणुओंके बराबर ही प्रदेशस्थान पाये जाते हैं।

यहा गुणितकर्मांशिक, गुणितघोलमान, क्षपितघोलमान और क्षपितकर्मांशिक जीवोंका आश्रय करके पुनरुक्त स्थानोंकी प्ररूपणा करते हैं— क्षीणकषाय सम्बन्धी जघन्य द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक, दो परमाणु अधिक इत्यादि क्रमसे अनन्तभाग वृद्धिके अनन्त अपुरुक्त स्थान जाकर असख्यातभावृद्धिका प्रारम्भ होता है। पुन परमाणु अधिक क्रमसे असंख्यातभागवृद्धिके अनन्त स्थानोंके निरन्तर बीतनेपर क्षपितघोलमानका जघन्य द्रव्य क्षपितकर्मांशिकके अजघन्य द्रव्यके समान दिखता

---

[1] मप्रतिपाठोऽयम्। अ-का-ताप्रतिषु 'गुणिदकम्मंसियगुणिदघोलमाणखविदगुणिदकम्मंसिए' इति पाठ।

एग वड्ढिदे खविदघोलमाणस्स अणंतभागवड्ढी होदि। तं पि ट्ठाणं पुणरुत्तमेव। एवं पुणरुत्तापुणरुत्तसरूवेण अणंत असंखेज्जभागवड्ढीसु गच्छमाणासु दूरं गंतूण खविदघोलमाण अणंतभागवड्ढी परिहायदि। से काले खविदघोलमाणो असंखेज्जभागवड्ढिं पारभदि। तं पि पुणरुत्तट्ठाणमेव। एवं पुणरुत्तापुणरुत्तसरूवेण दोसु वि असंखेज्जभागवड्ढीसु गच्छमाणासु दूरं गंतूण खविदकम्मंसियअसंखेज्जभागवड्ढी परिहायदि। ताधे चेव एदे खविदकम्मंसियट्ठाणाणि समप्पंति। एदेसु उप्पाइदेसु खविदघोलमाणजहण्णपदेसट्ठाणादो हेट्ठिमाणमपुणरुत्तट्ठाणाणं खविदकम्मंसिओ चेव सामी। उवरिमाणं खविदकम्मंसिओ खविदघोलमाणो च सामिणो। पुणो खविदघोलमाणुक्कस्सट्ठाणाणंतरअसंखेज्जभागवड्ढिट्ठाणमपुणरुत्तं होदि। विदियं पि अपुणरुत्तं चेव। एदमपुणरुत्तसरूवेण दूरं गंतूण गुणिदघोलमाणजहण्णट्ठाणेण सरिसं होदि। एदम्हादो हेट्ठिमाणं खविदकम्मंसियउक्कस्सादो उवरिमाणं पदेसट्ठाणाणं खविदघोलमाणो चेव सामी। गुणिदघोलमाणजहण्णट्ठाणं पुणरुत्तं। पुणो परमाणुत्तरं वड्ढिदे पुणरुत्तमणंतभागवड्ढिट्ठाणं होदि। एवं पुणरुत्तापुणरुत्तसरूवेण अणंतभागवड्ढी असंखेज्जभागवड्ढीसु गच्छमाणासु दूरं गंतूण अणंतभागवड्ढी परिहायदि। से काले गुणिदघोलमाण

है। यह पुनरुक्त स्थान है। पुनः एक परमाणु अधिक क्रमसे वृद्धिके होनेपर क्षपितघोलमान जीवके अनन्तभागवृद्धि होती है। यह भी स्थान पुनरुक्त ही है। इस प्रकार पुनरुक्त अपुनरुक्त स्वरूपसे अनन्तभागवृद्धि और असंख्यातभागवृद्धिके जानेपर बहुत दूर जाकर क्षपितघोलमान जीवके अनन्तभागवृद्धिकी हानि होती है। अनन्तर समयमें क्षपितघोलमान जीव असंख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ करता है। यह भी पुनरुक्त स्थान ही है। इस प्रकार पुनरुक्त और अपुनरुक्त स्वरूपसे दोनों ही असंख्यातभागवृद्धियोंके जानेपर दूर जाकर क्षपितकर्मांशिककी असंख्यातभागवृद्धि हीन हो जाती है और उसी समयमें क्षपितकर्मांशिकके स्थान समाप्त हो जाते हैं। इन उत्पन्न स्थानोंमें क्षपितघोलमानके जघन्य प्रदेशस्थानसे अधस्तन अपुनरुक्त स्थानोंका क्षपितकर्मांशिक ही स्वामी है। उपरिम स्थानोंका क्षपितकर्मांशिक और क्षपितघोलमान दोनों स्वामी हैं।

पुनः क्षपितघोलमानके उत्कृष्ट स्थानसे अनन्तर असंख्यातभागवृद्धिका स्थान अपुनरुक्त होता है। दूसरा स्थान भी अपुनरुक्त ही होता है। इस प्रकार यह स्थान अपुनरुक्त स्वरूपसे दूर जाकर गुणितघोलमानके जघन्य स्थानके सदृश होता है। इससे अधस्तन और क्षपितकर्मांशिकके उत्कृष्ट स्थानसे उपरिम प्रदेशस्थानोंका क्षपितघोलमान ही स्वामी है। गुणितघोलमानका जघन्य स्थान पुनरुक्त है। पुनः एक अधिक परमाणुकी वृद्धि होनेपर अनन्तभागवृद्धिका पुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार पुनरुक्त अपुनरुक्त स्वरूपसे अनन्तभागवृद्धि और असंख्यातभागवृद्धिके जानेपर दूर जाकर [गुणितघोलमानकी] अनन्तभागवृद्धि हीन हो जाती है। अनन्तर समयमें गुणितघोलमानके असंख्यातभागवृद्धि

● वे. १८

असंखेज्जभागवड्ढी पारभदि । सा वि पुणरुत्ता चेव । पुणो दोसु वि असंखेज्जभागवड्ढीसु गच्छमाणासु दूरं गंतूण खविदघोलमाणअसखेज्जभागवड्ढी परिहायदि । से काले संखेज्जं-भागवड्ढी पारभदि[3] । एवं सखेज्जभागवड्ढि-असंखेज्जभागवड्ढीसु[4] गच्छमाणसु दूर गंतूण गुणिदेघोलमाणअसंखेज्जभागवड्ढी परिहायदि । से काले संखेज्जभागवड्ढी पारभदि । एवं दोण्णं पि सखेज्जभागवड्ढीणं गच्छमाणाणं खविदघोलमाणसखेज्जभागवड्ढी परिहायदि । से काले सखेज्जगुणवड्ढी पारभदि । एवं सखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढीणं गच्छमाणाण दूर गतूण गुणिदघोलमाणसखेज्जभागवड्ढी परिहायदि । संखेज्जगुणवड्ढी पारभदि । एव दोण्णं पि सखेज्जगुणवड्ढीणं गच्छमाणाण खविदघोलमाणसंखेज्जगुणवड्ढी परिहायदि । असखेज्जगुणवड्ढी पारभदि । पुणो असखेज्जगुणवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढीणं गच्छमाणाण दूर गंतूण गुणिदघोलमाणसंखेज्जगुणवड्ढी परिहायदि, असखेज्जगुणवड्ढी पारभदि । एव पुणरुत्तापुणरुत्तसरूवेण दोण्ण पि असंखेज्जगुणवड्ढीण गच्छमाणाण दूर गतूण खविद-घोलमाणअसंखेज्जगुणवड्ढी परिहायदि । एत्तो हेट्ठिमाणं गुणिदघोलमाणजहण्णादो उवरि-

का प्रारम्भ होता है । वह भी पुनरुक्त ही है । पुनः दोनों ही असंख्यातभागवृद्धियोंके चालू रहनेपर दूर जाकर क्षपितघोलमान जीवके असख्यातभागवृद्धिकी हानि हो जाती है । अनन्तर समयमें सख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ होता है । इस प्रकार संख्यातभागवृद्धि व असख्यातभागवृद्धिके चालू रहनेपर दूर जाकर गुणितघोलमानके असंख्यातभाग वृद्धिकी हानि हो जाती है । अनन्तर समयमें संख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ हो जाता है । इस प्रकार दोनोंके ही संख्यातभागवृद्धियोंके चालू रहनेपर क्षपितघोलमानके सख्यात-भागवृद्धिकी हानि हो जाती है । अनन्तर समयमें सख्यातगुणवृद्धिका प्रारम्भ हो जाता है । इस प्रकार सख्यातभागवृद्धि और सख्यातगुणवृद्धिके चालू रहनेपर दूर जाकर गुणितघोलमानके सख्यातभागवृद्धिकी हानि हो जाती है और संख्यातगुणवृद्धिका प्रारम्भ हो जाता है । इस प्रकार दोनोंके ही सख्यातगुणवृद्धियोंके चालू रहनेपर क्षपितघोलमानके सख्यातगुणवृद्धिकी हानि हो जाती है और असंख्यातगुणवृद्धिका प्रारम्भ हो जाता है । पुन असंख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणवृद्धिके चालू रहनेपर दूर जाकर गुणितघोलमानके सख्यात गुणवृद्धिकी हानि हो जाती है और असख्यातगुणवृद्धिका प्रारम्भ हो जाता है । इस प्रकार पुनरुक्त व अपुनरुक्त स्वरूपसे दोनोंके ही असंख्यातगुणवृद्धियोंके चालू रहनेपर दूर जाकर क्षपितघोलमानके असंख्यातगुणवृद्धिकी हानि हो जाती है । इससे नीचेके और गुणितघोलमानके जघन्य स्थानसे ऊपरके प्रदेशस्थानोंके क्षपितघोलमान और

१ अ-काप्रत्योः 'खविदवोलमाणे' इति पाठः । २ प्रतिषु 'असखेज्ज' इति पाठः । ३ काप्रतौ 'परिहायदि' इति पाठः । ४ प्रतिषु 'असखेज्जभागवड्ढी' इति पाठः । ५ आप्रतौ 'दुगुणिद' इति पाठः ।

मेत्त पदेसट्ठाणाणं खविदगुणिदघोलमाणा सामिणो। तदो अणंतरमसंखेज्जगुणवड्ढिट्ठाणं गुणिदघोलमाणस्स अपुणरुत्तं भवदि। एवमपुणरुत्तसरूवेण गुणिदघोलमाणअसंखेज्जगुणवड्ढिपदेसट्ठाणेसु गच्छमाणेसु दूरं गंतूण गुणिदकम्मंसियजहण्णपदेसट्ठाणं दिस्सदि। तं पुणरुत्तं होदि। पुणो परमाणुत्तरे वड्ढिदे तस्स अणंतभागवड्ढिपदेसट्ठाणं होदि। तं पि पुणरुत्तं होदि। एवं पुणरुत्तापुणरुत्तसरूवेण अणंतभागवड्ढि-असंखेज्जगुणवड्ढीसु गच्छमाणासु दूरं गंतूण गुणिदकम्मंसियस्स अणंतभागवड्ढी परिहायदि, असंखेज्जभागवड्ढी पारभदि। तं पि पुणरुत्तपदेसट्ठाणं होदि। एवं पुणरुत्तापुणरुत्तसरूवेण असंखेज्जभागवड्ढि-असंखेज्जगुणवड्ढीसु गच्छमाणासु अणंताणि ट्ठाणाणि गंतूण गुणिदघोलमाणअसंखेज्जगुणवड्ढी समप्पदि। एत्तो प्पहुडि हेट्ठिमाणं गुणिदकम्मंसियजहण्णपदेसट्ठाणपज्जवसाणाणं गुणिदघोलमाणो गुणिदकम्मंसियो च सामी। एत्तो अणंतरउवरिमपदेसट्ठाणं गुणिदकम्मंसियस्स चेव होदि। तं च अपुणरुत्तं। एवं णेदव्वं जाव गुणिदकम्मंसियस्स उक्कस्सट्ठाणे त्ति। पुणो एत्थ उक्कस्सपदेसट्ठाणम्मि जहण्णपदेसट्ठाणे सोहिदे जेत्तिया परमाणू अवसेसा तेत्तियमेत्ताणि णाणावरणस्स अणुक्कस्सपदेसट्ठाणाणि। उक्कस्सपदेससामियस्स लक्खणं पुव्वं परूविदं। जहण्णपदेससामियस्स लक्खणमुवरि भणिहिदि[1]। अवसेसाणमणंताणं ट्ठाणाणं जे सामिणो जीवा तेसिं लक्खणं किण्ण परूविदं? ण एस दोसो, जहण्णुक्कस्सपदेसट्ठाण-

गुणितघोलमान जीव स्वामी हैं। इससे अनन्तर जो असंख्यातगुणवृद्धिका स्थान है वह गुणितघोलमानके अपुनरुक्त होता है। इस प्रकार अपुनरुक्त स्वरूपसे गुणितघोलमानके असंख्यातगुणवृद्धिप्रदेशस्थानोंके चालू रहनेपर दूर जाकर गुणितकर्मांशिकका जघन्य प्रदेशस्थान दिखता है। वह पुनरुक्त है। फिर एक अधिक परमाणुकी वृद्धि होनेपर उसके अनन्तभागवृद्धिप्रदेशस्थान होता है। वह भी पुनरुक्त होता है। इस प्रकार पुनरुक्त और अपुनरुक्त स्वरूपसे अनन्तभागवृद्धि और असंख्यातगुणवृद्धिके चालू रहनेपर दूर जाकर गुणितकर्मांशिकके अनन्तभागवृद्धिकी हानि हो जाती है और असंख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ होता है। वह भी पुनरुक्त प्रदेशस्थान है। इस प्रकार पुनरुक्त-अपुनरुक्त स्वरूपसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातगुणवृद्धिके चालू रहनेपर अनन्त स्थान जाकर गुणितघोलमानके असंख्यातगुणवृद्धि समाप्त हो जाती है। यहांसे लेकर नीचेके गुणितकर्मांशिक सम्बन्धी जघन्य प्रदेशस्थान पर्यन्त स्थानोंका गुणितघोलमान और गुणितकर्मांशिक जीव स्वामी हैं। इससे अनन्तरका उपरिम प्रदेशस्थान गुणितकर्मांशिकके ही होता है। वह अपुनरुक्त है। इस प्रकार गुणितकर्मांशिकके उत्कृष्ट स्थानके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये। पश्चात् यहां उत्कृष्ट प्रदेशस्थानमेंसे जघन्य प्रदेशस्थानको कम करनेपर जितने परमाणु शेष रहते हैं उतने मात्र ज्ञानावरणके अनुत्कृष्ट प्रदेशस्थान हैं। उत्कृष्ट प्रदेशस्थानके स्वामीका लक्षण पूर्वमें कहा जा चुका है। जघन्य प्रदेशस्थानके स्वामीका लक्षण आगे कहा जायगा।

शंका— शेष अनन्त स्थानोंके जो जीव स्वामी हैं उनका लक्षण क्यों नहीं कहा?

---

१ अ-आप्रत्योः 'भणिहीदि', ताप्रतौ 'भणिहिदि', मप्रतौ 'भणिहिदी' इति पाठः।

सामियाणं लक्खणे परूविदे तेसिं दोण्ण पदेसट्ठाणाण विच्चाले[1] वट्टमाणसेसट्ठाणसामियाण पि लक्खणस्स तत्तो चेव सिद्धीदो। त जहा— जहण्णट्ठाणप्पहुडिएगसमयपबद्धमेत्तट्ठाणाणं जे सामिणो तेसिं जीवाणं खविदकम्मसियलक्खणमेव लक्खणं होदि। समाणलक्खणाण कधं दव्वभेदो? ण, छावासएहि परिसुद्धाणं पि ओकड्डुक्कड्डणवसेण पदेसट्ठाणभेदसंभव पडि विरोहाभावादो। उक्कस्सट्ठाणादो वि हेट्ठिमाणं समयपबद्धमेत्तट्ठाणाणं जे सामिणो तेसिं गुणिदकम्मसियलक्खणमेव लक्खण होदि, छावासएहि भेदाभावादो। अवसेसाणं ट्ठाणाण जे सामिणो तेसिं जीवाण लक्खण खविद-गुणिदलक्खणसंजोगो। सो च एगादिसंजोग-जणिदबासट्ठिविहो। तदो खविद-गुणिदकम्मसियलक्खणेहिंतो जच्चंतरीभूदं[2]मजहण्ण-मणुक्कस्सट्ठाणाहारं[3]जीवाण ण[4] लक्खणमत्थि त्ति। तेण तेसिं पुध ण लक्खणपरूवणा कीरदि त्ति सिद्धं।

एत्थ तसजीवपाओग्गपदेसट्ठाणेसु[5] जीवा पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता। एइंदिय-

---

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जघन्य और उत्कृष्ट प्रदेशस्थानोंके स्वामियोंके लक्षणकी प्ररूपणा करनेपर उन दो प्रदेशस्थानोंके अन्तरालमें रहनेवाले शेष समस्त स्थानोंके स्वामियोंका भी लक्षण उसीसे ही सिद्ध है। यथा— जघन्य स्थानसे लेकर एक समयप्रबद्ध मात्र स्थानोंके जो स्वामी हैं उन जीवोंका क्षपितकर्मांशिक लक्षण ही लक्षण होता है।

शंका— समान लक्षणवालोंके द्रव्यका भेद कैसे सम्भव है?

समाधान— नहीं, क्योंकि, छह आवासोंसे परिशुद्ध जीवोंके भी अपकर्षण और उत्कर्षणके वश प्रदेशस्थानोंके भेदोंकी सम्भावनामें कोई विरोध नहीं है।

उत्कृष्ट स्थानसे भी नीचेके समयप्रबद्ध मात्र स्थानोंके जो स्वामी हैं उनका गुणितकर्मांशिक लक्षण ही लक्षण होता है, क्योंकि, उनमें छह आवासोंकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है। शेष स्थानोंके जो जीव स्वामी हैं उन जीवोंका लक्षण क्षपित और गुणित लक्षणोंका संयोग है। वह भी एक आदिके संयोगसे उत्पन्न होकर बासठ प्रकारका है। इस कारण अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानोंके आधारभूत जीवोंका क्षपितकर्मांशिक और गुणितकर्मांशिकके लक्षणोंसे भिन्न जातिका दूसरा कोई लक्षण नहीं है। इसलिये उनके लक्षणोंका पृथक् कथन नहीं करते हैं, यह सिद्ध होता है।

यहां त्रस जीवोंके योग्य प्रदेशस्थानोंमें जीव प्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण

---

१ अप्रतौ 'पदेसट्ठाणाण जे सामिणो विच्चाले' इति पाठ। २ अ-काप्रत्योः 'जच्चंतरभूद' इति पाठः। ३ अप्रतौ 'ट्ठाणहार' इति पाठः। ४ ताप्रतौ नोपलभ्यते पदमिदम्। ५ ताप्रतौ '-पाओग्गट्ठाणेसु' इति पाठः।

पाओग्गट्ठाणेसु अणंता । एत्थ ताव तसजीवपाओग्गट्ठाणाणं जीवसमुदाहारे भण्णमाणे छ अणियोगद्दाराणि— परूवणा पमाणं सेडी अवहारो भागाभागं अप्पाबहुगं चेदि । तत्थ परूवणाए अणुक्कस्सजहण्णट्ठाणे जीवा अत्थि । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सट्ठाणे त्ति । पमाणमुच्चदे । तं जहा— अणुक्कस्सजहण्णए ठाणे एक्को वा दो वा उक्कस्सेण चत्तारि जीवा, खविदकम्मंसियाणं एक्कम्मि काले समाणपरिणामाणं चदुण्णं चेव उवलंभादो । एत्तो उवरिमेसु खवगसेडिपाओग्गेसु अणंतेसु ट्ठाणेसु सव्वेसु वि वट्टमाणकाले संखेज्जा चेव, असंखेज्जाणं खवगजीवाणं अणंताणंताणं वा वट्टमाणकाले अभावादो । सेसेसु अणुक्कस्सट्ठाणेसु जीवा एक्को वा तिण्णि वा एवं जाव उक्कस्सेण असंखेज्जा पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता । उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा एक्को वा दो वा तिण्णि वा एवं जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता । कुदो ? गुणिदकम्मंसियाणं जीवाणं समाणपरिणामाणमेक्कम्हि समए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणं चेवोवलंभादो । पमाणपरूवणा गदा ।

सेडिपरूवणा दुविहा— अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणंतरोवणिधा ण सक्कदे णादुं, जहण्णट्ठाणजीवेहिंतो बिदियट्ठाणजीवा किं विसेसहीणा किं विसेसाहिया किं संखेज्जगुणा त्ति उवदेसाभावादो । परंपरोवणिधा वि ण सक्कदे णादुं, अणवगयअण

हैं। एकेन्द्रिय जीवोंके योग्य स्थानोंमें अनन्त जीव हैं। यहां त्रस जीवोंके योग्य स्थानोंके जीवसमुदाहारकी प्ररूपणामें छह अनुयोगद्वार हैं—प्ररूपणा प्रमाण श्रेणि अवहार भागाभाग और अल्पबहुत्व। इनमेंसे प्ररूपणाकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट जघन्य स्थानमें जीव हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थान तक ले जाना चाहिये। प्रमाणका कथन करते हैं। यथा— अनुत्कृष्ट जघन्य स्थानमें एक, दो अथवा उत्कृष्ट रूपसे चार जीव होते हैं क्योंकि समान परिणामवाले क्षपितकर्मांशिक जीव एक समयमें चार ही पाये जाते हैं। इससे ऊपरके क्षपकश्रेणि योग्य अनन्त स्थानोंमेंसे सभीमें वर्तमान कालमें संख्यात जीव ही उपलब्ध होते हैं क्योंकि वर्तमान कालमें असंख्यात अथवा अनन्तानन्त क्षपक जीवोंका अभाव है। शेष अनुत्कृष्ट स्थानोंमें एक [दो] अथवा तीन इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे प्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण असंख्यात जीव पाये जाते हैं। उत्कृष्ट स्थानमें एक दो अथवा तीन आदि उत्कृष्ट रूपसे आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण तक जीव पाये जाते हैं क्योंकि एक समयमें समान परिणामवाले गुणितकर्मांशिक जीव आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र ही पाये जाते हैं। प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकारकी है— अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा। इनमें अनन्तरोपनिधा जाननेके लिये शक्य नहीं है क्योंकि, जघन्य स्थानवाले जीवोंसे द्वितीय स्थानवाले जीव क्या विशेष हीन हैं क्या विशेष अधिक हैं या क्या संख्यातगुणे हैं, ऐसा उपदेश नहीं पाया जाता। परम्परोपनिधा भी जाननेके लिये

---

१ प्रतिषु [illegible] इति पाठः।

तरोवणिधत्तादो। सेडिपरूवणा गदा।

अवहारो उच्चदे। त जहा — अणुक्कस्सजहण्णट्ठाणजीवपमाणेण सव्वजीवा केव-चिरेण कालेण अवहिरिज्जंति? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण, तसजीवाण चदुब्भागेण अवहिरिज्जंति त्ति भणिद होदि। एत्थ[१] गहिदगहिदं कादूण भागहारो साहेयव्वो। एव सव्वाणुक्कस्सपदेसट्ठाणाण अवहारकालो तप्पाओग्गासंखेज्जो होदि त्ति वत्तव्वो। उक्कस्सट्ठाणजीवाणमवहारो पदरस्स असंखेज्जदिभागो, आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेहि उक्कस्सट्ठाणजीवेहि सव्वतसजीवरासिम्हि भागे हिदे पदरस्स असंखेज्जदिभागुवलभादो। एवमवहारकालपरूवणा गदा।

भागाभागस्स अवहारभगो। अप्पाबहुगं उच्चदे— सव्वत्थोवा अणुक्कस्सजहण्ण-ट्ठाणजीवा |४|। उक्कस्सट्ठाणजीवा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? आवलियाए असं-खेज्जदिभागो। अजहण्णअणुक्कस्सएसु ठाणेसु जीवा असंखेज्जगुणा। गुणगारो पदरस्स असंखेज्जदिभागो। अणुक्कस्सट्ठाणजीवा विसेसाहिया अणुक्कस्सजहण्णट्ठाणजीवमेत्तेण। अजहण्णएसु ट्ठाणेसु जीवा विसेसाहिया जहण्णट्ठाणजीवेणूणउक्कस्सट्ठाणजीवमेत्तेण। सव्वेसु

शक्य नहीं है, क्योंकि, अनन्तरोपनिधा अज्ञात है। श्रेणिप्ररूपणा समाप्त हुई।

अवहारका कथन करते हैं। यथा—अनुत्कृष्ट जघन्य स्थानवाले जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने कालमें अपहृत होते हैं? वे प्रतरके असंख्यातवें भाग मात्र कालसे अपहृत होते हैं, अर्थात् त्रस जीवोंके चतुर्थ भागसे अपहृत होते हैं, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहां गृहीत गृहीत विधिसे भागहार सिद्ध करना चाहिये। इसी प्रकार सब अनुत्कृष्ट प्रदेशस्थानोंका अवहारकाल तत्प्रायोग्य असंख्यात प्रमाण है, ऐसा कहना चाहिये। उत्कृष्ट स्थानवाले जीवोंका अवहारकाल प्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, क्योंकि, आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र उत्कृष्ट स्थानवाले जीवोंका सब त्रस जीवराशिमें भाग देनेपर प्रतरका असंख्यातवा भाग पाया जाता है। इस प्रकार अवहारकालप्ररूपणा समाप्त हुई।

भागाभागकी प्ररूपणा अवहारकालके समान है। अल्पबहुत्वका कथन करते हैं— अनुत्कृष्ट जघन्य स्थानवाले जीव सबमें स्तोक हैं |४|। उनसे उत्कृष्ट स्थानवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? गुणकार आवलीका असंख्यातवा भाग है। उनसे अजघन्यअनुत्कृष्ट स्थानोंमें रहनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार प्रतरका असंख्यातवा भाग है। उनसे अनुत्कृष्ट स्थानवाले जीव विशेष अधिक हैं। कितने विशेष अधिक हैं? अनुत्कृष्टजघन्य स्थानवाले जीवोंका जितना प्रमाण है उतने विशेष अधिक हैं। उनसे अजघन्य स्थानोंमें स्थित जीव जघन्य स्थानवाले जीवोंसे रहित

---

१ ताप्रती 'एत्थ' इत्येतत् पद नास्ति।

ट्ठाणेसु जीवा विसेसाहिया जहण्णट्ठाणजीवमेत्तेण ।

संपहि बादरपाओग्गट्ठाणाणं जीवसमुदाहारे भण्णमाणे परूवणा पमाणं सेडी अवहारो भागाभागो अप्पाबहुगे त्ति छ अणियोगद्दाराणि । तत्थ परूवणा उच्चदे — अणुक्कस्सजहण्णट्ठाणप्पहुडि जाव उक्कस्सट्ठाणे त्ति ताव अत्थि जीवा । परूवणा गदा ।

जहण्णए ट्ठाणे जीवा एक्को वा दो वा एवं जाव उक्कस्सेण चत्तारि, खविदकम्मंसियाणं एक्कम्हि समए चदुण्णं चेवोवलंभादो । एवं[1] खविदकम्मंसियपाओग्गपदेसट्ठाणेसु संखेज्जा चेव । खविद-गुणिदघोलमाणपाओग्गपदेसट्ठाणेसु अणंतजीवा । गुणिदकम्मंसियपाओग्गेसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता । एवं पमाणपरूवणा गदा ।

सेडिपरूवणा दुविहा अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणंतरोवणिधा ण सक्कदे णेदुं, जहण्णट्ठाणजीवेहिंतो विसेसाहिया संखेज्जासंखेज्जाणंतगुणा वा बिदियादिट्ठाणजीवा होंति त्ति उवदेसाभावादो । परंपरोवणिधा वि ण सक्कदे णेदुं, अणवगयअणंतरोवणिधत्तादो । सेडिपरूवणा गदा ।

अवहारो — सव्वट्ठाणजीवा जहण्णट्ठाणजीवपमाणेण अवहिरिज्जमाणे अणंतेण कालेण

उत्कृष्ट स्थानवाले जीवोंके बराबर विशेषसे अधिक हैं। उनसे सब स्थानोंके जीव जघन्य स्थानवर्ती जीव मात्र विशेषसे अधिक हैं।

अब स्थावरोंके योग्य स्थानोंके जीवसमुदाहारका कथन करनेमें प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व ये छह अनुयोगद्वार हैं। उनमेंसे पहले प्ररूपणाका कथन करते हैं — अनुत्कृष्ट जघन्य स्थानसे लेकर उत्कृष्ट स्थान तक जीव हैं। प्ररूपणा समाप्त हुई।

जघन्य स्थानमें जीव एक दो इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे चार तक हैं, क्योंकि एक समयमें क्षपितकर्मांशिक चार ही पाये जाते हैं। इस प्रकार क्षपितकर्मांशिकके योग्य प्रदेशस्थानोंमें संख्यात ही जीव हैं। क्षपितघोलमान और गुणितघोलमानके योग्य प्रदेशस्थानोंमें अनन्त जीव हैं। गुणितकर्मांशिकके योग्य प्रदेशस्थानोंमें आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र जीव हैं। इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकारकी है — अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा। इनमें अनन्तरोपनिधाको ले जाना शक्य नहीं है, क्योंकि द्वितीय आदि स्थानोंमें स्थित जीव जघन्य स्थानवर्ती जीवोंसे विशेष अधिक हैं या संख्यातगुणे हैं या असंख्यातगुणे हैं अथवा अनन्तगुणे हैं, इस प्रकारके उपदेशका यहां अभाव है। परम्परोपनिधाको भी ले जाना शक्य नहीं है, क्योंकि अनन्तरोपनिधा अज्ञात है। श्रेणिप्ररूपणा समाप्त हुई।

अवहार — सब स्थानवर्ती जीवोंको जघन्य स्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणसे अपहृत करनेपर वे अनन्त कालसे अपहृत होते हैं, क्योंकि जघन्य स्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणसे

---

१ ताप्रतौ एदं इति पाठः । २ अप्रतौ चदुं इति पाठः ।

अवहिरिज्जंति, जहण्णट्ठाणजीवेहि सव्वट्ठाणजीवेसु भागे हिदेसु लद्धम्मि[1] आणंतियदंसणादो। एवं सव्वट्ठाणजीवाणं पुध पुध अवहारो वत्तव्वो। अधवा जहण्णट्ठाणजीवा सव्वट्ठाणजीवाणमणंतिमभागो। उक्कस्सट्ठाणजीवा वि सव्वट्ठाणजीवाणमणंतिमभागो। अजहण्णअणुक्कस्सट्ठाणेसु जीवा सव्वजीवाणमणंता भागा। तेण जहण्णुक्कस्सट्ठाणाणमवहारो अणंतो, अजहण्णअणुक्कस्सट्ठाणाणमवहारो[2] एगरूवमेगरूवस्साणंतिमभागो च भागहारो होदि। अवहारपरूवणा गदा।

भागाभागस्स अवहारभंगो। सव्वत्थोवा जहण्णए ट्ठाणे जीवा। उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा असंखेज्जगुणा। अजहण्णअणुक्कस्सएसु ट्ठाणेसु जीवा अणंतगुणा। अणुक्कस्सएसु ट्ठाणेसु जीवा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? जहण्णट्ठाणजीवमेत्तेण। अजहण्णट्ठाणेसु जीवा जहण्णट्ठाणजीवेहि ऊणउक्कस्सट्ठाणजीवेहि विसेसाहिया। सव्वेसु ट्ठाणेसु जीवा जहण्णट्ठाणजीवमेत्तेण विसेसाहिया।

एवं छण्णं कम्माणमाउववज्जाणं ॥ ३४ ॥

जहा णाणावरणीयस्स उक्कस्साणुक्कस्सदव्वाण परूवणा कदा तहा आउववज्जाणं

सब स्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणमें भाग देनेपर लब्ध रूपसे अनन्तकी उत्पत्ति देखी जाती है। इस प्रकार सब स्थानोंमें स्थित जीवोंका पृथक् पृथक् अवहार कहना चाहिये। अथवा, जघन्य स्थानके जीव समस्त स्थानोंके जीवोंके अनन्तवें भाग हैं। उत्कृष्ट स्थानके जीव भी समस्त स्थानों सम्बन्धी जीवोंके अनन्तवें भाग हैं। अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानोंमें स्थित जीव सब जीवोंके अनन्त बहुभाग हैं। इसलिये जघन्य और उत्कृष्ट स्थानोंका अवहार अनन्त है, तथा अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानोंका अवहार एक अंक और एकका अनन्तवा भाग है। अवहारप्ररूपणा समाप्त हुई।

भागाभागकी प्ररूपणा अवहारके समान है। जघन्य स्थानमें जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे उत्कृष्ट स्थानमें जीव असंख्यातगुणे हैं। अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानोंमें उनसे अनन्तगुणे जीव हैं। उनसे अनुत्कृष्ट स्थानोंमें विशेष अधिक जीव हैं।

शंका— कितने प्रमाणसे विशेष अधिक हैं?

समाधान— जघन्य स्थानमें जितने जीव हैं उतने मात्रसे विशेष अधिक हैं।

उनसे अजघन्य स्थानोंमें जघन्य स्थानके जीवोंसे हीन उत्कृष्ट स्थान सम्बन्धी जीवोंसे विशेष अधिक हैं। उनसे सब स्थानोंमे जीव जघन्य स्थान सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं।

इसी प्रकार आयु कर्मके सिवा शेष छह कर्मोंका कथन करना चाहिये ॥ ३४ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयके उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट द्रव्यकी प्ररूपणा की गई है उसी

१ प्रतिषु 'अद्धम्मि' इति पाठः। २ ताप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-काप्रतिषु 'अजहण्णमणुक्कस्स-' इति पाठः।

ण्णं कम्माणमुक्कस्साणुक्कस्सदव्वाणं परूवणा कायव्वा। णवरि मोहणीयस्स चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीओ णामागोदाणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ तसट्ठिदीए ऊणाओ बादरेइंदिएसु भमावेदव्वो[1]। गुणहाणिसलागाणं अण्णोण्णब्भत्थरासीए च विसेसो जाणिदव्वो।

सामित्तेण उक्कस्सपदे[2] आउववेदणा दव्वदो उक्कस्सिया कस्स? ॥ ३५ ॥

किं देवस्स किं णेरइयस्स किं मणुस्सस्स किं तिरिक्खस्सेत्ति दुसंजोगादिकमेण पण्णारस भंगा वत्तव्वा।

जो जीवो पुव्वकोडाउओ परभविय पुव्वकोडाउअं बंधदि जलचरेसु दीहाए आउवबंधगद्धाए तप्पाओग्गसंकिलेसेण उक्कस्स जोगे बंधदि[3] ॥ ३६ ॥

जो उवरि भणिस्समाणलक्खणेहि सहिदो सो आउअउक्कस्सदव्वस्स सामी होदि।

प्रकार आयुको छोड़कर शेष छह कर्मोंके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट द्रव्यकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि मोहनीयकी त्रसस्थितिसे हीन चालीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम और नाम व गोत्रकी त्रस स्थितिसे हीन बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम स्थिति प्रमाण बादर एकेन्द्रियोंमें घुमाना चाहिये। तथा गुणहानिशलाकाओं और अन्योन्याभ्यस्त राशियोंके विशेषको भी जानना चाहिये।

स्वामित्वसे उत्कृष्ट पदमें आयु कर्मकी वेदना उत्कृष्ट किसके होती है? ॥ ३५ ॥

उक्त वेदना क्या देवके होती है, क्या नारकीके होती है, क्या मनुष्यके होती है और क्या तिर्यचके होती है; इस प्रकार द्विसंयोग आदिके क्रमसे पन्द्रह भंगोंको कहना चाहिये।

जो जीव पूर्वकोटि प्रमाण आयुसे युक्त होकर जलचर जीवोंमें परभव सम्बन्धी पूर्वकोटि प्रमाण आयुको बांधता हुआ दीर्घ आयुबन्धककालमें तत्प्रायोग्य संक्लेशसे उत्कृष्ट योगमें बांधता है, उसके द्रव्यकी अपेक्षा आयु कर्मकी उत्कृष्ट वेदना होती है ॥ ३६ ॥

जो जीव आगे कहे जानेवाले लक्षणोंसे सहित हो वह आयु कर्मके उत्कृष्ट

---

१ अ-आ-काप्रतिषु भमादेदव्वो ताप्रतौ भमावेदव्वो इति पाठः। २ अ[illegible] [illegible]। अ-आ-काप्रतिषु [illegible] इति पाठः। ३ [illegible] पूर्वकोट्यायुष्कः [illegible] जलचरेषु दीर्घायुर्बन्धकाले तत्प्रायोग्यसंक्लेशेन उत्कृष्टयोगेन च बध्नाति। गो. जी. (जी. प्र.) २५८ व २५९.

काणि ताणि लक्खणाणि ? पुव्वकोडाउओ त्ति एगं लक्खणं। पुव्वकोडाउअं मोत्तूण अण्णो किण्ण घेप्पदे ? ण, पुव्वकोडितिभागमाबाहं काऊण परभविआउअं बंधमाणाणं चेव उक्कस्स-बंधगद्धाए संभवादो। पढमागरिसा सव्वत्थ सरिसा किण्ण होदि ? ण एस दोसो, सामावियादो। ण च सहावो परपज्जणिजोगारुहो, विरोहादो। पुव्वकोडितिभागमाबाहं काऊण बद्धाउअस्स आबाहकालम्मि ओलंबणकरणेण थूलत्तमावण्णपढमादिगोउच्छस्स जलचरेसु उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि बहुदव्वणिज्जरदंसणादो ण पुव्वकोडितिभागे आउवं बंधाविज्जदि, किंतु असंखेयद्धम्मि पढमागरिसाए आउव बंधाविज्जदि त्ति ? ण, उवरिमपढमागरिस-कालादो पुव्वकोडितिभागपढमागरिसकालस्स विसेसाहियत्तादो। कधमेदं णव्वदे ? सुत्ता-रंभण्णहाणुववत्तीदो। पुव्वकोडितिभागम्मि ओलंबणकरणेण विणासिज्जमाणदव्वं पुण एग-पढमणिसेगस्स असंखेज्जदिभागो। ण च एदस्स रक्खणट्ठं असंखेयद्धम्मि आउअ

द्रव्यका स्वामी होता है। वे लक्षण कौनसे हैं ? पूर्वकोटि प्रमाण आयुवाला हो, यह एक लक्षण है।

शंका— पूर्वकोटि प्रमाण आयुवालेको छोड़कर अन्यका ग्रहण क्यों नहीं करते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, पूर्वकोटिके त्रिभागको आबाधा करके परभव सम्बन्धी आयुको बांधनेवाले जीवोंके ही उत्कृष्ट बन्धककाल सम्भव है।

शंका— प्रथम अपकर्ष सब जगह समान क्यों नहीं होता ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है। और स्वभाव दूसरोंके प्रश्नके योग्य नहीं होता, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध आता है।

शंका— जिसने पूर्वकोटिके त्रिभाग प्रमाण आबाधा की है और जो आबाधा कालके भीतर प्रथमादि गोपुच्छोंको स्थूल कर चुका है ऐसे बद्धायुष्क जीवके मरकर जलचरोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अवलम्बन करणके द्वारा बहुत द्रव्यकी निर्जरा देखी जाती है, इसलिये पूर्वकोटिके त्रिभागमें आयुका बंधाना ठीक नहीं है, किन्तु असंक्षेपाद्धाकालके प्रथम अपकर्षमें आयुका बंधाया जाना ठीक है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उपरिम प्रथम अपकर्षकालसे पूर्वकोटित्रिभागका प्रथम अपकर्षकाल विशेष अधिक है।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— इस सूत्रके रचनेकी अन्यथा आवश्यकता नहीं थी, इसीसे जाना जाता है।

पूर्वकोटित्रिभागमें अवलम्बन करणके द्वारा नष्ट किया जानेवाला द्रव्य एक प्रथम निषेकके असंख्यातवें भाग है। यदि कहा जाय कि इसके रक्षणके लिये असंक्षेपाद्धामें आयुको बंधाना योग्य ही है सो यह भी ठीक नहीं है, क्योंकि, पूर्वकोटिके

घादिदु त्तं, पुव्वकोडितिभागम्मि संचिदआउअदव्वादो एत्थतणसंचयस्स संखेज्ज-भागहीणत्तप्पसंगादो ।

परभविय पुव्वकोडिआउअं पबंधदि जलचरेसु त्ति बिदियं विसेसणं । जहा णाणावर-णादीणं बंधभवे चेव अबाधावलियादिक्कंताणमुदओ होदि तहा आउअस्स तम्हि भवे बद्धस्स उदओ ण होदि, परभवे चेव होदि त्ति जाणावणट्ठमाउअस्स परभवियविसेसणं कयं । पुव्वकोडिं मोत्तूण दीहमाउअं घेत्तूण उवरिमगोउच्छवादो पयत्तोकड्डिज्जंत किण्ण बंधाविदो ? ण, समयाहियपुव्वकोडिआदिउवरिमआउअवियप्पाणं घादाभावेण परभवियआउअ-बंधेण विणा छम्मासेहि ऊणभुंजमाणाउअं सव्वं गालिय परभवियआउए बज्झमाणे आउअ-दव्वस्स बहुसंचयाभावादो । पुव्वकोडीदो हेट्ठिमआउट्ठिदिवियप्पे किण्ण बंधाविदो ? ण, थोवाउट्ठिदीए थूलगोवुच्छासु अंतोमुहुत्तमेत्तकाले णिरंतरं घडियाजलधारं व गलंतीसु

त्रिभागमें संचित आयुद्रव्यकी अपेक्षा यहांके संचयके संख्यातवें भागसे हीन होनेका प्रसंग आता है ।

जलचरोंमें परभव सम्बन्धी पूर्वकोटि प्रमाण आयुको बांधता है यह द्वितीय विशेषण है । जिस प्रकार ज्ञानावरणादिकोंका बांधनेके भवमें ही बन्धावलीको बिताकर उदय होता है उस प्रकार बांधे गये आयु कर्मका उसी भवमें उदय नहीं होता किन्तु उसका परभवमें ही उदय होता है, इस बातका ज्ञान करानेके लिये आयुका परभविक विशेषण दिया है ।

शंका — यहां पूर्वकोटिके सिवाय ऐसी दीर्घ आयुका बन्ध क्यों नहीं कराया जिससे उसके प्रथमादि गोपुच्छोंको प्राप्त होनेवाला द्रव्य स्तोक होनेसे उसकी निर्जरा भी कम होती ?

समाधान — नहीं, क्योंकि एक समय अधिक पूर्वकोटि आदि उपरिम आयु विकल्पोंका घात नहीं होता । जो जीव ऐसी आयुका बन्ध करता है वह परभव सम्बन्धी आयुका बन्ध किये बिना ही छह महीनाके सिवाय सब भुज्यमान आयुको गला देता है । इसके केवल भुज्यमान आयुमें छह महीना शेष रहनेपर ही परभव सम्बन्धी आयुका बन्ध होता है इसलिये इसके आयु द्रव्यका बहुत संचय नहीं होता ।

शंका — यहां पूर्वकोटिसे कमवाली आयुके स्थितिविकल्पोंका बन्ध क्यों नहीं कराया ?

समाधान — नहीं, क्योंकि स्तोक आयुकी गोपुच्छायें स्थूल होती हैं, इसलिये उनके अन्तर्मुहूर्त काल तक घटिकाजलकी धाराके समान निरन्तर गलते रहनेपर

---

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु [illegible] इति पाठः । २ [illegible] । अ-आ-काप्रतिषु [illegible] इति पाठः । ३ अ-आ-काप्रतिषु [illegible] इति पाठः ।

बहुदव्वणिज्जरप्पसंगादो। जलचरेसु चेव किमट्ठं बंधाविदो? ण एस दोसो, जलचरेसु विवेगाभावादो संकिलेसवज्जिएसु सादबहुलेसु ओलंभणाकरणेण विणासिज्जमाण[1]दव्वस्स बहुत्ताभावादो। समयाहियपुव्वकोडिआदिउवरिमआउअवियप्पाणं कदलीघादो णत्थि, हेट्ठिमाण चेव अत्थि त्ति कधं णव्वदे? समयाहियपुव्वकोडिआदिउवरिमआउआणि[2] असंखेज्जवस्साणि त्ति अतिदेसादो। ण च कारणेण विणा अतिदेसो[3] कीरदे, अणवत्थापसंगादो।

दीहाए आउवबंधगद्धाए त्ति तदियं विसेसणं। पुव्वकोडितिभागमाबाधं कादूण आउवं बंधमाणाणं बद्धमाणाऊ जहण्णा उक्कस्सा वि अत्थि। तत्थ जहण्णबंधगद्धाणिराकरणट्ठमुक्कस्सियाए बंधगद्धाए त्ति भणिदं। उक्कस्सबंधगद्धा वि पढमागरिसाए चेव होदि, ण अण्णत्थ। कुदो एदं णव्वदे? महाबंधसुत्तादो। तं जहा — अट्ठहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स सव्वत्थोवा अट्ठमीए आगरिसाए आउवबंधगद्धा जहण्णिया। सा

बहुत द्रव्यकी निर्जरा प्राप्त होती है। यही कारण है कि यहां पूर्वकोटिसे नीचेकी आयुके स्थितिविकल्पोंका बन्ध नहीं कराया।

शंका — जलचरोंमें ही आयु किसलिये बधाई?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जलचर जीव विवेकहीन होनेसे संक्लेश रहित और सातबहुल होते हैं। इसलिये उनके अवलम्बन करणके द्वारा नष्ट होनेवाला द्रव्य बहुत नहीं पाया जाता।

शंका — एक समय अधिक पूर्वकोटि आदि रूप आगेके आयुविकल्पोंका कदलीघात नहीं होता, किन्तु पूर्वकोटिसे नीचेके विकल्पोंका ही होता है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान — एक समय अधिक पूर्वकोटि आदि रूप आगेकी सब आयु असंख्यात वर्ष प्रमाण मानी जाती है, ऐसा अतिदेश है, इससे जाना जाता है। और कारणके विना अतिदेश किया नहीं जाता, क्योंकि, कारणके विना अतिदेश करनेपर अनवस्था दोष आता है।

'दीर्घ आयुबन्धककालमें' यह तृतीय विशेषण है। पूर्वकोटिके तृतीय भागको आबाधा करके आयुको बांधनेवाले जीवोंकी बध्यमान आयु जघन्य भी होती है और उत्कृष्ट भी होती है। उसमें जघन्य बन्धककालका निराकरण करनेके लिये 'उत्कृष्ट बन्धककालमें' यह कहा है। उत्कृष्ट बन्धककाल भी प्रथम अपकर्षमें ही होता है, अन्यत्र नहीं होता।

शंका — यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान — यह महाबन्धसूत्रसे जाना जाता है। यथा — आठ अपकर्षों द्वारा आयुको बांधनेवाले जीवके आठवें अपकर्षमें जघन्य आयुबन्धककाल सबसे स्तोक है।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु '-करण विणासिज्जमाण', ताप्रतौ 'करणं, विणासिज्जमाण' मप्रतौ 'करण ण विणासिज्जमाण' इति पाठः। २ प्रतिषु 'कोडिआउउवरिम' इति पाठ। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'अतिदेसा' इति पाठ।

चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । अट्ठहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स सत्तमीए आगरि-
साए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । सत्तहि
आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स सत्तमीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्ज-
गुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । अट्ठहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स
छट्ठीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसे-
साहिया । सत्तहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स छट्ठीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा
जहण्णिया संखेज्जगुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । छहि आगरि-
साहि आउअं बंधमाणस्स छट्ठीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्ज-
गुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । अट्ठहि आगरिसाहि आउअं
बंधमाणस्स पंचमीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा । सा
चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । सत्तहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स पंचमीए
आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया ।
छहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स पंचमीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जह-

यही उत्कृष्ट आयुबन्धककाल उससे विशेष अधिक है। आठ अपकर्षों द्वारा आयुको
बांधनेवाले जीवके सातवें अपकर्षमें जघन्य आयुबन्धककाल आठवें अपकर्षकालसे
संख्यातगुणा है। यही उत्कृष्ट आयुबन्धककाल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है।
सात अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके सातवें अपकर्षमें जघन्य आयुबन्धककाल
पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। यही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। आठ
अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके छठे अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल
पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। यही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। सात
अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके छठे अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल
संख्यातगुणा है। यही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। छह अपकर्षों द्वारा
आयुको बांधनेवालेके छठे अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल
संख्यातगुणा है। यही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। आठ
अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके पांचवें अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धक
पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। यही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। सात
अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके पांचवें अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धक-
काल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। यही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है।
छह अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके प्राप्त होनेवाला पांचवें अपकर्षमें जघन्य आयु-
बन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। यही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक

---

१ ताप्रतौ 'वेयणा। जहण्णिया सा चेव। उक्कस्सिया' इति पाठः।

ण्णिया संखेज्जगुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । पंचहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स पंचमीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । अट्ठहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स चउत्थीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । सत्तहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स चउत्थीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । छहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स चउत्थीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । पंचहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स चउत्थीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । चउहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स चउत्थीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । अट्ठहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स तदियाए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । सत्तहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स तदियाए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । [छहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स तदियाए आगरिसाए

है। पांच अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके प्राप्त होनेवाला पांचवें अपकर्षमें जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। आठ अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके प्राप्त होनेवाला चौथे अपकर्षमें जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। सात अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके प्राप्त होनेवाला चौथे अपकर्षमें जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। छह अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके प्राप्त होनेवाला चौथे अपकर्षमें जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। पांच अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके चौथे अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। चार अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके चतुर्थ अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। आठ अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके तृतीय अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। सात अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके तृतीय अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। [छह अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके तृतीय अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा

आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया।] पंचहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स तदियाए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। चदुहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स तदियाए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। तिहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स तदियाए आगरिसाए आउअ बंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। अट्ठहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स विदियाए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। सत्तहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स विदियाए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। छहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स विदियाए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। पंचहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स विदियाए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। चदुहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स विदियाए आगरिसाए आउअ बंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। तिहि आगरिसाहि

है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है।] पांच अपकर्षों द्वारा आयुको बांधनेवालेके तृतीय अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। चार अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके तृतीय अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। तीन अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके तृतीय अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। आठ अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके द्वितीय अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। सात अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके द्वितीय अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। छह अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके द्वितीय अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। पांच अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके द्वितीय अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। चार अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके द्वितीय अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। तीन अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके

आउअं बंधमाणस्स बिदियाए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। बीहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स बिदियाए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। अट्ठहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स पढमीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। सत्तहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स पढमीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। छहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स पढमीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। पंचहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स पढमीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। चदुहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स पढमीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। तीहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स पढमीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। बीहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणस्स पढमीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव

द्वितीय अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। दो अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके द्वितीय अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। आठ अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके प्रथम अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। सात अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके प्रथम अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। छह अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके प्रथम अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। पांच अपकर्षों द्वारा आयुको बांधनेवालेके प्राप्त होनेवाला प्रथम अपकर्षमें जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। चार अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके प्राप्त होनेवाला प्रथम अपकर्षमें जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। तीन अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके प्रथम अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। दो अपकर्षों द्वारा आयु बांधनेवालेके प्रथम अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धकाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा

उक्कस्सिया विसेसाहिया। पढमीए आगरिसाए आउअं बंधमाणस्स पढमीए आगरिसाए आउअबंधगद्धा जहण्णिया संखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। सव्वो उक्कस्सिया बंधगद्धा पढमागरिसाए चेव होदि त्ति घेत्तव्वं। एत्थ संदिट्ठी—

८८८	७७७	६६६	५५५	४४४	३३३	२२२	१११
८७७	७६६	६५५	५४४	४३३	३२२	२११	
८६६	७५५	६४४	५३३	४२२	३११		
८५५	७४४	६३३	५२२	४११			
८४४	७३३	६२२	५११				
८३३	७२	६११					
८२२	७११						
८११							

जे[1] सोवक्कमाउआ ते सगं-सगभुंजमाणाउट्ठिदीए बे तिभागे अदिक्कंते परभवियाउअबंधपाओग्गा होंति जाव असंखेयद्धा त्ति। तत्थ आउअबंधपाओग्गकालब्भंतरे आउअबंधपाओग्गपरिणामेहि के वि जीवा अट्ठवारं के वि सत्तवारं के वि छव्वारं के वि पंचवारं के वि चत्तारिवारं के वि तिण्णिवारं के वि दोवारं के वि एक्कवारं परिणमंति कुदो? साभावियादो। तत्थ तदियतिभागपढमसमए जेहि परभवियाउअबंधो पारद्धो ते अंतोमुहुत्तेण बंधं समाणिय पुणो सयलआउट्ठिदीए तिभागमेत्ते सेसे पुणो वि बंधपाओग्गा होंति। सयलआउट्ठिदीए सत्तावीसभागावसेसे पुणो वि बंधपाओग्गा होंति। एवं सेसतिभागं तिभागावसेसे बंधपाओग्गा होंति त्ति णेदव्वं जाव अट्ठमी आगरिसा त्ति। ण च तिभागाण

है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। प्रथम अपकर्षमें आयु बांधनेवालेके प्रथम अपकर्षमें प्राप्त होनेवाला जघन्य आयुबन्धककाल पूर्वोक्तसे संख्यातगुणा है। वही उत्कृष्ट काल अपने जघन्यसे विशेष अधिक है। इसलिये उत्कृष्ट आयुबन्धककाल प्रथम अपकर्षमें ही होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिये। यहां संदृष्टि (मूलमें देखिये)।

जो जीव सोपक्रमायुष्क हैं वे अपनी अपनी भुज्यमान आयुस्थितिके दो त्रिभाग बीत जानेपर वहांसे लेकर असंक्षेपाद्धा काल तक परभव सम्बन्धी आयुको बांधनेके योग्य होते हैं। उनमें आयुबन्धके योग्य कालके भीतर कितने ही जीव आठ बार, कितने ही सात बार कितने ही छह बार कितने ही पांच बार, कितने ही चार बार कितने ही तीन बार कितने ही दो बार और कितने ही एक बार आयुबन्धके योग्य परिणामोंसे परिणत होते हैं, क्योंकि ऐसा स्वभाव है। उसमें जिन जीवोंने तृतीय त्रिभागके प्रथम समयमें परभव सम्बन्धी आयुका बन्ध प्रारम्भ किया है वे अन्तर्मुहूर्तमें आयु कर्मके बन्धको समाप्त कर फिर समस्त आयुस्थितिके तीसरे भागके शेष रहनेपर फिरसे भी आयुबन्धके योग्य होते हैं। तथा समस्त आयुस्थितिका सत्ताईसवां भाग शेष रहनेपर पुनरपि बन्धके योग्य होते हैं। इस प्रकार उत्तरोत्तर जो त्रिभाग शेष रहता जाता है उसका त्रिभाग शेष रहनेपर यहां आठवें अपकर्षके प्राप्त

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'जो' इत्येतस्मात् 'जे' (के) इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'सोवक्कमाउअ उक्कस्सेण सोवक्कमाउआ अव' इति पाठः।

सेसे आउअं णियमेण बज्झदि त्ति एयतो। किंतु तत्थ आउअबंधपाओग्गा होंति त्ति उत्तं होदि। णिरुवक्कमाउआ पुण छम्मासावसेसे आउअबंधपाओग्गा होंति। तत्थ वि एवं चेव अट्ठागरिसाओ वत्तव्वाओ।

एत्थ जीवप्पाबहुगं उच्चदे। तं जहा — सव्वत्थोवा अट्ठहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणया जीवा। सत्तहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणया जीवा संखेज्जगुणा। छहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणया जीवा संखेज्जगुणा। पंचहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणया जीवा संखेज्जगुणा। चदुहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणया जीवा संखेज्जगुणा। तीहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणया जीवा संखेज्जगुणा। दोहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणया जीवा संखेज्जगुणा। पढमीए आगरिसाए आउअं बंधमाणया जीवा संखेज्जगुणा। अट्ठहि आगरिसाहिंतो संचिददव्वं पेक्खिदूण पढमागरिसाए संचिददव्वं संखेज्जगुणमिदि पढमागरिसाए चेव बंधाविदं। जो दीहाए आउअबंधगद्धाए बंधदि सो उक्कस्सदव्वसामी होदि, अण्णो ण होदि त्ति वुत्तं।

तप्पाओग्गसंकिलेसेणेत्ति चउत्थं विसेसणं किमट्ठं कदं? उक्कस्ससंकिलेसेण

होने तक आयुबन्धके योग्य होते हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। परन्तु त्रिभागके शेष रहनेपर आयु नियमसे बंधती है, ऐसा एकान्त नहीं है। किन्तु उस समय जीव आयुबन्धके योग्य होते हैं, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। और जो निरुपक्रमायुष्क जीव होते हैं वे अपनी भुज्यमान आयुमें छह माह शेष रहनेपर आयुबन्धके योग्य होते हैं। यहां भी इसी प्रकार आठ अपकर्षोंको कहना चाहिये।

यहां जीवोंके अल्पबहुत्वको कहते हैं। यथा— आठ अपकर्षों द्वारा आयुको बांधनेवाले जीव सबसे स्तोक हैं। सात अपकर्षों द्वारा आयुको बांधनेवाले जीव उनसे संख्यातगुणे हैं। छह अपकर्षों द्वारा आयुको बांधनेवाले जीव उनसे संख्यातगुणे हैं। पांच अपकर्षों द्वारा आयुको बांधनेवाले जीव उनसे संख्यातगुणे हैं। चार अपकर्षों द्वारा आयुको बांधनेवाले जीव उनसे संख्यातगुणे हैं। तीन अपकर्षों द्वारा आयुको बांधनेवाले जीव उनसे संख्यातगुणे हैं। दो अपकर्षों द्वारा आयुको बांधनेवाले जीव उनसे संख्यातगुणे हैं। प्रथम (एक) अपकर्ष द्वारा आयुको बांधनेवाले जीव उनसे संख्यातगुणे हैं। चूंकि आठ अपकर्षों द्वारा संचित द्रव्यकी अपेक्षा प्रथम अपकर्ष द्वारा संचित हुआ द्रव्य संख्यातगुणा है, अत एव प्रथम अपकर्षमें ही आयुको बंधाया है। जो दीर्घ आयुबन्धककालमें आयुको बांधता है वह उत्कृष्ट द्रव्यका स्वामी होता है, अन्य नहीं होता। इसीलिये यह तीसरा विशेषण कहा गया है।

शंका— 'उसके योग्य संक्लेशसे' यह चतुर्थ विशेषण किसलिये किया है?

---

१ प्रतिषु 'अद्धा-' इति पाठः।

अट्ठसमयपाओग्गाण सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजोगट्ठाणाणं जोगजवमज्झमिदि सण्णा, ट्ठिदीदो ठिदिमंताण जोगाण कधंचि अभेदादो । जोगो चेव जवमज्झ जोगजवमज्झ-मिदि तेण कम्मधारयसमासो एत्थ जुज्जदे । अधवा जो जोगजवस्स मज्झ अट्ठसमयकालो सो जोगजवमज्झं, तस्स उवरिं अंतोमुहुत्तद्धमच्छिदो । कुदो ? तत्थतणजोगाणं हेट्ठिमजोगे हिंतो असंखेज्जगुणत्तादो । अंतोमुहुत्तं मोत्तूण तत्थ बहुगं काल किण्ण अच्छदे ? ण, तत्थ अच्छणकालस्स वि अंतोमुहुत्तमेत्तत्तादो अंतोमुहुत्तादो अहियआउगबंधगद्धा-भावादो च । ण च जोगजवमज्झादो उवरिमंतोमुहुत्तावट्ठाणं ण संभवदि, असंखेज्जगुण वड्ढिअद्धाणम्मि तदसंभवविरोहादो[1] ।

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मच्छिदो[2] ॥ ३८ ॥

आवलियाए असंखेज्जदिभागं मोत्तूण बहुगं काल किण्ण अच्छदि ? ण, तिण्णिवड्ढि-तिण्णिहाणीसु उक्कस्सच्छणकालस्स वि आवलियाए असंखेज्जदिभागत्तं मोत्तूण

यहां योगयवमध्यके दो अर्थ लिये गये हैं । प्रथम तो आठ समयके योग्य जो श्रेणीके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थान होते हैं उनकी योगयवमध्य संज्ञा है, क्योंकि, स्थितिसे उस स्थितिवाले योगोंका कथंचित् अभेद है । इसीलिये यहा 'योग ही यवमध्य योगयवमध्य ' ऐसा कर्मधारयसमास करना युक्त है । दूसरे, जो योगयवका मध्य आठ समय काल है वह योगयवमध्य कहलाता है । उसके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा, क्योंकि, वहांके योग अधस्तन योगोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणे होते हैं ।

शंका— अन्तर्मुहूर्तको छोड़कर वहां बहुत काल तक क्यों नहीं रहता ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, एक तो वहा रहनेका काल ही अन्तर्मुहूर्त मात्र है, और दूसरे आयुबन्धककाल भी अन्तर्मुहूर्तसे अधिक नहीं पाया जाता ।

यदि कहा जाय कि योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक रहना सम्भव नहीं है सो भी बात नहीं है, क्योंकि, असंख्यातगुणवृद्धि रूप स्थानमें अन्तर्मुहूर्त काल तक रहनेको असम्भव माननेमें विरोध आता है ।

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलीके असंख्यातवें भाग काल तक रहा ॥ ३८ ॥

शंका— आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण कालको छोड़ कर बहुत काल तक वहा क्यों नहीं रहता ?

समाधान— नहीं, क्योंकि तीन वृद्धियों और तीन हानियोंमें उत्कृष्ट रूपसे भी रहनेका काल आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, इसको छोड़कर वहां उपरिम

---

१ आप्रतौ 'तदसमवाविरोहादो' इति पाठ । २ चरमजीवगुणहानिस्थानान्तरे आवल्यसंख्यातैकभाग-मात्रकालं स्थित । गो. जी (जी. प्र) २५८.

उवरिमसव्वाउवत्तमाणादो। ण च चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे असंखेज्जदिभागवड्ढि-हाणीओ मोत्तूण अण्णवड्ढि-हाणीणं संभवो अत्थि, विरोहादो। सो च विरोहो पुव्वं परूविदो त्ति णेह उच्चदे पुणरुत्तभएण।

कमेण कालगदसमाणो पुव्वकोडाउएसु जलचरेसु उववण्णो ॥ २९ ॥

परभवियाउए बद्धे पच्छा भुंजमाणाउअस्स कदलीघादो णत्थि जहासरूवेण चेव वेदेदित्ति जाणावणट्ठं 'कमेण कालगदो' त्ति उत्तं। परभवियाउअं बंधिय भुंजमाणाउए घादिज्जमाणे को दोसो त्ति उत्ते ण, णिज्जिण्णभुंजमाणाउअस्स अपत्तपरभवियाउअउदयस्स चउगइबाहिरस्स जीवस्स अभावप्पसंगादो। "जीवा णं भंते! कदिभागावसेसियंसि आउगंसि परभवियं आउगं कम्मं णिबंधंता बंधंति? गोदम! जीवा दुविहा पण्णत्ता संखेज्जवस्साउआ चेव असंखेज्जवस्साउआ चेव। तत्थ जे ते असंखेज्जवस्साउआ ते छम्मासावसेसियंसि

संख्या नहीं पायी जाती। और अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानिके सिवा अन्य वृद्धियां व अन्य हानियां नहीं पाई जातीं क्योंकि ऐसा माननेमें विरोध आता है। वह विरोध चूंकि पूर्वमें कहा जा चुका है अत एव पुनरुक्तिके भयसे उसे यहां नहीं कहते।

क्रमसे कालको प्राप्त होकर पूर्वकोटि आयुवाले जलचरोंमें उत्पन्न हुआ ॥ २९ ॥

परभव सम्बन्धी आयुके बंधनेके पश्चात् भुज्यमान आयुका कदलीघात नहीं होता किन्तु वह जितनी थी उतनीका ही वेदन करता है, इस बातका ज्ञान करानेके लिये 'क्रमसे कालको प्राप्त होकर' यह कहा है।

शंका—परभविक आयुको बांधकर भुज्यमान आयुका घात माननेमें कौनसा दोष है?

समाधान—नहीं क्योंकि जिसकी भुज्यमान आयुकी निर्जरा हो चुकी है किन्तु अभी तक जिसके परभविक आयुका उदय नहीं प्राप्त हुआ है उस जीवका चतुर्गतिके बाहर हो जानेसे अभाव प्राप्त होता है।

शंका—"हे भगवन्! आयुमें कितने भाग शेष रहनेपर जीव परभविक आयु कर्मको बांधते हुए बांधते हैं? हे गौतम! जीव दो प्रकारके कहे गये हैं— संख्यात वर्षायुष्क और असंख्यातवर्षायुष्क। उनमें जो असंख्यातवर्षायुष्क हैं वे आयुके छह मासोंमें

---

१ अप्रतौ सव्वाउवत्तमाणादो ण च चरिमे इति पाठः। २ कमेण काले कालगते पूर्वकोट्यायुष्कजलचरेषु उत्पन्नः। गो. जी. (जी. प्र.) २५८ ३ मप्रतौ णेति इति पाठः। ४ अ-आ-काप्रतिषु चउगइबाहिरस्स इति पाठः। ५ तामप्रतौ भगवदीसिरसिस्स लिखितुं लिपा पदामि इति पाठः।

अट्ठसमयपाओग्गाण सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजोगट्ठाणाण जोगजवमज्झमिदि सण्णा, ट्ठिदीदो ठिदिमताण जोगाणं कधचि अभेदादो। जोगो चेव जवमज्झ जोगजवमज्झ-मिदि तेण कम्मधारयसमासो एत्थ जुज्जदे। अथवा जो जोगजवस्स मज्झ अट्ठसमयकालो सो जोगजवमज्झ, तस्स उवरिं अतोमुहुत्तद्धमच्छिदो। कुदो? तत्थतणजोगाणं हेट्ठिमजोगे हिंतो असंखेज्जगुणत्तादो। अंतोमुहुत्त मोत्तूण तत्थ बहुग काल किण्ण अच्छदे? ण, तत्थ अच्छणकालस्स वि अतोमुहुत्तमेत्तत्तादो अंतोमुहुत्तादो अहियआउगबधगद्धा-भावादो च। ण च जोगजवमज्झादो उवरिमतोमुहुत्तावट्ठाणं ण संभवदि, असंखेज्जगुण वड्ढिअद्धाणम्मि तदसंभवविरोहादो[1]।

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मच्छिदो[2] ॥ ३८ ॥

आवलियाए असंखेज्जदिभागं मोत्तूण बहुगं काल किण्ण अच्छदि? ण, तिण्णिवड्ढि-तिण्णिहाणीसु उक्कस्सच्छणकालस्स वि आवलियाए असंखेज्जदिभागत्तं मोत्तूण

यहा योगयवमध्यके दो अर्थ लिये गये हैं। प्रथम तो आठ समयके योग्य जो श्रेणीके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थान होते हैं उनकी योगयवमध्य सज्ञा है, क्योंकि, स्थितिसे उस स्थितिवाले योगोंका कथचित् अभेद है। इसीलिये यहा 'योग ही यवमध्य योगयवमध्य' ऐसा कर्मधारयसमास करना युक्त है। दूसरे, जो योगयवका मध्य आठ समय काल है वह योगयवमध्य कहलाता है। उसके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा, क्योंकि, वहाके योग अधस्तन योगोंकी अपेक्षा असख्यातगुणे होते हैं।

शका— अन्तर्मुहूर्तको छोड़कर वहा बहुत काल तक क्यों नहीं रहता?

समाधान— नहीं, क्योंकि, एक तो वहां रहनेका काल ही अन्तर्मुहूर्त मात्र है, और दूसरे आयुबन्धककाल भी अन्तर्मुहूर्तसे अधिक नहीं पाया जाता।

यदि कहा जाय कि योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक रहना सम्भव नहीं है सो भी बात नहीं है, क्योंकि, असंख्यातगुणवृद्धि रूप स्थानमें अन्तर्मुहूर्त काल तक रहनेको असम्भव माननेमें विरोध आता है।

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलीके असंख्यातवें भाग काल तक रहा ॥ ३८ ॥

शंका— आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण कालको छोड़ कर बहुत काल तक वहा क्यों नहीं रहता?

समाधान— नहीं, क्योंकि तीन वृद्धियों और तीन हानियोंमें उत्कृष्ट रूपसे भी रहनेका काल आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, इसको छोड़कर वहा उपरिम

---

१ आप्रतौ 'तदसभवाविरोहादो' इति पाठ। २ चरमजीवगुणहानिस्थानान्तरे आवल्यसख्यातैकभाग-मात्रकालं स्थित। गो. जी (जी. प्र) २५८.

याउगंसि परभवियं[1] आयुग णिबंधंता बंधंति । तत्थ जे ते संखेज्जवासाउआ ते दुविहा पण्णत्ता सोवक्कमाउआ णिरुवक्कमाउआ चेव । तत्थ जे ते णिरुवक्कमाउआ ते तिभागावसेसियंसि याउगंसि परभवियं[2] आयुग कम्मं णिबंधंता बंधंति । तत्थ जे ते सोवक्कमाउआ ते सिया तिभागत्तिभागावसेसियंसि यायुगंसि परभवियं आउगं कम्मं णिबंधंता बंधंति[3] "। एदेण वियाहपण्णत्तिसुत्तेण सह कध ण विरोहो ? ण, एदम्हादो तस्स पुधभूदस्स आइरियभेएण भेदमावण्णस्स एयत्ताभावादो ।

बद्धपरभवियाउअस्स ओवट्टणाघादमकादूण उप्पण्णमिदि जाणावणट्ठं पुव्वकोडाउ-

छह मास शेष रहनेपर परभविक आयुको बांधते हुए बांधते हैं। और जो संख्यात वर्षायुष्क जीव हैं वे दो प्रकारके कहे गये हैं— सोपक्रमायुष्क और निरुपक्रमायुष्क। उनमें जो निरुपक्रमायुष्क हैं वे आयुमें त्रिभाग शेष रहनेपर परभविक आयु कर्मको बांधते हैं। और जो सोपक्रमायुष्क जीव हैं वे कथंचित् त्रिभाग [कथंचित् त्रिभागका त्रिभाग और कथंचित् त्रिभाग-त्रिभागका त्रिभाग] शेष रहनेपर परभव सम्बन्धी आयु कर्मको बांधते हैं"। इस व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्रके साथ कैसे विरोध न होगा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इस सूत्रसे उक्त सूत्र भिन्न आचार्यके द्वारा बनाया हुआ होनेके कारण पृथक् है, अतः उससे इसका मिलान नहीं हो सकता।

बांधी हुई परभविक आयुका अपवर्तनाघात न करके उत्पन्न हुआ, इस बातका ज्ञान करानेके लिये ' पूर्वकोटि आयुवालोंमें उत्पन्न हुआ ' ऐसा कहा है।

---

१ आप्रतौ ' -सियायुगसियाभविय ', ताप्रतौ 'सियायुग सिया परभवियं ' इति पाठः । २ ताप्रतौ ' सिया युग सिया परभविय ' इति पाठः । ३ प्रतिषु ' तिभागत्तभागाव- ' इति पाठः । ४ पुव्वकोडितिभागादो आबाधा अहिया किण्ण होदि ? उच्चदे – ण ताव देव-णेरइएसु बहुसागरोवमाउट्ठिदिएसु पुव्वकोडितिभागादो अहिया आबाधा अत्थि, तेसिं छम्मासावसेसे भुंजमाणाउए असंखेपद्धापज्जवसाणे संते परभवियमाउअं बंधमाणाणं तदसंभवा। ण तिरिक्ख मणुस्सेसु वि एदो अहिया आबाधा अत्थि, तत्थ पुव्वकोडीदो अहियभवट्ठिदीए अभावा । असंखेज्जवस्साउ तिरिक्ख मणुसा अत्थि त्ति चे ण, तेसिं देव-णेरइयाणं व भुंजमाणाउए छम्मासादो अहिए संते परभविआउअस्स बंधाभावा । ध. अ. पु ६, पृ. १६९. तर्हि असंख्यातवर्षायुष्काणां त्रिभागे उत्कृष्टा कथं नोक्ता इति ? तन्न, देव नारकाणां स्वस्थितौ षण्मासेषु भोगभूमिजानां नवमासेषु च अवशिष्टेषु त्रिभागेन आयुर्बन्धसम्भवात् । यद्यप कर्मभूमितिर्यग्मनुष्यस्य भुज्यमानायुषः स्वस्य त्रिभागमात्रायां समयोनमुहूर्तमात्रायां वा असंक्षेपाद्धायां प्रागेवोत्तरभवायुरन्तर्मुहूर्त मात्रसमयप्रबद्धान् बध्वा निष्ठापयति । एतौ द्वावपि पक्षौ प्रवाह्योपदेशत्वात् अंगीकृतौ । गो. क. (जी. प्र.) १५८. ५ नेरइया णं भंते ! कतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ? गोयमा ! नियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं । एवं असुरकुमारा वि, एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया णं भंते ! × × × × । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! कतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ? गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता । तं जहा—संखेज्जवासाउया य असंखेज्जवासाउया य। तत्थ णं जे ते असंखेज्जवासाउया ते नियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति। तत्थ णं जे ते संखिज्जवासाउया ते दुविहा पण्णत्ता। तं जहा— सोवक्कमाउया य निरुवक्कमाउया य। तत्थ णं जे ते निरुवक्कमाउया ते नियमा तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति। तत्थ णं जे ते सोवक्कमाउया ते णं सिय तिभागे परभवियाउयं पकरेंति, सिय तिभागतिभागे परभवियाउयं पकरेंति, सिय तिभाग-तिभाग-तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति । एवं मणूसा वि । वाणमंतर जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया । प्रज्ञापना ६, ४५-४६ पृ. सं. सूत्र १२७-१८.

आबाधादो। जीविदूणागदआउगस्स अद्धमेत्ताए तत्तो ऊणाए वि आबाधाए आउअं बंधदि अहियाए ण बंधदि त्ति कधं णव्वदे? पुव्वकोडितिभागमेत्ता चेव आउअस्स उक्कस्साबाहा होदि त्ति कालविहाणसुत्तादो[1]। एत्थतणपढमागरिसकालादो पुव्वकोडितिभागमाबाहं काऊण आउअं बंधमाणस्स[2] पढमागरिसकालो बहुगो त्ति तत्थ परभवियाउअबंधो किण्ण कीरदे? ण, पढमागरिसकालादो पुव्वकोडितिभागपढमागरिसकालस्स संखेज्जदिभागाहियत्तादो। ण च संखेज्जदिभागकालं पडुच्च भुंजमाणाउअस्स बे-तिभागे गालिय तिभागावसेसे आउअबंधं काउं जुत्तं, फलाभावादो। तदो एत्थेव बंधो कायव्वो। एत्थ जीविदूणागदअद्धं[3] मोत्तूण दिवस-वासादिआबाधाओ काऊण परभवियाउए बज्झमाणे पयडि-विगिदि-गोउच्छाओ सण्हा होदूण गलंति त्ति दीहाबाहाए अत्थे[4] संते वि जीविदद्धं[5] चेव आबाहं

शंका— जीवित रहकर जो आयु व्यतीत हुई है उसकी आधी या इससे भी कम आबाधाके रहनेपर आयु बंधती है अधिकमें नहीं बंधती, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— 'पूर्वकोटिके तृतीय भाग मात्र ही आयुकी उत्कृष्ट आबाधा होती है" इस कालविधानसूत्रसे जाना जाता है।

विशेषार्थ— आशय यह है कि एक पर्यायमें जितनी आयु भोगी जाती है उसका त्रिभाग या इससे भी कम शेष रहनेपर आयु कर्मका बन्ध होता है इसके पहले नहीं। यही कारण है कि प्रकृतमें पहले कदलीघात कराया और पश्चात् आयु कर्मका बन्ध कराया।

शंका— यहांके प्रथम अपकर्ष कालकी अपेक्षा पूर्वकोटित्रिभागको आबाधा करके आयुको बांधनेवाले जीवके जो प्रथम अपकर्षकाल प्राप्त होता है वह बहुत है अतः उसमें परभविक आयुका बन्ध क्यों नहीं कराया जाता?

समाधान— नहीं क्योंकि यहांके प्रथम अपकर्षकालसे पूर्वकोटित्रिभागके समय प्राप्त हुआ प्रथम अपकर्षकाल संख्यातवें भाग अधिक है। परन्तु संख्यातवें भाग मात्र कालको ध्यानमें रखकर भुज्यमान आयुके दो त्रिभागोंको गलाकर एक त्रिभागके अवशेष रहनेपर आयुका बन्ध कराना युक्त नहीं है क्योंकि, उसका कोई फल नहीं है। इसलिये यहां ही बन्ध कराना चाहिये।

यहां जीवित रहकर जो आयु व्यतीत हुई है उससे यहां आधी आबाधा है इस बातको छोड़कर दिन व वर्ष आदिको आबाधा करके परभविक आयुको बांधनेपर प्रकृति व विकृति स्वरूप गोपुच्छायें सूक्ष्म होकर गलती हैं। इस प्रकार दीर्घ आबाधाका काम

१ ष खं. (जीवट्ठाण-चूलिया) ६, सूत्र २२, २७. २ अ-आप्रत्योः 'बंधमाणगस्स' ताप्रतौ 'धुव पमाणस्स' इति पाठः। ३ अ-आ-ताप्रतिषु 'अद्धं' इति पाठः। ४ प्रतिषु 'अंते' इति पाठः। ५ अ-आ-प्रत्योः 'जीविदत्थं' ताप्रतौ 'जीवदत्थं' इति पाठः।

लहुं गहण कदं । किमट्ठं तस्स पडिसेहो कीरदे ? दीहकालेण बहुआओ गोवुच्छाओ गलंति त्ति बहुणिसेगणिज्जरपडिसेहट्ठं तप्पडिसेहो कीरदे । एग दोपज्जत्तीसु समत्तिं गदासु पज्जत्तो आउअबंधपाओग्गो ण होदि, किंतु सव्वाहिं[1] पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो चेव आउअबंधपाओग्गो होदि त्ति जाणावणट्ठं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो त्ति उत्तं ।

अंतोमुहुत्तेण पुणरवि परभवियं पुव्वकोडाउअं बंधदि जलचरेसु[2] ॥ ४१ ॥

पज्जत्तिसमाणिदसमयप्पहुडि जाव अंतोमुहुत्तं ण गदं ताव कदलीघादं ण करेदि त्ति जाणावणट्ठमंतोमुहुत्तणिद्देसो कदो । किमट्ठं हेट्ठा भुजमाणाउअस्स[3] कदलीघादो ण कीरदे ? ण, साभावियादो । कदलीघादेण विणा अंतोमुहुत्तकालेण परभवियमाउअं किण्ण बज्झदे ? ण, जीविदूणागदस्स आउअस्स अद्धादो अहियआबाहाए परभवियाउअस्स बंधा-

ग्रहण किया है ।

शंका — उत्कृष्ट कालका प्रतिषेध किसलिये किया जाता है ?

समाधान — चूंकि दीर्घ काल द्वारा बहुत गोपुच्छायें गल जानेसे बहुत निषेकोंकी निर्जरा हो जाती है, अत इस बातका प्रतिषेध करनेके लिये उत्कृष्ट कालका प्रतिषेध किया गया है ।

एक-दो पर्याप्तियोंके पूर्ण होनेपर पर्याप्त हुआ जीव आयुबन्धके योग्य नहीं होता, किन्तु सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ही आयुबन्धके योग्य होता है, इस बातका ज्ञान करानेके लिये ' सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्तक हुआ ' ऐसा कहा है ।

अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा फिर भी जलचरोंमें परभव सम्बन्धी पूर्वकोटि प्रमाण आयुको बांधता है ॥ ४१ ॥

पर्याप्तियोंको पूर्ण कर चुकनेके समयसे लेकर जब तक अन्तर्मुहूर्त नहीं बीतता है तब तक कदलीघात नहीं करता, इस बातका ज्ञान करानेके लिये ' अन्तर्मुहूर्त ' पदका निर्देश किया है ।

शंका — इसके नीचे भुज्यमान आयुका कदलीघात क्यों नहीं करता ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

शंका — कदलीघातके विना अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा परभविक आयु क्यों नहीं बांधी जाती ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, जीवित रहकर जो आयु व्यतीत हुई है उसकी आधीसे अधिक आबाधाके रहते हुए परभाविक आयुका बन्ध नहीं होता ।

१ अ आ काप्रतिषु ' पुव्वाहि ' इति पाठ । २ अन्तर्मुहूर्तेन पुनरपि परभवसम्बन्धिपूर्वकोट्यायुष्यं जलचरेषु बध्नाति । गो जी (जी प्र) २५८. ३ अ आ काप्रतिषु ' भजमाणाउअस्स ' इति पाठ.

सुगममेदं ।

बहुसो बहुसो सादद्धाए जुत्तो[1] ॥ ४५ ॥

सादबंधणपाओग्गकालो सादद्धा णाम । असादबंधणपाओग्गसंकिलेसकालो असादद्धा णाम । तत्थ सादद्धाए बहुवारं परिणामिदो ओलंबणाकरणेण गलमाणदव्वपडिसेहट्ठं ।

से काले परभवियमाउअं णिल्लेविहिदि त्ति तस्स आउअवेयणा दव्वदो उक्कस्सा[2] ॥ ४६ ॥

विगिदिसरूवेण गलमाणदव्वमेगसमयपबद्धादो बहुअं, तेण परभवियाउअबंधे अपारद्धे चेव उक्कस्ससामित्तं दादव्वमिदि ? ण, विगिदिगोवुच्छादो समयं पडि दुक्कमाणसमयपबद्धस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । तं कधं णव्वदे ? सुत्तारंभण्णहाणुववत्तीदो पुरदो भण्णमाणजुत्तीदो च ।

यह सूत्र सुगम है।

बहुत बहुत बार साताकालसे युक्त हुआ ॥ ४५ ॥

सातावेदनीयके बन्धके योग्य कालका नाम साताकाल है। असातावेदनीयके बन्धके योग्य संक्लेशकालका नाम असाताकाल है। उनमेंसे अवलम्बना करण द्वारा गलनेवाले द्रव्यका प्रतिषेध करनेके लिये साताकालके द्वारा बहुत बार परिणमाया।

तदनन्तर समयमें परभव सम्बन्धी आयुकी बन्धव्युच्छित्ति करेगा, अतः उसके आयुवेदना द्रव्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है ॥ ४६ ॥

शंका — विकृति स्वरूपसे गलनेवाला द्रव्य एक समयप्रबद्धके द्रव्यसे बहुत होता है अतः परभविक आयुबन्धके प्रारम्भ होनेके पहले ही उत्कृष्ट स्वामित्व देना चाहिये ?

समाधान — नहीं क्योंकि, विकृतिगोपुच्छासे प्रत्येक समयमें प्राप्त हुआ समयप्रबद्धका द्रव्य असंख्यातगुणा होता है।

शंका — यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान — क्योंकि ऐसा माने बिना सूत्रका प्रारम्भ करना ही नहीं बनता इससे तथा आगे कही जानेवाली युक्तिसे यह जाना जाता है कि विकृतिगोपुच्छासे प्रत्येक समयमें प्राप्त हुआ समयप्रबद्धका द्रव्य असंख्यातगुणा है।

---

१ जीवस्सायुषो बहुशः सातकालयुक्तः। गो. जी. (जी. प्र.) २५८

२ अनन्तरसमये आयुर्बन्धं निष्ठापयिष्यति इत्येवं तत्स्वामिनः आयुर्वेदनाद्रव्यं च उत्कृष्टं भवति। गो. जी. (जी. प्र.) २५८ ३ अप्रतौ पुव्वंतेण इति पाठः।

काऊण आउअं बंधावेंतो भूदबलिआइरियो जाणावेदि जहा जीविदद्धादो अहिया आबाहा णत्थि त्ति । अण्णाउअबंधगद्धाहिंतो जलचराउअबंधगद्धा दीहा त्ति कट्टु पुणरवि जलचरेसु पुव्वकोडाउअं बंधाविदो । कधमेदं णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो, अण्णहा पुणरवि जलचरेसु पुव्वकोडाउअबंधणियमे फलाभावादो । पुव्वकोडीदो थोवाउअजलचरेसु आउअं किण्ण बंधाविदो ? ण, जलचरपुव्वकोडाउअबंधगद्धं मोत्तूण अण्णासिं तदद्धाणमेत्थ महुत्ताभावादो ।

दीहाए आउअबंधगद्धाए तप्पाओग्गउक्कस्सजोगेण बंधदि[1] ॥ ४२ ॥

सुगममेदं ।

जोगजवमज्झस्स उवरि अंतोमुहुत्तद्धमच्छिदो ॥ ४३ ॥

एदं पि सुगमं ।

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभागमच्छिदो ॥ ४४ ॥

होनेपर भी जितना जीवित काल व्यतीत हुआ है उससे आधेको ही आबाधा करके आयुका बन्ध करानेवाले भूतबलि आचार्य ज्ञापन कराते हैं कि जितना जीवित काल गया है उससे आधेसे अधिक आबाधा नहीं होती । अन्य आयुबन्धककालोंसे जलचरोंकी आयुका बन्धककाल दीर्घ है, ऐसा समझ कर फिर भी जलचरोंमें पूर्वकोटि प्रमाण आयुका बन्ध कराया है ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— इसी सूत्रसे जाना जाता है, अन्यथा फिरसे जलचरोंमें पूर्वकोटि प्रमाण आयुबन्धके नियमका कोई प्रयोजन नहीं रहता ।

शंका— पूर्वकोटिसे स्तोक आयुवाले जलचरोंमें आयुको क्यों नहीं बंधाया ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, जलचरोंमें पूर्वकोटि प्रमाण आयुके बन्धककालको छोड़कर अन्य बन्धककाल बड़े नहीं पाये जाते ।

दीर्घ आयुबन्धककालके भीतर उसके योग्य उत्कृष्ट योगसे बांधता है ॥ ४२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा ॥ ४३ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलीके असंख्यातवें भाग काल तक रहा ॥४४॥

---

१ तदा दीर्घायुर्बन्धाद्धया तत्प्रायोग्यसंक्लेशेन तत्प्रायोग्योत्कृष्टयोगेन च बध्नाति । गो. जी. (जी. प्र.) २५८

तत्थ ताव पयडिसरूवेण गलिददव्वपमाणं उच्चदे। तं जहा— एगसमयपबद्धं ठविय पुव्वकोडीए भागे हिदे मज्झिमणिसेगो आगच्छदि, पुव्वकोडिदीहत्तेण ठिदआउअणिसेयाणं मूलग्गसमासं काऊण अद्धिदे पुव्वकोडिमेत्तमज्झिमणिसेगाणमुप्पत्तीदो। कधमेत्थ मूलग्गसमासो कीरदे? पुव्वकोडिपढमगोवुच्छं पेक्खिदूण चरिमगोवुच्छा रूवूणपुव्वकोडिमेत्तगोवुच्छविसेसेहि ऊणा। तं पेक्खिदूण पढमगोवुच्छा वि तत्तियमेत्तगोवुच्छविसेसेहि अहिया, एत्थ एगगुणहाणिअद्धाणाभावादो। पुणो चरिमणिसेयादो अहियगोवुच्छविसेसे घेत्तूण पुध ट्ठविदे पुव्वकोडिदीहमेत्ता चरिमणिसेया पावेंति। अवणिदविसेसा वि

विशेषार्थ— एक साथ आयु कर्मका उत्कृष्ट संचय कितना होता है यह बात यहां दिखलाई गई है। युगपत् दो आयुओंका सत्त्व पाया जा सकता है एक भुज्यमान आयुका और दूसरी बध्यमान आयुका। एक ऐसा जीव जो जिसने पूर्व भवमें सबसे बड़े बन्धककाल द्वारा तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट योगसे जलचरोंकी एक पूर्वकोटि प्रमाण आयुका बन्ध किया था। पुनः वह मर कर जलचर हुआ। फिर उसके अति स्वल्प काल द्वारा पर्याप्त होनेपर एक अन्तर्मुहूर्तके पश्चात् वह जिस समयमें कदलीघातपूर्वक आयुकी अपवर्तना करता है उसी समयमें आगामी आयुके बन्धका प्रारम्भ भी करता है। और इस प्रकार आयुबन्धके अन्तिम समयमें उसके आयुकर्मका उत्कृष्ट संचय देखा जाता है। यहां दो उत्कृष्ट बन्धक कालोंके भीतर जो तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट योग द्वारा दो आयुकर्मोंका संचय हुआ है उसमेंसे केवल भुज्यमान आयुकी अन्तर्मुहूर्त प्रमाण प्रकृति और विकृति स्वरूप गोपुच्छाओंका गलन होता है शेष सब द्रव्य नवीन बन्धके अन्तिम समयमें सत्त्व रूपसे पाया जाता है। यही आयु कर्मका उत्कृष्ट प्रदेशसंचय है।

इसमें पहिले प्रकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण हुए द्रव्यका प्रमाण कहते हैं। यथा—एक समयप्रबद्धको स्थापित कर उसमें पूर्वकोटिका भाग देनेपर मध्यम निषेकका प्रमाण आता है क्योंकि पूर्वकोटिके समय प्रमाण जो आयु कर्मके निषेक स्थित हैं उनमेंसे प्रथम और अन्तिम निषेकका योग कर आधा करनेपर वे पूर्वकोटिके समय प्रमाण मध्यम निषेक रूपसे उत्पन्न होते हैं।

शंका— यहां मूल और अग्र निषेकका योग कैसे किया जाता है?

समाधान— पूर्वकोटिकी प्रथम गोपुच्छाकी अपेक्षा अन्तिम गोपुच्छा एक कम पूर्वकोटि मात्र गोपुच्छविशेषोंसे न्यून है। और इस अन्तिम गोपुच्छाको देखते हुए प्रथम गोपुच्छा भी उतने ही गोपुच्छविशेषोंसे अधिक है क्योंकि, यहां एक गुणहानि स्थान नहीं है। पुनः पूर्वकोटि प्रमाण सब निषेकोंमेंसे अन्तिम निषेकसे अधिक जितने गोपुच्छविशेष हों उन्हें छीलकर पृथक् स्थापित करनेपर पूर्वकोटिके समय प्रमाण अन्तिम निषेक प्राप्त होते हैं और अलग किये हुए

संपहि एत्थ उवसंहारो उच्चदे । को उवसंहारो ? पुव्वकोडितिभागम्मि उक्कस्सा-उअबंधगद्धाए तप्पाओग्गउक्कस्सजोगेण परभवियाउअं बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय छ-प्पज्जत्तीओ समाणिय अंतोमुहुत्तं गंतूण पुणो जीविदूणागदअंतोमुहुत्तद्धपमाणेण उवरिममंतो-मुहुत्तूणपुव्वकोडाउअं सव्वमेगसमएण सरिसखंड कदलीघादेण घादिदूण घादिदसमए चेव पुणो अण्णेगपरभवियपुव्वकोडाउअस्स जलचरसंबंधियस्स बंधमाढविय[1] उक्कस्साउअबंध-गद्धाए तप्पाओग्गउक्कस्सजोगेण य बंधिय से काले बंधसमत्ती होहदि त्ति ठिदस्स आउअ-दव्वपमाणपरिक्खा उवसंहारो णाम । तं जहा— एगसमयपबद्धं उक्कस्सजोगागदं ठविय दुगुणिदमुक्कस्सबंधगद्धाए गुणिदे उक्कस्सदोबंधगद्धामेत्तसमयपबद्धा होंति । एदे पुध ठविय एत्थ पगदि विगिदिसरूवेण गलिदभुंजमाणाउअणिसेगेसु अवणिदेसु अवणिदसेस माउअस्स उक्कस्सदव्वं होदि ।

अब यहां उपसंहार कहते हैं।

शंका—उपसंहार किसे कहते हैं ?

समाधान—पूर्वकोटिके त्रिभागमें उत्कृष्ट आयुबन्धककालके भीतर उसके योग्य उत्कृष्ट योगसे परभव सम्बन्धी आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न होकर छह पर्याप्तियोंको पूर्ण करके अन्तर्मुहूर्त बिताकर जीवित रहते हुए जो अन्तर्मुहूर्त काल गया है उससे अर्ध मात्र आगेका अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटि प्रमाण उपरिम सब आयुको एक समयमें सदृश खण्डपूर्वक कदलीघातसे घातकर घात करनेके समयमें ही पुन: जलचर सम्बन्धी अन्य एक परभविक पूर्वकोटि प्रमाण आयुका बन्ध प्रारम्भ करके उत्कृष्ट आयुबन्धककालमें उसके योग्य उत्कृष्ट योगसे बन्ध करके अनन्तर समयमें बन्धकी समाप्ति होगी अतः स्थित हुए जीवके आयु-द्रव्यके प्रमाणकी परीक्षाको उपसंहार कहते हैं।

विशेषार्थ—आशय यह है कि जिसने उत्पन्न होनेके अन्तर्मुहूर्त बाद पूर्वकोटि प्रमाण उत्कृष्ट संचयवाली भुज्यमान आयुका जिस समयमें कदलीघात किया उसी समयसे लेकर वह पुनः एक पूर्वकोटि प्रमाण आयुका उत्कृष्ट बन्धककाल द्वारा उत्कृष्ट प्रदेशबन्ध करने लगा। उसके नवीन बन्धके अन्तिम समयमें आयु कर्मका उत्कृष्ट प्रदेशसंचय पाया तो अवश्य जाता है, पर वह कितना होता है, इस उपसंहार प्रकरण द्वारा इसी बातका विचार किया गया है।

यथा— उत्कृष्ट योगसे आये हुए एक समयप्रबद्धको द्विगुणित रूपसे स्थापित कर उत्कृष्ट बन्धककालसे गुणित करनेपर उत्कृष्ट दो बंधककाल प्रमाण समय-प्रबद्ध होते हैं। इनको पृथक् स्थापित कर इनमेंसे प्रकृति और विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण हुए भुज्यमान आयुके निषेकोंको कम करनेपर कम करनेसे जो शेष रहता है वह आयुका उत्कृष्ट द्रव्य होता है।

---

१ अ-आप्रत्योः 'बंधमाधविय' इति पाठः।

संपहि पुव्वकोडिं विरलिय समयपबद्धं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि मज्झिमणिसेयपमाणं पावदि । पुणो हेट्ठा मज्झिमगोवुच्छाए णिसेगभागहारं विरलेऊण मज्झिमगोवुच्छं समखंडं करिय दिण्णे एगेगविसेसो पावदि । पुणो मज्झिमगोवुच्छं पढमगोवुच्छाए सोहिदे सुद्धसेसमेत्तविसेसेहि णिसेगभागहारमवहरिय लद्धं विरलिय उवरिमविरलणाए पढमरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे ओवट्टणरूवमेत्तविसेसा पावेंति । पुणो एदेसु उवरिमरूवधरिदेसु समयाविरोहेण पक्खित्तेसु पढमणिसेयपमाणं होदि, भागहारम्मि एगरूवपरिहाणी च लब्भदि । एवं पुणो पुणो समकरणं कायव्वं जाव सव्वो समयपबद्धो पढमणिसेयपमाणेण कदो त्ति । रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागं

कुल द्रव्य १८ २ २२ २४ २६ २८ ३० और ३२ इस क्रमसे दिया गया है। इसलिये मध्यम धन १८ + ३२ = ५०, ५० – २ = २५ आयगा जो कुल द्रव्यकी अपेक्षा २५, २५, २५ २५ २५ २५, २५, २५ इस क्रमसे होगा। इसे लानेकी विधि ही यहां दिखलाई गई है। वह दिखलाते हुए पहले चय धनको अलग कर लिया गया है जिससे कुल धन इस रूपमें स्थापित होता है —

१८ फिर चयधनको समान रूपसे आठ स्थानोंमें जोड़ कर आठ स्थानोंमें
१८ २ स्थित अन्तिम निषेकोंमें मिला दिया गया है। मिलानेकी विधि मूलमें
१८ २२ दिखलाई ही है।
१८ २२२ अब पूर्वकोटिका विरलन कर एक समयप्रबद्धको समखण्ड करके
१८ २२२२ देनेपर प्रत्येक एकके प्रति मध्यम निषेकका प्रमाण प्राप्त होता
१८ २२२२२ है। फिर इसके नीचे मध्यम गोपुच्छके निषेकभागहारका
१८ २२२२२२ विरलन कर मध्यम गोपुच्छको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक
१८ २२२२२२२ एकके प्रति एक एक विशेष प्राप्त होता है। फिर मध्यम गोपुच्छको प्रथम गोपुच्छमेंसे कम करनेपर जो शेष रहे उतने मात्र विशेषोंसे मध्यम निषेकभागहारको भाजित कर जो प्राप्त हो उसका विरलन कर उपरिम विरलनके प्रथम अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर अपवर्तन रूप मात्र विशेष (मध्यम गोपुच्छ प्राप्त करनेके लिये प्रथम गोपुच्छमेंसे जितनी संख्या कम की गई है उसका प्रमाण) प्राप्त होते हैं। पुनः इनको उपरिम विरलनके प्रत्येक एक प्रति प्राप्त राशिमें यथा विधि प्रक्षेप करनेपर प्रथम निषेकका प्रमाण होता है और भागहारमें एक अंककी हानि पायी जाती है। इस प्रकार जब तक सब समयप्रबद्ध प्रथम निषेकके प्रमाणसे नहीं किया जाता तब तक समीकरण करना चाहिये। एक अधिक अधस्तन विरलन राशि मात्र स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलन राशिमें क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फलगुणित इच्छा राशिको प्रमाण राशिसे भाजित करके एक

१ प्रतिषु कदं इति पाठः।

एगादिएगुत्तरकमेण रूवूणपुव्वकोडिआयामेण चेट्ठंति ।

पुणो एदेसिं विसेसाण समकरणं कस्सामो । त जहा— विदियणिसेयम्मि अवणिद-विसेसेसु दुचरिमणिसेयम्मि अवणिदएगविसेसे पक्खित्ते रूवूणपुव्वकोडिमेत्ता विसेसा होंति। तिचरिमगोवुच्छादो अवणिददोगोवुच्छविसेसे तदियम्मि गोउच्छम्मि अवणिदविसेसेसु पक्खित्ते एदे वि तत्तिया चेव होंति । एव सव्वविसेसे घेत्तूण परिवाडीए पक्खित्ते रूऊणपुव्वकोडि-मेत्तगोवुच्छविसेसविक्खंभं पुव्वकोडिअद्धायामखेत्त होदूण चेट्ठदि । पुणो एद मज्झम्मि पाडिय उवरि सधिदे मज्झिमगोवुच्छम्मि अवणिदगोउच्छविसेसविक्खंभ-पुव्वकोडिआयाम खेत्त होदि । एदं चरिमणिसेगविक्खंभ-पुव्वकोडिआयामखेत्तम्मि आयामेण सधिदे मज्झिम-णिसेगविक्खंभं पुव्वकोडिआयामं खेत्तं होदि । एसो मूलग्गसमासत्थो । तेण कारणेण पुव्वकोडीए समयपबद्धे भागे हिदे मज्झिमणिसेगो आगच्छदि त्ति उत्त ।

गोपुच्छविशेष भी एक आदि एक अधिकके क्रमसे एक कम पूर्वकोटिके समय प्रमाण प्राप्त होते हैं ।

विशेषार्थ—कर्मभूमिज मनुष्य या तिर्यंच आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध एक पूर्व कोटिसे अधिक नहीं होता । और एक गुणहानिका आयाम क्रमसे कम भी पल्यके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है । इसीसे यहां एक गुणहानिआयामका निषेध किया है ।

अब इन गोपुच्छविशेषोंका समीकरण करते हैं । यथा — द्वितीय निषेकमेंसे निकाले हुए विशेषोंमें द्विचरम निषेकमेंसे निकाले हुए एक विशेषको मिलानेपर एक कम पूर्वकोटिके समय प्रमाण विशेष होते हैं । त्रिचरम गोपुच्छामेंसे निकाले हुए दो गोपुच्छविशेषोंको तृतीय गोपुच्छमेंसे निकाले हुए विशेषोंमें मिलानेपर ये भी उतने (एक कम पूर्वकोटिके समय प्रमाण) ही होते हैं । इस प्रकार सब विशेषोंको ग्रहण कर परिपाटीसे रखनेपर एक कम पूर्वकोटिके समय प्रमाण गोपुच्छविशेष विस्तारवाला और पूर्वकोटिके जितने समय हों उनके अर्ध भाग प्रमाण आयामवाला क्षेत्र होकर स्थित होता है । फिर इसे बीचमेंसे फाड़कर ऊपर मिला देनेपर मध्यम गोपुच्छमेंसे निकाले हुए जितने गोपुच्छविशेष हों उतने विस्तारवाला और पूर्वकोटि आयामवाला क्षेत्र होता है । फिर इसे अन्तिम निषेक प्रमाण विस्तारवाले और पूर्वकोटि प्रमाण आयाम-वाले क्षेत्रमें आयामकी ओरसे मिलानेपर मध्यम निषेक प्रमाण विस्तारवाला और पूर्वकोटि आयामवाला क्षेत्र होता है । यह मूलाग्रसमासका अर्थ है । इस कारण पूर्वकोटिका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर मध्यम निषेक आता है, ऐसा कहा है ।

विशेषार्थ— यहां एक पूर्वकोटिके कुल समयोंमें उत्तरोत्तर चय कम निषेक क्रमसे बटे हुए कुल द्रव्यको मध्यम निषेकके क्रमसे करके बतलाया गया है । उदाहरणार्थ एक पूर्वकोटिके कुल समय ८ कल्पित किये जाते हैं । मान लो इनमें

---

१ ताप्रतौ 'होंतित्ति । चरिम-' इति पाठ । २ प्रतिषु 'एस' इति पाठ ।

ज्जदिभागो आगच्छदि । एसो एगसमयपबद्धादो पगडिसरूवेण गलिदो । एगसमयपबद्धस्स जदि एत्तिय पगडिसरूवेण गलिददव्वं लब्भदि तो उक्कस्सबंधगद्धामेत्तसमयपबद्धाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए आवलियाए संखेज्जदिभागमेत्ता पगडिसरूवेण गलिदसमयपबद्धा लब्भंति, उक्कस्सबंधगद्धाए आवलियसलागाहि गुणिदवड्ढिदद्धाणावलियसलागाहिंतो पुव्वकोडीए आवलियसलागाण संखेज्जगुणत्तादो ।

एदं पयडिसरूवेण गलिददव्वं पुध ट्ठविय पुणो विगिदिसरूवेण गलिददव्वपमाणपरिक्खा कीरदे । तं जहा— पढमणिसेयभागहारं विरलिय समयपबद्धं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमणिसेयपमाणं पावदि । पुणो हेट्ठा णिसेयभागहारं कदलीघादपढमसमयादो हेट्ठिमअद्धाणेण ओवट्टिदं विरलिय पढमणिसेगं समखंडं करिय दिण्णे रूवूणवट्टिदद्धाणमेत्तगोवुच्छविसेसा पावेंति । पुणो एदेसु उवरिमविरलणरूवधरिदेहिंतो अवणिदेसु इच्छिदणिसेगपमाणं होदि । पुणो अवणिदविसेसेसु वि तप्पमाणेण कीरमाणेसु लद्धसलागाण पमाणं वुच्चदे । तं जहा— रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तविसेसाणं जदि एगा पक्खेवसलागा लब्भदि तो

प्रबद्धका संख्यातवां भाग आता है। यह एक समयप्रबद्धमेंसे प्रकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण हुआ द्रव्य है। एक समयप्रबद्धका प्रकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण हुआ द्रव्य यदि इतना प्राप्त होता है तो उत्कृष्ट बन्धककाल मात्र समयप्रबद्धोंका क्या प्राप्त होगा इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छा राशिको अपवर्तित करनेपर आवलीके संख्यातवें भाग मात्र प्रकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण समयप्रबद्ध प्राप्त होते हैं क्योंकि उत्कृष्ट बन्धककालकी आवलीशलाकाओंसे गुणित ऐसी वर्धित अध्वानकी आवलीशलाकाओंसे पूर्वकोटिकी आवलीशलाकायें संख्यातगुणी हैं।

इस प्रकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यको पृथक् स्थापित कर पुनः विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यके प्रमाणकी परीक्षा की जाती है। यथा— प्रथम निषेकभागहारका विरलन कर समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति प्रथम निषेकका प्रमाण प्राप्त होता है। फिर उसके नीचे कदलीघातके प्रथम समयसे नीचेके अध्वानके प्रमाणसे भाजित निषेकभागहारका विरलन कर प्रथम निषेकको समखण्ड करके देनेपर एक कम आगे गये स्थान मात्र गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं। पश्चात् इनको उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त राशिमेंसे घटा देनेपर इच्छित निषेकका प्रमाण होता है। पश्चात् कम किये गये विशेषोंका भी उक्त प्रमाणसे करनेपर प्राप्त हुई शलाकाओंका प्रमाण कहते हैं। यथा— एक कम अधस्तन विरलन मात्र विशेषोंकी यदि एक प्रक्षेप शलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलन मात्र विशेषोंका क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार

---

१ प्रतिषु अह इति पाठः ।

पुव्वकोडीए[1] अवणिदे पढमणिसेगभागहारो होदि ।

संपधि पढमसमयप्पहुडि जाव परभविआउअबंधपाओग्गपढमसमयो त्ति ताव एत्थ पगडिसरूवेण गलिददव्वमिच्छामो त्ति एदेण अद्धाणेण पढमणिसेयभागहारमोवट्टिय लद्धं विरलेदूण समयपबद्धं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि चडिदद्धाणमेत्तपढमणिसेया पावेंति । पुणो चडिदद्धाणगुणिदणिसेगभागहारं विरलेदूण उवरिमेगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे एगेगविसेसो पावदि । संपधि रूवूणचडिदद्धाण संकलणाए[2] ओवट्टिय विरलेदूण तं चेव समखंडं करिय दिण्णे अहियगोवुच्छविसेसा पावेंति । पुणो एदे उवरिमसव्वरूवधरिदेसु अवणेदव्वा । सेसमिच्छिददव्वं होदि । अवणिदविसेसेसु तप्पमाणेण कीरमाणेसु जेत्तिया सलागाओ होंति तासिं पमाणं उच्चदे । तं जहा— रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तविसेसेसु जदि एगा पक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छ-मोवट्टिय लद्धमुवरिमविरलणाए पक्खिविय समयपबद्धे भागे हिदे एगसमयपबद्धस्स सखे-

---

रूपके असंख्यातवें भाग प्रमाण लब्धको पूर्वकोटिमेंसे घटा देनेपर प्रथम निषेकका भागहार होता है ।

अब प्रथम समयसे लेकर परभव सम्बन्धी आयुको बांधनेके योग्य प्रथम समय तक यहां प्रकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यको लाना चाहते हैं, अत. इस कालके प्रमाणसे प्रथम निषेकके भागहारको अपवर्तित कर जो प्राप्त हो उसका विरलन कर समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति प्रथम समयसे लेकर आयुबन्ध होनेके प्रथम समय तक जितना काल हो उतने प्रथम निषेक प्राप्त होते हैं । पश्चात् प्रथम समयसे लेकर आयुबन्ध होनेके प्रथम समय तक जितना काल हो उससे गुणित निषेकभागहारका विरलन कर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर एक एक विशेष प्राप्त होता है । अब एक कम चढ़ित अध्वानको संकलनासे अपवर्तित कर जो लब्ध हो उसका विरलन करके और उसको ही समखण्ड करके देनेपर अधिक गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं । पश्चात् इनको उपरिम विरलनके सब अंकोंके प्रति प्राप्त राशिमेंसे कम करना चाहिये । इस प्रकार जो शेष रहे वह इच्छित द्रव्य होता है । तथा अपनीत विशेषोंको उसीके प्रमाणसे करनेपर जितनी शला-कायें होती हैं उनका प्रमाण कहते हैं । यथा— एक कम अधस्तन विरलन मात्र विशेषोंमें यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलन मात्र विशेषोंमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर जो लब्ध हो उसे उपरिम विरलनमें जोड़कर समयप्रबद्धमें भाग देनेपर एक समय-

---

१ प्रतिषु '-भागपुव्वकोडीए' इति पाठ । २ प्रतिषु 'चडिदद्धाणसकलणाए' इति पाठः ।

विगिदिगोवुच्छा त्ति घेत्तव्वा । एदिस्से विगिदिगोवुच्छाए आगमणं वुच्चदे । तं जहा— पढमखंडपढमणिसेयस्स भागहारं खंडसलागाहि ओवट्टिय विरलिय समयपबद्धं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि कदलीघादखंडसलागमेत्तपढमणिसेगा समाणा होदूण पावेंति । पुणो जहासरूवेण आगमणमिच्छामो त्ति हेट्ठा पयदपढमगोवुच्छणिसेगभागहारं खंडसलागाहि गुणिय विरलिय एगरूवधरिदपमाणमण्णं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एगेगविसेसो पावदि । एदं च णिल्लेविज्जदि[1] त्ति अंतोमुहुत्तादिअंतोमुहुत्तुत्तरसंखेज्जगच्छसंकलणाए संखेज्जपुव्वकोडिमेत्ताए पुव्विल्लभागहारमोवट्टिय विरलेदूण उवरिमेगरूवधरिदपमाणमण्णं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पुव्विल्लसंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा पावेंति । एदे उवरिमविरलणसव्वरूवधरिदेसु पुध पुध अवणेदव्वा । अवणिदसेसं विगिदिगोवुच्छा होदि । पुणो अव

गोपुच्छसमूहोंका नाम विकृतिगोपुच्छा है ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

विशेषार्थ — आयुका उत्कृष्ट आबाधाकाल भुज्यमान आयुके तृतीय भाग प्रमाण होता है । प्रकृतमें कदलीघात और आयुबन्धका समय एक है अर्थात् जिस समय कदलीघात होता है उसी समयसे आयुबन्धका प्रारम्भ होता है अतः आयुबन्धके समयसे लेकर जो एक तृतीय भाग प्रमाण आयु शेष रही उतने प्रमाणवाले अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्वकोटि प्रमाण आयुस्थितिके खण्ड करना चाहिये । इस प्रकार जितने खण्ड हों उन्हें एकके सामने दूसरेको स्थापित करना चाहिये । ऐसा करनेसे जो गोपुच्छा बनेगी वह विकृतिगोपुच्छाका प्रमाण होगा यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

अब इस विकृतिगोपुच्छाके लानेके विधानको कहते हैं । यथा— प्रथम खण्ड सम्बन्धी प्रथम निषेकके भागहारको खण्डशलाकाओंसे अपवर्तित करनेपर जो प्राप्त हो उसका विरलन कर समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक विरलन अंकके प्रति कदलीघातकी खण्डशलाका मात्र प्रथम निषेक समान होकर प्राप्त होते हैं । फिर चूंकि यथास्वरूपसे लानेकी इच्छा करते हैं अतः नीचे खण्डशलाकाओंसे गुणित ऐसे प्रकृत प्रथम गोपुच्छके निषेकभागहारका विरलन कर विरलन राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त एक अन्य राशिको समखण्ड करके देनेपर विरलन राशिके प्रत्येक एकके प्रति एक एक विशेष प्राप्त होता है । यह चूंकि निर्लेप्य होता है अतः अन्तर्मुहूर्तसे लेकर अन्तर्मुहूर्त अधिकके क्रमसे संख्यात गच्छसंकलनासे जो कि संख्यात पूर्वकोटि मात्र है पूर्वोक्त भागहारको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उसका विरलन कर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त एक अन्य प्रमाणको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति पूर्वोक्त संकलन मात्र गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं । इनको सब उपरिम विरलन राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त राशिमेंसे अलग अलग घटाना चाहिये । ऐसा करनेपर जो शेष रहे वह

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु 'णिण्हिज्जदि' इति पाठः ।

उवरिमविरलणमेत्ताणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धे उवरिमविरलणाए पक्खित्ते कदलीघादपढमसमयणिसेगभागहारो होदि ।

संपधि एगसमयपबद्धमस्सिदूण कदलीघादजणिदएगविगिदिगोवुच्छाए भागहारे भण्णमाणे ताव कदलीघादक्कमो वुच्चदे— जीविदद्धमेत्तायामेण अवमेसआउट्ठिदिं आयामेण खंडिय तत्थ पढमखंडादो उवरिमबिदियखंड वियच्चासमकाऊणं जहाठिदिसरूवेण पढमखंडपासे रचेदि । तदियादिखंडाण पि रचणाविही एसो चेव । एव कदे पढमखंडपढमणिसेयादो बिदियखंडपढमणिसेगो जीविदद्धमेत्तगोउच्छविसेसेहि ऊणो । तदियखंडपढमणिसेगो दुगुणिदजीविदद्धमेत्तगोवुच्छविसेसेहि ऊणो । चउत्थखंडपढमणिसेगो तिगुणिदजीविदद्धमेत्तगोवुच्छाविसेसेहि ऊणो । एव णेदव्व जाव चरिमखंडपढमणिसेगो त्ति । अप्पप्पणो पढमणिसेगादो बिदियादिणिसेगा गोवुच्छविसेसेणूणा[४] । एदासिं समाणट्ठिदिगोवुच्छाणं समूहा विगिदिगोवुच्छा णाम । संपहि जीविदद्धेण अंतोमुहुत्तूणपुव्वकोडिअद्धाणे भागे हिदे खंडसलागाओ संखेज्जाओ आगच्छंति । जेत्तियाओ खंडसलागाओ तेत्तियमेत्तगोवुच्छसमूहा

प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर लब्धको उपरिम विरलनमें मिला देनेपर कदलीघातके प्रथम समय सम्बन्धी निषेकका भागहार होता है ।

अब एक समयप्रबद्धका आश्रय कर कदलीघातसे उत्पन्न हुई एक विकृतिगोपुच्छाके भागहारका कथन करनेपर पहिले कदलीघातका क्रम कहते हैं—उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर कदलीघातके समय तक जीवित रहनेका जो काल है उससे अर्ध मात्र आयामवाली शेष आयुस्थितिको आयामसे खण्डित कर उनमेंसे प्रथम खण्डसे उपरिम द्वितीय खण्डको उलटे बिना निषेकरचनाके अनुसार ही प्रथम खण्डके पासमें स्थापित करता है । तृतीय आदि खण्डोंकी रचनाविधि भी यही है । इस प्रकार करने पर प्रथम खण्डके प्रथम निषेकसे द्वितीय खण्डका प्रथम निषेक उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर कदलीघात होनेके समय तक जीवित रहनेका जो काल है उससे अर्ध मात्र गोपुच्छविशेषोंसे कम है । तृतीय खण्डका प्रथम निषेक दुगुने उक्त काल मात्र गोपुच्छविशेषोंसे कम है । चतुर्थ खण्डका प्रथम निषेक तिगुने उक्त काल मात्र गोपुच्छ विशेषोंसे कम है । इस प्रकार अन्तिम खण्डके प्रथम निषेक तक ले जाना चाहिये । तथा इन खण्डोंमें अपने अपने प्रथम निषेकसे द्वितीयादि निषेक एक एक गोपुच्छविशेष कम हैं । इस प्रकार इन समान स्थितिवाली गोपुच्छाओंके समूहोंका नाम विकृतिगोपुच्छा है । अब उक्त कालका अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटि प्रमाण कालमें भाग देनेपर संख्यात शलाकायें आती हैं । इसलिये जितनी खण्डशलाकायें हों उतने मात्र

---

१ अ आप्रत्योः 'पदमणिसेय' इति पाठः । २ अ आ काप्रतिषु 'अवसेसा आउट्ठिदिं आयामेण', ताप्रतौ 'अवसेसआउट्ठिदिआयामेण' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'वियच्चा समकाऊण' इति पाठः । ४ प्रतिषु 'विसेसणा' इति पाठः ।

णिदगोवुच्छविसेसेसु तप्पमाणेण कीरमाणेसु उप्पण्णसलागपमाणं उच्चदे— रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तविसेसाणं जदि एगरूवपक्खेवो लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्ताण किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छमोवट्टिय लद्धं उवरिमविरलणाए सादिरेयजीविदद्धमेत्ताए पक्खित्ते एगसमयपबद्धस्स पढमविगिदिगोवुच्छभागहारो होदि। एदेण समयपबद्धे भागे हिदे पढमविगिदिगोवुच्छा आगच्छदि। सव्वविगिदिगोवुच्छाणमागमणमिच्छामो त्ति परभवियाउअ-उक्कस्सबंधगद्धाए रूवूणाए पढमविगिदिगोवुच्छभागहारमोवट्टिय लद्धं विरलेऊण समयपबद्धं समखंडं करिय दिण्णे रूवूणुक्कस्सबंधगद्धामेत्तपढमविगिदिगोवुच्छाओ रूवं पडि पावेंति। एवमेदाओ सरिसा ण होंति, पढमविगिदिगोवुच्छादो विदियाए संखेज्जविसेसपरिहाणिदंसणादो, विदियादो तदियाए वि खंडसलागमेत्तविसेसपरिहाणिदंसणादो। एवं णेदव्वं जाव समऊणुक्कस्सबंधगद्धा त्ति संखेज्जविसेसादिसंखेज्जविसेसुत्तरअंतोमुहुत्तगच्छसकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा अहिया जादा त्ति। एदासिमवणयणविहाणं वुच्चदे। तं जहा— पुव्वविरलणाए हेट्ठा पढमखंडपढमगोवुच्छणिसेगभागहारम्मि कदलीघादखंडसलागाहि गुणि-

विकृतिगोपुच्छ होता है। पुनः निकाले हुए गोपुच्छविशेषोंको उसके प्रमाणसे करनेपर उत्पन्न हुई शलाकाओंका प्रमाण कहते हैं— एक कम अधस्तन विरलन मात्र विशेषोंका यदि एक प्रक्षेप अंक प्राप्त होता है तो उपरिम विरलन मात्र विशेषोंका क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर लब्धको साधिक जीवितार्ध मात्र उपरिम विरलनमें प्रक्षेप करनेपर एक समयप्रबद्धकी प्रथम विकृतिगोपुच्छका भागहार होता है। इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर प्रथम विकृतिगोपुच्छा आती है। सब विकृतिगोपुच्छाओंके आगमनकी इच्छासे एक कम परभविक आयुके उत्कृष्ट बन्धककालसे प्रथम विकृतिगोपुच्छके भागहारको अपवर्तित कर लब्धका विरलन करके समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर एक कम उत्कृष्ट बन्धककाल मात्र प्रथम विकृतिगोपुच्छायें विरलन राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त होती हैं। इस प्रकार ये विकृतिगोपुच्छायें सदृश नहीं होती हैं, क्योंकि, प्रथम विकृतिगोपुच्छासे द्वितीयमें संख्यात विशेषोंकी हानि देखी जाती है, द्वितीयसे तृतीयमें भी खण्डशलाका मात्र विशेषोंकी हानि देखी जाती है। इस प्रकार समय कम उत्कृष्ट बन्धककाल तक संख्यात विशेषोंसे लेकर संख्यात विशेष अधिकके क्रमसे अन्तर्मुहूर्त गच्छोंके संकलन मात्र गोपुच्छविशेषोंके अधिक हो जाने तक ले जाना चाहिये। अब इनके अपनयनके विधानको कहते हैं। यथा— पूर्व विरलनके नीचे प्रथम खण्ड सम्बन्धी प्रथम गोपुच्छके निषेकभागहारको

१ प्रतिषु 'निदियगोवुच्छा' इति पाठ। २ अ आ काप्रतिषु 'परमवियाउआ' इति पाठः।

गद्धाचरिमसमए उक्कस्ससामित्तं आवलियाए संखेज्जदिभागमेत्तसमयपबद्धेहि ऊणदुगुणुक्कस्सबंधगद्धामेत्तसमयपबद्धे घेत्तूण दिण्णं।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ॥ ४७ ॥

तदो उक्कस्सादो वदिरित्तदव्वमणुक्कस्सवेयणा। एत्थ अणुक्कस्सदव्वाणं परूवणट्ठमिमा ताव सगलविगलपक्खेवाणं पमाणपरूवणा कीरदे। तं जहा— सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तउक्कस्सजोगपक्खेवभागहारं उक्कस्सबंधगद्धाए गुणिय विरलेदूण उक्कस्सबंधगद्धामेत्तसमयपबद्धेसु समखंडं कादूण दिण्णेसु एक्केक्कस्स रूवस्स सगलपक्खेवपमाणं पावदि। एदिस्से विरलणाए सगलपक्खेवभागहारो त्ति सण्णा। एत्थ उक्कस्सजोगेण परिणमणकालो उक्कस्सो[1] दुसमयमेत्तो चेव। तेण उक्कस्सजोगपक्खेवभागहारस्स उक्कस्सबंधगद्धा गुणगारो ण होदि त्ति उत्ते सच्चमेदं, किंतु सामण्णेण उत्तं। विसेसे पुण अवलंबिज्जमाणे[2] जेसु जेसु जोगट्ठाणेसु उक्कस्सबंधगद्धा पडिबद्धा तेसिं तेसिं जोगट्ठाणाणं पक्खेवभागहारे मेलाविय विरलिदे सगलपक्खेवभागहारो होदि। अथवा, आउअउक्कस्सदव्वे

समयमें उत्कृष्ट स्वामित्व आवलीके संख्यातवें भाग मात्र समयप्रबद्धोंसे कम दुगुणे उत्कृष्ट बन्धककाल मात्र समयप्रबद्धोंका ग्रहण कर, दिया गया है।

उससे भिन्न द्रव्य आयुकी अनुत्कृष्ट वेदना है ॥ ४७ ॥

उससे अर्थात् उत्कृष्टसे भिन्न द्रव्य अनुत्कृष्ट वेदना है। यहां अनुत्कृष्ट द्रव्योंके प्ररूपणार्थ पहिले यह सकल और विकल प्रक्षेपोंकी प्रमाणप्ररूपणा की जाती है। यथा— श्रेणीके असंख्यातवें भाग मात्र उत्कृष्ट योग सम्बन्धी प्रक्षेपभागहारको उत्कृष्ट बन्धककालसे गुणा करके विरलन कर उत्कृष्ट बन्धककाल मात्र समयप्रबद्धोंको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति सकल प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है। इस विरलनकी सकलप्रक्षेपभागहार संज्ञा है।

शंका— यहां उत्कृष्ट योग रूपसे परिणमन करनेका उत्कृष्ट काल दो समय मात्र ही है। इसलिये उत्कृष्ट बन्धककाल उत्कृष्ट योग सम्बन्धी प्रक्षेपभागहारका गुणकार नहीं हो सकता?

समाधान— ऐसी आशंका होनेपर उत्तर देते हैं कि यह सत्य है परन्तु यह सामान्यसे कहा है। विशेषका अवलम्बन करनेपर जिन जिन योगस्थानोंके साथ उत्कृष्ट बन्धककाल प्रतिबद्ध है उन उन योगस्थानोंके प्रक्षेपभागहारोंको मिलाकर विरलन करनेपर सकलप्रक्षेपभागहार होता है। अथवा आयुके उत्कृष्ट

---

[1] अ-आ-प्रत्योः 'उक्कस्सा' इति पाठः। [2] प्रतिषु 'अवलंबिज्जमाणे' इति पाठः।

मेत्तसमयपबद्धेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए आवलियाए संखेज्जदिभागमेत्ता समयपबद्धा विगिदिसरूवेण णट्ठा आगच्छंति। णवरि एदं दव्वं पगडिसरूवेण णट्ठदव्वादो संखेज्जगुणं, उक्कस्सबंधगद्धाए कदलीघादेण घादिदहेट्ठिमद्धाणं गुणिय पुव्वकोडीए भागे हिदे जं भागलद्धं तत्तो कदलीघादेगखंडायामेण उक्कस्सबंधगद्धावग्गे भागे हिदे जं लद्धं तस्स संखेज्जगुणत्तुवलंभादो। एदाणि दो वि दव्वाणि एक्कदो कदे पगदि-विगिदिसरूवेण णट्ठसव्वदव्वमावलियाए संखेज्जदिभागमेत्ता समयपबद्धा होंति। एदम्मि दोबंधगद्धामेत्तसमयपबद्धेसु सोहिदेसु आउअस्स उक्कस्सदव्वं होदि।

संपहि समयं पडि गलमाणविगिदिगोवुच्छादो समयं पडि ढुक्कमाणसमयपबद्धो संखेज्जगुणो त्ति एदं परूवेमो। तं जहा— पढमफालिपढमगोवुच्छभागहारं किंचूणपुव्वकोडिं कदलीघादखंडसलागाहि ओवट्टिय रूवस्स असंखेज्जदिभागे पक्खित्ते एगसमयपबद्धस्स विगिदिगोउच्छभागहारो आगच्छदि। पुणो तं भागहारं उक्कस्सबंधगद्धाए ओवट्टिय लद्धेण समयपबद्धे भागे हिदे समयपबद्धस्स संखेज्जदिभागमेत्ता विगिदिगोवुच्छा आगच्छदि। समयपबद्धो पुण संपुण्णो। तेण णिज्जरादो आगच्छमाणदव्वं संखेज्जगुणमिदि आउअबंध-

बन्धककाल मात्र समयप्रबद्धोंमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर आवलीके संख्यातवें भाग मात्र समयप्रबद्ध विकृति स्वरूपसे नष्ट हुए आते हैं। विशेष इतना है कि यह द्रव्य प्रकृति स्वरूपसे नष्ट हुए द्रव्यकी अपेक्षा संख्यातगुणा है, क्योंकि, उत्कृष्ट बन्धककालसे कदलीघात द्वारा घातित अधस्तन अध्वानको गुणित कर पूर्वकोटिका भाग देनेपर जो भागलब्ध हो उससे, कदलीघात सम्बन्धी एक खण्डके आयामका उत्कृष्ट बन्धककालके वर्गमें भाग देनेपर जो लब्ध हो वह, संख्यातगुणा पाया जाता है। इन दोनों ही द्रव्योंको इकट्ठा करनेपर प्रकृति व विकृति स्वरूपसे नष्ट हुआ सब द्रव्य आवलीके संख्यातवें भाग मात्र समयप्रबद्ध प्रमाण होता है। इसे दो बन्धककाल मात्र समयप्रबद्धोंमेंसे कम करनेपर आयुका उत्कृष्ट द्रव्य होता है।

अब प्रति समय गलनेवाली विकृतिगोपुच्छासे प्रति समय ढौकमान (उपस्थित होनेवाला) समयप्रबद्ध संख्यातगुणा है। इसकी प्ररूपणा करते हैं। यथा— प्रथम फालि सम्बन्धी प्रथम गोपुच्छाके भागहार स्वरूप कुछ कम पूर्वकोटिको कदलीघातकी खण्डशलाकाओंसे अपवर्तित कर लब्धमें एक अंकके असंख्यातवें भागका प्रक्षेप करनेपर एक समयप्रबद्धकी विकृतिगोपुच्छका भागहार आता है। पुन उस भागहारको उत्कृष्ट बन्धककालसे अपवर्तित कर लब्धका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर समयप्रबद्धके संख्यातवें भाग मात्र विकृतिगोपुच्छा आती है। पर समयप्रबद्ध सम्पूर्ण है। इसीलिये चूंकि निर्जराकी अपेक्षा आनेवाला द्रव्य संख्यातगुणा है, अत. आयुबन्धककालके अन्तिम

१ अ-आ-काप्रतिषु 'मेत्तो समयपबद्धा विट्ठिदि-' ताप्रतौ '-मेत्ता समयपबद्धा वि ट्ठिदि-' इति पाठ।

माणुवदव्वं होदि । तेणेव कारणेण एदम्हादो दोसु पदेसेसु परिहीणेसु बिदियमणुक्कस्सदव्वं होदि । तिसु परिहीणेसु तदियअणुक्कस्सपदेसट्ठाणं होदि । एवमेगेगुत्तरपदेसपरिहाणिकमेण णेदव्वं जाव एगविगलपक्खेवमेत्तपदेसा परिहीणा त्ति । एवं हाइदूण[1] ट्ठिदेण अण्णो जीवो समऊणुक्कस्सबंधगद्धामेत्तकालं पुव्विल्लविवक्खिदतप्पाओग्गुक्कस्सजोगेहि बंधिय पुणो एगसमयपक्खेवऊणजोगट्ठाणेण बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय कदलीघादं कादूण परभवियाउअं बंधिय उक्कस्सबंधगद्धाचरिमसमयट्ठिदजीवो सरिसो, दोसु वि एगविगलपक्खेवाभावादो ।

पुणो पुव्विल्लं मोत्तूण इमं घेत्तूण एग-दोपरमाणुआदिकमेण एगविगलपक्खेवमेत्तपरमाणुपदेसाणं परिहाणीए कदाए तत्तियमत्ताणि चेव अणुक्कस्सट्ठाणाणि उप्पज्जंति ।

पुणो एदेण [3]समऊणुक्कस्सबंधगद्धामेत्तकालं तप्पाओग्गुक्कस्सजोगट्ठाणेहि बंधिय एगसमयं दुपक्खेवऊणजोगट्ठाणेण बंधिय पयदट्ठाणे ट्ठिदो सरिसो । पुव्विल्लं मोत्तूण इमं घेत्तूण एत्थ एग-दोपरमाणुआदिकमेण हीणं करिय णेदव्वं जाव एगविगलपक्खेवा परिहीणो

मात्र इस उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे दो प्रदेशोंके हीन होनेपर द्वितीय अनुत्कृष्ट द्रव्य होता है । तीन परमाणुओंके हीन होनेपर तृतीय अनुत्कृष्ट प्रदेशस्थान होता है । इस प्रकार उत्तरोत्तर एक एक प्रदेशकी हानिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप मात्र प्रदेशोंके हीन होने तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार हीन होकर स्थित हुए जीवके साथ एक दूसरा जीव जो एक समय कम उत्कृष्ट बन्धककाल मात्र कालके भीतर पूर्वोक्त विवक्षित उसके योग्य उत्कृष्ट योगों द्वारा बांधकर पुनः एक समय तक एक प्रक्षेप हीन योगस्थान द्वारा बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न होकर कदलीघात करके परभविक आयुको बांधकर उत्कृष्ट बन्धककालके अन्तिम समयमें स्थित है सदृश है, क्योंकि उक्त दोनों ही जीवोंमें एक विकल प्रक्षेपका अभाव है ।

पुनः पूर्वोक्त जीवको छोड़कर और इस दूसरे जीवको ग्रहण कर एक-दो परमाणु आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप मात्र परमाणुप्रदेशोंकी हानि करनेपर उतने मात्र ही अनुत्कृष्ट स्थान उत्पन्न होते हैं ।

पुनः इस जीवके साथ एक समय कम उत्कृष्ट बन्धककाल मात्र काल तक उसके योग्य उत्कृष्ट योगस्थानों द्वारा बांधकर और एक समय तक दो प्रक्षेप कम योगस्थान द्वारा बांधकर प्रकृत स्थानमें स्थित जीव सदृश है । पूर्वोक्त जीवको छोड़कर और इसे ग्रहण कर यहां एक दो परमाणु आदिके क्रमसे हीन करके एक विकल प्रक्षेपके हीन होने तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार करनेपर विकल

---

१ अप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु 'धादूण' इति पाठः । २ प्रतिषु 'पेट्ठिदेण' इति पाठः ।
३ अप्रतिपाठोऽयम् । अ आ का ताप्रतिषु 'समऊणुक्कस्सट्ठाणाणि उप्पज्जंति पुणो एदेण' इत्यधिकः पाठोऽस्ति ।
४ ताप्रतौ 'एगसमयदुपक्खेवूण' इति पाठः ।

उक्कस्सबंधगद्धाए ओवट्टिदे आदेसुक्कस्सजोगट्ठाणदव्वं होदि। तस्स पक्खेवभागहारे उक्कस्सबंधगद्धाए गुणिदे सगलपक्खेवभागहारो होदि। एत्थ एगरूवधरिद सगलपक्खेवो णाम। एगसगलपक्खेवादो पगडि-विगिदिसरूवेण गलिददोदव्वागमणहेदुभूदसंखेज्जरूवे विरलिय सगलपक्खेवं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सयलपक्खेवादो पगडि विगिदिसरूवेण गलिददव्वमागच्छदि। एत्थ एगरूवधरिदं मोत्तूण बहुभागाणं विगलपक्खेव इदि सण्णा।

पुणो सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगमादिं कादूण जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेत्ति ताव एदेसिं जोगट्ठाणाण पक्खेउत्तरकमेण णिरतरं गदाणं रचणं कादूण अणुक्कस्सदव्वपरूवणं कस्सामो। तं जहा — उक्कस्सजोगेण उक्कस्सबधगद्धाए पुव्वकोडितिभागम्मि जलचरेसु पुव्वकोडाउअं बंधिदूण कमेण कालं करिय पुव्वकोडाउअजलचरेसुप्पज्जिय उप्पण्णपढमसमयादो अतोमुहुत्तं गतूण जीविदद्धपमाणेण देसूणपुव्वकोडिआयाममेगसमएण कदलीघादेण घादिय पुणरवि जलचरेसु तप्पाओग्गुक्कस्सजोगेण उक्कस्सबधगद्धाए च पुव्वकोडाउअबधं पारभिय बधगद्धाचरिमसमए वट्टमाणस्स उक्कस्सिया आउवदव्ववेयणा। एत्थ ओलंबणाकरणेण एगपरमाणुम्हि परिहीणे अणुक्कस्सुक्कस्स-

द्रव्यको उत्कृष्ट बन्धककालसे अपवर्तित करनेपर आदेश उत्कृष्ट योगस्थानका द्रव्य होता है और उसके प्रक्षेपभागहारको उत्कृष्ट बन्धककालसे गुणा करनेपर सकलप्रक्षेपभागहार होता है।

यहां विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त राशिका नाम सकलप्रक्षेप है। एक सकलप्रक्षेपसे प्रकृति व विकृति स्वरूपसे गले हुए दोनों द्रव्योंके लानेमें कारणभूत संख्यात अंकोंका विरलन कर सकलप्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति सकलप्रक्षेपोंसे प्रकृति व विकृति स्वरूपसे गला हुआ द्रव्य आता है। यहां विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको छोड़कर बहुभागोंकी 'विकलप्रक्षेप' यह संज्ञा है।

पुन. संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके जघन्य परिणाम योगसे लेकर उत्कृष्ट योगस्थान तक प्रक्षेप उत्तर क्रमसे निरन्तर गये हुए इन योगस्थानोंकी रचना करके अनुत्कृष्ट द्रव्यकी प्ररूपणा करते हैं। यथा— जो जीव उत्कृष्ट योग और उत्कृष्ट बन्धककालके द्वारा पूर्वकोटिके त्रिभागमें जलचरोंमें पूर्वकोटि प्रमाण आयुको बांधकर क्रमसे मरकर पूर्वकोटि आयु युक्त जलचरोंमें उत्पन्न होकर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे अन्तर्मुहूर्त जाकर कुछ कम पूर्वकोटि आयुस्थितिको एक समयमें कदलीघातसे घात कर और उसे उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे वहां तक जितना जीवन गया है उसके अर्ध प्रमाण करके फिर भी जलचरोंमें उनके योग्य उत्कृष्ट योग और उत्कृष्ट बन्धककालके द्वारा पूर्वकोटि प्रमाण आयुके बन्धका प्रारम्भ करके बन्धककालके अन्तिम समयमें वर्तमान है उसके आयुद्रव्यकी उत्कृष्ट वेदना होती है। इसमेंसे अवलम्बन करण द्वारा एक परमाणुके हीन होनेपर अनुत्कृष्ट आयुद्रव्यका उत्कृष्ट भेद होता है। उसी करणके

तेत्तियमेत्तजोगट्ठाणाणि समयाविरोहेण सव्वसमएसु ओदइदूण ट्ठिदो ण दो वि सरिसा।

एपथि एत्थ सगलपक्खेवबंधणविहाणं[1] उच्चदे। तं जहा— हेट्ठिमविरलणमेत्ताण पगदि[2]-विगिदिसरूवेण गलिददव्वाणं जदि एगो सयलपक्खेवो लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्ताणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेत्ता सयलपक्खेवा होंति। एत्तियमेत्तट्ठाणाणि उक्कस्सबंधगद्धाए समयाविरोहेण ओदिण्णाए पुव्विल्लेण सरिसं होदि त्ति वत्तव्वं। पुणो पुव्विल्लं मोत्तूण इमं घेत्तूण एदस्स भुंजमाणाउअम्मि एग-दोपरमाणुआदिपरिहाणिकमेण एगविगलपक्खेवमेत्तमणुक्कस्सट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि।

पुणो एदेण को सरिसो होदि त्ति उच्चदे— समऊणुक्कस्सबंधगद्धाए तप्पाओग्गुक्कस्सजोगेण बंधिय एगसमयं पक्खेवऊणभागेण बंधिय अठावरेसुप्पज्जिय कदलीघादं काऊण परभवियाउअं पुव्वुद्दिट्ठजोगेण बंधिय जो बंधगद्धाचरिमे समए ठिदो सो सरिसो। एदेण कमेण विगलपक्खेवभागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु परिहीणेसु रूवूणविगलपक्खेवभागहारमेत्ता

सब समयोंमें समयाविरोधसे उतने मात्र योगस्थानोंको हटा कर स्थित है यह जीव ये दोनों ही सदृश हैं।

अब यहां सकल प्रक्षेपोंके बन्धनकी विधि कहते हैं। यथा— अधस्तन विरलन मात्र प्रकृति व विकृति स्वरूपसे गलित द्रव्योंका यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो उपरिम विरलन मात्र उक्त द्रव्योंका क्या प्राप्त होगा इस प्रकार, प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर जो प्राप्त हो उतने मात्र सकल प्रक्षेप होते हैं। उत्कृष्ट बन्धककालके भीतर समयाविरोधसे इतने मात्र स्थानोंके उतरनेपर यह स्थान पूर्वोक्तके सदृश होता है ऐसा कहना चाहिये।

पुनः पूर्वोक्त जीवको छोड़कर और इसको ग्रहण करके इसकी भुज्यमान आयुमें एक-दो परमाणु आदिकी हानिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप प्रमाण अनुत्कृष्ट स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये।

अब इसके सदृश कौन होता है यह बतलाते हैं— एक समय कम उत्कृष्ट बन्धककालके भीतर उसके योग्य उत्कृष्ट योगसे बांधकर और एक समय तक एक प्रक्षेप कम योग द्वारा बांधकर अस्थावरोंमें उत्पन्न होकर व कदलीघात करके परभविक आयुको पूर्वोद्दिष्ट योगसे बांधकर जो बन्धककालके अन्तिम समयमें स्थित है यह जीव इसके सदृश है।

इस क्रमसे विकल प्रक्षेपके भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंके हीन होने पर एक कम विकल प्रक्षेपके भागहार प्रमाण सकल प्रक्षेपोंकी हानि होती है।

---

१ प्रतिषु 'विगिगदि' इति पाठः। २ प्रतिषु 'मेत्तपदि' इति पाठः। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'विगदि' इति पाठः।

त्ति । एवं कदे विगलपक्खेवमेत्ताणि चेव अणुक्कस्सट्ठाणाणि उप्पज्जंति ।

जो समऊणुक्कस्सबंधगद्धामेत्तकालं तप्पाओग्गुक्कस्सजोगेण बंधिय पुणो अण्णेगसमए तिपक्खेऊणंपुव्विल्लजोगेण बंधिय बंधगद्धाचरिमसमयट्ठिदो सो एदेण सरिसो ।

एवं पगदि-विगिदिसरूवेण गलिददव्वभागहारं विरलिय सयलपक्खेवं समखंडं करिय दादूण एदेण पमाणेण उवरिमविरलणसव्वरूवधरिदेसु अवणिय तत्थ जत्तिया विगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता जाव परिहायंति ताव णेदव्वं ।

एत्थ विगलपक्खेवपमाणाणुगमं कस्सामो । तं जहा — हेट्ठिमविरलणरूवूणमेत्ताणं पगदि-विगिदिसरूवेण गलिददव्वाणं जदि एगो विगलपक्खेवो लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्ताणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेत्ता विगलपक्खेवा होंति । एत्तियमेत्ते विगलपक्खेवे समयाविरोहेण परिहाइदूण ठिदो च अण्णेगो तप्पाओग्गुक्कस्सजोगेणुक्कस्सबंधगद्धाए जलचरेसु आउअं बंधिय तत्थुप्पज्जिय कदलीघादं कादूण परभविआउअं बंधमाणो पुव्विल्लविगलपक्खेवेसु जेत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि

प्रक्षेप मात्र ही अनुत्कृष्ट स्थान उत्पन्न होते हैं।

जो जीव एक समय कम उत्कृष्ट बन्धककाल तक उसके योग्य उत्कृष्ट योगके द्वारा बांधकर पुनः दूसरे एक समय तीन प्रक्षेप कम पूर्वोक्त योग द्वारा बांधकर बन्धककालके अन्तिम समयमें स्थित है वह इस पूर्वोक्त जीवके सदृश है।

इस प्रकार प्रकृति और विकृति स्वरूपसे गले हुए द्रव्यके भागहारका विरलन कर सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर जो प्राप्त हो उस प्रमाणसे उपरिम विरलनके सब अंकोंके प्रति प्राप्त राशिमेंसे घटाकर उसमें जितने विकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र प्रक्षेपोंकी हानि होने तक ले जाना चाहिये।

यहां विकल प्रक्षेपोंका प्रमाणानुगम करते हैं। यथा — अधस्तन विरलन मात्र कम ऐसे प्रकृति-विकृति स्वरूपसे गले हुए द्रव्योंका यदि एक विकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो उपरिम विरलन मात्र अंकोंमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाके अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र विकल प्रक्षेप होते हैं। इस प्रकार इतने विकल प्रक्षेपोंकी यथाविधि हानि करके स्थित हुआ यह जीव, तथा एक दूसरा जीव जो उसके योग्य उत्कृष्ट योगसे उत्कृष्ट बन्धककालमें जलचरोंमें आयुको बांधकर उनमें उत्पन्न होकर और कदलीघात करके परभविक आयुको बांध रहा है तथा जो पूर्वोक्त विकल प्रक्षेपोंमें जितने सकल प्रक्षेप हैं

१ आप्रतौ 'अणेगसमए तिपक्खेऊण', ताप्रतौ 'अण्णेगसमयातिपक्खेऊण' इति पाठः ।
२ अ-आप्रत्योः 'विगदि' इति पाठः । ३ अ-आ-काप्रतिषु 'विगलिय' इति पाठः ।

तिभागम्मि जोगोसंकणाकरणवसेणूण कादूण जलचराउअं बंधाविय कमेण जलचरेसुप्पज्जिय पज्जत्तीओ समाणिय कदलीघादेण विणा कदलीघादपढमसमए ट्ठिदस्स दव्वं सरिसं होदि। अथवा, परभवियाउअस्स उक्कस्सबंधगद्धामेत्तसमया उक्कस्सजोगट्ठाणादो जाव जहण्ण जोगट्ठाणं त्ति जहा उवा ट्ठिदा तहा पुव्वकोडितिभागम्मि बंधे भुज्जमाणाउअपडिबद्ध उक्कस्साउअबंधगद्धामेत्तसमया वि जोगोसंकणकरणे अस्सिदूण उक्कस्सजोगट्ठाणादो तप्पाओग्गअसंखेज्जगुणहीणजोगेत्ति ओदारेदव्वा। एवमोदारिय पुणो पच्छा एगविगिदि गोवुच्छमेत्त ऊणेगसमयपबद्धम्मि जत्तिया समयपबद्धा अत्थि तत्तियमेत्तदव्वेण भुज्जमाणा उअमूणं[१] कादूण ट्ठिदो च अण्णेगो पुव्वकोडितिभागम्मि उक्कस्सबंधगद्धाए तप्पाओग्ग जहण्णजोगेण य आउअं बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय कदलीघादं कादूण जहण्णजोगेण समऊणुक्कस्सबंधगद्धाए च परभवियमाउअं बंधिय ट्ठिदो च दो वि सरिसा। एवं जाणिदूण परभवियाउअबंधगद्धं जहण्णं कादूण ट्ठिदो च अण्णेगो पगदिगोवुच्छाहियदोहि वि दव्वेहि समाणं पुव्वकोडितिभागम्मि आउअं बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय कदलीघाद

पूर्वकोटिके त्रिभागमें योग और अपकर्षण करण द्वारा हीन करके जलचरोंमें आयुको बांधकर क्रमसे जलचरोंमें उत्पन्न होकर पर्याप्तियोंको पूर्ण करके कदलीघातके बिना कदलीघातके प्रथम समयमें स्थित हुए जीवका द्रव्य सदृश होता है। अथवा परभविक आयुके उत्कृष्ट बन्धककाल मात्र जो समय हैं वे उत्कृष्ट योगस्थानसे लेकर जघन्य योगस्थान तक जैसे कहे गये स्थित हैं वैसे ही पूर्वकोटिके त्रिभागमें बन्धके समय भुज्यमान आयुके प्रतिबद्ध उत्कृष्ट आयुके बन्धककाल प्रमाण समयोंको भी योग और अपकर्षण करणका आश्रय कर उत्कृष्ट योगस्थानसे लेकर उसके योग्य असंख्यातगुणे हीन योग तक उतारना चाहिये। इस प्रकार उतार कर फिर पीछे एक विकृति गोपुच्छसे हीन एक समयप्रबद्धमें जितने समयप्रबद्ध हैं उतने मात्र द्रव्यसे भुज्यमान आयुको कम करके स्थित हुआ जीव तथा पूर्वकोटिके त्रिभागमें उत्कृष्ट बन्धककाल द्वारा व उसके योग्य जघन्य योग द्वारा आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न होकर कदलीघात करके जघन्य योग व एक समय कम उत्कृष्ट बन्धककाल द्वारा परभविक आयुको बांधकर स्थित हुआ अन्य एक जीव ये दोनों समान हैं। इस प्रकार जानकर परभविक आयुके बन्धक कालको जघन्य करके स्थित हुआ जीव तथा प्रकृति गोपुच्छ अधिक दोनों ही द्रव्योंके समान पूर्वकोटिके त्रिभागमें आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न होकर

---

१ प्रतिषु [illegible] । अ-आ-काप्रतिषु [illegible] ताप्रतौ [illegible] इति पाठः।
२ प्रतिषु पूर्ण इति पाठः। ३ प्रतिषु [illegible] । अ-आ-काप्रतिषु [illegible] इति पाठः।
४ प्रतिषु [illegible] । अ-आ-काप्रतिषु [illegible] इति पाठः। ५ अ-आ-काप्रतिषु [illegible] ताप्रतौ [illegible] इति पाठः।

सगलपक्खेवा परिहायंति। एवं परिहाइदूण ठिदो च, अण्णेगो[1] तप्पाओग्गउक्कस्सजोगेण उक्कस्सबंधगद्धाए च आउअं बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय कदलीघादं कादूण रूवूणुक्कस्स-बंधगद्धाए पुव्वणिरुद्धजोगेहि बंधिय एगसमयं पुव्वणिरुद्धजोगादो रूवूणविगलपक्खेवभाग-हारमेत्तजोगट्ठाणाणि ओसरिदूण बंधिय ट्ठिदो च सरिसो। एवमोदारेदव्वं जाव सो समओ तप्पाओग्गाणि असंखेज्जाणि जोगट्ठाणाणि ओदिण्णो त्ति। पुणो एदेणेव कमेण बिदियसमओ वि असंखेज्जाणि जोगट्ठाणाणि ओदारेदव्वो। एवमुक्कस्सबंधगद्धामेत्तसव्वसमया ओदारे-दव्वा। एवमणेण विधाणेण ताव ओदारेदव्वो जाव उक्कस्सबंधगद्धामेत्तसव्वसमयो[2] जहण्णजोगट्ठाणं पत्ता त्ति। पुणो एवमोदरिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो तप्पाओग्गुक्कस्स-जोगेण उक्कस्सबंधगद्धाए आउअं बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय कदलीघादं काऊण परभवि-याउअं जहण्णजोगेण उक्कस्सबंधगद्धाए च बंधिय बंधगद्धाचरिमसमयट्ठिदो च, सरिसा। पुणो एदेण परभवियउक्कस्साउअबंधगद्धागुणिदजहण्णजोगट्ठाणपक्खेवभागहारमेत्तसयल-पक्खेवेहि ऊणविगिदिगोवुच्छासु जत्तिया सयलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्तदव्वं पुव्वकोडि-

---

इस प्रकार हानि होकर स्थित हुआ जीव, तथा एक दूसरा उसके योग्य उत्कृष्ट योग व उत्कृष्ट बन्धककाल द्वारा आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न होकर कदलीघात करके एक समय कम उत्कृष्ट बन्धककाल तक पूर्व निरुद्ध योगोंसे बांधकर व एक समय तक पूर्व निरुद्ध योगसे एक कम विकल प्रक्षेपक भागहार प्रमाण योगस्थान उतर कर बांधकर स्थित हुआ जीव सदृश है। इस प्रकार तब तक उतारना चाहिये जब तक उसके योग्य असंख्यात योगस्थान उतरकर वह समय प्राप्त होता है। पुन. इसी क्रमसे द्वितीय समयको भी असंख्यात योगस्थान उतारना चाहिये। इस प्रकार उत्कृष्ट बन्धककाल मात्र सब समयोंको उतारना चाहिये। इस प्रकार इस विधानसे तब तक उतारना चाहिये जब तक उत्कृष्ट बन्धककाल मात्र सब समय जघन्य योगस्थानको नहीं प्राप्त हो जाते। पुन इस प्रकार उतरकर स्थित हुआ जीव, तथा उसके योग्य उत्कृष्ट योगसे उत्कृष्ट बन्धककाल तक आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न होकर कदली घात करके परभविक आयुको जघन्य योग और उत्कृष्ट बन्धककाल द्वारा बांधकर बन्धककालके अन्तिम समयमें स्थित हुआ अन्य एक जीव, ये दोनों सदृश हैं। पुन इस जीवके द्रव्यके साथ जघन्य योगस्थान सम्बन्धी प्रक्षेपक भागहारको परभविक उत्कृष्ट आयुके बन्धककालसे गुणा करनेपर जो प्राप्त हो उतने सकल प्रक्षेपोंसे रहित विकृति गोपुच्छाओंमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र द्रव्यको

---

१ प्रतिषु 'अण्णेण' इति पाठ। २ अ-आ-काप्रतिषु 'समय', ताप्रतौ 'समय (या)' इति पाठ।

समाणजोगपक्खेवपाओग्गद्धाहि णिरयाउअं पुव्विल्लसयलपडिणिविद्धसयलपक्खेवेहिंतो परिहीणं बंधिय णेरइएसुप्पज्जिय बिदियसमयणेरइयदव्वं च सरिसं होदि। पुणो इमं मोत्तूण बिदियसमयणेरइयं घेत्तूण एग-दोपरमाणुआदिकमेण परिहीणं कादूण अणुक्कस्सट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि जाव एगसगल-विगलपक्खेवो परिहीणो त्ति। दिवड्ढगुणहाणिं विरलेदूण सगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे एत्थ एगरूवधरिदं मोत्तूण बहुभागो विगलपक्खेवो होदि। एरिसेसु दिवड्ढगुणहाणिमेत्तविगलपक्खेवेसु परिहीणेसु रूवूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तसगलपक्खेवा परिहायंति। एदेसु सगलपक्खेवेसु जत्तिया विगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ताणि चेव जोगट्ठाणाणि बंधगद्धाए एगो समओ हेट्ठा ओदारेदव्वो। एवं ताव परिहाणी कादव्वा जाव णेरइयबिदियगोवुच्छाए जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता परिहीणा त्ति। पुणो तत्थ सगलपक्खेवाणयणं उच्चदे। तं जहा— दिवड्ढगुणहाणिं विरलेऊण सयलपक्खेवं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमणिसेगो पावदि। पुणो पढमणिसेगादो बिदियणिसेगो वि विसेसहीणो होदि त्ति एदं विरलणं विसेसाहियं विरलेऊण सयलपक्खेवं समखंडं करिय दिण्णे बिदियगोवुच्छा रूवं पडि पावदि। एदेण पमाणेण सव्वरूवधरिदेसु अवणिय

बन्धककालसे पूर्वोक्त प्रकृतिप्रतिबद्ध सकल प्रक्षेपोंसे हीन नारक आयुको बांधकर नारकियोंमें उत्पन्न होकर द्वितीय समयवर्ती नारकीका द्रव्य ये दोनों समान हैं। पुनः इसको छोड़कर और द्वितीय समयवर्ती नारकीको ग्रहण करके एक दो परमाणु आदिके क्रमसे हीन करके सकल और विकल प्रक्षेपके हीन होने तक अनुत्कृष्ट स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये। डेढ़ गुणहानिका विरलन कर सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर यहां एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको छोड़कर बहुभाग विकलप्रक्षेप होता है। ऐसे डेढ़ गुणहानि प्रमाण विकल प्रक्षेपोंके हीन होनेपर एक कम डेढ़ गुणहानि मात्र सकल प्रक्षेप हीन होते हैं। इन सकल प्रक्षेपोंमें जितने विकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र ही योगस्थान तथा बन्धककालमें एक समय नीचे उतारना चाहिये। इस प्रकार नारक द्वितीय गोपुच्छामें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र हीन होने तक हानि करनी चाहिये।

अब यहांपर सकल प्रक्षेपोंके लानेकी विधि कहते हैं। यथा— डेढ़ गुणहानिका विरलन कर सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एकके प्रति प्रथम निषेक प्राप्त होता है। पुनः प्रथम निषेकसे चूंकि द्वितीय निषेक भी विशेष हीन है अतः इस विरलनसे विशेष अधिकका विरलन करके सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति द्वितीय गोपुच्छ प्राप्त होता है। इस प्रमाणसे सब विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त

१ ताप्रतौ 'दोण्णमणेग-' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'परिहीणो' इति पाठः।

पढमसमए परभवियाउअबंधेण विणा ठिदो च सरिसा ।

एदमेत्थेव ठविय पुणो पगडिसरूवेण गलिददव्वभागहारं विरलिय सयलपक्खेवं समखंडं करिय दादूण एत्थ एगरूवधरिदपमाणेण[1] उवरिमविरलणाए सव्वधरिदेसु अवणिय पुध ट्ठविय त सगलपक्खेवे कस्सामो । तं जहा — हेट्ठिमविरलणमेत्ताणं जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्ताण किं लभामो त्ति पमाणेण तप्पाओग्गबंधगद्धागुणिदजोगट्ठाणपक्खेवभागहारे भागे हिदे लद्धमेत्ता पगडिसरूवेण णट्ठदव्वम्मि सगल पक्खेवा होंति । एदे पुध ट्ठविय पुणो दिवड्ढगुणहाणिं विरलिय सयलपक्खेव समखंडं करिय दादूण एत्थ एगरूवधरिदपमाणेण उवरिमविरलणसव्वरूवधरिदेसु अवणिय पुध ट्ठविय सगलपक्खेवे कस्सामो — हेट्ठिमविरलणमेत्ताण जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्ताण किं लभामो त्ति पमाणेण तप्पाओग्गबंधगद्धागुणिदजोगट्ठाणपक्खेवभागहारे ओवट्टिदे लद्धमेत्ता णेरइयपढमगोवुच्छाए सगलपक्खेवा होंति । पुणो एदेहि सगलपक्खेवेहि जोगोलंबणकरणवसेण[2] ऊण कदलीघादहेट्ठिमसमए[3] ट्ठिदतिरिक्खदव्व एदेण

कदलीघातके प्रथम समयमें परभविक आयुबन्धके विना स्थित हुआ अन्य एक जीव, ये दोनों समान हैं ।

इसको यहां ही स्थापित कर फिर प्रकृति स्वरूपके गले हुए द्रव्यके भागहारका विरलन कर तथा सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देकर फिर इसमेंसे एक अंकके प्रति प्राप्त प्रमाण रूपसे उपरिम विरलनके सब विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त राशिमेंसे कम करके पृथक् स्थापित कर उसके सकल प्रक्षेप करते हैं । यथा— अधस्तन विरलन मात्रोंका यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो उपरिम विरलन मात्रोंका क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाण राशिका उसके योग्य बन्धककालसे गुणित योगस्थान सम्बन्धी प्रक्षेपभागहारमें भाग देनेपर जो प्राप्त हो उतने प्रकृति रूपसे नष्ट हुए द्रव्यमें सकल प्रक्षेप होते हैं । इनको पृथक् स्थापित कर पश्चात् डेढ़ गुणहानिका विरलन कर सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देकर इसमें एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त प्रमाण रूपसे उपरिम विरलनके सब अंकोंके प्रति प्राप्त राशिमेंसे कम कर पृथक् स्थापित कर उन्हें सकल प्रक्षेप रूपसे करते हैं— अधस्तन विरलन मात्रोंका यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो उपरिम विरलन मात्रोंका क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार तत्प्रायोग्य बन्धककालसे गुणित योगस्थान प्रक्षेपभागहारमें प्रमाण राशिका भाग देनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र नारक प्रथम गोपुच्छमें सकल प्रक्षेप होते हैं । पुन योग और अवलम्बन करणके द्वारा इन सकल प्रक्षेपोंसे हीन कदलीघातके अधस्तन समयमें स्थित तिर्यंच द्रव्य तथा इसके समान योग-

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ आ का ताप्रतिषु 'धरिदसमाणेण' इति पाठ । २ अ-आ काप्रतिषु 'जोगोवलंबण' इति पाठः । ३ प्रतिषु 'ऊणकदली' इति पाठ ।

गुणहाणीए मज्झं सादिरेयं होदि। तत्थ बहुभागा विगलपक्खेवो होदि[1]। भागहारमेत्त विगलपक्खेवेसु परिहीणेसु रूवूणभागहारमेत्ता सयलपक्खेवा परिहायंति। एवं ताव परिहाणी कादव्वा जाव जत्तिया तदियगोवुच्छाए सयलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता परिहीणा[2] त्ति। एवं हाइदूण तदियसमए हिदो च परिहाणीए विणा चउत्थसमए हिदणेरइओ च दो वि सरिसा। एत्थ सगलपक्खेवबंधणविहाणं जोगट्ठाणद्धाणाणयणविहाणं च जाणिदूण वत्तव्वं। एवं णेदव्वं जाव दीवसिहापढमसमओ त्ति।

संपहि एगसगलपक्खेवादो दीवसिहाए पविट्ठदव्वाणयणं उच्चदे। तं जहा— दिवड्ढगुणहाणिगुणिदअण्णोण्णब्भत्थरासिं[3] विरलेऊण सयलपक्खेवं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि चरिमणिसेगपमाणं पावदि। पुणो एदं भागहारं दीवसिहाए ओवट्टिय विरलेऊण सयलपक्खेवं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दीवसिहामेत्तचरिमणिसेगा पावेंति। पुणो हेट्ठा दीवसिहागुणिदरूवाहियगुणहाणिं रूवूणदीवसिहासंकलणाए ओवट्टिय विरलेदूण उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रूवूणदीवसिहासंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा रूवं पडि

बहुभाग विकल प्रक्षेप होता है। भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंके हीन होनेपर एक कम भागहार मात्र सकल प्रक्षेप हीन होते हैं। इस प्रकार तब तक हानि करना चाहिये जब तक कि जितने मात्र तृतीय गोपुच्छमें सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र हीन नहीं हो जाते। इस प्रकार हीन होकर तृतीय समयमें स्थित हुआ जीव तथा हानिके बिना चतुर्थ समयमें स्थित हुआ नारकी जीव ये दोनों ही सदृश हैं। यहां सकल प्रक्षेपके बन्धनविधान तथा योगस्थानअध्वानके लानेके विधानको जानकर कहना चाहिये। इस प्रकार दीपशिखाके प्रथम समय तक ले जाना चाहिये।

अब एक सकल प्रक्षेपसे दीपशिखामें प्रविष्ट द्रव्यके लानेकी विधि कहते हैं। यथा— डेढ़ गुणहानिसे गुणित अन्योन्याभ्यस्त राशिका विरलन कर सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति चरम निषेकका प्रमाण प्राप्त होता है। पश्चात् इस भागहारको दीपशिखासे अपवर्तित कर विरलन करके सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति दीपशिखा प्रमाण चरम निषेक प्राप्त होते हैं। पश्चात् नीचे दीपशिखासे गुणित एक अधिक गुणहानिको एक कम दीपशिखासंकलनासे अपवर्तित करके विरलित कर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति एक कम दीपशिखासंकलना प्रमाण गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं। उनको उपरिम विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त राशियोंमें

१ अप्रतौ 'त्थविणोऽण' ताप्रतौ तु 'विगलपक्खेवा होदि (हाणि)' इति पाठः। २ अ-आ-का-प्रतिषु 'परिहीणो' इति पाठः। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'गुणि' इति पाठः।

सगलपक्खेवपमाणेण कस्सामो। तं जहा— हेट्ठिमविरलणमेत्ताणं जदि एगो सयलपक्खेवो लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्ताण किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेत्ता सयलपक्खेवा होंति।

एत्तियाणं सयलपक्खेवाण[1] परिहाणिणिमित्त जोगट्ठाणपरिहाणी केत्तिया होदि त्ति उत्ते उच्चदे— रूवूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तसयलपक्खेवाणं जदि दिवड्ढगुणहाणिमेत्तजोगट्ठाण-परिहाणी लब्भदि तो बिदियगोवुच्छसयलपक्खेवाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेत्ताणि जोगट्ठाणाणि परिहायंति[2]। पुणो एत्तियजोगट्ठाणाणि पुव्विल्लजोगट्ठाणादो परिहाइदूण बंधिय णेरइयविदियसमए ट्ठिदो[3] च पुव्विल्लजोगट्ठाण-बंधगद्धाहि णेरइयतदियसमए ट्ठिदो च दो वि सरिसा[4]।

पुणो पुव्विल्ल मोत्तूण इमं घेत्तूण एग-दोपरमाणुआदिकमेण ऊणं करिय अणुक्कस्स-ट्ठाणाणि एगविगलपक्खेवमेत्ताणि उप्पादेदव्वाणि। एत्थ विगलपक्खेवभागहारो दिवड्ढ-

---

द्रव्यमेंसे अपनयन कर उसे सकल प्रक्षेपके प्रमाणसे करते हैं। यथा— अधस्तन विरलन मात्रोंका यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो उपरिम विरलन मात्रोंका क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाण राशिसे फलगुणित इच्छाका अपवर्तन करनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र सकल प्रक्षेप होते हैं।

इतने मात्र सकल प्रक्षेपोंकी हानिके निमित्त योगस्थानपरिहानि कितनी होती है, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं— एक कम डेढ़ गुणहानि प्रमाण सकल प्रक्षेपोंकी यदि डेढ गुणहानि मात्र योगस्थानपरिहानि प्राप्त होती है तो द्वितीय गोपुच्छ सम्बन्धी सकल प्रक्षेपोंके निमित्त कितनी हानि प्राप्त होगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर जो प्राप्त हो उतने मात्र योग स्थान हीन होते हैं। पुन. इतने योगस्थान पूर्वोक्त योगस्थानमेंसे हीन होकर बांधकर नारक द्वितीय समयमें स्थित हुआ जीव तथा पूर्वोक्त योगस्थान बन्धक-कालके द्वारा नारक तृतीय समयमें स्थित हुआ जीव, ये दोनों ही सदृश हैं।

पुन पूर्वोक्त जीवको छोड़कर और इसको ग्रहण कर एक-दो परमाणु आदिके क्रमसे हीन करके एक विकल प्रक्षेप प्रमाण अनुत्कृष्ट स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये। यहां विकल प्रक्षेपका भागहार डेढ़ गुणहानिके अर्ध भागसे कुछ अधिक है। उसमें

---

१ अप्रतौ 'सयलपक्खेवाण' इत्यग्रेतनपदपर्यन्तोऽय पाठस्त्रुटितोऽस्ति। २ आप्रतावतोऽग्रे 'परि-हाणिणिमित्त जोगट्ठाणपरिहाणी केत्तिया होदि त्ति उत्ते उच्चदे— रूवूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तजोगट्ठाण लब्भदि त्ति।' इत्यधिकः पाठ। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'ठिदो' इति पाठ। ४ अ-आ काप्रतिषु 'सरिसो' इति पाठ।

गुणहाणीए अद्धं सादिरेयं होदि । तत्थ बहुभागा विगलपक्खेवो होदि[1] । भागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु परिहीणेसु रूवूणभागहारमेत्ता सयलपक्खेवा परिहायंति । एवं ताव परिहाणी कादव्वा जाव अस्थि तदियगोवुच्छाए सयलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता परिहीणा त्ति । एवं हाइदूण तदियसमये ट्ठिदो च परिहाणीए विणा चउत्थसमए ट्ठिदणेरइओ च दो वि सरिसा । एत्थ सगलपक्खेवबंधणविहाणं जोगट्ठाणद्धाणजाणणविहाणं च जाणिदूण वत्तव्वं । एवं णेदव्वं जाव दीवसिहापढमसमओ त्ति ।

संपहि एगसयलपक्खेवादो दीवसिहाए पढिददव्वाणयणं उच्चदे । तं जहा— दिवड्ढगुणहाणिगुणिदअण्णोण्णब्भत्थरासिं[2] विरलेदूण सयलपक्खेवं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि चरिमणिसेगपमाणं पावदि । पुणो एदं भागहारं दीवसिहाए ओवट्टिय विरलेदूण सयलपक्खेवं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दीवसिहामेत्तचरिमणिसेगा पावेंति । पुणो हेट्ठा दीवसिहागुणिदरूवाहियगुणहाणिं रूवूणदीवसिहासंकलणाए ओवट्टिय विरलेदूण उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रूवूणदीवसिहासंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा रूवं पडि

बहुभाग विकल प्रक्षेप होता है। भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंके हीन होनेपर एक कम भागहार मात्र सकल प्रक्षेप हीन होते हैं। इस प्रकार तब तक हानि करना चाहिये जब तक कि जितने मात्र तृतीय गोपुच्छमें सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र हीन नहीं हो जाते। इस प्रकार हीन होकर तृतीय समयमें स्थित हुआ जीव तथा हानिके बिना चतुर्थ समयमें स्थित हुआ नारकी जीव ये दोनों ही सदृश हैं। यहां सकल प्रक्षेपके बन्धनविधान तथा योगस्थानअध्वानके जाननेके विधानको जानकर कहना चाहिये। इस प्रकार दीपशिखाके प्रथम समय तक ले जाना चाहिये।

अब एक सकल प्रक्षेपसे दीपशिखामें पठित द्रव्यके लानेकी विधि कहते हैं। यथा— डेढ़ गुणहानिसे गुणित अन्योन्याभ्यस्त राशिका विरलन कर सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति चरम निषेकका प्रमाण प्राप्त होता है। पश्चात् इस भागहारको दीपशिखासे अपवर्तित कर विरलन करके सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति दीपशिखा प्रमाण चरम निषेक प्राप्त होते हैं। पश्चात् नीचे दीपशिखासे गुणित एक अधिक गुणहानिको एक कम दीपशिखासंकलनासे अपवर्तित करके विरलित कर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति एक कम दीपशिखासंकलना प्रमाण गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं। उनको उपरिम विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त राशियोंमें

---

१ अप्रतौ 'त्थविसेसेण' पाठः। ताप्रतौ तु 'विगलपक्खेवा होदि (होंति)' इति पाठः। २ अ-आ-का-प्रतिषु 'परिहीणे' इति पाठः। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'पदि' इति पाठः।

पावेंति । ते उवरिमविरलणरूवधरिदेसु पक्खिविय समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाण-माणयणं उच्चदे । तं जहा— रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धं उवरिमविरलणाए अवणिदे एत्थतणविगलपक्खेवभागहारो आगच्छदि । एदं विरलेदूण सगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि विगलपक्खेवपमाणं होदि । एत्थ एग-दोपरमाणुआदिकमेण एगविगलपक्खेवमेत्तपदेसेसु परिहीणेसु तत्तियमेत्ताणि चेव अणुक्कस्सट्ठाणाणि उप्पज्जंति । एवं परिहाइदूण ट्ठिदो च अण्णेगो रूवूणुक्कस्सबंधगद्धाए पुव्वणिरुद्धजोगेण बंधिय पुणो एगसमय पुव्वणिरुद्धजोगादो पक्खेऊणजोगट्ठाणेण बंधिय णेरइएसुप्पज्जिय कमेण दीवसिहापढमसमए ट्ठिदो च सरिसो । पुणो पुव्विल्ल मोत्तूण इमं घेत्तूण एग दोपरमाणुआदिकमेण ऊणं करिय एगविगलपक्खेवमेत्तअणुक्कस्सट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि । एवमुप्पादिय ट्ठिदो च अण्णेगो सव्वसमएसु णिरुद्धजोगेहि चेव बंधिय एगसमयं दुपक्खेऊणजोगट्ठाणेण बंधिय णेरइएसुप्पज्जिय दीवसिहापढमसमए ट्ठिदो च सरिसो । एव परिहाणिं कादूण णेदव्वं जाव एगसमएण परिणदजोगट्ठाणपक्खेवभागहारम्मि जेत्तिया विगलपक्खेवा अत्थि तेत्तियमेत्ता परिहीणा त्ति । तेसिं च

मिलाकर समीकरण करनेपर हीन रूपोंके लानेकी विधि कहते हैं । यथा— एक अधिक अधस्तन विरलन राशि मात्र स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाण राशिसे फलगुणित इच्छा राशिको अपवर्तित करनेपर जो प्राप्त हो उसे उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर यहांके विकल प्रक्षेपका भागहार आता है । इसका विरलन करके सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति विकल प्रक्षेपका प्रमाण होता है । यहा एक-दो परमाणु आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप मात्र प्रदेशोंके हीन होनेपर उतने मात्र ही अनुत्कृष्ट स्थान उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार हानि करके स्थित हुआ तथा एक कम उत्कृष्ट बन्धककालमें पूर्व निरुद्ध योगसे आयु बांधकर पुन. एक समयमें पूर्व निरुद्ध योगसे प्रक्षेप कम योगस्थानसे आयु बांधकर नारकियोंमें उत्पन्न होकर क्रमसे दीपशिखाके प्रथम समयमें स्थित हुआ एक अन्य जीव, ये दोनों सदृश हैं । पश्चात् पूर्वोक्त जीवको छोड़कर और इसको ग्रहण कर एक-दो परमाणु आदिके क्रमसे हीन करके एक विकल प्रक्षेप प्रमाण अनुत्कृष्ट स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये । इस प्रकार उत्पन्न कराकर स्थित हुआ जीव तथा सब समयोंमें निरुद्ध योगोंसे ही आयु बांधकर एक समयमें दो प्रक्षेपोंसे हीन योगस्थानसे आयु बांधकर नारकियोंमें उत्पन्न होकर दीपशिखाके प्रथम समयमें स्थित हुआ एक अन्य जीव, ये दोनों सदृश हैं । इस प्रकार हानि करके एक समयसे परिणत योगस्थान प्रक्षेपभागहारमें जितने विकल प्रक्षेप हैं उतने मात्रकी हानि होने तक ले जाना चाहिये । उनकी

परिहाणी सव्वे समए अस्सिदूण कायव्वा, एगसमयं तप्पाओग्गजोगट्ठाणपक्खेवभागहार मेत्तेयरवे समवायाभावादो । एवं परिहाइदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो समऊणबंधगद्धाए पुव्व विरुद्धजोगेहि आउअं बंधिय णेरइएसु उप्पज्जिय दीवसिहापढमसमयट्ठिदो च, सरिसा । एवं कमेण बंधगद्धासमयाणं परिहाणी कायव्वा जाव जहण्णबंधगद्धा अवट्ठिदा त्ति ।

एत्थ सव्वपच्छिमवियप्पो वुच्चदे । तं जहा— जहण्णबंधगद्धाए तप्पाओग्गजोगेण च णिरयाउअं बंधिय णेरइएसु उप्पज्जिय दीवसिहापढमसमए ट्ठिदो त्ति ओदारेदव्वं । पुणो एग-दोपरमाणुपरिहाणिआदिकमेण एगविगलपक्खेवमेत्तमणुक्कस्सट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि । एवं परिहाइदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो समऊणजहण्णबंधगद्धाए तप्पाओग्गजोगेण बंधिय पुणो एगसमयं पक्खेवुत्तरविरुद्धजोगेण बंधिय दीवसिहापढमसमए ट्ठिदो च, सरिसा । एवं एक्क-दो-तिण्णिजोगट्ठाणाणि सो विरुद्धसमए ओदारेदव्वो जाव असंखेज्जाणि जोगट्ठाणाणि ओदिण्णो त्ति । पुणो तं तत्थेव ट्ठविय एदेणेव कमेण विदियसमओ असंखेज्जाणि जोग-ट्ठाणाणि ओदारेदव्वो । एवमेदेण कमेण सव्वे समया तप्पाओग्गअसंखेज्जाणि [जोगट्ठाणाणि]

हानि सब समयोंका आश्रय करके करना चाहिये, क्योंकि एक समयका ही आश्रय कर उसके योग्य योगस्थान प्रक्षेपभागहार प्रमाण उतरनेकी सम्भावना नहीं है । इस प्रकार हानि करके स्थित हुआ जीव तथा एक समय कम बन्धककालमें पूर्व विरुद्ध योगोंसे आयुको बांधकर नारकियोंमें उत्पन्न होकर दीपशिखाके प्रथम समयमें स्थित हुआ एक अन्य जीव ये दोनों सदृश हैं । इस प्रकार जघन्य बन्धककालके अवस्थित होने तक क्रमसे बन्धककालके समयोंकी हानि करना चाहिये ।

यहां सबसे अन्तिम विकल्प कहते हैं । यथा— जघन्य बन्धककाल और उसके योग्य योगसे नारकायुको बांधकर नारकियोंमें उत्पन्न हो दीपशिखाके प्रथम समयमें स्थित है, ऐसा समझकर उतारना चाहिये । पश्चात् एक दो परमाणुओंकी हानि आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप प्रमाण अनुत्कृष्ट स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये । इस प्रकार हानि करके स्थित हुआ जीव तथा एक समय कम जघन्य बन्धककालमें उसके योग्य योगसे आयुको बांधकर पुनः एक समयमें प्रक्षेप कम विरुद्ध योगसे आयुको बांधकर दीपशिखाके प्रथम समयमें स्थित हुआ एक अन्य जीव ये दोनों समान हैं । इस प्रकार एक-दो-तीन योगस्थानसे लेकर विरुद्ध समयमें उसे उतारना चाहिये जब तक कि असंख्यात योगस्थान न उतर आवें । पश्चात् उसको वहां ही स्थापित कर इसी क्रमसे द्वितीय समयको असंख्यात योगस्थान होने तक उतारना चाहिये । इसी प्रकार इस क्रमसे सब समयोंका उनके योग्य असंख्यात

---

१ प्रतिषु 'एगसमयपक्खेवुत्तर-' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'पविसिय' । अ-आप्रत्योः 'इवेर ', काप्रतौ 'हव' इति पाठः ।

ओदारेदव्वा। एवमोदारिदे जहण्णजोगेण जहण्णबंधगद्धाए च णिरयाउअं बंधिय णेरइए-सुप्पज्जिय दीवसिहापढमसमए ट्ठिदस्स अणुक्कस्सजहण्णपदेसट्ठाणं होदि जावए दूर ताव ओदिण्णो[1] त्ति भणिदं होदि। एत्थ अणुक्कस्सजहण्णपदेसट्ठाणं उक्कस्सपदेसट्ठाणम्मि सोहिदे सुद्धसेसम्मि जेत्तिया परमाणू अत्थि तेत्तियमेत्ताणि अणुक्कस्सपदेसट्ठाणाणि। ते च सव्वे एग फद्दयं, णिरंतरुप्पत्तीदो। एत्थ जीवसमुदाहारो णाणावरणस्सेव वत्तव्वो। एवमुक्क-स्साणुक्कस्ससामित्तं सगंतोखित्तसखाट्ठाणजीवसमुदाहारं[2] समत्तं।

सामित्तेण जहण्णपदे णाणावरणीयवेयणा दव्वदो जहण्णिया कस्स ? ॥ ४८ ॥

एदमासंकासुत्तं। एत्थ एगसंजोगादिकमेण पण्णारस आसंकियवियप्पा उप्पादेदव्वा। उक्कस्सपदपडिसेहट्ठं जहण्णपदग्गहणं। णाणावरणीयणिद्देसो सेसकम्मपडिसेहफलो। दव्व-णिद्देसो खेत्तादिपडिसेहफलो।

जो जीवो सुहुमणिगोदजीवेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागेण ऊणियं कम्मट्ठिदिमच्छिदो ॥ ४९ ॥

योगस्थान होने तक उतारना चाहिये। इस प्रकार उतारनेपर जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे नारकायुको बांधकर नारकियोंमें उत्पन्न हो दीपशिखाके प्रथम समयमें स्थित जीवके अनुत्कृष्ट जघन्य प्रदेशस्थान होता है। यह स्थान जितने दूर जाकर प्राप्त होता है उतना उतरा, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहां उत्कृष्ट प्रदेशस्थानमेंसे अनुत्कृष्ट जघन्य प्रदेशस्थानको घटानेपर जो शेष रहे उसमें जितने परमाणु हैं उतने मात्र अनुत्कृष्ट प्रदेशस्थान हैं। ये सब एक स्पर्द्धक हैं, क्योंकि वे निरन्तरक्रमसे उत्पन्न होते हैं। यहांपर जीवसमुदाहार ज्ञानावरणके समान कहना चाहिये। इस प्रकार अपने भीतर संख्यास्थान और जीवसमुदाहारको रखनेवाला उत्कृष्टानुत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें द्रव्यकी अपेक्षा ज्ञानावरणकी जघन्य वेदना किसके होती है ? ॥ ४८ ॥

यह आशंकासूत्र है। यहां एक संयोग आदिके क्रमसे पन्द्रह आशंकाविकल्पोंको उत्पन्न कराना चाहिये। उत्कृष्ट पदका प्रतिषेध करनेके लिये जघन्य पदका ग्रहण किया है। 'ज्ञानावरणीय' इस पदके निर्देशका फल शेष कर्मोंका प्रतिषेध करना है। 'द्रव्य' इस पदके निर्देशका फल क्षेत्रादिका प्रतिषेध करना है।

जो जीव सूक्ष्म निगोदजीवोंमें पल्योपमका असंख्यातवां भाग कम कर्मस्थिति प्रमाण काल तक रहा है ॥ ४९ ॥

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'जावए दूर ताव पविण्णो', ताप्रतौ 'जाव पतवूरं ताव ए (ओ) दिण्णो' इति पाठः।

२ अ-आप्रत्योः 'सगंतोखेत्तसंखाट्ठाण', ताप्रतौ सगंतोवखेत्तसखाए ट्ठाण-' इति पाठः।

जो एवंलक्खणविसिट्ठो सो जहण्णदव्वसामी होदि। पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणियं कम्मट्ठिदिं णिगोदजीवेसु अच्छिदो त्ति एदं तस्स एगं विसेसणं। किमट्ठमेदं विसेसणं कीरदे? अण्णजीवेहि परिणममाणजोगादो एदेसिं जोगस्स असंखेज्जगुणहीणत्तादो। असंखेज्जगुणहीणजोगेण किमट्ठं हिंडाविज्जदे? संगहणट्ठं। पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणिया कम्मट्ठिदी किमट्ठं कदा? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालं एइंदिएसु संचिदकम्मपदेसाणं गुणसेडीए गालणट्ठं। जदि एवं तो सव्विस्से कम्मट्ठिदीए कम्मपदेसाणं गुणसेडिणिज्जरा किण्ण कीरदे? ण, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तसम्मत्तकंडएहि परिणदसम्मजीवस्स णियमेण णिव्वाणगमणुवलंभादो। पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तसम्मत्त-संजमासंजमकंडएहि परिणदजीवो णियमेण णिव्वाणमुवणमदि त्ति कुदो णव्वदे?

जो जीव इस प्रकारके (उपर्युक्त सूत्रमें कहे गये) लक्षणसे युक्त है वह जघन्य द्रव्यका स्वामी होता है। पल्योपमका असंख्यातवां भाग कम कर्मस्थिति प्रमाण काल तक निगोदजीवोंमें रहा यह उसका एक विशेषण है।

शंका—यह विशेषण किसलिये किया जाता है?

समाधान—चूंकि अन्य जीवों द्वारा परिणमन किये जानेवाले योगकी अपेक्षा इनका योग असंख्यातगुणा हीन है अतः उक्त विशेषण किया है।

शंका—असंख्यातगुणे हीन योगके साथ किसलिये घुमाया जाता है?

समाधान—संग्रह करनेके लिये असंख्यातगुणे हीन योगके साथ घुमाया है।

शंका—पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन कर्मस्थिति किसलिये की गई है?

समाधान—पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण काल तक एकेन्द्रियोंमें संचित हुए कर्मप्रदेशोंको गुणश्रेणि रूपसे गलानेके लिये उक्त कर्मस्थिति की गई है।

शंका—यदि ऐसा है तो सब कर्मस्थितिके कर्मप्रदेशोंकी गुणश्रेणिनिर्जरा क्यों नहीं की जाती है?

समाधान—नहीं, क्योंकि जो जीव पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र सम्यक्त्वकाण्डकोंसे परिणत होते हैं उन सबका नियमसे निर्वाण गमन पाया जाता है।

शंका—पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र सम्यक्त्वकाण्डक और संयमासंयमकाण्डकोंसे परिणत हुआ जीव नियमसे निर्वाणको प्राप्त होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'णेदव्वदो कमेदी' इति पाठः।

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणियमिदि णिद्देसण्णहाणुववत्तीदो। सुहुमणिगोदेसु अच्छंतस्स आवासयपदुप्पायणट्ठं उत्तरसुत्ताणि भणदि—

तत्थ य संसरमाणस्स बहवा अपज्जत्तभवा थोवा पज्जत्त-भवा ॥ ५० ॥

एसो खविदकम्मंसिओ अपज्जत्तएसु खविद गुणिद-घोलमाणेहिंतो बहुवारमुप्पज्जदि, पज्जत्तएसु थोववारमुप्पज्जदि। कुदो? पज्जत्तजोगादो असंखेज्जगुणहीणेण अपज्जत्तजोगेण थोवाणं कम्मपदेसाणं संचयदंसणादो। खविदकम्मंसियपज्जत्तभवेहिंतो तस्सेव अपज्जत्तभवा बहुगा त्ति किण्ण उच्चदे? ण, विगलिंदियपज्जत्तट्ठिदीए संखेज्जवाससहस्स-सण्णहाणुववत्तीदो। तं जहा— बीइंदियअपज्जत्तएसु जदि जीवो णिरंतरं उप्पज्जदि तो उक्कस्सेण असीदिवारमुप्पज्जदि। तीइंदियअपज्जत्तएसु सट्ठिवारं, चदुरिंदियअपज्जत्तएसु चालीसवारं[1] पंचिंदियअपज्जत्तएसु चउवीसवारं[2] उप्पज्जदि |८०|६०|४०|२४|।

समाधान— क्योंकि, इसके बिना 'पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन' यह निर्देश घटित नहीं होता। अत एव इसीसे वह जाना जाता है।

सूक्ष्म निगोदजीवोंमें रहनेवाले उक्त जीवके आवासोंके प्ररूपणार्थ उत्तर सूत्रोंको कहते हैं—

वहां सूक्ष्म निगोदजीवोंमें परिभ्रमण करनेवाले उस जीवके अपर्याप्त भव बहुत होते हैं और पर्याप्त भव थोड़े होते हैं ॥ ५० ॥

यह क्षपितकर्मांशिक जीव अपर्याप्तकोंमें क्षपित गुणित घोलमान कर्मांशिक जीवोंकी अपेक्षा बहुत बार उत्पन्न होता है, और पर्याप्तकोंमें थोड़े बार उत्पन्न होता है, क्योंकि, पर्याप्त योगकी अपेक्षा असंख्यातगुणे हीन अपर्याप्त योग द्वारा स्तोक कर्मप्रदेशोंका संचय देखा जाता है।

शंका— क्षपितकर्मांशिकके पर्याप्त भवोंकी अपेक्षा उसीके अपर्याप्त भव बहुत हैं, ऐसा क्यों नहीं कहते?

समाधान— नहीं, क्योंकि, विकलेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी स्थिति संख्यात हजार वर्ष प्रमाण अन्यथा बन नहीं सकती, इसलिये क्षपितकर्मांशिकके पर्याप्त भवोंकी अपेक्षा उसीके अपर्याप्त भव बहुत हैं, ऐसा नहीं कहा। आगे इसी बातको स्पष्ट करके बतलाते हैं— यदि जीव द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें निरन्तर उत्पन्न होता है तो उत्कृष्ट रूपसे अस्सी (८०) बार उत्पन्न होता है। त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें साठ (६०) बार, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें चालीस (४०) बार और पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें चौबीस

१ ष.खं पु ४ पृ. ३९९. २ म सपु ४ पृ ४०१.

पज्जत्ताणमाउअट्ठिदी पुण जहाकमेण बारस वासाणि, एगूणवण्णरादिंदियाणि, छम्मासा, तेत्तीससागरोवमाणि। तत्थ जदि बीइंदियपज्जत्ताणमुवरि उप्पज्जणवारा होंति तो बीइंदियभवट्ठिदी दसगुणछण्णउदिवाससमेत्ता चेव होदि [९६०], तीइंदियाणमट्ठाणउदि मासा [९८], चउरिंदियाणं वीसवासाणि [२०]। ण च एवं, संखेज्जाणि वाससहस्साणि त्ति कालणिओगद्दारे एदेसिं भवट्ठिदिपमाणपरूवणादो। तदो णव्वदे जधा अपज्जत्तएसु उप्पज्जमाणवारेहिंतो विगलिंदियपज्जत्तएसु उप्पज्जमाणवारा बहुगा त्ति, अण्णहा संखेज्ज वाससहस्समेत्तभवट्ठिदीए अणुववत्तीदो। जधा विगलिंदिएसु उप्पज्जमाणवारा बहुआ तधा सुहुमेइंदियजीवेसु वि सगअपज्जत्तएसु उप्पज्जमाणवारेहिंतो पज्जत्तएसु उप्पज्जमाणवारा बहुआ चेव, जीवत्तं पडि विसेसाभावादो तिरिक्खत्तं पडि विसेसाभावादो वा। तम्हा सगपज्जत्तभवेहिंतो सगअपज्जत्तभवा बहुगा त्ति एसो अत्थो ण वत्तव्वो। एवं भवावासो सुहुमेइंदिएसु परूविदो।

---

(२४) बार उत्पन्न होता है। किन्तु उक्त पर्याप्तकोंकी आयुस्थिति यथाक्रमसे बारह वर्ष उनचास रात्रिदिवस छह मास और तेतीस सागरोपम प्रमाण है। उसमें यदि द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके उत्पन्न होनेके बार अस्सी हों तो द्वीन्द्रियोंकी भवस्थिति दसगुणे छ्यानबे अर्थात् नौ सौ साठ (वर्ष १२ × ८० = ९६०) वर्ष प्रमाण ही होती है। त्रीन्द्रियोंकी भवस्थिति अट्ठानबे (दिन ४९ × ६० = ९८) मास होती है और चतुरिन्द्रियोंकी बीस वर्ष (मास ६ × ४० = २० वर्ष) होती है। परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि कालानुयोगद्वारमें उक्त जीवोंकी उत्कृष्ट भवस्थिति संख्यात हजार वर्ष प्रमाण कही है। इससे जाना जाता है कि अपर्याप्तोंमें उत्पन्न होनेकी वारशलाकाओंसे विकलेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें उत्पन्न होनेकी वारशलाकायें बहुत हैं, अन्यथा उनकी संख्यात हजार वर्ष प्रमाण भवस्थिति नहीं बन सकती। और जिस प्रकार विकलेन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेकी वारशलाकायें बहुत हैं उसी प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंमें भी अपने अपर्याप्तकोंमें उत्पन्न होनेकी वारशलाकाओंसे पर्याप्तकोंमें उत्पन्न होनेकी वारशलाकायें बहुत ही हैं क्योंकि विकलत्रयोंसे एकेन्द्रियोंमें जीवत्वकी अपेक्षा अथवा तिर्यक्त्वकी अपेक्षा कोई विशेषता नहीं है। अर्थात् सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव जीवत्वकी अपेक्षा और तिर्यक्त्वकी अपेक्षा उक्त द्वीन्द्रियादिकोंके समान हैं। इस कारण अपने पर्याप्त भवोंसे अपने अपर्याप्त भव बहुत हैं ऐसा अर्थ नहीं करना चाहिये।

इस प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें भवावासकी प्ररूपणा की।

---

१ काला. ११. २ प्रतिषु 'उप्पज्जमाण' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'उप्पज्जमाण' इति पाठः।

दीहाओ अपज्जत्तद्धाओ रहस्साओ पज्जत्तद्धाओ ॥ ५१ ॥

खविद-गुणिद-घोलमाणअपज्जत्तद्धाहिंतो खविदकम्मंसियअपज्जत्तद्धा दीहाओ, तेसिं पज्जत्तद्धाहिंतो एदस्स पज्जत्तद्धाओ रहस्साओ त्ति घेत्तव्वं। किमट्ठमपज्जत्तएसु दीहाउएसु चेव उप्पाइज्जदे ? पज्जत्तजोगादो असंखेज्जगुणहीणेण अपज्जत्तजोगेण थोव-कम्मपदेसग्गहणट्ठं। तत्थ वि एयंताणुवड्ढिजोगकालो बहुगो, परिणामजोगादो एयंताणुवड्ढि-जोगस्स असंखेज्जगुणहीणत्तादो। सुहुमेइंदियपज्जत्ताणमाउअट्ठिदीदो तेसिं चेव अपज्जत्ताण-माउट्ठिदी बहुगा त्ति किण्ण उच्चदे ? ण, अपज्जत्ताणं आउट्ठिदीदो पज्जत्ताउअट्ठिदी बहुगा त्ति कालविहाणे उवदिट्ठत्तादो। एसो अद्धावासो परूविदो।

जदा जदा आउअं बंधदि तदा तदा तप्पाओग्गुक्कस्सजोगेण बंधदि ॥ ५२ ॥

किमट्ठमुक्कस्सजोगेण आउअं बज्झदे ? णाणावरणस्स आगच्छमाणसमयपबद्ध-

---

अपर्याप्तकाल बहुत और पर्याप्तकाल थोडा है ॥ ५१ ॥

क्षपित-गुणित-घोलमान अपर्याप्तके कालसे क्षपितकर्मांशिक अपर्याप्तका काल दीर्घ है और उनके पर्याप्तकालसे इसका पर्याप्तकाल थोड़ा है, ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिये।

शंका— दीर्घ आयुवाले अपर्याप्तकोंमें ही किसलिये उत्पन्न कराया जाता है ?

समाधान— पर्याप्त योगसे असंख्यातगुणे हीन अपर्याप्त योगके द्वारा स्तोक कर्मप्रदेशोंका ग्रहण करानेके लिये दीर्घ आयुवाले अपर्याप्तकोंमें ही उत्पन्न कराया है ?

वहां भी एकान्तानुवृद्धि योगका काल बहुत है, क्योंकि, परिणाम योगसे एकान्तानुवृद्धि योग असंख्यातगुणा हीन है।

शंका— सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी आयुस्थितिसे उन्हींके अपर्याप्तकोंकी आयुस्थिति बहुत है, ऐसा यहां क्यों नहीं कहते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, कालानुयोगद्वारमें अपर्याप्तकोंकी आयुस्थितिसे पर्याप्तकोंकी आयुस्थिति बहुत है, ऐसा कहा है।

यह अद्धावासकी प्ररूपणा की।

जब जब आयुको बांधता है तब तब उसके योग्य उत्कृष्ट योगसे बांधता है ॥५२॥

शंका—उत्कृष्ट योगसे आयुको किसलिये बांधता है ?

समाधान—ज्ञानावरणके आनेवाले समयप्रबद्ध सम्बन्धी परमाणुओंको स्तोक करनेके लिये आयु कर्मको उत्कृष्ट योगसे बांधता है।

परमाणूणं थोवत्तविहाणट्ठं । एत्थ उक्कस्ससामित्तम्मि उत्तट्ठं समरिय थोवत्तसाहणं[1] कायव्वं । एवमाउआवासो परूविदो ।

उवरिल्लीणं ठिदीणं णिसेयस्स जहण्णपदे हेट्ठिल्लीणं ठिदीणं णिसेयस्स उक्कस्सपदे ॥ ५३ ॥

खविद गुणिद-घोलमाणओकड्डणादो खविदकम्मंसियओकड्डणा बहुगा । तेसिं चेव उक्कड्डणादो एदस्स उक्कड्डणा थोवा । किमट्ठं बहुदव्वोकड्डणा कीरदे ? हेट्ठिमगोवुच्छाओ थूलाओ काऊण बहुदव्वविणासणट्ठं । अथवा, एदस्स सुत्तस्स अण्णहा अत्थो उच्चदे । तं जहा— बंधोकड्डणाहि हेट्ठिल्लीणं ठिदीणं णिसेयस्स उक्कस्सपदं उवरिल्लीणं[2] णिसेयस्स जहण्णपदं होदि त्ति घेत्तव्वं । भावत्थो— बंधोकड्डणाहि पदेसरचणं कुणमाणो सव्वजहण्णट्ठिदीए बहुअं देदि । तदो उवरिमट्ठिदीए विसेसहीणं देदि । एवं णेदव्वं जाव चरिमट्ठिदि त्ति । एसो एदस्स अत्थो । एदेण णिसेगावासो परूविदो ।

यहाँ उत्कृष्ट स्वामित्वमें कहे हुए अर्थका स्मरण कर स्तोकताको सिद्ध करना चाहिये । इस प्रकार आयुआवासकी प्ररूपणा की ।

उपरिम स्थितियोंके निषेकका जघन्य पद और अधस्तन स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद करता है ॥ ५३ ॥

क्षपित-गुणित घोलमानके अपकर्षणसे क्षपितकर्मांशिकका अपकर्षण बहुत है और उन्हींके उत्कर्षणसे इसका उत्कर्षण स्तोक है ।

शंका— बहुत द्रव्यका अपकर्षण किसलिये करता है ?

समाधान— अधस्तन गोपुच्छाओंको स्थूल करके बहुत द्रव्यका विनाश करनेके लिये बहुत द्रव्यका अपकर्षण करता है ।

अथवा इस सूत्रका अन्य प्रकारसे अर्थ कहते हैं । यथा— बन्ध और अपकर्षणके द्वारा अधस्तन स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद और उपरिम स्थितियोंके निषेकका जघन्य पद होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिये । भावार्थ यह है कि बन्ध और अपकर्षणके द्वारा प्रदेशरचनाको करता हुआ सर्वजघन्य स्थितिमें बहुत देता है । उससे उपरिम स्थितिमें एक चय कम देता है । इस प्रकार चरम स्थितिके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । यह इसका अर्थ है । इसके द्वारा निषेकावासकी प्ररूपणा की ।

विशेषार्थ— यहाँ निषेकावासका निर्देश करनेवाले सूत्रका अर्थ दो प्रकारसे बतलाया गया है । प्रथम अर्थ अपकर्षण और उत्कर्षणको ध्यानमें लेकर किया गया है

---

१ म प्रतौ 'थोवत्तं साहणं' इति पाठः । २ अ-आ-काप्रतिषु 'उवरिल्लीणं णिसेयस्स' इति पाठः ।

बहुसो बहुसो जहण्णाणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि ॥ ५४ ॥

सुहुमणिगोदजीवेसु जहण्णाणि उक्कस्साणि च जोगट्ठाणाणि अत्थि । तत्थ पाएण समयाविरोहेण जहण्णजोगट्ठाणेसु चेव परिणमियं बधदि । तेसिमसभवे सइ उक्कस्सजोगट्ठाणं पि गच्छदि । तं कध णव्वदे ? 'बहुसो' इदि णिद्देसादो । किमट्ठं जहण्णजोगेण चेव बंधाविदो ? थोवकम्मपदेसागमणट्ठं । थोवजोगेण कम्मागमत्थोवत्त कध णव्वदे ? दव्वविहाणे जोगट्ठाणपरूवणण्णहाणुववत्तीदो । ण चासंबद्धं सुदबलिभडारओ परूवेदि, महाकम्मपयडिपाहुड-

और दूसरा अर्थ निषेकरचनाकी मुख्यतासे । दोनोंका फलितार्थ एक ही है । प्रथम अर्थका भाव यह है कि क्षपित-गुणित-घोलमानके ज्ञानावरण कर्मका जितना अपकर्षण होता है उससे इस क्षपितकर्मांशिकके होनेवाला ज्ञानावरण कर्मका अपकर्षण बहुत होता है। यह हुई अपकर्षणकी बात, किन्तु उत्कर्षण इससे विपरीत होता है । इससे इस क्षपित-कर्मांशिक जीवके कर्मनिर्जरा अधिक होती जाती है और संचित द्रव्य उत्तरोत्तर कम रहता जाता है । आगे बन्ध और अपकर्षणके द्वारा जो निषेकरचनाका दूसरा प्रकार लिखा है उससे भी यही अर्थ फलित होता है । इसलिये इस कथनमें मात्र विवक्षाभेद है, अर्थभेद नहीं, ऐसा यहां समझना चाहिये ।

बहुत बहुत बार जघन्य योगस्थानोंको प्राप्त होता है ॥ ५४ ॥

सूक्ष्म निगोदजीवोंमें जघन्य और उत्कृष्ट दोनों प्रकारके योगस्थान हैं । उनमेंसे प्रायः आगममें जो विधि बतलाई है उसके अनुसार जघन्य योगस्थानोंमें ही रहकर ज्ञानावरण कर्म बांधता है । उनकी सम्भावना न होनेपर एक बार उत्कृष्ट योगस्थानको भी प्राप्त होता है ।

शंका— यह बात किस प्रमाणसे जानी जाती है ?

समाधान— सूत्रमें निर्दिष्ट 'बहुसो' पदसे जानी जाती है ।

शंका— जघन्य योगसे ही ज्ञानावरण कर्मको किसलिये बंधाया गया है ?

समाधान— स्तोक कर्मप्रदेशोंके आनेके लिये जघन्य योगसे ज्ञानावरण कर्मको बंधाया गया है ।

शंका— स्तोक योगसे थोड़े कर्म आते हैं, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— चूंकि द्रव्यविधानमें योगस्थानोंकी प्ररूपणा अन्यथा बन नहीं सकती, इससे जाना जाता है कि स्तोक योगसे थोड़े कर्म आते हैं । यदि कहा जाय कि भूतबलि भट्टारक असम्बद्ध अर्थकी प्ररूपणा करते हैं, सो यह बात भी नहीं

१ अ-आप्रत्योः 'परिणामिय', काप्रतौ 'परिणामिय' इति पाठः ।

अमियपाणेण ओसारिदासेसराग-दोस-मोहत्तादो। एवं जोगावासो सुहुमणिगोदेसु परूविदो।

बहुसो बहुसो मंदसंकिलेसपरिणामो भवदि ॥ ५५ ॥

जाव सक्कदि ताव मंदसंकिलेसो चेव होदि। मंदसंकिलेसासंभवे उक्कस्ससंकिलेसं पि गच्छदि। कधमेदं णव्वदे? 'बहुसो' णिद्देसण्णहाणुववत्तीदो। किमट्ठं बहुसो मंदसंकिलेसं णीदो? रहस्सट्ठिदिणिमित्तं। कसाओ ट्ठिदिबंधस्स कारणमिदि कधं णव्वदे? कालविहाणे ट्ठिदिबंधकारणकसाउदयट्ठाणपरूवणादो। जहण्णट्ठिदीए एत्थ किं पओजणं? ण, थोवट्ठिदीसु ट्ठिदथूलगोवुच्छाहिंतो बहुपदेसणिज्जरुवलंभादो। अथवा, बहुदव्वोक्कड्डणट्ठं[1]

है, क्योंकि, महाकर्मप्रकृतिप्राभृतरूपी अमृतके पानसे उनका समस्त राग, द्वेष और मोह दूर हो गया है। इसलिये वे असत्यवाद भाषणकी प्ररूपणा नहीं कर सकते। इस प्रकार सूक्ष्म निगोदजीवोंमें योगावासकी प्ररूपणा की।

बहुत बहुत बार मंद संक्लेश रूप परिणामोंसे युक्त होता है ॥ ५५ ॥

जब तक शक्य हो तब तक मंद संक्लेश रूप परिणामोंसे ही युक्त होता है। मंद संक्लेश रूप परिणामोंकी सम्भावना न होनेपर उत्कृष्ट संक्लेशको भी प्राप्त होता है।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— अन्यथा सूत्रमें 'बहुसो' पदका निर्देश नहीं बन सकता है। अतः इसीसे जाना जाता है कि मंद संक्लेशके सम्भव न होनेपर वह उत्कृष्ट संक्लेशको भी प्राप्त होता है।

शंका— यह जीव बहुत बार मंद संक्लेशको किसलिये प्राप्त कराया गया है?

समाधान— ज्ञानावरण कर्मकी अल्प स्थिति प्राप्त करनेके लिये बहुत बार मंद संक्लेशको प्राप्त कराया गया है।

शंका— कषाय स्थितिबन्धका कारण है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— चूंकि कालविधानमें स्थितिबन्धके कारणभूत कषायाध्यवसायस्थानोंकी प्ररूपणा की गई है इससे जाना जाता है कि कषाय स्थितिबन्धका कारण है।

शंका— जघन्य स्थितिका यहां क्या प्रयोजन है?

समाधान— नहीं, क्योंकि स्थितियोंके स्तोक होनेपर गोपुच्छाएं स्थूल पाई जाती हैं जिससे बहुत प्रदेशोंकी निर्जरा देखी जाती है। यही यहां जघन्य स्थिति करनेका प्रयोजन है।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'दव्वोकड्डणं' ताप्रतौ 'दव्वोक (ड्ड) णं' इति पाठः।

मंदसंकिलेसं णीदो । एवं संकिलेसावासो परूविदो ।

एवं संसरिदूण बादरपुढविजीवपज्जत्तएसु उववण्णो ॥ ५६ ॥

एव पुव्वुत्तछहि आवासएहि सुहुमणिगोदेसु संसरिदूण बादरपुढविजीवपज्जत्तएसुववण्णो । सुहुमणिगोदेहिंतो णिग्गतूण मणुस्सेसु चेव किण्ण उप्पण्णो ? ण, सुहुमणिगोदेहिंतो अण्णत्थ अणुप्पज्जिय मणुस्सेसु उप्पण्णस्स संजमासंजम सम्मत्ताणं[1] चेव गहणपाओग्गत्तुवलंभादो । जदि एवं तो सम्मत्त संजमासंजमकंदयकरणणिमित्तं मणुस्सेसुप्पज्जमाणो बादरपुढविकाइएसु अणुप्पज्जिय मणुस्सेसु चेव किण्ण उप्पज्जदे ? ण, सुहुमणिगोदेहिंतो णिग्गयस्स सव्वलहुएण कालेण संजमासंजमग्गहणाभावादो । बादरपुढविपज्जत्तएसु चेव किमट्ठमुप्पाइदो ? ण, अपज्जत्तेहिंतो णिग्गयस्स सव्वलहुएण कालेण संजमासंजमग्गहणा-

अथवा, बहुत द्रव्यका अपकर्षण करानेके लिये मन्द संक्लेशको प्राप्त कराया गया है । इस प्रकार संक्लेशावासकी प्ररूपणा की ।

विशेषार्थ— संक्लेश परिणामोंके मन्द होनेसे ज्ञानावरण कर्मका स्थितिबन्ध कम होता है और उपरितन स्थितिमें स्थित निषेकोंका अपकर्षण भी होता है । यही कारण है कि प्रकृतमें मंद संक्लेशके कथनके दो प्रयोजन बतलाये हैं ।

इस प्रकार परिभ्रमण कर बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंमें उत्पन्न हुआ ॥५६॥

इस प्रकार पूर्वोक्त छह आवासोंके द्वारा सूक्ष्म निगोदजीवोंमें परिभ्रमण कर बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंमें उत्पन्न हुआ ।

शंका— सूक्ष्म निगोदजीवोंमेंसे निकल कर मनुष्योंमें ही क्यों नहीं उत्पन्न हुआ ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सूक्ष्म निगोदजीवोंमेंसे अन्यत्र न उत्पन्न होकर मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवके संयमासंयम और सम्यक्त्वके ही ग्रहणकी योग्यता पायी जाती है ।

शंका— यदि ऐसा है तो सम्यक्त्वकाण्डक और संयमासंयमकाण्डकोंको करनेके लिये मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाला जीव, बादर पृथिवीकायिकोंमें उत्पन्न न होकर मनुष्योंमें ही क्यों नहीं उत्पन्न होता ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सूक्ष्म निगोदोंमेंसे निकले हुए जीवके सर्व लघु काल द्वारा संयमासंयमका ग्रहण नहीं पाया जाता ।

शंका— बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तकोंमें किसलिये उत्पन्न कराया है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अपर्याप्तकोंमेंसे निकले हुए जीवके सर्वलघु काल द्वारा संयमासंयमके ग्रहणका अभाव है ।

---

१ अ-आ काप्रतिषु 'समत्ताणं' इति पाठ । २ अ-आ काप्रतिषु 'सयत्त' इति पाठः ।

भावादो। बादरपुढविकाइएसु किमट्ठमुप्पाइदो ? ण, आउकाइयपज्जत्तेहिंतो मणुस्सेसुप्पण्णस्स सव्वलहुएण कालेण संजमादिग्गहणाभावादो[1]।

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥५७॥

पज्जत्तिसमाणकालो जहण्णओ वि एगसमयादिओ णत्थि, अंतोमुहुत्तमेत्तो चेवेत्ति जाणावणट्ठमंतोमुहुत्तग्गहणं। किमट्ठं सव्वलहुं पज्जत्तिं णीदो ? सुहुमणिगोदजोगादो असंखेज्जगुणेण बादरपुढविकाइयापज्जत्तजोगेण संचियमाणदव्वस्स पडिसेहट्ठं। सव्वलहुएण कालेण जो पुण पज्जत्तीओ ण समाणेदि तस्स एयंताणुवड्ढिजोगकालो महल्लो होदि। तेण तत्थ दव्वसंचओ वि बहुओ होदि। तप्पडिसेहट्ठं सव्वलहुं पज्जत्तिं गदो त्ति उत्तं होदि।

शंका — बादर पृथिवीकायिकोंमें किसलिये उत्पन्न कराया है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि अप्कायिक पर्याप्तोंमेंसे मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवके सर्वलघु कालके द्वारा संयमादिका ग्रहण सम्भव नहीं है।

विशेषार्थ — क्षपितकर्मांशिक अवस्था निकट संसारीके ही सम्भव है, यह तो स्पष्ट है। फिर भी यह जिस क्रमसे इस अवस्थाको प्राप्त होता है, उस क्रमका यहां निर्देश किया गया है। पहले यह जीव पल्यका असंख्यातवां भाग कम उत्कृष्ट कर्मस्थिति प्रमाण काल तक सूक्ष्म निगोद अवस्थामें परिभ्रमण करता रहता है। फिर वहांसे निकल कर वह बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तक होता है। यह सीधा मनुष्य क्यों नहीं होता इसका निर्देश टीकामें किया ही है।

अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा अति शीघ्र सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ५७ ॥

पर्याप्तियोंकी पूर्णताका काल जघन्य भी एक समय आदिक नहीं है किन्तु अन्तर्मुहूर्त मात्र ही है, इस बातका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें अन्तर्मुहूर्त पदका ग्रहण किया है।

शंका — अति शीघ्र पर्याप्तिको क्यों पूर्ण कराया है ?

समाधान — सूक्ष्म निगोदजीवोंके योगसे असंख्यातगुणे बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीवोंके योग द्वारा संचित होनेवाले द्रव्यका प्रतिषेध करनेके लिये सर्व लघु कालमें पर्याप्तिको पूर्ण कराया है। जो सर्वलघु काल द्वारा पर्याप्तियोंको पूर्ण नहीं करता है उसका एकान्तानुवृद्धियोगकाल महान् होता है और इसलिये वहां द्रव्यका संचय भी बहुत होता है। अतः इस बातका निषेध करनेके लिये सर्वलघु काल द्वारा पर्याप्तियोंको पूर्ण करता है यह कहा है।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु -मुप्पाइदूण इति पाठः। २ ताप्रतौ 'संजमाग्गहणाभावादो' इति पाठः।

अंतोमुहुत्तेण कालगदसमाणो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसुववण्णो ॥ ५८ ॥

पज्जत्तीयो समाणिय जाव अंतोमुहुत्तमेत्तकालो विस्समणं परभवियाउअं बंधिय पुणो[1] विस्समणादिकिरियाहि[2] जाव ण गदो[3] ताव कालं ण करेदि त्ति अंतोमुहुत्तेण कालगदो त्ति भणिदं । बहुकाल संजमगुणसेडीए संचिदकम्मणिज्जरणट्ठं पुव्वकोडाउएसु मणुसेसुववण्णो त्ति भणिदं ।

सव्वलहुं जोणिणिक्खमणजम्मणेण जादो अट्ठवस्सीओ ॥५९॥

गब्भम्मि पदिदपढमसमयप्पहुडि के वि सत्तमासे गब्भे अच्छिदूण गब्भादो णिस्सरंति, के वि अट्ठमासे, के वि णवमासे, के वि दसमासे अच्छिदूण गब्भादो णिप्फिडंति । तत्थ सव्वलहु गब्भणिक्खमणजम्मणवयणण्णहाणुववत्तीदो सत्तमासे गब्भे अच्छिदो त्ति घेत्तव्वं । गब्भादो णिक्खमणं गब्भणिक्खमण, गब्भणिक्खमणमेव जम्मणं गब्भणिक्खमणजम्मण, तेण गब्भणिक्खमणजम्मणेण जादो अट्ठवस्सीओ । गब्भादो णिक्खंतपढमसमयप्पहुडि अट्ठवस्सेसु

अन्तर्मुहूर्त कालमें मृत्युको प्राप्त होकर पूर्वकोटि आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ ॥ ५८ ॥

पर्याप्तियोंको पूर्ण कर अन्तर्मुहूर्त काल तक विश्राम करता है, तथा परभव सम्बन्धी आयुका बन्ध कर जब तक पुनः विश्राम आदि क्रियाको नहीं प्राप्त होता तब तक मरणको प्राप्त नहीं होता, इसीलिये ' अन्तर्मुहूर्तमें मृत्युको प्राप्त होकर ' ऐसा कहा है । बहुत काल तक संयमगुणश्रेणिके द्वारा सचित कर्मोंकी निर्जरा करानेके लिये ' पूर्वकोटि आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ ' ऐसा कहा है ।

सर्वलघु कालमें योनिसे निकलने रूप जन्मसे उत्पन्न हो कर आठ वर्षका हुआ ॥ ५९ ॥

गर्भमें आनेके प्रथम समयसे लेकर कोई सात मास गर्भमें रहकर उससे निकलते हैं, कोई आठ मास, कोई नौ मास और कोई दस मास रहकर गर्भसे निकलते हैं । उसमें चूंकि सर्वलघु कालमें गर्भसे निकलने रूप जन्मका कथन अन्य प्रकारसे बन नहीं सकता, अतः ' सात मास गर्भमें रहा ' ऐसा ग्रहण करना चाहिये । गर्भसे निष्क्रमण गर्भनिष्क्रमण, गर्भनिष्क्रमण रूप जन्म गर्भनिष्क्रमणजन्म [इस प्रकार यहां तत्पुरुष और कर्मधारय समास हैं], उस गर्भनिष्क्रमण रूप जन्मसे उत्पन्न होकर आठ वर्षका

१ अ-आ-काप्रतिषु ' परभवियाउअ बधेण पुणो ', ताप्रतौ ' परभवियाउअबंधेण पुणो ' इति पाठ ।
२ अ-आ-कप्रतिषु ' विस्समाणादि ' इति पाठ । ३ अ-आ-ताप्रतिषु ' जावणगदो ' इति पाठः ।

गदेसु संजमग्गहणपाओग्गो होदि, हेट्ठा ण होदि त्ति एसो भावत्थो। गब्भम्मि पदिदपढमसमयप्पहुडि अट्ठवस्सेसु गदेसु संजमग्गहणपाओग्गो होदि त्ति के वि भणंति। तण्ण घडदे, जोणिणिक्खमणजम्मणेणेत्ति वयणण्णहाणुववत्तीदो। जदि गब्भम्मि पदिदपढमसमयादो अट्ठवस्साणि घेप्पंति तो गब्भपदणजम्मणेण अट्ठवस्सीओ जादो त्ति सुत्तकारो भणेज्ज। ण च एवं, तम्हा सत्तमासाहियअट्ठहि वासेहि संजमं पडिवज्जदि त्ति एसो चेव अत्थो घेत्तव्वो; सव्वलहुणिद्देसण्णहाणुववत्तीदो।

संजमं पडिवण्णो ॥ ६० ॥

जं सुहुमणिगोदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालेण कम्मसंचयं करेदि तं बादरपुढविकाइयपज्जत्तो एगसमएण संचिणदि। जं बादरपुढविकाइयपज्जत्तो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण कालेण कम्मसंचयं करेदि तं मणुसपज्जत्तो एगसमएण संचिणदि। तदो बादरपुढविकाइयपज्जत्तएसु[1] उप्पाइय कम्मसंचयं करिय पुणो मणुस्सेसु उप्पाइय अट्ठवस्साणि सादिरेयाणि कम्मसंचयं करिय पुणो दसवाससहस्सियदेवेसु उप्पाइय कम्मसंचयं करिय

हुआ। गर्भसे निकलनेके प्रथम समयसे लेकर आठ वर्ष बीत जानेपर संयम ग्रहणके योग्य होता है इसके पहिले संयम ग्रहणके योग्य नहीं होता यह इसका भावार्थ है। गर्भमें आनेके प्रथम समयसे लेकर आठ वर्षोंके बीतनेपर संयम ग्रहणके योग्य होता है ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। किन्तु यह घटित नहीं होता क्योंकि ऐसा माननेपर योनिनिष्क्रमण रूप जन्मसे यह सूत्रवचन नहीं बन सकता। यदि गर्भमें आनेके प्रथम समयसे लेकर आठ वर्ष ग्रहण किये जाते हैं तो गर्भपतन रूप जन्मसे आठ वर्षका हुआ ऐसा सूत्रकार कहते। किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं कहा है। इसलिये सात मास अधिक आठ वर्षका होनेपर संयमको प्राप्त करता है यही अर्थ ग्रहण करना चाहिये क्योंकि अन्यथा सूत्रमें सर्वलघु पदका निर्देश घटित नहीं होता।

संयमको प्राप्त हुआ ॥ ६० ॥

शंका— सूक्ष्म निगोद जीव पल्योपमके असंख्यातवें भाग कालके द्वारा जितना कर्मका संचय करता है उसे बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव एक समयमें संचित करता है। बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव पल्योपमके असंख्यातवें भाग काल द्वारा जितना कर्मसंचय करता है उसे मनुष्य पर्याप्त एक समयमें संचित करता है। इसलिये बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तकोंमें उत्पन्न कराकर कर्मसंचय कराके, पश्चात् मनुष्योंमें उत्पन्न कराकर कुछ अधिक आठ वर्षोंमें कर्मसंचय कराके, पश्चात् दस हजार वर्षकी आयुवाले देवोंमें उत्पन्न कराकर कर्मसंचय कराके सूक्ष्म निगोदजीवोंमें उत्पन्न करानेमें कोई लाभ नहीं है?

---

1 काप्रतिपरमात् । अ-आ-काप्रतिषु 'पज्जत्तएसु' इति पाठः।

सुहुमणिगोदेसु उप्पाइदे ण कोच्छि लाभो अत्थि त्ति[2] भणिदे एत्थ परिहारो उच्चदे - अत्थि लाभो, अण्णहा सुत्तस्स अणत्थयत्तप्पसंगादो। ण च सुत्तमणत्थयं होदि, वयणविसंवाद-कारणराग-दोस मोहुम्मुक्कजिणवयणस्स अणत्थयत्तविरोहादो। कधमणत्थयं ण होदि ? उच्चदे— पढमसम्मत्तं संजमं[3] च अक्कमेण गेण्हमाणो मिच्छाइट्ठी अधापवत्तकरण-अपुव्व-करणं[4] अणियट्टिकरणाणि कादूण चेव गेण्हदि। तत्थ अधापवत्तकरणे णत्थि गुणसेडीए कम्मणिज्जरा गुणसंकमो च। किंतु अणंतगुणाए विसोहीए विसुज्झमाणो चेव गच्छदि। तेण तत्थ कम्मसंचओ चेव, ण णिज्जरा। पुणो अपुव्वकरणपढमसमए आउअवज्जाणं सव्वकम्माणं उदयावलियबाहिरे[5] सव्वट्ठिदीसु ट्ठिदपदेसग्गमोकड्डुक्कड्डणभागहारेण जोग-गुणगारादो असंखेज्जगुणहीणेण खंडिय तत्थ एगखंडं पुध ट्ठविय पुणो तमसंखेज्जलोगेहि खंडिय तत्थ एगखंडं घेत्तूण उदयावलियाए गोवुच्छागारेण संछुहिय पुणो सेसबहुभागेसु असंखेज्जपंचिंदियसमयपबद्धे उदयावलियबाहिरट्ठिदीए णिसिंचदि। पुणो तत्तो असंखेज्जगुणे समयपबद्धे घेत्तूण तदुवरिमट्ठिदीए णिसिंचदि। पुणो तत्तो असंखेज्जगुणे समयपबद्धे तत्थेव

समाधान— ऐसी शंका करनेपर यहां उसका परिहार करते हैं कि उसमें लाभ है, नहीं तो सूत्रके अनर्थक होनेका प्रसंग आता है। और सूत्र अनर्थक होता नहीं है, क्योंकि, वचनविसंवादके कारणभूत राग, द्वेष व मोहसे रहित जिन भगवान्‌के वचनके अनर्थक होनेका विरोध है।

शंका— सूत्र कैसे अनर्थक नहीं होता है ?

समाधान— इसका उत्तर कहते हैं। प्रथम सम्यक्त्व और संयमको एक साथ ग्रहण करनेवाला मिथ्यादृष्टि अधःप्रवृत्तकरण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरणको करके ही ग्रहण करता है। उनमेंसे अधःप्रवृत्तकरणमें गुणश्रेणिकर्मनिर्जरा और गुणसंक्रमण नहीं है। किन्तु अनन्तगुणी विशुद्धिसे विशुद्ध होता हुआ ही जाता है। इस कारण अधःप्रवृत्तकरणमें कर्मसंचय ही है, निर्जरा नहीं है। पश्चात् अपूर्वकरणके प्रथम समयमें आयुको छोड़कर सब कर्मोंके उदयावलिबाह्य सब स्थितियोंमें स्थित प्रदेशाग्रको योगगुणकारसे असंख्यातगुणे हीन ऐसे अपकर्षण-उत्कर्षणभागहारसे भाजित कर उसमेंसे एक भागको पृथक् स्थापित कर पश्चात् उसे असंख्यात लोकोंसे खण्डित कर उसमेंसे एक भागको ग्रहण कर उदयावलीमें गोपुच्छाकार अर्थात् चय हीन क्रमसे देकर पश्चात् शेष बहुभागोंमेंसे पचेन्द्रिय सम्बन्धी असंख्यात समयप्रबद्धोंको उदयावलीके बाहर प्रथम स्थितिमें देता है। तथा उनसे असंख्यातगुणे समयप्रबद्धोंको ग्रहण कर उससे उपरिम स्थितिमें देता है। तथा उनसे असंख्यातगुणे समयप्रबद्धोंको वहींसे ग्रहण कर उससे उपरिम स्थितिमें देता है। इस

१ मप्रतिपाठोऽयम्। अ आ का ताप्रतिषु ' कोत्थि ' इति पाठः। २ ताप्रतौ ' लाभो [अत्थि] त्ति ' इति पाठः। ३ प्रतिषु ' पढमसम्मत्तं सम्मत्त संजमं ' इति पाठ। ४ ताप्रतौ ' अपुव्वकरण ' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते। ५ अ-आ-काप्रत्योः ' बाहिर ' इति पाठः।

घेत्तूण तदुवरिमट्ठिदीए णिसिंचदि । एवं ताव णिसिंचमाणो गच्छदि जाव अपुव्व करणद्धादो [अणियट्टिकरणद्धादो] च विसेसाहिओ कालो गदो त्ति । तदो उवरिमाए ट्ठिदीए असंखेज्जगुणहीणपदेसे णिसिंचदि । तदो उवरि सव्वत्थ विसेसहीणं णिसिंचदि जाव अप्पप्पणो अइच्छावणावलियहेट्ठिमसमओ त्ति । एवमेसा अपुव्वकरणस्स पढमसमए कदा गुणसेडी । विदियसमए पुण पढमसमयओकड्डिददव्वादो असंखेज्जगुणं दव्वमोकड्डि दूण उदयावलियबाहिरट्ठिदीए दिस्समाणादो असंखेज्जगुणमेत्ते समयपबद्धे णिसिंचदि । तदो असंखेज्जगुणे समयपबद्धे तदुवरिमट्ठिदीए णिसिंचदि । तदो जाव गलिदगुणसेडि सीसग त्ति[1] । तदो उवरिमट्ठिदीए असंखेज्जगुणहीणं णिसिंचदि । उवरि सव्वत्थ विसेसहीणं जाव अप्पप्पणो अइच्छावणावलियहेट्ठिमसमओ त्ति । पुणो तदियसमए विदियसमओकड्डिददव्वादो असंखेज्जगुणं दव्वमोकड्डिय पुव्वं व उदयावलियबाहिरट्ठिदि मादिं कादूण गलिदसेसं गुणसेडिं करेदि । एवं सव्वसमएसु असंखेज्जगुणमसंखेज्जगुणं दव्वमोकड्डिदूण सव्वकम्माणं गलिदसेसं गुणसेडिं करेदि जाव अणियट्टिकरणद्धाए

प्रकार निक्षेप करता हुआ अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरणके कालसे कुछ अधिक कालका जितना प्रमाण हो उतने निषेक बीतने तक जाता है। उससे उपरिम स्थितिमें असंख्यातगुण हीन प्रदेशोंका निक्षेप करता है। इससे ऊपर सर्वत्र अपनी अपनी अति स्थापनावलिके अधस्तन समयके प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन देता है। इस प्रकार यह अपूर्वकरणके प्रथम समयमें की गई गुणश्रेणि है। फिर द्वितीय समयमें प्रथम समयमें अपकृष्ट द्रव्यसे असंख्यातगुणे द्रव्यका अपकर्षण कर उदयावलीके बाहर प्रथम स्थितिमें दृश्यमान द्रव्यसे असंख्यातगुणे मात्र समयप्रबद्धोंको देता है। उससे असंख्यातगुणे समयप्रबद्धोंको उससे उपरिम स्थितिमें देता है। उससे आगे गलित गुणश्रेणिशीर्षके प्राप्त होने तक इसी क्रमसे देता है। फिर उससे उपरिम स्थितिमें असं ख्यातगुणे हीन समयप्रबद्धोंको देता है। फिर ऊपर सर्वत्र अपनी अपनी अतिस्थापना-वलीके अधस्तन समय तक विशेष हीन विशेष हीन देता है। पश्चात् तृतीय समयमें द्वितीय समयमें अपकृष्ट द्रव्यसे असंख्यातगुणे द्रव्यका अपकर्षण कर पहिलेके समान उदयावलीके बाहर प्रथम स्थितिसे लेकर गलितशेष गुणश्रेणि करता है। इस प्रकार अनिवृत्तिकरणकालके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक सब समयोंमें असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे द्रव्यका अपकर्षण कर सब कर्मोंकी गलितशेष गुणश्रेणि करता है। इस

---

१ अ-आप्रत्योः 'जाव गलिदगुणसेडिसीसगं त्ति' इत्यतो 'जाव दव्वसेडीसीसगं गदे त्ति' इति पाठः ।
२ अ-आ-काप्रतिषु 'गलिदसेसयमादि' इति पाठः ।

चरिमसमओ त्ति । जेणेव सम्मत्त संजमाभिमुहमिच्छाइट्ठी असंखेज्जगुणाए सेडीए बादरेइदिएसु पुव्वकोडाउअमणुसेसु दसवाससहस्सियदेवेसु च संचिददव्वादो असंखेज्जगुणं दव्वं णिज्जरेइ[1] तेण इमं लाहं दट्ठूण संजमं पडिवज्जाविदो[2]। एत्थ असंखेज्जगुणाए सेडीए कम्मणिज्जरा होदि त्ति कध णव्वदे ?

सम्मत्तुप्पत्ती वि य सावय-विरदे अणंतकम्मंसे ।
दंसणमोहक्खवए कसायउवसामए य उवसंते ॥ १६ ॥
खवए य खीणमोहे जिणे य णियमा[3] भवे असंखेज्जा ।
तव्विवरीदो कालो संखेज्जगुणाए सेडीए[4] ॥ १७ ॥

इदि गाहासुत्तादो णव्वदे । दोहि वि करणेहि णिज्जरिददव्वं बादरेइंदियादिसु संचिददव्वादो असंखेज्जगुणमिदि कध णव्वदे ? संजमं पडिवज्जिय त्ति अभणिदूण

प्रकार चूंकि सम्यक्त्व और संयमके अभिमुख हुआ मिथ्यादृष्टि जीव बादर एकेन्द्रियों, पूर्वकोटि आयुवाले मनुष्यों और दस हजार वर्षकी आयुवाले देवोंमें संचित किये गये द्रव्यसे असंख्यातगुणे द्रव्यकी निर्जरा करता है। अत एव इस लाभको देख कर संयमको प्राप्त कराया है।

शंका— यहां असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे कर्मनिर्जरा होती है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— सम्यक्त्वोत्पत्ति अर्थात् प्रथमोपशम सम्यक्त्वकी उत्पत्ति, श्रावक (देशविरत), विरत (महाव्रती), अनन्तकर्मांश अर्थात् अनन्तानुबन्धीका विसंयोजन करनेवाला, दर्शनमोहका क्षय करनेवाला, चारित्रमोहका उपशम करनेवाला, उपशान्तमोह, चारित्रमोहका क्षय करनेवाला, क्षीणमोह और जिन, इनके नियमसे उत्तरोत्तर असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे कर्मनिर्जरा होती है। किन्तु निर्जराका काल उससे विपरीत संख्यातगुणित श्रेणि रूपसे है, अर्थात् उक्त निर्जराकाल जितना जिन भगवान्के है उससे संख्यातगुणा क्षीणमोहके है, उससे संख्यातगुणा चारित्रमोहक्षपकके है इत्यादि ॥ १६-१७ ॥ इन गाथासूत्रोंसे जाना जाता है कि यहां असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे कर्मनिर्जरा होती है।

शंका— दोनों (अपूर्व व अनिवृत्ति) ही करणों द्वारा निर्जराको प्राप्त हुआ द्रव्य बादर एकेन्द्रियादिकोंमें संचित हुए द्रव्यसे असंख्यातगुणा है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'णिज्जरे' इति पाठः । २ अ-आ-काप्रतिषु 'पडिवज्जादो त्ति' इति पाठः । ३ अ-आ-काप्रतिषु 'णियमो' इति पाठः । ४ अपध अ. प. ३९७. गो. जी. ६६-६७. सम्यग्दृष्टि-श्रावक-विरतानन्तवियोजक-दर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्त-मोहक्षपक-क्षीणमोह-जिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः । त. सू. ९-४५. सम्मत्तुप्पा सावय विरए संजोयणा विणासे य । दंसणमोहक्खवगे कसायउवसामगुवसंते ॥ खवगे य खीणमोहे जिणे य दुविहे असंखगुणसेढी । उदओ तव्विवरीओ कालो संखेज्जगुणसेढी ॥ कर्मप्रकृति ६, ८-९.

संजमं पडिवण्णो इदि वयणादो णव्वदे। ण च फलेण विणा किरियापरिसमत्तिं मणंति आइरिया। तेण तस-थावरकाइएसु संचिददव्वादो असंखेज्जगुणं दव्वं णिज्जरिय संजमं पडिवण्णो त्ति घेत्तव्वं। गुणसेडिजहण्णट्ठिदीए पढमवारणिसित्त दव्वमसंखेज्जावलियपवद्धेहि सरिसमिदि आइरियपरंपरागदुवदेसादो वा णव्वदे जहा संजयादो एत्थ णिज्जरिददव्वमसंखेज्जगुणमिदि।

तत्थ य भवट्ठिदिं पुव्वकोडिं देसूणं संजममणुपालइत्ता थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति मिच्छत्तं गदो ॥ ६१ ॥

तत्थ संजमगहिदपढमसमए चरिमसमयमिच्छाइट्ठिणा ओकड्डिददव्वादो असंखेज्जगुणं दव्वमोकड्डिदूण गलिदसेसमुदयावलियबाहिरे पुव्विल्लगुणसेडिआयामादो संखेज्जगुणहीणं पदेसविण्णासेण असंखेज्जगुणं गुणसेडिं करेदि। विदियसमए वि एवं चेव करेदि। णवरि पढमसमयओकड्डिददव्वादो विदियसमए असंखेज्जगुणं दव्वमोकड्डिय गुणसेडिं करेदि त्ति वत्तव्वं। एवं समए समए असंखेज्जगुणाए सेडीए दव्वमोकड्डिदूण गुणसेडिं

समाधान — वह संयमको प्राप्त होकर ऐसा न कहकर संयमको प्राप्त हुआ ऐसे कहे गये सूत्रवचनसे जाना जाता है। कारण कि आचार्य प्रयोजनके बिना क्रियाकी समाप्तिका निर्देश नहीं करते। इसलिये त्रस व स्थावर कायिकोंमें संचित हुए द्रव्यसे असंख्यातगुणे द्रव्यको निर्जीर्ण कर संयमको प्राप्त हुआ ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिये। अथवा गुणश्रेणिकी जघन्य स्थितिमें प्रथम बार दिया हुआ द्रव्य असंख्यात आवलियोंके जितने समय हों उतने समयप्रबद्ध प्रमाण है इस प्रकार आचार्यपरम्परागत उपदेशसे जाना जाता है कि संचयकी अपेक्षा यहां निर्जराको प्राप्त हुआ द्रव्य असंख्यातगुणा है।

वहां कुछ कम पूर्वकोटि मात्र भवस्थिति प्रमाण तक संयमका पालन कर जीवितके थोड़ा शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ ॥ ६१ ॥

वहां संयम ग्रहण करनेके प्रथम समयमें चरमसमयवर्ती मिथ्यादृष्टि द्वारा अपकृष्ट द्रव्यसे असंख्यातगुणे द्रव्यका अपकर्षण कर उदयावलीके बाहिर पूर्वोक्त गुणश्रेणिके आयामसे संख्यातगुणे हीन आयामवाली व प्रदेशनिक्षेपकी अपेक्षा असंख्यातगुणी गलितशेष गुणश्रेणि करता है। द्वितीय समयमें भी इसी प्रकार करता है। विशेष इतना है कि प्रथम समयमें अपकृष्ट द्रव्यकी अपेक्षा द्वितीय समयमें असंख्यातगुणे द्रव्यका अपकर्षण करके गुणश्रेणि करता है ऐसा कहना चाहिये। इस प्रकार समय समयमें असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे द्रव्यका अपकर्षण कर एकान्तवृद्धिके अन्तिम

---

१ ताप्रतौ 'वेसऋणो' पयमिदं।

करेदि जाव एयंतवड्ढीए चरिमसमओ त्ति । तदो उवरि णियमेण हाणी होदि । तत्तो उवरि गुणसेडिदव्वं वड्ढदि हायदि अवट्ठायदि वा, संजमपरिणामाणं वड्ढि-हाणि अवट्ठाणणियमाभावादो । अणेण विहाणेण भवट्ठिदिं पुव्वकोडिं देसूणं संजममणुपालइत्ता अंतोमुहुत्तावसेसे मिच्छत्तं गदो । पुव्वकोडिचरिमसमओ त्ति गुणसेडिणिज्जरा किण्ण कदा ? ण, सम्मादिट्ठिस्स भवणवासियवाणवेंतर-जोइसिएसु उप्पत्तीए अभावादो, दिवड्ढपलिदोवमाउट्ठिदिएसु सोहम्मदेवेसुप्पण्णस्स दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपंचिंदियसमयपबद्धाणं संचयप्पसंगादो ।

सव्वत्थोवाए मिच्छत्तस्स असंजमद्धाए अच्छिदो ॥ ६२ ॥

एत्थ अप्पाबहुअं— सव्वत्थोवो देवगदिपाओग्गमिच्छत्तकालो । मणुसगदिपाओग्गमिच्छत्तद्धा संखेज्जगुणा । सण्णितिरिक्खपाओग्गमिच्छत्तद्धा संखेज्जगुणा । असण्णिपाओग्गमिच्छत्तद्धा संखेज्जगुणा । चउरिंदियउप्पत्तिपाओग्गमिच्छत्तद्धा संखेज्जगुणा । तेइंदियउप्पत्तिपाओग्गमिच्छत्तद्धा संखेज्जगुणा । बीइंदियउप्पत्तिपाओग्गमिच्छत्तद्धा संखेज्जगुणा । बादरे-

---

समय तक गुणश्रेणि करता है । उसके आगे नियमसे हानि होती है । पश्चात् उसके आगे गुणश्रेणिद्रव्य बढ़ता है, घटता है, अथवा अवस्थित भी रहता है, क्योंकि, वहां संयम-परिणामोंकी वृद्धि, हानि अथवा अवस्थानका कोई नियम नहीं है। इस विधानसे कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण भवस्थिति काल तक संयमको पालकर अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ ।

शंका— पूर्वकोटिके अन्तिम समय तक गुणश्रेणि निर्जरा क्यों नहीं की ?

समाधान— नहीं, क्योंकि सम्यग्दृष्टिकी भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें उत्पत्ति सम्भव नहीं है । यदि डेढ़ पल्यकी स्थितिवाले सौधर्म व ईशान कल्पके देवोंमें उत्पन्न होता है तो उसके डेढ़ गुणहानि मात्र पंचेन्द्रिय सम्बन्धी समयप्रबद्धोंके संचयका प्रसंग आता है ।

मिथ्यात्व सम्बन्धी सबसे स्तोक असंयमकालमें रहा ॥ ६२ ॥

यहां अल्पबहुत्व— देवगतिमें उत्पत्तिके योग्य मिथ्यात्वकाल सबसे स्तोक है । उससे मनुष्यगतिमें उत्पत्तिके योग्य मिथ्यात्वकाल संख्यातगुणा है। उससे संज्ञी तिर्यंचोंमें उत्पत्ति योग्य मिथ्यात्वकाल संख्यातगुणा है । उससे असंज्ञियोंमें उत्पत्ति योग्य मिथ्यात्वकाल संख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रियोंमें उत्पत्ति योग्य मिथ्यात्वकाल संख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रियोंमें उत्पत्ति योग्य मिथ्यात्वकाल संख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रियोंमें उत्पत्ति योग्य मिथ्यात्वकाल संख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रियोंमें उत्पत्ति योग्य मिथ्यात्वकाल संख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म

---

१ अ आ काप्रतिषु 'एयतवड्ढावड्ढीए', ताप्रतौ 'एवतवड्ढा (एयताव) वड्ढीए' इति पाठः ।

२ काप्रतौ 'दिवड्ढगुणसेडीपलिदोवमाउ' इति पाठ ।

इंदियउप्पत्तिपाओग्गमिच्छत्तद्धा संखेज्जगुणा। सुहुमेइंदियउप्पत्तिपाओग्गमिच्छत्तद्धा संखेज्जगुणा त्ति। एत्थ एदाओ सव्वद्धाओ परिहरिदूण[1] देवगदिसमुप्पत्तिपाओग्गमिच्छत्तकाले सेसे मिच्छत्तं गदो त्ति जाणावणट्ठं सव्वत्थोवाए मिच्छत्तस्स असंजमद्धाए अच्छिदो त्ति भणिदं होदि। संजदस्स मिच्छत्तं गंतूण देवगदीए उप्पज्जमाणस्स मिच्छत्तेण सह अच्छणकालो जहण्णओ वि उक्कस्सओ वि अत्थि। तत्थ जहण्णकालमच्छिदो त्ति उत्तं होदि। कधमेदं णव्वदे? एदम्हादो चेव उभयपक्खसूचयसुत्तादो। किमट्ठं मिच्छत्तस्स थोवासंजमद्धाए सेसाए मिच्छत्तं णीदो? बहुकालं संजमगुणसेडीए परेसणिज्जरणट्ठं। ण च पुव्वमेव मिच्छत्तं गदस्स गुणसेडिणिज्जराकालो बहुगो लब्भदि, तस्स अंतोमुहुत्तेण ऊणत्तुवलंभादो। दसवाससहस्सेसु संचिददव्वादो अंतोमुहुत्तकालं गुणसेडीए णिज्जरिददव्वं थोवं। तदो दसवाससहस्सियदेवेसु अणुप्पाइय पुव्वमेव मिच्छत्तं णेदूण बादरेइंदिएसु उप्पादेदव्वो त्ति भणिदे—ण, दसवाससहस्स

एकेन्द्रियोंमें उत्पत्ति योग्य मिथ्यात्वकाल संख्यातगुणा है। यहां इन सब कालोंको छोड़कर देवगतिमें उत्पत्ति योग्य मिथ्यात्वकालके शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ इस बातके ज्ञापनार्थ मिथ्यात्व सम्बन्धी सबसे स्तोक असंयमकालमें रहा ऐसा कहा है। मिथ्यात्वको प्राप्त होकर देवगतिमें उत्पन्न होनेवाले संयतका मिथ्यात्वके साथ रहनेका काल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। उसमें जघन्य काल तक रहा यह अभिप्राय है।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— वह इसीं उभय पक्षके सूचक सूत्रसे जाना जाता है।

शंका— मिथ्यात्व सम्बन्धी स्तोक असंयमकालके शेष रहनेपर मिथ्यात्वको किसलिये प्राप्त कराया है?

समाधान— संयम सम्बन्धी गुणश्रेणिके द्वारा बहुत काल तक कर्मप्रदेशोंकी निर्जरा करानेके लिये मिथ्यात्व सम्बन्धी स्तोक असंयमकालके शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त कराया है। यदि कोई इससे पहले मिथ्यात्वको प्राप्त हो जाय तो उसके गुणश्रेणिनिर्जराका काल बहुत नहीं पाया जा सकता क्योंकि वह अन्तर्मुहूर्तसे कम हो जाता है।

शंका— चूंकि दस हजार वर्ष आयुवाले देवोंमें संचित द्रव्यकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त कालमें गुणश्रेणि द्वारा निर्जराको प्राप्त हुआ द्रव्य स्तोक है अतः दस हजार वर्ष आयुवाले देवोंमें न उत्पन्न कराकर देवगतिमें उत्पत्तिके योग्य मिथ्यात्वकालसे पहले ही मिथ्यात्वको प्राप्त कराके बादर एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न कराना चाहिये?

समाधान— नहीं, क्योंकि, दस हजार वर्षकी आयुवाले देवोंमें संचित हुए

---

१ प्रतिषु 'परिहरिदूण' इति पाठः। अ-आ-काप्रतिषु 'वव्वसाओ परिहरदूण' ताप्रतौ 'सव्वाओ परिहरदूण' इति पाठः।
२ अ-आ-काप्रतिषु 'सव्वत्थोवद्धाए' इति पाठः। ३ अ-आप्रत्योः 'मिच्छत्तेदव्वं' इति पाठः।

संचयादो संजमगुणसेडीए एगसमयणिज्जरिदव्वस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। तदो मिच्छत्तं गंतूण सव्वलहुं अंतोमुहुत्तमच्छिदो त्ति भणिदं होदि।

मिच्छत्तेण कालगदसमाणो दसवाससहस्साउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो ॥ ६३ ॥

ताधे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणकम्मट्ठिदीए सुहुमणिगोदेसु संचिदव्वं ओकड्डुक्कड्डणभागहारादो असंखेज्जगुणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडेण ऊणं होदि, सम्मत्त-संजमगुणसेडीहि णवकबंधादो असंखेज्जगुणाहि णट्ठदव्वत्तादो। बद्धदेवाउओ संजदो मिच्छत्तस्स णेदव्वो। अबद्धदेवाउसंजदो मिच्छत्तं किण्ण णीदो ? ण, मिच्छत्तं गंतूण आउए बज्झमाणे आउअबंधगद्धाविस्समणकालेहि कीरमाण-संजदगुणसेडीए अभावप्पसंगादो। पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणकम्मट्ठिदीए विणा सुहुमणिगोदेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तअप्पदरकालं हिंडाविय मणुसेसु किण्ण

द्रव्यसे संयमगुणश्रेणि द्वारा एक समयमें निर्जराको प्राप्त हुआ द्रव्य असंख्यातगुणा पाया जाता है। इसलिये मिथ्यात्वको प्राप्त होकर सर्वलघु अन्तर्मुहूर्त काल तक वहां रहा, ऐसा कहा है।

मिथ्यात्वके साथ मरणको प्राप्त होकर दस हजार वर्ष प्रमाण आयुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ ॥ ६३ ॥

उस समय पल्योपमका असंख्यातवां भाग कम कर्मस्थिति प्रमाण कालके भीतर सूक्ष्म निगोदमें जितने द्रव्यका संचय हुआ था उससे, अपकर्षण-उत्कर्षणभागहारसे असंख्यातगुणे बड़े पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण भागहारका भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध आवे, उतना कम होता है, क्योंकि, नवकबन्धसे असंख्यातगुणी सम्यक्त्व व संयम सम्बन्धी गुणश्रेणियों द्वारा द्रव्य नष्ट हो चुका है। जिसने देवायुको बांध लिया है ऐसे संयतको ही मिथ्यात्वमें ले जाना चाहिये।

शंका—अबद्धदेवायुष्क संयतको मिथ्यात्वमें क्यों नहीं ले गये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इस प्रकारसे मिथ्यात्वको प्राप्त होकर आयुका बन्ध करनेपर आयुबन्धककाल और विश्रामकालके भीतर जो संयमगुणश्रेणि होती है उसके अभावका प्रसंग आता है, अतः बद्धदेवायुष्क संयतको ही मिथ्यात्वमें ले गये हैं।

शंका—इस जीवको सूक्ष्म निगोदमें जो पल्योपमका असंख्यातवां भाग कम कर्मस्थिति प्रमाण काल तक घुमाया है सो इतना न घुमा कर केवल पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र अल्पतर काल तक घुमा कर मनुष्योंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया ?

---

१ प्रतिषु 'एगसमयसजम-' इति पाठः।

उप्पाइदो ? ण, खविदकम्मंसियगुणगारकालादो अण्णदरकालो बहुगो त्ति तत्थ तेत्तियमेत्तकालं हिंडंतस्स लाभदंसणादो। दसवाससहस्सादो हेट्ठिमआउएसु किण्ण उप्पाइदो ? ण, देवेसु तत्तो हेट्ठिमआउवियप्पाभावादो।

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहु सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥ ६४ ॥

देवेसु छपज्जत्तिसमाणकाले जहण्णओ वि अत्थि, उक्कस्सओ वि। तत्थ सव्वजहण्णेण कालेण पज्जत्तिं गदो। अपज्जत्तजोगेण आगच्छमाणणवकबंधादो उदए गलमाणगोउच्छाओ बहुगाओ, परिणामजोगेण संचिदत्तादो। तदो आयादो णिज्जरा बहुगा त्ति कट्टु सव्वलहु पज्जत्ती[१] ण णिज्जदे ? ण, एइंदियपरिणामजोगादो असंखेज्जगुणेण पंचिंदियएयंताणुवड्ढिजोगेण आगच्छमाणदव्वस्स थोवत्तविरोहादो। तेण सव्वलहुं पज्जत्तिं गदो, अण्णहा बहुसंचयप्पसंगादो।

अंतोमुहुत्तेण सम्मत्तं पडिवण्णो ॥ ६५ ॥

समाधान—नहीं, क्योंकि क्षपितकर्मांशिकके गुणाकारकालसे अन्यतरकाल बहुत है, अतः वहां इतने मात्र काल घूमनेवालेके लाभ देखा जाता है।

शंका – दस हजार वर्षसे कम आयुवालोंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि देवोंमें इससे नीचेके आयुविकल्प नहीं पाये जाते, अर्थात् उनमें दस हजार वर्षसे कम आयु सम्भव ही नहीं है।

सर्वलघु अन्तर्मुहूर्त कालमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ६४ ॥

देवोंमें छह पर्याप्तियोंकी पूर्णताका काल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। उनमें सर्वजघन्य कालसे पर्याप्तिको प्राप्त हुआ।

शंका—अपर्याप्त योगसे जो नवकबन्ध होता है उससे उदयको प्राप्त होकर निर्जीर्ण होनेवाली गोपुच्छायें बहुत हैं, क्योंकि उनका संचय परिणाम योगसे हुआ है। इसलिये आयकी अपेक्षा निर्जरा बहुत होनेके कारण सर्वलघु कालमें पर्याप्तियोंको नहीं प्राप्त कराना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि पंचेन्द्रिय सम्बन्धी एकान्तानुवृद्धि योग एकेन्द्रियके परिणाम योगसे असंख्यातगुणा है, इसलिये उसके द्वारा आनेवाले द्रव्यको स्तोक माननेमें विरोध आता है। अत एव सर्वलघु कालमें पर्याप्तिको प्राप्त हुआ, अन्यथा बहुत संचय होनेका प्रसंग आता है।

अन्तर्मुहूर्तमें सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ ॥ ६५ ॥

---

१ प्रतिषु 'पज्जत्ती' इति पाठः।

एत्थ वेदगसम्मत्तं चेव एसो पडिवज्जदि उवसमसम्मत्तंतरकालस्स पलिदोवमअसंखेज्जदिभागस्स एत्थाणुवलभादो । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण अणंताणुबंधीणं विसंजोजमाढवेदि[1] । तत्थ अधापवत्त अपुव्व-अणियट्टिकरणाणि तिण्णि वि करेदि । एत्थ अधापवत्तकरणे णत्थि गुणसेडी । कुदो ? साभावियादो । अपुव्वकरणपढमसमयप्पहुडि पुव्वं व उदयावलियबाहिरे गलिदसेसमपुव्व-अणियट्टिकरणद्धादो विसेसाहियमायामेण पदेसग्गेण संजदगुणसेडिपदेसग्गादो[2] असंखेज्जगुणं तदायामादो संखेज्जगुणहीणं गुणसेडिं करेदि । ठिदि अणुभागखंडयघादे आउअवज्जाणं कम्माणं पुव्वं व करेदि । एवं दोहि वि करणेहि काऊण अणंताणुबंधिचउक्कट्ठिदीओ उदयावलियबाहिराओ सेसकसायसरूवेण संछुहदि । एसा अणंताणुबंधिविसंजोजणकिरिया । जं संजदेण देसूणपुव्वकोडिसंजमगुणसेडीए कम्मणिज्जरं कदं तदो असंखेज्जगुणकम्ममेसो णिज्जरेदि । कधमेदं णव्वदे ? अणंतकम्मंसे त्ति गाहासुत्तादो ।

यहां यह वेदकसम्यक्त्वको ही प्राप्त करता है, क्योंकि, उपशमसम्यग्दर्शनका अन्तरकाल जो पल्यका असंख्यातवां भाग है वह यहां नहीं पाया जाता । पश्चात् अन्तर्मुहूर्त विताकर अनन्तानुबन्धियोंके विसंयोजनको प्रारम्भ करता है । वहां अधःप्रवृत्तकरण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण इन तीनों ही करणोंको करता है । यहां अधःप्रवृत्तकरणमें गुणश्रेणि नहीं है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर पहिलेके समान उदयावलीके बाहर आयामकी अपेक्षा अपूर्व व अनिवृत्ति करणके कालसे विशेष अधिक प्रदेशाग्रकी अपेक्षा संयतगुणश्रेणिके प्रदेशाग्रसे असंख्यातगुणी, किन्तु उसके आयामसे संख्यातगुणी हीन ऐसी गलितशेष गुणश्रेणि करता है । आयुको छोड़कर शेष कर्मोंका स्थितिकाण्डकघात और अनुभागकाण्डकघात पहिलेके ही समान करता है । इस प्रकार दोनों ही करणों द्वारा करके अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी उदयावलीसे बाहरकी सब स्थितियोंको शेष कषायोंके रूपसे परिणमाता है । यह अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजनकी क्रिया है । संयतने कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण संयमगुणश्रेणि द्वारा जो कर्मनिर्जरा की, उससे यह असंख्यातगुणी कर्मनिर्जरा करता है ।

शंका — यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान — 'अणंतकम्मंसे' अर्थात् अनन्तानुबन्धीका विसंयोजन करनेवालेके संयतकी अपेक्षा असंख्यातगुणी कर्मनिर्जरा होती है, इस गाथासूत्रसे जाना जाता है ।

१ अ-आप्रत्योः 'मांढवेदि' इति पाठः । २ अ-आ-काप्रतिषु 'पडिवग्गणादो' इति पाठः ।

तत्थ य भवट्ठिदिं दसवाससहस्साणि देसूणाणि सम्मत्तमणुपालइत्ता थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति मिच्छत्तं गदो ॥ ६६ ॥

किमट्ठं सम्मत्तेण दसवाससहस्साणि हिंडाविदो ? ण, सम्माइट्ठिस्स सगट्ठिदिसंतादो हेट्ठा बंधमाणस्स थोवट्ठिदीसु ट्ठिदकम्मपदेसाणं बहुआणं णिज्जरुवलंभादो जिणपूजा-वंदण णमंसणेहि य बहुकम्मपदेसणिज्जरुवलंभादो च । संजदेसु संजदासंजदेसु वा अणंताणुबंधीयो किण्ण विसंजोइदाओ ? तत्थ संजम संजमासंजमगुणसेडिणिज्जराए परिहाणिप्पसंगादो । अवसाणे मिच्छत्तं किमिदि णीदो ? ण, अण्णहा एइंदिएसु उववादाभावादो ।

मिच्छत्तेण कालगदसमाणो बादरपुढविजीवपज्जत्तएसु उववण्णो ॥ ६७ ॥

देवेसु उप्पण्णस्स पढमसमयपदेससंतादो बादरपुढविपज्जत्तएसु उप्पण्णपढमसमयस्स

वहां कुछ कम दस हजार वर्ष भवस्थिति तक सम्यक्त्वका पालन कर जीवितके थोड़ा शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ ॥ ६६ ॥

शंका— सम्यक्त्वके साथ दस हजार वर्ष तक किसलिये घुमाया ?

समाधान— नहीं, क्योंकि सम्यग्दृष्टिके जितना स्थितिसत्त्व होता है उससे स्थितिबन्ध कम होता है, अतः उसके स्तोक स्थितियोंमें स्थित बहुत कर्मप्रदेशोंकी निर्जरा पाई जाती है तथा जिनपूजा वन्दना और नमस्कारसे भी बहुत कर्मप्रदेशोंकी निर्जरा पायी जाती है । इसलिये इसे दस हजार वर्ष तक सम्यक्त्वके साथ घुमाया है ।

शंका— इस जीवके पहले मनुष्य पर्यायमें संयत अवस्थाके रहते हुए या संयतासंयत अवस्थाको प्राप्त करा कर अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी विसंयोजना क्यों नहीं करायी ?

समाधान— वहां संयम और संयमासंयम गुणश्रेणिनिर्जराकी हानिका प्रसंग आनेसे अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी विसंयोजना नहीं करायी ।

शंका— अन्तमें मिथ्यात्वको क्यों प्राप्त कराया है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि ऐसा किये बिना एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होना सम्भव नहीं है ।

मिथ्यात्वके साथ मृत्युको प्राप्त होकर बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंमें उत्पन्न हुआ ॥ ६७ ॥

देवोंमें उत्पन्न हुए उक्त जीवके प्रथम समय सम्बन्धी प्रदेशसत्त्वसे बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें प्रदेशसत्त्व असंख्यातवां भाग कम

पदेससंतमसंखेज्जभागहीणं, सम्मत्ताणंताणुबंधिविसंजोजणकिरियाहि विणासिदकम्मपदेसत्तादो। बादरपुढविपज्जत्ते मोत्तूण सुहुमणिगोदेसु किण्ण उप्पाइदो ? ण, देवाणं तत्थाणतरमेव उववादाभावादो। बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्तएसु बादरआउप्पज्जत्तएसु वा किण्ण उप्पाइदो ? ण, तेसु उप्पाइज्जमाणस्स देवावसाणमिच्छत्तद्धाए बहुत्तेण विणा तत्थ उववादाभावादो। कधमेद णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो, अण्णहा बादरपुढविपज्जत्तएसुप्पत्तिणियमाणुववत्तीदो।

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥६८॥

(बादरपुढविकाइयपज्जत्तएगताणुवड्ढिजोगेण आगच्छमाणपदेसादो सुहुमणिगोदपरिणामजोगेण सचिदगोउच्छा उदए गलमाणा संखेज्जगुणा, तदो संचयाभावादो।)

है, क्योंकि, पहले सम्यक्त्व व अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजन क्रिया द्वारा कर्मप्रदेशका विनाश किया जा चुका है।

शंका— बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंको छोड़कर सूक्ष्म निगोद जीवोंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, देवोंकी उनमें देव पर्यायके अनन्तर ही उत्पत्ति सम्भव नहीं है।

शंका— बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त अथवा बादर जलकायिक पर्याप्तकोंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उनमें यह जीव तभी उत्पन्न कराया जा सकता है जब इसके देव पर्यायके अन्तमें मिथ्यात्वकाल बहुत पाया जाय। उसके बिना इसका वहां उत्पाद सम्भव नहीं है।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— इसी सूत्रसे जाना जाता है, अन्यथा बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तकोंमें उत्पत्तिका नियम घटित नहीं होता है।

सर्वलघु अन्तर्मुहूर्त कालमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ६८ ॥

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त सम्बन्धी एकान्तानुवृद्धियोगसे आनेवाले प्रदेशकी अपेक्षा सूक्ष्म निगोद जीव सम्बन्धी परिणाम योगसे संचित गोपुच्छा, जो कि उदयमें निर्जराको प्राप्त हो रही है, संख्यातगुणी है, क्योंकि, उससे संचय नहीं है (?)।

शंका— सर्वलघु कालमें पर्याप्तिको किसलिये प्राप्त कराया है ?

---

१ प्रतिपूपलभ्यमानोऽयं कोष्ठकस्थ पाठोऽत्रासम्बद्ध प्रतिभाति।

किमट्ठं सव्वलहुं पज्जत्तिं णीदो ? सव्वलहुएण कालेण सुहुमणिगोदेसु पवेसिय अप्पदरकालब्भंतरे चेव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिखंडयघादेहि अंतोकोडा-कोडिट्ठिदिसंतकम्मं घादिय सुहुमणिगोदट्ठिदिसंतसमाणकरणट्ठं, बादरेइंदियजोगादो असंखेज्ज गुणहीणेण सुहुमेइंदियजोगेण बंधाविय उदए बहुप्पदेसणिज्जरणट्ठं च सव्वलहुएण कालेण पज्जत्तिं णीदो ।

अंतोमुहुत्तेण कालगदसमाणो सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तएसु उववण्णो ॥ ६९ ॥

अपज्जत्तेसे मोत्तूण पज्जत्तएसु चेव किमट्ठमुप्पाइदो ? ण, अपज्जत्तविसोहीदो अणंत-गुणाए पज्जत्तविसोहीए दीहट्ठिदिखंडयघादणट्ठं तत्थुप्पत्तीदो । अपज्जत्तजोगादो असंखेज्ज गुणेण पज्जत्तजोगेण कम्मग्गहणं कुणंतस्स खविदकम्मंसियत्तं किण्ण फिट्टदे ? ण, पलिदो वमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तअप्पदरकाले ओसप्पिणिकाले व्व सहावदो चेव गुणगारकालेण

समाधान— सर्वलघु काल द्वारा सूक्ष्म निगोद जीवोंकी पर्यायमें ले जाकर अल्पतरकालके भीतर ही पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण स्थितिकाण्डकघातोंके द्वारा अन्तःकोड़ाकोड़ि प्रमाण स्थितिसत्त्वका घात करके उसे सूक्ष्म निगोद जीवोंके स्थितिसत्त्वके समान करनेके लिये तथा बादर एकेन्द्रियके योगसे असंख्यातगुणे हीन ऐसे सूक्ष्म एकेन्द्रियके योग द्वारा बन्ध कराकर उदयमें लाकर बहुत प्रदेशोंकी निर्जरा करानेके लिये भी सर्वलघु कालमें पर्याप्तिको प्राप्त कराया है।

अन्तर्मुहूर्त कालके भीतर मरणको प्राप्त होकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंमें उत्पन्न हुआ ॥ ६९ ॥

शंका— अपर्याप्त सूक्ष्म निगोदियोंको छोड़कर पर्याप्त सूक्ष्म निगोदियोंमें ही किसलिये उत्पन्न कराया है ?

समाधान— नहीं क्योंकि अपर्याप्तकोंकी विशुद्धिसे अनन्तगुणी पर्याप्त विशुद्धि द्वारा दीर्घ स्थितिकाण्डकोंका घात करानेके लिये पर्याप्तकोंमें उत्पन्न कराया है ।

शंका— अपर्याप्त योगकी अपेक्षा असंख्यातगुणे पर्याप्तयोगके द्वारा कर्मको ग्रहण करनेवाले जीवका क्षपितकर्मांशिकत्व क्यों नहीं नष्ट होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, इसके पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण यह अल्पतर काल अवसर्पिणी कालके समान गुणाकार काल द्वारा अन्तरित होकर

तरिय पयट्टमाणे आगमादो णिज्जराए थोवत्ताभावादो। ठिदिखंडय घादयमाणो जदि बहुसो पज्जत्तेसु चेव उप्पज्जदि तो 'बहुआ अपज्जत्तभवा, थोवा पज्जत्तभवा' इच्चेदेण सुत्तेण विरोहो किण्ण जायदे? ण, तस्स सुत्तस्स भुजगारकालविसयत्तादो पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागेणूणकम्मट्ठिदिविसयत्तादो वा। सजदचरो असजदसम्माइट्ठी देवो सव्वलहुएण कालेण सुहुमेइंदिएसु उववज्जमाणो पज्जत्तएसु चेव उप्पज्जदि त्ति वा ण पुव्वुत्तदोससमवो।

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेहि ठिदिखंडयघादेहि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण कालेण कम्मं हदसमुप्पत्तियं कादूण पुणरवि बादरपुढविजीवपज्जत्तएसु उववण्णो ॥ ७० ॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ ठिदिखंडयसलागाओ होंति त्ति कध णव्वदे? जुत्तीदो। त जहा— अंतोमुहुत्तमेत्तुक्कीरणद्धाए[3] जदि एगा ट्ठिदिखंडयसलागा लब्भदि तो

स्वभावसे ही प्रवर्तमान हुआ है, इसलिये इसमें आयकी अपेक्षा निर्जराका कम पाया जाना सम्भव नहीं है।

शंका— स्थितिकाण्डकका घातनेवाला यदि बहुत बार पर्याप्तकोंमें ही उत्पन्न होता है तो 'अपर्याप्त भव बहुत हैं और पर्याप्त भव स्तोक हैं' इस सूत्रसे विरोध क्यों न होगा?

समाधान—नहीं, क्योंकि, एक तो यह सूत्र भुजाकारकालको विषय करता है और दूसरे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन कर्मस्थितिको विषय करता है, इसलिये पूर्वोक्त दोष नहीं आता। अथवा, जो पहले मनुष्य पर्यायमें संयत रहा है ऐसा असंयतसम्यग्दृष्टि देव सर्वलघु काल द्वारा सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होता हुआ पर्याप्तकोंमें ही उत्पन्न होता है। इसलिये भी पूर्वोक्त दोषकी सम्भावना नहीं है।

पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण स्थितिकाण्डकघातशलाकाओंके द्वारा तथा पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण कालके द्वारा कर्मको ह्रस्व करके फिर भी बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुआ ॥ ७० ॥

शंका— स्थितिकाण्डकशलाकायें पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण होती हैं, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— यह युक्तिसे जाना जाता है। यथा— यदि अन्तर्मुहूर्त मात्र उत्कीरणकालमें एक स्थितिकाण्डकशलाका प्राप्त होती है तो पल्योपमके असंख्यातवें

---

१ अ-आ काप्रतिषु 'षा' इत्येतत्पद नोपलभ्यते। २ अप्रतौ 'किमहिद', आप्रतौ 'किम्महिद', काप्रतौ 'किम्महिद-', मप्रतौ 'कम्महद-' इति पाठः। ३ अप्रतौ 'मेत्तुमक्कणद्धाए', काप्रतौ 'मेत्तकरणद्धाए', ताप्रतौ 'मेत्तुक्क (क्की) णद्धाए' इति पाठः।

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तमप्पदरकालब्भंतरे केत्तियाओ ट्ठिदिखंडयसलागाओ लब्भामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ ट्ठिदिखंडय सलागाओ लब्भंति। एत्थ चदुहि भावणाहि सिस्साणं पबोहो[1] उप्पादेदव्वो। पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिखंडएहि अंतोकोडाकोडिं घादिय सागरोवमतिण्णिसत्तभागमेत्तट्ठिदिसंतकम्मे ठविदे को लाहो। आदो त्ति पुच्छिदे उच्चदे—अंताकोडाकोडिसागरोवमेसु समयाविरोहेण विहंजिदूण ट्ठिदिकम्मपदेसेसु सागरोवमतिण्णिसत्तभागम्मि ओवट्टिदूण पदिदेसु गोउच्छाओ थूला होदूण णिज्जरंति त्ति एसो लाहो। एवं कम्मं हदसमुप्पत्तियं कादूण पुणरवि बादरपुढविजीवपज्जत्तएसु किमट्ठमुप्पाइदो ? पुणरवि संजमादिगुणसेडीहि कम्मणिज्जरणट्ठं। सुहुमणिगोदपज्जत्तएसु उप्पण्णपढमसमयपदेससंतादो पुणरवि बादरपुढविपज्जत्तएसु उप्पण्णपढमसमयसंतकम्मं असंखेज्जभागहीणं, अप्पदरकालेण णिज्जिण्णासंखेज्जदिभागमत्तदव्वादो[2]।

भाग प्रमाण अल्पतरकालके भीतर कितनी स्थितिकाण्डकशलाकायें प्राप्त होंगी इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छा राशिको भाजित करनेपर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण स्थितिकाण्डकशलाकायें प्राप्त होती हैं।

यहां चार भावनाओं द्वारा शिष्योंको विशेष ज्ञान उत्पन्न कराना चाहिये।

शंका— पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण स्थितिकाण्डकों द्वारा अन्तः कोटाकोटि प्रमाण स्थितिको घात कर सागरोपमके सात भागोंमेंसे तीन भाग ($\frac{3}{7}$) प्रमाण स्थितिसत्त्वके स्थापित करनेमें कौनसा लाभ है ?

समाधान— अन्तःकोडाकोटि सागरोपमोंमें समयाविरोधसे विभक्त कर स्थित कर्मप्रदेशोंके सागरोपमके सात भागोंमेंसे तीन भागोंमें अपकर्षित होकर पतित होनेपर गोपुच्छायें स्थूल होकर निर्जराको प्राप्त होने लगती हैं यह लाभ है।

शंका— इस प्रकार कर्मको हतसमुत्पत्तिक करके फिरसे भी बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तकोंमें किसलिये उत्पन्न कराया ?

समाधान— फिर भी संयमादि गुणश्रेणियों द्वारा कर्मनिर्जरा करानेके लिये उनमें उत्पन्न कराया है।

सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें जितना प्रदेशसत्त्व था उसकी अपेक्षा फिरसे बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तकोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें जो प्रदेशसत्त्व रहा है वह उससे असंख्यातवें भागसे हीन है क्योंकि अल्पतरकालके भीतर द्रव्यकी अपेक्षा असंख्यातवें भाग मात्र अधिक द्रव्यकी ही निर्जरा हुई है।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'पबोह' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु '-दव्वादो' इति पाठः। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'णिज्जिण्ण' इति पाठः।

एवं णाणाभवग्गहणेहि अट्ठ संजमकंडयाणि अणुपालइत्ता चदुक्खुत्तो कसाए उवसामइत्ता[1] पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग-[2] मेत्ताणि संजमासंजमकंडयाणि सम्मत्तकंडयाणि च अणुपालइत्ता एवं संसरिदूण अपच्छिमे[3] भवग्गहणे पुणरवि पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो[4] ॥ ७१ ॥

एदेण सुत्तेण संजम-संजमासंजम-सम्मत्तकंडयाणं कसायउवसामणाए च संखा परूविज्जदे। तं जहा— चदुक्खुत्तो संजमे पडिवण्णे एगं संजमकंडयं होदि। एरिसाणि अट्ठ चेव संजमकंडयाणि होंति, एत्तो उवरि संसाराभावादो। अट्ठसु संजमकंडएसु च चत्तारि चेव कसायउवसामणवारा। एत्थ जं जीवट्ठाणचूलियाए चारित्तमोहणीयस्स उवसामणविहाणं दंसणमोहणीयस्स उवसामणविहाणं च परूविदं तं परूवेदव्वं। संजमासंजमकंडयाणि पुण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। संजमासंजमकंडएहिंतो सम्मत्तकंडयाणि विसेसाहियाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। कधमेदं णव्वदे?

इस प्रकार नाना भवग्रहणोंके द्वारा आठ वार संयमकाण्डकोंका पालन करके, चार वार कषायोंको उपशमा कर, पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र संयमासंयमकाण्डकों व सम्यक्त्वकाण्डकोंका पालन कर; इस प्रकार परिभ्रमण कर अन्तिम भवग्रहणमें फिर भी पूर्वकोटि आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ ॥ ७१ ॥

इस सूत्रके द्वारा संयम, संयमासंयम और सम्यक्त्वके काण्डकोंकी तथा कषायोपशामनाकी संख्या कही गई है। यथा— चार बार संयमको प्राप्त करनेपर एक संयमकाण्डक होता है। ऐसे आठ ही संयमकाण्डक होते हैं, क्योंकि, इससे आगे संसार नहीं रहता। आठ संयमकाण्डकोंके भीतर कषायोपशामनाके वार चार ही होते हैं। जीवस्थान-चूलिकामें जो चारित्रमोहके उपशामनविधानकी और दर्शनमोहके उपशामनविधानकी प्ररूपणा की गई है, उसकी यहां प्ररूपणा करना चाहिये। परन्तु संयमासंयमकाण्डक पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण होते हैं। संयमासंयमकाण्डकोंसे सम्यक्त्वकाण्डक विशेष अधिक हैं जो पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र हैं।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

---

१ अप्रतौ 'उवसावइत्तादो', आ-काप्रत्योः 'उवसामइत्तादो' इति पाठः। २ अप्रतौ 'पलिदो० संखे०', काप्रतौ 'पलिदोवमस्स सखेज्जदि' इति पाठः। ३ अ-आप्रत्योः 'अपच्छिम' इति पाठः।

४ पल्लासंखियभागोणकम्मठिइमच्छिओ निगोएसु। सुहुमेसु (सु) भवियजोग्गं जहन्नयं कट्टु निग्गम्म ॥ जोगेसु (सु) संखवारे सम्मत्तं लभिय देसविरयं च। अट्ठक्खुत्तो विरई संजोयणहा य तइवारे ॥ चउरुवसमित्तु मोहं लहुं खवेंतो भवे खवियकम्मो। पाएण तहिं पगयं पडुच्च काई (ओ) वि सविसेसं ॥ क. प्र २, ९४-९६

गुरूवदेसादो। अणेण विहाणेण कम्मणिज्जरं काऊण अपच्छिमे भवग्गहणे पुव्वकोडाउ एसु मणुसेसु किमट्ठमुप्पाइदो ? खवगसेडिचडावणट्ठं।

सव्वलहुं जोणिणिक्खमणजम्मणेण जादो अट्ठवस्सीओ ॥७२॥

सुगममेदं।

संजमं पडिवण्णो ॥ ७३ ॥

सुगमं।

तत्थ भवट्ठिदिं पुव्वकोडिं देसूणं संजममणुपालइत्ता थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति यं खवणाए अब्भुट्ठिदो ॥ ७४ ॥

एत्थ जहा चूलियाए चरित्तमोहक्खवणविहाणं दंसणमोहक्खवणविहाणं च परूविदं तहा परूवेदव्वं। णवरि सम्मत्तुवसामगस्स गुणसेडीए पदेसणिज्जरादो संजदासंजदस्स गुणसेडीए पदेसणिज्जरा असंखेज्जगुणा। तत्तो संजदस्स समयं पडि गुणसेडीए

समाधान— यह गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

शंका— इस विधानसे कर्मनिर्जरा कराके अन्तिम भवग्रहणमें पूर्वकोटि आयु वाले मनुष्योंमें किसलिये उत्पन्न कराया है?

समाधान— क्षपकश्रेणि चढ़ानेके लिये उनमें उत्पन्न कराया है।

सर्वलघु कालमें योनिनिष्क्रमण रूप जन्मसे उत्पन्न हो कर आठ वर्षका हुआ ॥ ७२ ॥

यह सूत्र सुगम है।

पश्चात् संयमको प्राप्त हुआ ॥ ७३ ॥

यह सूत्र सुगम है।

वहां कुछ कम पूर्वकोटि मात्र भवस्थिति तक संयमका पालन कर जीवितके स्तोक शेष रहनेपर क्षपणाके लिये उद्यत हुआ ॥ ७४ ॥

जिस प्रकार चूलिकामें चारित्रमोहके क्षय करनेकी विधि और दर्शनमोहके क्षय करनेकी विधि कही गई है उसी प्रकार यहां भी उसे कहना चाहिये। विशेषता यह है कि उपशम सम्यक्त्वको प्राप्त करनेवाले जीवके जो गुणश्रेणि द्वारा प्रदेशनिर्जरा होती है उससे संयतासंयतके गुणश्रेणि द्वारा होनेवाली प्रदेशनिर्जरा असंख्यातगुणी है। उससे प्रतिसमय संयतके गुणश्रेणि द्वारा होनेवाली प्रदेशनिर्जरा

१ अ-आ-काप्रतिषु 'गुणसेडायणपद' इति पाठः। २ अ-आप्रत्योः 'थोवावसेसे जीविदव्वं ए त्ति य' ताप्रतौ 'थोवावसेसे जीविदव्वे त्ति य' इति पाठः। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'पदिसा येव' इति पाठः।

पदेसणिज्जरा असंखेज्जगुणा। तत्तो अणंताणुबंधिं विसंजोजंतस्स समयं पडि गुणसेडीए पदेसणिज्जरा असंखेज्जगुणा। तत्तो दंसणमोहणीयं खवेंतस्स पदेसणिज्जरा असंखेज्जगुणा। तत्तो चारित्तमोहणीयमुवसामेंतस्स अपुव्वकरणस्स गुणसेडिणिज्जरा असंखेज्जगुणा। अणियट्टिस्स गुणसेडिणिज्जरा असंखेज्जगुणा। सुहुमसांपराइयस्स गुणसेडिणिज्जरा असंखेज्जगुणा। उवसंतकसायस्स गुणसेडिणिज्जरा असंखेज्जगुणा। तत्तो अपुव्वखवगस्स गुणसेडिणिज्जरा असंखेज्जगुणा। अणियट्टिखवगस्स गुणसेडिणिज्जरा असंखेज्जगुणा। सुहुमकसायखवगस्स गुणसेडिणिज्जरा असंखेज्जगुणा। तत्तो खीणकसायस्स गुणसेडिणिज्जरा असंखेज्जगुणा। सत्थाणसजोगिकेवलिस्स गुणसेडिणिज्जरा असंखेज्जगुणा। जोगणिरोहेण वट्टमाणसजोगिकेवलिस्स गुणसेडिणिज्जरा असंखेज्जगुणा त्ति णिज्जराविसेसो जाणिदव्वो। तत्थ चारित्तमोहक्खवणविहाणं किमट्ठं ण लिहिज्जदे? गंथबहुत्तभएण पुणरुत्तदोसभएण वा।

चरिमसमयछदुमत्थो जादो। तस्स चरिमसमयछदुमत्थस्स णाणावरणीयवेदणा दव्वदो जहण्णा ॥ ७५ ॥

चरिमसमयछदुमत्थो णाम खीणकसाओ, छदुमं णाम आवरणं, तम्हि चिट्ठदि

असंख्यातगुणी है। उससे अनन्तानुबन्धीका विसंयोजन करनेवालेके गुणश्रेणि द्वारा प्रतिसमय होनेवाली प्रदेशनिर्जरा असंख्यातगुणी है। उससे दर्शनमोहनीयका क्षय करनेवालेकी प्रदेशनिर्जरा असंख्यातगुणी है। उससे चारित्रमोहनीयका उपशम करनेवाले अपूर्वकरणवर्ती जीवकी गुणश्रेणिनिर्जरा असंख्यातगुणी है। उससे अनिवृत्तिकरणवर्ती जीवकी गुणश्रेणिनिर्जरा असंख्यातगुणी है। उससे सूक्ष्मसाम्परायिककी गुणश्रेणिनिर्जरा असंख्यातगुणी है। उससे उपशान्तकषायकी गुणश्रेणिनिर्जरा असंख्यातगुणी है। उससे अपूर्वकरण क्षपककी गुणश्रेणिनिर्जरा असंख्यातगुणी है। उससे अनिवृत्तिकरण क्षपककी गुणश्रेणिनिर्जरा असंख्यातगुणी है। उससे सूक्ष्म साम्परायिक क्षपककी गुणश्रेणिनिर्जरा असंख्यातगुणी है। उससे क्षीणकषायकी गुणश्रेणिनिर्जरा असंख्यातगुणी है। उससे स्वस्थान सयोगकेवलीकी गुणश्रेणिनिर्जरा असंख्यातगुणी है। उससे योगनिरोध अवस्थाके साथ विद्यमान सयोगकेवलीकी गुणश्रेणिनिर्जरा असंख्यातगुणी है। इस प्रकार निर्जराकी विशेषता जानने योग्य है।

शंका— यहां चारित्रमोहके क्षपणका विधान किसलिये नहीं लिखते?

समाधान— ग्रन्थकी अधिकताके भयसे अथवा पुनरुक्त दोषके भयसे उसे यहां नहीं लिखा है।

पश्चात् अन्तिमसमयवर्ती छद्मस्थ हुआ। उस अन्तिमसमयवर्ती छद्मस्थके ज्ञानावरणीयकी वेदना द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य है ॥ ७५ ॥

चरमसमयवर्ती छद्मस्थका दूसरा नाम क्षीणकषाय है, क्योंकि, छद्म नाम आवरणका है, उसमें जो स्थित रहता है वह छद्मस्थ है, ऐसी इसकी व्युत्पत्ति है।

त्ति अणुमग्गो त्ति उप्पाइदो। एत्थ उवसंहारो उच्चदे— तस्स दुवे अणियोगद्दाराणि परूवणा पमाणमिदि। तत्थ ताव पवाइज्जंतेण उवएसेण परूवणा उच्चदे। तं जहा— णाणावरणीयस्स कम्मट्ठिदिआदिसमए जं बद्धं कम्मं तस्स खीणकसायचरिमसमए एगो वि परमाणू णत्थि। कम्मट्ठिदिविदियसमए जं बद्धं कम्मं तं पि णत्थि। एवं तदिय-चउत्थ-पंचमादिसमएसु पबद्धं कम्मं खीणकसायचरिमसमए णत्थि त्ति णेदव्वं जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणं पढमवियप्पो त्ति। णिल्लेवणट्ठाणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि चेव होंति त्ति कधं णव्वदे? कसायपाहुडचुण्णिसुत्तादो। तं जहा— कम्मट्ठिदिआदिसमए जं बद्धं कम्मं तं कम्मट्ठिदिचरिमसमए सुद्धं णिल्लेविज्जदि[1]। तं चेव कम्मट्ठिदिदुचरिमसमए वि सुद्धं णिल्लेविज्जदि। एवं तिचरिम-चदुचरिमादिसु वि सुद्धं णिल्लेविज्जदि त्ति भणिदूण णेदव्वं जाव असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि हेट्ठदो ओसरिदूण ट्ठिदसमओ त्ति। एवं सेससमयपबद्धाणं पि परूवेदव्वमिदि। तदो

यहां उपसंहार कहा जाता है— उसके प्ररूपणा और प्रमाण ये दो अनुयोगद्वार हैं। उनमें पहिले प्रवाह रूपसे आये हुए उपदेशके अनुसार प्ररूपणा कही जाती है। यथा— ज्ञानावरणीयका कर्मस्थितिके प्रथम समयमें जो कर्म बांधा गया है उसका क्षीणकषायके अन्तिम समयमें एक भी परमाणु नहीं है। कर्मस्थितिके द्वितीय समयमें जो कर्म बांधा गया है वह भी नहीं है। इसी प्रकार तृतीय चतुर्थ और पंचम आदि समयोंमें बांधा गया कर्म क्षीणकषायके अन्तिम समयमें नहीं है। इस प्रकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण निर्लेपनस्थानोंके प्रथम विकल्पके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये।

शंका— निर्लेपनस्थान पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण ही होते हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— यह कषायप्राभृतके चूर्णिसूत्रोंसे जाना जाता है। यथा—कर्मस्थितिके प्रथम समयमें जो कर्म बांधा गया है वह कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें न होनेके कारण निर्जराको नहीं प्राप्त होता। वही कर्मस्थितिके द्विचरम समयमें भी न होनेके कारण निर्जराको नहीं प्राप्त होता। इसी प्रकार त्रिचरम और चतुश्चरम आदि समयोंमें भी न होनेके कारण निर्जराको नहीं प्राप्त होता है। इस प्रकार कहकर पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल नीचे उतरकर स्थित समय तक ले जाना चाहिये। इस प्रकार शेष समयप्रबद्धोंका भी कथन करना चाहिये। इसलिये

---

१ अप्रतौ 'उवसंहार' अ-आप्रत्योः 'उवसंहारो' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-काप्रतिषु [illegible] इति पाठः। ३ अ-आ-प्रत्योः 'णिल्लेविज्जदि' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'इदसिद' इति पाठः।

कम्मट्ठिदिआदिसमयप्पहुडि पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेत्ताण समयपबद्धाणमेक्को वि परमाणू खीणकसायचरिमसमए णत्थि त्ति णव्वदे । सेससमयपबद्धाणमेक्क-दो-तिण्णिपरमाणू आदिं कादूण जाव उक्कस्सेण अणंता परमाणू अत्थि ।

अप्पवाइज्जंतेण उवदेसेण पुण कम्मट्ठिदीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि कम्मट्ठिदिआदि-समयपबद्धस्स णिल्लेवणट्ठाणाणि होंति। एवं सव्वसमयपबद्धाणं वत्तव्वं। सेसाण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताण समयपबद्धाणमेगपरमाणुमादिं कादूण जाव उक्कस्सेण अणंता परमाणू अत्थि ।

पमाण उच्चदे— सव्वदव्वे समकरणे कदे दिवड्ढगुणहाणिमेत्ता समयपबद्धा होंति । पुणो एदेसिं दिवड्ढगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धाणमसखेज्जदिभागो चेव णट्ठो, सेसबहुभागा खीणकसायचरिमसमए अत्थि । कुदो ? खीणकसायचरिमगुणसेडि-चरिमगोवुच्छादो दुचरिमादिगुणसेडिगोवुच्छाण असंखेज्जदिभागत्तादो। एसा पमाण-परूवणा पवाइज्जंत अप्पवाइज्जंतउवदेसाणं दोण्णं पि समाणा, अप्पवाइज्जंत-उवदेसेण वि दिवड्ढगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धाणमुवलभादो। मोहणीयस्स कसायपाहुडे

इससे कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र समयप्रबद्धोंका एक भी परमाणु क्षीणकषायके अन्तिम समयमें नहीं है, यह जाना जाता है।

शेष समयप्रबद्धोंके एक दो व तीन परमाणुओंसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे अनन्त परमाणु तक होते हैं।

प्रवाह रूपसे नहीं आये हुए उपदेशके अनुसार कर्मस्थितिके आदि समय-प्रबद्धके निर्लेपनस्थान कर्मस्थितिके असंख्यातवें भाग मात्र होते हैं। इसी प्रकार सब समयप्रबद्धोंका कथन करना चाहिये। शेष रहे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र समयप्रबद्धोंके एक परमाणुसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे अनन्त परमाणु तक शेष रहते हैं।

अब प्रमाणका कथन करते हैं— सब द्रव्यका समीकरण करनेपर डेढ़ गुणहानि मात्र समयप्रबद्ध होते हैं । इन डेढ़ गुणहानि मात्र समयप्रबद्धोंका असंख्यातवा भाग ही नष्ट हुआ है। शेष बहुभाग क्षीणकषायके अन्तिम समयमें है, क्योंकि, क्षीणकषायकी अन्तिम गुणश्रेणिकी अन्तिम गोपुच्छासे द्विचरम आदि गुणश्रेणिकी गोपुच्छायें असख्यातवें भाग मात्र होती हैं । यह प्रमाणप्ररूपणा प्रवाहसे आये हुए और प्रवाहसे न आये हुए दोनों ही उपदेशोंके अनुसार समान है, क्योंकि, प्रवाहसे न आये हुए उपदेशके अनुसार भी डेढ़ गुणहानि मात्र समयप्रबद्ध पाये जाते हैं।

शंका— कषायप्राभृतमें मोहनीयके कहे गये निर्लेपनस्थान ज्ञानावरणके कैसे कहे जा सकते हैं ?

उक्कस्सेणवट्ठाणाणि णाणावरणस्स कधं होंतु सरिसं त्ति वुत्ते ? ण, विरोहाभावादो ।

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ ७६ ॥

एत्थ अजहण्णदव्वपरूवणे कीरमाणे चउव्विहा परूवणा होदि । तं जहा— खविदकम्मंसियस्स कालपरिहाणीए एगा[1], गुणिदकम्मंसियस्स कालपरिहाणीए[2] विदिया, खविदकम्मंसियस्स संतादो तदिया, गुणिदकम्मंसियस्स संतादो चउत्थी त्ति । तत्थ ताव पुव्वकोडिसमयाणं सेडिआगारेण रचणं कादूण खविदकम्मंसियस्स कालपरिहाणीए अजहण्ण-दव्वपमाणपरूवणं कस्सामो । तं जहा— पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणियं कम्म-ट्ठिदिं सुहुमणिगोदेसु खविदकम्मंसियलक्खणेण अच्छिय तदो णिस्सरिदूण तसकाइएसु उप्पज्जिय पुणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि संजमासंजमकंडयाणि पलिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि सम्मत्तकंडयाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि अणंताणुबंधिविसंजोयणकंडयाणि च अट्ठ संजमकंडयाणि चदुक्खुत्तो कसायउवसामणं च समयाविरोहेण कादूण बादरपुढविकाइयपज्जत्तएसु उववज्जिय मणुसेसु उववण्णो । तदो सत्तमासाहियअट्ठहि वासेहि तिण्णि वि करणाणि कादूण सम्मत्तं संजमं च जुगवं पडि-

---

समाधान— नहीं, क्योंकि इसमें कोई विरोध नहीं है ।

द्रव्यकी अपेक्षा जघन्यसे भिन्न ज्ञानावरणकी वेदना अजघन्य है ॥ ७६ ॥

अब अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा करते समय चार प्रकारकी प्ररूपणा है । यथा— क्षपितकर्मांशिकके कालपरिहानिकी अपेक्षा एक, गुणितकर्मांशिकके कालपरिहानिकी अपेक्षा द्वितीय, क्षपितकर्मांशिकके सत्त्वकी अपेक्षा तृतीय और गुणितकर्मांशिकके सत्त्वकी अपेक्षा चतुर्थ । इनमेंसे पहिले पूर्वकोटिके समयोंकी श्रेणि रूपसे रचना करके क्षपितकर्मांशिकके कालपरिहानिकी दृष्टिसे अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा करते हैं । यथा— पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन कर्मस्थिति प्रमाण काल तक सूक्ष्म निगोद जीवोंमें क्षपितकर्मांशिक स्वरूपसे रहकर फिर वहांसे निकलकर त्रसकायिकोंमें उत्पन्न होकर पश्चात् पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र संयमासंयमकाण्डकोंको पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र सम्यक्त्वकाण्डकोंको पल्यो-पमके असंख्यातवें भाग मात्र अनन्तानुबन्धिविसंयोजनकाण्डकोंको आठ संयम काण्डकोंको तथा चार बार कषायोपशामनाको आगममें कही गई विधिके अनुसार करके बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हो पुनः मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । पश्चात् सात मास अधिक आठ वर्षोंमें तीनों ही करणोंको करके उनके द्वारा सम्यक्त्व व संयमको एक साथ प्राप्त कर फिर कुछ कम पूर्वकोटि काल तक

---

१ प्रतिषु 'कालपरिहाणी एग' इति पाठः । २ आप्रतौ 'परिहाणीय', ताप्रतौ 'परिहाणी' इति पाठः ।
३ अ-आप्रत्योः 'संतेदम-' इति पाठः । ४ अ-आ-काप्रतिषु [illegible] इति पाठः ।

वज्जिय पुणो देसूणपुव्वकोडिं संजमगुणसेडीणिज्जर कादूण अणंताणुबंधिचउक्क विसंजोजिय दंसणमोहणीयं खविय अंतोमुहुत्तावसेसे जीविदव्वए त्ति चारित्तमोहक्खवणाए अब्भुट्ठिय ट्ठिदि-अणुभागखंडयसहस्सेहि गुणसेडिणिज्जराए च चारित्तमोहणीयं खविय खीणकसायचरिमसमए एगणिसेगट्ठिदीए एगसमयकालाए चेट्ठिदाए णाणावरणीयस्स जहण्णदव्व होदि ।

एदस्स जहण्णदव्वस्सुवरि ओकड्डुक्कड्डणमस्सिदूण परमाणुत्तर वड्ढिदे[1] जहण्णमजहण्णट्ठाणं होदि। जहण्णट्ठाण पेक्खिदूण एदमणतभागाहिय होदि, जहण्णदव्वेण जहण्णदव्वे भागे हिदे एगपरमाणुवलभादो । पुणो दोसु परमाणुसु वड्ढिदेसु अणतभागवड्ढी चेव होदि, अणतेण जहण्णदव्वदुभागेण जहण्णदव्वे भागे हिदे दोण्णं परमाणूणमुवलंभादो। पुणो तिसु पदेसेसु वड्ढिदेसु अणतभागवड्ढीए तदियमजहण्णट्ठाणं[2] होदि, जहण्णतदव्वतिभागेण जहण्णदव्वे भागे हिदे तिण्ण परमाणूणमुवलंभादो। एव उक्कस्ससंखेज्जमेत्तपदेसेसु वि वड्ढिदेसु अणंतभागवड्ढीए चेव उक्कस्ससखेज्जमेत्ताणि अजहण्णदव्वट्ठाणाणि उप्पज्जंति, जहण्णदव्वस्स उक्कस्ससखेज्जभागेण अणंतेण जहण्णदव्वे भागे हिदे

संयमगुणश्रेणिनिर्जरा करके अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी विसयोजना करके दर्शन मोहनीयका क्षय करके जीवितके अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर चारित्रमोहकी क्षपणामें उद्यत होकर हजारों स्थितिकाण्डकघात, हजारों अनुभागकाण्डकघात और गुणश्रेणिनिर्जरा द्वारा चारित्रमोहनीयका क्षय करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें एक समय कालवाली एक निपेकस्थितिके स्थित होनेपर ज्ञानावरणीयका जघन्य द्रव्य होता है ।

इस जघन्य द्रव्यके ऊपर अपकर्षण तथा उत्कर्षणका आश्रय कर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे वृद्धि होनेपर जघन्य अजघन्य स्थान होता है। जघन्य स्थानकी अपेक्षा यह अनन्तवें भागसे अधिक है, क्योंकि, जघन्य द्रव्यका जघन्य द्रव्यमें भाग देनेपर एक परमाणु ही लब्ध मिलता है। पुन: दो परमाणुओंकी वृद्धि होनेपर अनन्तभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, जघन्य द्रव्यके द्वितीय भाग ($\frac{1}{2}$) रूप अनन्तका जघन्य द्रव्यमें भाग देनेपर दो परमाणु लब्ध आते हैं। पुनः तीन प्रदेशोंकी वृद्धि होनेपर अनन्तभागवृद्धिका तृतीय अजघन्य स्थान होता है, क्योंकि, जघन्य द्रव्यके तृतीय भागका जघन्य द्रव्यमें भाग देनेपर तीन परमाणु लब्ध आते हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट संख्यात मात्र प्रदेशोंके भी बढ़नेपर अनन्तभागवृद्धिके ही उत्कृष्ट सख्यात मात्र अजघन्य द्रव्यस्थान उत्पन्न होते हैं, क्योंकि, जघन्य द्रव्यके उत्कृष्ट संख्यातवें भाग रूप अनन्तका

१ आप्रतौ 'वड्ढीएदे' इति पाठ । २ अ-काप्रतया 'तदियजहण्णट्ठाण' इति पाठ ।

उक्कस्ससंखेज्जमेत्तरूवाणमुवलंभादो। एवं परमाणुत्तरकमेण वड्ढाविय अजहण्णदव्ववियप्पा वत्तव्वा जाव जहण्णदव्वं जहण्णपरित्ताणंतेण खंडिय तत्थ एगखंडमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति। ताधे वि अणंतभागवड्ढी चेव, जहण्णपरित्ताणंतेण जहण्णदव्वे खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तवड्ढिदंसणादो। पुणो एदस्सुवरि एग-दुपरमाणुम्मि[1] वड्ढिदे अण्णो वि अजहण्णदव्ववियप्पो होदि। एसो वियप्पो अणंतभागवड्ढीए चेव जादो। कुदो? उक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जादो उवरिमसंखाए[2] अणंतसंखंतब्भावादो।

एदस्स अजहण्णदव्वस्स भागहारपरूवणं कस्सामो। तं जहा — जहण्णपरित्ताणंतं विरलिय जहण्णदव्वं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि जहण्णपरित्ताणंतेण जहण्णदव्वे खंडिदे तत्थ एगखंडं पावदि। पुणो तत्थ एगरूवधरिदं वड्ढिरूवोवट्टिदं हेट्ठा विरलेदूण उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि एगेगपरमाणू पावदि। तं घेत्तूण उवरिमविरलणरूवधरिदेसु समयाविरोहेण दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाणं पमाणं उच्चदे। तं जहा — रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि

जघन्य द्रव्यमें भाग देनेपर उत्कृष्ट संख्यात मात्र अंक खण्ड पाते हैं। इस प्रकार एक एक परमाणु अधिकताके क्रमसे बढ़ाकर जघन्य द्रव्यको जघन्य परीतानन्तसे खण्डित कर उसमें एक खण्ड मात्र परमाणुओंकी वृद्धि होने तक अजघन्य द्रव्य विकल्पोंको कहना चाहिये। तब तक भी अनन्तभागवृद्धि ही है क्योंकि जघन्य परीतानन्तसे जघन्य द्रव्यको खण्डित करनेपर उनमेंसे एक खण्ड मात्रकी वृद्धि देखी जाती है। पुनः इसके ऊपर एक दो परमाणुकी वृद्धि होनेपर अन्य भी अजघन्य द्रव्यका विकल्प होता है। यह विकल्प अनन्तभागवृद्धिका ही है क्योंकि उत्कृष्ट असंख्याता-संख्यातसे आगेकी संख्या अनन्त संख्याके अन्तर्गत है।

अब इस अजघन्य द्रव्यके भागहारकी प्ररूपणा करते हैं। यथा—जघन्य परीतानन्तका विरलन कर जघन्य द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर विरलन राशिके प्रत्येक एकके प्रति जघन्य परीतानन्तसे जघन्य द्रव्यको भाजित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड पाया जाता है। पश्चात् उनमेंसे एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको वृद्धि रूपोंसे अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उसका नीचे विरलन कर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति एक एक परमाणु प्राप्त होता है। उसको ग्रहण कर उपरिम विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यमें समयाविरोधसे देकर समीकरण करते समय परिहीन रूपोंका प्रमाण कहते हैं। यथा—एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जाकर यदि एक

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'दव्वाणि' इति पाठः। २ अ-आप्रत्योः 'पीवाचभि' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'वडिवरिल्लमाण' इति पाठः। ४ अ-आ-काप्रतिषु 'उवलब्भमाणो', ताप्रतौ 'देउवलब्भदो' इति पाठः।

तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स अणंतिमभागो लब्भदि। तम्मि जहण्णपरित्ताणंतम्मि सोहिदे सुद्धसेसमुक्कस्सअसंखेज्जा-संखेज्जमेत्तरूवाणि एगरूवस्स अणंताभागा[1] च भागहारो होदि। एदेण जहण्णदव्वे भागे हिदे इच्छिदद्व्वं होदि। एदस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढिदअजहण्णदव्वाणमणंत-भागवड्ढीए छेदभागहारो होदि। पुणो हेट्ठा उक्कस्समसंखेज्जासंखेज्जं[2] विरलेदूण उवरिम-एगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि अणंतपरमाणओ[3] पावेंति। पुणो ते उवरिमरूवधरिदेसु दादूण समकरणे कदे परिहीणरूवाण पमाणं वुच्चदे। तं जहा— रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणे जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदइच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवमागच्छदि। तम्मि उवरिम-विरलणाए सोहिदे सेसमुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जं होदि। एदेण जहण्णदव्वे भागे हिदे अजहण्णट्ठाणं होदि। एत्थेव असंखेज्जभागवड्ढीए आदी जादा। सपधि एदस्सुवरि एगपरमाणुम्मि वड्ढिदे तदणंतरउवरिमअजहण्णदव्वं होदि। एदस्स च्छेदभागहारो होदि।

अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार फलगुणित इच्छा राशिको प्रमाण राशिसे अपवर्तित करनेपर एक अंकका अनन्तवा भाग प्राप्त होता है। उसको जघन्य परीतानन्तमेंसे कम करनेपर उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात और एकका अनन्त बहुभाग शेष रहता है जो प्रकृतमें भागहार होता है। इसका जघन्य द्रव्यमें भाग देनेपर इच्छित द्रव्य होता है। इसके ऊपर एक एक परमाणु अधिक क्रमसे वृद्धिको प्राप्त अजघन्य द्रव्योंकी अनन्तभागवृद्धिका छेदभागहार होता है। पुन: नीचे उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातका विरलन कर उपरिम विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर विरलन राशिके प्रत्येक एकके प्रति अनन्त परमाणु प्राप्त होते हैं। पश्चात् उन्हें उपरिम विरलन राशिके प्रति देकर समीकरण करनेपर परिहीन रूपोंका प्रमाण कहते हैं। यथा— एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जानेपर यदि एक अंककी परिहानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार फलगुणित इच्छा राशिको प्रमाण राशिसे अपवर्तित करनेपर लब्ध एक अंक आता है। उसको उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर शेष उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात होता है। इसका जघन्य द्रव्यमें भाग देनेपर अजघन्य स्थान होता है। यहां ही असंख्यातभागवृद्धिका आदि होता है। अब इसके ऊपर एक परमाणुकी वृद्धि होनेपर तदनन्तर उपरिम अजघन्य द्रव्य होता है। इसका छेदभागहार होता है। इस प्रकार तब तक छेदभागहार

---

१ प्रतिषु 'अणंताडमागा' इति पाठ। २ अ-काप्रत्योः 'उक्कस्ससंखेज्जासंखेज्जं' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'परमाणूओ' इति पाठ।

एवं छेदभागहारो चेव होदूण गच्छदि जाव उवरिमएगरूवधरिदं रूवूणुक्कस्सअसंखेज्जा- संखेज्जेण खंडिदूण तत्थ रूवूणमेगखंडं वड्ढिदेत्ति । पुणो संपुण्णे खंडे वड्ढिदे समभाग- हारो होदि । एवं छेदभागहार-समभागहारसरूवेण ताव भागहारो गच्छदि जाव तप्पा- ओग्गपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं पत्तो त्ति । पुणो एदेण जहण्णदव्वे भागे हिदे एग- समयमोकड्डिदूण खीणकसायचरिमसमयादो हेट्ठा पविसाविय विणासिददव्वमागच्छदि । पुणो एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो जीवो जहण्णसामित्तविहाणेणागंतूण समऊण- पुव्वकोडिं संजममणुपालिय खवणाए अब्भुट्ठिय तदो खीणकसायचरिमसमए एगणिसेगं एगसमयकालं धरिदूण ट्ठिदो च, सरिसा । पुणो पुव्विल्लक्खवगं मोत्तूण समऊणपुव्व- कोडिसंजमक्खवगं घेत्तूण परमाणुत्तर-दुपरमाणुत्तरकमेण अणंतभागवड्ढि-असंखेज्जभागवड्ढीहि एगसमयमोकड्डिदूण खीणकसायचरिमसमयादो हेट्ठा पविसाविय विणासिददव्वं वड्ढावेदव्वं । एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, तदो अण्णेगो खवगो दुसमऊणपुव्वकोडिं संजममणुपालिय खीण- कसायचरिमसमए ट्ठिदो च, सरिसा । एवमेगेगसमयमोकड्डिदूण विणासिददव्वं वड्ढाविदूण पुव्वकोडिं तिसमऊण-चदुसमऊणादिकमेण ऊण संजमगुणसेडिं कराविय ओदारेदव्वं जाव

ही बढ़ा रहता है जब तक उपरिम एक विरलनके प्रति प्राप्त राशिको उत्कृष्ट असंख्याता- संख्यातसे खण्डित कर जो खण्ड आवे उनमेंसे एक कम एक खण्ड नहीं बढ़ जाता। पश्चात् सम्पूर्ण खण्डके बढ़नेपर समभागहार होता है। इस प्रकार छेदभागहार और समभागहार स्वरूपसे भागहार तब तक रहता है जब तक कि तत्प्रायोग्य पल्योपमका असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है। पश्चात् इसका जघन्य द्रव्यमें भाग देनेपर एक समय कम कर और क्षीणकषायके अन्तिम समयसे नीचे जाकर नाशको प्राप्त हुआ द्रव्य आता है। पुनः इस प्रकार वृद्धिको प्राप्त होकर स्थित हुआ जीव तथा अन्य एक जीव जो जघन्य स्वामित्वके विधानसे आकर एक समय कम पूर्वकोटि तक संयमका पालन कर क्षपणामें उद्यत होकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें एक समय कालवाले एक निषेकको धरकर स्थित है ये आपसमें समान हैं। पुनः पूर्वोक्त क्षपकको छोड़कर एक समय कम पूर्वकोटि तक संयमको पालनेवाले क्षपकको ग्रहण कर एक परमाणु अधिक दो परमाणु अधिकके क्रमसे अनन्तभागवृद्धि और असंख्यात भागवृद्धिके द्वारा एक समय कम कर क्षीणकषायके अन्तिम समयसे नीचे जाकर विनाशको प्राप्त हुए द्रव्यको बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार वृद्धिको प्राप्त होकर स्थित हुआ जीव तथा अन्य एक क्षपक जो दो समय कम पूर्वकोटि तक संयमका पालकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है आपसमें समान हैं। इस प्रकार एक एक समय कम करते हुए विनाशित द्रव्यको बढ़ाकर तीन समय कम व चार समय कम आदिके क्रमसे हीन पूर्वकोटि तक संयमगुणश्रेणि कराकर उतारना चाहिये जब

अण्णेगो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण मणुस्सेसु उववज्जिय सत्तमासाहियअट्ठ-वासाणमुवरि सम्मत्तं संजमं च घेत्तूण अणंताणुबंधिचउक्कं विसंजोजिय दंसणमोहणीयं खविय खीणकसाओ होदूण संखेज्जट्ठिदिखंडयसहस्साणि घादेदूण पुणो सेसखीणकसायद्धं मोत्तूण चरिमट्ठिदिखंडयस्स चरिमफालिं घेत्तूण खीणकसायसेसद्धाए उदयादिगुणसेडिकमेण संछुहिय कमेण गुणसेडिं गालिय एगणिसेगमेगसमयकालं धरेदूण ट्ठिदो त्ति। एवं वड्ढिदे पुणो एदस्स हेट्ठा ओदारेदुं ण सक्कदे, जहण्णत्तं पत्तसव्वद्धासु परिहाणीए करणोवाया-भावादो। पुणो एत्थ परमाणुत्तर-दुपरमाणुत्तरकमेण णिरंतरमेगो समयपबद्धो वड्ढावेदव्वो। कुदो? खविदकम्मंसियम्मि उक्कस्सेण एगो चेव समयपबद्धो वड्ढदि त्ति गुरूवएसादो।

तदो अण्णो खविद-घोलमाणलक्खणेण आगंतूण मणुस्सेसुप्पज्जिय सत्तमासाहिय-अट्ठवासाणमुवरि सम्मत्तं संजमं च जुगवं घेत्तूण सव्वजहण्णेण कालेण संजमगुणसेडिं कादूण खवणाए अब्भुट्ठिय सव्वजहण्णखवणकालेण खीणकसायचरिमसमयट्ठिदखविद-घोलमाणो पुव्विल्लेण सरिसो वि अत्थि ऊणो[1] वि अत्थि। तत्थ सरिसं घेत्तूण परमा-णुत्तर-दुपरमाणुत्तरादिकमेण अणंतभागवड्ढि-असंखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुण-

तक दूसरा एक जीव क्षपितकर्मांशिक स्वरूपसे आकर मनुष्योंमें उत्पन्न होकर सात मास अधिक आठ वर्षोंके पश्चात् सम्यक्त्व व संयमको ग्रहणकर अनन्तानुबन्धि-चतुष्कका विसंयोजन करके दर्शनमोहका क्षय कर क्षीणकषाय होकर संख्यात हजार स्थितिकाण्डकोंका घातकर पश्चात् शेष क्षीणकषायकालको छोड़कर अन्तिम स्थिति-काण्डककी अन्तिम फालिको ग्रहणकर क्षीणकषायके शेष कालमें उदयादि गुणश्रेणिके क्रमसे निक्षेप कर क्रमसे गुणश्रेणिको गलाकर एक समय कालवाले एक निषेकको धरकर स्थित होता है। इस प्रकार वृद्धि होनेपर फिर इसके नीचे उतारना शक्य नहीं है, क्योंकि, जघन्यताको प्राप्त सब कालोंमें परिहानि करनेका कोई अन्य उपाय नहीं पाया जाता। पश्चात् यहां एक परमाणु अधिक, दो परमाणु अधिकके क्रमसे निरन्तर एक समयप्रबद्ध बढ़ाना चाहिये, क्योंकि, क्षपितकर्मांशिक जीवके उत्कृष्ट रूपसे इस प्रकार एक ही समयप्रबद्ध बढ़ाया जा सकता है, ऐसा गुरुका उपदेश है।

इससे भिन्न क्षपितघोलमान स्वरूपसे आकर मनुष्योंमें उत्पन्न हो सात मास अधिक आठ वर्षोंके ऊपर सम्यक्त्व व संयमको एक साथ ग्रहण कर सर्वजघन्य कालसे संयमगुणश्रेणि करके क्षपणामें उद्यत होकर सर्वजघन्य क्षपणकालसे क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित क्षपितघोलमान जीव पूर्वोक्त जीवके सदृश भी है व हीन भी है। उनमें सदृशको ग्रहण कर जघन्यसे असंख्यातगुणा प्राप्त होने तक एक परमाणु अधिक, दो परमाणु अधिक इत्यादि क्रमसे अनन्तभागवृद्धि, असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभाग-

१ अ-आ काप्रतिषु 'ऊणा' इति पाठ।

वड्डि-असंखेज्जगुणवड्डि त्ति पंचहि वड्डीहि वड्डावेदव्वं जाव अण्णेगो उक्कस्सअसंखेज्जगुणं पत्तमिदि। पुणो अण्णेगो गुणिदघोलमाणो मणुस्सेसु उववज्जिय सत्तमासाहियअट्ठवासाणमुवरि सम्मत्तं संजमं च घेत्तूण खवगसेडिमब्भुट्ठिय खीणकसायस्स चरिमसमए ट्ठिदो पुव्विल्लदव्वेण सरिसो वि ऊणो वि अत्थि। पुणो सरिसदव्वं घेत्तूण परमाणुत्तरादिकमेण दोहि वड्डीहि वड्डावेदव्वं जाव उक्कस्सदव्वं जादं त्ति[1]। एवं वड्डिदे अवरो अण्णो जीवो गुणिदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण मणुस्सेसुववज्जिय सत्तमासाहियअट्ठवासाणमुवरि सम्मत्तं संजमं च घेत्तूण खवणाए अब्भुट्ठिय खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो, तस्स दव्वं गुणिदघोलमाणदव्वेण सरिसं पि अत्थि ऊणं पि अत्थि। तत्थ सरिसं घेत्तूण परमाणुत्तरादिकमेण अणंतभागवड्डि असंखेज्जभागवड्डीहि वड्डावेदव्वं जाव अप्पणो ओघुक्कस्सदव्वमेत्ति।

तस्स ओघुक्कस्सदव्वस्स सामी उच्चदे। तं जहा — गुणिदकम्मंसिओ सत्तमपुढविणेरइयचरिमसमए उक्कस्सदव्वं काऊण तिरिक्खेसु उववज्जिय पुणो मणुस्सेसु उप्पज्जिय सत्तमासाहियअट्ठवासाणमुवरि सम्मत्तं संजमं च घेत्तूण खीणकसाओ जादो,

वृद्धि संख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणवृद्धि इन पांच वृद्धियों द्वारा बढ़ाना चाहिये। पश्चात् दूसरा एक गुणितघोलमान जीव मनुष्योंमें उत्पन्न होकर सात मास अधिक आठ वर्षोंके ऊपर सम्यक्त्व व संयमको ग्रहण कर क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ होकर क्षीणकषाय के अन्तिम समयमें स्थित हुआ पूर्वोक्त जीवके द्रव्यसे सदृश भी है और हीन भी है। पुनः सदृश द्रव्यवालेको ग्रहण कर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे उत्कृष्ट द्रव्य होने तक दो वृद्धियोंसे बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार वृद्धिको प्राप्त होनेपर उससे दूसरा जीव जो गुणितकर्मांशिक स्वरूपसे आकर मनुष्योंमें उत्पन्न हो सात मास अधिक आठ वर्षोंके ऊपर सम्यक्त्व व संयमको ग्रहण कर क्षपणामें उद्यत होकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित हुआ है उसका द्रव्य गुणित घोलमान जीवके सदृश भी है और हीन भी। उनमें सदृशको ग्रहण कर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे अनन्तभागवृद्धि और असंख्यातभागवृद्धिसे अपने ओघके उत्कृष्ट द्रव्य तक बढ़ाना चाहिये।

उनमें ओघ उत्कृष्ट द्रव्यके स्वामीकी प्ररूपणा करते हैं। यथा — गुणितकर्मांशिक जीव सप्तम पृथिवीस्थ नारकीके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट द्रव्य करके तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेके पश्चात् मनुष्योंमें उत्पन्न होकर सात मास अधिक आठ वर्षोंके ऊपर सम्यक्त्व और संयमको ग्रहण कर क्षीणकषाय हुआ। उस क्षीणकषायका अन्तिम

१ अ-आ-प्रत्योः जादेति पाठः।

तस्स खीणकसायस्स चरिमसमयदव्वं ओघुक्कस्समिदि भण्णदे। सपधि गुणिदकम्मं-सियजहण्णदव्वादो उक्कस्सदव्वं विसेसाहियं चेव जादं। तं केण कारणेण? जहण्ण-दव्वस्सुवरि उक्कस्सेण एगो चेव समयपबद्धो[1] वड्ढदि त्ति गुरूवदेसादो। संपधि मणुसदव्वस्सेव वड्ढी णत्थि त्ति। पुणो एदेण खीणकसायदव्वेण सह णारगचरिमसमयदव्व-महियं पि[2] अत्थि समं पि। तत्थ समं घेत्तूण परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वं जाव गुणिदकम्मंसियओघुक्कस्सदव्वेत्ति। सपधि जहण्णट्ठाणं उक्कस्सट्ठाणम्मि सोहिदे सुद्धसेस-मेत्ताणि अजहण्णट्ठाणाणि णिरंतरगमणादो एगं फद्दयं।

सपधि गुणिदकम्मंसियस्स कालपरिहाणीए अजहण्णदव्वपमाणं वत्तइस्सामो। तं जहा— जहण्णसामित्तविहाणेणागंतूण खीणकसायचरिमसमयम्मि एगणिसेगमेगसमय-कालं जहण्णदव्वं होदि। पुणो एदस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण दोहि वड्ढीहि खविदो[3], खविदघोलमाणो[4] पचहि वड्ढीहि, गुणिदघोलमाणो पचहि वड्ढीहि, गुणिदकम्मंसिओ

समय सम्बन्धी द्रव्य ओघ उत्कृष्ट द्रव्य कहा जाता है। अब गुणितकर्मांशिकके जघन्य द्रव्यसे उत्कृष्ट द्रव्य विशेष अधिक ही हुआ।

शंका— गुणितकर्मांशिक जघन्य द्रव्यसे जो उत्कृष्ट द्रव्य विशेष अधिक ही हुआ है, वह किस कारणसे?

समाधान— कारण कि जघन्य द्रव्यके ऊपर उत्कृष्ट रूपसे द्रव्यका एक समय-प्रबद्ध ही बढ़ता है, ऐसा गुरुका उपदेश है।

अब केवल मनुष्यके द्रव्यके ही वृद्धि नहीं है। किन्तु इस क्षीणकषायके द्रव्यके साथ नारकीका अन्तिम समय सम्बन्धी द्रव्य अधिक भी है और समान भी है। उनमें समानको ग्रहण कर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे गुणितकर्मांशिकके उत्कृष्ट द्रव्य तक बढ़ाना चाहिये। अब उत्कृष्ट स्थानमेंसे जघन्य स्थानको कम करनेपर जो शेष रहे उतने अजघन्य स्थान हैं जो विना अन्तरके प्राप्त होनेसे एक स्पर्द्धक रूप हैं।

अब कालकी हानिका आश्रय कर गुणितकर्मांशिकके अजघन्य द्रव्यका प्रमाण कहते हैं। यथा— जघन्य स्वामित्वके विधानसे आकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें एक समय स्थितिवाला एक निषेक जघन्य द्रव्य होता है। पश्चात् इसके ऊपर एक परमाणु अधिक इत्यादि क्रमसे क्षपित [कर्मांशिक] को दो वृद्धियोंसे, क्षपितघोलमानको पाच वृद्धियोंसे, गुणितघोलमानको पाच वृद्धियोंसे और गुणितकर्मांशिकको दो वृद्धियोंसे

---

१ अ-आ काप्रतिषु 'उक्कस्सेण दव्वस्स समयपुव्वो' इति पाठ। २ अ-आ काप्रतिषु 'वि' इति पाठ।
३ अ आ काप्रतिषु 'खविदा' इति पाठ। ४ अ-आप्रत्यो 'घोलमाणे' इति पाठ।

देदि वड्ढीहि वड्ढाविदव्वो जाव णेरइयचरिमसमए उक्कस्सदव्वं काऊण दो तिण्णि भवग्गहणाणि तिरिक्खेसु उववज्जिय पुणो मणुस्सेसु उप्पज्जिय सत्तमासाहियअट्ठवासाणमुवरि सम्मत्तं संजमं च घेत्तूण देसूणपुव्वकोडिं संजमगुणसेडिणिज्जरं काऊण थोवावसेसे[1] जीविदव्वए त्ति खवगसेडिं चडिय खीणकसायचरिमसमए ट्ठिददव्वेण सरिसं जादेत्ति। संपहि एदस्स दव्वस्सुवरि एगो वि परमाणू ण वड्ढदि, पदुक्कस्सत्तादो।

अण्णो जीवो गुणिदकम्मंसिओ एगसमयमोकड्डिदूण विणासिज्जमाणदव्वेण ऊणमुक्कस्सदव्वं सत्तमपुढविणेरइयचरिमसमए काऊण तिरिक्खेसुववज्जिय मणुस्सेसु उववण्णो, पुणो समऊणपुव्वकोडिं संजममणुपालिय खीणकसाओ जादो। तस्स चरिमसमयदव्वं पुव्वदव्वेण सरिसं होदि। संपहि पुव्विल्लखवगं मोत्तूण समऊणपुव्वकोडिं हिंडिदखवगं घेत्तूण अप्पणो ऊणं काऊणागददव्वं परमाणुत्तरादिकमेण दोहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाउक्कस्सदव्वं पत्तं ति।

तदो अण्णो जीवो गुणिदकम्मंसिओ एगसमयमोकड्डिदूण विणासिज्जमाणदव्वेण

बढ़ाना चाहिये जब तक कि नारकके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट द्रव्यको करके दो तीन भवग्रहण तिर्यंचोंमें उत्पन्न होकर पश्चात् मनुष्योंमें उत्पन्न होकर सात मास अधिक आठ वर्षोंके ऊपर सम्यक्त्व व संयमको ग्रहण कर कुछ कम पूर्वकोटि तक संयमगुणश्रेणि निर्जरा करके जीवितके स्तोक शेष रहनेपर क्षपकश्रेणि चढ़कर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित जीवके द्रव्यके सदृश नहीं हो जाता। अब इस द्रव्यके ऊपर एक भी परमाणु नहीं बढ़ता क्योंकि वह उत्कृष्टपनेको प्राप्त हो चुका है।

अब गुणितकर्मांशिक दूसरा जीव है जो एक समय अपकर्षण कर विनाश किये जानेवाले द्रव्यसे हीन उत्कृष्ट द्रव्यको सप्तम पृथिवीस्थ नारकीके अन्तिम समयमें करके तिर्यंचोंमें उत्पन्न होकर फिर मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। पश्चात् एक समय कम पूर्वकोटि तक संयमका पालन कर क्षीणकषाय हुआ। उसके अन्तिम समयका द्रव्य पूर्वके द्रव्यसे समान है। अब पूर्वोक्त क्षपकको छोड़कर एक समय कम पूर्वकोटि तक घूमे हुए क्षपकको ग्रहण कर अपने हीन करके प्राप्त हुए द्रव्यको एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे उत्कृष्ट द्रव्य प्राप्त होने तक दो वृद्धियोंसे बढ़ाना चाहिये।

इससे भिन्न दूसरा जीव गुणितकर्मांशिक एक समय अपकर्षण कर विनाश किये जानेवाले द्रव्यसे हीन उत्कृष्ट द्रव्यको सप्तम पृथिवीस्थ नारकके अन्तिम समयमें

१ अ-आ-काप्रतिषु थोवावसेसेण इति पाठः।

ऊणमुक्कस्सदव्वं सत्तमपुढविणेरइयचरिमसमए कादूण दुसमऊणपुव्वकोडिं संजमगुणसेडिणिज्जरं करिय चारित्तमोहणीयं खवेदूण खीणकसायचरिमसमए ट्ठिददव्वं पुव्वदव्वेण सरिसं होदि। पुणो तं मोत्तूण इमं घेत्तूण परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वो जाउक्कस्सदव्वेत्ति। एवं वड्ढिदूण ट्ठिददव्वेण अण्णेगो जीवो गुणिदकम्मंसिओ पुव्वविधाणेण एगसमएण ओकड्डिदूण विणासिज्जमाणदव्वेण ऊणमुक्कस्सदव्वं कादूण तिसमऊणपुव्वकोडिं संजमगुणसेडिणिज्जरं करिय खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदस्स दव्वं सरिसं होदि। एवं कमेण वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव सत्तमपुढविणेरइयचरिमसमए उक्कस्सदव्वं कादूण तत्तो णिप्पिडिय मणुस्सेसुप्पज्जिय सत्तमासाहियअट्ठवासाणमुवरि सम्मत्तं संजमं च घेत्तूण खवगसेडिमब्भुट्ठिय खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदस्स दव्वेण सरिसं जादेत्ति। एत्तो उवरि मणुस्सेसु वड्ढी णत्थि। संपहि एदेण सरिसं णेरइयदव्वं घेत्तूण वड्ढाविदे अणंताणि ट्ठाणाणि एगफद्दएण उप्पण्णाणि।

संपहि खविदकम्मंसियस्स संतकम्ममस्सिदूण अजहण्णपदेसदव्ववियप्पपरूवणं कस्सामो। तं जहा— खविदकम्मंसियलक्खणेण सुहुमणिगोदेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-

करके दो समय कम पूर्वकोटि तक संयमगुणश्रेणि द्वारा निर्जरा करके चारित्रमोहनीयका क्षय करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित होता है। उसका द्रव्य पूर्वोक्त जीवके द्रव्यसे सदृश है। पुन उसको छोड़कर और इसे ग्रहण कर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे उत्कृष्ट द्रव्य तक बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित द्रव्यके साथ दूसरे एक गुणितकर्मांशिक जीवका द्रव्य सदृश होता है, जो पूर्व विधिसे एक समयसे अपकर्षण कर विनाश किये जानेवाले द्रव्यसे हीन उत्कृष्ट द्रव्यको करके तीन समय कम पूर्वकोटि तक संयमगुणश्रेणि द्वारा निर्जरा करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित होता है। इस प्रकार क्रमसे बढ़ाकर सप्तम पृथिवीस्थ नारकके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट द्रव्य करके वहांसे निकल कर मनुष्योंमें उत्पन्न हो सात मास अधिक आठ वर्षोंके ऊपर सम्यक्त्व व संयमको ग्रहण कर क्षपकश्रेणिपर आरुढ हो क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित जीवके द्रव्यके समान हो जाने तक उतारना चाहिये। इसके आगे मनुष्योंमें वृद्धि नहीं है। अब इसके सदृश नारकद्रव्यको ग्रहण कर बढ़ानेपर एक स्पर्द्धक रूपसे अनन्त स्थान उत्पन्न होते हैं।

अब क्षपितकर्मांशिकके सत्त्वका आश्रय कर अजघन्य प्रदेशद्रव्यके विकल्पोंकी प्ररूपणा करते हैं। यथा— क्षपितकर्मांशिक स्वरूपसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन कर्मस्थिति प्रमाण काल तक सूक्ष्म निगोद जीवोंमें रहकर पश्चात् पल्योपमके

१ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ काप्रतिषु 'दव्वखेत्तेण' इति पाठः।

भागेण ऊणियं कम्मट्ठिदिमच्छिय पुणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि संजमा संजमकंडयाणि, तत्तो विसेसाहियाणि सम्मत्तकंडयाणि अणंताणुबंधिविसंजोयणकंडयाणि च, अट्ठ संजमकंडयाणि च, चदुक्खुत्तो कसायउवसामणं च कादूण मणुस्सेसुप्पज्जिय सत्तमासाहियअट्ठवस्साणमुवरि सम्मत्तं संजमं च घेत्तूण अणंताणुबंधिचउक्कं विसंजोएदूण दंसणमोहणीयं खविय देसूणपुव्वकोडिं संजमगुणसेडिणिज्जरं करिय खवगसेडिमारुहिय चरिमसमयखीणकसाओ जादो, तस्स जहण्णदव्वं होदि। तत्थ एगो अट्ठाणिसेगो, अण्णेगा खीणकसायगुणसेडिगोवुच्छा, अण्णेगो सुहुमसांपराइयगुणसेडिगोवुच्छा अणि-यट्टिगुणसेडिगोवुच्छा अपुव्वकरणगुणसेडिगोवुच्छा च अत्थि। संपहि एदस्सुवरि परमाणु-त्तरादिकमेण अणंतभागवड्ढि असंखेज्जभागवड्ढीहि दुचरिमगुणसेडिगोवुच्छमेत्तं वड्ढावेदव्वं। एवं वड्ढिदूणच्छिदे तदा अण्णो जीवो जहण्णसामित्तविहाणेणागंतूण खीणकसायदुचरिम-समए ट्ठिदो। एदस्स दव्वं पुव्विल्लदव्वेण सरिसं होदि। पुणो पुव्विल्लखवगं मोत्तूण साम्पदियखवगं घेत्तूण परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वं जाव तिचरिमगुणसेडिगोवुच्छपमाणं वड्ढिदेत्ति। एवं वड्ढिदूणच्छिदे तदो अण्णो जीवो[3] जहण्णसामित्तविहाणेणागंतूण

असंख्यातवें भाग मात्र संयमासंयमकाण्डकोंको, इनसे विशेष अधिक सम्यक्त्वकाण्डकोंको व अनन्तानुबन्धिविसंयोजनकाण्डकोंको, आठ संयमकाण्डकोंको तथा चार बार कषाय उपशामनाको करके मनुष्योंमें उत्पन्न होकर सात मास अधिक आठ वर्षोंके ऊपर सम्यक्त्व व संयमको ग्रहण कर अनन्तानुबन्धिचतुष्कका विसंयोजन कर दर्शन मोहनीयका क्षय कर कुछ कम पूर्वकोटि तक संयमगुणश्रेणि रूप निर्जरा करके क्षपक श्रेणिपर आरूढ़ हो अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय हुआ है उसके जघन्य द्रव्य होता है। यहां एक यथानिषेक अन्य एक क्षीणकषाय गुणश्रेणिगोपुच्छा अन्य एक सूक्ष्मसाम्परायिक गुणश्रेणिगोपुच्छा अनिवृत्तिकरण गुणश्रेणिगोपुच्छा और अपूर्वकरण गुणश्रेणिगोपुच्छा भी है। अब इसके ऊपर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे अनन्त भागवृद्धि और असंख्यातभागवृद्धि द्वारा द्विचरम गुणश्रेणिगोपुच्छा मात्र बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार वृद्धिको प्राप्त हो यह जीव स्थित है और एक दूसरा जीव जघन्य स्वामित्वके विधानसे आकर क्षीणकषायके द्विचरम समयमें स्थित हुआ तो इसका द्रव्य पूर्व जीवके द्रव्यके सदृश होता है। पश्चात् पूर्वोक्त क्षपकको छोड़कर और साम्प्रतिक क्षपकको ग्रहण करके एक परमाणु आदिके क्रमसे त्रिचरम गुणश्रेणिगोपुच्छा मात्र वृद्धि होने तक बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार वृद्धि करके यह जीव स्थित है और एक इससे भिन्न दूसरा जीव जघन्य स्वामित्वके विधानसे आकर त्रिचरम समयवर्ती क्षीणकषाय हुआ तो

१ अ-आ-काप्रतिषु 'च' इत्येतत् पदं नास्ति। २ ताप्रतौ 'आगमणे' इति पाठः। ३ आप्रतौ 'वड्ढि-दूणच्छिदे अण्णो जीवो' इति पाठः।

तिचरिमसमयखीणकसाओ जादो। एदस्स दव्वं पुव्वदव्वेण सरिसं होदि। एवमेगेगगुण-सेडिगोवुच्छ वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव खीणकसायद्धा सेसा जत्तिया अत्थि तत्तियमेत्तं मोत्तूण चरिमफालिं पादेदूण अच्छिदो त्ति। एवं वड्ढिदूणच्छिदे पुणो एदस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण तदणंतरहेट्ठिमगोवुच्छा वड्ढावेदव्वा। तदो एदेण जहण्णसामित्तविहाणेणागंतूण चरिमफालिं तिस्से उदयगदगुणसेडिगोउच्छं च धरेदूण ट्ठिदखीणकसायस्स दव्वं सरिसं होदि। तदो पुव्विल्लखवगं मोत्तूण चरिमफालिखवगं[1] घेत्तूण वड्ढावेदव्वं जाव दुचरिमफालीए हेट्ठिमउदयगदगुणसेडिगोउच्छमेत्तं वड्ढिदे त्ति[2]। एदेण दव्वेण खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण दुचरिमफालीए सह उदयगदगोउच्छं धरेदूण ट्ठिददव्वं सरिसं होदि। एवमेगेगगुणसेडिगोवुच्छं वड्ढावेदूण ओदारेदव्वं जाव सुहुमसांपराइयखवगचरिमसमओ त्ति। सपधि एत्थ वड्ढाविज्जमाणे उवरिमसमयम्मि बद्धदव्वस्स हेट्ठिमसमयम्मि अभावादो णवकबंधेणूणसुहुमखवगदुचरिमगुणसेडिगोवुच्छमेत्तं वड्ढावेदव्वं। पुणो एदेण सुहुमखवगदुचरिमगुणसेडिगोउच्छं धरेदूण ट्ठिददव्वं सरिसं होदि। एवं णवकबंधेणूणसुहुमगुणसेडिगोवुच्छा वड्ढाविय[3] ओदारेदव्वं जाव चरिमसमयअणियट्टि त्ति। पुणो णवकबंधेणूणअणियट्टिदुचरिम-

---

इसका द्रव्य पहिले जीवके द्रव्यके सदृश होता है। इस प्रकार एक एक गुणश्रेणिगोपुच्छा बढ़ाकर जितना क्षीणकषायकाल शेष है उतने मात्रको छोड़कर अन्तिम फालिको नष्ट कर स्थित होने तक उतारना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित होनेपर फिर इसके ऊपर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे उससे अव्यवहित अधस्तन गोपुच्छा बढाना चाहिये। तत्पश्चात् इसके साथ जघन्य स्वामित्वके विधानसे आकर अन्तिम फालि और उसकी उदयप्राप्त गुणश्रेणिगोपुच्छाको लेकर स्थित हुए क्षीणकषायका द्रव्य सदृश होता है। पश्चात् पूर्वोक्त क्षपकको छोड़कर अन्तिम फालिवाले क्षपकको ग्रहण कर द्विचरम फालिकी अधस्तन उदयप्राप्त गुणश्रेणिगोपुच्छा मात्र वृद्धि होने तक बढ़ाना चाहिये। इस द्रव्यके साथ क्षपितकर्मांशिक स्वरूपसे आकर द्विचरम फालिके साथ उदयप्राप्त गोपुच्छाको लेकर स्थित जीवका द्रव्य सदृश है। इस प्रकार एक एक गुणश्रेणिगोपुच्छाको बढाकर सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके अन्तिम समय तक उतारना चाहिये। अब यहां बढ़ाते समय उपरिम समयमें बांधे हुए द्रव्यका अधस्तन समयमें अभाव होनेके कारण नवक बन्धसे रहित सूक्ष्मसाम्परायिककी द्विचरम गुणश्रेणिगोपुच्छा मात्र बढ़ाना चाहिये। पुनः इसके साथ सूक्ष्मसाम्परायिककी द्विचरम गोपुच्छाको लेकर स्थित हुए जीवका द्रव्य सदृश होता है। इस प्रकार नवक बन्धसे रहित सूक्ष्मसाम्परायिक गुणश्रेणिगोपुच्छा बढ़ाकर चरमसमयवर्ती अनिवृत्तिकरण तक उतारना चाहिये। पश्चात् नवक बन्धसे

---

१ अ-आ काप्रतिषु 'चरिमफालिं खवग' इति पाठः। २ ताप्रतौ 'वड्ढदिदित्ति' इति पाठः। ३ मप्रतौ 'गोवुच्छाविय' इति पाठः।

गुणसेडिगोवुच्छमेत्तं वड्ढावेदव्वं । पुणो एदेणाणियट्टिदुचरिमगुणसेडिगोवुच्छं धरेदूण ट्ठिददव्वं सरिसं होदि । एवं णवकबंधेणूणमणियट्टिगुणसेडिगोवुच्छं वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव समयाहियावलियअणियट्टि त्ति । संपहि एत्तो प्पहुडि णवकबंधेणूणमपुव्वगुणसेडिं वड्ढाविय ओदारेदव्वं अणियट्टिस्स उदयादिगुणसेडिणिक्खेवाभावादो जाव समयाहियावलियअपुव्वकरणे त्ति । पुणो एत्तो प्पहुडि णवकबंधेणूणसंजमगुणसेडिं वड्ढावेदूण ओदारेदव्वं जाव समयाहियावलियसंजदो त्ति । एत्तो हेट्ठा णवकबंधेणूणमिच्छाइट्ठिगुणसेडिं वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव पढमसमयसंजदो त्ति । संपहि संजदपढमसमए ठवेदूण चत्तारिपुरिसे अस्सिदूण पंचहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइयचरिमसमए दव्वमुक्कस्सं कादूण तत्तो णिप्फिडिय तिरिक्खेसु उववज्जिय तत्थ दो तिण्णिभवग्गहणाणि अंतोमुहुत्तकालं च अच्छिय पुणो मणुस्सेसु उववज्जिय संजमं पडिवण्णो पढमसमयदव्वं पत्तेत्ति । पुणो एत्थ मणुस्सेसु वड्ढी णत्थि त्ति पढमसमयसंजददव्वेण सरिसं णेरइयदव्वं घेत्तूण परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वं जाव णेरइयचरिमसमयउक्कस्सदव्वं पत्तेत्ति ।

रहित अनिवृत्तिकरणकी द्विचरम गुणश्रेणिगोपुच्छा मात्र बढ़ाना चाहिये। पुनः इसके साथ अनिवृत्तिकरणकी द्विचरम गुणश्रेणिगोपुच्छको लेकर स्थित जीवका द्रव्य सदृश होता है। इस प्रकार नवक बन्धसे रहित अनिवृत्तिकरण गुणश्रेणिगोपुच्छाको बढ़ाकर एक समय अधिक आवली प्रमाण अनिवृत्तिकरण तक उतारना चाहिये। अब यहांसे लेकर नवक बन्धसे रहित अपूर्वकरण गुणश्रेणिको बढ़ाकर अनिवृत्तिकरणके उदयादिगुणश्रेणिनिक्षेप न होनेसे एक समय अधिक आवली मात्र अपूर्वकरण तक उतारना चाहिये। पश्चात् यहांसे लेकर नवक बन्धसे रहित संयमगुणश्रेणिको बढ़ाकर एक समय अधिक आवली प्रमाण संयत तक उतारना चाहिये। इससे नीचे नवक बन्धसे रहित मिथ्यादृष्टि गुणश्रेणि बढ़ाकर प्रथम समय संयत तक उतारना चाहिये। अब संयत प्रथम समयको स्थापित कर चार पुरुषोंका आश्रय कर पांच वृद्धियों द्वारा बढ़ाना चाहिये जब तक कि सप्तम पृथिवी सम्बन्धी नारकके अन्तिम समयमें द्रव्यको उत्कृष्ट करके नरकसे निकल तिर्यंचोंमें उत्पन्न हो वहां अन्तर्मुहूर्त स्थितिवाले दो तीन भवग्रहण रहकर फिर मनुष्योंमें उत्पन्न हो संयमको प्राप्त होता हुआ प्रथम समय सम्बन्धी द्रव्यको प्राप्त नहीं हो जाता। पश्चात् चूंकि यहां मनुष्योंमें वृद्धि नहीं है अतः प्रथम समयवर्ती संयतके द्रव्यके सदृश नारकद्रव्यको ग्रहण कर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे नारकके अन्तिम समय सम्बन्धी उत्कृष्ट द्रव्यके प्राप्त होने तक बढ़ाना चाहिये।

१ प्रतिषु 'णिप्फडिय' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'अच्छिय' इति पाठः।

तिचरिमसमयखीणकसाओ जादो। एदस्स दव्वं पुव्वदव्वेण सरिसं होदि। एवमेगेगगुण-सेडिगोवुच्छं वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव खीणकसायद्धा सेमा जत्तिया अत्थि तत्तियमेत्त मोत्तूण चरिमफालिं पादेदूण अच्छिदो त्ति। एव वड्ढिदूणच्छिदे पुणो एदस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण तदणंतरहेट्ठिमगोवुच्छा वड्ढावेदव्वा। तदो एदेण जहण्णसामित्तविहाणेणागतूण चरिमफालिं तिस्से उदयगदगुणसेडिगोउच्छं च धरेदूण ट्ठिदखीणकसायस्स दव्वं सरिसं होदि। तदो पुव्विल्लखवग मोत्तूण चरिमफालिखवग[1] घेत्तूण वड्ढावेदव्वं जाव दुचरिमफालीए हेट्ठिमउदयगदगुणसेडिगोउच्छमेत्तं वड्ढिदे त्ति[2]। एदेण दव्वेण खविदकम्मंसियलक्खणेणागतूण दुचरिमफालीए सह उदयगदगोउच्छं धरेदूण ट्ठिददव्व सरिसं होदि। एवमेगेगगुणसेडिगोवुच्छ वड्ढावेदूण ओदारेदव्व जाव सुहुमसांपराइयखवगचरिमसमओ त्ति। सपधि एत्थ वड्ढाविज्जमाणे उवरिमसमयम्मि बद्धदव्वस्स हेट्ठिमसमयम्मि अभावादो णवकबंधेणूणसुहुमखवगदुचरिमगुणसेडिगोवुच्छमेत्त वड्ढावेदव्वं। पुणो एदेण सुहुमखवगदुचरिमगुणसेडिगोउच्छ धरेदूण ट्ठिददव्वं सरिस होदि। एव णवकबंधेणूणसुहुमगुणसेडिगोवुच्छा वड्ढाविय[3] ओदारेदव्व जाव चरिमसमयअणियट्टि त्ति। पुणो णवकबंधेणूणअणियट्टिदुचरिम-

इसका द्रव्य पहिले जीवके द्रव्यके सदृश होता है। इस प्रकार एक एक गुणश्रेणिगोपुच्छा बढ़ाकर जितना क्षीणकषायकाल शेष है उतने मात्रको छोड़कर अन्तिम फालिको नष्ट कर स्थित होने तक उतारना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित होनेपर फिर इसके ऊपर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे उससे अव्यवहित अधस्तन गोपुच्छा बढ़ाना चाहिये। तत्पश्चात् इसके साथ जघन्य स्वामित्वके विधानसे आकर अन्तिम फालि और उसकी उदयप्राप्त गुणश्रेणिगोपुच्छाको लेकर स्थित हुए क्षीणकषायका द्रव्य सदृश होता है। पश्चात् पूर्वोक्त क्षपकको छोड़कर अन्तिम फालिवाले क्षपकको ग्रहण कर द्विचरम फालिकी अधस्तन उदयप्राप्त गुणश्रेणिगोपुच्छा मात्र वृद्धि होने तक बढ़ाना चाहिये। इस द्रव्यके साथ क्षपितकर्मांशिक स्वरूपसे आकर द्विचरम फालिके साथ उदयप्राप्त गोपुच्छाको लेकर स्थित जीवका द्रव्य सदृश है। इस प्रकार एक एक गुणश्रेणिगोपुच्छाको बढ़ाकर सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके अन्तिम समय तक उतारना चाहिये। अब यहां बढ़ाते समय उपरिम समयमें बांधे हुए द्रव्यका अधस्तन समयमें अभाव होनेके कारण नवक बन्धसे रहित सूक्ष्मसाम्परायिककी द्विचरम गुणश्रेणिगोपुच्छा मात्र बढ़ाना चाहिये। पुन. इसके साथ सूक्ष्मसाम्परायिककी द्विचरम गोपुच्छाको लेकर स्थित हुए जीवका द्रव्य सदृश होता है। इस प्रकार नवक बन्धसे रहित सूक्ष्मसाम्परायिक गुणश्रेणिगोपुच्छा बढ़ाकर चरमसमयवर्ती अनिवृत्तिकरण तक उतारना चाहिये। पश्चात् नवक बन्धसे

१ अ-आ काप्रतिषु 'चरिमफालिं खवग' इति पाठ। २ ताप्रतौ 'वड्ढदित्ति' इति पाठ। ३ मप्रतौ 'गोवुच्छाविय' इति पाठः।

गुणसेडिगोवुच्छमेत्तं वड्ढावेदव्वं। पुणो एदेणाणियट्टिचरिमगुणसेडिगोवुच्छं धरेदूण ट्ठिददव्वं सरिसं होदि। एवं णवकबंधेणूणअणियट्टिगुणसेडिगोवुच्छं वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव समयाहियावलियअणियट्टि त्ति। संपहि एत्तो प्पहुडि णवकबंधेणूणमपुव्वगुणसेडिं वड्ढाविय ओदारेदव्वं अणियट्टिस्स उदयादिगुणसेडिणिक्खेवाभावादो जाव समयाहियावलियअपुव्वकरणे त्ति। पुणो एत्तो प्पहुडि णवकबंधेणूणसंजमगुणसेडिं वड्ढावेदूण ओदारेदव्वं जाव समयाहियावलियसंजदो त्ति। एत्तो हेट्ठा णवकबंधेणूणमिच्छाइट्ठिगुणसेडिं वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव पढमसमयसंजदो त्ति। संपहि संजदपढमसमए ट्ठवेदूण चत्तारिपुरिसे अस्सिदूण पंचहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव सत्तमाए पुढवीए णारगचरिमसमए दव्वमुक्कस्सं कादूण तत्तो णिप्पिडिदो तिरिक्खेसु उववज्जिय तत्थ दो तिण्णिभवग्गहणाणि अंतोमुहुत्तकालं वि अच्छिय पुणो मणुस्सेसु उववज्जिय संजमं पडिवण्णो पढमसमयदव्वं पावेदि। पुणो एत्थ मणुस्सेसु वड्ढी णत्थि त्ति पढमसमयसंजददव्वेण सरिसं णारगदव्वं घेत्तूण परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वं जाव णारगचरिमसमयउक्कस्सदव्वं पावेदि त्ति।

रहित अनिवृत्तिकरणकी द्विचरम गुणश्रेणिगोपुच्छा मात्र बढ़ाना चाहिये। पुनः इसके साथ अनिवृत्तिकरणकी द्विचरम गुणश्रेणिगोपुच्छाको धरकर स्थित जीवका द्रव्य सदृश होता है। इस प्रकार नवक बन्धसे रहित अनिवृत्तिकरण गुणश्रेणिगोपुच्छाको बढ़ाकर एक समय अधिक आवली प्रमाण अनिवृत्तिकरण तक उतारना चाहिये। अब यहांसे लेकर नवक बन्धसे रहित अपूर्वकरण गुणश्रेणिको बढ़ाकर अनिवृत्तिकरणके उदयादिगुणश्रेणिनिक्षेप न होनेसे एक समय अधिक आवली मात्र अपूर्वकरण तक उतारना चाहिये। पश्चात् यहांसे लेकर नवक बन्धसे रहित संयमगुणश्रेणिको बढ़ाकर एक समय अधिक आवली प्रमाण संयत तक उतारना चाहिये। इससे नीचे नवक बन्धसे रहित मिथ्यादृष्टि गुणश्रेणि बढ़ाकर प्रथम समय संयत तक उतारना चाहिये। अब संयत प्रथम समयको स्थापित कर चार पुरुषोंका आश्रय कर पांच वृद्धियों द्वारा बढ़ाना चाहिये जब तक कि सप्तम पृथिवी सम्बन्धी नारकके अन्तिम समयमें द्रव्यको उत्कृष्ट करके नरकसे निकल तिर्यंचोंमें उत्पन्न हो वहां अन्तर्मुहूर्त स्थितिवाले दो तीन भवग्रहण रहकर फिर मनुष्योंमें उत्पन्न हो संयमको प्राप्त होता हुआ प्रथम समय सम्बन्धी द्रव्यको प्राप्त नहीं हो जाता। पश्चात् चूंकि यहां मनुष्योंमें वृद्धि नहीं है अतः प्रथम समयवर्ती संयतके द्रव्यके सदृश नारकद्रव्यको ग्रहण कर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे नारकके अन्तिम समय सम्बन्धी उत्कृष्ट द्रव्यके प्राप्त होने तक बढ़ाना चाहिये।

---

१ अप्रतौ 'णिप्पिडिय' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'उववज्जिय' इति पाठः।

संपधि गुणिदकम्मंसियस्स मस्सिदूण अजहण्णदव्वपरूवणं कस्सामो। तं जहा— खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण देसूणपुव्वकोडिं णिज्जरं करिय खीणकसायचरिमसमए एगणिसेगं एगसमयकालं धरेदूण ट्ठिदस्स जहण्णदव्वं होदि। पुणो एदं चत्तारिपुरिसे अस्सिदूण वड्ढावेदव्वं जाव गुणिदकम्मंसियलक्खणेण सत्तमाए पुढवीए उक्कस्सदव्वं कादूण दो-तिण्णिभवग्गहणेसु अंतोमुहुत्तं तिरिक्खेसु अच्छिय मणुस्सेसु उप्पज्जिय समयाविरोहेण संजमं घेत्तूण देसूणपुव्वकोडिं संजमगुणसेडिणिज्जरं कादूण खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदस्स दव्वं पत्तेत्ति[1]। पुणो एदेण सत्तमाए पुढवीए खीणकसायदुचरिमगुणसेडिगोउच्छाए ऊणउक्कस्सदव्वं करिय तत्तो खीणकसायदुचरिमसमए ट्ठिददव्वं सरिसं होदि। पुणो चरिमसमयखीणकसायं मोत्तूण दुचरिमसमयखीणकसायं घेत्तूण वड्ढावेदव्वं जावप्पणो ऊणं कादूण गददव्वं वड्ढिदे त्ति। एवमूणं कादूण ओदारेदव्वं जाव संजदपढमसमओ त्ति। पुणो संजदपढमसमयदव्वेण सरिसं णारगदव्वं घेत्तूण वड्ढावेदव्वं जाव णारगचरिमसमयओघुक्कस्सदव्वेत्ति। एत्थ जहा अणुक्कस्सम्मि जीवसमुदाहारो परूविदो तहा एत्थ वि परूवेदव्वो।

अब गुणितकर्मांशिकके सत्त्वका आश्रय कर अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा करते हैं। यथा— क्षपितकर्मांशिक स्वरूपसे आकर कुछ कम पूर्वकोटि तक निर्जरा करके क्षीण कषायके अन्तिम समयमें एक समय स्थितिवाले एक निषेकको लेकर स्थित जीवके जघन्य द्रव्य होता है। इस चार पुरुषोंका आश्रय कर बढाना चाहिये जब तक कि गुणित कर्मांशिक स्वरूपसे सप्तम पृथिवीमें उत्कृष्ट द्रव्य करके दो तीन भवग्रहणोंमें अन्तर्मुहूर्त तक तिर्यंचोंमें रहकर मनुष्योंमें उत्पन्न हो समयाविरोधसे संयमको ग्रहण कर कुछ कम पूर्वकोटि तक संयमगुणश्रेणिनिर्जरा करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित जीवका द्रव्य नहीं प्राप्त होता। पुन इसके साथ सप्तम पृथिवीमें क्षीणकषाय सम्बन्धी द्विचरम गुणश्रेणिगोपुच्छासे हीन उत्कृष्ट द्रव्य करके उससे क्षीणकषायके द्विचरम समयमें स्थित जीवका द्रव्य सदृश होता है। पुन चरमसमयवर्ती क्षीणकषायको छोड़कर और द्विचरम समयवर्ती क्षीणकषायको ग्रहण कर बढाना चाहिये जब तक अपना हीन करके प्राप्त हुआ द्रव्य बढ नहीं जाता। इस प्रकार हीन करके संयत प्रथम समय तक उतारना चाहिये। पश्चात् संयतके प्रथम समय सम्बन्धी द्रव्यके सदृश नारकद्रव्यको ग्र[illegible] अन्तिम समय सम्बन्धी ओघ उत्कृष्ट द्रव्य तक बढ़ाना चाहिये। [illegible] ष्ट द्रव्यमें जीवसमुदाहारकी प्ररूपणा की है वैसे यहां भी क[illegible]

[1] [illegible] तेसु 'सचरिम', ताप्रतौ 'च चरिम' इति पाठ ।

एवं दंसणावरणीय-मोहणीय-अंतराइयाणं । णवरि विसेसो मोहणीयस्स खवणाए अब्भुट्ठिदो चरिमसमयसकसाई[१] जादो । तस्स चरिमसमयसकसाइस्स मोहणीयवेयणा दव्वदो जहण्णा ॥ ७७ ॥

जधा णाणावरणीयस्स उत्तं तहा मोहणीयस्स वि वत्तव्वं । णवरि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणियं कम्मट्ठिदिं सुहुमणिगोदेसु अच्छिय मणुस्सेसु उप्पज्जिय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तसम्मत्ताणंताणुबंधिविसंजोयण-संजमासंजमकंडयाणि अट्ठ संजमकंडयाणि चदुक्खुत्तो कसायउवसामणं च बहूहि भवग्गहणेहि काढूण पुणो अवसाणे मणुस्सेसु उप्पज्जिय सत्तमासाहियअट्ठवस्साणं उवरि सम्मत्तं संजमं च घेत्तूण संजमगुणसेडिणिज्जरं करिय खवगसेडिमब्भुट्ठिय चरिमसमयसुहुमसांपराइओ जादो । तस्स जहण्णिया मोहणीयदव्ववेयणा । दंसणावरणीय-अंतराइयाणं पुण खीणकसायचरिमसमए जहण्णं जादमिदि णाणावरणभंगो चेव होदि ।

इसी प्रकार दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय कर्मकी जघन्य द्रव्यवेदना होती है। विशेष इतना है कि मोहनीयके क्षयमें उद्यत हुआ जीव सकषाय भावके अन्तिम समयको प्राप्त हुआ। उस अन्तिम समयवर्ती सकषायीके द्रव्यकी अपेक्षा मोहनीय वेदना जघन्य होती है ॥ ७७ ॥

जैसे ज्ञानावरणके विषयमें कथन किया है उसी प्रकार मोहनीयके विषयमें भी कहना चाहिये। विशेषता यह है कि पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन कर्मस्थिति तक सूक्ष्म निगोद जीवोंमें रहकर मनुष्योंमें उत्पन्न हो पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र सम्यक्त्वकाण्डक, अनन्तानुबन्धिविसंयोजनकाण्डक व संयमासंयमकाण्डक, आठ संयमकाण्डक और चार बार कषायोपशामनाको बहुत भवग्रहणों द्वारा करके फिर अन्तमें मनुष्योंमें उत्पन्न होकर सात मास अधिक आठ वर्षोंके ऊपर सम्यक्त्व और संयमको ग्रहण कर संयमगुणश्रेणिनिर्जरा करके क्षपकश्रेणि पर आरूढ़ हो अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक हुआ। उसके मोहनीयद्रव्यवेदना जघन्य होती है।

परन्तु दर्शनावरण और अन्तरायका द्रव्य क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य होता है, अत एव इनकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके ही समान है।

---

१ प्रतिषु -चयणाओ इति पाठः । २ अ-आप्रत्योः सम्मावस्स इति पाठः।

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ ७८ ॥

जहण्णदव्वादो परमाणुत्तरादिदव्वमजहण्णा वेयणा। एत्थ खविद-गुणिदकम्मंसियाण कालपरिहाणीओ तेसिं संताणि च अस्सिदूण[1] अजहण्णपदेसपरूवणे कीरमाणे णाणावरणभंगो। णवरि मोहणीयस्स खवगचरिमसमयदव्वं घेत्तूण अजहण्णदव्वपरूवणा कायव्वा। णवरि संतादो अजहण्णदव्वपरूवणे कीरमाणे जहण्णदव्वस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण दुचरिमगुणसेडिगोवुच्छा वड्ढावेदव्वा। पुणो एवं वड्ढिदूण ट्ठिदचरिमसमयसुहुमसांपराइयदव्वेण अण्णस्स जीवस्स खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सुहुमसांपराइयदुचरिमसमयट्ठिदस्स दव्वं सरिसं होदि। एवमेगेगगुणसेडिगोवुच्छं वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव सुहुमसांपराइयद्धाए संखेज्जदिभागमोदिण्णो त्ति। पुणो एदस्सुवरि तदणंतरहेट्ठिमगुणसेडिगोवुच्छं वड्ढिदूण ट्ठिदेण अण्णो जीवो तदणंतरहेट्ठिमगुणसेडिगोवुच्छचरिमकंडयचरिमफालिं च धरेदूण ट्ठिदो सरिसो होदि। एवमेगेगगुणसेडिगोवुच्छं वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव अणियट्टिचरिमसमओ त्ति। पुणो परमाणुत्तरादिकमेण णवकबंधेणूणदुचरिमगुणसेडिगोवुच्छमेत्तं चरिमसमयअणियट्टी वड्ढावेदव्वो।

उक्त तीनों कर्मोंकी इससे भिन्न अजघन्य द्रव्यवेदना है ॥ ७८ ॥

जघन्य द्रव्यकी अपेक्षा एक परमाणु आदिसे अधिक द्रव्य अजघन्य वेदना है। यहां क्षपितकर्मांशिक और गुणितकर्मांशिककी कालपरिहानियों और उनके सत्त्वका आश्रय लेकर अजघन्य द्रव्यके प्रदेशोंकी प्ररूपणा करनेपर वह सब कथन ज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि मोहनीयके अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा उसका क्षय करनेवालेके अन्तिम समय सम्बन्धी द्रव्यको ग्रहण कर करना चाहिये। विशेषता यह है कि सत्त्वकी अपेक्षा अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा करते समय जघन्य द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे द्विचरम गुणश्रेणिगोपुच्छा बढ़ाना चाहिये। पश्चात् इस प्रकार वृद्धिको प्राप्त होकर स्थित अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके द्रव्यके साथ क्षपितकर्मांशिक स्वरूपसे आकर सूक्ष्मसाम्परायके द्विचरम समयमें स्थित अन्य जीवका द्रव्य सदृश है। इस प्रकार एक एक गुणश्रेणि गोपुच्छको बढ़ाकर सूक्ष्मसाम्परायिककालके संख्यातवें भाग मात्र अवतीर्ण होने तक उतारना चाहिये। पश्चात् इसके ऊपर तदनन्तर अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छको बढ़ाकर स्थित जीवके साथ तदनन्तर अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छके अन्तिम काण्डक सम्बन्धी अन्तिम फालिको लेकर स्थित हुआ दूसरा जीव सदृश है। इस प्रकार एक एक गुणश्रेणिगोपुच्छको बढ़ाकर अनिवृत्तिकरणके अन्तिम समय तक उतारना चाहिये। पुनः एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे नवक बन्धके विना द्विचरम गुणश्रेणिगोपुच्छ मात्र अन्तिम समयवर्ती अनिवृत्तिकरणको बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़ाकर

---

[1] प्रतिषु 'अच्छिदूण' इति पाठः।

एवं वड्ढिदूण ट्ठिददव्वेण अणियट्टिखवगदुचरिमगोवुच्छं धरेदूण दुचरिमसमए ट्ठिदस्स दव्वं सरिसं होदि। एवं णवकबंधेणूणएगेगगुणसेडिगोवुच्छं वड्ढाविदूण ओदारेदव्वं जाव खइयसम्माइट्ठिपढमसमओ त्ति। पुणो एत्थ वड्ढाविज्जमाणे णवकबंधेणूणचारित्तमोहणीयतदणंतरहेट्ठिमगुणसेडिगोवुच्छं सम्मत्तचरिमगोवुच्छं च वड्ढावेदव्वा। एवं वड्ढिददव्वेण अण्णस्स जीवस्स खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण मणुस्सेसुववज्जिय सत्तमासाहियअट्ठवासाणमुवरि सम्मत्तं संजमं च घेत्तूण पुणो अणंताणुबंधिचउक्कं विसंजोइय दंसणमोहणीयं खविय कदकरणिज्जो होदूण कदकरणिज्जचरिमसमए वट्टमाणस्स दव्वं सरिसं होदि। एवं णवकबंधेणूणचारित्तमोहणीयगुणसेडिगोवुच्छं सम्मत्तगुणसेडिगोवुच्छं च वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव कदकरणिज्जपढमसमओ त्ति। पुणो एत्थ तदणंतरगुणसेडिगोवुच्छं वड्ढिदूण ट्ठिददव्वेण तदणंतरगुणसेडिगोवुच्छं सम्मत्तचरिमफालिं ओदारिदूण ट्ठिदस्स दव्वं सरिसं होदि। एवं गुणसेडिगोवुच्छं वड्ढाविदूण ओदारेदव्वं जाव संजदपढमसमओ त्ति। णवरि उवसमसम्माइट्ठिम्मि सम्मत्तगोवुच्छा ण वड्ढावेदव्वा, तिस्से तत्थ उदयाभावादो। संपहि संजदपढमसमए

स्थित हुए जीवके द्रव्यके साथ अनिवृत्तिकरण क्षपककी द्विचरम गोपुच्छाको लेकर द्विचरम समयमें स्थित जीवका द्रव्य सदृश होता है। इस प्रकार नवक बन्धसे हीन एक एक गुणश्रेणिगोपुच्छाको बढ़ाकर क्षायिकसम्यग्दृष्टिके प्रथम समय तक उतारना चाहिये। पुनः यहां बढ़ाते समय नवक बन्धसे रहित चारित्र मोहनीयकी तदनन्तर अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छा और सम्यक्त्वप्रकृतिकी अन्तिम गोपुच्छा बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार वृद्धिगत द्रव्यके साथ क्षपितकर्मांशिक स्वरूपसे आकर मनुष्योंमें उत्पन्न होकर सात मास अधिक आठ वर्षोंके ऊपर सम्यक्त्व व संयमको ग्रहण कर पश्चात् अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी विसंयोजना करके दर्शन मोहनीयका क्षय कर कृतकरणीय होकर कृतकरणीय होनेके अन्तिम समयमें वर्तमान अन्य जीवका द्रव्य सदृश है। इस प्रकार नवक बन्धसे रहित चारित्र मोहनीयके गुणश्रेणिगोपुच्छका और सम्यक्त्व प्रकृतिके गुणश्रेणि गोपुच्छको बढ़ाकर कृतकरणीयके प्रथम समय तक उतारना चाहिये। पश्चात् यहां तदनन्तर गुणश्रेणिगोपुच्छ बढ़ाकर स्थित द्रव्यके साथ तदनन्तर गुणश्रेणिगोपुच्छ युक्त सम्यक्त्व प्रकृतिकी अन्तिम फालि उतार कर स्थित जीवका द्रव्य सदृश है। इस प्रकार गुणश्रेणिगोपुच्छको बढ़ाकर संयतके प्रथम समय तक उतारना चाहिये। विशेष इतना है कि उपशमसम्यग्दृष्टिके सम्यक्त्व प्रकृतिकी गोपुच्छाको नहीं बढ़ाना चाहिये, क्योंकि, उसका वहां उदय नहीं है। अब संयतके प्रथम समयमें ज्ञानावरणके विधानसे

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'दीवस' इति पाठः।

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ ७८ ॥

जहण्णदव्वादो परमाणुत्तरादिदव्वमजहण्णा वेयणा। एत्थ खविद-गुणिदकम्मंसियाण कालपरिहाणीओ तेसिं संताणि च अस्सिदूण[1] अजहण्णपदेसपरूवणे कीरमाणे णाणावरणभंगो। णवरि मोहणीयस्स खवगचरिमसमयदव्वं घेत्तूण अजहण्णदव्वपरूवणा कायव्वा। णवरि संतादो अजहण्णदव्वपरूवणे कीरमाणे जहण्णदव्वस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण दुचरिमगुणसेडिगोवुच्छा वड्ढावेदव्वा। पुणो एवं वड्ढिदूण ट्ठिदचरिमसमयसुहुमसांपराइयदव्वेण अण्णस्स जीवस्स खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सुहुमसांपराइयदुचरिमसमयट्ठिदस्स दव्वं सरिसं होदि। एवमेगेगगुणसेडिगोवुच्छं वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव सुहुमसांपराइयद्धाए संखेज्जदिभागमोदिण्णो त्ति। पुणो एदस्सुवरि तदणंतरहेट्ठिमगुणसेडिगोवुच्छं वड्ढिदूण ट्ठिदेण अण्णो जीवो तदणंतरहेट्ठिमगुणसेडिगोवुच्छचरिमकंडयचरिमफालिं च धरेदूण ट्ठिदो सरिसो होदि। एवमेगेगगुणसेडिगोवुच्छं वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव अणियट्टिचरिमसमओ त्ति। पुणो परमाणुत्तरादिकमेण णवकबंधेणूणदुचरिमगुणसेडिगोवुच्छमेत्तं चरिमसमयअणियट्टी वड्ढावेदव्वो।

उक्त तीनों कर्मोंकी इससे भिन्न अजघन्य द्रव्यवेदना है ॥ ७८ ॥

जघन्य द्रव्यकी अपेक्षा एक परमाणु आदिसे अधिक द्रव्य अजघन्य वेदना है। यहां क्षपितकर्मांशिक और गुणितकर्मांशिककी कालपरिहानियों और उनके सत्त्वका आश्रय लेकर अजघन्य द्रव्यके प्रदेशोंकी प्ररूपणा करनेपर वह सब कथन ज्ञानावरणके समान है। विशेष इतना है कि मोहनीयके अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा उसका क्षय करनेवालेके अन्तिम समय सम्बन्धी द्रव्यको ग्रहण कर करना चाहिये। विशेषता यह है कि सत्त्वकी अपेक्षा अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा करते समय जघन्य द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे द्विचरम गुणश्रेणिगोपुच्छा बढ़ाना चाहिये। पश्चात् इस प्रकार वृद्धिको प्राप्त होकर स्थित अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके द्रव्यके साथ क्षपितकर्मांशिक स्वरूपसे आकर सूक्ष्मसाम्परायके द्विचरम समयमें स्थित अन्य जीवका द्रव्य सदृश है। इस प्रकार एक एक गुणश्रेणिगोपुच्छको बढ़ाकर सूक्ष्मसाम्परायिककालके संख्यातवें भाग मात्र अवतीर्ण होने तक उतारना चाहिये। पश्चात् इसके ऊपर तदनन्तर अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छको बढ़ाकर स्थित जीवके साथ तदनन्तर अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छके अन्तिम काण्डक सम्बन्धी अन्तिम फालिको लेकर स्थित हुआ दूसरा जीव सदृश है। इस प्रकार एक एक गुणश्रेणिगोपुच्छको बढ़ाकर अनिवृत्तिकरणके अन्तिम समय तक उतारना चाहिये। पुन एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे नवक बन्धके विना द्विचरम गुणश्रेणिगोपुच्छ मात्र अन्तिम समयवर्ती अनिवृत्तिकरणको बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़ाकर

[1] प्रतिषु 'आस्सिदूण' इति पाठः।

ट्ठिदीण णिसेयस्स उक्कस्सपदे ॥ ८४ ॥ बहुसो बहुसो जहण्णाणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि ॥ ८५ ॥ बहुसो बहुसो मदसकिलेसपरिणामो भवदि ॥ ८६ ॥ एव ससरिदूण बादरपुढविजीवपज्जत्तएसु उववण्णो ॥ ८७ ॥ अतोमुहुत्तेण सव्वलहु सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥ ८८ ॥ अतोमुहुत्तेण कालगदसमाणो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो ॥ ८९ ॥ सव्वलहु जोणिणिक्खमणजम्मणेण जादो अट्ठवस्सीओ ॥ ९० ॥ सजम पडिवण्णो ॥९१॥ तत्थ य भवट्ठिदिं पुव्वकोडिं देसूण सजममणुपालइत्ता थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति मिच्छत्तगदो ॥ ९२ ॥ सव्वत्थोवाए मिच्छत्तस्स असजमद्धाए अच्छिदो ॥ ९३ ॥ मिच्छत्तेण कालगदसमाणो दसवाससहस्साउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो ॥९४॥ अतोमुहुत्तेण सव्वलहु सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥ ९५ ॥ अतोमुहुत्तेण सम्मत्त पडिवण्णो ॥ ९६ ॥ तत्थ य

पद होता है ॥ ८४ ॥ बहुत बहुत बार जघन्य योगस्थानोंको प्राप्त होता है ॥ ८५ ॥ बहुत बहुत बार मन्द संक्लेश परिणामोंसे संयुक्त होता है ॥ ८६ ॥ इस प्रकार संसरण करके बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंमें उत्पन्न हुआ ॥ ८७ ॥ अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा सर्वलघु कालमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ८८ ॥ अन्तर्मुहूर्तमें मृत्युको प्राप्त होकर पूर्वकोटि आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ ॥ ८९ ॥ सर्वलघु कालमें योनिनिष्क्रमण रूप जन्मसे उत्पन्न होकर आठ वर्षका हुआ ॥ ९० ॥ संयमको प्राप्त हुआ ॥ ९१ ॥ वहां कुछ कम पूर्वकोटि मात्र भवस्थिति तक संयमका पालन कर जीवितके थोड़ा शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ ॥ ९२ ॥ मिथ्यात्व सम्बन्धी सबसे थोड़े असंयमकालमें रहा ॥ ९३ ॥ मिथ्यात्वके साथ मृत्युको प्राप्त होकर दस हजार वर्षकी आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ ॥ ९४ ॥ अन्तर्मुहूर्त द्वारा सर्वलघु कालमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ९५ ॥ अन्तर्मुहूर्तमें सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ ॥ ९६ ॥ वहां कुछ कम दस हजार वर्ष प्रमाण

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'कालेण गद' इति पाठः।

णाणावरणविहाणेण वड्ढाविय णेरइयदव्वेण सरिसं[1] घेत्तव्वं । एत्थ जीवसमुदाहारे भण्णमाणे णाणावरणीयभंगो ।

सामित्तेण जहण्णपदे वेदणीयवेयणा दव्वदो जहण्णिया कस्स ? ॥ ७९ ॥

सुगममेदं ।

जो जीवो सुहुमणिगोदजीवेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणियकम्मट्ठिदिमच्छिदो ॥ ८० ॥

सुगमं ।

तत्थ य संसरमाणस्स[2] बहुआ अपज्जत्तभवा, थोवा पज्जत्तभवा ॥ ८१ ॥ दीहाओ अपज्जत्तद्धाओ, रहस्साओ पज्जत्तद्धाओ[3] ॥ ८२ ॥ जदा जदा आउअं बंधदि तदा तदा तप्पाओग्गउक्कस्सएण जोगेण बंधदि ॥ ८३ ॥ उवरिल्लीणं ठिदीणं[4] णिसेयस्स जहण्णपदे हेट्ठिल्लीणं

बढ़ाकर नारक द्रव्यके सदृश ग्रहण करना चाहिये । यहां जीवसमुदाहारका कथन करते समय उसका कथन ज्ञानावरणीयके समान है ।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें वेदनीयवेदना द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है ? ॥ ७९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जो जीव सूक्ष्म निगोद जीवोंमें पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन कर्मस्थिति तक रहा है ॥ ८० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उनमें परिभ्रमण करनेवाले उक्त जीवके अपर्याप्त भव बहुत और पर्याप्त भव स्तोक हैं ॥ ८१ ॥ अपर्याप्तकाल दीर्घ और पर्याप्तकाल थोडा है ॥ ८२ ॥ जब जब आयुको बांधता है तब तब तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट योगसे बांधता है ॥ ८३ ॥ उपरिम स्थितियोंके निषेकका जघन्य पद और अधस्तन स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट

१ अ-आ-काप्रतिषु ' सत्थिय ', ताप्रतौ ' सथिय ' इति पाठः । २ अ-आ-काप्रतिषु ' ससरिदूणस्स- ' इति पाठः । ३ अ-आ-काप्रतिषु ' पज्जत्तद्धा ' इति पाठः । ४ अ-आ-काप्रतिषु ' ट्ठिदीणं ' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते ।

ट्ठिदीण णिसेयस्स उक्कस्सपदे ॥ ८४ ॥ बहुसो बहुसो जहण्णाणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि ॥ ८५ ॥ बहुसो बहुसो मदसकिलेसपरिणामो भवदि ॥ ८६ ॥ एव ससरिदूण बादरपुढविजीवपज्जत्तएसु उववण्णो ॥ ८७ ॥ अतोमुहुत्तेण सव्वलहु सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥ ८८ ॥ अतोमुहुत्तेण कालगदसमाणो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो ॥ ८९ ॥ सव्वलहुं जोणिणिक्खमणजम्मणेण जादो अट्ठ वस्सीओ ॥ ९० ॥ सजम पडिवण्णो ॥९१॥ तत्थ य भवट्ठिर्दि पुव्व कोर्डि देसूण सजममणुपालइत्ता थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति मिच्छत्त गदो ॥ ९२ ॥ सव्वत्थोवाए मिच्छत्तस्स असजमद्धाए अच्छिदो ॥ ९३ ॥ मिच्छत्तेण कालगदसमाणो दसवाससहस्साउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो ॥९४॥ अतोमुहुत्तेण सव्वलहु सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्त यदो ॥ ९५ ॥ अतोमुहुत्तेण सम्मत्त पडिवण्णो ॥ ९६ ॥ तत्थ य

पर होता है ॥ ८४ ॥ बहुत बहुत बार जघन्य योगस्थानोंको प्राप्त होता है ॥ ८५ ॥ बहुत बहुत बार मन्द सक्लेश परिणामोंसे संयुक्त होता है ॥ ८६ ॥ इस प्रकार संसरण करके बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंमें उत्पन्न हुआ ॥ ८७ ॥ अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा सर्वलघु कालमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ८८ ॥ अन्तर्मुहूर्तमें मृत्युको प्राप्त होकर पूर्वकोटि आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ ॥ ८९ ॥ सर्वलघु कालमें योनिनिष्क्रमण रूप जन्मसे उत्पन्न होकर आठ वर्षका हुआ ॥ ९० ॥ सयमको प्राप्त हुआ ॥ ९१ ॥ वहां कुछ कम पूर्वकोटि मात्र भवस्थिति तक सयमका पालन कर जीवितके थोड़ा शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ ॥ ९२ ॥ मिथ्यात्व सम्बन्धी सबसे थोड़े असंयमकालमें रहा ॥ ९३ ॥ मिथ्यात्वके साथ मृत्युको प्राप्त होकर दस हजार वर्षकी आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ ॥ ९४ ॥ अन्तर्मुहूर्त द्वारा सर्वलघु कालमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ९५ ॥ अन्तर्मुहूर्तमें सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ ॥ ९६ ॥ वहां कुछ कम दस हजार वर्ष प्रमाण

---

१ अ-आ-काप्रतिषु कालगद इति पाठः।

भवट्ठिदिं दसवाससहस्साणि देसूणाणि सम्मत्तमणुपालइत्ता थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति मिच्छत्तं गदो ॥ ९७ ॥ मिच्छत्तेण[1] कालगदसमाणो बादरपुढविजीवपज्जत्तएसु उववण्णो ॥ ९८ ॥ अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥ ९९ ॥ अंतोमुहुत्तेण कालगदसमाणो सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तएसु उववण्णो ॥ १०० ॥ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेहि ट्ठिदिखंडयघादेहि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण कालेण कम्मं हदसमुप्पत्तियं कादूण पुणरवि बादरपुढविजीवपज्जत्तएसु उववण्णो ॥१०१॥ एवं णाणाभवग्गहणेहि अट्ठ संजमकंडयाणि अणुपालइत्ता चदुक्खुत्तो कसाए उवसामइत्ता पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि संजमासंजमकंडयाणि सम्मत्तकंडयाणि च अणुपालइत्ता, एवं संसरिदूण अपच्छिमे भवग्गहणे पुणरवि पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो ॥ १०२ ॥ सव्वलहुं

भवस्थिति तक सम्यक्त्वका पालन कर जीवितके थोडा शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ ॥ ९७ ॥ मिथ्यात्वके साथ कालको प्राप्त होकर बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंमें उत्पन्न हुआ ॥ ९८ ॥ अन्तर्मुहूर्त द्वारा सर्वलघु कालमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ९९ ॥ अन्तर्मुहूर्तमें मृत्युको प्राप्त होकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंमें उत्पन्न हुआ ॥ १०० ॥ पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिकाण्डकघातों द्वारा पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र कालमें कर्मको हतसमुत्पत्तिक करके फिर भी बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंमें उत्पन्न हुआ ॥ १०१ ॥ इस प्रकार नाना भवग्रहणों द्वारा आठ संयमकाण्डकोंका पालन करके चार बार कषायोंको उपशमा कर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण संयमासंयमकाण्डकों व सम्यक्त्वकाण्डकोंका पालन करके, इस प्रकार परिभ्रमण करके अन्तिम भवग्रहणमें फिरसे भी पूर्वकोटि आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ ॥ १०२ ॥ सर्वलघु

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु ' मिच्छत्ते ' इति पाठः ।

जोणिणिक्खमणजम्मणेण जादो अट्ठवस्सीओ ॥ १०३ ॥ संजमं पडिवण्णो ॥ १०४ ॥ अंतोमुहुत्तेण खवणाए अब्भुट्ठिदो ॥ १०५ ॥ अंतोमुहुत्तेण केवलणाणं केवलदंसणं च समुप्पादइत्ता केवली जादो ॥ १०६ ॥

किं केवलणाणं ? बज्झत्थअसेसत्थावगमो। किं केवलदंसणं ? तिकालविसयअणंतपज्जयसहिदसगरूवसंवेयणं। एदाणि दो वि समुप्पादइत्ता केवली जादो त्ति उत्तं होदि।

तत्थ य भवट्ठिदिं पुव्वकोडिं देसूणं केवलिविहारेण विहरित्ता थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति चरिमसमयभवसिद्धियो जादो ॥ १०७ ॥

केवलणाणुप्पण्णपढमसमए वेदणीयदव्वमोकड्डिदूण उदयादिगुणसेडिं करेदि। तं जहा— उदए थोवं देदि। से काले असंखेज्जगुणं असंखेज्जगुणाए सेडीए देदि जाव

कालमें योनिनिष्क्रमण रूप जन्मसे उत्पन्न होकर आठ वर्षका हुआ ॥ १०३ ॥ संयमको प्राप्त हुआ ॥ १०४ ॥ अन्तर्मुहूर्तमें क्षपणाके लिये उद्यत हुआ ॥ १०५ ॥ अन्तर्मुहूर्तमें केवलज्ञान और केवलदर्शनको उत्पन्न कर केवली हुआ ॥ १०६ ॥

शंका— केवलज्ञान किसे कहते हैं ?

समाधान— बाह्यार्थ अशेष पदार्थोंके परिज्ञानको केवलज्ञान कहते हैं।

शंका— केवलदर्शन किसे कहते हैं ?

समाधान— तीनों काल विषयक अनन्त पर्यायों सहित आत्मस्वरूपके संवेदनको केवलदर्शन कहते हैं।

इन दोनोंको उत्पन्न कर केवली हुआ यह अभिप्राय है।

वहां कुछ कम पूर्वकोटि मात्र भवस्थिति प्रमाण काल तक केवलिविहारसे विहार करके जीवितके थोड़ा शेष रहनेपर अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक हुआ ॥ १०७ ॥

केवलज्ञानके उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें वेदनीय द्रव्यका अपकर्षण कर उदयादिगुणश्रेणि करता है। यथा— उदयमें स्तोक देता है। अनन्तर कालमें असंख्यातगुणे प्रदेशाग्रको देता है। इस प्रकार गुणश्रेणिशीर्ष तक असंख्यातगुणित श्रेणि

---

१ [illegible] इति पाठः। [illegible] इति पाठः।

गुणसेडिसीसओ त्ति। गुणसेडिसीसयादो तदणंतरट्ठिदीए असंखेज्जगुणहीण। तत्तो विसेसहीण जाव अप्पप्पणो अइच्छावणावलियाए हेट्ठिमसमओ त्ति। बिदियसमए तत्तियमेत्तं चेव दव्वमोकड्डिदूण उदयावलियादिअवट्ठिदगुणसेडिं करेदि। तं जहा— उदए थोव देदि। बिदियाए ट्ठिदीए असंखेज्जगुणमेवमसखेज्जगुणाए[1] सेडीए ताव देदि जाव पढमसमए कदगुणसेडिसीसए त्ति। गुणसेडिसीसयादो तदणतरउवरिमट्ठिदीए असंखेज्जगुणं देदि। तदुवरिमट्ठिदीए असखेज्जगुणहीणं। तत्तो विसेसहीणं। एवमसंखेज्जगुणाए सेडीए पदेसग्ग णिज्जरमाणो ट्ठिदि-अणुभागखंडयघादेहि विणा केवलिविहारेण विहरिय अतोमुहुत्तावसेसे आउए दड-कवाड-पदर-लोगपूरणाणि करेदि[2]। तत्थ पढमसमए देसूणचोद्दसरज्जुआयामेण सगदेहविक्खभादो तिगुणविक्खंभेण सगदेहविक्खभेण वा विक्खभतिगुणपरिरएण[3] एगसमएण वेदणीयट्ठिदिं[4] खडिदूण विणासिदसखेज्जाभाग अप्पसत्थाणं कम्माणं अणुभागस्स घादिदं[5]अणंताभागं दड करेदि। तदो बिदियसमए दोहि वि पासेहि छुत्तवादवलय देसूणचोद्दसरज्जु-

रूपसे प्रदेशाग्रको देता है। गुणश्रेणिशीर्षसे आगेकी स्थितिमें असंख्यातगुणे हीन प्रदेशाग्रको देता है। इससे आगे अपनी अपनी अतिस्थापनावलीके अधस्तन समय तक विशेष हीन विशेष हीन प्रदेशाग्रको देता है।

द्वितीय समयमें उतने ही द्रव्यका अपकर्षण कर उदयावलिसे लेकर अवस्थित-गुणश्रेणि करता है। यथा— उदयमें स्तोक प्रदेशाग्र देता है। द्वितीय स्थितिमें असंख्यातगुणे प्रदेशाग्रको देता है। इस प्रकार प्रथम समयमें किये गये गुणश्रेणिशीर्षक तक असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे देता है। गुणश्रेणिशीर्षसे आगेकी उपरिम स्थितिमें असंख्यातगुणे प्रदेशाग्रको देता है। उससे उपरिम स्थितिमें असंख्यातगुणे हीन प्रदेशाग्रको देता है। उससे आगे विशेष हीन प्रदेशाग्रको देता है।

इस प्रकार असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे प्रदेशाग्रकी निर्जरा करता हुआ स्थितिकाण्डकघातों व अनुभागकाण्डकघातोंके विना केवलिविहारसे विहार करके आयुके अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर दण्ड, कपाट, प्रतर व लोकपूरण समुद्घातको करता है। उसमें प्रथम समयमें कुछ कम चौदह राजु आयाम द्वारा, अपने देहके विस्तारकी अपेक्षा तिगुने विस्तार द्वारा, अथवा अपने देह प्रमाण विस्तार द्वारा, तथा विस्तारसे तिगुनी परिधि द्वारा एक समयमें वेदनीयकी स्थितिको खण्डित कर उसके संख्यात बहुभागके विनाशसे सयुक्त एव अप्रशस्त कर्मोंके अनुभागके अनन्त बहुभागके घातसे सहित दण्ड समुद्घातको करता है। पश्चात् द्वितीय समयमें दोनों ही पार्श्व भागोंसे

१ ताप्रतौ 'गुणमेव सखेज्ज' इति पाठ। २ एमस्थ भावत्थो— उप्पण्णकेवलणाण दसणेहि सव्वदव्व-पज्जाए तिकालविसए जाणतो पस्सतो करणक्कमववहाणवज्जियअणतवीरियो असखेज्जगुणाए सेडीए कम्मणिज्जर कुणमाणो देसूणपुव्वकोडिं विहरिय सजोगिजिणो अतोमुहुत्तावससे आउए दड-कवाड पदर लोगपूरणाणि करेदि। ध अ प १२२५ ३ अ-आ-काप्रतिषु 'परिठएण', ताप्रतौ 'परिट्ठएण' इति पाठ। ४ मप्रतौ 'वेदणीयट्ठिदीए इति पाठः। ५ ताप्रतौ 'पादिद' इति पाठ।

आयदं सगविक्खंभबाहल्लं सेसट्ठिदीए घादिदअसंखेज्जाभागं घादिदसेसाणुभागस्स घादिदाणंताभागं कवाडं[1] करेदि। तदो तदियसमए वादवलयवज्जिदासेसलोगक्खेत्तमावूरिय घादिदसेसट्ठिदीए घादिदअसंखेज्जाभागं घादिदसेसाणुभागस्स घादिदाणंताभागं मंथं[2] करेदि। तदो चउत्थसमए सव्वलोगमावूरिय घादिदसेसट्ठिदीए एगसमएण घादिदअसंखेज्जाभागं सघादिदसेसाणुभागस्स घादिदअणंताभागं सव्वकम्माणं ठविदअंतोमुहुत्तट्ठिदिं लोगपूरणं[3] करेदि। तदो ओयरंतो आउगादो संखेज्जगुणमवसेसट्ठिदिं अंतोमुहुत्तेण सेसियाए ट्ठिदीए संखेज्जे भागे हणदि, सेसाणुभागस्स अणंते भागे अंतोमुहुत्तेण घादेदि। एत्तो पाए ट्ठिदिखंडयस्स अणुभागखंडयस्स च अंतोमुहुत्तिया उक्कीरणद्धा। एत्तो अंतोमुहुत्तं

वातवलयको छोड़नेवाले कुछ कम चौदह राजु आयामवाले अपने विस्तार प्रमाण बाहल्यवाले शेष स्थितिके असंख्यात बहुभागके घातसे सहित और घातनेसे शेष रहे अनुभागके अनन्त बहुभागको घातनेवाले ऐसे कपाट समुद्घातको करता है। पश्चात् तृतीय समयमें वातवलयोंको छोड़कर समस्त लोकक्षेत्रको व्याप्त कर घात करनेसे शेष रही स्थितिके असंख्यात बहुभागका तथा घातनेसे शेष रहे अनुभागके अनन्त बहुभागका घात करनेवाले मंथ (प्रतर) समुद्घातको करता है। पश्चात् चतुर्थ समयमें समस्त लोकको पूर्ण करके एक समयमें घातनेसे शेष रही स्थितिके असंख्यात बहुभागको तथा घातनेसे शेष रहे अनुभागके अनन्त बहुभागको घातकर सब कर्मोंकी अन्तर्मुहूर्त स्थितिको स्थापित करनेवाले लोकपूरण समुद्घातको करता है। तत्पश्चात् वहांसे उतरता हुआ आयुकर्मसे संख्यातगुणी जो शेष कर्मोंकी स्थिति है उसमेंसे अन्तर्मुहूर्त द्वारा शेष स्थितिके संख्यात बहुभागको घातता है और शेष अनुभागके अनन्त बहुभागको अन्तर्मुहूर्त द्वारा घातता है। यहांसे लेकर स्थितिकाण्डक और अनुभागकाण्डकका उत्कीरणकाल अन्तर्मुहूर्त है। यहांसे अन्तर्मुहूर्त जाकर [बादर

१ बिदियसमए पुव्वावरेण वादवलयवज्जियलोगायामं सव्वं पि समंतदो विक्खंभेण बहलं वेदणीयादि ... असंखेज्ज-अणंते भागे घादिदूण अवट्ठाणं तं कवाडं णाम। ज. ध. प. ११५५

२ अ-आ-काप्रतिषु 'कवाडं' ताम्रप्रतौ 'मथं' इति पाठः। तदियसमए वादवलयवज्जियं सव्वलोगागासं जीवपदेसेहिं णिरंतरं पूरिदूण सेसट्ठिदि-अणुभागाणं कमेण असंखेज्जे भागे अणंते भागे च घादिदूण अवट्ठाणं तं पदरं णाम। ज. ध. प ११५   ३ चउत्थसमए सव्वलोगागासमावूरिय सेसट्ठिदि-अणुभागाणमसंखेज्जे भागे अणंते भागे च घादिय अवट्ठाणं तं लोगपूरणं णाम। ज. ध. प. ११५५   ४ तत्तो ... अंतोमुहुत्तो ... एत्तो प्पहुडि ट्ठिदिकंडयाणि अणुभागकंडयाणि च अंतोमुहुत्तेण घादेदि। ज. ध. प. ११५५

५ एत्तो पाए ट्ठिदिखंडयस्स अणुभागखंडयस्स च अंतोमुहुत्तिया उक्कीरणद्धा। ... ट्ठिदि ... अंतोमुहुत्तेण ... ट्ठिदि अणुभागखंडयाणं ... एत्तो ... । जयध. अ. प ११४

गुणसेडिसीसओ त्ति । गुणसेडिसीसयादो तदणंतरट्ठिदीए असंखेज्जगुणहीणं । तत्तो विसेसहीणं जाव अप्पप्पणो अइच्छावणावलियाए हेट्ठिमसमओ त्ति । विदियसमए तत्तियमेत्तं चेव दव्वमोकड्डिदूण उदयावलियादिअवट्ठिदगुणसेडिं करेदि । तं जहा — उदए थोवं देदि । बिदियाए ट्ठिदीए असंखेज्जगुणमेवमसंखेज्जगुणाए[1] सेडीए ताव देदि जाव पढमसमए कदगुणसेडिसीसए त्ति । गुणसेडिसीसयादो तदणंतरउवरिमट्ठिदीए असंखेज्जगुणं देदि । तदुवरिमट्ठिदीए असंखेज्जगुणहीणं । तत्तो विसेसहीणं । एवमसंखेज्जगुणाए सेडीए पदेसग्गं णिज्जरमाणो ट्ठिदि-अणुभागखंडयघादेहि विणा केवलिविहारेण विहरिय अंतोमुहुत्तावसेसे आउए दंड-कवाड-पदर-लोगपूरणाणि करेदि[2] । तत्थ पढमसमए देसूणचोद्दसरज्जुआयामेण सगदेहविक्खंभादो तिगुणविक्खंभेण सगदेहविक्खंभेण वा विक्खंभतिगुणपरिरएण[3] एगसमएण वेदणीयट्ठिदिं[4] खंडिदूण विणासिदसंखेज्जाभागं अप्पसत्थाणं कम्माणं अणुभागस्स घादिदं[5] अणंताभागं दंडं करेदि । तदो बिदियसमए दोहि वि पासेहि छुत्तवादवलयं देसूणचोद्दसरज्जु-

---

रूपसे प्रदेशाग्रको देता है। गुणश्रेणिशीर्षसे आगेकी स्थितिमें असंख्यातगुणे हीन प्रदेशाग्रको देता है। इससे आगे अपनी अपनी अतिस्थापनावलीके अधस्तन समय तक विशेष हीन विशेष हीन प्रदेशाग्रको देता है।

द्वितीय समयमें उतने ही द्रव्यका अपकर्षण कर उदयावलिसे लेकर अवस्थित गुणश्रेणि करता है। यथा— उदयमें स्तोक प्रदेशाग्र देता है। द्वितीय स्थितिमें असंख्यातगुणे प्रदेशाग्रको देता है। इस प्रकार प्रथम समयमें किये गये गुणश्रेणिशीर्षक तक असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे देता है। गुणश्रेणिशीर्षसे आगेकी उपरिम स्थितिमें असंख्यातगुणे प्रदेशाग्रको देता है। उससे उपरिम स्थितिमें असंख्यातगुणे हीन प्रदेशाग्रको देता है। उससे आगे विशेष हीन प्रदेशाग्रको देता है।

इस प्रकार असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे प्रदेशाग्रकी निर्जरा करता हुआ स्थितिकाण्डकघातों व अनुभागकाण्डकघातोंके विना केवलिविहारसे विहार करके आयुके अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर दण्ड, कपाट, प्रतर व लोकपूरण समुद्घातको करता है। उसमें प्रथम समयमें कुछ कम चौदह राजु आयाम द्वारा, अपने देहके विस्तारकी अपेक्षा तिगुने विस्तार द्वारा, अथवा अपने देह प्रमाण विस्तार द्वारा, तथा विस्तारसे तिगुनी परिधि द्वारा एक समयमें वेदनीयकी स्थितिको खण्डित कर उसके संख्यात बहुभागके विनाशसे संयुक्त एवं अप्रशस्त कर्मोंके अनुभागके अनन्त बहुभागके घातसे सहित दण्ड समुद्घातको करता है। पश्चात् द्वितीय समयमें दोनों ही पार्श्व भागोंसे

---

१ ताप्रतौ 'गुणमेव सखेज्ज' इति पाठ । २ एमस्स भावत्थो— उप्पण्णकेवलणाण दंसणेहि सव्वदव्वपज्जाए तिकालविसए जाणंतो पस्संतो करणक्कमववहाणवज्जियअणंतवीरियो असंखेज्जगुणाए सेडीए कम्मणिज्जरं कुणमाणो देसूणपुव्वकोडिं विहरिय सजोगिजिणो अंतोमुहुत्तावसेसे आउए दंड-कवाड पदर लोगपूरणाणि करेदि । ध अ प ११२५ ३ अ-आ-काप्रतिषु 'परिठएण', ताप्रतौ 'परिट्ठएण' इति पाठ । ४ मप्रतौ 'वेदणीयट्ठिदीए इति पाठ । ५ ताप्रतौ 'पादिद' इति पाठ ।

वग्गणाए जीवपदेसा असंखेज्जगुणहीणा[1] । तत्तो विसेसहीणा[2] । एवमंतोमुहुत्तमपुव्वफद्दयाणि करेदि असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए, जीवपदेसाणं पि असंखेज्जगुणाए सेडीए[3] । अपुव्वफद्दयाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि[4] । सेडिवग्गमूलस्स वि असंखेज्जदिभागो, पुव्वफद्दयाण पि असंखेज्जदिभागो सव्वाणि अपुव्वफद्दयाणि ।

अपुव्वफद्दयकरणे समत्ते तदो अंतोमुहुत्तकालं जोगकिट्टीओ करेदि[5] । अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए अविभागपलिच्छेदाणमसंखेज्जदिभागमोकड्डिदूण पढमकिट्टीए थोवा अविभागपडिच्छेदा दिज्जंति । बिदियाए किट्टीए असंखेज्जगुणाए, तदियाए किट्टीए असंखेज्जगुणाए, एवमसंखेज्जगुणाए सेडीए दिज्जंति जाव चरिमकिट्टि त्ति । तदो उवरिम अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए असंखेज्जगुणहीणा दिज्जंति । तदुवरि सव्वत्थ विसेसहीणा ।

आदिम वर्गणामें जीवप्रदेश असंख्यातगुणे हीन किये जाते हैं । उससे आगे विशेष हीन किये जाते हैं । इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त तक असंख्यातगुणहीन श्रेणि रूपसे अपूर्वस्पर्धकोंको करता है । किन्तु जीवप्रदेशोंका अपकर्षण असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे करता है । अपूर्वस्पर्धक श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । सब अपूर्वस्पर्धक श्रेणिवर्गमूलके भी असंख्यातवें भाग और पूर्वस्पर्धकोंके भी असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

अपूर्वस्पर्धकक्रियाके समाप्त होनेपर पश्चात् अन्तर्मुहूर्त काल तक योगकृष्टियोंको करता है । अपूर्वस्पर्धकोंकी प्रथम वर्गणामें जितने अविभागप्रतिच्छेद हैं उनके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करके प्रथम कृष्टिमें स्तोक अविभागप्रतिच्छेद दिये जाते हैं । द्वितीय कृष्टिमें असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे, तृतीय कृष्टिमें असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे, इस प्रकार अन्तिम कृष्टि तक असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे अविभागप्रतिच्छेद दिये जाते हैं । पश्चात् उपरिम अपूर्वस्पर्धकोंकी प्रथम वर्गणामें असंख्यातगुणे हीन दिये जाते हैं । उसके आगे सर्वत्र विशेष हीन दिये जाते हैं । द्वितीय समयमें

१ अ-आ-काप्रतिषु '-गुणहीणाए' इति पाठः ।

२ आदिल्लवग्गणाए जीवपदेसाणमसंखेज्जदिभागमोकड्डदि, जीवपदेसाणं च असंखेज्जदिभागमोकड्डदि । पढमसमए जीवपदेसाणमसंखेज्जदिभागमोकड्डिदूण अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए जीवपदेसग्गं णिसिंचदि । बिदियाए वग्गणाए जीवपदेसे विसेसहीणे णिसिंचदि । जयध (प्र. पृ.) अ. प. ११४१-४२.

३ जयध (प्र. पृ.) अ. प. ११४१ तत्थ वि 'सेडीए' स्थाने 'च' इति पदमुपलभ्यते । ४ जयध (प्र. पृ.) अ. प. ११४१ ५ जयध. अ. प. ११४१

६ एत्तो अंतोमुहुत्तं किट्टीओ करेदि । एत्तोणंतरमंतोमुहुत्तमपुव्वफद्दयकिरियं समाणिय [illegible] जोगस्स सुहुमखंडाणि करेमाणो किट्टीओ णाम कुणदि । जयध. अ. प. ११४१

७ अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदाणमसंखेज्जदिभागमोकड्डदि [illegible] । [illegible] असंखेज्जदिभागमोकड्डदि । [illegible] असंखेज्जदिभागे [illegible] त्ति वुत्तं होइ । जयध. अ. प. ११४१

गंतूण [[1]बादरकायजोगेण बादरमणजोगं णिरुंभदि[2] । तदो अंतोमुहुत्तेण] बादरकायजोगेण बादरवचिजोगं णिरुंभदि । तदो अंतोमुहुत्तेण बादरकायजोगेण बादरउस्सास-णिस्सासं णिरुंभदि । तदो अंतोमुहुत्तेण बादरकायजोगेण बादरकायजोगं णिरुंभदि[3] । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमकायजोगेण सुहुममणजोगं णिरुंभदि । तदो अंतोमुहुत्तेण सुहुमकायजोगेण सुहुमवचिजोगं णिरुंभदि[3] । तदो अंतोमुहुत्तेण सुहुमकायजोगेण सुहुमउस्सासं णिरुंभदि[3] । तदो अंतोमुहुत्तेण सुहुमकायजोगेण सुहुमकायजोगं णिरुंभमाणो इमाणि करणाणि करेदि[4]— पढमसमए जोगस्स अपुव्वफद्दयाणि करेदि पुव्वफद्दयाणं हेट्ठदो[5] । आदिवग्गणाए [6]अविभागपलिच्छेदाणमसंखेज्जदिभागमोकड्डियूँ, जीवपदेसाणं पि असंखेज्जदिभागमोकड्डिदूण, अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए जीवपदेसा बहुगा दिज्जंति । बिदियवग्गणाए विसेसहीणा[8] । एवं विसेसहीणा विसेसहीणा जाव अपुव्वफद्दयाणं चरिमवग्गणेत्ति । तदो अपुव्वफद्दयाणमादि-

काययोग द्वारा बादर मनयोगका निरोध करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें] बादर काययोग द्वारा बादर वचनयोगका निरोध करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें बादर काययोग द्वारा बादर उच्छ्वास निच्छ्वासका निरोध करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें बादर काययोग द्वारा बादर काययोगका निरोध करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म काययोग द्वारा सूक्ष्म मनयोगका निरोध करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें सूक्ष्म काययोग द्वारा सूक्ष्म वचनयोगका निरोध करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें सूक्ष्म काययोग द्वारा सूक्ष्म उच्छ्वासका निरोध करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें सूक्ष्म काययोग द्वारा सूक्ष्म काययोगका निरोध करता हुआ इन करणोंको करता है— प्रथम समयमें योगके पूर्वस्पर्धकोंके नीचे अपूर्वस्पर्धकोंको करता है । पूर्वस्पर्धकोंकी आदिम वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करके तथा जीवप्रदेशोंके भी असंख्यातवें भागका अपकर्षण करके अपूर्वस्पर्धकोंकी आदिम वर्गणामें जीवप्रदेश बहुत दिये जाते हैं । द्वितीय वर्गणामें विशेष हीन दिये जाते हैं । इस प्रकार अपूर्वस्पर्धकोंकी अन्तिम वर्गणा तक विशेष हीन विशेष हीन दिये जाते हैं । पश्चात् अपूर्वस्पर्धकोंकी

१ प्रतिषु त्रुटितोऽयं कोष्ठकस्थ पाठः । २ को जोगणिरोहो ? जोगविणासो । तं जहा— एत्तो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरकायजोगेण बादरमणजोगं णिरुंभदि । × × × × × ध अ प ११२५

३ जयध (चू सू) अ प १२४०

४ जयध (चू सू) अ प १२४१ ५ ताप्रतौ ' करेदि । पुव्व ' इति पाठः ।

६ पढमसमए अपुव्वफद्दयाणि करेदि पुव्वफद्दयाणं हेट्ठदो । एत्तो पुव्वावत्थाए सुहुमकायपरिप्फंदसत्ती सुहुमणिगोदजहण्णजोगादो असंखेज्जगुणहाणीए परिणमिय पुव्वफद्दयसरूवा चेव होदूण पयट्टमाणा एण्हि तत्तो वि सुट्ठु ओवट्टियूण अपुव्वफद्दयायारेण परिणामिज्जदि त्ति एदिस्से किरियाए अपुव्वकरणसण्णा । जयध. अ. प. १२४१ ७ अ का ताप्रतिषु ' -मोकड्डिद' इति पाठः । ८ अ आ-काप्रतिषु ' विसेसहीणाए' इति पाठः ।

खेज्जदिभागो, अपुव्वफद्दयाणं पि असंखेज्जदिभागो[1]। किट्टिकरणे णिट्ठिदे से काले पुव्वफद्दयाणि च अपुव्वफद्दयाणि किट्टिसरूवेण परिणामेदि। ताधे किट्टीणमसंखेज्जे भागे वेदयदि। एवमंतोमुहुत्तकालं किट्टिगदजोगो[3] सुहुमकिरियमप्पडिवादिझाणं झायदि। किट्टि वेदगचरिमसमए असंखेज्जाभागे णासेदि[4]। जोगम्हि णिरुद्धम्हि आउसमाणि कम्माणि करेंति[5]। आवज्जिदकरणादो[6] संखेज्जेसु ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु गदेसु तदो अपच्छिमं ट्ठिदिखंडयमागाएंतो अपच्छिमट्ठिदिखंडयस्स जेत्तिया उक्कीरणद्धा, अजोगिअद्धा च जेत्तिया, एत्तियाओ ट्ठिदीओ मोत्तूण आगाएदि। तस्स ट्ठिदिखंडयस्स चरिमफालिं घेत्तूण उदिज्जमाणियाण पयडीणमुदए थोवं दिज्जदि। विदियाए ट्ठिदीए असंखेज्जगुणमेवम संखेज्जगुणाए सेडीए दिज्जदि जाव अजोगिचरिमसमओ त्ति। तदो अंतोमुहुत्तं अजोगी

करणके समाप्त होनेपर अनन्तर कालमें पूर्वस्पर्धकों और अपूर्वस्पर्धकोंको कृष्टि स्वरूपसे परिणमाता है। उस समय कृष्टियोंके असंख्यात बहुभागका वेदन करता है। इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त काल तक कृष्टिगतयोग होकर सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाति नामक शुक्ल ध्यानको ध्याता है। कृष्टिवेदकके अन्तिम समयमें असंख्यात बहुभागको नष्ट करता है। योगका निरोध हो जानेपर आयुके समान कर्म (वेदनीय, नाम व गोत्र) किये जाते हैं। आवर्जित करणसे संख्यात हजार स्थितिकाण्डकोंके बीत जानेपर पश्चात् अन्तिम स्थितिकाण्डकको ग्रहण करता हुआ अन्तिम स्थिति काण्डकका जितना उत्कीरणकाल और जितना अयोगिकाल है इतनी स्थितियोंको छोड़कर ग्रहण करता है। उस स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिको ग्रहण कर उदयमें आनेवाली प्रकृतियोंके प्रदेशाग्रको उदयमें स्तोक देता है। द्वितीय स्थितिमें असंख्यातगुणा देता है। इस प्रकार अयोगीके अन्तिम समय तक असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे देता है। पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें अयोगी होकर शैलेश्य भावको प्राप्त होता है

१ जयध. (प्र. प.) प. १२४४. २ णिट्ठिदाकाले [के] णिट्ठिदे से काले पुव्वफद्दयाणि अपुव्वफद्दयाणि च णासेदि। जयध. (प्र. प.) प. १२४४. ३ अंतोमुहुत्तं किट्टिगदजोगो होदि। जयध. (प्र. प.) प. १२४४. ४ सुहुमकिरियमप्पडिवादिझाणं झायदि। तत्र (तदा) क्रिया योगः [illegible] अप्रतिपाति [illegible] ध्यातुं भवति। जयध. प. १२४५.

५ [illegible] असंखेज्जदिभागे णासेदि [illegible] इति पाठः। [illegible] असंखेज्जाभागे णासेदि। जयध. (प्र. प.) प. १२४५.

६ जोगम्हि णिरुद्धम्हि आउसमाणि कम्माणि होंति। जयध. (प्र. प.) प. १२४६.

७ [illegible] जयध. प. १२४७. ८ [illegible] इति पाठः।

९ [illegible] इति पाठः।

बिदियसमए ओकड्डिदूण पढमअपुव्वकिट्टीए अविभागपडिच्छेदा थोवा दिज्जंति । बिदियाए किट्टीए असंखेज्जगुणा । तदियाए किट्टीए असंखेज्जगुणा । एवमसंखेज्जगुणाए सेडीए उवरि वि णेदव्वं जाव पुव्विल्लसमयकदचरिमकिट्टि त्ति । एवं कादव्वं जाव किट्टिकरणद्धा-चरिमसमओ त्ति । पढमसमए जीवपदेसाणमसंखेज्जदिभागमोकड्डिदूण जहण्णकिट्टीए जीवपदेसा बहुवा दिज्जति । बिदियाए किट्टीए विसेसहीणा असंखेज्जदिभागेण । एवं ताव विसेसहीणा जाव चरिमकिट्टि त्ति[1] । चरिमकिट्टीदो अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए असंखेज्जगुणहीणा दिज्जति । तत्तो उवरि सव्वत्थ विसेसहीणो[2] । एत्थ अंतोमुहुत्तं किट्टीओ असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए करेदि[3] । जीवपदेसे असंखेज्जगुणाए सेडीए ओकड्ढदि[4] । किट्टिगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो[5] । किट्टीओ पुण सेडीए अस-

---

अपकर्षण करके प्रथम अपूर्वकृष्टिमें अविभागप्रतिच्छेद स्तोक दिये जाते हैं । द्वितीय कृष्टिमें असंख्यातगुणे दिये जाते हैं । तृतीय कृष्टिमें असंख्यातगुणे दिये जाते हैं । इस प्रकार ऊपर भी पूर्व समयमें की गई अन्तिम कृष्टि तक असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे ले जाना चाहिये । इस प्रकार कृष्टिकरणकालके अन्तिम समय तक करना चाहिये ।

प्रथम समयमें जीवप्रदेशोंके असंख्यातवें भागका अपकर्षण कर जघन्य कृष्टिमें जीवप्रदेश बहुत दिये जाते हैं । द्वितीय कृष्टिमें असंख्यातवें भाग रूप विशेषसे हीन दिये जाते हैं । इस प्रकार अन्तिम कृष्टि तक विशेष हीन दिये जाते हैं । अन्तिम कृष्टिसे अपूर्वस्पर्धकोंकी आदिम वर्गणामें असंख्यातगुणे हीन दिये जाते हैं । उसके ऊपर सर्वत्र विशेष हीन दिये जाते हैं । यहां अन्तर्मुहूर्त तक असंख्यात-गुणित श्रेणि रूपसे कृष्टियोंको करता है । जीवप्रदेशोंका असंख्यातगुणित श्रेणि रूपसे अपकर्षण करता है ।

कृष्टियोंका गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । परन्तु कृष्टियां श्रेणिके असंख्यातवें भाग और अपूर्वस्पर्धकोंके भी असंख्यातवें भाग हैं । कृष्टि

---

१ जीवपदेसाणमसंखेज्जदिभागमोकड्डदि । पुव्वापुव्वफद्दएसु समवट्ठिदाण लोगमेत्तजीवपदेसाण असंखेज्जदिभागमेत्तजीवपदेसे किट्टिकरणद्धमोकड्डदि त्ति वुत्त होइ । ××× पढमसमयकिट्टिकारगो पुव्वफद्दएहिंतो अपुव्वफद्दएहिंतो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपडिभागेण जीवपदेसे ओकड्डियूण पढमकिट्टीए बहुए जीवपदेसे णिक्खिवदि । बिदियाए किट्टीए विसेसहीणे णिसिंचदि । को एत्थ पडिभागो ? सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिसेग-भागहारो । एवं णिक्खिवमाणो गच्छदि जाव चरिमकिट्टि त्ति । जयध अ प १२४२

२ पुणो चरिमकिट्टीदो अपुव्वफद्दयादिवग्गणाए असंखेज्जगुणहीण णिसिंचिदूण तत्तो विसेसहीणाए णिसिंचदि त्ति णेदव्वं । जयध. अ प १२४३ ३ ध अ प ११२५ एत्थ अंतोमुहुत्त करेदि किट्टीओ असंखेज्जगुणाए [गुणहीणाए] सेडीए । जयध (चू सू) अ प १२४४ ४ ध अ प ११२५ जीवपदेसाणमसंखेज्जगुणाए सेडीए । जयध अ प. १२४४ ५ जयध (चू सू) अ प १२४४

एत्थ णिरुंभणट्ठाणाण परूवणाए उवसंहारपरूवणाए च णाणावरणभंगो।

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ १०९ ॥

एत्थ खविद-गुणिदकम्मंसियाणं कालपरिहाणीए अजहण्णपदेसपरूवणं कीरमाणे णाणावरणभंगो। णवरि खविदकम्मंसियलक्खणेण गुणिदकम्मंसियलक्खणेण वा आगंतूण सत्तमासहियअट्ठवासाणमुवरि सम्मत्तं घेत्तूण अंतोमुहुत्तेण चरिमसमयभवसिद्धिओ आदो त्ति ओदारेदव्वं। पुणो एवमोदारिय चरिमसमयणेरइयदव्वेण सण्णिमुट्ठक्कस्सं कादूण घेत्तव्वं।

संपहि खविदकम्मंसियस्स संतमस्सिदूण अजहण्णदव्वपरूवणं भणिस्सामो। तं जहा— खविदकम्मंसियलक्खणेण आगंतूण भवसिद्धियचरिमसमए ट्ठिदजीवजहण्णदव्वस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण अणंतभागवड्ढि असंखेज्जभागवड्ढीहि तदणंतरहेट्ठिमगुणसेडिगोवुच्छमेत्तं वड्ढिय ट्ठिदो च, तदो अण्णो जीवो केवलिगुणसेडिणिज्जरं काद्ण भवसिद्धिय दुचरिमसमयट्ठिदो च, सरिसा। एवमोदारेदव्वं जाव अजोगिपढमसमओ त्ति। पुणो अजोगिपढमसमए तदणंतरहेट्ठिमगुणसेडिगोवुच्छा वड्ढावेदव्वा। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च,

---

यहां निरुंधनस्थानोंकी प्ररूपणा तथा उपसंहारकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है।

इससे भिन्न उसकी वेदना द्रव्यकी अपेक्षा अजघन्य होती है ॥ १०९ ॥

यहां क्षपितकर्मांशिक और गुणितकर्मांशिकके कालपरिहानिकी अपेक्षा अजघन्य भेदोंकी प्ररूपणा करते समय ज्ञानावरणके समान कथन है। विशेष इतना है कि क्षपितकर्मांशिक रूपसे अथवा गुणितकर्मांशिक रूपसे आकर सात मास अधिक आठ वर्षोंके ऊपर संयमको ग्रहण कर अन्तर्मुहूर्तमें अन्तिम समयवर्ती भवसिद्धिक हुआ कि उतारना चाहिये। पश्चात् इस प्रकार उतार कर अन्तिम समयवर्ती नारकके द्रव्यसे साम्प्रतिक द्रव्यको उत्कृष्ट करके ग्रहण करना चाहिये।

अब क्षपितकर्मांशिकके सत्त्वका आश्रय कर अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा करते हैं। यथा— क्षपितकर्मांशिक रूपसे आकर भवसिद्धिक होनेके अन्तिम समयमें स्थित जीवके जघन्य द्रव्यके ऊपर उत्तरोत्तर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे अनन्तभागवृद्धि और असंख्यातभागवृद्धि द्वारा तदनन्तर अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छ मात्र बढ़ाकर स्थित हुआ जीव तथा उससे भिन्न केवलिगुणश्रेणिनिर्जराको करके भवसिद्धिक होनेके द्विचरम समयमें स्थित हुआ एक दूसरा जीव ये दोनों सदृश हैं। इस प्रकार अयोगी होनेके प्रथम समय तक उतारना चाहिये। पुनः अयोगी होनेके प्रथम समयमें तदनन्तर अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छा बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार

---

१ अप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-काप्रतिषु 'वडि' इति पाठः।

होदूण सेलेसिं[1] पडिवज्जदि। समुच्छिण्णकिरियमणियट्टिसुक्कज्झाणं झायदि[2]। तदो देवगदि-वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्विय [आहार-] सरीरअंगोवंग-पंचवण्ण-पंचरस-पसत्थगंध-अट्ठफास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुअलहुअ-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुस्सर-अजसकित्ति-णिमिणमिदि चालीसदेवगदिसहगदाओ, अण्णदरवेदणीय-ओरालियसरीर-पंचसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वि-पंचवण्ण-पंचरस-अप्पसत्थगंध-अप्पसत्थविहायगदि-उवघाद-अपज्जत्त-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदमिदि तेत्तीसपयडीओ मणुसगदिसहगदाओ, एवमेदाओ तेहत्तरिपयडीओ अजोगिस्स दुचरिमसमए विणासिय[3] अण्णदरवेदणीय-मणुस्साउ-मणुस्सगदि-पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-सुभगादेज्ज-जसकित्ति-[तित्थयर]-उच्चागोदेहि सह चरिमसमयभवसिद्धिओ जादो।

तस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स वेदणीयवेदणा जहण्णा ॥१०८॥

और समुच्छिन्नक्रिया-अनिवृत्ति शुक्ल ध्यानको ध्याता है। तत्पश्चात् देवगति, वैक्रियिक, आहारक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिक [व आहारक] शरीरांगोपांग, पांच वर्ण, पांच रस, प्रशस्त गन्ध, आठ स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुस्वर, अयशकीर्ति और निर्माण, ये चालीस देवगतिके साथ रहनेवाली, तथा अन्यतर वेदनीय, औदारिकशरीर, पांच संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, पांच वर्ण, पांच रस, अप्रशस्त गन्ध, अप्रशस्त विहायोगति, उपघात, अपर्याप्त, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, ये तेतीस प्रकृतियां मनुष्यगतिके साथ रहनेवाली, इस प्रकार इन तिहत्तर प्रकृतियोंका अयोगीके द्विचरम समयमें विनाश करके दोमेंसे एक वेदनीय, मनुष्यायु, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, [तीर्थंकर] और उच्चगोत्रके साथ अन्तिम समयवर्ती भवसिद्धिक हुआ।

उस अन्तिम समयवर्ती भवसिद्धिकके वेदनीयकी वेदना द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य होती है ॥ १०८ ॥

१ प्रतिषु 'एदेसिं' इति पाठ। तदो अंतोमुहुत्तं सेलेसिं पडिवज्जदि। ततोऽन्तर्मुहूर्तमयोगिकेवली भूत्वा शैलेश्यमेष भगवानलेश्यभावेन प्रतिपद्यत इति सूत्रार्थः। किंपुनरिदं शैलेश्यं नाम? शीलानामीशः शैलेशः, तस्य भावः शैलेश्यं सकलगुणशीलानामैकाधिपत्यप्रतिलम्भनमित्यर्थः। जयध अ प १२४६ प ख पु १, पृ ४१७

२ समुच्छिण्णकिरियमणियट्टिसुक्कज्झाणं झायदि। क्रियानामयोगः समुच्छिन्ना क्रिया यस्मिन् तत्समुच्छिन्नक्रियम्, न निवर्तत इत्येव शीलमनिवर्ति, समुच्छिन्नक्रियं च तदनिवर्ति च समुच्छिन्नक्रियनिवर्ति। समुच्छिन्नसर्ववाङ्मनस्काययोगव्यापारत्वादप्रतिपातित्वाच्च समुच्छिन्नक्रियस्यायमन्त्य शुक्लध्यानमलेश्याबलाधान काय त्रयबन्धनिर्मोचनैकफलमनुसधाय स भगवान् ध्यायतीत्युक्तं भवति। जयध अ प १२४६

३ अत्रायोगिकेवली द्विचरमसमये अनुदयवेदनीयदेवगतिपुरस्सरा द्वासप्तति प्रकृती क्षपयति, चरमसमये च सोदयवेदनीय-मनुष्यायु मनुष्यगतिप्रभृतिकास्त्रयोदशप्रकृती क्षपयतीति प्रतिपत्तव्यम्। जयध. अ प १२४७

एत्थ णिल्लेवणट्ठाणाणं परूवणाए उवसंहारपरूवणाए च णाणावरणभंगो ।

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ १०९ ॥

एत्थ खविद-गुणिदकम्मंसियाणं कालपरिहाणीए अजहण्णपदेसपरूवणे कीरमाणे णाणावरणभंगो । णवरि खविदकम्मंसियलक्खणेण गुणिदकम्मंसियलक्खणेण वा आगंतूण सत्तमासहियअट्ठवासाणमुवरि संजमं घेत्तूण अंतोमुहुत्तेण चरिमसमयभवसिद्धिओ जादो त्ति ओदारेदव्वं । पुणो एवमोदारिय चरिमसमयणेरइयदव्वेण सरिसं[1] उक्कस्सं कादूण घेत्तव्वं ।

संपहि खविदकम्मंसियस्स संतमस्सिदूण अजहण्णदव्वपरूवणं भणिस्सामो । तं जहा— खविदकम्मंसियलक्खणेण आगंतूण भवसिद्धियचरिमसमए ट्ठिदजीवजहण्णदव्वस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण अणंतभागवड्ढि असंखेज्जभागवड्ढीहि तदणंतरहेट्ठिमगुणसेडिगोवुच्छमेत्तं वड्ढिय ट्ठिदो च, तदो अण्णो जीवो केवलिगुणसेडिणिज्जरं कादूण भवसिद्धियदुचरिमसमयट्ठिदो च, सरिसा । एवमोदारेदव्वं जाव अजोगिपढमसमओ त्ति । पुणो अजोगिपढमसमए तदणंतरहेट्ठिमगुणसेडिगोवुच्छा वड्ढावेदव्वा । एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च,

---

यहां निर्लेपनस्थानोंकी प्ररूपणा तथा उपसंहारकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है ।

इससे भिन्न उसकी वेदना द्रव्यकी अपेक्षा अजघन्य होती है ॥ १०९ ॥

यहां क्षपितकर्मांशिक और गुणितकर्मांशिकके कालपरिहानिकी अपेक्षा अजघन्य प्रदेशोंकी प्ररूपणा करते समय ज्ञानावरणके समान कथन है । विशेष इतना है कि क्षपितकर्मांशिक रूपसे अथवा गुणितकर्मांशिक रूपसे आकर सात मास अधिक आठ वर्षोंके ऊपर संयमको ग्रहण कर अन्तर्मुहूर्तमें अन्तिम समयवर्ती भवसिद्धिक हुआ कि उतारना चाहिये । पश्चात् इस प्रकार उतार कर अन्तिम समयवर्ती नारकके द्रव्यसे सामनतिक द्रव्यको उत्कृष्ट करके ग्रहण करना चाहिये ।

अब क्षपितकर्मांशिकके सत्त्वका आश्रय कर अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा करते हैं । यथा— क्षपितकर्मांशिक रूपसे आकर भवसिद्धिक होनेके अन्तिम समयमें स्थित जीवके जघन्य द्रव्यके ऊपर उत्तरोत्तर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे अनन्तभागवृद्धि और असंख्यातभागवृद्धि द्वारा तदनन्तर अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छ मात्र बढ़ाकर स्थित हुआ जीव तथा इससे भिन्न केवलिगुणश्रेणिनिर्जराको करके भवसिद्धिक होनेके द्विचरम समयमें स्थित हुआ एक दूसरा जीव ये दोनों सदृश हैं । इस प्रकार अयोगी होनेके प्रथम समय तक उतारना चाहिये । पुनः अयोगी होनेके प्रथम समयमें तदनन्तर अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छा बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार

---

१ ताप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-काप्रतिषु 'चरिम' इति पाठः ।

अण्णेगो पुव्वविधाणेणागंतूण तदणंतरगुणसेडिगोवुच्छं तिस्से चरिमफालिं[1] च घेत्तूण[2] सजोगिचरिमसमयट्ठिदो च, सरिसा। एत्तो एगेगगुणसेडिगोवुच्छं[3] वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव अंतोमुहुत्तेण सव्व ट्ठिदिखंडयमुट्ठिदेत्ति। पुणो वि एवं चेव ओदारेदव्वं जाव लोगमावूरिय ट्ठिदकेवलि त्ति। पुणो एत्थ परमाणुत्तरादिकमेण तदणंतरहेट्ठिमगुणसेडि-गोवुच्छमेत्तं वड्ढिय ट्ठिदो च, अण्णेगो तदित्थट्ठिदिखंडएण हेट्ठिमगुणसेडिगोवुच्छं घेत्तूण मथं कादूण ट्ठिदो च, सरिसा। पुणो पुव्वदव्वं मोत्तूण मथगदजीवदव्वस्सुवरि तदणंतर-हेट्ठिमगुणसेडिगोवुच्छं वड्ढिय ट्ठिदो च, अण्णेगो तदित्थट्ठिदिखडएण सह हेट्ठिमउदयगद गुणसेडिगोवुच्छं धरिय कवाडगदजीवो च, सरिसा। तदो पुव्विल्लं मोत्तूण इमं घेत्तूण परमाणुत्तरादिकमेण एगहेट्ठिमगुणसेडिगोवुच्छमेत्तं वड्ढावेदव्वं। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो जीवो तदित्थट्ठिदिखडएण सह हेट्ठिमगुणसेढिगोवुच्छं धरिय दंडं कादूण ट्ठिदो च, सरिसा। पुणो पुव्विल्लं मोत्तूण एदस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण[4] तदणंतरहेट्ठिमगुण-सेडिगोवुच्छमेत्तं वड्ढिय ट्ठिदो च, आवज्जिदकरणचरिमसमयगुणसेडिगोवुच्छं तदित्थट्ठिदि-

---

वृद्धिको प्राप्त होकर स्थित हुआ जीव, तथा पूर्वोक्त विधानसे आकर तदनन्तर गुणश्रेणिगोपुच्छ और उसकी अन्तिम फालिको लेकर सयोगीके अन्तिम समयमें स्थित हुआ एक दूसरा जीव, ये दोनों सदृश हैं। यहांसे आगे एक एक गुण-श्रेणिगोपुच्छको बढ़ाकर अन्तर्मुहूर्त द्वारा समस्त स्थितिकाण्डकके उत्थित होने तक उतारना चाहिये। फिर भी इसी प्रकार लोकको पूर्ण कर स्थित केवली तक उतारना चाहिये। पुन यहां एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे तदनन्तर अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छ मात्र बढ़ाकर स्थित हुआ जीव, तथा वहांके स्थितिकाण्डकके साथ अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छको लेकर मथ समुद्घात करके स्थित हुआ दूसरा एक जीव, ये दोनों सदृश हैं। पुन. पूर्व द्रव्यको छोड़कर मंथसमुद्घातगत जीवके द्रव्यके ऊपर तदनन्तर अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छ बढ़ाकर स्थित हुआ जीव, तथा वहांके स्थितिकाण्डकके साथ अधस्तन उदयगत गुणश्रेणिगोपुच्छको लेकर कपाट-समुद्घातको प्राप्त हुआ दूसरा एक जीव, ये दोनों सदृश हैं। पुन पूर्व जीवको छोड़कर और इसे ग्रहण कर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छ मात्र बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़ाकर स्थित हुआ जीव, तथा वहांके स्थितिकाण्डकके साथ अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छको लेकर दण्डसमुद्घात करके स्थित हुआ दूसरा एक जीव, ये दोनों सदृश हैं। पुन. पूर्व जीवको छोड़कर इसके ऊपर परमाणु अधिक आदिके क्रमसे तदनन्तर अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छ मात्र बढ़ाकर स्थित हुआ जीव, तथा

---

१ ताप्रतौ 'चरिमफालीए' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। अ आ का ताप्रतिषु 'घेत्तूण' इति पाठः। ३ अ-आ काप्रतिषु 'गुणसेडिं गोपुच्छ' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'एदस्सुवरि कमेण' इति पाठः।

खंडएण सह धरिय ट्ठिदो च, सरिसा। एत्तो प्पहुडि हेट्ठा जेण ट्ठिदिघादो णत्थि तेण एगेगगुणसेडिगोवुच्छं वड्ढाविय पुव्वकोडिं सव्वमोदारदव्वं जाव सजोगिपढमसमओ त्ति। पुणो तत्थ ट्ठविय परमाणुत्तरादिकमेण एगगुणसेडिगोवुच्छा वड्ढावेदव्वा। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, चरिमसमयखीणकसाओ च, सरिसा। पुणो पुव्विल्लं मोत्तूण चरिमसमयखीणकसाओ परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वो जाव तदणंतरहेट्ठिमगुणसेडिगोउच्छा वड्ढिदा त्ति[1]। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो तदित्थट्ठिदिखंडएण सह खीणकसायदुचरिमगुणसेडिगोवुच्छं धरेदूण ट्ठिदो च, सरिसा। एवमोदारेदव्वं जाव सुहुमखवगचरिमसमओ त्ति। पुणो सुहुमखवगचरिमसमएण णवकबंधेणूणवेदणीयदुचरिमगुणसेडिगोउच्छा वड्ढावेदव्वा। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो सुहुमदुचरिमसमए ट्ठिदो च, सरिसा। एवं ओदारिदूण ओदारेदव्वं जाव संजदपढमसमओ त्ति। पुणो एत्थ पुव्वविधाणेण धारगदव्वेण सचिम उक्कस्सं कादूण गेण्हिदव्वं।

एवं गुणिदकम्मंसियस्स वि अस्सिदूण अजहण्णदव्वसामित्तं वत्तव्वं। एत्थ जीव-

---

भागहीन करणके अन्तिम समय सम्बन्धी गुणश्रेणिगोपुच्छको बढ़ाकर स्थितिकाण्डकके साथ धरकर स्थित हुआ दूसरा एक जीव ये दोनों सदृश हैं। यहांसे लेकर नीचे चूंकि स्थितिघात नहीं है अतः एक एक गुणश्रेणिगोपुच्छ बढ़ाकर सयोगी केवलीके प्रथम समय के प्राप्त होने तक पूर्वकोटि प्रमाण सब काल उतारना चाहिये। पुनः वहां स्थापित कर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक गुणश्रेणिगोपुच्छा बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़ाकर स्थित हुआ जीव तथा अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय जीव ये दोनों सदृश हैं। पुनः पूर्वोक्त जीवको छोड़कर अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय जीवको एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे तदनन्तर अधस्तन गुणश्रेणिगोपुच्छाके बढ़ने तक बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़ाकर स्थित हुआ जीव तथा वहांके स्थितिकाण्डकके साथ क्षीणकषायकी द्विचरम गुणश्रेणिगोपुच्छको धरकर स्थित हुआ दूसरा एक जीव ये दोनों सदृश हैं। इस प्रकार अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय क्षपक तक उतारना चाहिये। पुनः सूक्ष्म साम्परायिक क्षपकके अन्तिम समयमें नवक बन्धसे रहित वेदनीयकी द्विचरम गुणश्रेणिगोपुच्छा बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़ाकर स्थित हुआ जीव तथा सूक्ष्म साम्परायके द्विचरम समयमें स्थित हुआ दूसरा एक जीव ये दोनों सदृश हैं। इस प्रकार जाकर प्रथम समयवर्ती संयत तक उतारना चाहिये। पुनः यहां पूर्वोक्त विधानसे धारक द्रव्यके साथ साम्प्रतिक द्रव्यको उत्कृष्ट करके ग्रहण करना चाहिये।

इसी प्रकार गुणितकर्मांशिकके सत्त्वका भी आश्रय करके अजघन्य द्रव्यके

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'वड्ढिदे त्ति' इति पाठः।

समुदाहारपरूवणाए णाणावरणभंगो ।

एवं णामा-गोदाणं ॥ ११० ॥

जहा वेदणीयस्स जहण्णाजहण्णदव्वस्स परूवणा कदा तधा णामा-गोदाण पि कादव्वं, विसेसाभावादो ।

सामित्तेण जहण्णपदे आउगवेदणा दव्वदो जहण्णिया कस्स ? ॥ १११ ॥

सुगमं ।

जो जीवो पुव्वकोडाउओ अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु आउअं बंधदि रहस्साए आउअबंधगद्धाए ॥ ११२ ॥

पुव्वकोडाउओ चेव किमट्ठं णिरयाउअ बंधाविदो ? ओलंबणाकरणेण बहुदव्वगालणट्ठं । किमवलंबणाकरणं[1] णाम ? परभविआउअउवरिमट्ठिदिदव्वस्स[2] ओकड्डणाए हेट्ठा

स्वामित्वको कहना चाहिये । यहां जीवसमुदाहारकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है ।

इसी प्रकार नाम व गोत्र कर्मके जघन्य एव अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ ११० ॥

जिस प्रकार वेदनीय कर्मके जघन्य व अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा की है उसी प्रकार नाम और गोत्र कर्मकी भी करना चाहिये, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

स्वामित्वकी अपेक्षा जघन्य पदमें आयु कर्मकी वेदना द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है ? ॥ १११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जो पूर्वकोटिकी आयुवाला जीव नीचे सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें थोडे आयुबन्धककाल द्वारा आयुको बांधता है ॥ ११२ ॥

शंका—पूर्वकोटि प्रमाण आयुवाले जीवको ही किसलिये नारकायुका बन्ध कराया ?

समाधान—अवलम्बन करण द्वारा बहुत द्रव्यकी निर्जरा करानेके लिये पूर्वकोटि आयुवालेको नारकायुका बन्ध कराया है ।

शंका—अवलम्बना करण किसे कहते हैं ?

समाधान—परभव सम्बन्धी आयुकी उपरिम स्थितिमें स्थित द्रव्यका अपकर्षण

---

१ अ-आ-ताप्रतिषु 'किमुवलबणा-' इति पाठ । २ काप्रतौ 'उपरिमट्ठिद' इति पाठः ।

णिवददमवकड्डणाकरणं णाम । एदस्स ओकड्डणसण्णा किण्ण कदा ? ण, उदयाभावेण उदयावलियबाहिरे अणिवदमाणस्स ओकड्डणववएसविरोहादो। पुव्वकोडितिभागे पारद्धाउअबंधस्स अट्ठ वि आगरिसाओ कालेण जहण्णाओ होंति, ण अण्णस्सेत्ति जाणावणट्ठं वा पुव्वकोडिग्गहणं कदं । दीवसिहादब्भस्स थोवत्तमिच्छिय अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु तेत्तीससागरोवममाउअं बंधाविदो । अट्ठहि आगरिसाहि बंधदि त्ति जाणावणट्ठं रहस्साए आउअबंधगद्धाए त्ति उत्तं, अण्णस्स आउअबंधगद्धाए जहण्णत्ताभावादो ।

तप्पाओग्गजहण्णएण जोगेण बंधदि ॥ ११३ ॥

किमट्ठं जहण्णजोगेणेव आउअं बंधाविद ? थोवकम्मपदेसागमणट्ठं ।

जोगजवमज्झस्स हेट्ठदो अंतोमुहुत्तद्धमच्छिदो ॥ ११४ ॥

जोगजवमज्झादो हेट्ठिमजोगा उवरिमजोगेहिंतो असंखेज्जगुणहीणा त्ति कट्टु जव-

---

द्वारा नीचे पतन करना अवकर्षण करण कहा जाता है ।

शंका — इसकी अपकर्षण संज्ञा क्यों नहीं की ?

समाधान — नहीं, क्योंकि परभविक आयुका उदय नहीं होनेसे इसका उदयावलिके बाहर पतन नहीं होता, इसलिये इसकी अपकर्षण संज्ञा करनेका विरोध आता है ।

[आशय यह है कि परभव सम्बन्धी आयुका अपकर्षण होनेपर भी इसका पतन आबाधाकालके भीतर न होकर आबाधाके ऊपर स्थित स्थितिनिषेकोंमें ही होता है, इसीसे इसे अपकर्षणसे जुदा बतलाया है ।]

अथवा पूर्वकोटिके त्रिभागमें प्रारम्भ किये गये आयुबन्धके आठों अपकर्ष कालकी अपेक्षा जघन्य होते हैं अन्यके नहीं, इस बातके ज्ञापनार्थ सूत्रमें पूर्वकोटि पदका ग्रहण किया है । दीपशिखाप्रम्यके थोड़ेपनकी इच्छा कर नीचे सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुको बंधाया है । आठ अपकर्षों द्वारा बांधता है इसके ज्ञापनार्थ सूत्रमें 'थोड़े आयुबन्धककालसे' यह कहा है, क्योंकि अन्यका आयुबन्धककाल जघन्य नहीं है ।

तत्प्रायोग्य जघन्य योगसे बांधता है ॥ ११२ ॥

शंका — जघन्य योगसे ही आयुको किसलिये बंधाया है ?

समाधान — थोड़े कर्मप्रदेशोंके आस्रवके लिये जघन्य योगसे आयुको बंधाया है ।

योगयवमध्यके नीचे अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा ॥ ११४ ॥

चूंकि योगयवमध्यसे नीचेके योग उपरिम योगोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणे हीन

---

१ प्रतिषु -सुसण्णा इति पाठः ।

मज्झस्स हेट्ठा अंतोमुहुत्तद्धमच्छाविदो[1] ।

पढमे[2] जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मच्छिदो[3] ॥ ११५ ॥

कुदो ? तत्थ असंखेज्जभागवड्ढिं मोत्तूण अण्णवड्ढीणमभावादो जहण्णजोगेण थोवदव्वागमादो वा ।

कमेण कालगदसमाणो अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उववण्णो ॥ ११६ ॥

बद्धपरभवियाउओ भुंजमाणाउअस्स कदलीघादं ण करेदि त्ति कट्टु अंतोमुहुत्तूण-पुव्वकोडितिभागमवलंबणाकरणं[4] कादूण ओवट्टणाघादेण परभविआउअमघादिय णेरइएसु उप्पण्णो त्ति जाणावणट्ठं कमेण कालगदादिवयणं भणिदं ।

तेणेव[5] पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण जहण्ण-जोगेण आहारिदो ॥ ११७ ॥

अण्णतरसमयपडिसेहट्ठं तेणेवेत्ति भणिदं । पढमसमयाहारिदिय-तदियसमय-

---

हैं, अतः यवमध्यके नीचे अन्तर्मुहूर्त काल तक ठहराया है ।

प्रथम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलीके असंख्यातवें भाग काल तक रहा ॥ ११५ ॥

क्योंकि, वहां असंख्यातभागवृद्धिको छोड़कर अन्य वृद्धियोंका अभाव है, अथवा जघन्य योगसे थोड़े द्रव्यका आगमन है ।

क्रमसे मृत्युको प्राप्त होकर नीचे सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न हुआ ॥ ११६ ॥

जिसने परभविक आयुको बांध लिया है वह भुज्यमान आयुका कदलीघात नहीं करता है, ऐसा जान करके अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटिके त्रिभागमें अवलम्बना करण करके अपवर्तनाघातसे परभव सम्बन्धी आयुका घात न करके नारकियोंमें उत्पन्न हुआ, इस बातके ज्ञापनार्थ सूत्रमें 'क्रमसे मृत्युको प्राप्त हुआ' इत्यादि वाक्य कहा है ।

उस ही प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ जीवने जघन्य योग द्वारा आहार ग्रहण किया ॥ ११७ ॥

द्वितीयादि अन्य समयोंका प्रतिषेध करनेके लिये 'उस ही ने' ऐसा कहा है। प्रथम

---

१ अ आ काप्रतिषु 'मच्छाविदो' इति पाठः । २ अ आ काप्रतिषु 'पढमो' इति पाठः । ३ अ काप्रत्योः 'असंखेज्जदिभाग' इति पाठः । ४ अ आ काप्रतिषु 'मव' इति पाठः । ५ प्रतिषु '-मुवलंभणा-' इति पाठः । ६ प्रतिषु 'इट्ठो अणतणय-' इति पाठः ।

समयतब्भवत्थस्स जहण्णुववादजोगो ण होदि त्ति जाणावणट्ठं पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण आहारिदो पोग्गलपिंडो, थोवपदेसग्गहणट्ठं जहण्णेण उववादजोगेण आहारिदो त्ति भणिदं।

जहण्णियाए वड्ढीए वड्ढिदो[1] ॥ ११८ ॥

एयंताणुवड्ढिजोगाणं वड्ढी जहण्णा वि अत्थि उक्कस्सा वि अत्थि। तत्थ जहण्णाए वड्ढीए वड्ढिदो त्ति जाणावणट्ठमेदं भणिदं।

अंतोमुहुत्तेण सव्वचिरेण कालेण सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥ ११९ ॥

दीहाए अपज्जत्तद्धाए जहण्णएगंताणुवड्ढिजोगेण थोवपोग्गलग्गहणट्ठं सव्वचिरेण कालेणेत्ति वुत्तं। किमट्ठमपज्जत्तकालो वड्ढाविदो? पज्जत्तद्धाए आउअस्स ओकड्डणाकरणादो अपज्जत्तद्धाए ओकड्डणा जहण्णजोगेण बहुआ होदि त्ति जाणावणट्ठं।

तत्थ य भवट्ठिदिं तेत्तीसं सागरोवमाणि आउअमणुपालयंतो[2] बहुसो[3] असादद्धाए जुत्तो[4] ॥ १२० ॥

समयवर्ती आहारक होकर भी द्वितीय व तृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ जीवके जघन्य उपपाद योग नहीं होता है इस बातके ज्ञापनार्थ 'प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ जीवने पुद्गलपिंडका आहार रूपसे ग्रहण किया अर्थात् स्तोक प्रदेशोंको ग्रहण करनेके लिये जघन्य उपपाद योगसे आहारको प्राप्त हुआ' ऐसा कहा है।

जघन्य वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ ॥ ११८ ॥

एकान्तानुवृद्धि योगोंकी वृद्धि जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। उनमें जघन्य वृद्धि द्वारा वृद्धिको प्राप्त हुआ इस बातका परिज्ञान करानेके लिये यह सूत्र कहा है।

अन्तर्मुहूर्तमें सर्वदीर्घ काल द्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ११९ ॥

दीर्घ अपर्याप्तकालके भीतर जघन्य एकान्तानुवृद्धि योगसे स्तोक पुद्गलोंका ग्रहण करनेके लिये 'सर्वदीर्घ काल द्वारा' ऐसा कहा है।

शंका— अपर्याप्तकाल किसलिये बढ़ाया है?

समाधान— पर्याप्तकालमें जो आयुका अपकर्षण किया जाता है उसकी अपेक्षा अपर्याप्तकालमें जघन्य योगसे किया गया अपकर्षण बहुत होता है इसके ज्ञापनार्थ अपर्याप्तकालको बढ़ाया है।

वहां भवस्थिति तक तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुका पालन करता हुआ बहुत बार असाताकाल (असातावेदनीयके बन्ध योग्य काल) से युक्त हुआ ॥ १२० ॥

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'जहण्णिआए वड्ढीए' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'अणुपालेंतो' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'बहुसो बहुसो' इति पाठः। ४ अ-आ-काप्रतिषु 'हुत्तो' इति पाठः।

किमट्ठमसादद्धाए बहुसो जोजिदो ? ओकड्डणाए बहुदव्वणिज्जरणट्ठं।

थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति से काले परभवियमाउअं बंधिहिदि त्ति तस्स आउववेदणा दव्वदो जहण्णा ॥ १२१ ॥

किमट्ठमाउअबंधपढमसमए जहण्णसामित्तं ण दिज्जदे ? ण, उदएण गलमाण-गोवुच्छादो ढुक्कमाणसमयपबद्धस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। अजोगिचरिमसमए एक्किस्से ट्ठिदीए ट्ठिददव्वं घेत्तूण जहण्णसामित्तं किण्ण दिज्जदे ? ण, तत्थ जहण्णबंधगद्धोवट्टिद-सादिरेयपुव्वकोडीए एगसमयपबद्धम्मि भागे हिदे एगभागमेत्तदव्वुवलंभादो, दीवसिहादव्वस्स पुण दीवसिहाजहण्णाउबंधगद्धोवट्टिदअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तभागहारुवलंभादो। एत्थ उवसंहारो वुच्चदे। तं जहा— जहण्णबंधगद्धामेत्तसमयपबद्धे तेत्तीसणाणागुणहाणि-सलागण्णोण्णब्भत्थरासिणा ओवट्टिदे चरिमगुणहाणिदव्वं होदि। पुणो दिवड्ढगुणहाणीए ओवट्टिदे चरिमणिसेगदव्वं होदि। पुणो एदं भागहारं दीवसिहाए ओवट्टिय लद्धं विरलेदूण

शंका— बहुत बार असाताकालसे युक्त किसलिये कराया है ?

समाधान— अपकर्षण द्वारा बहुत द्रव्यकी निर्जरा करानेके लिये बहुत बार असाताकालसे युक्त कराया है।

जीवितके स्तोक शेष रहनेपर जो अनन्तर कालमें परभविक आयुको बांधेगा, उसके आयुवेदना द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य होती है ॥ १२१ ॥

शंका— आयुबन्धके प्रथम समयमें जघन्य स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि उदयसे निर्जीर्ण होनेवाली गोपुच्छाकी अपेक्षा आनेवाला समयप्रबद्ध असंख्यातगुणा पाया जाता है।

शंका— अयोगीके अन्तिम समयमें केवल एक स्थितिमें स्थित द्रव्यका ग्रहण कर जघन्य स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, वहां जघन्य बन्धककालका साधिक पूर्वकोटिमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसका एक समयप्रबद्धमें भाग देनेपर एक भाग मात्र द्रव्य पाया जाता है, परन्तु दीपशिखाद्रव्यका भागहार दीपशिखा सम्बन्धी जघन्य आयुबन्धक कालसे अपवर्तित अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र पाया जाता है।

यहां उपसंहार कहते हैं। यथा— जघन्य बन्धककाल मात्र समयप्रबद्धको तेतीस नाना गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे अपवर्तित करनेपर अन्तिम गुणहानिका द्रव्य होता है। पुन डेढ़ गुणहानिसे भाजित करनेपर अन्तिम निषेकका द्रव्य होता है। पुनः इस भागहारको दीपशिखासे अपवर्तित कर जो प्राप्त हो

पुव्वदव्वं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि दीवसिहामेत्तचरिमणिसेगा पावेंति । पुणो हेट्ठा दीवसिहागुणिदरूवाहियगुणहाणिं रूवूणदीवसिहासकलणाए ओवट्टिय विरलेदूण उवरिम-एगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि इच्छिदविसेसा पावेंति । ते उवरि दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाणं पमाणं उच्चदे । तं जहा — रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धमुवरिमविरलणाए अवणिदे जहण्णदव्वभागहारो होदि । एदेण जहण्णबंधगद्धागुणिदसमयपबद्धे भागे हिदे एगसमयपबद्धस्स असंखेज्जदिभागो जहण्णदव्वं होदि । अथवा, एगसमयपबद्धस्स दीवसिहादव्वं पुव्वमेव अवणिय पच्छा तम्मि बंधगद्धाए गुणिदे दीवसिहादव्वमागच्छदि । तं जहा— णाणागुणहाणिसलागाणं अण्णोण्णब्भत्थरासिणा दिवड्ढगुणहाणिगुणिदेण एगसमयपबद्धे भागे हिदे चरिमणिसेगो आगच्छदि । पुणो एदं चेव भागहारं दीवसिहाए ओवट्टिय विरलेदूण एगसमयपबद्धं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि दीवसिहामेत्तचरिमणिसेगा पावेंति । पुणो हेट्ठा रूवाहिय गुणहाणिं दीवसिहागुणिदं विरलेदूण उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं

उसका विरलन कर पूर्व द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति दीप शिखा मात्र अन्तिम निषेक प्राप्त होते हैं। पश्चात् उसके नीचे दीपशिखासे गुणित एक अधिक गुणहानिमें एक कम दीपशिखासंकलनाका भाग देनेपर जो प्राप्त हो उसका विरलन करके उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त राशिको समान खण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति इच्छित विशेष प्राप्त होते हैं। इनको ऊपर देकर समीकरण करते समय परिहीन रूपोंका प्रमाण कहते हैं। यथा— एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर जो प्राप्त हो उसे उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर जघन्य द्रव्यका भागहार होता है। इसका जघन्य बन्धककालसे गुणित समयप्रबद्धमें भाग देनेपर एक समय प्रबद्धका असंख्यातवां भाग जघन्य द्रव्य होता है।

अथवा एक समयप्रबद्धके दीपशिखाद्रव्यको पहिले ही कम करके पश्चात् उसे बन्धककालसे गुणित करनेपर दीपशिखाद्रव्य आता है। यथा— डेढ़ गुणहानिसे गुणित नानागुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिका एक समयप्रबद्धमें भाग देनेपर अन्तिम निषेक आता है। पुनः इसी भागहारको दीपशिखासे अपवर्तित करनेपर जो प्राप्त हो उसका विरलन करके एक समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति दीपशिखा मात्र अन्तिम निषेक प्राप्त होते हैं। पुनः नीचे दीपशिखागुणित रूपाधिक गुणहानिका विरलन करके उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति एक एक

पडि एगेगविसेसो पावदि । पुणो रूवूणदीवसिहासंकलणाए ओवट्टिय लद्धं विरलेदूण उवरिमविरलणाए एगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे विरलणरूवं पडि रूवूणदीवसिहासंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा पावेंति । पुणो एदे उवरिमविरलणरूवधरिदेसु समयाविरोहेण पक्खिविय समकरणे कदे परिहीणरूवाण पमाणं उच्चदे । तं जहा— रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए परिहाणिरूवाणि लब्भंति । एदाणि उवरिमविरलणाए अवणिय सेसेण एगसमयपबद्धे भागे हिदे एगसमयपबद्धदीवसिहाए पडिदव्वं होदि । पुणो एदं जहण्णबंधगद्धाए गुणिदे दीवसिहासव्वदव्वं आगच्छदि । एवमाउअस्स जहण्णसामित्तं समत्तं ।

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ १२२ ॥

जहण्णादो दीवसिहादव्वादो रूवाहियादिदव्वं तव्वदिरित्तं णाम । तं सव्वमजहण्णं[1]दव्ववेयणा । एदिस्से परूवणट्ठं बंधगद्धामेत्तसमयपबद्धाणं सव्वदव्वं सगलपक्खेवे कस्सामो । तं जहा — तत्थ ताव एगसमयपबद्धस्स भणिस्सामो त्ति । सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स

विशेष प्राप्त होता है । पुनः एक कम दीपशिखासंकलनासे अपवर्तित कर लब्धका विरलन करके उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर विरलन राशिके प्रत्येक एकक प्रति एक कम दीपशिखासंकलना मात्र गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं । फिर इनको उपरिम विरलन राशिके प्रत्येक अंकके प्रति प्राप्त राशिमें समयाविरोध पूर्वक मिलाकर समीकरण करनेपर परिहीन रूपोंका प्रमाण कहते हैं । यथा— एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें कितने अंकोंकी हानि प्राप्त होगी, इस प्रकार प्रमाण राशिसे फलगुणित इच्छा राशिको अपवर्तित करनेपर परिहीन रूप प्राप्त होते हैं । इनको उपरिम विरलनमेंसे कम करके शेषका एक समयप्रबद्धमें भाग देनेपर एक समयप्रबद्ध सम्बन्धी दीपशिखाका प्रतिद्रव्य होता है । फिर इसको जघन्य बन्धककालसे गुणित करनेपर दीपशिखाका सब द्रव्य आता है । इस प्रकार आयु कर्मका जघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ ।

जघन्य द्रव्यसे भिन्न अजघन्य द्रव्यवेदना है ॥ १२२ ॥

जघन्य दीपशिखाद्रव्यसे एक परमाणु अधिक, दो परमाणु अधिक आदि द्रव्य तद्व्यतिरिक्त कहा जाता है । यह सब अजघन्य द्रव्यवेदना है । इस द्रव्यवेदनाके प्ररूपणार्थ बन्धककाल मात्र समयप्रबद्धोंके सब द्रव्यको सकल प्रक्षेपमें करते हैं । यथा— उनमें पहिले एक समयप्रबद्धके द्रव्यको सकल प्रक्षेप रूपसे करके बतलाते हैं । सूक्ष्म निगोद

1 अ-आ काप्रतिषु 'सव्वजहण्ण' इति पाठः ।

जहण्णउववादजोगट्ठाणादो सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जोगमामजहण्णजोगो असंखेज्जगुणो । एदेण जोगेण जं बद्धं कम्मं तं सगलपक्खेवकारणं[1] सेडीए असंखेज्जदिभाग तट्ठाणपक्खेवभागहारं विरलेदूण एगसमयपबद्धं समखंडं काऊण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स सगलपक्खेवपमाणं पावदि । कधमेदस्स एगरूवधरिदकम्मपिंडस्स पक्खेवसण्णा ? जोगपक्खेवकारियत्तादो । पुणो एत्थ एगसगलपक्खेवं तेत्तीससागरोवमेसु णिसिंचमाणेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदूण एगखंडं चरिमसमए णिसित्तं तस्स विगलपक्खेवो त्ति सण्णा । कुदो ? ऊणीभूदसगलपक्खेवत्तादो । पुणो एगसमयपबद्धं णिसिंचमाणेण जीवसिहाचरिमसमए जं णिसित्तं तम्मि विगलपक्खेवपमाणेण कीरमाणे केवडिया विगलपक्खेवा होंति त्ति भणिदे एगसमयपबद्धस्स सगलपक्खेवभागहारमेत्ता होंति । पुणो एदे सगलपक्खेवे करस्सामो । तं जहा— अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविगलपक्खेवे घेत्तूण जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तविगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण

अपर्याप्तके जघन्य उपपाद योगस्थानसे संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका योगमात्र जघन्य योग असंख्यातगुणा है । इस योगसे जो कर्म बांधा है उसे सकल प्रक्षेप रूपसे करनेके लिये श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण उस स्थानके प्रक्षेपभागहारका विरलन करके एक समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति सकल प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है ।

शंका — एक अंकके प्रति प्राप्त इस कर्मपिण्डकी प्रक्षेप संज्ञा कैसे है ?

समाधान — चूंकि वह योगप्रक्षेपका कर्ता है अतः उसकी प्रक्षेप संज्ञा उचित है ।

यहां एक सकल प्रक्षेपका तेतीस सागरोपमोंमें प्रक्षेपण करनेवाले जीवके द्वारा अंगुलके असंख्यातवें भागसे खण्डित करके जो एक खण्ड बारके अन्तिम समयमें दिया गया है उसकी विकल प्रक्षेप संज्ञा है क्योंकि वह ऊनीभूत सकल प्रक्षेप है । पुनः एक समयप्रबद्धका प्रक्षपण करनेवाले जीवने दीपशिखाके अन्तिम समयमें जिसे दिया है उसे विकल प्रक्षेपके प्रमाणसे करनेमें कितने विकल प्रक्षेप होते हैं ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि वे एक समयप्रबद्धके सकल-प्रक्षेप-भागहार प्रमाण होते हैं ।

अब इनको सकल प्रक्षेप रूपमें करते हैं । यथा— अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंको ग्रहण कर यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंमें क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फलगुणित

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-काप्रतिषु 'पक्खेवे करणं' इति पाठः । २ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-काप्रतिषु 'खंडणं' इति पाठः । ३ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-काप्रतिषु 'लब्भाणे' इति पाठः ।

फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ता सयलपक्खेवा आगच्छंति।

संपहि दीवसिहाविगलपक्खेवं भणिस्सामो। तं जहा— दीवसिहोवट्टिदअंगुलस्सा- संखेज्जदिभागं विरलेदूण सगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे दीवसिहामेत्तचरिमणिसेगा रूवं पडि पावेंति। पुणो रूवूणदीवसिहोवट्टिददुरूवाहियणिसेगभागहारेण किरियं काऊण लद्धरूवेसु उवरिमविरलणाए सोहिदे सुद्धसेसं दीवसिहाविगलपक्खेवभागहारो होदि। पुणो एदेण विगलपक्खेवपमाणेण उवरिमविरलणरूवधरिदेसु सोहिदेसु सेडीए असंखेज्जदिभाग- मेत्ता विगलपक्खेवा लब्भंति। पुणो एदे सगलपक्खेवे कस्सामो। तं जहा— अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविगलपक्खेवे रूवूणे[1] जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो सेडीए असंखेज्जदिभागउवरिमविरलणमेत्तविगलपक्खेवेसु केवडिए सगलपक्खेवे लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ता सगलपक्खेवा लब्भंति।

संपहि दीवसिहाचरिमगोवुच्छाए एगगोवुच्छविसेसे वि सेडीए असंखेज्जदिभाग- मेत्ता सगलपक्खेवा होंति। तं जहा— रूवाहियगुणहाणीए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं

इच्छा राशिको प्रमाणसे अपवर्तित करनेपर श्रेणिके असख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेप आते हैं।

अब दीपशिखाके विकल प्रक्षेपको कहते हैं। यथा— दीपशिखासे अपवर्तित अगुलके असख्यातवें भागका विरलन करके सकलप्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर विरलन राशिके प्रत्येक एक अकके प्रति दीपशिखा मात्र अन्तिम निषेक प्राप्त होते हैं। पुनः एक कम दीपशिखासे अपवर्तित ऐसे दो अधिक निषेकभागहारसे क्रिया करके जो अंक प्राप्त हों उनको उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर जो शेष रहे उतना दीपशिखाके विकल प्रक्षेपका भागहार होता है। पुनः इस विकल प्रक्षेपप्रमाणसे उपरिम विरलन रूप धरितोंमेंसे कम करनेपर श्रेणिके असख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेप प्राप्त होते हैं।

अब इनके सकल प्रक्षेप करते हैं। यथा—एक कम अगुलके असख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंमें यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो श्रेणिके असख्यातवें भाग उपरिम विरलन मात्र विकल प्रक्षेपोंमें कितने सकल प्रक्षेप प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर श्रेणिके असख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेप प्राप्त होते हैं।

अब दीपशिखाकी अन्तिम गोपुच्छाके एक गोपुच्छविशेषमें भी श्रेणिके असख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेप होते हैं। यथा— एक अधिक गुणहानिसे अगुलके

---

१ अप्रतौ 'विगलपक्खेवे सुत्तूण', आ-काप्रत्योः 'विगलपक्खेवे रूवूण' इति पाठः।

गुणिय विरलेदूण एयसगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स एगेग विसेसपमाणं पावदि। पुणो एदेण गोवुच्छविसेसपमाणेण उवरिमविरलणाए ओवट्टिदे सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ता गोवुच्छविसेसा पावेंति। पुणो एदे सगलपक्खेवे कस्सामो। तं जहा— रूवाहियगुणहाणिगुणिदअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविसेसे घेत्तूण जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तगोवुच्छविसेसेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ता सगलपक्खेवा लब्भंति।

संपहि एगसमयपबद्धसगलपक्खेवभागहारं सेडीए असंखेज्जदिभागं जहण्णबंधगद्धाए गुणिय विरलेदूण जहण्णबंधगद्धामेत्तसमयपबद्धेसु समखंडं कादूण दिण्णेसु एक्केक्कस्स रूवस्स सगलपक्खेवपमाणं पावदि।

संपहि बंधगद्धामेत्तसमयपबद्धाणं चरिमसमयणिसित्तदव्वं सगलपक्खेवे कस्सामो। तं जहा— अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण सगलपक्खेवे भागे हिदे विगलपक्खेवो लब्भदि। एदेण पमाणेण उवरिमविरलणाए अवणिदे जहण्णबंधगद्धागुणिदघोलमाणजहण्णजोगट्ठाण

असंख्यातवें भागको गुणित कर जो प्राप्त हो उसका विरलन करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक विशेषका प्रमाण प्राप्त होता है। फिर इस गोपुच्छविशेषके प्रमाणसे उपरिम विरलनको अपवर्तित करनेपर श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं।

पुनः इनके सकल प्रक्षेप करते हैं। यथा— एक अधिक गुणहानिसे गुणित अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र विशेषोंको ग्रहण कर यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र गोपुच्छविशेषोंमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेप प्राप्त होते हैं।

अब एक समयप्रबद्ध सम्बन्धी सकलप्रक्षेपके भागहारको जो कि श्रेणिके असंख्यातवें भाग है, जघन्य बन्धककालसे गुणित करनेपर जो कुछ प्राप्त हो उसका विरलन करके जघन्य बन्धककाल मात्र समयप्रबद्धोंको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति सकल प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है।

अब बन्धककाल मात्र समयप्रबद्धोंके अन्तिम समयमें निक्षिप्त द्रव्यके सकल प्रक्षेप करते हैं। यथा— अंगुलके असंख्यातवें भागका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर विकल प्रक्षेप प्राप्त होता है। इस प्रमाणसे उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर जघन्य बन्धककालसे गुणित घोलमानयोगस्थान सम्बन्धी प्रक्षेपभागहार मात्र विकल प्रक्षेप प्राप्त होते हैं।

---

१ काप्रतौ '[illegible] अवणिदे', ताप्रतौ '[illegible]' इति पाठः।

पक्खेवभागहारमेत्तविगलपक्खेवा लब्भंति । पुणो एदे सगलपक्खेवे कस्सामो— अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेसु विगलपक्खेवेसु जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो उवरिमविरलण-मेत्तेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ता सगलपक्खेवा लब्भंति ।

संपहि दीवसिहाविगलपक्खेवो वुच्चदे । तं जहा— दीवसिहाए ओवट्टिदअंगुलस्स असंखेज्जदिभागं विरलेदूण सगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स दीवसिहामेत्तसमाणगोवुच्छाओ पावेंति । पुणो हीणविसेसाणमागमणट्ठं रूवूणदीवसिहोवट्टिद-दुरूवाहियणिसेगभागहारेण किरियं काऊण उवरिमविरलणाए सोहिदे विगलपक्खेवभाग-हारो होदि । पुणो तेण सगलपक्खेवे भागे हिदे विगलपक्खेवो होदि । पुणो एदेण भागहारेण उवरिमविरलणाए ओवट्टिदाए लद्धमेत्ता सगलपक्खेवा आगच्छंति ।

एवं सगलविगलपक्खेवाणयणं परूविय संपहि आउअस्स अजहण्णदव्वपरूवणं कस्सामो । तं जहा— सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणमादिं कादूण जाव उक्कस्सजोगट्ठाणे त्ति ताव एदेसिं जोगट्ठाणाणं रयणा कायव्वा । दीवसिहाजहण्णदव्वस्सुवरि परमाणुत्तरं वड्ढिदे सव्वजहण्णमजहण्णदव्वं होदि । दुपरमाणुत्तरं वड्ढिदे बिदियमजहण्णदव्वं

पुनः इनको सकल प्रक्षेप रूपसे करते हैं— अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंमें यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो उपरिम विरलन मात्र विकल प्रक्षेपोंमें कितने प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेप प्राप्त होते हैं ।

अब दीपशिखाका विकल प्रक्षेप कहा जाता है । यथा— दीपशिखासे अपवर्तित अंगुलके असंख्यातवें भागका विरलन करके सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति दीपशिखा मात्र समान गोपुच्छायें प्राप्त होती हैं । पुनः हीन विशेषोंके लानेके लिये एक कम दीपशिखासे अपवर्तित दो अंक अधिक निषेकभागहारके द्वारा क्रिया करके उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर विकल प्रक्षेपका भागहार होता है । उसका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर विकल प्रक्षेप होता है । फिर इस भागहारका उपरिम विरलनमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र सकल प्रक्षेप आते हैं ।

इस प्रकार सकल और विकल प्रक्षेपोंके लानेके विधानको कहकर अब आयु कर्मके अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तके जघन्य परिणामयोगस्थानको आदि करके उत्कृष्ट योगस्थान तक इन योगस्थानोंकी रचना करना चाहिये । दीपशिखाके जघन्य द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक क्रमसे वृद्धिके होनेपर सर्वजघन्य अजघन्य द्रव्य होता है । दो परमाणु अधिक क्रमसे वृद्धिके होनेपर

होदि। एवं दोहि वड्ढीहि अजहण्णदव्वस्सुवरि एगो विगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अवरो अण्णो जीवो समऊणबंधगद्धाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमएण पक्खेवुत्तरजोगेण बंधिय आगंतूण दीवसिहाए ट्ठिदो च, सरिसा। तं मोत्तूण इमं घेत्तूण परमाणुत्तरादिकमेण अजहण्णदव्वट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि जाव एगो विगलपक्खेवो वड्ढिदो त्ति। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो समऊणबंधगद्धाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमएण दुपक्खेवुत्तरजोगेण बंधिदूणागंतूण दीवसिहाए ट्ठिदो च, सरिसा। पुणो पुव्विल्लं मोत्तूण इमं घेत्तूण परमाणुत्तरादिकमेण एगविगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो समऊणबंधगद्धाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमएण तिपक्खेवुत्तरजोगेण बंधिदूण दीवसिहापढमसमए ट्ठिदो च, सरिसा। पुणो एदेण कमेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता विगलपक्खेवा वड्ढावेदव्वा। ताधे एगो सगलपक्खेवो वड्ढिदो होदि, अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविगलपक्खेवेसु सगलपक्खेवुप्पत्तिदंसणादो। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, पुणो अण्णो समऊणजहण्णबंधगद्धाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमएण विगलपक्खेवभागहारमेत्ताणं जोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूणागंतूण दीवसिहापढम

अजघन्य द्रव्यका द्वितीय विकल्प होता है। इस प्रकार दो वृद्धियों द्वारा अजघन्य द्रव्यके ऊपर एक विकल प्रक्षेप बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़ाकर स्थित जीव तथा एक समय कम आयुबन्धककालमें जघन्य योगसे आयुको बांधकर पुनः एक समयमें एक प्रक्षेप अधिक योगसे आयुको बांधकर आकरके दीपशिखापर स्थित हुआ उससे भिन्न एक जीव, ये दोनों सदृश हैं। उसको छोड़कर और इसे ग्रहण करके एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेपकी वृद्धि होने तक अजघन्य द्रव्यके स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये। इस प्रकार बढ़ाकर स्थित जीव तथा एक समय कम बन्धककालमें जघन्य योगसे बांधकर पुनः एक समयमें दो प्रक्षेप अधिक योगसे आयुको बांध करके आकर दीपशिखापर स्थित हुआ अन्य एक जीव ये दोनों सदृश हैं। पूर्व जीवको छोड़कर और इसे ग्रहण कर एक परमाणु अधिक आदिक क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़ाकर स्थित हुआ जीव तथा एक समय कम बन्धककालमें जघन्य योगसे आयुको बांधकर पुनः एक समयमें तीन प्रक्षेप अधिक योगसे बांधकर दीपशिखाके प्रथम समयमें स्थित हुआ अन्य एक जीव ये दोनों सदृश हैं। इस क्रमसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंको बढ़ाना चाहिये। तब एक सकल प्रक्षेप बढ़ता है क्योंकि, अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंमें एक सकल प्रक्षेपकी उत्पत्ति देखी जाती है। इस प्रकार बढ़ाकर स्थित हुआ जीव तथा एक समय कम जघन्य बन्धककालमें जघन्य योगसे आयु बांधकर पुनः एक समयमें विकल-प्रक्षेप भागहार मात्र योगस्थानोंके अन्तिम योगस्थानसे आयुको बांध करके आकर दीपशिखाके प्रथम समयमें स्थित हुआ अन्य एक जीव,

१ प्रतिषु 'पक्खेवे वड्ढ' इति पाठः।

समए ट्ठिदो च, सरिसा । एत्थ विगलपक्खेवभागहारो सच्छेदो त्ति कट्टु सपुण्णजोग-ट्ठाणद्धाणं[1] च वड्ढावेदुं ण सक्कदे । तेण विरलणमेत्तविगलपक्खेवेहिंतो अब्भहियवड्ढी पुव्वं चेव कायव्वा । एदमणेण विहाणेण जोगट्ठाणाणि दव्वाण सरिसकरणविहाणं च सोदाराण जाणाविय वड्ढावेदव्वं जाव दीवसिहाहेट्ठिमगोवुच्छाए जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तेत्तियमेत्ता वड्ढिदा त्ति ।

संपहि एदिस्से दीवसिहाहेट्ठिमतदणंतरगोवुच्छाए सगलपक्खेवाणं पमाणाणुगमं कस्सामो । त जहा— अगुलस्स असंखेज्जदिभाग विरलेऊण सगलपक्खेवं समखंड कादूण दिण्णे चरिमणिसेगो पावदि । पुणो इमादो चरिमणिसेगादो पयडणिसेगो[2] दीव-सिहामेत्तगोवुच्छविसेसेहि अहिओ होदि त्ति । पुणो तम्मि पि आगमणे इच्छिज्जमाणे हेट्ठा रूवाहियगुणहाणिं विरलेदूण चरिमगोवुच्छ समखंड काऊण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स एगेगविसेसो पावदि । पुणो दीवसिहामेत्तगोवुच्छविसेसे इच्छामो त्ति दीवसिहाए रूवाहियगुणहाणिगोवट्टिय विरलेऊण उवरिमेगरूवधरिद दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीण-रूवाण पमाण वुच्चदे । त जहा— रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूव-

ये दोनों सदृश हैं । यहा विकल प्रक्षेप भागहार चूंकि सच्छेद है अत सम्पूर्ण योग स्थानाध्वानको बढाना शक्य नहीं है । इसलिये विरलनराशि मात्र विकल प्रक्षेपों-से अधिक वृद्धि पहिले ही करना चाहिये । इस प्रकार इस विधानसे योगस्थानोंको और द्रव्योंके सदृश करनेके विधानको श्रोताओंके लिये जतलाकर दीपशिखाकी अधस्तन गोपुच्छामें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र वृद्धिको प्राप्त होने तक बढाना चाहिये ।

अब दीपशिखाकी अधस्तन इस तदनन्तर गोपुच्छाके सकल प्रक्षेपोंका प्रमाणानुगम करते हैं । वह इस प्रकार है— अगुलके असंख्यातवें भागका विरलन कर सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर अन्तिम निषेक प्राप्त होता है । पुन इस अन्तिम निषेककी अपेक्षा प्रकृत निषेक दीपशिखा मात्र गोपुच्छविशेषोंसे अधिक है । पुन उनके भी लानेकी इच्छा करनेपर नीचे एक अधिक गुणहानिका विरलन करके अन्तिम गोपुच्छको समखण्ड करके देनेपर एक एक रूपके प्रति एक एक विशेष प्राप्त होता है । फिर दीपशिखा मात्र गोपुच्छविशेषोंकी इच्छा कर दीपशिखासे एक अधिक गुणहानिको अपवर्तित कर जो प्राप्त हो उसका विरलन करके उपरिम एक रूपधरित राशिको देकर समीकरण करते समय परिहीन रूपोंका प्रमाण कहते हैं । वह इस प्रकार है—एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र अध्वान जाकर यदि एक रूपकी हानि

१ प्रमतौ ' सपुण्णद्धाण ' इति पाठ । २ अ-आ काप्रतिषु ' पयडिणिसेगो ' इति पाठ. ।

परिहाणी लब्भदि तो सयलम्मि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागम्मि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए परिहाणिरूवाणि लब्भंति। एदाणि उवरिमविरलणाए सोहिय सेसेण सगलपक्खेवे भागे हिदे हेट्ठिमतदणंतरगोवुच्छा होदि। एसो एत्थ विगलपक्खेवो। एदेण पमाणेण सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तसगलपक्खेवेहिंतो अवणिय पुध ट्ठविदे उवरिमविरलणमेत्ता विगलपक्खेवा होंति। पुणो ते सगलपक्खेवे करस्सामो। तं जहा — किंचूणअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविगलपक्खेवाणं जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो जहण्णाउअबंधगद्धाए गुणिदसेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तविगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ता सगलपक्खेवा लब्भंति।

संपहि एदिस्से दीवसिहातदणंतरगोवुच्छाए जोगाणुगमं करस्सामो। तं जहा — एगसगलपक्खेवस्स दीवसिहादव्वागमणहेदुभूदअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि जोगट्ठाणाणि लब्भंति तो विवक्खिदगोवुच्छाए सयलपक्खेवाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि जोगट्ठाणाणि लब्भंति। पुणो एत्तियाणं जोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणेण परिणमिय बंधिय दीवसिहाए पढमसमयट्ठिददव्वं [घेत्तूण ट्ठिदो]

प्राप्त होती है तो सम्पूर्ण अंगुलके असंख्यातवें भागमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाके अपवर्तित करनेपर परिहीन रूपोंका प्रमाण प्राप्त होता है। इनको उपरिम विरलनमेंसे कम करके शेषका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर अधस्तन तदनन्तर गोपुच्छ होती है। यह यहां विकल प्रक्षेप है। इस प्रमाणसे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंमेंसे कम करके पृथक् स्थापित करनेपर उपरिम विरलन मात्र विकल प्रक्षेप होते हैं। उनके सकल प्रक्षेप करते हैं। वह इस प्रकारसे— कुछ कम अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंका यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो जघन्य आयुबन्धककालसे गुणित श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंमें कितने सकल प्रक्षेप प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाके अपवर्तित करनेपर श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेप प्राप्त होते हैं।

अब दीपशिखाकी तदनन्तर इस गोपुच्छाके योगस्थानोंका अनुगम करते हैं। वह इस प्रकार है— एक सकल प्रक्षेपकी दीपशिखाके द्रव्यके लानेमें कारणभूत अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थान यदि प्राप्त होते हैं तो विवक्षित गोपुच्छा सम्बन्धी सकल प्रक्षेपोंके कितने योगस्थान प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाके अपवर्तित करनेपर श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थान प्राप्त होते हैं। पुनः इतने योगस्थानोंके अन्तिम योगस्थानसे परिणत होकर आयुको बांधकर दीपशिखाके प्रथम समयमें स्थित द्रव्यको धारण किया हुआ जीव तथा जघन्य

च, जहण्णजोगेण जहण्णबंधगद्धाए च बंधिय आगंतूण दीवसिहाणंतरहेट्ठिमगोवुच्छं धरेदूण ट्ठिदो च, सरिसा। संपधि पुव्विल्लं मोत्तूण इमं घेत्तूण परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वं जाव तदणंतरहेट्ठिमगोवुच्छाए जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता विगलपक्खेव-सरूवेण वड्ढिदा त्ति।

एत्थ ताव विगलपक्खेवाणयणं कस्सामो[1]। तं जहा— चरिमणिसेगभागहार-मंगुलस्स असंखेज्जदिभागं रूवाहियदीवसिहाए खंडिदूणेगखंडं विरलेदूण एगसगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवाहियदीवसिहामेत्तसमाणगोवुच्छाओ पावेंति।

संपहि गोवुच्छविसेसाणं पि आगमणट्ठं किरियं कस्सामो। तं जहा— रूवाहिय-गुणहाणिं रूवाहियदीवसिहाए गुणिय पुणो दीवसिहाए संकलणाए खंडिय तत्थ एगखंडेण रूवाहिएण रूवाहियदीवसिहाए ओवट्टिदअंगुलस्स असंखेज्जदिभागे भागे हिदे भागलद्धं तम्मि चेव सोहिदे सुद्धसेसं विगलपक्खेवभागहारो होदि। पुणो एदं विरलेदूण सगल-पक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स विगलपक्खेवपमाणं पावदि। पुणो एदेण पमाणेण एक्क-दो-तिण्णि जाव पक्खेवभागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु एगो

योगसे जघन्य बन्धककालमें आयुको बांध करके आकर दीपशिखाकी अनन्तर अधस्तन गोपुच्छाको धरकर स्थित हुआ जीव, ये दोनों सदृश हैं। अब पूर्व जीवको छोड़कर और इसको ग्रहण करके एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे तदनन्तर अधस्तन गोपुच्छामें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र विकल प्रक्षेप स्वरूपसे बढ़ने तक बढ़ाना चाहिये।

यहां पहिले विकल प्रक्षेपोंके लानेकी क्रिया करते हैं। वह इस प्रकार है— अंगुलके असंख्यातवें भाग स्वरूप अन्तिम निषेकके भागहारको रूप अधिक दीपशिखासे खण्डित कर एक खण्डका विरलन कर एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक एक रूपके प्रति रूप अधिक दीपशिखा प्रमाण समान गोपुच्छ प्राप्त होते हैं।

अब गोपुच्छविशेषोंके भी लानेके लिये क्रिया करते हैं। वह इस प्रकार है— रूप अधिक गुणहानिको रूप अधिक दीपशिखासे गुणित कर पुन, दीपशिखाकी संकलनासे खण्डित कर उनमेंसे रूप अधिक एक खण्डका रूप अधिक दीपशिखासे अपवर्तित अंगुलके असंख्यातवें भागमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसको उसीमेंसे कम करनेपर शेष रहा विकल प्रक्षेपका भागहार होता है। पुन इसका विरलन करके सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक एक रूपके प्रति विकल प्रक्षेपप्रमाण प्राप्त होता है। पुन इस प्रमाणसे एक दो तीन आदिके क्रमसे प्रक्षेपभागहार मात्र

१ अ-आ-काप्रतिषु 'वड्ढिदेसि' इति पाठ।

सगलपक्खेवो वड्ढिदो होदि । भागहारमेत्ताणि जोगट्ठाणाणि वड्ढिदो होदि । एदेण सरूवेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तसयलपक्खेवा वड्ढिदा त्ति । ते च केवडिया इदि भणिदे तदणंतरहेट्ठिमगोवुच्छाए जेत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता। तेसिं सगलपक्खेवाणं गवेसणा कीरदे । तं जहा— अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं विरलेदूण सगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे चरिमणिसेगो आगच्छदि । पुणो इमादो चरिमणिसेयादो पयदणिसेयो रूवाहियदीवसिहामेत्तगोवुच्छविसेसेहि अहिओ होदि त्ति । पुणो तेसिं पि आगमणे इच्छिज्जमाणे रूवाहियदीवसिहामोवट्टिदरूवाहियगुणहाणिं हेट्ठा विरलिय उवरिमेगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि इच्छिदविसेसा पावेंति । पुणो ते उवरि दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाणमागमणं वुच्चदे । तं जहा— रूवाहिय हेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तद्धाणम्मि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए परिहीणरूवाणि आगच्छंति । ताणि उवरिमविरलणम्मि अवणिय तेण सयलपक्खेवे भागे हिदे पयदगोवुच्छाए विगलपक्खेवो आगच्छदि। पुणो एदेण पमाणेण सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तउवरिमविरलणरूवधरिदसगल-

---

विकल प्रक्षेपोंके बढ़नेपर एक सकल प्रक्षेप बढ़ता है। भागहार मात्र योगस्थान ऊपर चढ़ता है। इस रीतिसे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंके बढ़ने तक बढ़ाना चाहिये।

शंका— वे कितने हैं?

समाधान— ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि वे उसके अनन्तर अधस्तन गोपुच्छमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र हैं।

उन सकल प्रक्षेपोंकी गवेषणा की जाती है। वह इस प्रकारसे— अंगुलके असंख्यातवें भागका विरलन करके सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर अन्तिम निषेक आता है। पुनः इस अन्तिम निषेकसे प्रकृत निषेक एक अधिक दीपशिखा मात्र गोपुच्छविशेषोंसे अधिक होता है। पुनः उनके भी लानेकी इच्छासे रूप अधिक दीप शिखासे अपवर्तित रूपाधिक गुणहानिको नीचे विरलित कर ऊपरकी एक रूपधरित राशिको समखण्ड करके देनेपर रूपके प्रति इच्छित विशेष प्राप्त होते हैं। फिर उनको ऊपर देकर समीकरण करते हुए परिहीन रूपोंके लानेकी विधि कहते हैं। वह इस प्रकार है— रूप अधिक अधस्तन विरलन मात्र अध्वान जाकर यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलन मात्र अध्वानमें कितनी हानि पायी जावेगी इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर परिहीन रूप आते हैं। उनको उपरिम विरलनमेंसे कम करके जो शेष रहे उसका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर प्रकृत गोपुच्छका विकल प्रक्षेप आता है। फिर इस प्रमाणसे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र

* पे. ४४

पक्खेवेसु अवणिय पुध ट्ठवेदव्वं। पुणो एदे पुधट्ठविदविगलपक्खेवे सगलपक्खेवपमाणेण कस्सामो। तं जहा— किंचूणअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविगलपक्खेवाण जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तविगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ता सगलपक्खेवा पयदगोवुच्छाए लद्धा होंति। एत्तियमेत्तसगलपक्खेवे वड्डिदे ण चडिदजोगट्ठाण वुच्चदे। तं जहा— एगसगलपक्खेवस्स जदि रूवाहियदीवसिहाए ओवट्टिय किंचूणीकदअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि जोगट्ठाणाणि लब्भंति तो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तसगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तसगलपक्खेवभागहारस्स[2] असंखेज्जदिभागमेत्तं जोगट्ठाणद्धाणं लद्धं होदि। जत्थ जत्थ सगलपक्खेवभागहारो त्ति वुच्चदि तत्थ तत्थ जहण्णाउअबंधगद्धाए गुणिदघोलमाणजहण्णजोगपक्खेवभागहारो घेत्तव्वो। संपहि पुव्विल्लजोगट्ठाणद्धाणादो संपहियजोगट्ठाणद्धाणं किंचूणं होदि, पुव्विल्लविगलपक्खेवभागहारादो संपधियविगलपक्खेवभागहारस्स किंचूणत्तुवलंभादो। पुणो एत्तियमेत्त-

उपरिम विरलन रूपोंपर रखे हुए सकल प्रक्षेपोंमेंसे कम कर पृथक् स्थापित करना चाहिये। पुनः इन पृथक् स्थापित विकल प्रक्षेपोंको सकल प्रक्षेपोंके प्रमाणसे करते हैं। यथा— कुछ कम अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंमें यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंमें कितने सकल प्रक्षेप प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाके अपवर्तित करनेपर श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेप प्रकृत गोपुच्छमें प्राप्त होते हैं। इतने मात्र सकल प्रक्षेपोंके बढ़नेपर चढित योगस्थान नहीं कहा जाता है। वह इस प्रकारसे— यदि एक सकल प्रक्षेपमें रूपाधिक दीपशिखासे अपवर्तित कर कुछ कम किये गये अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थान प्राप्त होते हैं तो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंमें कितने योगस्थान प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल-प्रक्षेप-भागहारके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थानाध्वान प्राप्त होता है। जहां जहां 'सकल प्रक्षेप-भागहार' ऐसा कहा जावे वहां वहां जघन्य आयुबन्धककालसे गुणित घोलमान जीवके जघन्य योग सम्बन्धी प्रक्षेप भागहारको ग्रहण करना चाहिये। अब पूर्वोक्त योगस्थानाध्वानसे इस समयका योगस्थानाध्वान कुछ कम होता है, क्योंकि, पूर्वोक्त विकल प्रक्षेपके भागहारसे इस समयका विकल-प्रक्षेप भागहार कुछ कम पाया जाता है। पुन इतने मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थान स्वरूपसे एक समयमें

१ ताप्रतौ 'वड्डिदेण' इति पाठ। २ प्रतिषु '-भागमेत्ता सगलपक्खेवाभागहारस्स' इति पाठ।

जोगट्ठाणाणं[1] चरिमजोगट्ठाणम्मि एगसमएण परिणमिय बंधिदूण रूवाहियदीवसिहाए ट्ठिद-दव्वेण जहण्णजोगेण जहण्णबंधगद्धाए च बंधिदूण दुरूवाहियदीवसिहाए ट्ठिददव्वं सरिसं होदि। एदेण कमेण हेट्ठिम हेट्ठिमगोवुच्छाए[2] विगलपक्खेवबंधणविहाणं जोगट्ठाणद्धाणविहाणं च जाणिदूण ओदारेदव्वं जाव दुगुणदीवसिहामेत्तद्धाणमोदिण्णे त्ति। पुणो तत्थ ठाइदूण[3] परमाणुत्तरादिकमेण एगविगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो।

एत्थ विगलपक्खेवभागहारो वुच्चदे। तं जहा — चरिमणिसेगभागहारमंगुलस्स असंखेज्जदिभागं दुगुणदीवसिहाए ओवट्टिय लद्धं विरलेदूण एगसगलपक्खेवं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दुगुणदीवसिहामेत्तसमाणगोवुच्छाओ पावेंति। पुणो रूवूणोदिण्ण-द्धाणसंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसाणमागमणमिच्छामो त्ति रूवाहियगुणहाणिं दुगुणदीवसिहाए गुणिय दुगुणरूवूणदीवसिहाए संकलणाए खंडेदूण तत्थ रूवाहियएगखंडेण दुगुणदीव-सिहाए ओवट्टिदअंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे भागलद्धं तत्थेव सोहिदे विगल-पक्खेवभागहारो होदि। एदेण सगलपक्खेवे भागे हिदे विगलपक्खेवो आगच्छदि।

परिणमन कर आयुको बांध रूपाधिक दीपशिखामें स्थित द्रव्यसे जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे आयुको बांधकर दो रूपोंसे अधिक दीपशिखामें स्थित द्रव्य सदृश होता है। इस क्रमसे अधस्तन अधस्तन गोपुच्छोंके विकल प्रक्षेप सम्बन्धी बन्धनविधान और योगस्थानाध्वानविधानको जानकर द्विगुणित दीपशिखा मात्र अध्वान उतरने तक उतारना चाहिये। फिर वहां ठहर कर एक परमाणु अधिक क्रमसे एक विकल प्रक्षेपको बढ़ाना चाहिये।

यहां विकल प्रक्षेपका भागहार कहा जाता है। वह इस प्रकार है— अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र अन्तिम निषेकके भागहारको द्विगुणित दीपशिखासे अपवर्तित कर लब्धका विरलन करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर रूपके प्रति द्विगुणित दीपशिखा प्रमाण समान गोपुच्छ प्राप्त होते हैं। पुनः रूप कम अवतीर्ण अध्वानके संकलन मात्र गोपुच्छविशेषोंके लानेकी इच्छा कर रूपाधिक गुणहानिको द्विगुणित दीपशिखासे गुणित कर रूप कम द्विगुणित दीपशिखाके संकलनसे खण्डित कर उसमें रूपाधिक एक खण्डका द्विगुणित दीपशिखासे अपवर्तित अंगुलके असंख्यातवें भागमें भाग देनेपर जो प्राप्त हो उसे उसीमेंसे कम करनेपर विकल प्रक्षेपका भागहार होता है। इसका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर विकल प्रक्षेप आता है। इतना मात्र बढ़कर स्थित हुआ जीव तथा उत्तरोत्तर प्रक्षेप अधिक

---

१ अ-काप्रत्योः 'जोगट्ठाणाणं' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-काप्रतिषु 'हस्सगोव' इति पाठः। ३ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-काप्रतिषु 'हेट्ठिमगोवुच्छाणं' इति पाठः। ४ अ-काप्रत्योः 'ठाएदूण' इति पाठः।

एत्तियमेत्तं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, पक्खेवुत्तरजोगेण एगसमय बंधिदूण आगदो च, सरिसा। एव विगलपक्खेवभागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु पुणो एगो सगलपक्खेवो वड्ढदि। भागहारमेत्तजोगट्ठाणाणि उवरि चडिदूण एगसमएण बंधिय अहियारट्ठिदीए ट्ठिददव्व सरिसं होदि। एवं रूवाहियकमेण दुगुणदीवसिहाए हेट्ठिमगोवुच्छाए जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता सगलपक्खेवा वड्ढावेदव्वा।

संपहि हेट्ठिमगोवुच्छाए सगलपक्खेवाण गवेसणा कीरदे। त जहा— अंगुलस्स असखेज्जदिभागं विरलिय सगलपक्खेव समखड कादूण दिण्णे रूव पडि एगेगचरिमणिसेगो पावदि। पुणो एदम्हादो पयदगोवुच्छा दुगुणदीवसिहामेत्तगोवुच्छविसेसेहि अहिया होदि त्ति रूवाहियगुणहाणिं दुगुणदीवसिहाए खडिय तत्थ एगखंडेण रूवाहिएण उवरिमविरलणमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव सोहिय सुद्धसेसेण सगलपक्खेवं भागे हिदे विगलपक्खेवो आगच्छदि। पुणो एदेण पमाणेण सेडीए असखेज्जदिभागमेत्तसगलपक्खेवेहिंतो अवणिय विगलपक्खेवभागहारेण सगलपक्खेवभागहारे भागे हिदे लद्धमेत्ता सगलपक्खेवा पयदगोवुच्छाए होंति।

एत्थ जोगट्ठाणद्धाणं पि जाणिदूण भाणिदव्व। पुणो सेसअधिकारगोवुच्छाण पि

योगसे एक समयमें आयुको बांधकर आया हुआ जीव, दोनों समान हैं। इस प्रकार विकल प्रक्षेप-भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंके बढनेपर फिर एक सकल प्रक्षेप बढ़ता है। भागहार प्रमाण योगस्थान ऊपर चढ़कर एक समयमें आयुको बांध करके अधिकार स्थितिमें स्थित द्रव्य सदृश होता है। इस प्रकार रूप अधिक क्रमसे द्विगुणित दीपशिखाके अधस्तन गोपुच्छमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र सकल प्रक्षेप बढ़ाना चाहिये।

अब अधस्तन गोपुच्छके सकल प्रक्षेपोंकी गवेषणा की जाती है। वह इस प्रकार है— अंगुलके असख्यातवें भागका विरलन कर सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर रूपके प्रति एक एक अन्तिम निषेक प्राप्त होता है। इससे प्रकृत गोपुच्छ चूंकि द्विगुणित दीपशिखा मात्र गोपुच्छविशेषोंसे अधिक है, अत रूप अधिक गुणहानिको द्विगुणित दीपशिखासे खण्डित कर उसमें रूपाधिक एक खण्डसे उपरिम विरलनको अपवर्तित कर जो लब्ध हो उसे उसीमेंसे कम करके शेषका प्रक्षेपमें भाग देनेपर विकल प्रक्षेप आता है। पुन इस प्रमाणसे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंमेंसे कम करके विकल प्रक्षेपके भागहारका सकल प्रक्षेपके भागहारमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र सकल प्रक्षेप प्रकृत गोपुच्छमें होते हैं।

यहां योगस्थानाध्वानको भी जानकर कहना चाहिये। पुन, शेष अधिकार गोपुच्छों

होदि । तं जहा — गुणहाणिअद्धवग्गमूलेण गुणहाणिम्हि भागे हिदे भागलद्धं भागहारादो दुगुणं होदि । त रूवाहिय हेट्ठा ओदिण्णद्धाणं होदि । एत्थतणसव्वगोवुच्छविसेसा मिलिदूण एगचरिमणिसेयपमाण होंति ।

एत्थ णाणावरणपढमरूवुप्पाइदविहाणं सव्वं चिंतिय वत्तव्वं । चरिमणिसेयभागहारमंगुलस्स असंखेज्जदिभागं हेट्ठा ओदिण्णद्धाणेण रूवाहिएण खंडिदे तत्थेगखंडमेत्तो एत्थतणविगलपक्खेवभागहारो होदि । संपहि रूवूणोदिण्णद्धाणेण सह तदणंतरहेट्ठिमगोवुच्छाए विगलपक्खेवभागहारे इच्छिज्जमाणे चरिमणिसेगभागहारं अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमप्पणो ओदिण्णद्धाणेण रूवाहिएण खंडिदे तत्थ एगखंडं विरलिय सगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे रूवाहियओदिण्णद्धाणमेत्तचरिमगोवुच्छाओ रूवं पडि पावेंति । संपहि ओदिण्णद्धाणरूवूणमेत्तविसेसाणमागमणमिच्छिय रूवाहियगुणहाणिं रूवाहियओदिण्णद्धाणेण गुणिय विरलेदूण एगरूवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स एगेगविसेसपमाणं पावदि । संपहि रूवूणोदिण्णद्धाणमेत्ते गोवुच्छविसेसे[2] इच्छामो त्ति रूवूणोदिण्णद्धाणेण पुव्वविरलण-

प्रमाण होते हैं । यथा — गुणहानिके अर्ध भागके वर्गमूलका गुणहानिमें भाग देनेपर भागलब्ध भागहारसे दुगुणा होता है । वह एक अधिक होकर नीचेका अवतीर्ण अध्वान होता है । यहांके सब गोपुच्छविशेष मिलकर एक अन्तिम निषेक प्रमाण होते हैं ।

यहां ज्ञानावरण सम्बन्धी प्रथम अंकसे उत्पादित सब विधानको विचार कर कहना चाहिये । अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण अन्तिम निषेकके भागहारको नीचेके अवतीर्ण रूपाधिक अध्वानसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्ड प्रमाण यहांका विकलप्रक्षेप-भागहार होता है । अब रूप कम अवतीर्ण अध्वानके साथ तदनन्तर अधस्तन गोपुच्छके विकल प्रक्षेप भागहारकी इच्छा करनेपर अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र अन्तिम निषेकभागहारको रूपाधिक अपने अवतीर्ण अध्वानसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्डका विरलन करके सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर रूपके प्रति रूपाधिक अवतीर्ण अध्वान मात्र अन्तिम गोपुच्छ पाये जाते हैं । अब अवतीर्ण अध्वानके एक अंकसे हीन मात्र विशेषोंके लानेकी इच्छा कर रूपाधिक गुणहानिको रूपाधिक अवतीर्ण अध्वानसे गुणित कर विरलित करके एक रूपधरितको समखण्ड करके देनेपर एक एक रूपके प्रति एक एक विशेषका प्रमाण प्राप्त होता है । अब चूंकि रूप कम अवतीर्ण अध्वान मात्र गोपुच्छविशेषोंका लाना इष्ट है अत एव रूप कम अवतीर्ण अध्वानसे पूर्व विरलन राशिको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उसमें एक रूप

१ प्रतिषु 'रूवुप्पण्णद्धाणेण' इति पाठ । २ अप्रतौ 'मेत्ते गोवुच्छविसेस', आ-काप्रत्योः 'मेत्तगोवुच्छविसेस-' ताप्रतौ 'मेत्तगोवुच्छविसेस' इति पाठः ।

ओवट्टिय उव्वरेण रूवाहियण रूवाहियमोवट्टिय(ण्ण)दामोवट्टिदअंगुलस्स असंखेज्जदिभागे¹ भागे हिदे भागलद्धं तम्हि चेव सोहिदे सुद्धसेसो तदित्थविगलपक्खेवभागहारो होदि। एवं वाणिदूण ओदारेदव्वं जाव चरिमगुणहाणिमेत्तमोदिण्णो त्ति। पुणो तस्स तत्तीससागरोवम णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासी रूवूणो विगलपक्खेव भागहारो होदि। चरिमगुणहाणिदव्वे चरिमणिसेगपमाणेण कदे किंचूणदिवड्ढगुणहाणि मेत्तचरिमणिसेया होंति। पुणो तेहि चरिमणिसेयभागहारे अंगुलस्स असंखेज्जदिभागे ओवट्टिदे गुणगार भागहार-दिवड्ढगुणहाणीओ समाओ त्ति अवणिदासु रूवूणण्णोण्णब्भत्थ रासिस्सेव अवट्ठाणादो। पुणो चरिमगुणहाणिपढमसमए ट्ठाइदूण परमाणुत्तरादिकमेण एग विगलपक्खेवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो पक्खेवुत्तरजोगेण बंधिदूणागदो च, सरिसा। एदेण कमेण रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्तविगलपक्खेवेसु पविट्ठेसु एगो सगलपक्खेवो पविट्ठो होदि। विगलपक्खेवभागहारमेत्ताणि चेव जोगट्ठाणाणि उवरि चडिदो होदि। एदेण कमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगो वड्ढिदो त्ति।

संपहि दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगसगलपक्खेवाण गवेसणा कीरदे। तं जहा—

मिलाकर रूपाधिक अवतीर्ण अध्वानसे अपवर्तित अंगुलके असंख्यातवें भागमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसे उसीमेंसे कम करनेपर शुद्धशेष वहांके विकल प्रक्षेपका भागहार होता है। इस प्रकार जानकर अन्तिम गुणहानि मात्र उतरने तक उतारना चाहिये। परन्तु वहां तेतीस सागरोपमोंकी नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके परस्परमें गुणित करनेपर जो राशि प्राप्त हो उसमेंसे एक कम करनेपर विकल-प्रक्षेप भागहार होता है। अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको अन्तिम निषेकके प्रमाणसे करनेपर कुछ कम डेढ़ गुणहानि मात्र अन्तिम निषेक होते हैं। फिर उनसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र अन्तिम निषेकके भागहारको अपवर्तित करनेपर गुणकार, भागहार व डेढ़ गुणहानियां समान होती हैं क्योंकि उनको कम करनेपर एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशि ही अवस्थित रहती है। पुनः अन्तिम गुणहानिके प्रथम समयमें स्थित होकर एक परमाणु अधिक इत्यादि क्रमसे एक विकल प्रक्षेपको बढ़ाकर स्थित हुआ तथा प्रक्षेप अधिक योगके क्रमसे बांधकर आया हुआ दूसरा एक जीव ये दोनों जीव सदृश हैं। इस क्रमसे रूप कम अन्योन्याभ्यस्त राशि मात्र विकल प्रक्षेपोंके प्रविष्ट हो जानेपर एक सकल प्रक्षेप प्रविष्ट होता है। विकल प्रक्षेपके भागहार प्रमाण ही योगस्थान ऊपर चढ़ता है। इस क्रमसे द्विचरम गुणहानि सम्बन्धी अन्तिम निषेकके बढ़ने तक बढ़ाना चाहिये।

अब द्विचरम गुणहानिके अन्तिम निषेक सम्बन्धी सकल प्रक्षेपोंकी गवेषणा की जाती है। वह इस प्रकारसे— द्विचरम गुणहानिके चरम निषेकका भागहार

---

1 प्रतिषु -भागेण [illegible]

दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगभागहारो चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगस्स भागहारस्स अद्धं होदि, चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगादो दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगस्स दुगुणत्तुवलंभादो। पुणो एदेण पमाणेण सगलपक्खेवेसु अवणिय सगलपक्खेवभागहारमेत्तविगलपक्खेवे करसामो। तं जहा— अंगुलस्स असंखेज्जदिभागस्स दुभागमेत्तविगलपक्खेवे घेत्तूण जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तविगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए भागलद्धमेत्ता सगलपक्खेवा दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगे होंति।

संपधि तिस्से जोगट्ठाणद्धाणगवेसणा कीरदे। तं जहा— एगसगलपक्खेवस्स जदि रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्ताणि जोगट्ठाणाणि लब्भंति तो पुव्वभणिदमेत्तसगलपक्खेवेसु केत्तियाणि जोगट्ठाणाणि लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्ध जोगट्ठाणद्धाणं होदि। जहण्णजोगट्ठाणादो उवरि एत्तियमेत्ताण जोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणेण एगसमय बंधिदूण चरिमगुणहाणिपढमसमए ट्ठिदो च, पुणो जहण्णेण जोगेण जहण्णजोगद्धाए च बंधिदूण दुचरिमगुणहाणिचरिमसमए ट्ठिदो च, सरिसा। पुणो पुव्विल्ल मोत्तूण इम घेत्तूण एत्थ परमाणुत्तरादिकमेण एगविगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो। एत्थ विगलपक्खेव-

---

चरम गुणहानिके चरम निषेक सम्बन्धी भागहारसे आधा होता है, क्योंकि, चरम गुणहानिके चरम निषेकसे द्विचरम गुणहानिका चरम निषेक दुगुणा पाया जाता है। पुन इस प्रमाणसे सकल प्रक्षेपोंमेंसे कम कर सकल प्रक्षेपके भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंको करते हैं। यथा— अंगुलके असंख्यातवें भागके द्वितीय भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंको ग्रहण कर यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंमें कितने सकल प्रक्षेप प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र सकल प्रक्षेप द्विचरम गुणहानिके चरम निषेकमें होते हैं।

अब उसके योगस्थानाध्वानकी गवेषणा करते हैं। वह इस प्रकार है— एक सकल प्रक्षेपके यदि रूप कम अन्योन्याभ्यस्त राशि मात्र योगस्थान प्राप्त होते हैं तो पूर्वोक्त मात्र सकल प्रक्षेपोंमें कितने योगस्थान प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाके अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतना योगस्थानाध्वान होता है। जघन्य योगस्थानसे आगे इतने मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे एक समयमें आयुको बांधकर चरम गुणहानिके प्रथम समयमें स्थित हुआ, तथा जघन्य योग और जघन्य योगकालसे आयुको बांधकर द्विचरम गुणहानिके चरम समयमें स्थित हुआ, ये दोनों जीव सदृश हैं। पुन पूर्वको छोड़कर और इसको ग्रहण कर यहां एक परमाणु अधिक इत्यादि क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढ़ाना चाहिये। यहां विकल

भागहारो उप्पज्जदि । तं जहा— दुरूवाहियदिवड्ढगुणहाणीए चरिमगुणहाणिचरिमणिसेय भागहारे भागे हिदे विगलपक्खेवभागहारा होदि । दिवड्ढगुणहाणीए किमट्ठं दोरूवपक्खेवो कदो ? चरिमगुणहाणिचरिमणिसेयादो दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेयस्स दुगुणत्तुवलंभादो। संपहि एसभागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु एगो सयलपक्खेवो वड्ढदि । एदेण कमेण दुचरिमगुणहाणिदुचरिमगोवुच्छाए जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता वड्ढावेदव्वा।

संपहि एदिस्से गोवुच्छाए सगलपक्खेवगवेसणा कीरदे । तं जहा— अंगुलस्स असंखेज्जदिभागस्सद्धं विरलेदूण एगसगलपक्खेवं समखंडं काढूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगो पावदि । संपहि दोण्णिगोवुच्छविसेसे एत्थ अहिए इच्छामो त्ति दुरूवाहियगुणहाणिणा अंगुलस्स असंखेज्जदिभागद्धभागमोवट्टिय लद्धे तम्हि चेव साहिदे सुद्धसेसं विगलपक्खेवभागहारो होदि । एदेण सगलपक्खेवे भागे हिदे विगलपक्खेवो आगच्छदि । पुणो एदेण पमाणेण उवरिमविरलणाए सेडीए असंखेज्जदि भागमेत्तसगलपक्खेवेसु अवणिय तेरासियं काढूण जोइदे सगलपक्खेवभागहारं विगल-

---

प्रक्षेपका भागहार आता है । वह इस प्रकार है— दो रूपोंसे अधिक डेढ़ गुणहानिका चरम गुणहानिके चरम निषेक सम्बन्धी भागहारमें भाग देनेपर विकल प्रक्षेपका भागहार होता है ।

शंका— डेढ़ गुणहानिमें किसलिये दो रूपोंका प्रक्षेप किया है ?

समाधान— चूंकि चरम गुणहानिके चरम निषेकसे द्विचरम गुणहानिका चरम निषेक दुगुणा पाया जाता है अतः उसमें दो रूपोंका प्रक्षेप किया गया है ।

अब इस भागहार मात्र विकल प्रक्षेपोंके बढ़नेपर एक सकल प्रक्षेप बढ़ता है । इस क्रमसे द्विचरम गुणहानिके द्विचरम गोपुच्छमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र बढ़ाना चाहिये ।

अब इस गोपुच्छके सकल प्रक्षेपोंकी गवेषणा की जाती है। वह इस प्रकारसे— अंगुलके असंख्यातवें भागके अर्ध भागका विरलन करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक एक रूपके प्रति द्विचरम गुणहानिका चरम निषेक प्राप्त होता है । अब यहां दो अधिक गोपुच्छविशेषोंकी इच्छा कर दो रूपोंसे अधिक गुणहानिका अंगुलके असंख्यातवें भागके अर्ध भागमें भाग देकर जो लब्ध हो उसे उसीमेंसे कम करनेपर शुद्धशेष विकल प्रक्षेपका भागहार होता है । इसका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर विकल प्रक्षेप आता है । पुनः इस प्रमाणसे उपरिम विरलनके श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंमें कम कर त्रैराशिक करके जोड़नेपर सकल प्रक्षेपके भागहारको विकल प्रक्षेपके

---

१ ताप्रतौ अप्पदि इति पाठः ।

पक्खेवभागहारेण खंडिदेगखंडमेत्ता सगलपक्खेवा लब्भंति। एदेसु सगलपक्खेवेसु विगलपक्खेवभागहारेण गुणिदेसु जोगट्ठाणं होदि। पुणो जहण्णजोगट्ठाणादो एत्तियमद्धाणं चडिदूण ट्ठिदजोगट्ठाणेण बंधिदूणागदो च, जहण्णजोगट्ठाणेण जहण्णबंधगद्धाए च बंधिद तदणंतरहेट्ठिमगोवुच्छ धरेदूण ट्ठिदो च, सरिसा। पुणो एदस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण एगो विगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो।

एत्थ विगलपक्खेवपमाण वुच्चदे। त जहा— चदुरूवाहियदिवड्ढगुणहाणीए अंगुलस्स असखेज्जदिभागमोवट्टिय विरलेदूण एगसगलपक्खेवं समखड कादूण दिण्णे रूव पडि चदुरूवाहियदिवड्ढगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेया पावेंति। पुणो एत्थ रूवाहियगुणहाणिं चदुरूवाहियदिवड्ढगुणहाणिणा गुणिय दुचरिमगुणहाणिचरिमसमयादो ओदिण्णद्धाणस्स रूवूणस्स संकलणाए दुगुणिदाए ओवट्टिय रूवाहिय काऊण पुव्वविरलणम्मि भागे हिदे भागलद्धं तम्हि चेव सोहिय सेसेण सगलपक्खेवे भागे हिदे विगलपक्खेवो आगच्छदि। पुणो एसविगलपक्खेवभागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु एगो सगलपक्खेवो वड्ढदि। एदेण कमेण तदणतरहेट्ठिमगोवुच्छाए जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता वड्ढावेदव्वा।

संपहि तिस्से तदणतरहेट्ठिमगोवुच्छाए सगलपक्खेवपमाणगवेसणा कीरदे। तं जहा—

भागहारसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्ड मात्र सकल प्रक्षेप पाये जाते हैं। इन सकल प्रक्षेपोंको विकल-प्रक्षेप-भागहारसे गुणित करनेपर योगस्थान होता है। पश्चात् जघन्य योगस्थानसे इतना अध्वान चढ़कर स्थित योगस्थानसे आयुको बांधकर आया हुआ, तथा जघन्य योगस्थान और जघन्य बन्धककालसे आयुको बांधकर तदनन्तर अधस्तन गोपुच्छको धरकर स्थित हुआ, ये दोनों जीव सदृश हैं। पुन इसके ऊपर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढ़ाना चाहिये।

यहां विकल प्रक्षेपका प्रमाण कहते हैं। वह इस प्रकार है— चार रूपोंसे अधिक डेढ़ गुणहानि द्वारा अगुलके असंख्यातवें भागको अपवर्तित कर विरलित करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर रूपके प्रति चार रूपोंसे अधिक डेढ़ गुणहानि मात्र चरम निषेक प्राप्त होते हैं। फिर यहा रूपाधिक गुणहानिको चार रूपोंसे अधिक डेढ़ गुणहानि द्वारा गुणित कर उसे द्विचरम गुणहानिके चरम समयसे नीचे आये हुए रूप कम अध्वानके दुगुणे संकलनसे अपवर्तित कर और एक रूप मिलाकर पूर्व विरलनमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसे उसीमेंसे घटाकर शेषका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर विकल प्रक्षेप आता है। पुन इस विकल प्रक्षेप भागहार मात्र विकल प्रक्षेपोंके बढ़नेपर एक सकल प्रक्षेप बढ़ता है। इस क्रमसे तदनन्तर अधस्तन गोपुच्छमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र बढ़ाना चाहिये।

अब उस तदनन्तर अधस्तन गोपुच्छके सकल प्रक्षेपोंके प्रमाणकी गवेषणा करते

चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगभागहारस्स अद्धं विरलिय सयलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स दुचरिमगुणहाणिचरिमणिसेगो पावदि । संपहि पयदणिसेगो एदम्हादो चदुहि गोवुच्छविसेसेहि अहियो त्ति कट्टु रूवाहियगुणहाणीए अद्धेण रूवाहिएण उवरिमविरलणमोवट्टिय लद्धे तम्हि चेव सोहिदे सुद्धसेसो तदित्थविगलपक्खेवभागहारो होदि । पुणो एदे उवरिमविरलणरूवधरिदेसु अवणिय सगलपक्खेवे कस्सामो । तं जहा— विगलपक्खेवभागहारमेत्तविगलपक्खेवाणं जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो सगलपक्खेवभागहारमेत्तविगलपक्खेवाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेत्तसयलपक्खेवा होंति । सयलपक्खेवसलागाओ विगलपक्खेवभागहारेण गुणिदाओ जोगट्ठाणद्धाणं होदि । पडिवण्णद्धाणमुवरि चडिदूण एगसमयं चडिदूणागदो च, जहण्णजोगेण जहण्णबंधगद्धाए च बंधिय तदणंतरहेट्ठिमसमए ट्ठिदो च, सरिसा । एदेण कमेण दोगुणहाणीओ ओसरिदूण ट्ठिदस्स तदित्थविगलपक्खेवो वुच्चदे । तं जहा— दोगुणहाणीओ ओसरिदो त्ति दुरूवूणअण्णोण्णब्भत्थरासिणा रूवूणेण दिवड्ढगुणहाणिं गुणिय चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगभागहारे भागे हिदे गुणहाणिसलागाणं रूवोणअण्णोण्णब्भत्थरासिस्स तिभागो

है। वह इस प्रकार है— चरम गुणहानि सम्बन्धी चरम निषेकके भागहारके अर्ध भागका विरलन करके सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक एक रूपके प्रति द्विचरम गुणहानिका चरम निषेक प्राप्त होता है। अब प्रकृत निषेक चूंकि इसकी अपेक्षा चार गोपुच्छविशेषोंसे अधिक है अत एव एक अधिक गुणहानिके एक अधिक अर्ध भागका उपरिम विरलनमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसको उसीमेंसे घटा देनेपर शुद्धशेष वहांके विकल प्रक्षेपका भागहार होता है। पुनः इनको उपरिम विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त राशियोंमेंसे कम करके सकल प्रक्षेपोंको करते हैं। वह इस प्रकारसे— विकल-प्रक्षेप भागहार मात्र विकल प्रक्षेपोंके यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो सकल प्रक्षेप भागहार मात्र विकल प्रक्षेपोंके कितने सकल प्रक्षेप प्राप्त होंगे इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र सकल प्रक्षेप होते हैं। सकल-प्रक्षेप-शलाकाओंको विकल-प्रक्षेप-भागहारसे गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतना योगस्थान अध्वान होता है। इतना अध्वान ऊपर चढ़कर एक समयमें आयुको बांधकर आया हुआ तथा जघन्य योगसे व जघन्य बन्धककालसे आयुको बांधकर तदनन्तर अधस्तन समयमें स्थित हुआ ये दोनों जीव सदृश हैं। इस क्रमसे दो गुणहानियां पीछे हटकर स्थित हुए जीवके यहांका विकल प्रक्षेप कहा जाता है। वह इस प्रकार है— दो गुणहानियां चूंकि उतरा है अतः दो रूपोंसे कम अन्योन्याभ्यस्त राशिसे डेढ़ गुणहानिको गुणित कर चरम गुणहानि सम्बन्धी चरम निषेकके भागहारमें भाग देनेपर गुणहानिशलाकाओंकी एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके त्रिभाग प्रमाण विकल-प्रक्षेप

विगलपक्खेवभागहारो होदि । पुणो एत्थ परमाणुत्तरादिकमेण भागहारमेत्तेसु विगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु एगो सगलपक्खेवो वड्ढदि । एवं ताव वड्ढावेदव्वो जाव तिचरिमगुणहाणीए चरिमणिसेगम्मि जेत्तिया सयलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता वड्ढिदा त्ति ।

पुणो तस्स सयलपक्खेवाणं गवेसणा कीरदे । तं जहा — चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगभागहारस्स चदुब्भागो एत्थ विगलपक्खेवभागहारो होदि । कुदो ? चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगादो एदस्स णिसेगस्स चदुगुणत्तुवलभादो । एदेण विहाणेण ओदारिज्जमाणे जिस्से जिस्से गुणहाणीए पढमसमए विगलपक्खेवो इच्छिज्जदि तिस्से तिस्से गुणहाणीए उवरिमगुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा रूवूणेण णाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासिम्हि रूवूणम्मि भागे हिदे लद्धं विगलपक्खेवभागहारो होदि । विगलपक्खेवभागहारमेत्तमुवरि चडिदूण बंधमाणस्स एगसगलपक्खेवो पविसदि । इच्छिदणाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगभागहारे भागे हिदे तदित्थअधिकार[1]गोवुच्छाए विगलपक्खेवभागहारो होदि ।

भागहार होता है । पुनः इसमें एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंकी वृद्धि होनेपर एक सकल प्रक्षेप बढ़ता है । इस प्रकार त्रिचरम गुणहानिके चरम निषेकमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र सकल प्रक्षेपोंके बढ़ जाने तक बढ़ाना चाहिये ।

अब उसके सकल प्रक्षेपोंकी गवेषणा करते हैं । वह इस प्रकार है — चरम गुणहानिके चरम निषेक सम्बन्धी भागहारके चतुर्थ भाग प्रमाण यहां विकल प्रक्षेपका भागहार होता है, क्योंकि, चरम गुणहानिके चरम निषेकसे यह निषेक चौगुणा पाया जाता है । इस रीतिसे उतारते हुए जिस जिस गुणहानिके प्रथम समयमें विकल प्रक्षेपकी इच्छा हो उस उस गुणहानिकी उपरिम गुणहानिशलाकाओंका विरलन करके दुगुणा कर एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिका नानागुणहानिशलाकाओंकी एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उतना विकल प्रक्षेपका भागहार होता है । विकल प्रक्षेप-भागहार मात्र ऊपर चढ़कर आयुको बांधनेवालेके एक सकल प्रक्षेप प्रविष्ट होता है । इच्छित नानागुणहानिसलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके अन्योन्याभ्यस्त राशिका चरम गुणहानिके चरम निषेक सम्बन्धी भागहारमें भाग देनेपर वहांकी अधिकार गोपुच्छाके विकल प्रक्षेपका भागहार होता

१ अ-आ-काप्रतिषु ' अधिकार ' इति पाठः ।

एवं जाणिदूण णेदव्वं जाव अहियारगोवुच्छाए भागहारो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो होदूण हाणिसरूवेण गच्छमाणो पलिदोवमपमाणं पत्तो त्ति। संपहि केत्तियासु गुणहाणीसु ओदिण्णासु पलिदोवमं भागहारो होदि त्ति वुत्ते वुच्चदे— एगपलिदोवमब्भंतरणाणागुणहाणिसलागाणं वेत्तिभागमद्धच्छेदणयमेत्तगुणहाणिसलागाओ मोत्तूण सेसगुणहाणीओ ओदिण्णस्स तदित्थअहियारगोवुच्छाए भागहारं पलिदोवमं होदि। सगलतेत्तीस [११] सागरब्भंतरणाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिम्हि रूवूणम्मि पुव्वुत्तणाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगुणिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा भागे हिदे एगपलिदोवमब्भंतरणाणागुणहाणिसलागाणं वेत्तिभागं लब्भदि, पुणो तेहि दिवड्ढगुणहाणीए गुणिदाए पलिदोवमुप्पत्तीदो। संपहि एत्थ सयलपक्खेवबंधणविहाणं गोवुच्छाणद्धाणं च जाणिदूण भाणिदव्वं। एदेण कमेण ओदारेदव्वं जाव जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स अद्धच्छेदणया रूवूणा जत्तिया अत्थि तत्तियमेत्ताओ गुणहाणीओ अवसेसाओ ठिदाओ त्ति। तदित्थविगलपक्खेवभागहारो वुच्चदे— रूवूणजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणिसलागाओ मोत्तूण उवरिमणाणा-

है। इस प्रकार जानकर तब तक ले जाना चाहिये जब तक अधिकारगोपुच्छका भागहार अंगुलके असंख्यातवें भाग होकर हानि स्वरूपसे जाता हुआ पल्योपम प्रमाणको प्राप्त होता है।

अब कितनी गुणहानियां उतरनेपर उक्त भागहार पल्योपम प्रमाण होता है ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि एक पल्योपमके भीतर नानागुणहानिशलाकाओंके दो त्रिभाग अर्धच्छेद मात्र गुणहानिशलाकाओंको छोड़कर शेष गुणहानियां उतरनेपर वहांकी अधिकारगोपुच्छाका भागहार पल्योपम होता है। सम्पूर्ण तेतीस सागरोपमोंके भीतर नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके उनकी रूप कम अन्योन्याभ्यस्त राशिमें पूर्वोक्त नानागुणहानिशलाकाओंको विरलित कर दुगुणा करके परस्पर गुणित करनेपर जो राशि प्राप्त हो उसका भाग देनेपर एक पल्योपमके भीतर नानागुणहानिशलाकाओंके दो त्रिभाग पाये जाते हैं क्योंकि, फिर उनसे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर पल्योपम उत्पन्न होता है। अब यहां सकल प्रक्षेपके बन्धनविधान और गोपुच्छस्थानाध्वानको जानकर कहना चाहिये। इस क्रमसे जघन्य परीतासंख्यातके रूप कम जितने अर्धच्छेद हैं उतनी मात्र गुणहानियां शेष रहने तक उतारना चाहिये।

वहांके विकल प्रक्षेपका भागहार कहते हैं— रूप कम जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर गुणहानिशलाकाओंको छोड़कर उपरिम नानागुणहानिशलाकाओंका

---

१ अ-आप्रत्योः 'अधिया' इति पाठः। २ [illegible] अ-आ-प्रत्योर्नोपलभ्यते।

विगलपक्खेवभागहारो होदि। पुणो एत्थ परमाणुत्तरादिकमेण भागहारमेत्तेसु विगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु एगो सगलपक्खेवो वड्ढदि। एव ताव वड्ढावेदव्वो जाव तिचरिमगुणहाणीए चरिमणिसेगम्मि जेत्तिया सयलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता वड्ढिदा त्ति।

पुणो तस्स सयलपक्खेवाण गवेसणा कीरदे। तं जहा— चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगभागहारस्स चदुब्भागो एत्थ विगलपक्खेवभागहारो होदि। कुदो? चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगादो एदस्स णिसेगस्स चदुगुणत्तुवलभादो। एदेण विहाणेण ओदारिज्जमाणे जिस्से जिस्से गुणहाणीए पढमसमए विगलपक्खेवो इच्छिज्जदि तिस्से तिस्से गुणहाणीए उवरिमगुणहाणिसलागाओ विरलिय विग करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा रूवूणेण णाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासिम्हि रूवूणम्मि भागे हिदे लद्धं विगलपक्खेवभागहारो होदि। विगलपक्खेवभागहारमेत्तमुवरि चडिदूण वंधमाणस्स एगसगलपक्खेवो पविसदि। इच्छिदणाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगभागहारे भागे हिदे तदित्थअधिकारगोवुच्छाए विगलपक्खेवभागहारो होदि।

भागहार होता है। पुनः इसमें एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंकी वृद्धि होनेपर एक सकल प्रक्षेप बढ़ता है। इस प्रकार त्रिचरम गुणहानिके चरम निषेकमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र सकल प्रक्षेपोंके बढ़ जाने तक बढ़ाना चाहिये।

अब उसके सकल प्रक्षेपोंकी गवेषणा करते हैं। वह इस प्रकार है— चरम गुणहानिके चरम निषेक सम्बन्धी भागहारके चतुर्थ भाग प्रमाण यहां विकल प्रक्षेपका भागहार होता है, क्योंकि, चरम गुणहानिके चरम निषेकसे यह निषेक चौगुणा पाया जाता है। इस रीतिसे उतारते हुए जिस जिस गुणहानिके प्रथम समयमें विकल प्रक्षेपकी इच्छा हो उस उस गुणहानिकी उपरिम गुणहानिशलाकाओंका विरलन करके दुगुणा कर एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिका नानागुणहानिशलाकाओंकी एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उतना विकल प्रक्षेपका भागहार होता है। विकल प्रक्षेप-भागहार मात्र ऊपर चढ़कर आयुको बांधनेवालेके एक सकल प्रक्षेप प्रविष्ट होता है। इच्छित नानागुणहानिसलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके अन्योन्याभ्यस्त राशिका चरम गुणहानिके चरम निषेक सम्बन्धी भागहारमें भाग देनेपर वहांकी अधिकार गोपुच्छाके विकल प्रक्षेपका भागहार होता

होदि । संपहि एत्थ सयलपक्खेवबंधणविहाणं जोगट्ठाणद्धाणं च जाणिदूण वत्तव्वं ।

संपहि पढमगुणहाणिं तिण्णिखंडाणि काऊण तत्थ हेट्ठिमदोखंडाणि मोत्तूण गुणहाणितिभागं सेसगुणहाणीओ च हेट्ठदो ओसरिय बंधमाणस्स विगलपक्खेवभागहारो दिवड्ढरूवमेत्तो[1] होदि । एत्थ तिण्णि जोगट्ठाणाणि उवरि चडिदूण बंधमाणस्स दोसयलपक्खेवा वड्ढंति । एत्थ अहियारगोवुच्छभागहारो किंचूणतिण्णिगुणहाणिमेत्तो होदि । तं जहा— तिण्णिगुणहाणीओ विरलिय एगसयलपक्खेवं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स बिदियगुणहाणिपढमणिसेगो पावदि । पुणो इमं पेक्खिदूण पयदगोवुच्छा गुणहाणितिभागमेत्तगोवुच्छविसेसेहि अहिया त्ति कट्टु तेसिमाणयणट्ठं किरिया कीरदे । तं जहा— एगगुणहाणिं विरलेऊण बिदियगुणहाणिपढमणिसेगं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एगेगविसेसो पावदि । पुणो गुणहाणितिभागमेत्तविसेसे इच्छामो त्ति गुणहाणिं गुणहाणितिभागेण ओवट्टिय रूवाहियं करिय पुणो तेण उवरिमविरलणमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव सोहिदे सुद्धसेसो अहियारगोवुच्छाए भागहारो होदि । एवं जाणिदूण णेदव्वं जाव णारगचरिम

यहां सकल प्रक्षेपके बन्धनविधान और योगस्थानाध्वानको जानकर कहना चाहिये ।

अब प्रथम गुणहानिके तीन खण्डोंमें विभक्त कर उनमें अधस्तन दो खण्डोंको छोड़कर एक गुणहानिके त्रिभाग और शेष गुणहानियों नीचे उतर कर आयु बांधनेवाले जीवके विकल प्रक्षेप-भागहार डेढ़ अंक प्रमाण होता है । यहां तीन योगस्थान ऊपर चढ़ कर आयुको बांधनेवालेके दो सकल प्रक्षेप बढ़ते हैं । यहां अधिकारगोपुच्छाका भागहार कुछ कम तीन गुणहानि मात्र होता है । वह इस प्रकार है— तीन गुणहानियोंका विरलन करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक एक रूपके प्रति द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेक प्राप्त होता है । पुनः इसकी अपेक्षा प्रकृत गोपुच्छा चूंकि गुणहानिके त्रिभाग मात्र गोपुच्छविशेषोंसे अधिक है अतः उनके लानेके लिये क्रिया की जाती है । वह इस प्रकार है— एक गुणहानिका विरलन करके द्वितीय गुणहानिके प्रथम निषेकको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक अंकके प्रति एक एक विशेष प्राप्त होता है । पुनः गुणहानिके त्रिभाग मात्र विशेषोंकी चूंकि इच्छा है अतः गुणहानिको गुणहानिके त्रिभागसे अपवर्तित कर एक अंकसे अधिक करके फिर उससे उपरिम विरलनको अपवर्तित कर जो लब्ध हो उसे उसीमेंसे घटा देनेपर शेष अधिकारगोपुच्छाका भागहार होता है । इस प्रकार जानकर नारक भवके तृतीय समय

---

१ अ-आ-काप्रतिषु तिभागस्सेव ताप्रतौ तिभागसेव इति पाठः । २ अ-आ-काप्रतिषु गुणगाल ताप्रतौ गुणगालस इति पाठः । ३ अ-आ-काप्रतिषु णेया इति पाठः । ४ प्रतिषु पेक्खिदूण इति पाठः । ५ ताप्रतौ अहिय ताप्रतौ अहिया इति पाठः । ६ ताप्रतौ उवरिम उवरिम- इति पाठः । ७ ताप्रतौ वे इति पाठः ।

गुणहाणिसलागाओ विरलिय विगुणिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा रूवूणेण दिवड्डगुणहाणिं गुणिय अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे जं लद्धं जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स सादिरेयमद्धं विगलपक्खेवभागहारो होदि। तक्काले संखेज्जाणि जोगट्ठाणाणि उवरि चडिदूण बंधमाणस्स एगो सगलपक्खेवो वड्ढदि। तत्थ अहियारगोवुच्छाभागहारो जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स अद्धेण दिवड्डगुणहाणिं गुणिदे होदि। एत्थ सयलपक्खेवबंधणविहाणं जोगट्ठाणद्धाणं च जाणिदूण गहेदव्वं। एदेण कमेण एगगुणहाणिं मोत्तूण सेससव्वगुणहाणीओ ओदिण्णे तदित्थविगलपक्खेवभागहारो दोरूवाणि एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो च भागहारो होदि। तक्काले तिण्णि जोगट्ठाणाणि वि उवरि चडिदूण बंधमाणस्स एगसगलपक्खेवो पुणो असंखेज्जदिभागेणूणएगो विगलपक्खेवो च वड्ढदि। पुणो छेदभागहारो होदूण एवं गच्छमाणे कम्मि सपुण्णसगलपक्खेवा होंति त्ति भणिदे वुच्चदे— रूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्तजोगट्ठाणाणि उवरि चडिदूण बंधमाणस्स दुरूवूणण्णोण्णब्भत्थरासिस्सद्धमेत्ता सगलपक्खेवा वड्ढंति। तदित्थअहियारगोवुच्छभागहारो दुगुणिददिवड्डगुणहाणिमेत्तो

विरलन कर द्विगुणित करके उनकी रूप कम अन्योन्याभ्यस्त राशिसे डेढ़ गुणहानिको गुणित कर अंगुलके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जघन्य परीतासंख्यातका साधिक अर्ध भाग जो लब्ध होता है वह वहांके विकल प्रक्षेपका भागहार होता है। उस कालमें संख्यात योगस्थान आगे जाकर आयुको बांधनेवालेके एक सकल प्रक्षेप बढ़ता है। वहां अधिकारगोपुच्छाका भागहार जघन्य परीतासंख्यातके अर्ध भागसे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर होता है। यहां सकल प्रक्षेपके बन्धनविधान और योगस्थानाध्वानको जानकर ग्रहण करना चाहिये। इस क्रमसे एक गुणहानिको छोड़कर शेष सब गुणहानियां उतरनेपर वहांके विकल प्रक्षेपका भागहार दो अंक और एक अंकका असंख्यातवां भाग भागहार होता है। उस कालमें तीन योगस्थान भी ऊपर चढ़कर आयुको बांधनेवालेके एक सकल प्रक्षेप और असंख्यातवें भागसे हीन एक विकल प्रक्षेप बढ़ता है।

शंका— फिर छेदभागहार होकर इस प्रकार जानेपर सम्पूर्ण सकल प्रक्षेप कहांपर होते हैं?

समाधान—ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशि मात्र योगस्थान ऊपर चढ़कर आयुको बांधनेवालेके दो रूप कम अन्योन्याभ्यस्त राशिके अर्ध भाग प्रमाण सकल प्रक्षेप बढ़ते हैं।

वहांकी अधिकार गोपुच्छका भागहार द्विगुणित डेढ गुणहानि मात्र होता है। अब

---

१ अ आ-काप्रतिषु '-मद्दगुळ-', ताप्रतौ ' मद्ध गुण ' इति पाठ। २ अ काप्रयो ' भागहारो गुणिद ' इति पाठ.।

सगलपक्खेवे खंडिदे तत्थ एगखंडपमाणं होदि। पुणो एत्थ सयलपक्खेवबंधविहाणं जोगट्ठाणद्धाणं च जाणिदूण भाणिदव्वं। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदतदियसमयणेरइओ च, पुणो जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि बंधिदूणागदबिदियसमयणेरइओ[1] च, सरिसा। संपहि बिदियसमयणारगदव्वम्मि परमाणुत्तरादिकमेण एगविगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो। एत्थ विगलपक्खेवा एगसगलपक्खेवे दिवड्ढगुणहाणीए खंडिदे तत्थ एगखंडेणूणसगलपक्खेवमेत्तो। पुणो एत्तियमेत्तं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो समऊण [जहण्ण] बंधगद्धाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमएण पक्खेवुत्तरजोगेण बंधिय णारगबिदियसमयट्ठिदो च, सरिसा। एदेण कमेण दिवड्ढगुणहाणिमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु रूवूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तसयलपक्खेवा वड्ढंति। एवं ताव वड्ढावेदव्वं जाव णारगपढमगोवुच्छा वड्ढिदा त्ति।

पुणो तिस्से सयलपक्खेवगवेसणा कीरदे। तं जहा— एगसयलपक्खेवे दिवड्ढगुणहाणीए खंडिदे पढमणिसेओ आगच्छदि। एदेण पमाणेण सव्वसगलपक्खेवेसु अवणिय पुध ट्ठविय ते सगलपक्खेवे करस्सामो— दिवड्ढगुणहाणिमेत्तविगलपक्खेवेसु जदि एगो सगल-

सकल प्रक्षेपको खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण है।

अब यहां सकल प्रक्षेपके बन्धनविधान और योगस्थानाध्वानको जानकर कहना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित तृतीय समयवर्ती नारकी तथा जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे आयुको बांधकर आया हुआ द्वितीय समयवर्ती नारकी दोनों सदृश हैं। अब द्वितीय समयवर्ती नारकीके द्रव्यमें एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढ़ाना चाहिये। यहां विकल प्रक्षेप एक सकल प्रक्षेपको डेढ़ गुणहानिसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्डसे हीन सकल प्रक्षेप प्रमाण है। पुनः इतना मात्र बढ़कर स्थित तथा दूसरा एक जीव समय कम जघन्य बन्धककाल और जघन्य योगसे बांधकर पुनः एक समयमें प्रक्षेप अधिक योगसे बांधकर नारक भवके द्वितीय समयमें स्थित ये दोनों सदृश हैं। इस क्रमसे डेढ़ गुणहानि मात्र विकल प्रक्षेपोंके बढ़ जानेपर एक कम डेढ़ गुणहानि मात्र सकल प्रक्षेप बढ़ते हैं। इस प्रकार नारकीके प्रथम गोपुच्छके बढ़ने तक बढ़ाना चाहिये।

अब उसके सकल प्रक्षेपोंकी गवेषणा करते हैं। वह इस प्रकार है— एक सकल प्रक्षेपको डेढ़ गुणहानिसे खण्डित करनेपर प्रथम निषेक आता है। इस प्रमाणसे सब सकल प्रक्षेपोंमेंसे कम करके पृथक् स्थापित कर उनके सकल प्रक्षेप करते हैं— डेढ़ गुणहानि मात्र विकल प्रक्षेपोंमें यदि एक सकल प्रक्षेप पाया जाता है तो

१ अ-आप्रत्योः 'समए' इति पाठः। २ अ-आ-ताप्रतिषु 'बिदियसमयस्स' ताप्रतौ बिदिय [समय] णेरइओ इति पाठः। ३ प्रतिषु 'पक्खेवंतिदा' इति पाठः।

समओ त्ति । पुणो णारगतदियसमए ट्ठिदस्स विगलपक्खेवभागहारं भणिस्सामो । तं जहा—

दिवड्ढगुणहाणीए अद्ध विरलेदूण एगसगलपक्खेव समखंड कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स दो-दोपढमणिसेया पावेंति । एत्थ एगरूवधरिद दुगुणणिसेयभागहारेण खंडेदूण तत्थेगखंडपमाणे सव्वरूवधरिदेसु फेडिदे पढम-बिदियणिसेयपमाण होदि । पुणो फेडिददव्वं हाइदूणं जहा गच्छदि तहा वत्तइस्सामो । त जहा— दुगुणरूवूणणिसेगभागहारमेत्तगोवुच्छविसेसाणं जदि पढम-बिदियणिसेयपमाणं लब्भदि तो दिवड्ढगुणहाणिअद्धमेत्तगोवुच्छविसेसेसु केत्तिए पढम-बिदियणिसेगा लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छामोवट्टिय लद्ध दिवड्ढगुणहाणिदुभागम्मि पक्खित्ते दिवड्ढगुणहाणीए अद्ध सादिरेयं विगलपक्खेवभागहारो होदि । एसभागहारमेत्तजोगट्ठाणाणि उवरि चडिदूण बधमाणस्स रूवूणभागहारमेत्तसगलपक्खेवा वड्ढंति । एवं ताव वड्ढावेदव्व जाव णारगबिदियणिसेयम्मि जत्तिया सयलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता वड्ढिदा त्ति ।

संपहि णारगबिदियगोवुच्छाए किं पमाणमिदि वुत्ते सादिरेयदिवड्ढगुणहाणीए एगे-

---

तक ले जाना चाहिये । पुन नारक भवके तृतीय समयमें स्थित जीवके विकल प्रक्षेपके भागहारका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है—

डेढ़ गुणहानिके अर्ध भागका विरलन करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति दो दो प्रथम निषेक प्राप्त होते हैं । यहां एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको दुगुणे निषेकभागहारसे खण्डित कर उसमें एक खण्डप्रमाणको सब अंकोंके प्रति प्राप्त राशियोंमेंसे कम करनेपर प्रथम व द्वितीय निषेकका प्रमाण होता है । फिर घटाया हुआ द्रव्य हीन होकर जैसे जाता है वैसा बतलाते हैं । वह इस प्रकार है— दुगुणे निषेकभागहारमें एक कम करनेपर जो शेष रहे उतने मात्र गोपुच्छविशेषोंके यदि प्रथम व द्वितीय निषेकका प्रमाण प्राप्त होता है तो डेढ़ गुणहानिके अर्ध भाग मात्र गोपुच्छविशेषोंमें कितने प्रथम व द्वितीय निषेक प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर लब्धको डेढ़ गुणहानिके अर्ध भागमें मिलानेपर डेढ़ गुणहानिका साधिक अर्ध भाग विकल प्रक्षेपका भागहार होता है । इस भागहार प्रमाण योगस्थान ऊपर चढ़कर आयुको बांधनेवालेके एक रूप कम भागहार मात्र सकल प्रक्षेप वृद्धिको प्राप्त होते हैं । इस प्रकार नारकके द्वितीय निषेकमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने बढ़ने तक बढ़ाना चाहिये ।

शंका— नारकीकी द्वितीय गोपुच्छाका क्या प्रमाण है ?

समाधान— ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि वह साधिक डेढ़ गुणहानिसे एक

---

१ प्रतिषु 'सइदूण' इति पाठ । २ ताप्रतौ 'गुणहाणिएग' इति पाठः ।

सगलपक्खेवे खंडिदे तत्थ एगखंडपमाणं होदि। पुणो एत्थ सयलपक्खेवबंधविहाणं जोगट्ठाणद्धाणं च जाणिदूण भाणिदव्वं। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदतदियसमयणेरइओ च, पुणो जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि बंधिदूणागदबिदियसमयणेरइओ[1] च, सरिसा। संपहि बिदियसमयणारगदव्वम्मि परमाणुत्तरादिकमेण एगविगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो। एत्थ विगलपक्खेवो एगसगलपक्खेवे दिवड्ढगुणहाणीए खंडिदे तत्थ एगखंडेणूणसगलपक्खेवपमेत्तो। पुणो एत्तियमेत्तं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो समऊण [जहण्ण] बंधगद्धाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमएण पक्खेवुत्तरजोगेण बंधिय णारगबिदियसमयट्ठिदो च, सरिसा। एदेण कमेण दिवड्ढगुणहाणिमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु रूवूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तसयलपक्खेवा वड्ढंति। एवं ताव वड्ढावेदव्वं जाव णारगपढमगोवुच्छा वड्ढिदा त्ति।

पुणो तिस्से सयलपक्खेवगवेसणा कीरदे। तं जहा— एगसयलपक्खेवे दिवड्ढगुणहाणीए खंडिदे पढमणिसेओ आगच्छदि। एदेण पमाणेण सव्वसगलपक्खेवेसु अवणिय पुध ट्ठविय ते सगलपक्खेवे करस्सामो— दिवड्ढगुणहाणिमेत्तविगलपक्खेवेसु जदि एगो सगल-

सकल प्रक्षेपको खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण है।

अब यहां सकल प्रक्षेपके बन्धनविधान और योगस्थानाध्वानको जानकर कहना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित तृतीय समयवर्ती नारकी तथा जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे आयुको बांधकर आया हुआ द्वितीय समयवर्ती नारकी दोनों सदृश हैं। अब द्वितीय समयवर्ती नारकीके द्रव्यमें एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढ़ाना चाहिये। यहां विकल प्रक्षेप एक सकल प्रक्षेपको डेढ़ गुणहानिसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्डसे हीन सकल प्रक्षेप प्रमाण है। पुनः इतना मात्र बढ़कर स्थित तथा दूसरा एक जीव समय कम जघन्य बन्धककाल और जघन्य योगसे बांधकर पुनः एक समयमें प्रक्षेप अधिक योगसे बांधकर नारक भवके द्वितीय समयमें स्थित ये दोनों सदृश हैं। इस क्रमसे डेढ़ गुणहानि मात्र विकल प्रक्षेपोंके बढ़ जानेपर एक कम डेढ़ गुणहानि मात्र सकल प्रक्षेप बढ़ते हैं। इस प्रकार नारकीके प्रथम गोपुच्छके बढ़ने तक बढ़ाना चाहिये।

अब उसके सकल प्रक्षेपोंकी गवेषणा करते हैं। वह इस प्रकार है—एक सकल प्रक्षेपको डेढ़ गुणहानिसे खण्डित करनेपर प्रथम निषेक आता है। इस प्रमाणसे सब सकल प्रक्षेपोंमेंसे कम करके पृथक् स्थापित कर उनके सकल प्रक्षेप करते हैं— डेढ़ गुणहानि मात्र विकल प्रक्षेपोंमें यदि एक सकल प्रक्षेप पाया जाता है तो

१ अ-आप्रत्योः 'समए' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'बिदियसमयणेरइओ' ताप्रतौ 'बिदिय [समय] णेरइओ' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'पक्खेवविहाणं' इति पाठः।

पक्खेवो लब्भदि तो सडीए असंखेज्जदिभागमेत्तविगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेत्तसगलपक्खेवा पढमगोवुच्छाए [लब्भंति] ।

संपहि जोगट्ठाणद्धाणं वुच्चदे। तं जहा— रूवूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तसयलपक्खेवाणं जदि दिवड्ढगुणहाणिमेत्तजोगट्ठाणद्धाणं लब्भदि तो दिवड्ढगुणहाणीए सगलपक्खेवभागहारे खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तेसु सगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धं जोगट्ठाणद्धाणं होदि। पुणो एत्तियमेत्तजोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणेण एगसमयं बंधिदूणागदबिदियसमयणेरइओ, पुणो जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि णिरयाउअं बंधिदूणा-गदपढमसमयणेरइओ च, सरिसा ।

संपहि णारगपढमसमए ट्ठाइदूण तिरिक्खचरिमगोवुच्छा पक्खेवुत्तरकमेण वड्ढावे-दव्वा। बिदियसमयणेरइयस्स पुणो परमाणुत्तरादिकमेण तिरिक्खचरिमगोवुच्छा वड्ढा-विज्जदि। तं जहा— पढमगोवुच्छं वड्ढिदूण ट्ठिदणारगबिदियसमयदव्वस्सुवरि परमा-णुत्तरादिकमेण एगविगलपक्खेवं वड्ढिदूण ट्ठिदणेरइओ च, अण्णेगो पक्खेवुत्तरजोगेण बंधि-

श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंमें कितने सकल प्रक्षेप पाये जावेंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र सकल प्रक्षेप प्रथम गोपुच्छमें पाये जाते हैं ।

अब योगस्थानाध्वान कहा जाता है। वह इस प्रकार है— एक कम डेढ़ गुणहानि मात्र सकल प्रक्षेपोंका यदि डेढ़ गुणहानि मात्र योगस्थानाध्वान प्राप्त होता है तो डेढ़ गुणहानि द्वारा सकल प्रक्षेपके भागहारको खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड मात्र सकल प्रक्षेपोंमें कितना योगस्थानाध्वान प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतना योगस्थानाध्वान होता है। पुन इतने मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे एक समयमें आयुको बांधकर आया हुआ द्वितीय समयवर्ती नारकी, तथा जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे नारक आयुको बांधकर आया हुआ प्रथम समयवर्ती नारकी, ये दोनों सदृश हैं ।

अब नारक भवके प्रथम समयमें स्थित होकर तिर्यंच सम्बन्धी अन्तिम गोपुच्छाको प्रक्षेप अधिक क्रमसे बढ़ाना चाहिये। परन्तु द्वितीय समयवर्ती नारकीकी तिर्यंच सम्बन्धी अन्तिम गोपुच्छा एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे बढ़ाई जाती है। वह इस प्रकारसे— प्रथम गोपुच्छ बढ़कर स्थित नारकीके द्वितीय समय सम्बन्धी द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढ़कर स्थित नारकी, तथा दूसरा एक प्रक्षेप अधिक योगसे आयुको बांधकर आया

ऊणाउओ च, सरिसा। एदेण कमेण दिवड्ढगुणहाणिमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु रूवूण दिवड्ढगुणहाणिमेत्ता सयलपक्खेवा पविसंति। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदबिदियसमयणेरइओ च, अण्णेगो पढमसमए रूवूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तजोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूणागद पढमसमयणेरइओ च, सरिसा। एवं बिदियसमयणेरइयस्स परमाणुत्तरादिकमेण णिरंतर ट्ठाणाणि हवंति। पढमसमयणेरइयस्स पुणो पक्खेवोत्तरकमेण सांतरट्ठाणाणि हवंति। एदेण कमेण वड्ढावेदव्वं जाव तिरिक्खचरिमगोवुच्छपमाणं वड्ढिदे त्ति। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो जीवो जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि णिरयाउअं बंधिय जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि बद्धतिरिक्खचरिमसमयगोवुच्छं धरिय तिरिक्खचरिमसमए ट्ठिदो च, सरिसा।

संपहि तिरिक्खचरिमगोवुच्छाए सयलपक्खेवाणं जोगट्ठाणद्धाणस्स च गवेसणा कीरदे— तत्थ ताव सयलपक्खेवाणुगमं कस्सामो। तं जहा— तप्पाओग्गघोलमाणजहण्ण जोगपक्खेवभागहारं तिरिक्खाउअजहण्णबंधगद्धाए गुणिद विरलेदूण जहण्णबंधगद्धामेत्त समयपबद्धेसु समखंडं करिय दिण्णेसु एक्केक्कस्स रूवस्स एगेगो सयलपक्खेवो पावदि।

हुआ नारकी दोनों सदृश हैं। इस क्रमसे डेढ़ गुणहानि मात्र विकल प्रक्षेपोंके बढ़नेपर एक अंकसे कम डेढ़ गुणहानि मात्र सकल प्रक्षेप प्रविष्ट होते हैं। इस प्रकार बढ़कर स्थित द्वितीय समयवर्ती नारकी तथा एक दूसरा एक समयमें रूप कम डेढ़ गुणहानि मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे आयुको बांधकर आया हुआ प्रथम समयवर्ती नारकी दोनों सदृश हैं। इस प्रकार द्वितीय समयवर्ती नारकीके एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे निरन्तर स्थान होते हैं। किन्तु प्रथम समयवर्ती नारकीके प्रक्षेप अधिक क्रमसे सान्तर स्थान होते हैं। इस क्रमसे तिर्यंचकी अन्तिम गोपुच्छ प्रमाण वृद्धि हो जाने तक बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ तथा दूसरा एक जीव जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे नारकायुको बांधकर जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे बांधी हुई तिर्यंचकी अन्तिम समय सम्बन्धी गोपुच्छाको धारण कर तिर्यंच भवके अन्तिम समयमें स्थित हुआ दोनों सदृश हैं।

अब तिर्यंचकी अन्तिम गोपुच्छा सम्बन्धी सकल प्रक्षेपों और योगस्थानाध्वानकी गवेषणा करते हैं— उसमें पहिले सकल-प्रक्षेपानुगमको करते हैं। वह इस प्रकार है— तत्प्रायोग्य घोलमान जीवके जघन्य योग सम्बन्धी प्रक्षेपके भागहारको तिर्यंच आयुके जघन्य बन्धककालसे गुणित करके विरलित कर जघन्य बन्धककाल प्रमाण समयप्रबद्धोंको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक सकल प्रक्षेप

---

१ अ-आप्रत्योः 'बंध' इति पाठः।

पुणो पुव्वकोडिं विरलिय एगसगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स मज्झिमगोवुच्छपमाणं पावदि । पुणो मज्झिमगोवुच्छं पेक्खिदूण तिरिक्खचरिमगोवुच्छा रूवूणपुव्वकोडिअद्धमेत्तगोवुच्छविसेसेहि हीणा होदि । पुणो एत्तियमेत्तविसेसाणं हाणिमिच्छिय रूवूणपुव्वकोडिअद्धेणूणणिसेयभागहारं विरलेऊण मज्झिमगोवुच्छं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स एगेगविसेसो पावदि । संपहि रूवूणपुव्वकोडिअद्धमेत्तगोवुच्छविसेसे इच्छामो त्ति एत्तियमेत्तेहि चेव ओवट्टिय एसविरलणं रूवूणं कादूण जदि एत्तियमेत्तेसु एगरूवपक्खेवो लब्भदि तो पुव्वकोडिमेत्तेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागो । पुणो एदं पुव्वकोडीए पक्खिविय विरलिय एगसगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि चरिमगोवुच्छपमाणं पावदि । एदमेत्थ विगलपक्खेवो होदि । एदेण विगलपक्खेवपमाणेण सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तसयलपक्खेवेसु अवणेदूण पुध ट्ठविय पुणो ते सयलपक्खेवे कस्सामो । तं जहा — एसभागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो सगलपक्खेवभागहारमेत्त-

प्राप्त होता है । फिर पूर्वकोटिको विरलित कर एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति मध्यम गोपुच्छका प्रमाण प्राप्त होता है । पुन मध्यम गोपुच्छकी अपेक्षा तिर्यंचकी अन्तिम गोपुच्छा रूप कम पूर्वकोटिके अर्ध भाग प्रमाण गोपुच्छविशेषोंसे हीन है । फिर इतने मात्र विशेषोंकी हानिकी इच्छा कर एक अंक कम पूर्वकोटिके अर्ध भागसे हीन निषेकभागहारका विरलन करके मध्यम गोपुच्छको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक विशेष प्राप्त होता है । अब चूंकि एक कम पूर्वकोटिके अर्ध भाग मात्र गोपुच्छाविशेष इच्छित हैं, अत इतने मात्रोंसे ही अपवर्तित कर इस विरलनको एक अंकसे कम करके यदि इतने मात्र गोपुच्छविशेषोंमें एक अंकका प्रक्षेप पाया जाता है तो पूर्वकोटि मात्र उनमें कितने अंक प्रक्षेप पाये जावेंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अंकका असंख्यातवां भाग लब्ध होता है । फिर इसको पूर्वकोटिमें मिलाकर विरलित करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति अन्तिम गोपुच्छका प्रमाण प्राप्त होता है । यह यहा विकल प्रक्षेप होता है । इस विकल प्रक्षेपके प्रमाणसे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंमेंसे कम करके पृथक् स्थापित कर फिर उनके सकल प्रक्षेप करते हैं । वह इस प्रकारसे—इस भागहार मात्र विकल प्रक्षेपोंमें यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो सकल प्रक्षेप भागहार मात्र विकल प्रक्षेपोंमें कितने

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ का-ताप्रतिषु 'लद्ध' इति पाठ । २ अ-आ काप्रतिषु 'पुध' इति पाठः ।

विगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेत्ता सगल पक्खेवा तिरिक्खचरिमगोवुच्छाए होंति ।

संपहि जोगट्ठाणद्धाणगवेसणा कीरदे । तं जहा— रूवूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तसयल-पक्खेवाणं जदि दिवड्ढगुणहाणिमेत्तजोगट्ठाणद्धाणं लब्भदि तो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्त सयलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए जोगट्ठाणद्धाणं लब्भदि । पुणो एत्तियमेत्तजोगट्ठाणद्धाणस्स पुव्विल्लतप्पाओग्गजोगट्ठाणद्धाणादो असंखेज्ज-गुणस्स चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूणागदबिदियसमयणेरइओ च, पुणो तिरिक्खचरिमणिसेयम्मि जत्तिया सयलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्तजोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूणागदपढमसमय णेरइओ च, तिरिक्ख-णिरयाउअं च जहण्णजोग जहण्णबंधगद्धाहि बंधिदूणागदचरिमसमय तिरिक्खो च, सरिसा । पुणो चरिमसमयतिरिक्खदव्वं घेत्तूण परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वं जाव एगविगलपक्खेवो वड्ढिदो त्ति । एत्थ विगलपक्खेवभागहारो सादिरेयपुव्वकोडि त्ति घेत्तव्वो । पुणो एत्तिय वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो पक्खेवुत्तरजोगेण तिरिक्खाउअमेग समएण बंधिय तिरिक्खचरिमसमए ट्ठिदो च, सरिसा । एदेण कमेण सादिरेयपुव्वकोडि

सकल प्रक्षेप प्राप्त होंगे इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र सकल प्रक्षेप तिर्यंचकी अन्तिम गोपुच्छामें होते हैं ।

अब योगस्थानाध्वानकी गवेषणा करते हैं । वह इस प्रकार है— एक कम डेढ़ गुणहानि मात्र सकल प्रक्षेपोंके यदि डेढ़ गुणहानि मात्र योगस्थानाध्वान प्राप्त होता है तो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंमें कितना योगस्थानाध्वान प्राप्त होगा इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर योगस्थानाध्वान प्राप्त होता है । फिर पूर्वोक्त तत्प्रायोग्य योगस्थानाध्वानसे असंख्यातगुणे इतने मात्र योगस्थानाध्वानके अन्तिम योगस्थानसे आयुको बांधकर आया हुआ द्वितीय समयवर्ती नारकी पुनः तिर्यंचके अन्तिम निषेकमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र योगस्थानों सम्बन्धी अन्तिम योगस्थानसे आयुको बांधकर आया हुआ प्रथम समयवर्ती नारकी तथा तिर्यंच या नारक आयुको जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे बांधकर आया हुआ चरम समयवर्ती तिर्यंच ये तीनों सदृश हैं । अब चरम समयवर्ती तिर्यंचके द्रव्यको ग्रहण करके एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेपके बढ़ने तक बढ़ाना चाहिये । यहां विकल प्रक्षेपका भागहार साधिक एक पूर्वकोटि ग्रहण करना चाहिये । अब इतना बढ़कर स्थित हुआ तथा दूसरा एक जीव प्रक्षेप अधिक योगसे तिर्यंच आयुको एक समयसे बांधकर तिर्यंच भवके अन्तिम समयमें स्थित हुआ दोनों सदृश हैं । इस क्रमसे साधिक पूर्वकोटि मात्र विकल प्रक्षेपोंके बढ़नेपर

पुणो पुव्वकोडिं विरलिय एगसगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स मज्झिमगोवुच्छपमाणं पावदि। पुणो मज्झिमगोवुच्छं पेक्खिदूण तिरिक्खचरिमगोवुच्छा रूवूणपुव्वकोडिअद्धमेत्तगोवुच्छविसेसेहि हीणा होदि। पुणो एत्तियमेत्तविसेसाणं हाणि-मिच्छिय रूवूणपुव्वकोडिअद्धेणूणणिसेयभागहारं विरलेऊण मज्झिमगोवुच्छं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स एगेगविसेसो पावदि। संपहि रूवूणपुव्वकोडिअद्धमेत्तगोवुच्छ-विसेसे इच्छामो त्ति एत्तियमेत्तेहि चेव ओवट्टिय एसंविरलणं रूवूणं कादूण जदि एत्तिय-मेत्तेसु एगरूवपक्खेवो लब्भदि तो पुव्वकोडिमेत्तेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदि-च्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागो। पुणो एदं पुव्वकोडीए पक्खिविय विरलिय एगसगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि चरिमगोवुच्छपमाणं पावदि। एदमेत्थ विगलपक्खेवो होदि। एदेण विगलपक्खेवपमाणेण सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्त-सयलपक्खेवेसु अवणेदूण पुध ट्ठविय पुणो ते सयलपक्खेवे कस्सामो। तं जहा— एस-भागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो सगलपक्खेवभागहारमेत्त-

प्राप्त होता है। फिर पूर्वकोटिको विरलित कर एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति मध्यम गोपुच्छका प्रमाण प्राप्त होता है। पुन मध्यम गोपुच्छकी अपेक्षा तिर्यंचकी अन्तिम गोपुच्छा रूप कम पूर्वकोटिके अर्ध भाग प्रमाण गोपुच्छविशेषोंसे हीन है। फिर इतने मात्र विशेषोंकी हानिकी इच्छा कर एक अंक कम पूर्वकोटिके अर्ध भागसे हीन निषेकभागहारका विरलन करके मध्यम गोपुच्छको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक विशेष प्राप्त होता है। अब चूंकि एक कम पूर्वकोटिके अर्ध भाग मात्र गोपुच्छविशेष इच्छित है, अत इतने मात्रोंसे ही अपवर्तित कर इस विरलनको एक अंकसे कम करके यदि इतने मात्र गोपुच्छ-विशेषोंमें एक अंकका प्रक्षेप पाया जाता है तो पूर्वकोटि मात्र उनमें कितने अंक प्रक्षेप पाये जावेंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अंकका असंख्यातवां भाग लब्ध होता है। फिर इसको पूर्वकोटिमें मिलाकर विरलित करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति अन्तिम गोपुच्छका प्रमाण प्राप्त होता है। यह यहा विकल प्रक्षेप होता है। इस विकल प्रक्षेपके प्रमाणसे श्रेणि-के असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंमेंसे कम करके पृथक् स्थापित कर फिर उनके सकल प्रक्षेप करते हैं। वह इस प्रकारसे—इस भागहार मात्र विकल प्रक्षेपोंमें यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो सकल प्रक्षेप भागहार मात्र विकल प्रक्षेपोंमें कितने

१ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ का-ताप्रतिषु 'लद्ध' इति पाठ। २ अ-आ काप्रतिषु 'पुध' इति पाठ।

पिगलपक्खेवेसु किं लमामा चि पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेत्ता सगल पक्खेवा तिरिक्खचरिमगोपुच्छाए होंति ।

संपहि जोगट्ठाणद्धाणगवेसणा कीरदे । त जहा— रूवूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तसयल पक्खेवाण जदि दिवड्ढगुणहाणिमेत्तजोगट्ठाणद्धाण लब्भदि तो सेढीए असंखेज्जदिभागमेत्त सयलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए जोगट्ठाणद्धाणं लब्भदि । पुणो एत्तियमेत्तजोगट्ठाणद्धाणस्स पुव्विल्लतप्पाओग्गजोगट्ठाणद्धाणादो असंखेज्ज-गुणस्स चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूणागदविदियसमयणेरइओ च, पुणो तिरिक्खचरिमणिसेयम्मि जत्तिया सयलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्तजोगट्ठाणाण चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूणागदपढमसमय णेरइओ च, तिरिक्ख-णिरयाउअं च जहण्णजोग जहण्णबंधगद्धाहि बंधिदूणागदचरिमसमय तिरिक्खो च, सरिसा । पुणो चरिमसमयतिरिक्खदव्वे पदूण परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्व जाव एगविगलपक्खेवो वड्ढिदो त्ति । एत्थ विगलपक्खेवभागहारो सादिरेयपुव्वकोडि त्ति घेत्तव्वो । पुणो एत्तिय वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो पक्खेवुत्तरजोगेण तिरिक्खाउअमेग समएण बंधिय तिरिक्खचरिमसमए ट्ठिदो च, सरिसा । एदेण कमेण सादिरेयपुव्वकोडि

सकल प्रक्षेप प्राप्त होंगे इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र सकल प्रक्षेप तिर्यचकी अन्तिम गोपुच्छामें होते हैं ।

अब योगस्थानाध्वानकी गवेषणा करते हैं । वह इस प्रकार है— एक कम डेढ़ गुणहानि मात्र सकल प्रक्षेपोंका यदि डेढ़ गुणहानि मात्र योगस्थानाध्वान प्राप्त होता है तो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंमें कितना योगस्थानाध्वान प्राप्त होगा इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर योगस्थानाध्वान प्राप्त होता है । फिर पूर्वोक्त तत्प्रायोग्य योगस्थानाध्वानसे असंख्यातगुणे इतने मात्र योगस्थानाध्वानके अन्तिम योगस्थानसे आयुको बांधकर आया हुआ द्वितीय समयवर्ती नारकी तथा तिर्यचके अन्तिम निषेकमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र योगस्थानों सम्बन्धी अन्तिम योगस्थानसे आयुको बांधकर आया हुआ प्रथम समयवर्ती नारकी तथा तिर्यच या नारक आयुको जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे बांधकर आया हुआ चरम समयवर्ती तिर्यच ये तीनों सदृश हैं । अब चरम समयवर्ती तिर्यचके द्रव्यको ग्रहण करके एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेपके बढ़ने तक बढ़ाना चाहिये । यहां विकल प्रक्षेपका भागहार साधिक एक पूर्वकोटि ग्रहण करना चाहिये । अब इतना बढ़कर स्थित हुआ तथा दूसरा एक जीव प्रक्षेप अधिक योगसे तिर्यच आयुको एक समयसे बांधकर तिर्यच भवके अन्तिम समयमें स्थित हुआ दोनों सदृश हैं । इस क्रमसे साधिक पूर्वकोटि मात्र विकल प्रक्षेपोंके बढ़नेपर

मेत्तविगलपक्खेवेसु वड्डिदेसु एगो सगलपक्खेवो वड्डदि । पुणो एदेण सरूवेण वड्डावेदव्वं जाव पुव्वकोडिदुचरिमणिसेयम्मि जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता वड्डिदा त्ति ।

संपहि तिस्से दुचरिमगोवुच्छाए सगलपक्खेवगवेसणा कीरदे— एत्थ अधियार-गोवुच्छभागहारो सादिरेयपुव्वकोडिमेत्तो होदि । किंतु चरिमगोवुच्छभागहारादो किंचूणो। कुदो ? चरिमणिसेगादो दुचरिमणिसेगस्स एगविसेसमेत्तेण अहियत्तुवलंभादो । एद विगल-पक्खेवं सगलपक्खेवेसु सोहिय सगलपक्खेवे करस्सामो— सादिरेयपुव्वकोडिमेत्तविगल-पक्खेवेसु जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तविगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेत्ता सगलपक्खेवा दुचरिम-णिसेयम्मि होंति ।

एण्हि जोगट्ठाणद्धाणं[2] वुच्चदे । तं जहा— एगसगलपक्खेवस्स जदि सादिरेयपुव्व-कोडिमेत्तजोगट्ठाणद्धाण लब्भदि तो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तसगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए जोगट्ठाणद्धाणं होदि । होंतं पि चरिमणिसेय-

---

एक सकल प्रक्षेप बढ़ता है । फिर इस क्रमसे पूर्वकोटिके द्विचरम निषेकमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र बढ़ने तक बढ़ाना चाहिये ।

अब उस द्विचरम गोपुच्छके सकल प्रक्षेपोंकी गवेषणा करते हैं—यहां अधिकार गोपुच्छका भागहार साधिक पूर्वकोटि प्रमाण होता है । किन्तु वह अन्तिम गोपुच्छके भागहारसे कुछ कम है, क्योंकि, चरम निषेकसे द्विचरम निषेक एक विशेष मात्रसे अधिक पाया जाता है । इस विकल प्रक्षेपको सकल प्रक्षेपोंमेंसे कम कर उसके सकल प्रक्षेप करते हैं— साधिक पूर्वकोटि मात्र विकल प्रक्षेपोंमें यदि एक सकल प्रक्षेप पाया जाता है तो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंमें कितने सकल प्रक्षेप पाये जावेंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो जावेंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र सकल प्रक्षेप द्विचरम निषेकमें होते हैं ।

अब योगस्थानका कथन करते हैं । यथा— एक सकल प्रक्षेपका यदि साधिक पूर्वकोटि मात्र योगस्थानाध्वान प्राप्त होता है तो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंमें कितना योगस्थानाध्वान प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर योगस्थानाध्वान होता है । इतना होकर भी वह चरम

---

१ आप्रतौ 'चरिम' इति पाठः । २ प्रतिषु 'जोगट्ठाण' इति पाठ ।

जोगट्ठाणद्धाणादो असखेज्जगुण होदि। कारण चिंतिय वत्तव्व। दुचरिमणिसेगजोग ट्ठाणद्धाणादो तिचरिमणिसेगजोगट्ठाणद्धाण विसेसहीण होदि। पुणो एव हेट्ठिम-हेट्ठिम गोवुच्छाण जोगट्ठाणद्धाण विसेसहीण चेव होदि। पुणो एत्तियमेत्तजोगट्ठाणेण बंधिदूणागद चरिमसमयतिरिक्खदव्व च पुणो जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्ख-णिरयाउअ बंधि दूणागददुचरिमसमयतिरिक्खदव्वेण सरिसं। पुणो एत्थ परमाणुत्तरादिकमेण एयविगल-पक्खेवो वड्ढावेदव्वो। पुणो तस्स भागहारो चरिमगोवुच्छभागहारादो थोव्ह किंचूण होदि। पुणो तस्स भागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु एगो सगलपक्खेवो वड्ढदि। जोगट्ठाणद्धाण पि भागहारमेत्त चेव होदि। एव ताव वड्ढावदव्व जाव पुव्वकोडितिचरिमगोवुच्छाए जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता वड्ढिदा त्ति।

पुणो तिस्से चरिमगोवुच्छाए सगलपक्खेवाण गवेसण कीरदे। त जहा— चरिम गोवुच्छभागहार सादिरेयपुव्वकोडिं विरलेदूण एगसगलपक्खेव समखंड कादूण दिण्णे चरिम गोवुच्छपमाण पावदि। पुणो रूऊणपुव्वकोडीए उवरिमणिसेगभागहारस्स अद्धेण रूवाहियेण

निषेक सम्बन्धी योगस्थानाध्वानसे असंख्यातगुणा होता है। इसका कारण जानकर कहना चाहिये। द्विचरम निषेक सम्बन्धी योगस्थानाध्वानसे त्रिचरम निषेक सम्बन्धी योगस्थानाध्वान विशेष हीन है। इस प्रकार नीचे नीचेकी गोपुच्छाओंका योगस्थाना ध्वान विशेष हीन ही होता है। अब इतने मात्र योगस्थानाध्वानसे आयुको बांधकर आये हुए चरम समयवर्ती तिर्यंचका द्रव्य तथा जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यंच व नारक आयुको बांधकर आये हुए द्विचरम समय सम्बन्धी तिर्यंचका द्रव्य समान होता है। फिर यहां एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढ़ाना चाहिये। अब उसका भागहार चरम गोपुच्छके भागहारसे कुछ कम आधा होता है। पुनः उसके भागहार मात्र विकल प्रक्षेपोंकी वृद्धि हो जानेपर एक सकल प्रक्षेप बढ़ता है। योगस्थानाध्वान भी भागहार प्रमाण ही होता है। इस प्रकार तब तक बढ़ाना चाहिये जब तक कि पूर्वकोटिकी त्रिचरम गोपुच्छामें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र नहीं बढ़ जाते।

अब उस चरम गोपुच्छ सम्बन्धी सकल प्रक्षेपोंकी गवेषणा करते हैं। वह इस प्रकार है— चरम गोपुच्छके भागहारभूत साधिक पूर्वकोटिका विरलन करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर चरम गोपुच्छका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः एक कम पूर्वकोटिसे हीन निषेकभागहारके अर्ध भागमें एक अंक मिलानेपर जो प्राप्त हो उससे

---

१ अ-आ-काप्रतिषु जोगट्ठाणं इत्यता जोगट्ठा [ण] णं इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु क्खा इति पाठः।

मदिरेयपुव्वकोडीए ओवट्टिदाए लद्ध तम्हि चेव सोहिदे सुद्धसेसा तदित्थविगलपक्खेव-भागहारो होदि। एदेण सगलपक्खेवं खंडेदूण तत्थ एगखंडं सगलपक्खेवभागहारमेत्त-सगलपक्खेवेसु सोहिदूण पुध ट्ठविय पुणो एदे सगलपक्खेवे कस्सामो। तं जहा— एसभागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु जदि एगो सगलपक्खेवो लब्भदि तो सेडीए असंखेज्जदि-भागमेत्तविगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए पयदगोवुच्छाए सयलपक्खेवा होंति।

एण्हि जोगट्ठाणद्धाण वुच्चदे। त जहा— एगसकलपक्खेवेसु जदि चरिमणिसेय-भागहारस्स किंचूणद्धमेत्तजोगट्ठाणद्धाणं लब्भदि तो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तसगलपक्खेवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए जोगट्ठाणद्धाणं होदि। एत्तियमेत्तजोग-ट्ठाणाण चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूणागददुचरिमसमयतिरिक्खदव्व, पुणो जहण्णजोग-जहण्ण-बंधगद्धाहि णिरय-तिरिक्खाउआणि बंधिदूणागदतिरिक्खतिचरिमसमयट्ठिदतिरिक्खदव्वं च, सरिसाणि। एदेण कमेण विगलपक्खेवभागहारं अप्पिदगोवुच्छभागहार जोगट्ठाणद्धाणं च जाणि-दूण ओदारेदव्वं जाव अट्ठमीए आगरिसाए णिरयाउअं बंधिय तिस्से चरिमसमए वट्टमाणो त्ति।

साधिक पूर्वकोटिको अपवर्तित करनेपर लब्धको उसीमेंसे कम कर देना चाहिये। ऐसा करनेसे जो शेष रहे वह वहांके विकल प्रक्षेपका भागहार होता है। इससे सकल प्रक्षेपको खण्डित कर उनमेंसे एक खण्डको सकल प्रक्षेपके भागहार प्रमाण सकल प्रक्षेपोंमेंसे घटा करके पृथक् स्थापित कर फिर इनके सकल प्रक्षेप करते हैं। यथा— इस भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंमें यदि एक सकल प्रक्षेप प्राप्त होता है तो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र विकल प्रक्षेपोंमें कितने सकल प्रक्षेप प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर प्रकृत गोपुच्छके सकल प्रक्षेप होते हैं।

अब योगस्थानाध्वानका कथन करते हैं। यथा— एक सकल प्रक्षेपोंमें यदि चरम-निषेक भागहारके अर्ध भागसे कुछ कम योगस्थानाध्वान पाया जाता है तो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र सकल प्रक्षेपोंमें कितना योगस्थानाध्वान पाया जायगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर योगस्थानाध्वान प्राप्त होता है। इतने मात्र योगस्थानों सम्बन्धी चरम योगस्थानसे आयुको बांधकर आये हुए द्विचरम समयवर्ती तिर्यंचका द्रव्य, तथा जघन्य योग और जघन्य आयुबन्धककालसे नारक या तिर्यंच आयुको बांधकर आये हुए तिर्यंच भवके त्रिचरम समयमें स्थित तिर्यंचका द्रव्य, दोनों सदृश हैं। इस प्रकार विकल प्रक्षेप भागहार, विवक्षित गोपुच्छके भागहार और योगस्थानाध्वानको जानकर आठवें अपकर्षमें नारकायुको बांधकर उसके चरम समयमें वर्तमान होने तक उतारना चाहिये।

सपधि एदो हेट्ठा पुव्वविहाणेण ओदारिज्जमाणो णिरयाउअं हादूण गच्छदि त्ति कट्टु पुणो एत्थेव ठविदूण परमाणुत्तरादिकमेण एगविगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो। एत्थ विगलपक्खेवभागहारो संखेज्जरूवमेत्तो होदि। त जहा— सादिरेयपुव्वकोडिं विरलेदूण एगसगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे एगेगचरिमणिसेगो पावदि। पुणो ओदिण्णद्धाण मेत्तगोवुच्छाओ इच्छामो त्ति ओदिण्णद्धाणेणोवट्टिदे संखेज्जरूवाणि लब्भंति। पुणो एदाणि विरलेदूण एगसगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे ओदिण्णद्धाणमेत्तचरिमगोवुच्छाओ रूवं पडि पावेंति। पुणो एत्थ ऊणगोवुच्छविसेसाणमागमणमिच्छामो त्ति रूवूणपुव्वकोडीए ऊण णिसेगभागहारमोदिण्णद्धाणेण गुणिय पुणो रूवूणोदिण्णद्धाणसंकलणाए ओवट्टिय रूवाहियं कादूण तेण विरलिदसंखेज्जरूवेसु अवहिरिदेसु जं लद्धं तम्मि तत्थेव सोहिदे सुद्धसेसो विगलपक्खेवभागहारो होदि। एदेण सयलपक्खेवे भागे हिदे एगो विगलपक्खेवो आगच्छदि। पुणो एत्तियमेत्त परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढिदूण ट्ठिदो च, पक्खेवुत्तरजोगेण बंधिदूणागददव्वं च, सरिसं होदि। पुणो एदेण कमेण एसमागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु एगो सयल-

अब यहांसे नीचे पूर्वोक्त विधिसे उतारता हुआ चूंकि नारक आयुको न्यून करता जाता है अत एव फिरसे यहां ही स्थापित कर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढ़ाना चाहिये। यहां विकल प्रक्षेपका भागहार संख्यात अंक प्रमाण होता है। यथा— साधिक पूर्वकोटिका विरलन करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक एक चरम निषेक प्राप्त होता है। अब चूंकि जितना अध्वान पीछे गये हैं तत्प्रमाण गोपुच्छायें अभीष्ट हैं अत जितना अध्वान पीछे गये हैं उससे अपवर्तित करनेपर संख्यात अंक प्राप्त होते हैं। फिर इनका विरलन करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर एक अंकके प्रति जितना अध्वान पीछे गये हैं तत्प्रमाण चरम गोपुच्छ प्राप्त होते हैं। अब यहां चूंकि कम किये गये गोपुच्छविशेषोंका लाना अभीष्ट है अतः एक कम पूर्वकोटिसे हीन निषेकभागहारको जितना अध्वान पीछे गये हैं उससे गुणित करे। फिर उसको एक कम जितना अध्वान पीछे गये हैं उसके संकलनसे अपवर्तित करके एक रूपसे अधिक कर उसका विरलित संख्यात रूपोंमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसको उसीमेंसे कम करनेपर शेष विकल-प्रक्षेप भागहार होता है। इसका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर एक विकल प्रक्षेप आता है। पुनः एक परमाणु अधिक आदि के क्रमसे इतना मात्र बढ़कर स्थित हुआ द्रव्य तथा प्रक्षेप अधिक योगसे आयुको बांधकर आये हुए जीवका द्रव्य दोनों सदृश हैं। फिर इस क्रमसे उक्त भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंकी वृद्धि होनेपर एक सकल प्रक्षेप बढ़ता है। इस प्रकार आठवें

१ अ-आप्रत्योः 'वट्टं' इति पाठः।

पक्खेवो वड्ढदि। एवं वड्ढावेदव्वं जाव अट्ठागरिसाए दुचरिमसमयप्पहुडि सत्तागरिसाए चरिमसमओ त्ति एदासिं तिरिक्खगोवुच्छाणं जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता वड्ढिदा त्ति। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्खाउअं बंधिय पुणो अट्ठहि आगरिसाहि णिरयाउअं बंधमाणो तत्थ छसु आगरिसासु जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि चेव बंधिय पुणो सत्तमीए आगरिसाए समऊणजहण्णबंधगद्धाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमएण अट्ठमागरिसजहण्णबंधगद्धामेत्तसमयपबद्धाणं जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ताणि जोगट्ठाणाणि उवरि चडिदूण बंधिय सत्तमाए आगरिसाए चरिमसमए ट्ठिदो च, सरिसा। अधवा अट्ठमागरिसदव्वमेव वा वड्ढावेदव्व— अट्ठमागरिसजहण्णगद्धाहियसत्तमागरिसजहण्णबंधगद्धाए जहण्णजोगेण च बंधाविय दोण्हं सरिसभावो वत्तव्वो। अट्ठमागरिसि जहण्णबंधगद्धादो सत्तमागरिसाए जहण्णुक्कस्सबंधगद्धाणं विसेसो बहुओ त्ति कध णव्वदे? गुरूवदेसादो। पुणो तं मोत्तूण पुव्वविहाणेण वड्ढावेदव्वं सत्तमाए आगरिसाए दुचरिमगोवुच्छप्पहुडि जाव छट्ठागरिसाए चरिमसमयगोवुच्छा त्ति। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो अट्ठहि आगरिसाहि आउअं बंधमाणो तत्थ पंचसु आगरिसासु जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि

अपकर्षके द्विचरम समयसे लेकर सातवें अपकर्षके चरम समय तक इन तिर्यंच गोपुच्छोंके जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र बढ़ जाने तक बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यंच आयुको बांधकर, फिर आठ अपकर्षो द्वारा नारक आयुको बांधता हुआ उनमेंसे छह अपकर्षोंमें जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे ही आयुको बांधकर, फिर सातवें अपकर्षमें एक समय कम जघन्य बन्धककाल और जघन्य योगसे बांधकर, फिर एक समयमें आठवें अपकर्षके जघन्य बन्धककाल मात्र समयप्रबद्धोंके जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र योगस्थान ऊपर चढ़कर आयुको बांध सातवें अपकर्षके अन्तिम समयमें स्थित हुआ; ये दोनों सदृश हैं। अथवा, आठवें अपकर्षके द्रव्यको इस प्रकार बढ़ाना चाहिये—आठवें अपकर्षके जघन्य बन्धककालसे अधिक सातवें अपकर्षके जघन्य बन्धककालसे और जघन्य योगसे आयुको बंधाकर दोनोंके सादृश्यको कहना चाहिये।

शंका—आठवें अपकर्षके जघन्य बन्धककालसे सातवें अपकर्षके जघन्य व उत्कृष्ट बन्धककालोंका विशेष बहुत है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—यह गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

फिर उसको छोड़कर पूर्वोक्त विधिसे सातवें अपकर्षके द्विचरम गोपुच्छसे लेकर छठे अपकर्षके अन्तिम गोपुच्छ तक बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ; तथा दूसरा एक जीव आठ अपकर्षों द्वारा आयुको बांधता हुआ उनमेंसे पांच अपकर्षोंमें जघन्य

१ ताम्रतौ 'त्ति। एदासिं' इति पाठः। २ प्रतिषु 'बंधमाणे' इति पाठः।

बंधिय पुणो छब्भागरिमाए जहण्णबंधगद्धाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमय सत्तमट्ठ भागरिसजहण्णबंधगद्धामेत्तसमयपबद्धाण जत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ताणि जोगट्ठाणाणि उवरि चडिदूण तत्थ चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूणागदो त्ति, सरिसा। एत्थ विगलपक्खेवभागहारो जाणिदूण वत्तव्वो। एदमत्थपदमवहारिय ओदारेदव्वं जाव पढमागरिसाए चरिमसमओ त्ति। पुणो तत्थ ट्ठाइदूण परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वं जाव एगविगलपक्खेवो वड्ढिदो त्ति।

पुणो एत्थ विगलपक्खेवभागहारो वुच्चदे। तं जहा— सादिरेयपुव्वकोडीए सगलपक्खेवे भागे हिदे तिरिक्खचरिमगोवुच्छा लब्भदि। पुणो अंतोमुहुत्तूणपुव्वकोडितिभागेण चरिमगोवुच्छभागहारभूदसादिरेयपुव्वकोडीए भागे हिदाए सादिरेयतिण्णिरूवाणि आगच्छंति। ताणि विरलेदूण सगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि समाणगोवुच्छाओ पावेंति। पुणो चरिमगोवुच्छाए णिसेगभागहारमोदिण्णद्धाणगुणिदं रूवूणोदिण्णद्धाणसंकलणाए ओवट्टिदं रूवाहियं कादूण विरलिदतिण्णिरूवाणि खंडेदूण तत्थ एगखंडे सादिरेयतिसु रूवेसु

योग और जघन्य बन्धककालसे बांधकर फिर छठे अपकर्षके एक समय कम बन्धककालमें जघन्य योगसे बांधकर, फिर एक समयमें सातवें व आठवें अपकर्षके जघन्य बन्धककाल मात्र समयप्रबद्धोंके जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र योगस्थान ऊपर चढ़कर उनमें अन्तिम योगस्थानसे आयुको बांधकर आया हुआ, ये दोनों सदृश हैं। यहां विकल प्रक्षेपके भागहारको जानकर कहना चाहिये। इस अर्थपदका निश्चय करके प्रथम अपकर्षके अन्तिम समय तक उतारना चाहिये। फिर वहां स्थित होकर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेपके बढ़ने तक बढ़ाना चाहिये।

अब यहां विकल प्रक्षेपका भागहार कहते हैं। वह इस प्रकार है— साधिक पूर्वकोटिका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर तिर्यंचकी चरम गोपुच्छा प्राप्त होती है। फिर अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटिके त्रिभागका चरम गोपुच्छके भागहारभूत साधिक पूर्वकोटिमें भाग देनेपर साधिक तीन रूप आते हैं। उनका विरलन करके सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर रूपके प्रति समान गोपुच्छ प्राप्त होते हैं। फिर जितना अध्वान पीछे गये हैं उससे गुणित और एक कम जितना अध्वान पीछे गये हैं उसकी संकलनासे अपवर्तित ऐसे चरम गोपुच्छ सम्बन्धी निषेकभागहारको एक रूपसे अधिक करके उससे विरलित तीन रूपोंको खण्डित कर उनमें एक खण्डमेंसे साधिक तीन रूपोंको कम करनेपर फिर

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'आयट्ठोवूण' ताप्रतौ 'आयट्ठोवू (ण) ण' इति पाठः।

२ ताप्रतौ '-द्धाणं संकलणाए' इति पाठः।

अवणिदेसु पुणो वि सादिरेयतिण्णिरूवाणि चेव उव्वरंति, पुव्विल्लअहियादो संपहियऊणीकदस्स असंखेज्जगुणहीणत्तुवलंभादो। एदेण विगलपक्खेवभागहारेण सगलपक्खेवे भागे हिदे एगविगलपक्खेवो आगच्छदि। एवं वड्डिदूण ट्ठिदो च, पुणो अण्णेगो पक्खेवुत्तरजोगेण बंधिदूणागदो च, सरिसा। एवं ताव वड्डावेदव्वं जाव जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्खाउअं बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो होदूण जीविदूणागदअंतोमुहुत्तद्धपमाणेण किंचूणपुव्वकोडिं सव्वमेगसमएण कदलीघादेण घादिदूण पुणो णिरयाउअं बंधमाणो[1] जहण्णजोगेण अट्ठण्णमागरिसाण जहण्णबंधगद्धासंकलणमेत्ताए अट्ठागरिसाहि बंधमाणस्स पढमागरिसाए[2] बंधिय बंधगद्धाचरिमसमए वट्टमाणभुंजमाणाउअदव्वम्मि एदेणप्पिददेसूणपुव्वकोडितिभागदव्वेणूणम्मि जत्तिया सयलपक्खेवा अत्थि तत्तियमेत्ता वड्डिदा त्ति। एवं वड्डिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्खाउअं बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो होदूण जीविदूणागदअंतोमुहुत्तद्धपमाणेण किंचूणपुव्वकोडिं सव्वमेगसमएण कदलीघादेण घादिदूण जहण्णजोगेण समऊणजहण्णबंधगद्धाए णिरयाउअं बंधिय पुणो चरिमसमए तप्पाओग्गजोगेण

भी साधिक तीन रूप ही शेष रहते हैं, क्योंकि, पूर्वोक्त अधिकसे साम्प्रतिक कम किया हुआ अंश असंख्यातगुणा हीन पाया जाता है। इस विकल प्रक्षेप-भागहारका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर एक विकल प्रक्षेप आता है। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव प्रक्षेप अधिक योगसे आयुको बांधकर आया हुआ, दोनों सदृश हैं। इस प्रकार तब तक बढ़ाना चाहिये जब तक कि जघन्य योग और जघन्य बन्धक कालसे तिर्यंच आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न हो सर्वलघु कालमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्तक हो, जीवित रहकर आये हुए अन्तर्मुहूर्त काल प्रमाणसे कुछ कम सम्पूर्ण पूर्वकोटिको एक समयमें कदलीघातसे घातकर फिर नारक आयुको बांधता हुआ जघन्य योगसे आठ अपकर्षोंके जघन्य बन्धककालके संकलन मात्रमें आठ अपकर्षों द्वारा बांधनेवालेके प्रथम अपकर्षसे बांधकर बन्धककालके अन्तिम समयमें रहनेवाले इस विवक्षित कुछ कम पूर्वकोटिके त्रिभाग मात्र द्रव्यसे हीन भुज्यमान आयुके द्रव्यमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र नहीं बढ़ जाते। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यंच आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न हो सर्वलघु कालमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्तक होकर जीवित रहकर आये हुए अन्तर्मुहूर्त कालके प्रमाणसे कुछ कम समस्त पूर्वकोटिको एक समयमें कदली घातसे घातकर जघन्य योग और एक समय कम जघन्य बन्धककालसे नारक आयुको बांधकर फिर अन्तिम समयमें तत्प्रायोग्य योगसे सात अपकर्षोंके द्रव्यको बांधकर

---

१ आप्रतौ 'बंधियमाणो' इति पाठः। २ आप्रतौ 'पदमगरिसाण' इति पाठः।

सत्तण्णमागरिसाणं दव्वं अधियं होदि च, सरिसा। पुव्विल्लं मोत्तूण एदं कदलीघाददव्वं घेत्तूण बंधगद्धाजोगं च अस्सिदूण वड्ढावेदव्वं। एवं वड्ढाविज्जमाणे दव्वस्स अणंतभागवड्ढि असंखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढि असंखेज्जगुणवड्ढि त्ति पंचवड्ढीओ होंति। जोगस्स पुण असंखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढि असंखेज्जगुणवड्ढि त्ति चत्तारिवड्ढीओ। बंधगद्धाए असंखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि संखेज्जगुणवड्ढि त्ति तिण्णि वड्ढीओ। तं कधं वड्ढाविज्जदे? वुच्चदे— संपहि दव्वस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण एगो विगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो। एत्थ विगलपक्खेवभागहारो को होदि? एगरूवमेगरूवस्स संखेज्जदिभागो च। तं जहा— किंचूणपुव्वकोडिं विरलेदूण एगसगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे पढमणिसेयपमाणं पावदि। पुणो कदलीघादहेट्ठिमसमयप्पहुडि पढमसमओ त्ति अंतोमुहुत्तेण पुव्विल्लभागहारमोवट्टिय विरलेदूण सगलपक्खेवं समखंडं कादूण दिण्णे अंतोमुहुत्तमेत्ता पढमणिसेगा पावंति। पुणो हेट्ठा णिसेगभागहारं पुव्विल्लअंतोमुहुत्तगुणिदं रूवूणंतो-

स्थित हुआ ये दोनों सदृश हैं। पूर्व द्रव्यको छोड़कर और इस कदलीघात द्रव्यका ग्रहण करके बन्धककाल व योगका आश्रय करके बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़ाते समय द्रव्यके अनन्तभागवृद्धि असंख्यातभागवृद्धि संख्यातभागवृद्धि संख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणवृद्धि ये पांच वृद्धियां होती हैं। किन्तु योगके असंख्यातभागवृद्धि संख्यातभागवृद्धि संख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणवृद्धि ये चार ही वृद्धियां होती हैं। बन्धककालके असंख्यातभागवृद्धि संख्यातभागवृद्धि और संख्यात गुणवृद्धि ये तीन वृद्धियां होती हैं।

शंका— वह कैसे बढ़ाया जाता है?

समाधान— इसका उत्तर कहते हैं— अब यहां द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढ़ाना चाहिये।

शंका— यहां विकल प्रक्षेपका भागहार क्या होता है?

समाधान— इसका भागहार एक रूप और एक रूपका संख्यातवां भाग होता है। यथा— कुछ कम पूर्वकोटिका विरलन करके एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर प्रथम निषेकका प्रमाण प्राप्त होता है। फिर कदलीघातके अधस्तन समयसे लेकर प्रथम समय तकके अन्तर्मुहूर्त कालसे पूर्वोक्त भागहारको अपवर्तित करके विरलित कर सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण प्रथम निषेक प्राप्त होते हैं। फिर नीचे निषेकभागहारको पूर्वोक्त अन्तर्मुहूर्तसे गुणित कर फिर

मुहुत्तसकलणाए खंडिद विरलिय उवरिमएगरूवधरिदपमाण समखंड करिय दादूण उवरिम-रूवधरिदेसु सव्वत्थ अवणिदे पगदिसरूवेण गलिददव्वमवसिट्ठं होदि । पुणो अवणिददव्वं पि तप्पमाणेण कादूण भागहारो वड्ढावेदव्वो । तेसिं पक्खेवरूवाणमाणयणं वुच्चदे । तं जहा— रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तेसु जदि एगा पक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलण-संखेज्जरूवेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए लद्धमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागो । तं उवरिमविरलणसंखेज्जरूवेसु पक्खिविय तेण सगलपक्खेवे भागे हिदे पगडिसरूवेण णट्ठदव्वं होदि । एदं पुध ट्ठविय पुणो विगिदिसरूवेण गलिददव्वं भणिस्सामो । तं जहा— संखेज्जरूवेहि ओवट्टिदपुव्वकोडिम्हि अंतोमुहुत्तूणणिसेगभागहारेण संखेज्जरूवगुणिदेण अंतोमुहुत्तादिउत्तरसंखेज्जरूवगच्छसंकलणोवट्टिदेण रूवूणेण संखेज्ज-रूवोवट्टिदपुव्वकोडिं खंडिय तत्थेगखंडे पक्खित्ते पढमविगिदिगोवुच्छभागहारो होदि । पुणो एद रूवूणजहण्णाउअबंधगद्धाए ओवट्टिय विरलेदूण एगसगलपक्खेवं समखंड कादूण दिण्णे

उसे एक कम अन्तर्मुहूर्तकी संकलनासे खण्डित कर लब्धका विरलन करके उपरिम विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देकर सर्वत्र उपरिम विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त राशियोंमेंसे कम करनेपर शेष रहा प्रकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्य होता है । फिर घटाये गये द्रव्यको भी उसके प्रमाणसे करके भागहारको बढ़ाना चाहिये ।

उन प्रक्षेप अंकोंके लानेके विधानको कहते हैं । यथा— एक रूप कम अधस्तन विरलन मात्र रूपोंमें यदि एक प्रक्षेपशलाका पायी जाती है तो उपरिम विरलनके संख्यात रूपोंमें कितनी प्रक्षेपशलाकायें प्राप्त होंगीं, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक रूपका असंख्यातवां भाग लब्ध होता है । उसको उपरिम विरलनके संख्यात रूपोंमें मिलाकर उसका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर लब्ध प्रकृति स्वरूपसे नष्ट द्रव्य होता है । इसको पृथक् स्थापित कर फिर विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है—

संख्यात रूपोंसे अपवर्तित पूर्वकोटिमें, संख्यात रूपोंसे गुणित व अन्तर्मुहूर्त आदि उत्तर संख्यात रूप गच्छसंकलनासे अपवर्तित ऐसे अन्तर्मुहूर्त कम निषेक भागहारमेंसे एक कम करनेपर जो शेष रहे उसका संख्यात रूपोंसे अपवर्तित पूर्वकोटिमें भाग देकर जो एक भाग प्राप्त हो, उसको मिला देनेपर प्रथम विकृतिगोपुच्छका भागहार होता है । फिर इसको रूप कम जघन्य आयुके बन्धककालसे अपवर्तित करके विरलित कर एक सकल प्रक्षेपको समखण्ड करके देनेपर विरलन अंकके प्रति एक रूप

---

१ प्रतिषु 'सरूवेणद्धदव्वं' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'पुव' इति पाठ । ३ ताप्रतौ 'पुव्वकोडीहि' इति पाठः ।

विरलणरूवं पडि रूवूणवधगद्धामत्ताओ पयडिविगिदिगोवुच्छाओ पावेंति । पुणो अहिय विसेसा जहा णस्सिदूण आगच्छंति तहा वत्तइस्सामो । त जहा— अंतोमुहुत्तूणणिसेगभाग हारं संखेज्जरूवगुणिदं पुणो असंखिदसंखेज्जपुव्वकोडि[1] रूवूणाउअबंधगद्धागुणिदं हेट्ठा विरलेदूण उवरिमेगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे एगेगविसेसो पावदि । पुणो संखेज्जादि संखेज्जुत्तरदुरूवूणाउअबंधगद्धासंकलणाए ओवट्टिय विरलेदूण उवरिमेगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे इच्छिदविसेसा पावेंति । पुणो रूवूणहेट्ठिमविरलणाए उवरिमविरलणसंखेज्ज रूवाणि खंडिदूण लद्धं तत्थेव पक्खित्तमि तेहि एगसगलपक्खेवे भागे हिदे विगिदिसरूवेण गलिददव्वमागच्छदि । पुणो पगदिसरूवेण गलिददव्वस्स विगिदिसरूवेण गलिददव्वेण सह आगमणमिच्छामो त्ति पगदिसरूवेण गलिददव्वेण विगिदिसरूवेण गलिददव्वम्मि भागे हिदे संखेज्जरूवाणि लब्भंति । पुणो तेहि रूवाहिएहि विगिदिभागहारमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे पगदि विगिदिसरूवेण गलिददव्वभागहारो होदि । पुणो एदेण सगलपक्खेवे भागे हिदे पगदि-विगिदिसरूवेण गलिददव्वं होदि । एदम्मि रूवूणभागहारेण गुणिदे विगल-

कम बन्धककाल मात्र प्रथम विकृतिगोपुच्छायें प्राप्त होती हैं । अब अधिक विशेष जिस प्रकार वह होकर आते हैं वैसा कथन करते हैं । यथा— अन्तर्मुहूर्त कम निषेकभागहारको संख्यात रूपोंसे गुणित कर फिर संख्यात पूर्वकोटियोंका अपवर्तन करके शेषको एक कम आयुबन्धककालसे गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उसका नीचे विरलन करके उपरिम एक रूपके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर एक एक विशेष प्राप्त होता है । फिर संख्यातको आदि लेकर संख्यात उत्तर दो रूपोंसे कम आयुबन्धक कालकी संकलनासे अपवर्तित करके विरलित कर उपरिम विरलनके एक अंकके प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर इच्छित विशेष प्राप्त होते हैं । फिर एक कम अधस्तन विरलन द्वारा उपरिम विरलनके संख्यात रूपोंको खण्डित कर द्रव्यको उसीमें मिलाकर उनका एक सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण हुआ द्रव्य आता है ।

अब चूंकि विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यके साथ प्रकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यका लाना अभीष्ट है अतः प्रकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यका विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यमें भाग देनेपर संख्यात रूप प्राप्त होते हैं । फिर एक रूपसे अधिक उनके द्वारा विकृतिभागहारको अपवर्तित कर लब्धको उसीमेंसे कम करनेपर प्रकृति व विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यका भागहार होता है । फिर इसका सकल प्रक्षेपमें भाग देनेपर प्रकृति व विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्य होता है । इसका एक कम भागहारसे गुणित करनेपर विकल प्रक्षेप होता है । इसलिये विकल

---

1 अप्रतौ '-पुव्वकोडि-' इति पाठः ।

पक्खेवो होदि । तेण विगलपक्खेवभागहारो एगरूवमेगरूवस्स संखेज्जदिभागो च होदि त्ति भणिद । एवविहमेगविगलपक्खेव दोहि वड्ढीहि वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो तिरिक्खाउअ बंधमाणो समऊणबंधगद्धाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमय पक्खेवुत्तरजोगेण बंधिदूणागदो च, सरिसा । पुणो पुव्विल्लं मोत्तूण परमाणुत्तरादिकमेण दोहि वड्ढीहि एगविगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो । एव वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो समऊणजहण्णबंधगद्धाए जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमयं दुपक्खेवुत्तरजोगेण बंधिदूणागदो च, सरिसा । एदेण कमेण विगलपक्खेवभागहारमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदसु रूवूणभागहारमेत्तसयलपक्खेवा वड्ढति । एवं वड्ढिदूण ट्ठिदा च, अण्णेगो जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्खाउअ बंधिय पुणो कदलीघादं कादूण समऊणजहण्णबंधगद्धाए णिरयाउअं जहण्णजोगेण बंधिय पुणो एगसमयं रूवूणभागहारमेत्तजोगट्ठाणाण चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूण ट्ठिदो च, सरिसा । पुणो एद घेत्तूण तिरिक्खाउअदव्वस्सुवरि भागहारमेत्ता विगलपक्खेवा वड्ढावेदव्वा । एव वड्ढिदूण ट्ठिदो च, पुणो णिरयाउअ बंधमाणो पुव्विल्लजोगस्सुवरि एगसमयं रूवूणभागहार-

प्रक्षेपका भागहार एक रूप और एक रूपका सख्यातवा भाग होता है, ऐसा कहा गया है।

इस प्रकारके विकल प्रक्षेपको दो वृद्धियों द्वारा बढ़ाकर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव तिर्यंच आयुको बाधता हुआ एक समय कम बन्धककाल और जघन्य योगसे बाधकर पुन एक समयमें एक प्रक्षेप अधिक योगसे बाधकर आया हुआ, दोनों सदृश हैं।

अब पूर्वको छोडकर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे दो वृद्धियों द्वारा एक विकल प्रक्षेपको बढाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव समय कम जघन्य बन्धककाल व जघन्य योगसे आयुको बाधकर फिर एक समयमें दो प्रक्षेपोंसे अधिक योगसे बाधकर आया हुआ, ये दोनों सदृश हैं।

इस क्रमसे विकल प्रक्षेप भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंकी वृद्धि हो जानेपर रूप कम भागहार मात्र सकल प्रक्षेप बढते हैं। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे तिर्यंच आयुको बाध कर फिर कदलीघात करके एक समय कम जघन्य बन्धककाल व जघन्य योगसे नारक आयुको बाधकर फिर एक समयमें रूप कम भागहार मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे आयुको बाधकर स्थित हुआ, ये दोनों सदृश हैं।

अब इसको ग्रहण करके तिर्यंच आयुके द्रव्यके ऊपर भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंको बढाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ, तथा नारक आयुको

१ आ-काप्रत्योः 'मेत्ताणि' इति पाठः।

मेत्तजोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूण ट्ठिदो च, सरिसा। पुणो एदेण कमेण तिरिक्खाउअदव्वस्सुवरि भागहारमेत्ता विगलपक्खेवा वड्ढावेदव्वा। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्खाउअं बंधिय पुणो णिरयाउअं बंधमाणो एगसमय पुव्विल्लजोगट्ठाणादो रूवूणभागहारमेत्तजोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूण ट्ठिदो च, सरिसा। एवं कमेण वड्ढावेदव्वं जाव जहण्णजोगट्ठाणपक्खेवभागहारम्मि जेत्तिया सगलपक्खेवा अत्थि तेत्तियमेत्ता वड्ढिदा त्ति। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च पुणो अण्णेगो जहण्णजोग जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्खाउअं बंधिय पुणो जलचरेसुप्पज्जिय समऊणजहण्ण-बंधगद्धाए जहण्णजोगेण णिरयाउअं बंधिय पुणो दोसमए जहण्णजोगेण चेव बंधिदूण ट्ठिदो च, सरिसा।

संपहि इमं घेत्तूण तिरिक्खाउअजहण्णदव्वस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण भागहारमेत्त-विगलपक्खेवा वड्ढावेदव्वा। एवं कदे रूवूणभागहारमेत्ता सगलपक्खेवा वड्ढिदा होंति। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि[1] तिरिक्खाउअं बंधिय

बांधता हुआ पूर्व योगके ऊपर एक समयमें रूप कम भागहार मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे बांधकर स्थित हुआ दोनों सदृश हैं।

अब इस क्रमसे तिर्यच आयुके द्रव्यके ऊपर भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंको बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ तथा दूसरा एक जीव जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यंच आयुको बांधकर फिर नारक आयुको बांधता हुआ एक समयमें पूर्व योगस्थानसे रूप कम भागहार मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे बांधकर स्थित हुआ ये दोनों सदृश हैं।

इस प्रकार क्रमसे जघन्य योगस्थानप्रक्षेपभागहारमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र बढ़ जाने तक बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ तथा दूसरा एक जीव जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यंच आयुको बांधकर फिर जलचरोंमें उत्पन्न होकर एक समय कम जघन्य बन्धककालमें जघन्य योगसे नारक आयुको बांधकर फिर दो समयमें जघन्य योगसे ही बांधकर स्थित हुआ ये दोनों सदृश हैं।

अब इसको ग्रहण कर तिर्यंच आयुके जघन्य द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे भागहार प्रमाण विकल प्रक्षेपोंको बढ़ाना चाहिये। ऐसा करनेपर रूप कम भागहार प्रमाण सकल प्रक्षेप बढ़ जाते हैं। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ तथा दूसरा एक जीव जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यंच आयुको बांधकर

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'वड्ढावेदव्वा' इति पाठः। २ प्रतिषु 'अण्णेगो जहण्णबंधगद्धाए' इति पाठः।

जलचेरसुप्पज्जिय कदलीघाद कादूण जहण्णजोग जहण्णबंधगद्धाहि णिरयाउअ बंधिय पुणो एगसमयं जहण्णजोगस्सुवरि रूवूणभागहारमेत्ताणं जोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूण ट्ठिदो च, सरिसा। पुणो इम घेत्तूण पुव्वविहाणेण वड्ढाविय सरिसं करिय तत्थ पच्छिल्लजीव-दव्वं घेत्तूण पुणो वि वड्ढावेदव्वं। एवं णेदव्वं जाव सो एगो समओ दुगुणजोगं पत्तो त्ति। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो जहण्णजोग जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्खाउअ बंधिय जलचरेसु-प्पज्जिय जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि णिरयाउअ बंधिय पुणो एगसमयं दुगुणजोगेण बंधिय ट्ठिदो च, अण्णगो जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्खाउअं बंधिय जलचरेसु उप्पज्जिय पुणो दुसमयाहियजहण्णबंधगद्धाए जहण्णजोगेण च णिरयाउअं बंधिय ट्ठिदो च, तिण्णि वि सरिसा।

पुणो पुव्वुत्तदोजीवे मोत्तूण इमं घेत्तूण जहण्णजोगं दुगुणजोगं च अस्सिदूण णिरयाउअबंधगद्धा समउत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वा जाव जहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडिदेगखंडं वड्ढिदं त्ति। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदे णिरयाउअजहण्णबंधगद्धाए असंखेज्जभागवड्ढी[2] चेव।

जलचरोंमें उत्पन्न हो कदलीघात करके जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे नारक आयुको बांधकर फिर एक समयमें जघन्य योगके ऊपर रूप कम भागहार मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे बांधकर स्थित हुआ, ये दोनों सदृश हैं।

अब इसको ग्रहण करके पूर्व विधिसे बढ़ाकर सदृश करके उनमें पिछले जीवके द्रव्यको ग्रहण कर फिरसे भी बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार जब तक वह एक समय दुगुने योगको प्राप्त न हो जावे तब तक ले जाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे तिर्यच आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न हो जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे नारक आयुको बांधकर फिर एक समयमें दुगुने योगसे बांधकर स्थित हुआ, तथा अन्य एक जीव जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे तिर्यच आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न हो फिर दो समयोंसे अधिक जघन्य बन्धककाल व जघन्य योगसे नारक आयुको बांधकर स्थित हुआ, ये तीनों ही जीव सदृश हैं।

अब पूर्वोक्त दो जीवोंको छोड़ कर और इसको ग्रहण कर जघन्य योग व दुगुणित योगका आश्रय कर नारक आयुके बन्धककालको एक समय अधिकताके क्रमसे जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण वृद्धि हो चुकने तक बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित होनेपर नारक आयुके जघन्य बन्धककालमें असंख्यातभागवृद्धि ही होती है। विशेष इतना है कि कदलीघात द्रव्य,

---

१ अ आ काप्रतिषु 'करिय तत्थ पच्छिल्लजीवदव्वं घेत्तूण पुव्वविहाणेण वड्ढाविय सरिस करिय तत्थ पच्छिल्ल (मप्रतावतोऽग्रे 'जीवदव्व घेत्तूण' इत्यधिक पाठ) पुणो', ताप्रतौ 'करिय पुच्छिल्लजीवदव्व घेत्तूण पुणो' इति पाठ।

२ अ-आ-काप्रतिषु 'असखेज्जदिभागवड्ढी', ताप्रतौ 'असंखे० भागवड्ढी' इति पाठ।

णवरि कदलीघाददव्वं तव्वधगद्धा दोण्णं' जोगो च जहण्णा चेव । पुणो णिरयाउअजहण्ण बंधगद्धं उक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदूण पुणो तत्थ एगखंडे जहण्णबंधगद्धाए वड्डिदे संखेज्ज भागवड्डीए आदी असंखेज्जभागवड्डीए परिसमत्ती च जादा । एदेण कमेण बंधगद्धा वड्डा वेदव्वा जाव जहण्णादो बंधगद्धादो उक्कस्सिया संखेज्जगुणा जादा त्ति ।

एत्थ चरिमवियप्पो वुच्चदे । तं जहा — जहण्णजोग जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्खा उअं बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय कदलीघादं काऊण जहण्णजोगेण दुसमऊणुक्कस्सबंध गद्धाए च णिरयाउअं बंधिय पुणो एगसमयं दुगुणजोगेण बंधिय ट्ठिदो च, पुणो अण्णो जीवो जहण्णजोग जहण्णबंधगद्धाहि जलचरसु आउअं बंधिय पुणो जहण्णजोगेण उक्कस्स बंधगद्धाए च णिरयाउअं बंधिय ट्ठिदो च, सरिसा । णवरि सव्वत्थ णिरयाउअबंधगद्धा समऊणा चेव होदूण वड्डदि, अट्ठागरिसबंधगद्धादो सत्तागरिसबंधगद्धाए जहण्णियाए वि संखेज्जगुणत्तादो । संपधि णिरयाउअबंधगद्धा उक्कस्सा जादा । णवरि स जोगो जहण्णो चेव । इम घेत्तूण पुव्वविहाणेण परमाणुत्तरादिकमेण दव्वं वड्डाविय जोगो वड्डावदव्वो जाव तप्पाओग्गमसंखेज्जगुणजोगं पत्तो त्ति ।

नारकायुका बन्धककाल और दोनोंके योग जघन्य ही हैं । फिर नारकायुके जघन्य बन्धककालको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित कर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण जघन्य बन्धककालमें वृद्धि हो चुकनेपर संख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ और असंख्यातभाग वृद्धिकी समाप्ति होती है । इस क्रमसे उत्कृष्ट कालके जघन्य बन्धककालसे संख्यातगुणे हो जाने तक बन्धककालको बढ़ाना चाहिये ।

यहां अन्तिम विकल्पको कहते हैं । वह इस प्रकार है— जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यंच आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न हो कदलीघात करके जघन्य योग और दो समय कम उत्कृष्ट बन्धककालसे नारकायुको बांधकर फिर एक समयमें दुगुणित योगसे बांधकर स्थित हुआ तथा दूसरा जीव जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे जलचरोंमें आयुको बांधकर पुनः जघन्य योग और उत्कृष्ट बन्धककालसे नारकायुको बांधकर स्थित हुआ ये दोनों सदृश हैं । विशेषता केवल इतनी है कि सब जगह नारकायुका बन्धककाल एक एक समय अधिक होकर ही बढ़ता है क्योंकि आठ अपकर्ष रूप बन्धककालसे सात अपकर्ष रूप बन्धककाल जघन्य भी संख्यातगुणा है । अब नारकायुका बन्धककाल उत्कृष्ट हो जाता है । विशेष इतना है कि उसका योग जघन्य ही है । इसको ग्रहण करके पूर्वोक्त विधिसे एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे द्रव्यको बढ़ाकर तत्प्रायोग्य असंख्यातगुणे योगके प्राप्त होने तक योगको बढ़ाना चाहिये ।

---

१ प्रतौ दव्वंतव्वधगद्धादोण्णं इति पाठः । २ अ-आ-प्रत्योः अट्ठ इति पाठः ।

जलचरेसुप्पज्जिय कदलीघादं कादूण जहण्णजोग जहण्णबंधगद्धाहि णिरयाउअं बंधिय पुणो एगसमयं जहण्णजोगस्सुवरि रूवूणभागहारमेत्ताणं जोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणेण बंधिदूण ट्ठिदो च, सरिसा। पुणो इम घेत्तूण पुव्वविहाणेण वड्ढाविय सरिस करिय तत्थ पच्छिल्लजीव-दव्वं घेत्तूण पुणो वि वड्ढावेदव्व[1]। एव णेदव्वं जाव सो एगो समओ दुगुणजोग पत्तो त्ति। एव वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो जहण्णजोग जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्खाउअं बंधिय जलचरेसु-प्पज्जिय जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि णिरयाउअं बंधिय पुणो एगसमयं दुगुणजोगेण बंधिय ट्ठिदो च, अण्णगो जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्खाउअ बंधिय जलचरेसु उप्पज्जिय पुणो दुसमयाहियजहण्णबंधगद्धाए जहण्णजोगेण च णिरयाउअ बंधिय ट्ठिदो च, तिण्णि वि सरिसा।

पुणो पुव्वुत्तदोजीवे मोत्तूण इमं घेत्तूण जहण्णजोगं दुगुणजोगं च अस्सिदूण णिरयाउअबंधगद्धा समउत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वा जाव जहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडिदेगखंडं वड्ढिदं त्ति। एव वड्ढिदूण ट्ठिदे णिरयाउअजहण्णबंधगद्धाए असंखेज्जभागवड्ढी[2] चेव।

जलचरोंमें उत्पन्न हो कदलीघात करके जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे नारक आयुको बांधकर फिर एक समयमें जघन्य योगके ऊपर रूप कम भागहार मात्र योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे बांधकर स्थित हुआ, ये दोनों सदृश हैं।

अब इसको ग्रहण करके पूर्व विधिसे बढ़ाकर सदृश करके उनमें पिछले जीवके द्रव्यको ग्रहण कर फिरसे भी बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार जब तक वह एक समय दुगुने योगको प्राप्त न हो जावे तब तक ले जाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे तिर्यंच आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न हो जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे नारक आयुको बांधकर फिर एक समयमें दुगुने योगसे बांधकर स्थित हुआ, तथा अन्य एक जीव जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे तिर्यंच आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न हो फिर दो समयोंसे अधिक जघन्य बन्धककाल व जघन्य योगसे नारक आयुको बांधकर स्थित हुआ, ये तीनों ही जीव सदृश हैं।

अब पूर्वोक्त दो जीवोंको छोड़ कर और इसको ग्रहण कर जघन्य योग व दुगुणित योगका आश्रय कर नारक आयुके बन्धककालको एक समय अधिकताके क्रमसे जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण वृद्धि हो चुकने तक बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित होनेपर नारक आयुके जघन्य बन्धककालमें असंख्यातभागवृद्धि ही होती है। विशेष इतना है कि कदलीघात द्रव्य,

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'करिय तत्थ पच्छिल्लजीवदव्वं घेत्तूण पुव्वविहाणेण वड्ढाविय सरिस करिय तत्थ पच्छिल्ल (मप्रतावतोऽग्रे 'जीवदव्व घेत्तूण' इत्यधिक पाठ) पुणो', ताप्रतौ 'करिय पच्छिल्लजीवदव्व घेत्तूण पुणो' इति पाठ।

२ अ-आ-काप्रतिषु 'असखेज्जदिभागवड्ढी', ताप्रतौ 'असंखे० भागवड्ढी' इति पाठः।

णवरि कदलीघादट्ठं तब्बंधगद्धा दोण्णं[1] जोगो च जहण्णा चेव । पुणो णिरयाउअजहण्ण बंधगद्धं उक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदूण पुणो तत्थ एगखंडे जहण्णबंधगद्धाए वड्ढिदे संखेज्ज भागवड्ढीए आदी असंखेज्जभागवड्ढीए परिसमत्ती च जादा । एदेण कमेण बंधगद्धा वड्ढा वेदव्वा जाव जहण्णादो बंधगद्धादो उक्कस्सिया संखेज्जगुणा जादा त्ति ।

एत्थ चरिमवियप्पो[2] वुच्चदे । तं जहा — जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्खा उअं बंधिय जलचरेसुप्पज्जिय कदलीघादं काऊण जहण्णजोगेण दुसमऊणुक्कस्सबंध गद्धाए च णिरयाउअं बंधिय पुणो एगसमय दुगुणजोगेण बंधिय ट्ठिदो च, पुणो अण्णो जीवो जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि जलचरेसु आउअं बंधिय पुणो जहण्णजोगेण उक्कस्स बंधगद्धाए च णिरयाउअं बंधिय ट्ठिदो च, सरिसा । णवरि एत्थतण णिरयाउअबंधगद्धा समउत्तरा चेव होदूण वड्ढिदि, अट्ठागरिसबंधगद्धादो सत्तागरिसबंधगद्धाए जहण्णियाए वि संखेज्जगुणत्तादो । संपहि णिरयाउअबंधगद्धा उक्कस्सा जादा । णवरि तज्जोगो जहण्णो चेव । एवं घेत्तूण पुव्वविहाणेण परमाणुत्तरादिकमेण दव्वं वड्ढाविय जोगो वड्ढावेदव्वो जाव तप्पाओग्गअसंखेज्जगुणजोगं पत्तो त्ति ।

नारकायुका बन्धककाल और दोनोंके योग जघन्य ही हैं। फिर नारकायुके जघन्य बन्धककालको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित कर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण जघन्य बन्धककालमें वृद्धि हो चुकनेपर संख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ और असंख्यातभाग वृद्धिकी समाप्ति होती है। इस क्रमसे उत्कृष्ट कालके जघन्य बन्धककालसे संख्यातगुणे हो जाने तक बन्धककालको बढ़ाना चाहिये।

यहां अन्तिम विकल्पको कहते हैं। वह इस प्रकार है— जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यंच आयुको बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न हो कदलीघात करके जघन्य योग और दो समय कम उत्कृष्ट बन्धककालसे नारकायुको बांधकर फिर एक समयमें द्विगुणित योगसे बांधकर स्थित हुआ तथा दूसरा जीव जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे जलचरोंमें आयुको बांधकर पुनः जघन्य योग और उत्कृष्ट बन्धककालसे नारकायुको बांधकर स्थित हुआ ये दोनों सदृश हैं। विशेषता केवल इतनी है कि यहां नारकायुका बन्धककाल एक एक समय अधिक होकर ही बढ़ता है क्योंकि आठ अपकर्ष रूप बन्धककालसे सात अपकर्ष रूप बन्धककाल जघन्य भी संख्यातगुणा है। अब नारकायुका बन्धककाल उत्कृष्ट हो जाता है। विशेष इतना है कि उसका योग जघन्य ही है। इसको ग्रहण करके पूर्वोक्त विधिसे एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे द्रव्यको बढ़ाकर तत्प्रायोग्य असंख्यातगुणे योगके प्राप्त होने तक योगको बढ़ाना चाहिये।

---

१ मप्रतौ 'तब्बंधगद्धावेदणदोण्णं' इति पाठः । २ अ-आ-काप्रतिषु 'चरमो' इति पाठः ।

सो जोगो किंविधो[1] त्ति भणिदे एगो तिरिक्खाउअं जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि बंधिय कदलीघादं कादूण समऊणुक्कस्सबंधगद्धाए जहण्णजोगेण णिरयाउअं बंधिय पुणो एगसमयं जत्तियमेत्ताणि जोगट्ठाणाणि चडिदुं सक्कदि तत्तियमेत्ताणं जोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणमेत्तं गहिदं। एवं उक्कस्सबंधगद्धाए एगो समओ तप्पाओग्गमसंखेज्जगुणं जोगं पत्तो। जहा एसो एगसमओ[2] तप्पाओग्गमसंखेज्जगुणं जोगं णीदो एवं सेसेगेगसमया[3] वि तप्पाओग्गमसंखेज्जगुणजोगस्स णेदव्वा जावुक्कस्सणिरयाउअबंधगद्धाए सव्वे समया तप्पाओग्गमसंखेज्जगुणं जोगट्ठाणं पत्ता त्ति। एवमणेण विहिणा संखेज्जवारमुक्कस्सबंधगद्धा उवरि उवरि चढाविय णीदे उक्कस्सजोगं पावदि।

एवं णीदे एत्थ चरिमवियप्पो[4] वुच्चदे। तं जहा— जलचरेसु जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्खाउअं बंधिय कदलीघादं कादूण उक्कस्सजोग-उक्कस्सबंधगद्धाहि णिरयाउअं बंधाविदे चरिमवियप्पो होदि। एवं तिरिक्खजलचरआउअदव्वमस्सिदूण णिर-

शंका—वह योग किस प्रकारका है?

समाधान— ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि एक जीव जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यंच आयुको बांधकर कदलीघात करके एक समय कम उत्कृष्ट बन्धककालमें जघन्य योगसे नारकायुको बांधकर फिर एक समयमें जितने मात्र योगस्थान चढ़ सकता है उतने मात्र योगस्थानों सम्बन्धी अन्तिम योगस्थान मात्र यहां ग्रहण किया गया है।

इस प्रकार उत्कृष्ट बन्धककालका एक समय तत्प्रायोग्य असंख्यातगुणे योगको प्राप्त हो जाता है। जिस प्रकार यह एक समय तत्प्रायोग्य असंख्यातगुणित योगको प्राप्त कराया गया है इसी प्रकार शेष एक एक समयोंको भी तत्प्रायोग्य असंख्यातगुणे योगको प्राप्त कराना चाहिये जब तक कि उत्कृष्ट नारकायु सम्बन्धी बन्धककालके सब समय तत्प्रायोग्य असंख्यातगुणे योगस्थानको प्राप्त नहीं हो जाते। इस प्रकार इस विधिसे संख्यात बार ऊपर ऊपर चढ़ाकर ले जानेपर उत्कृष्ट बन्धककाल उत्कृष्ट योगको प्राप्त होता है।

इस प्रकार ले जानेपर यहां अन्तिम विकल्प कहा जाता है। वह इस प्रकार है— जलचरोंमें जघन्य योग और जघन्य बन्धककालसे तिर्यंच आयुको बांधकर कदलीघात करके उत्कृष्ट योग और उत्कृष्ट बन्धककालसे नारकायुको बंधानेपर अन्तिम विकल्प होता है। इस प्रकार तिर्यंच जलचरके आयु द्रव्यका आश्रय कर

१ प्रतिषु 'किंविद्धो' इति पाठः। २ अ-आप्रत्योः 'एसो समओ', का-ताप्रत्योः 'एसो ससमओ' इति पाठः। ३ मप्रतिपाठोऽयम्। अप्रतौ 'सेसेगेए।', आप्रतौ 'सेसेएग', काप्रतौ 'सेसेएगेग', ताप्रतौ 'सेसेग [ए] ग' इति पाठः। ४ अ-आप्रत्योः 'वियप्पा' इति पाठः।

याउअमप्पणो अहण्णदव्वप्पहुडि जावुक्कस्सदव्वेत्ति ताव परमाणुत्तरादिकमेण णिरंतरं गंतूण उक्कस्सं जाद।

संपहि जोग बंधगद्धादि[1] अस्सिदूण तिरिक्खाउअदव्व उक्कस्सं कीरदे। तं जहा— अहण्णजोग-अहण्णबंधगद्धाहि जलचरेसु पुव्वकोडिआउअं बंधिय कदलीघादं काऊण उक्कस्स जोगुक्कस्सबंधगद्धाहि णिरयाउअं बंधिय ट्ठिदस्स भुंजमाणाउअम्मि परमाणुत्तरादिकमेण एगो विगलपक्खेवो वड्ढावेदव्वो। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो पक्खेवुत्तरजोगेण बंधिदूणागदो च, सरिसा। एवं जाणिदूण वड्ढावेदव्वं जाव जोगो तिरिक्खाउअं बंधगद्धा च उक्कस्सत्तं पत्ताओ त्ति। एवं दो वि आउआणि उक्कस्साणि जादाणि। एवमणंतेहि वियप्पेहि आउअस्स अजहण्णपदपरूवणं कदं।

आउअस्स एवं वा अजहण्णपदपरूवणा कायव्वा। तं जहा— जाव णेरइयबिदिय समओ त्ति ताव पुव्वविधाणेण ओदारिय पुणो तत्थेव ठविय तीहि वड्ढीहि बंधगद्धं वड्ढाविय चदुहि वड्ढीहि जोगं वड्ढाविय णिरयाउअदव्वं पंचहि वड्ढीहि उक्कस्सं कायव्वं। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदबिदियसमयणेरइयो च, पढमणिसेगेणूणउक्कस्सदव्वं बंधिदूणागदपढम

नारकायु अपने जघन्य द्रव्यको लेकर उत्कृष्ट द्रव्य तक एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे निरन्तर जाकर उत्कृष्ट हो जाता है।

अब योग व बन्धककाल आदिका आश्रय कर तिर्यंच आयुके द्रव्यको उत्कृष्ट करते हैं। वह इस प्रकारसे—जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे जलचरोंमें पूर्वकोटि प्रमाण आयुको बांधकर कदलीघात करके उत्कृष्ट योग व उत्कृष्ट बन्धककालसे नारकायुको बांधकर स्थित जीवकी भुज्यमान आयुमें एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे एक विकल प्रक्षेप बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ तथा दूसरा एक जीव प्रक्षेप अधिक योगसे आयुको बांधकर आया हुआ दोनों सदृश हैं। इस प्रकार जानकर योग तिर्यगायु व बन्धककालके उत्कृष्टताको प्राप्त होने तक बढ़ाना चाहिये। इस प्रकार दोनों ही आयु उत्कृष्ट हो जाती हैं। इस प्रकार अनन्त विकल्पों द्वारा आयु कर्मके अजघन्य पदकी प्ररूपणा की गई है।

अथवा आयु कर्मके अजघन्य पदकी प्ररूपणा इस प्रकार करना चाहिये। यथा—नारकके द्वितीय समय तक पूर्व विधानसे उतार कर और वहां ही स्थापित कर तीन वृद्धियोंसे बन्धककालको बढ़ाकर व चार वृद्धियोंसे योगको बढ़ाकर नारकायुके द्रव्यको पांच वृद्धियों द्वारा उत्कृष्ट करना चाहिये। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ द्वितीय समयवर्ती नारकी तथा प्रथम निषेकसे हीन उत्कृष्ट द्रव्यको बांधकर आया हुआ प्रथम समयवर्ती नारकी दोनों सदृश हैं।

---

1 अ-आ प्रत्योः ' जोगं बंधगादि ' इति पाठः।

समयणेरइयो च, सरिसा। संपहि पढमणिसेगपरिहाणिणिमित्तं केत्तियाणि जोगट्ठाणाणि ओदारिदो ? पढमणिसेगे जेत्तिया[1] सयलपक्खेवा अत्थि तेत्तियमेत्ताणि[2]।

णारगपढमगोवुच्छाए सयलपक्खेवपमाणं वुच्चदे। तं जहा— आउअबंधगद्धाए दिवड्ढगुणहाणिमोवट्टिय पुणो तप्पाओग्गउक्कस्सजोगट्ठाणभागहारे भागे हिदे लद्धमेत्ता सगलपक्खेवा होंति।

संपहि चरिमसमयतिरिक्खदव्वं बिदियसमयणारगदव्वेण सरिसं कीरदे। तं जहा— णेरइयपढमगोवुच्छाए तिरिक्खचरिमगोवुच्छाए च ऊणं णिरयाउअं बंधिदूण तिरिक्खचरिमसमए ट्ठिदो च, णेरइयबिदियसमए ट्ठिदो च, पुव्विल्लविहिणा णेरइयपढमसमयट्ठिदो च, सरिसा। संपहि पढमसमयणेरइयदव्वस्सुवरि वड्ढाविज्जमाणे पक्खेवुत्तरकमेण सांतरट्ठाणाणि होंति त्ति कट्टु पढमसमयणेरइयं मोत्तूण चरिमसमयतिरिक्खदव्वस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण पुव्वकोडिमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु एगो सगलपक्खेवो वड्ढदि। आउअबंधगद्धाए ओवट्टिददिवड्ढगुणहाणीए तप्पाओग्गजोगट्ठाणभागहारे भागे हिदे भागलद्धमेत्तेसु सयलपक्खेवेसु

शंका— प्रथम निषेककी हानि निमित्त कितने योगस्थान उतारा गया है ?

समाधान—प्रथम निषेकमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र योगस्थान उतारा गया है।

नारक सम्बन्धी प्रथम गोपुच्छमें सकल प्रक्षेपोंका प्रमाण कहा जाता है। वह इस प्रकार है— आयुबन्धककालसे डेढ़ गुणहानिको अपवर्तित कर फिर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट योगस्थानके भागहारमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र उसमें सकल प्रक्षेप होते हैं।

अब अन्तिम समय सम्बन्धी तिर्यंचके द्रव्यको द्वितीय समयवर्ती नारकीके द्रव्यके सदृश करते हैं। वह इस प्रकारसे— नारकीकी प्रथम गोपुच्छासे और तिर्यंचकी अन्तिम गोपुच्छासे हीन नारकायुको बांधकर तिर्यंच भवके अन्तिम समयमें स्थित, नारक भवके द्वितीय समयमें स्थित, तथा पूर्वोक्त विधिसे नारक भवके प्रथम समयमें स्थित, ये तीनों सदृश हैं। अब चूंकि प्रथम समय सम्बन्धी नारक द्रव्यके ऊपर बढ़ानेपर प्रक्षेप अधिकताके क्रमसे सान्तर स्थान होते हैं, अत एव प्रथम समयवर्ती नारकीको छोड़कर अन्तिम समय सम्बन्धी तिर्यंचके द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे पूर्वकोटि प्रमाण विकल प्रक्षेपोंके बढ़नेपर एक सकल प्रक्षेप बढ़ता है। आयुबन्धककालसे अपवर्तित डेढ़ गुणहानिका तत्प्रायोग्य योगस्थानके भागहारमें भाग देनेपर जो लब्ध हो

१ काप्रतौ 'जत्तिया' इति पाठ। २ अ आ काप्रतिषु 'तत्तियमेत्ताणि' इति पाठः।

तिरिक्खचरिमसमए वड्ढिदेसु णेरइयपढमगोवुच्छा सरिसा होदि । एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो उक्कस्सजोगुक्कस्सबंधगद्धाहि णिरयाउअं बंधिय णेरइयपढमसमए ट्ठिदो च, सरिसा । संपहि तेसिं परभवियाउअं[1] सव्वं परमाणुत्तरादिकमेण णिरंतरं वड्ढिय उक्कस्सं जादं । पुणो णेरइयउक्कस्सपढमगोवुच्छं वड्ढिदूण ट्ठिदचरिमसमयतिरिक्खदव्वस्सुवरि तिरिक्खचरिमजहण्णगोवुच्छमेत्तं वड्ढावेदव्वं । एवं वड्ढिदूण ट्ठिदचरिमसमयतिरिक्खो च, अण्णेगो जहण्णजोग-जहण्णबंधगद्धाहि तिरिक्खाउअं बंधिय तिरिक्खेसुप्पज्जिय उक्कस्सजोग उक्कस्सबंधगद्धाहि णिरयाउअं बंधिय तिरिक्खचरिमसमयट्ठिदो च, सरिसा । पुणो पुव्विल्लं मोत्तूण इमं घेत्तूण तिरिक्खचरिमसमयजहण्णगोवुच्छा परमाणुत्तरादिकमेण वड्ढावेदव्वा जाव चरिमसमयतिरिक्खस्स चरिमगोवुच्छा उक्कस्सा जादेत्ति । पुणो दुचरिमगोवुच्छणिमित्तं सादिरेयदुभागं तिचरिमगोवुच्छणिमित्तं सादिरेयतिभागूणं करिय उक्कस्सजोगेण उक्कस्सबंधगद्धाए च बंधेदूण वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव पुव्वकोडितिभागबंधगद्धाचरिमसमओ त्ति । पुणो भुंजमाणाउअस्स वड्ढी णत्थि, उक्कस्सजोगुक्कस्सबंधगद्धाहि भुंजमाण-

इतने मात्र सदृश प्रदेशोंकी तिर्यंचके अन्तिम समयमें वृद्धि हो चुकनेपर नारकीकी प्रथम गोपुच्छा सदृश होती है । इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ तथा दूसरा एक उत्कृष्ट योग और उत्कृष्ट बन्धककालसे नारकायुको बांधकर नारक भवके प्रथम समयमें स्थित हुआ दोनों सदृश हैं । अब उनकी समस्त परभविक आयु एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे निरन्तर बढ़कर उत्कृष्ट हो जाती है । फिर नारकीकी उत्कृष्ट प्रथम गोपुच्छा बढ़कर स्थित चरम समय सम्बन्धी तिर्यंच द्रव्यके ऊपर तिर्यंचकी अन्तिम जघन्य गोपुच्छा मात्र बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार बढ़कर स्थित चरम समयवर्ती तिर्यंच तथा दूसरा एक जघन्य योग व जघन्य बन्धककालसे तिर्यंच आयुको बांधकर तिर्यंचोंमें उत्पन्न हो उत्कृष्ट योग और उत्कृष्ट बन्धककालसे नारकायुको बांधकर तिर्यंच भवके अन्तिम समयमें स्थित हुआ दोनों सदृश हैं । अब पूर्वोक्त जीवको छोड़कर और इसको ग्रहण कर तिर्यंचकी अन्तिम समय सम्बन्धी जघन्य गोपुच्छाको एक परमाणु अधिक आदिक क्रमसे चरम समयवर्ती तिर्यंचकी अन्तिम गोपुच्छके उत्कृष्ट होने तक बढ़ाना चाहिये । पुनः द्विचरम गोपुच्छाके निमित्त साधिक द्विभागको व त्रिचरम गोपुच्छाके निमित्त साधिक त्रिभागको न्यून करके उत्कृष्ट योग और उत्कृष्ट कालके द्वारा बांध कर और बढ़ाकर पूर्वकोटिके त्रिभाग रूप बन्धककालके अन्तिम समय तक उतारना चाहिये । पुनः भुज्यमान आयुकी वृद्धि नहीं है क्योंकि उत्कृष्ट योग और उत्कृष्ट बन्धककालसे भुज्यमान

---

१ प्रतिषु 'तेसिं परभवियाउअं' इति पाठः । २ अ-आ-प्रत्योः 'गोवुच्छणिमित्तं' इति पाठः ।

समयणेरइयो च, सरिसा। संपहि पढमणिसेगपरिहाणिणिमित्तं केत्तियाणि जोगट्ठाणाणि ओदारिदो ? पढमणिसेगे जेत्तियां[1] सयलपक्खेवा अत्थि तेत्तियमेत्ताणि[2]।

णारगपढमगोवुच्छाए सयलपक्खेवपमाणं वुच्चदे। तं जहा— आउअबंधगद्धाए दिवड्ढगुणहाणिमोवट्टिय पुणो तप्पाओग्गउक्कस्सजोगट्ठाणभागहारे भागे हिदे लद्धमेत्ता सगलपक्खेवा होंति।

संपहि चरिमसमयतिरिक्खदव्वं बिदियसमयणारगदव्वेण सरिसं कीरदे। तं जहा— णेरइयपढमगोवुच्छाए तिरिक्खचरिमगोवुच्छाए च ऊणं णिरयाउअं बंधिदूण तिरिक्खचरिमसमए ट्ठिदो च, णेरइयबिदियसमए ट्ठिदो च, पुव्विल्लविहिणा णेरइयपढमसमयट्ठिदो च, सरिसा। संपहि पढमसमयणेरइयदव्वस्सुवरि वड्ढाविज्जमाणे पक्खेवुत्तरकमेण सांतरट्ठाणाणि होंति त्ति कट्टु पढमसमयणेरइयं मोत्तूण चरिमसमयतिरिक्खदव्वस्सुवरि परमाणुत्तरादिकमेण पुव्वकोडिमेत्तविगलपक्खेवेसु वड्ढिदेसु एगो सगलपक्खेवो वड्ढदि। आउअबंधगद्धाए ओवट्टिददिवड्ढगुणहाणीए तप्पाओग्गजोगट्ठाणभागहारे भागे हिदे भागलद्धमेत्तेसु सयलपक्खेवेसु

शंका— प्रथम निषेककी हानि निमित्त कितने योगस्थान उतारा गया है ?

समाधान— प्रथम निषेकमें जितने सकल प्रक्षेप हैं उतने मात्र योगस्थान उतारा गया है।

नारक सम्बन्धी प्रथम गोपुच्छमें सकल प्रक्षेपोंका प्रमाण कहा जाता है। वह इस प्रकार है— आयुबन्धककालसे डेढ़ गुणहानिको अपवर्तित कर फिर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट योगस्थानके भागहारमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र उसमें सकल प्रक्षेप होते हैं।

अब अन्तिम समय सम्बन्धी तिर्यंचके द्रव्यको द्वितीय समयवर्ती नारकीके द्रव्यके सदृश करते हैं। वह इस प्रकारसे— नारकीकी प्रथम गोपुच्छासे और तिर्यंचकी अन्तिम गोपुच्छासे हीन नारकायुको बांधकर तिर्यंच भवके अन्तिम समयमें स्थित, नारक भवके द्वितीय समयमें स्थित, तथा पूर्वोक्त विधिसे नारक भवके प्रथम समयमें स्थित, ये तीनों सदृश हैं। अब चूंकि प्रथम समय सम्बन्धी नारक द्रव्यके ऊपर बढ़ानेपर प्रक्षेप अधिकताके क्रमसे सान्तर स्थान होते हैं, अत एव प्रथम समयवर्ती नारकीको छोड़कर अन्तिम समय सम्बन्धी तिर्यंचके द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे पूर्वकोटि प्रमाण विकल प्रक्षेपोंके बढ़नेपर एक सकल प्रक्षेप बढ़ता है। आयुबन्धककालसे अपवर्तित डेढ़ गुणहानिका तत्प्रायोग्य योगस्थानके भागहारमें भाग देनेपर जो लब्ध हो

---

१ काप्रतौ 'जत्तिया' इति पाठः। २ अ आ काप्रतिषु 'तत्तियमेत्ताणि' इति पाठः।

अप्पाबहुए त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥ १२३ ॥

अप्पाबहुए त्ति एत्थ जो इदि-सद्दो [सो] अप्पाबहुअस्स सरूवपयत्थ-जाणावणणिमित्तं पउत्तो, इदरेहि अणियोगद्दारेहिंतो पयच्छेदट्ठं वा। तत्थ तिण्णि अणियोगद्दाराणि जहण्ण-उक्कस्स-जहण्णुक्कस्सपदप्पाबहुगभेदेण। तत्थ अट्ठण्णं कम्माणं जहण्णदव्वविसयमप्पाबहुअं जहण्ण[पद]प्पाबहुगं णाम। उक्कस्सदव्वविसयमुक्कस्सपदप्पाबहुगं णाम। तदुभयदव्वविसयं जहण्णुक्कस्सपदप्पाबहुगं णाम। ण च चउत्थभंगो अत्थि, अणुवलंभादो।

जहण्णपदेण सव्वत्थोवा आउगवेयणा दव्वदो[1] जहण्णिया ॥ १२४ ॥

णाणावरणीयादिकम्मपडिसेहट्ठो आउअणिद्देसो। खेत्तादिपडिसेहफलो [दव्वणिद्देसो।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणामें जघन्य पद, उत्कृष्ट पद और जघन्योत्कृष्ट पद, इस प्रकार तीन अनुयोगद्वार हैं ॥ १२३ ॥

अप्पाबहुए त्ति यहां जो इति शब्द है वह अल्पबहुत्व एक स्वतन्त्र अधिकार है यह बतलानेके लिये अथवा दूसरे अनुयोगद्वारोंसे इसे अलग करनेके लिये प्रयुक्त हुआ है। इसके जघन्य उत्कृष्ट व जघन्योत्कृष्टके भेदसे तीन अनुयोगद्वार हैं। उनमें आठ कर्मोंके जघन्य द्रव्य विषयक अल्पबहुत्वका नाम जघन्य-पद-अल्पबहुत्व है। उनके उत्कृष्ट द्रव्य विषयक अल्पबहुत्वको उत्कृष्ट पद-अल्पबहुत्व कहते हैं। जघन्य व उत्कृष्ट द्रव्यको विषय करनेवाला अल्पबहुत्व जघन्योत्कृष्ट-पद-अल्पबहुत्व कहलाता है। इन तीनके अतिरिक्त और कोई चतुर्थ भंग नहीं है क्योंकि वह पाया नहीं जाता।

जघन्य-पद-अल्पबहुत्वकी अपेक्षा द्रव्यसे जघन्य आयु कर्मकी वेदना सबसे स्तोक है ॥ १२४ ॥

ज्ञानावरणीय आदि अन्य कर्मोंका प्रतिषेध करनेके लिये आयु पदका निर्देश किया है। क्षेत्रादिकका प्रतिषेध करनेके लिये [द्रव्य पदका निर्देश किया है। उत्कृष्ट

---

१ अप्रतौ 'दव्व' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु '[illegible]' इति पाठः।

तिरिक्खदव्वस्स उक्कस्सत्तुवलंभादो। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च, अण्णेगो पगदि विगदिसरूवेण गलिददव्वेणब्भहियकिंचूणपुव्वकोडितिभागमेत्तदव्व तप्पाओग्गजोगेण उक्कस्सबंधगद्धाए च तिरिक्खाउअं बंधिदूण जलचरेसुप्पज्जिय अंतोमुहुत्ते गदे एगसमएण कदलीघादं कादूण पुणो उक्कस्सजोगुक्कस्सबंधगद्धाहि णिरयाउअं बंधिय ट्ठिदो च, सरिसा। पुणो एदं जलचरदव्वं जोगोकड्डुक्कड्डणबंधगद्धाओ अस्सिदूण वड्ढाविदव्व[1] जाव भुंजमाणाउअदव्वमुक्कस्सं पत्तं ति। अथवा, दीवसिहापढमसमए चेव ओक्कड्डुक्कड्डण-जोगबंधगद्धाहि दव्वमुक्कस्सं काऊण पुणो गुणिदकम्मंसियणाणावरणीयविहाणेण ओदारेदव्व जाव तिरिक्खजलचरउक्कस्सदव्वं पत्तं ति। एत्थ एदेसिं पदेसट्ठाणाणं जे सामिणो जीवा तेसिं परूवणा पमाणं अप्पाबहुगेत्ति तीहि अणिओगद्दारेहि पण्णवणा कायव्वा। सा च सुगमा, णाणावरणीयपरूवणाए समाणत्तादो। णवरि आउअस्स जहण्णए उक्कस्सए वि ट्ठाणे जीवा असंखेज्जा। एवमंतोकदसंखा-ट्ठाण जीवसमुदाहारमजहण्णसामित्तं समत्तं।

तिर्यंच द्रव्यके उत्कृष्टता पायी जाती है। इस प्रकार बढ़कर स्थित हुआ, तथा दूसरा एक जीव प्रकृति व विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्यसे अधिक कुछ कम पूर्वकोटिके तृतीय भाग प्रमाण द्रव्य युक्त तिर्यंच आयुको तत्प्रायोग्य योग व उत्कृष्ट बन्धककालसे बांधकर जलचरोंमें उत्पन्न हो अन्तर्मुहूर्तके वीतनेपर एक समयमें कदलीघात करके फिर उत्कृष्ट योग और उत्कृष्ट बन्धककालसे नारकायुको बांधकर स्थित हुआ, दोनों सदृश हैं। फिर भुज्यमान आयु द्रव्यके उत्कृष्टताको प्राप्त होने तक इस जलचर द्रव्यको योग, अपकर्षण, उत्कर्षण व बन्धककालका आश्रय करके बढ़ाना चाहिये। अथवा, दीपशिखाके प्रथम समयमें ही अपकर्षण, उत्कर्षण, योग व बन्धककाल द्वारा द्रव्यको उत्कृष्ट करके फिर गुणितकर्मांशिक सम्बन्धी ज्ञानावरणीयके विधानसे तिर्यंच जलचर जीवका उत्कृष्ट द्रव्य प्राप्त होने तक उतारना चाहिये।

यहां इन प्रदेशस्थानोंके जो जीव स्वामी हैं उनकी प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व, इन तीन अनुयोगद्वारोंके द्वारा प्रज्ञापना करना चाहिये। वह सुगम है, क्योंकि, वह ज्ञानावरणीयकी प्ररूपणाके समान है। विशेष केवल इतना है कि आयुके जघन्य व उत्कृष्ट स्थानमें भी जीव असंख्यात हैं। इस प्रकार संख्या स्थान, व जीवसमुदाहारागर्भित अजघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ।

[1] ताप्रतौ 'बधाविदव्व' इति पाठ।

अप्पाबहुए त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥ १२३ ॥

अप्पाबहुए त्ति एदं जो इदि-सद्दो [सो] अप्पाबहुअस्स सरूवपयत्थ णाणावणणिमित्तं पउत्तो, इदरेहि अणियोगद्दारेहिंतो ववच्छेदट्ठं वा । तत्थ तिण्णि अणियोगद्दाराणि जहण्ण-उक्कस्स जहण्णुक्कस्सपदप्पाबहुअमेदेण । तत्थ अट्ठण्णं कम्माणं जहण्ण दव्वविसयमप्पाबहुअं जहण्ण [पद] प्पाबहुगं णाम । उक्कस्सदव्वविसयमुक्कस्सपदप्पाबहुगं णाम । तदुभयदव्वविसयं जहण्णुक्कस्सपदप्पाबहुगं णाम । ण च चउत्थभंगो अत्थि, अणुवलंभादो ।

जहण्णपदेण सव्वत्थोवा आउगवेयणा दव्वदो जहण्णिया ॥ १२४ ॥

णाणावरणीयादिकम्मपडिसेहट्ठं आउअणिद्देसो । खेत्तादिपडिसेहफलो [दव्वणिद्देसो ।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणामें जघन्य पद, उत्कृष्ट पद और जघन्योत्कृष्ट पद, इस प्रकार तीन अनुयोगद्वार हैं ॥ १२३ ॥

अप्पाबहुए त्ति यहां जो इति शब्द है वह अल्पबहुत्व एक स्वतन्त्र अधिकार है यह बतलानेके लिये अथवा दूसरे अनुयोगद्वारोंसे उसे अलग करनेके लिये प्रयुक्त हुआ है। इसके जघन्य उत्कृष्ट व जघन्योत्कृष्ट पदके भेदसे तीन अनुयोगद्वार हैं। उनमें आठ कर्मोंके जघन्य द्रव्य विषयक अल्पबहुत्वका नाम जघन्य-पद-अल्पबहुत्व है। उनके उत्कृष्ट द्रव्य विषयक अल्पबहुत्वको उत्कृष्ट-पद-अल्पबहुत्व कहते हैं। जघन्य व उत्कृष्ट द्रव्यको विषय करनेवाला अल्पबहुत्व जघन्योत्कृष्ट-पद अल्पबहुत्व कहलाता है। इन तीनके अतिरिक्त और कोई चतुर्थ भंग नहीं है क्योंकि, वह पाया नहीं जाता।

जघन्य-पद-अल्पबहुत्वकी अपेक्षा द्रव्यसे जघन्य आयु कर्मकी वेदना सबसे स्तोक है ॥ १२४ ॥

ज्ञानावरणीय आदि अन्य कर्मोंका प्रतिषेध करनेके लिये आयु पदका निर्देश किया है। क्षेत्रादिकका प्रतिषेध करनेके लिये [द्रव्य पदका निर्देश किया है। उत्कृष्ट

---

१ अप्रतौ 'हव' इति पाठः । २ अ-आ-काप्रतिषु 'दव्वदो' इति पाठः ।

* दे. ४९

उक्कस्सादिपडिसेहफलो] जहण्णणिद्देसो[1] । उवरि वुच्चमाणजहण्णदव्वेहिंतो एदमाउअ-दव्वं थोवमिदि जाणावणट्ठं सव्वत्थोवेत्ति वुत्तं । कधं सव्वत्थोवत्तं ? अंगुलस्स असंखेज्जदि-भागेण दीवसिहाए ओवट्टिय[2] किंचूणीकदेण पुणो जहण्णाउअबंधगद्धाए ओवट्टिदेण एगसमयपबद्धे भागे हिदे तत्थ एगभागमेत्तत्तादो ।

णामा-गोदवेदणाओ दव्वदो जहण्णियाओ दो वि तुल्लाओ असंखेज्जगुणाओ ॥ १२५ ॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीओ। कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदअंगुलस्स असंखेज्जदिभागत्तादो । अजोगि-चरिमसमए जहण्णदव्वम्मि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तसमयपबद्धा णामा-गोदाणमत्थि त्ति कधं णव्वदे ? खविदकम्मंसियस्स दिवड्ढगुणहाणिमेत्ता एइंदियसमयपबद्धा अत्थि त्ति

आदिका प्रतिषेध करनेके लिये] जघन्य पदका निर्देश किया है । आगे कहे जानेवाले कर्मोंके जघन्य द्रव्यकी अपेक्षा यह आयु कर्मका द्रव्य स्तोक है, इसके ज्ञापनार्थ 'सबसे स्तोक है' ऐसा कहा है ।

शंका—वह सबसे स्तोक कैसे है ।

समाधान—कारण यह कि आयु कर्मका जघन्य द्रव्य, दीपशिखासे अपवर्तित कर कुछ कम करके फिर जघन्य आयुबन्धककालसे अपवर्तित किये गये ऐसे अंगुलके असंख्यातवें भागका एक समयप्रबद्धमें भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध होता है, उतना मात्र है ।

द्रव्यसे जघन्य नाम व गोत्रकी वेदनायें दोनों ही आपसमें तुल्य होकर उससे असंख्यातगुणी हैं ॥ १२५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार अंगुलका असंख्यातवां भाग है जो असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणियोंके समयोंके बराबर है, क्योंकि, वह पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

शंका— अयोगीके अन्तिम समयमें जो जघन्य द्रव्य होता है उसमें नाम व गोत्रके समयप्रबद्ध पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र हैं, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—क्षपितकर्मांशिकके डेढ़ गुणहानि मात्र एकेन्द्रिय सम्बन्धी समय-प्रबद्ध हैं, इस प्रकारके गुरुके उपदेशसे वह जाना जाता है ।

---

१ ताप्रतौ 'खेत्तादिपडिसेहफलो जहण्ण (दव्व) णिद्देसो ' इति पाठः । २ अ-आ काप्रतिषु ' ओवट्टिया ' इति पाठः ।

गुरूवदेसादो । सयमादिगुणसेडीहि तण्णट्ठमिदि वोत्तुं ण सक्किज्जदे, तदसंखेज्जदिभागस्सेव पइट्ठादो । किमट्ठं णामा-गोदाणं तुल्लत्तं ?

आउअभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहिओ ।
आवरणमंतराए भागो मोहे वि अहिओ दु ॥ १८ ॥
सव्वुवरि वेयणीए भागो अहिओ दु कारणं किंतु ।
सुह-दुक्खकारणत्ता ट्ठिदिविसेसेण सेसाणं ॥ १९ ॥

इच्चेदेण णाएण तुल्लअप्पबहुत्तादो ।

णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयवेयणाओ दव्वदो जहण्णियाओ तिण्णि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥ १२६ ॥

एत्थ विसेसाहियपमाणं णामा-गोददव्वमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेग

शंका— संयमादि गुणश्रेणियों द्वारा उक्त द्रव्य चूंकि नष्ट हो चुका है अत एव उसकी यहां सम्भावना नहीं है ?

समाधान—ऐसा कहना शक्य नहीं है क्योंकि संयमादि गुणश्रेणियों द्वारा उसका असंख्यातवां भाग ही नष्ट हुआ है ।

शंका— नाम व गोत्रके द्रव्यकी समानता किसलिये है ?

समाधान— आयुका भाग सबसे स्तोक है नाम व गोत्रमें समान होकर वह आयुकी अपेक्षा अधिक है उससे अधिक भाग आवरण अर्थात् ज्ञानावरण दर्शनावरण व अन्तरायका है इससे अधिक भाग मोहनीयमें है । सबसे अधिक भाग वेदनीयमें है इसका कारण उसका सुख दुखमें निमित्त होना है । शेष कर्मोंके भागकी अधिकता उनकी अधिक स्थिति होनेके कारण है ॥ १८, १९ ॥ इस न्यायसे नाम व गोत्रका द्रव्य तुल्य अल्पबहुत्वके कारण समान है ।

द्रव्यसे जघन्य ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय व अन्तरायकी वेदनायें तीनों ही आपसमें तुल्य होकर नाम व गोत्रकी वेदनासे विशेष अधिक हैं ॥ १२६ ॥

यहां विशेष अधिकताका प्रमाण नाम-गोत्रके द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्ड प्रमाण है क्योंकि ऐसा स्वभाव है । एक

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'सव्वुवरि वेयणीए' ताप्रतौ 'सव्व (सु) वरि वेयणीए' इति पाठः ।
२ आउगभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहियो । घादितिये वि य तत्तो मोहे तत्तो तदो तदिये ॥ सुह-दुक्ख-णिमित्तादो बहुणिज्जरगो त्ति वेयणीयस्स । सव्वेहितो बहुगं दव्वं होदि त्ति णिद्दिट्ठं ॥ गो. क. १९२-१९३
३ अ-आ-काप्रतिषु 'तुल्लत्तवत्तादो' इति पाठः ।

खंडपमाणं होदि । कुदो ? सामावियादो । एगसमयपबद्धादो आउअसरूवेण थोवदव्वं परिणमदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थेगखंडेण अहियं होदूण णामा-गोदसरूवेण परिणमदि । णामदव्वमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थेगखंडेण [अहियं होदूण णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाण सरूवेण परिणमदि । णाणावरणभाग-मावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थेगखंडेण] तत्तो अहियं होदूण मोहणीय-सरूवेण परिणमदि । मोहभागमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थेगखंडेण तत्तो अहियं होदूण वेयणीयसरूवेण परिणमदि त्ति एस सहाओ । तदो आवलियाए असं-खेज्जदिभागेण णामदव्वसंचए खंडिदे तत्थेगखंडेण तत्तो अहियं तिण्हं घादिकम्माण जहण्णदव्वं होदि । सजोगिगुणसेडीए णामा-गोददव्वाण[2] जा णिज्जरा देसूणपुव्वकोडिं[3] जादा सा अप्पहाणा, णामा-गोददव्वं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडस्सेव गुणसेडिणिज्जराए णट्ठत्तादो ।

मोहणीयवेयणा दव्वदो जहण्णिया विसेसाहिया ॥ १२७ ॥

समयप्रबद्धमेंसे आयु स्वरूपसे स्तोक द्रव्य परिणमता है । उसको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्डसे अधिक होकर वह नाम-गोत्र स्वरूपसे परिणमता है । नामकर्मके द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्डसे [अधिक होकर वह ज्ञानावरण, दर्शनावरण व अन्तराय स्वरूपसे परिणमता है । ज्ञानावरणके भागको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्डसे] अधिक होकर मोहनीय स्वरूपसे परिणमता है । मोहनीयके भागको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्डसे अधिक होकर वेदनीय स्वरूपसे परिणमता है । यह इस प्रकारका स्वभाव है । इसलिये नामकर्म सम्बन्धी द्रव्यके संचयको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्डसे अधिक उक्त द्रव्य तीन घातिया कर्मोंका जघन्य द्रव्य होता है । सयोगी जिनके गुणश्रेणि द्वारा जो नाम गोत्र सम्बन्धी द्रव्यकी कुछ कम पूर्वकोटि तक निर्जरा हुई है वह गौण है, क्योंकि, नाम व गोत्र कर्मके द्रव्यको पल्योपमके असंख्यातवें भागासे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड ही गुणश्रेणि द्वारा नष्ट हुआ है ।

द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य मोहनीयकी वेदना उक्त तीन घातिया कर्मोंकी वेदनासे विशेष अधिक है ॥ १२७ ॥

१ कोष्ठकस्थोऽयं पाठो नोपलभ्यते ताप्रतौ । २ ताप्रतौ ' णामागोदाण दव्वाणं ' इति पाठ । ३ ताप्रतौ ' पुव्वकोडी ' इति पाठ ।

एत्थ विसेसपमाणं णाणावरणीयदव्वमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं। कुदो ? साभावियादो। हेट्ठिमगुणसेडीहिंतो असंखेज्जगुणाए खीणकसायगुणसेडीए तिण्णं घादिकम्माणं जादणिज्जरा अप्पहाणा, सग-सगदव्वं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडस्सेव णट्ठत्तादो।

वेयणीयवेयणा दव्वदो जहण्णिया विसेसाहिया ॥ १२८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? मोहदव्वमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तो। कुदो ? साभावियादो। कसाय-णोकसायदव्वं सव्वं पडिच्छिय ट्ठिदलोभसंजलणदव्वं सुहुमसांपराइयचरिमसमए जेण मोहणीयस्स जहण्णं जादं, वेदणीयस्स पुणो अजोगिस्स दुचरिमसमए वोच्छिण्णअसादावेदणीयसंतस्स चरिमसमए सादावेदणीयदव्वमेक्कं चेव घेत्तूण जहण्णं जादं, तेण वेयणीयजहण्णदव्वादो मोहणीयजहण्णदव्वेण संखेज्जगुणेण होदव्वमिदि ? ण, असादावेदणीयस्स गुणसेडिचरिमगोवुच्छाए उदयाभावेण थिउक्कसंकमेण

यहां विशेषका प्रमाण ज्ञानावरणके द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे वह एक खण्ड मात्र है, क्योंकि ऐसा स्वभाव है। अधस्तन गुणश्रेणियोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणी ऐसी क्षीणकषाय गुणश्रेणिके द्वारा हुई तीन घातिया कर्मोंकी निर्जरा गौण है क्योंकि अपने अपने द्रव्यको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड ही उसके द्वारा नष्ट हुआ है।

द्रव्यसे जघन्य वेदनीयकी वेदना विशेष अधिक है ॥ १२८ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? मोहनीयके द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे वह एक खण्ड मात्र है क्योंकि ऐसा स्वभाव है।

शंका— कषाय और नोकषाय रूप सब द्रव्यको ग्रहण कर स्थित संज्वलन लोभका द्रव्य चूंकि सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समयमें मोहनीयका जघन्य द्रव्य हुआ है किन्तु वेदनीय कर्मका द्रव्य अयोगीके द्विचरम समयमें असातावेदनीयके सत्त्वकी व्युच्छित्ति हो जानेपर उसके चरम समयमें केवल एक सातावेदनीयके ही द्रव्यको ग्रहण कर जघन्य हुआ है, इसीलिये वेदनीयके जघन्य द्रव्यकी अपेक्षा मोहनीयका जघन्य द्रव्य संख्यातगुणा होना चाहिये ?

समाधान— ऐसा नहीं है क्योंकि उदयका अभाव होनेसे स्तिबुक संक्रमणके द्वारा सातावेदनीय स्वरूपसे परिणत हुई असातावेदनीयकी गुणश्रेणि रूप अन्तिम गोपुच्छाके

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'विसेसपमाणमणाणावरण' इति पाठः। २ अ-आप्रत्योः 'मोहणीयस्स जहण्णं जादं वेदणीय पुणो' ताप्रतौ 'मोहणीयस्स जादं वेदणीयस्स जहण्णं पुणो' इति पाठः। ३ अ-आप्रत्योः 'थिउक्कसंकमेण' ताप्रतौ 'थिउक्कस्स (त्थु) कमेण' इति पाठः।

[समयपबद्धेहि आउअसव्वघएहि णामस्स गोदस्स वा दिवड्ढगुणहाणिमेत्त] समयपबद्धेसु ओवट्टिदेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो ।

णाणावरणीय दंसणावरणीय अंतराइयवेयणाओ दव्वदो उक्कस्सियाओ तिण्णि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥ १३१ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? हेट्ठिमदव्वे आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तो । कुदो ? साभावियादो । तिण्णं घादिकम्माणं पदेसस्स किमट्ठं तुल्लत्तं ? ण, तुल्लआयव्वयत्तादो । तं पि कुदो ? साभावियादो ।

मोहणीयवेयणा दव्वदो उक्कस्सिया विसेसाहिया ॥ १३२ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? हेट्ठिमदव्वे आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तो । कुदो ? साभावियादो । तीससागरोवमकोडाकोडीसु ट्ठिदीसु ट्ठिदपदेसपिंडादो उवरिमदससागरोवमकोडाकोडीसु ट्ठिदपदेसपिंडो अप्पहाणो, तीसकोडाकोडीसु सागरोवमेसु[1]

गुणहानि मात्र समयप्रबद्धोंको अपवर्तित करनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग पाया जाता है ।

द्रव्यसे उत्कृष्ट ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय व अन्तराय कर्मोंकी वेदनायें तीनों ही आपसमें तुल्य होकर उनसे विशेष अधिक हैं ॥ १३१ ॥

विशेष कितना है ? अधस्तन द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे वह एक खण्ड मात्र है क्योंकि ऐसा स्वभाव है ।

शंका— तीन घातिया कर्मोंके प्रदेशोंकी तुल्यता किसलिये है ?

समाधान— नहीं क्योंकि इन तीनोंके प्रदेशोंका आय व व्यय समान है ।

शंका— वह भी क्यों है ?

समाधान— क्योंकि ऐसा स्वभाव है ।

द्रव्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट मोहनीयकी वेदना उनसे विशेष अधिक है ॥ १३२ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? विशेषका प्रमाण अधस्तन द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड मात्र है क्योंकि ऐसा स्वभाव है । तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम स्थितियोंमें स्थित प्रदेशपिण्डसे ऊपर दस कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंमें स्थित प्रदेशपिण्ड अप्रधान है क्योंकि तीस

---

१ [illegible] प्रतौ 'उवरिमेसु' इति पाठः । २ [illegible] इति पाठः ।
३ [illegible] [ट्ठिदपदेसपिंडो (?)] [illegible] इति पाठः ।

सादावेदणीयसरूवेण परिणदाए सह सादावेदणीयचरिमगोवुच्छाए जहण्णत्तब्भुवगमादो। ण च सादावेदणीयचरिमगोवुच्छाए चेव वेदणीयजहण्णसामित्तं होदि त्ति णियमो, असादावेदणीयचरिमगोवुच्छाए वि जहण्णसामित्ते संते विरोहाभावादो। सजोगिगुणसेडिणिज्जराए गलिददव्वमप्पहाण, अजोगिचरिमसमयगुणसेडिगोवुच्छदव्वे असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलेहि खंडिदे तत्थ एगखंडपमाणत्तादो।

उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवा आउववेयणा दव्वदो[1] उक्कस्सिया ॥ १२९ ॥

कुदो? उक्कस्साउअबंधगद्धामेत्तसमयपबद्धपमाणत्तादो[2]। पगदि-विगदिसरूवेण णट्ठदव्वमप्पहाणं, आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तसमयपबद्धपमाणत्तादो।

णामा-गोदवेदणाओ दव्वदो उक्कस्सियाओ [दो वि तुल्लाओ] असंखेज्जगुणाओ ॥ १३० ॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो? संखेज्जावलियमेत्त-

---

साथ सातावेदनीयकी चरम गोपुच्छाके द्रव्यको जघन्य स्वीकार किया गया है। दूसरे, सातावेदनीयकी चरम गोपुच्छाके ही वेदनीयका जघन्य स्वामित्व होता है, ऐसा नियम भी नहीं है, क्योंकि, असातावेदनीयकी चरम गोपुच्छामें भी जघन्य स्वामित्वके होनेमें कोई विरोध नहीं है।

सयोग केवली सम्बन्धी गुणश्रेणिनिर्जरा द्वारा नष्ट हुआ द्रव्य यहां गौण है, क्योंकि, अयोग केवलीके चरम समय सम्बन्धी गुणश्रेणिगोपुच्छाके द्रव्यको पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलों द्वारा खण्डित करनेपर उसमेंसे वह एक खण्ड प्रमाण है।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा द्रव्यसे उत्कृष्ट आयुकी वेदना सबसे स्तोक है ॥ १२९ ॥

इसका कारण यह है कि वह उत्कृष्ट आयुबन्धककालके जितने समय हैं उतने मात्र समयप्रबद्ध प्रमाण है। प्रकृति व विकृति स्वरूपसे निर्जीर्ण द्रव्य यहां अप्रधान है, क्योंकि, वह आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र समयप्रबद्धोंके बराबर है।

द्रव्यसे उत्कृष्ट नाम व गोत्रकी वेदनायें दोनों ही समान होकर असंख्यातगुणी हैं ॥ १३० ॥

गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, संख्यात आवलियोंके बराबर आयु सम्बन्धी समयप्रबद्धोंसे नाम व गोत्रके वेद

---

१ अ-आप्रत्योः 'दव्वादो' इति पाठ। २ का ताप्रत्योः 'कुदो दोवक्कस्साउअ' इति पाठः।

[समयपबद्धेहि आउअसवगपरिणामस्स गोदस्स वा दिवड्ढगुणहाणिमेत्त] समयपबद्धेसु ओवट्टिदेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो ।

णाणावरणीय दंसणावरणीय अंतराइयवेयणाओ दव्वदो उक्कस्सियाओ तिण्णि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥ १३१ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? हेट्ठिमदव्वे आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तो । कुदो ? साभावियादो । तिण्णं घादिकम्माणं पदेसस्स किमट्ठं तुल्लत्तं ? ण, तुल्लायव्वयत्तादो । तं पि कुदो ? साभावियादो ।

मोहणीयवेयणा दव्वदो उक्कस्सिया विसेसाहिया ॥ १३२ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? हेट्ठिमदव्वे आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तो । कुदो ? साभावियादो । तीससागरोवमकोडाकोडीसु ट्ठिदीसु ट्ठिदपदेसपिंडादो उवरिमदससागरोवमकोडाकोडीसु ट्ठिदपदेसपिंडो अप्पहाणो, तीसकोडाकोडीसु सागरोवमेसु[1]

गुणहानि मात्र समयप्रबद्धोंको अपवर्तित करनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग पाया जाता है ।

द्रव्यसे उत्कृष्ट ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय व अन्तराय कर्मोंकी वेदनायें तीनों ही आपसमें तुल्य होकर उनसे विशेष अधिक हैं ॥ १३१ ॥

विशेष कितना है ? अधस्तन द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे वह एक खण्ड मात्र है क्योंकि ऐसा स्वभाव है ।

शंका— तीन घातिया कर्मोंके प्रदेशकी तुल्यता किसलिये है ?

समाधान— नहीं क्योंकि इन तीनोंके प्रदेशोंका आय व व्यय समान है ।

शंका— वह भी क्यों है ?

समाधान— क्योंकि ऐसा स्वभाव है ।

द्रव्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट मोहनीयकी वेदना उनसे विशेष अधिक है ॥ १३२ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? विशेषका प्रमाण अधस्तन द्रव्यको आवलिके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड मात्र है क्योंकि ऐसा स्वभाव है । तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम स्थितियोंमें स्थित प्रदेशपिण्डसे ऊपर दस कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंमें स्थित प्रदेशपिण्ड अप्रधान है क्योंकि तीस

---

१ [illegible] पत्र. प्रतिषु [illegible] । २ अ-आ-काप्रतिषु ... इति पाठः ।
३ अ-आ-काप्रतिषु 'कोडाकोडीसु ट्ठिदपदेसपिंडो सागरोवमेसु' ताप्रतौ 'कोडाकोडीसु [ट्ठिदपदेसपिंडो (?)] सागरोवमेसु' इति पाठः ।

पदिददव्वं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडपमाणत्तादो ।

वेदणीयवेयणा दव्वदो उक्कस्सिया विसेसाहिया ॥ १३३ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? हेट्ठिमदव्वमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तो । कुदो ? साभावियादो ।

जहण्णुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवा आउववेयणा दव्वदो जहण्णिया ॥ १३४ ॥

कुदो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण दीवसिहाए ओवट्टिय किंचूणं करिय जहण्णाउअबंधगद्धाए ओवट्टिदेण एगसमयपबद्धे भागे हिदे तत्थ एगभागत्तादो ।

सा चेव उक्कस्सिया असंखेज्जगुणा ॥ १३५ ॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? दीवसिहासरूवेण ट्ठिद-जहण्णदव्वेण एगसमयपबद्धमंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तेण संखेज्जावलिय-गुणिदसमयपबद्धमेत्तुक्कस्सदव्वे भागे हिदे अंगुलस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो ।

कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंमें पतित द्रव्यको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे वह एक खण्डके बराबर है ।

द्रव्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदनीयकी वेदना उससे विशेष अधिक है ॥ १३३ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अधस्तन द्रव्यको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे वह एक खण्ड प्रमाण है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

जघन्योत्कृष्ट पदसे द्रव्यकी अपेक्षा जघन्य आयु कर्मकी वेदना सबसे स्तोक है ॥ १३४ ॥

कारण यह कि वह दीपशिखासे अपवर्तित करके कुछ कम कर फिर जघन्य आयुबन्धककालसे अपवर्तित किये गये ऐसे अंगुलके असंख्यातवें भागका एक समयप्रबद्धमें भाग देनेपर उसमेंसे एक भाग प्रमाण है ।

उसकी ही उत्कृष्ट वेदना उससे असंख्यातगुणी है ॥ १३५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार अंगुलका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, एक समयप्रबद्धको अंगुलके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्ड मात्र जो दीपशिखा स्वरूपसे स्थित जघन्य द्रव्य है उसका संख्यात आवलियोंसे गुणित समयप्रबद्ध मात्र उसके ही उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर अंगुलका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है ।

णामा-गोदवेदणाओ दव्वदो जहण्णियाओ [दो वि तुल्लाओ] असंखेज्जगुणाओ ॥ १३६ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? आउअस्स उक्कस्सदव्वेण किंचूणदुगुणुक्कस्सबंधगद्धाए जोगगुणगारेण च गुणिदेगसमयपबद्धमेत्तेण दिवड्ढगुणहाणिगुणिदेगसमयपबद्धमेत्तणामा-गोदजहण्णदव्वे भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो ।

णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयवेदणाओ दव्वदो जहण्णियाओ तिण्णि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥ १३७ ॥

कारणं सुगमं ।

मोहणीयवेयणा दव्वदो जहण्णिया विसेसाहिया ॥ १३८ ॥

सुगममेदं ।

वेदणीयवेयणा दव्वदो जहण्णिया विसेसाहिया ॥ १३९ ॥

एदं पि सुगमं[1] ।

द्रव्यसे जघन्य नाम व गोत्र कर्मकी वेदनायें दोनों ही तुल्य होकर उससे असंख्यातगुणी हैं ॥ १३६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, कुछ कम दुगुणे उत्कृष्ट बन्धककाल और योगगुणकारसे गुणित एक समयप्रबद्ध मात्र आयु कर्मके उत्कृष्ट द्रव्यका डेढ़ गुणहानिगुणित एक समयप्रबद्ध मात्र नाम व गोत्र कर्मके जघन्य द्रव्यमें भाग देनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग पाया जाता है ।

द्रव्यसे जघन्य ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तरायकी वेदनायें तीनों ही तुल्य व उनसे विशेष अधिक हैं ॥ १३७ ॥

इसका कारण सुगम है ।

द्रव्यसे जघन्य मोहनीयकी वेदना उनसे विशेष अधिक है ॥ १३८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

द्रव्यसे जघन्य वेदनीयकी वेदना उससे विशेष अधिक है ॥ १३९ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

---

१ ताप्रतावेवम् । अ-आ-काप्रतिषु 'कारणं सुगमं वेदणीयवेयणा दव्वदो जहण्णिया विसेसाहिया सुगममेदं मोहणीयवेयणा दव्वदो जहण्णिया विसेसाहिया एदं पि सुगमं' इति पाठः ।

णामा-गोदवेदणाओ दव्वदो उक्कस्सियाओ दो वि तुल्लाओ असंखेज्जगुणाओ ॥ १४० ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? वेदणीयदव्वेण दिवड्ढ-गुणहाणिगुणिदेगेइंदियसमयपबद्धमेत्तेण जोगगुणगारगुणिददिवड्ढगुणहाणीए गुणिदेगेइंदिय-समयपबद्धमेत्ते[1] णामा-गोदुक्कस्सदव्वे भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो ।

णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयवेयणाओ दव्वदो उक्कस्सियाओ तिण्णि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥ १४१ ॥

सुगममेदं ।

मोहणीयवेयणा दव्वदो उक्कस्सिया विसेसाहिया ॥ १४२ ॥

एदं पि सुगमं ।

वेयणीयवेयणा दव्वदो उक्कस्सिया विसेसाहिया ॥ १४३ ॥

[एदं पि सुगमं ।]

एवमप्पाबहुअं सगंतोक्खित्तगुणगाराणियोगद्दारं समत्तं ।

द्रव्यसे उत्कृष्ट नाम व गोत्रकी वेदनायें दोनों ही तुल्य होकर उससे असंख्यातगुणी हैं ॥ १४० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि डेढ़ गुणहानिगुणित एकेन्द्रियके समयप्रबद्ध मात्र वेदनीयके द्रव्यका योगगुणकारसे गुणित डेढ़ गुणहानि द्वारा एकेन्द्रियके समयप्रबद्धको गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतने मात्र नाम व गोत्रके उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग पाया जाता है ।

द्रव्यसे उत्कृष्ट ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तरायकी वेदनायें तीनों ही तुल्य व उनसे विशेष अधिक हैं ॥ १४१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

द्रव्यसे उत्कृष्ट मोहनीयकी वेदना उनसे विशेष अधिक है ॥ १४२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

द्रव्यसे उत्कृष्ट वेदनीयकी वेदना उससे विशेष अधिक है ॥ १४३ ॥

[यह सूत्र भी सुगम है ।]

इस प्रकार गुणकारानुयोगद्वारगर्भित अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

---

१ अ-आ काप्रतिषु '-मेत्तेण ' इति पाठः ।

चूलिया
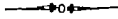
एत्तो जं भणिद 'बहुसो बहुसो उक्कस्साणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि जहण्णाणि च' एत्थ अप्पाबहुग दुविह जोगप्पाबहुग पदेस अप्पाबहुग चेव ॥ १४४ ॥

तीहि अणियोगद्दारेहि वेयणादव्वविहाणे वित्थारेण परूविय समत्ते संते किमट्ठमुवरिमो गंथो[1] वुच्चदे ? ण, उक्कस्ससामित्तं भण्णमाणे 'बहुसो बहुसो उक्कस्साणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि' त्ति भणिद, जहण्णसामित्ते वि भण्णमाणे 'बहुसो बहुसो जहण्णाणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि' त्ति भणिद । एदेसिं दोण्हं वि सुत्ताणमत्थो ण सम्ममवगदो । तदो दोसु वि सुत्तेसु सिस्साणं णिच्छयजणणट्ठमिमा अप्पाबहुगादिपरूवणा जोगविसया कीरदे । वेयणादव्वविहाणस्स चूलियापरूवणट्ठं उवरिमो गंथो आगदो त्ति वुत्तं होदि । का चूलिया ? सुत्तसूइदत्थपयासणं चूलिया णाम । एत्थ जोगस्स थोव-बहुत्ते

इससे पूर्वमें जो यह कहा गया है कि " बहुत बहुत बार उत्कृष्ट योगस्थानोंको प्राप्त होता है और बहुत बहुत बार जघन्य योगस्थानोंको भी प्राप्त होता है" यहां अल्प-बहुत्व दो प्रकार है— योगअल्पबहुत्व और प्रदेशअल्पबहुत्व ॥ १४४ ॥

शंका— तीन अनुयोगद्वारोंसे वेदनाद्रव्यविधानकी विस्तारसे प्ररूपणा करके उसके समाप्त हो जानेपर फिर आगेका ग्रन्थ किसलिये कहा जाता है ?

समाधान— नहीं क्योंकि, उत्कृष्ट स्वामित्वका कथन करते समय बहुत बहुत बार उत्कृष्ट योगस्थानोंको प्राप्त होता है ऐसा कहा है, जघन्य स्वामित्वका भी कथन करते हुए बहुत बहुत बार जघन्य योगस्थानोंको प्राप्त होता है ऐसा कहा गया है, इन दोनों ही सूत्रोंका अर्थ भली भांति नहीं जाना गया है इसलिये दोनों ही सूत्रोंके विषयमें शिष्योंको निश्चय करानेके लिये यह योगविषयक अल्पबहुत्व आदिकी प्ररूपणा की जाती है। अभिप्राय यह कि वेदनाद्रव्यविधानकी चूलिकाके प्ररूपणार्थ आगेके ग्रन्थका अवतार हुआ है।

शंका— चूलिका किसे कहते हैं ?

समाधान— सूत्रसूचित अर्थके प्रकाशित करनेका नाम चूलिका है।

यहां योगविषयक अल्पबहुत्वके ज्ञात हो जानेपर क्षपितकर्मांशिक और गुणित-

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'चरिमो' इति पाठः ।

अवगदे खविद-गुणिदकम्मंसियाणं जोगधारासंचारो णादुं सक्किज्जदि त्ति जीवसमासाओ अस्सिदूण जोगप्पाबहुगं वुच्चदे। कारणप्पाबहुगाणुसारी चेव कारियअप्पाबहुगमिदि जाणावणट्ठं पदेसप्पाबहुगं वुच्चदे। कारणपुव्वं कज्जमिदि णायादो ताव कारणप्पाबहुगं भणिस्सामो—

सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो ॥

एवं उत्ते सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स विग्गहगदीए वट्टमाणस्स जहण्णओ उववादजोगो घेत्तव्वो। पढमसमयआहारय पढमसमयतब्भवत्थस्स सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो किण्ण गहिदो? ण, णोकम्मसहकारिकारणबलेण जोगे उड्ढिमागदे तत्थ जोगस्स जहण्णत्तसंभवाभावादो।

बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥ १४६ ॥

को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो? बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स विग्गहगदीए वट्टमाणस्स जहण्णउववादजोगादो हेट्ठिमसुहु-

---

कर्मांशिककी योगधाराके संचारको जानना शक्य हो जाता है, अतः जीवसमासोंका आश्रय कर योगअल्पबहुत्वका कथन करते हैं। कारणअल्पबहुत्वके अनुसार ही कार्यअल्पबहुत्व होता है, इस बातको जतलानेके लिये प्रदेशअल्पबहुत्वका कथन करते हैं। कारणपूर्वक कार्य होता है, इस न्यायसे पहिले कारणअल्पबहुत्वको कहते हैं—

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य योग सबसे स्तोक है ॥ १४५ ॥

ऐसा कहनेपर उस भवके प्रथम समयमें स्थित हुआ व विग्रहगतिमें वर्तमान ऐसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगको ग्रहण करना चाहिये।

शंका— आहारक होनेके प्रथम समयमें रहनेवाले व उस भवके प्रथम समयमें स्थित हुए सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगको क्यों नहीं ग्रहण करते?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नोकर्म सहकारी कारणके बलसे योगके वृद्धिको प्राप्त होनेपर वहां योगकी जघन्यता सम्भव नहीं है।

बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य योग उससे असंख्यातगुणा है ॥ १४६ ॥

गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, उस भवके प्रथम समयमें स्थित व विग्रहगतिमें वर्तमान ऐसे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्य

---

१ आ-काप्रत्योः 'णादु' इति पाठ। २ ताप्रतौ 'तत्थ जहण्णत्त-' इति पाठः।

मेइंदियलद्धिअपज्जत्तउववादजोगट्ठाणेसु असंखेज्जजोगगुणहाणीणं संभवादो । तत्थतण-णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगुणिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे गुणगाररासी होदि त्ति वुत्तं होदि ।

बीइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं पुव्वं व परूवेदव्वं । सव्वत्थ लद्धिअपज्जत्तयस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स विग्गहगदीए वट्टमाणस्स[1] जहण्णओ उववादजोगो घेत्तव्वो ।

तीइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

को गुणगारो ? हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगुणिय अण्णोण्णब्भत्थरासी ।

चउरिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥ १४९

को गुणगारो ? जोगगुणगारो ।

पर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगसे अधस्तन सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकके उपपाद योगस्थानोंमें असंख्यात योगगुणहानियोंकी सम्भावना है । वहांकी नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन करके दुगुणा कर परस्पर गुणा करनेपर गुणकार राशि होती है यह अभिप्राय है ।

उससे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १४७ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । इसके कारणकी प्ररूपणा पहिलेके ही समान करना चाहिये । सब जगह उस भवमें स्थित होनेके प्रथम समयमें रहनेवाले व विग्रहगतिमें वर्तमान ऐसे लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगको ग्रहण करना चाहिये ।

उससे त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १४८ ॥

गुणकार क्या है ? अधस्तन नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन करके द्विगुणित कर परस्पर गुणा करनेपर जो राशि उत्पन्न हो वह यहां गुणकार है ।

उससे चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १४९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार यहां योगगुणकार अर्थात् पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'वट्टमाणस्स' इति पाठः ।

असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्ज-गुणो ॥ १५० ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एत्थ सुहुमेइंदियअपज्जत्ता दुविहा लद्धि[1]अपज्जत्त-णिव्वत्तिअपज्जत्तभेएण । तत्थ केसिमपज्जत्ताणमुक्कस्सजोगो घेप्पदे ? सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्ताणमुक्कस्सपरिणामजोगो घेत्तव्वो । कुदो ? णिव्वत्तिअपज्जत्ताणमुक्कस्सजोगो णाम उक्कस्सएयताणुवड्ढिजोगो, तत्तो एदस्स उक्कस्सपरिणामजोगस्स असंखेज्जगुणत्तदंसणादो । कुदो णव्वदे ? जहण्णुक्कस्सवीणादो ।

बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्ज-गुणो ॥ १५३ ॥

उससे असज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १५० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवा भाग है ।

उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १५१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवा भाग है ।

उससे सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १५२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवा भाग है ।

शंका— यहा लब्ध्यपर्याप्तक और निर्वृत्त्यपर्याप्तकके भेदसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तक दो प्रकार हैं । उनमें कौनसे अपर्याप्तकोंका उत्कृष्ट योग यहा ग्रहण किया जाता है ?

समाधान— सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट परिणाम योगको यहा ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंका उत्कृष्ट योग जो उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धि योग है उससे इसका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा देखा जाता है ।

शंका— यह कहासे जाना जाता है ?

समाधान— यह जघन्योत्कृष्ट वीणासे जाना जाता है ।

उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥१५३॥

---

१ ताप्रतौ 'दुविहा । लद्धि-' इति पाठः ।

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एत्थ वि उक्कस्सअपज्जत्तयस्स बादरेइंदियउक्कस्सपरिणामजोगो घेत्तव्वो, अइण्णुक्कस्सवीणादो बादरेइंदियउक्कस्सपरिणामजोगो णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सएयंताणुवड्डिजोगं पेक्खिदूण एदस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो।

सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एत्थ सुहुमेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगो घेत्तव्वो।

बादरेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एत्थ बादरेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगो घेत्तव्वो।

सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

बादरेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो[2] असंखेज्जगुणो ॥ १५७ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। यहां भी उक्कस्स अपर्याप्तक बादर एकेन्द्रियके उत्कृष्ट परिणामयोगको ग्रहण करना चाहिये क्योंकि जघन्य व उत्कृष्ट वीणाके अनुसार बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोगको देखते हुये बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तका यह उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा पाया जाता है।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य योग उससे असंख्यातगुणा है ॥ १५४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। यहां सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगको ग्रहण करना चाहिये।

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य योग उससे असंख्यातगुणा है ॥ १५५ ॥

गुणकार क्या है। गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। यहां बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगको ग्रहण करना चाहिये।

उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १५६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है।

उससे बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १५७ ॥

---

१ अ-आ-काप्रतिषु णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स इति पाठः। २ प्रतिषु जहण्णओजोगो इति पाठः।

असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्ज-गुणो ॥ १५० ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एत्थ सुहुमेइंदियअपज्जत्ता दुविहा लद्धि[1]अपज्जत्त-णिव्वत्तिअपज्जत्तभेएण । तत्थ केसिमपज्जत्ताणमुक्कस्सजोगो घेप्पदे ? सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्ताणमुक्कस्सपरिणामजोगो घेत्तव्वो । कुदो ? णिव्वत्तिअपज्जत्ताणमुक्कस्सजोगो णाम उक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगो, तत्तो एदस्स उक्कस्सपरिणामजोगस्स असंखेज्जगुणत्तदसणादो । कुदो णव्वदे ? जहण्णुक्कस्सवीणादो ।

बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्ज-गुणो ॥ १५३ ॥

उससे असञ्ज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १५० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवा भाग है ।

उससे संज्ञी पचेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १५१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवा भाग है ।

उससे सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १५२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवा भाग है ।

शंका— यहा लब्ध्यपर्याप्तक और निर्वृत्त्यपर्याप्तकके भेदसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तक दो प्रकार हैं । उनमें कौनसे अपर्याप्तकोंका उत्कृष्ट योग यहा ग्रहण किया जाता है ?

समाधान— सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट परिणाम योगको यहा ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंका उत्कृष्ट योग जो उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धि योग है उससे इसका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा देखा जाता है ।

शंका— यह कहासे जाना जाता है ?

समाधान— यह जघन्योत्कृष्ट वीणासे जाना जाता है ।

उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १५३ ॥

---

१ ताप्रतौ ' दुविहा । लद्धि- ' इति पाठः ।

असण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सजोगो असंखेज्जगुणो ॥
गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं सुगमं ।

सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥ १६२ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥१६३॥
गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एत्थ णिव्वत्तिपज्जत्तयजहण्णपरिणामजोगो घेत्तव्वो ।

तीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥१६४॥
गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । उवरि सव्वत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो चेव होदि त्ति घेत्तव्वं ।

चउरिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥ १६५॥
सुगमं ।

असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥ १६६ ॥

उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १६१ ॥
गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । इसका कारण सुगम है ।
उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १६२ ॥
गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।
उससे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १६३ ॥
गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । यहां निर्वृत्तिपर्याप्तके जघन्य परिणामयोगको ग्रहण करना चाहिये ।
उससे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १६४ ॥
गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । आगे सब जगह गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग ही होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।
उससे चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १६५ ॥
यह सूत्र सुगम है ।
उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १६६ ॥

सुगमं ।

सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

सुगमं ।

बीइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

सुगमं ।

तीइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो[1] ॥

सुगमं ।

चउरिंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

सुगमं ।

असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥ १७१ ॥

सुगमं ।

सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥ १७२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उससे संज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १६७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उससे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १६८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उससे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १६९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उससे चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १७० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उससे असज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १७१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १७२ ॥

---

१ आप्रती 'सखेज्जगुणो', ताप्रती '[अ] संखेज्जगुणो' इति पाठः ।

सुगमं ।

एवमेक्केक्कस्स जोगगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १७३ ॥

पुव्वुत्तासेसजोगट्ठाणाणं गुणगारस्स पमाणमेदेण सुत्तेण परूविदं । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो होदि त्ति कधं णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । ण च पमाणंतरमवेक्खदे, अणवत्थापसंगादो । एसो मूलवीणाए अप्पाबहुगालावो देसामासिओ[1], सूचिदपरूवणादिअणियोगद्दारत्तादो[3] । तेण एत्थ परूवणा पमाणमप्पाबहुगमिदि तिण्णि अणियोगद्दाराणि परूवेदव्वाणि । तत्थ परूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा— सत्तण्णं अपज्जत्तजीवसमासाणमत्थि उववादजोगट्ठाणाणि एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि परिणामजोगट्ठाणाणि च । सत्तण्णं णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासाणमत्थि उववादजोगट्ठाणाणि एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि चेव[4] । सत्तण्णं णिव्वत्तिपज्जत्तयाणमत्थि परिणामजोगट्ठाणाणि चेव[5] । परूवणा समत्ता ।

यह सूत्र सुगम है ।

इस प्रकार प्रत्येक जीवके योगका गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ॥ १७३ ॥

इस सूत्र द्वारा पूर्वोक्त समस्त योगस्थानोंके गुणकारका प्रमाण कहा गया है ।

शंका— पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार होता है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— वह इसी सूत्रसे जाना जाता है । यह सूत्र स्वयं प्रमाणभूत होनेसे किसी अन्य प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता क्योंकि ऐसा होनेपर अनवस्था दोषका प्रसंग आता है ।

यह मूल वीणाका अल्पबहुत्व आलाप देशामर्शक है क्योंकि वह प्ररूपणा आदि अनुयोगद्वारोंका सूचक है । इसलिये यहां प्ररूपणा प्रमाण और अल्पबहुत्व इन तीन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । उनमें प्ररूपणाको कहते हैं । वह इस प्रकार है— सात लब्ध्यपर्याप्त जीवसमासोंके उपपादयोगस्थान एकान्तानुवृद्धि योगस्थान और परिणामयोगस्थान होते हैं । सात निर्वृत्त्यपर्याप्त जीवसमासोंके उपपादयोगस्थान व एकान्तानुवृद्धियोगस्थान होते हैं । सात निर्वृत्तिपर्याप्तकोंके परिणामयोगस्थान ही होते हैं । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

---

१ ताप्रतौ 'ण च [पमाणं] पमाणंतर' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'देसामासओ' इति पाठः ।
३ ताप्रतौ 'अणियोगद्दारादो' इति पाठः । ४ अ-आ-काप्रतिषु 'सत्तण्णं जीवसमासाण', ताप्रतौ 'सत्तण्णं समासाण' इति पाठः । ५ अ-आ-काप्रतिषु 'च' इत्येतत् नोपलभ्यते ।

सुगमं ।

सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

सुगमं ।

बीइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

सुगमं ।

तीइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो[1] ॥

सुगमं ।

चउरिंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥

सुगमं ।

असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥ १७१ ॥

सुगमं ।

सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ जोगो असंखेज्जगुणो ॥ १७२ ॥

यह सूत्र सुगम है।

उससे संज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य योग असंख्यातगुणा है ॥ १६७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

उससे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १६८ ॥

यह सूत्र सुगम है।

उससे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १६९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

उससे चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १७० ॥

यह सूत्र सुगम है।

उससे असज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १७१ ॥

यह सूत्र सुगम है।

उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा है ॥ १७२ ॥

---

१ आप्रतौ 'सखेज्जगुणो', ताप्रतौ '[अ] संखेज्जगुणो' इति पाठः ।

सुगमं ।

एवमेक्केक्कस्स जोगगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १७३ ॥

पुव्वुत्तासेसजोगट्ठाणाणं गुणगारस्स पमाणमेदेण सुत्तेण परूविदं । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो होदि त्ति कधं णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । ण च पमाणंतरमवेक्खदे, अणवत्थापसंगादो । एसो मूलवीणाए अप्पाबहुगालावो देसामासिओ[1], सुचिदपरूवणादिअणिओगद्दारत्तादो[2] । तेण एत्थ परूवणा पमाणमप्पाबहुगमिदि तिण्णि अणिओगद्दाराणि परूवेदव्वाणि । तत्थ परूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा— सत्तण्णं लद्धिअपज्जत्तजीवसमासाणमत्थि उववादजोगट्ठाणाणि एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि परिणामजोगट्ठाणाणि च । सत्तण्णं णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासाणमत्थि उववादजोगट्ठाणाणि एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि च[4] । सत्तण्णं णिव्वत्तिपज्जत्तयाणमत्थि परिणामजोगट्ठाणाणि चेव । परूवणा समत्ता ।

यह सूत्र सुगम है ।

इस प्रकार प्रत्येक जीवके योगका गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ॥ १७३ ॥

इस सूत्र द्वारा पूर्वोक्त समस्त योगस्थानोंके गुणकारका प्रमाण कहा गया है ।

शंका— पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार होता है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— यह इसी सूत्रसे जाना जाता है । यह सूत्र स्वयं प्रमाणभूत होनेसे किसी अन्य प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता, क्योंकि, ऐसा होनेपर अनवस्था दोषका प्रसंग आता है ।

यह मूल वीणाका अल्पबहुत्व आलाप देशामर्शक है, क्योंकि वह प्ररूपणा आदि अनुयोगद्वारोंका सूचक है । इसलिये यहां प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व इन तीन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । उनमें प्ररूपणाको कहते हैं । वह इस प्रकार है— सात लब्ध्यपर्याप्त जीवसमासोंके उपपादयोगस्थान, एकान्तानुवृद्धियोगस्थान और परिणामयोगस्थान होते हैं । सात निर्वृत्त्यपर्याप्त जीवसमासोंके उपपादयोगस्थान व एकान्तानुवृद्धियोगस्थान होते हैं । सात निर्वृत्तिपर्याप्तकोंके परिणामयोगस्थान ही होते हैं । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

---

१ ताप्रतौ 'ण च [पमाणं] पमाणंतर-' इति पाठः । २ अ-आप्रत्योः 'देसामासओ' इति पाठः ।
३ ताप्रतौ 'अणिओगद्दारादो' इति पाठः । ४ अ-आ-काप्रतिषु 'सत्तण्णं अविवरपज्ज-', ताप्रतौ 'सत्तण्णं अपज्जत्त-' इति पाठः । ५ अ-आ-काप्रतिषु 'च' इत्येतत् नोपलभ्यते ।

संपहि पमाणं वुच्चदे । तं जहा— एदेसिं वुत्तसव्वजीवसमासाणं उववादजोगट्ठाणाणं एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणं परिणामजोगट्ठाणाणं च पमाण सेडीए असंखेज्जदिभागो । पमाणपरूवणा गदा ।

अप्पाबहुगं [दुविहं] जोगट्ठाणप्पाबहुगं जोगाविभागपडिच्छेदप्पाबहुगं चेदि । तत्थ जोगट्ठाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा— सव्वत्थोवाणि सत्तण्णं लद्धिअपज्जत्ताणमुववादजोगट्ठाणाणि । तेसिमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । परिणामजोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । सत्तण्णं णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासाण सव्वत्थोवाणि उववादजोगट्ठाणाणि । एगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । सत्तण्णं णिव्वत्तिपज्जत्ताण णत्थि[1] अप्पाबहुग, परिणामजोगट्ठाणाणि मोत्तूण तत्थ अण्णेसिं जोगट्ठाणाणमभावादो । सव्वत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एव जोगट्ठाणप्पाबहुगं समत्त ।

चोद्दसजीवसमासाणं जोगाविभागपडिच्छेदप्पाबहुगं तिविह सत्थाण परत्थाण सव्वपरत्थाणमिदि । तत्थ ताव सत्थाणं वत्तइस्सामो । त जहा— सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा । तस्सेव उक्कस्सुववादजोगट्ठाणस्स

अब प्रमाणकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है—इन उक्त सब जीवसमासोंके उपपादयोगस्थानों, एकान्तानुवृद्धियोगस्थानों और परिणामयोगस्थानोंका प्रमाण जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र है । प्रमाणकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्व दो प्रकार है— योगस्थानअल्पबहुत्व और योगाविभागप्रतिच्छेद-अल्पबहुत्व । उनमें योगस्थानअल्पबहुत्वको कहते हैं । वह इस प्रकार है— सात लब्ध्यपर्याप्तकोंके उपपादयोगस्थान सबसे स्तोक हैं । उनसे उनके एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणे हैं । उनसे परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणे हैं । सात निर्वृत्तिअपर्याप्त जीवसमासोंके उपपादयोगस्थान सबसे स्तोक हैं । उनसे एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणे हैं । सात निर्वृत्तिपर्याप्तकोंके अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, परिणामयोगस्थानोंको छोड़कर उनमें अन्य योगस्थानोंका अभाव है । गुणकार सब जगह पल्योपमका असंख्यातवा भाग है । इस प्रकार योगस्थानअल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

चौदह जीवसमासोंका योगाविभागप्रतिच्छेदअल्पबहुत्व तीन प्रकार है— स्वस्थान, परस्थान और सर्वपरस्थान । उनमें पहिले स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं । वह इस प्रकार है— सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीके उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'अत्थि', ताप्रतौ 'अ (ण) त्थि' इति पाठ ।

अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तदो तस्सेव जहण्णएयंताणुवड्ढिजोगस्स अविभाग
पडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तस्सुवरि तस्सेव उक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगस्स अविभागपडिच्छेदा
असंखेज्जगुणा । तस्सेव जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा ।
तस्सुवरि तस्सेव उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । एवं
सेसाण पि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासाण सत्थाणप्पाबहुगं णादव्वं ।

सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णउववादजोगट्ठाणस्स अविभाग
पडिच्छेदा । तस्सेव उक्कस्सउववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा ।
तदो तस्सेव जहण्णएयंताणुवड्ढिजोगस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । तदो[1] तस्सेव
उक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । एवं सेसाणं छण्णं णिव्वत्ति-
अपज्जत्ताणं सत्थाणप्पाबहुगं णादव्वं ।

सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभाग
पडिच्छेदा । तस्सेव उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । एवं
सेसाण पि छण्णं णिव्वत्तिपज्जत्ताणं सत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं ।

सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसीके जघन्य एकान्तानुवृद्धि
योगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । उसके आगे उसीके उत्कृष्ट
एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसके
ही जघन्य परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । उसके
आगे उसके ही उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे
हैं । इस प्रकार शेष लब्ध्यपर्याप्त जीवसमासोंके भी स्वस्थानअल्पबहुत्वका कथन
करना चाहिये ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अवि
भागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं । उनसे उसके ही उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान सम्बन्धी
अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसके ही जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग
सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । उनसे उसके ही उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धि
योग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार शेष छह निर्वृत्त्य
पर्याप्तोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अवि
भागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं । उनसे उसके ही उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी
अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार शेष छह निर्वृत्तिपर्याप्तकोंके
भी स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'एयंताणुवड्ढीजोगस्स' इति पाठः । २ मप्रतौ 'तदो तस्सेव' इत्येतत् नोपलभ्यते ।

संपहि पमाणं वुच्चदे । तं जहा— एदेसिं वुत्तसव्वजीवसमासाण उववादजोगट्ठाणाणं एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाण परिणामजोगट्ठाणाणं च पमाणं सेडीए असंखेज्जदिभागो । पमाणपरूवणा गदा ।

अप्पाबहुगं [दुविहं] जोगट्ठाणप्पाबहुगं जोगाविभागपडिच्छेदप्पाबहुगं चेदि । तत्थ जोगट्ठाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा— सव्वत्थोवाणि सत्तण्णं लद्धिअपज्जत्ताणमुववादजोगट्ठाणाणि । तेसिमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । परिणामजोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । सत्तण्णं णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासाण सव्वत्थोवाणि उववादजोगट्ठाणाणि । एगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । सत्तण्णं णिव्वत्तिपज्जत्ताण णत्थि[1] अप्पाबहुगं, परिणामजोगट्ठाणाणि मोत्तूण तत्थ अण्णेसिं जोगट्ठाणाणमभावादो । सव्वत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एव जोगट्ठाणप्पाबहुगं समत्तं ।

चोद्दसजीवसमासाणं जोगाविभागपडिच्छेदप्पाबहुगं तिविहं सत्थाण परत्थाण सव्वपरत्थाणमिदि । तत्थ ताव सत्थाणं वत्तइस्सामो । त जहा— सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा । तस्सेव उक्कस्सुववादजोगट्ठाणस्स

अब प्रमाणकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है—इन उक्त सब जीवसमासोंके उपपादयोगस्थानों, एकान्तानुवृद्धियोगस्थानों और परिणामयोगस्थानोंका प्रमाण जगश्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र है । प्रमाणकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्व दो प्रकार है— योगस्थानअल्पबहुत्व और योगाविभागप्रतिच्छेद-अल्पबहुत्व । उनमें योगस्थानअल्पबहुत्वको कहते हैं । वह इस प्रकार है— सात लब्ध्यपर्याप्तकोंके उपपादयोगस्थान सबसे स्तोक हैं । उनसे उनके एकान्तानुवृद्धि-योगस्थान असंख्यातगुणे हैं । उनसे परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणे हैं । सात निर्वृत्तिअपर्याप्त जीवसमासोंके उपपादयोगस्थान सबसे स्तोक हैं । उनसे एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणे हैं । सात निर्वृत्तिपर्याप्तकोंके अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, परिणामयोगस्थानोंको छोड़कर उनमें अन्य योगस्थानोंका अभाव है । गुणकार सब जगह पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । इस प्रकार योगस्थानअल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

चौदह जीवसमासोंका योगाविभागप्रतिच्छेदअल्पबहुत्व तीन प्रकार है— स्वस्थान, परस्थान और सर्वपरस्थान । उनमें पहिले स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं । वह इस प्रकार है— सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं । उनसे उसीके उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'अत्थि', ताप्रतौ 'अ (ण) त्थि' इति पाठ ।

उक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि तस्सेव उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। एवं चेव बादरेइंदियस्स वि परत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं।

सव्वत्थोवा बीइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा। [तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सुववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा।] तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। [तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सुववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा।] तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णएयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्स

एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे उसीके उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभाग प्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे निर्वृत्तिपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे निर्वृत्तिपर्याप्तकके उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार ही बादर एकेन्द्रिय जीवके भी परस्थान अल्पबहुत्वको कहना चाहिये।

द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभाग प्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं। [उससे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं।] उससे उसी निर्वृत्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। [उससे उसी निर्वृत्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं।] उससे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभाग प्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उससे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धि योगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उससे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उससे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यात

एत्तो परत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो— किं परत्थाणं ? बादर सुहुम-बि-ति-चउरिंदिय-असण्णि-सण्णिपचिंदियाणं मज्झे एक्केक्कस्स लद्धिअपज्जत्त-णिव्वत्तिअपज्जत्त-णिव्वत्तिपज्जत्तभेदभिण्णस्स उववाद-एयंताणुवड्ढि[1]-परिणामजोगट्ठाणाणं जहण्णुक्कस्स-भेदभिण्णाणं जमप्पाबहुगं त परत्थाण णाम। सव्वत्थोवा सुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णउववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा। तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्ण-उववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सउववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सउववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णएगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णएगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स[2] अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सएयंताणु-वड्ढिजोगट्ठाणस्स[3] अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स

अब यहांसे आगे परस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं—

शंका— परस्थान किसे कहते हैं ?

समाधान— बादर, सूक्ष्म, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय तथा असंज्ञी व संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके मध्यमें लब्ध्यपर्याप्त, निर्वृत्त्यपर्याप्त व निर्वृत्तिपर्याप्तके भेदसे भेदको प्राप्त हुए प्रत्येक जीवके जघन्य व उत्कृष्ट भेदसे भिन्न उपपाद, एकान्तानुवृद्धि एवं परिणाम योगस्थानोंका जो अल्पबहुत्व है वह परस्थान अल्पबहुत्व कहलाता है।

सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभाग-प्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं। उनसे उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उसके आगे उसके ही लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे उसी निर्वृत्त्यपर्याप्तकके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अवि-भागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे उसी निर्वृत्त्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट

१ अ-आ-काप्रतिषु 'वेयंताणुवड्ढि' इति पाठ । २ अ-ताप्रत्योः 'जोगस्स' इति पाठः। ३ अप्रतौ 'जोगस्स' इति पाठः।

उक्कस्सएयंताणुवड्डिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि तस्सेव उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि णिव्वत्ति-पज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सुवरि णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। एवं चेव बादरेइंदियस्स वि परत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं।

सव्वत्थोवा बीइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणस्स अविभाग-पडिच्छेदा। [तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सुववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा।] तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। [तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सुववादजोगट्ठाणस्स अविभाग पडिच्छेदा असंखेज्जगुणा।] तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णएयंताणुवड्डिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सएयंताणुवड्डिजोग-ट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणाम-जोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्स

एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे उसीके उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभाग प्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे निर्वृत्तिपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसके आगे निर्वृत्तिपर्याप्तकके उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार ही बादर एकेन्द्रिय जीवके भी परस्थान अल्पबहुत्वको कहना चाहिये।

द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभाग प्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं। [उससे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं।] उससे उसी निर्वृत्त्यपर्याप्तकके जघन्य उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। [उससे उसी निर्वृत्त्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट उपपादयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं।] उससे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभाग प्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उससे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धि योगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उससे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उससे उसी लब्ध्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यात

परिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णएयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव णिव्वत्ति-अपज्जत्तयस्स उक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा।[1] एवं चेव तीइंदियादीणं[2] पि परत्थाणअप्पाबहुगं जाणिदूण भाणिदव्वं।

एत्तो सव्वपरत्थाणप्पाबहुगं तिविहं— जहण्णयमुक्कस्सयं जहण्णुक्कस्सयं चेदि। तत्थ जहण्णप्पाबहुगं भणिस्सामो। तं जहा— सव्वत्थोवं सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणं। सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्ज-गुणं। बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बादरेइंदियणिव्वत्ति-अपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणं असंखेज्जगुणं। बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववाद-जोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्त-

---

गुणे हैं। उनसे उसी निर्वृत्त्यपर्याप्तकके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे उसी निर्वृत्त्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट एकान्तानु-वृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे उसी निर्वृत्ति पर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे उसी निर्वृत्तिपर्याप्तकके उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार ही त्रीन्द्रिय आदि जीवोंके भी परस्थान अल्पबहुत्वको जानकर कहना चाहिये।

यहां सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व तीन प्रकार है— जघन्य, उत्कृष्ट और जघन्योत्कृष्ट। उनमें जघन्य अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान सबसे स्तोक है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय

---

१ आप्रतौ 'तस्सेव लद्धिअपज्ज० उक्क० एवं तस्सेव' इति पाठः। २ अ आ काप्रतिषु 'तीइंदियाण' इति पाठ।

यस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणु-

---

निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एका

१ [illegible]
२ [illegible]

परिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णएयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव णिव्वत्ति-अपज्जत्तयस्स उक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणस्स अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। [1]एवं चेव तीइंदियादीणं[2] पि परत्थाणअप्पबहुगं जाणिदूण भाणिदव्वं।

एत्तो सव्वपरत्थाणप्पाबहुगं तिविहं— जहण्णयमुक्कस्सयं जहण्णुक्कस्सयं चेदि। तत्थ जहण्णप्पाबहुगं भणिस्सामो। तं जहा— सव्वत्थोवं सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणं। सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्ज-गुणं। बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बादरेइंदियणिव्वत्ति-अपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणं असंखेज्जगुणं। बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववाद-जोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्त-

गुणे हैं। उनसे उसी निर्वृत्त्यपर्याप्तकके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे उसी निर्वृत्त्यपर्याप्तकके उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे उसी निर्वृत्ति पर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे उसी निर्वृत्तिपर्याप्तकके उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार ही त्रीन्द्रिय आदि जीवोंके भी परस्थान अल्पबहुत्वको जानकर कहना चाहिये।

यहां सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व तीन प्रकार है— जघन्य, उत्कृष्ट और जघन्योत्कृष्ट। उनमें जघन्य अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान सबसे स्तोक है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय

१ आप्रतौ 'तस्सेव लद्धिअपज्ज० उक्क० एवं तस्सेव' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'तीइंदियाण' इति पाठः।

पज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णुववादजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। सुहुमेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बादरेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णपरिणामजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणु-

निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एका-

१ अ-आ-काप्रतिषु [illegible] ताप्रतौ [illegible] इति पाठः।
२ ताप्रतौ 'असंखेज्जगुण' इति पाठः।

वड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्ज-गुणं। चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। असण्णि-पंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। सण्णिपंचिंदिय-लद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णमेगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणमसंखेज्जगुणं। बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। तीइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। सण्णिपंचिं-दियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्त-यस्स जहण्णओ एगंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। तीइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एगंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एगंताणु-वड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एगंताणुवड्ढि-जोगो असंखेज्जगुणो। [सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एगंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो।] बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियणिव्वत्ति

न्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्य पर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगस्थान असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्य-पर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। [उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है।] उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणाम-

पज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । एवं जहण्णचीणालावो समत्तो ।

एत्तो उक्कस्सचीणालावं वत्तइस्सामो । तं जहा — सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो । सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णि-

---

योग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणाम योग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । इस प्रकार जघन्य चीणालाप समाप्त हुआ ।

अब यहांसे आगे उत्कृष्ट चीणालापकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग सबसे स्तोक है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी

---

१ प्रतिषु एक्कोत्त इति पाठः । २ तामप्रतौ गौरवभयात् अ-आ-काप्रतिषु, ताम्रप्रतौ एकस्मात् पद, ताम्री पौनरुक्त्यमिति ।

पंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। सण्णिपंचिंदिय-लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। सण्णिपंचिंदियणिव्वत्ति-अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो। सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एगंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो। सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एगंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो। बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डि-जोगो असंखेज्जगुणो। बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो। सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। सुहुमेइंदिय-णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स[1] उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। बादरेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्त-यस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो। तीइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणु-वड्डिजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो अस-

पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्य-पर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्य-पर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय

१ ताप्रतौ 'णिव्वत्ति [अ] पज्ज०' इति पाठः।

खेज्जगुणो। सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियणिव्वत्ति-अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। बीइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। तीइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो।

लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। इससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। इससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। इससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। इससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। इससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। इससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। इससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। इससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। इससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। इससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। इससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। इससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणाम योग असंख्यातगुणा है। इससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। इससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग

१ [illegible]

सण्णिपचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । एवमुक्कस्स-वीणालावो समत्तो ।

संपहि जहण्णुक्कस्सप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा— सव्वत्थोवो[1] सुहुमेइंदिय-लद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो । सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । [2]सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदिय-णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । [3]बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदिय[4]लद्धिअप-ज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ

असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । इस प्रकार उत्कृष्ट वीणालाप समाप्त हुआ ।

अब जघन्योत्कृष्ट अल्पबहुत्वको कहते हैं । वह इस प्रकार है— सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग सबसे स्तोक है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्य पर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्य-पर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यात-

---

१ सुहुमगलद्धिजहण्णं तण्णिव्वत्तीजहण्णयं तत्तो । लद्धिअपुण्णुक्कस्सं बादरलद्धिस्स अवरमदो ।। गो. क. २३३

२ णिव्वत्तिसुहुमजेट्ठं बादरणिव्वत्तियस्स अवरं तु । बादरलद्धिस्स वरं बीइंदियलद्धिगजहण्णं ॥ गो. क. २३४.

३ बादरणिव्वत्तिवरं णिव्वत्तिबिइंदियस्स अवरमदो । एवं बि-ति बि ति ति-च ति-च-प च विमणो होदि चउ-मिमणो ॥ गो. क. २३५. ४ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ काप्रतिषु 'तेइंदिय', ताप्रतौ 'ते [बे] इंदिय' इति पाठः ।

उववादजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियणिव्वत्ति[1]अपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो ।

गुणा है । उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपाद

---

१ ताप्रतौ 'असंखिदिय (असण्णिपंचिंदिय) णिव्वत्ति' इति पाठः । २ [illegible] ॥ गो. क. २४६.

सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ उववादजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो । तदो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि जोगट्ठाणाणि अंतरिदूण सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । तदो

योग असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट उपपादयोग असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे आगे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थानोंका अन्तर करके सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणाम योग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यात-

१ सण्णिस्सुववादवरं णिव्वत्तिगदस्स सुहुमजीवस्स । एयंतवड्ढिअवरं लद्धिदरे थूल थूले य ॥ गो. क. २३७

२ तह सुहुम सुहुमजेट्ठं तो बादर-बादरे वरं होदि । अंतरमवरं लद्धिगसुहुमिदर वरं पि परिणामे ॥ गो. क. २३८

३ अंतरमुवरी वि पुणो तप्पुण्णाणं च उवरिं अंतरियं । एयंतवड्ढिठाणा तसपणलद्धिस्स अवर-वरा ॥ गो. क. २३९

सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तं होदूण सुहुमेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । सुहुमेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । बादरेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । तदो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तं अंतरं होदूण बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णएयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियलद्धि

गुणा है। उससे आगे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र अन्तर होकर सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्ति पर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्ति पर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय निर्वृत्ति पर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे बादर एकेन्द्रिय निर्वृत्ति पर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। इसके आगे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र अन्तर होकर द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे

---

१ अ-आ-काप्रतिषु सेडूण हेट्ठदरं मेत्तकम्मत्ते । २ ताप्रतौ णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः जहण्णपरिणाम इति पाठः। ४ ताप्रतौ जहण्णएयंताणु इति पाठः।

अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। तदो सेडीए असंखेज्जदि मेत्तजोगट्ठाणाणि अंतरिदूण बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्ज तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियलद्धिअप यस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जह परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणाम असंखेज्जगुणो। बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्ज तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियलद्धि ज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्ज उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स उक्क परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। तदो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजोगट्ठाणाणि अंत बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। तेइंदियणिव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्ज जहण्णओ एयंताणुवड्ढिजोगो असंखेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्ज

संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उ आगे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थानोंका अन्तर करके द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका ज परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परि योग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणाम असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका जघन्य परिणाम असंख्यातगुणा है। उससे द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख गुणा है। उससे त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा उससे चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उ असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उ संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थानोंका अन्तर करके द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्त जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका ज एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका ज एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है। उससे असंज्ञी पचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका ज

---

१ लद्धी-णिव्वत्तीणं परिणामेयंतवड्ढिठाणाओ। परिणामट्ठाणाओ अंतर-अंतरिय उवरुवरिं॥ गो. क. २४०

जहण्णओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहण्णओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ एयंताणुवड्डिजोगो असंखेज्जगुणो । तदो सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजोगट्ठाणाणि[१] अंतरं होदूण बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो । चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असं-

एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकका उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणा है । उससे आगे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थानोंका अन्तर होकर द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका जघन्य परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है । उससे असंज्ञी पंचेन्द्रिय

---

१ ताप्रतौ 'कदिकसम' इति पाठः । २ अ-का-प्रत्योः 'ठाणे' इति पाठः ।

खेज्जगुणो। असण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ परिणामजोगो असंखेज्जगुणो। गुणगारो सव्वत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो होंतो वि अप्पणो इच्छिदजोगादो हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाओ विरलेदूण विग करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्तो होदि[1]। एसो गुणगारो चदुण्णं पि वीणापदाणं[2] वत्तव्वो। एवं जहण्णुक्कस्सा वीणा[3] समत्ता।

उववादजोगो णाम कत्थ होदि? उप्पण्णपढमसमए चेव[4]। केवडिओ तस्स कालो? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ[5]। उप्पण्णबिदियसमयप्पहुडि जाव सरीरपज्जत्तीए अपज्जत्तयदचरिमसमओ ताव एगंताणुवड्ढिजोगो होदि[6]। णवरि लद्धिअपज्जत्ताणमाउअबंधपाओग्गकाले सगजीविदतिभागे परिणामजोगो होदि। हेट्ठा एगंताणुवड्ढिजोगो चेव। लद्धिअपज्जत्ताणमाउअबंधकाले चेव परिणामजोगो होदि त्ति के वि भणंति। तण्ण घडदे, परिणामजोगे

निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। उससे संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकका उत्कृष्ट परिणामयोग असंख्यातगुणा है। गुणकार सब जगह पल्योपमका असंख्यातवां भाग होकर भी वह अपने इच्छित योगसे नीचेकी नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके उनकी अन्योन्याभ्यस्त राशि प्रमाण होता है। यह गुणकार चारों ही वीणापदोंके कहना चाहिये। इस प्रकार जघन्योत्कृष्ट वीणा समाप्त हुई।

शंका— उपपादयोग कहांपर होता है?

समाधान— वह उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही होता है।

शंका— उसका काल कितना है?

समाधान—उसका जघन्य व उत्कृष्ट काल एक समय मात्र है।

उत्पन्न होनेके द्वितीय समयसे लेकर शरीरपर्याप्तिसे अपर्याप्त रहनेके अन्तिम समय तक एकान्तानुवृद्धियोग होता है। विशेष इतना है कि लब्ध्यपर्याप्तकोंके आयुबन्धके योग्य कालमें अपने जीवितके त्रिभागमें परिणामयोग होता है। उससे नीचे एकान्तानुवृद्धियोग ही होता है।

लब्ध्यपर्याप्तकोंके आयुबन्धकालमें ही परिणामयोग होता है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। किन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि, इस प्रकारसे जो जीव परिणामयोगमें स्थित है व उपपादयोगको नहीं प्राप्त हुआ है उसके एकान्तानुवृद्धियोगके साथ

१ एदेसिं ठाणाओ पल्लासंखेज्जभागगुणिदकमा। हेट्ठिमगुणहाणिसला अण्णोण्णब्भत्थमेत्त तु॥ गो क २४१

२ प्रतिषु 'पधाण' इति पाठ। ३ आप्रतौ 'वीणालावा' इति पाठः। ४ उववादजोगठाणा भवादिसमयट्ठियस्स अवर-वरा। विग्गह इजुगइगमणे जीवसमासे मुणेयव्वा॥ गो क २१९

५ अवरुक्कस्सेण हवे उववादेयंतवड्ढिठाणाण। एक्कसमय हवे पुण इदरेसिं जाव अट्ठो त्ति॥ गो क.२४२.

६ एयंतवड्ढिठाणा उभयट्ठाणाणमंतरे होंति। अवर-वरट्ठाणाओ सगकालादिम्हि अंतम्हि॥ गो क २२२.

ट्ठिदस्स अपज्जत्तवादजोगस्स एयंताणुवड्ढिजोगेण परिणामविरोहादो। एयंताणुवड्ढिजोगकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। पज्जत्तपढमसमयप्पहुडि उवरि सव्वत्थ परिणामजोगो चेव। णिव्वत्तिअपज्जत्ताणं णत्थि परिणामजोगो[1]। एवं जोगअप्पाबहुगं समत्तं। संपहि चउण्णमप्पाबहुगाणमेदाओ संदिट्ठीओ—

एदेसु सुहुमणिगोदादिसण्णिपंचिंदिया त्ति[2] लद्धिअपज्जत्ताणं जहण्णउववादजोगा। सो जहण्णउववादजोगो[3] कस्स होदि? पढमसमयतब्भवत्थस्स विग्गहगदीए वट्टमाणस्स। सो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण उक्कस्सेण[4] य एगसमओ। विदियादिसु समएसु एयंताणुवड्ढिजोगपउत्तीदो। सरीरगहिदे[5] जोगो वड्ढदि त्ति विग्गहगदीए सामित्तं दिण्णं जहण्णयं।

परिणामके होनेमें विरोध आता है। एकान्तानुवृद्धियोगका जघन्य व उत्कृष्ट काल एक समय मात्र है। पर्याप्त होनेके प्रथम समयसे लेकर आगे सब जगह परिणामयोग ही होता है। निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंके परिणामयोग नहीं होता। इस प्रकार योगअल्पबहुत्व समाप्त हुआ। अब चार अल्पबहुत्वोंकी ये संदृष्टियां हैं— (मूलमें देखिये)।

इनमें सूक्ष्म निगोदको आदि लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्यन्त लब्ध्यपर्याप्तकोंके जघन्य उपपादयोग होते हैं।

शंका— वह जघन्य उपपादयोग किसके होता है?

समाधान— विग्रहगतिमें वर्तमान जीवके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें जघन्य उपपादयोग होता है।

शंका— वह कितने काल होता है?

समाधान— वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय रहता है क्योंकि, द्वितीयादि समयोंमें एकान्तानुवृद्धियोग प्रवृत्त होता है।

शरीर ग्रहण कर लेनेपर चूंकि योग वृद्धिको प्राप्त होता है अत एव विग्रह

१ परिणामजोगट्ठाणा सरीरपज्जत्तगादु चरिमो त्ति। लद्धिअपज्जत्ताणं चरिमतिभागम्हि बोद्धव्वा ॥ गो. क. २२२
२ प्रतिषु 'पंचिदियत्ति' इति पाठः। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'जहण्णउववादो' ताप्रतौ 'जहण्णउववादजोगो' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'उक्कस्सेण एगसमओ' इति पाठः। ५ प्रतिषु 'सीगो' इति पाठः।

सुहुम बादराणं णिव्वत्तिपज्जत्तयाणमेदे जहण्णया परिणामजोगा। सो जहण्णपरिणामजोगो तेसिं कत्थ होदि ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पढमसमए चेव होदि। केवचिरं कालादो ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारि समया। तस्सुवरि तेसिं चेव उक्कस्सिया परिणामजोगा। सो कस्स होदि। परपरपज्जत्तीए पजत्तयदस्स। सो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वे समया। तदुवरि सुहुम-बादराणं लद्धिअपज्जत्तयाणमुक्कस्सया परिणामजोगा। ते कत्थ होंति ? आउअबंध-पाओग्गपढमसमयादो जाव भवट्ठिदीए चरिमसमओ त्ति एत्थुद्देसे होंति। आउअबंध-पाओग्गकालो[2] केत्तिओ ? सगजीविदतिभागस्स पढमसमयप्पहुडि जाव विस्समणकालअणंतर-

---

गतिमें जघन्य स्वामित्व दिया गया है। सूक्ष्म व बादर निर्वृत्तिपर्याप्तकोंके ये जघन्य परिणामयोग हैं।

शंका— वह जघन्य परिणामयोग उनके कहांपर होता है ?

समाधान— वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें ही होता है।

शंका— वह कितने काल रहता है ?

समाधान— वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय रहता है।

उससे आगे उनके ही उत्कृष्ट परिणामयोग होते हैं।

शंका— वह किसके होता है ?

समाधान— वह परम्परापर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवके होता है।

शंका— वह कितने काल होता है।

समाधान— वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होता है।

उसके आगे सूक्ष्म व बादर लब्ध्यपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट परिणामयोग होते हैं।

शंका— वे कहां होते हैं।

समाधान— वे आयुबन्धके योग्य प्रथम समयसे लेकर भवस्थितिके अन्तिम समय तक इस उद्देशमें होते हैं।

शंका— आयुबन्धके योग्य काल कितना है ?

समाधान— अपने जीवितके तृतीय भागके प्रथम समयसे लेकर विश्रमणकालके अनन्तर अधस्तन समय तक आयुबन्धके योग्य काल माना गया है।

---

१ ताप्रतौ 'परिणामजोगा ... ।' इति पाठः। २ अ-आ काप्रतिषु '-काले' इति पाठः।

हेट्ठिमसमओ त्ति। सो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। बेइंदियादि जाव सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तओ त्ति एदेसिं जहण्णपरिणामजोगा एदे— । सो कत्थ होदि? पढमसमयपज्जत्तयदम्मि। सो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारिसमओ होदि।

बीइंदियादि जाव सण्णिपंचिंदियो त्ति एदेसिं णिव्वत्तिअपज्जत्तयाणमेदे उक्कस्सया एगंताणुवड्ढिजोगा। सो एयंताणुवड्ढिजोगो उक्कस्सओ कत्थ घेप्पदि? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो होहदि त्ति ट्ठिदम्मि घेप्पइ। केवचिरं कालादो एयंताणुवड्ढिजोगो होदि? जहण्णुक्कस्सेण एगो समओ। बेइंदियादि जाव सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तओ त्ति एदेसिं

शंका— एक योग कितने काल होता है?

समाधान— वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होता है।

द्वीन्द्रियको आदि लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तक तक इनके ये जघन्य परिणामयोग होते हैं (संदृष्टि मूलमें देखिये)।

शंका— वह कहांपर होता है?

समाधान— वह पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें होता है।

शंका— वह कितने काल होता है?

समाधान— वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय होता है।

द्वीन्द्रियको आदि लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तक इन निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंके ये उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग होते हैं।

शंका— यह उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग कहांपर ग्रहण किया जाता है?

समाधान— वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होगा इस प्रकार स्थित जीवमें ग्रहण किया जाता है।

शंका— एकान्तानुवृद्धियोग कितने काल होता है?

समाधान— वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होता है।

द्वीन्द्रियको आदि लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तक तक इनके ये उत्कृष्ट

---

१ [illegible] एदेसिं णिव्वत्तिअपज्जत्तयाणमेदे उक्कस्स-उ(ए)गंताणुवड्ढिजोगा। सो इति पाठः। २ [illegible] [illegible] १ अ-आ-काप्रतिषु घेप्पदि [illegible] [illegible] घेप्पदि [सरीर] [illegible] इति पाठः।
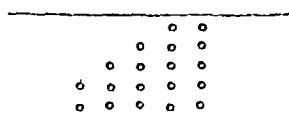
मेदे उक्कस्सपरिणामजोगा[1]— । सो कस्स होदि ? परंपरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स[2] । सो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वे समया[3] । एसा मूलवीणा णाम ।

सुहुमादिसण्णिपंचिंदिओ त्ति लद्धिअपज्जत्ताण जहण्णया उववादजोगा एदे— । सो कस्स होदि ? पढमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगस्स । केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण उक्कस्सेण य एगसमओ[4] । सुहुमादिसण्णिपंचिंदियणिव्वत्ति-

परिणामयोग होते हैं । (संदृष्टि मूलमें देखिये) ।

शंका— वह किसके होता है ?

समाधान— वह परम्परापर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवके होता है ।

शंका— वह कितने काल होता है ?

समाधान— वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होता है ।

यह मूलवीणा कहलाती है ।

सूक्ष्मसे लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तक लब्ध्यपर्याप्तकोंके ये जघन्य उपपादयोग होते हैं (संदृष्टि मूलमें देखिये) ।

शंका— वह किसके होता है ?

समाधान— वह तद्भवस्थ हुए जघन्य योगवाले जीवके प्रथम समयमें होता है ।

शंका— वह कितने काल होता है ?

समाधान— वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होता है ।

सूक्ष्मको आदि लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिअपर्याप्तकोंके ये जघन्य उपपाद-

१ अ-आ-काप्रतिषु 'जोगो' इति पाठः । २ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु 'परंपरपज्जत्तयदस्स' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'वेसमओ' इति पाठः । ४ ताप्रतौ 'जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ' इति पाठः ।

अप्पज्जत्ताणं एदे जहण्णया उववादजोगा—

एदे कस्स होंति ? पढमसमयतब्भवत्थस्स विग्गहगईए वट्टमाणस्स । केवचिरं कालादो होंति ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ ।

सुहुम-बादराणं णिव्वत्तिपज्जत्तयाणमेदे जहण्णया एयंताणुवड्ढिजोगा ▽ △* । सो कस्स होदि ? बिदियसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स । सो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण उक्कस्सेण य एगसमओ भवदि[१] ।

सुहुम-बादराणं णिव्वत्तिअपज्जत्तयाणमेदे जहण्णया एयंताणुवड्ढिजोगा ▽ △ । सो कस्स होदि ? बिदियसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स । सो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ ।

योग हैं (संदृष्टि मूलमें देखिये) ।

शंका— ये किसके होते हैं ?

समाधान— ये विग्रहगतिमें वर्तमान जीवके तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें होते हैं ।

शंका— ये कितने काल होते हैं ?

समाधान— ये जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होते हैं ।

सूक्ष्म व बादर निर्वृत्तिपर्याप्तकोंके ये जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग हैं (मूलमें) ।

शंका— वह किसके होता है ?

समाधान— वह तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें जघन्य योगवालेके होता है ।

शंका— वह कितने काल होता है ?

समाधान— जघन्य व उत्कर्षसे वह एक समय होता है ।

सूक्ष्म व बादर निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंके ये जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग हैं (मूलमें) । वह किसके होता है ? वह तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें वर्तमान जघन्य योगवालेके होता है । वह कितने काल होता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होता है ।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु [illegible] इत्येतत्पदं नास्ति ।

* पृ. ६, ५४

सुहुम-बादराणं लद्धिअपज्जत्तयाणमेदे जहण्णया परिणामजोगा ० ▽ △ ✱।[1] ते कस्स होंति ? परभवियाउअबंधपाओग्गपढमसमयप्पहुडि उवरिमभवट्ठिदीए वट्टमाणस्स। ते केवचिरं कालादो होंति ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारिसमया हवंति।

सुहुम बादराण णिव्वत्तिअपज्जत्तयाणमेदे जहण्णपरिणामजोगा ० ▽ △ ✱। ते कस्स होंति ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पढमसमए वट्टमाणस्स। ते[2] केवचिरं कालादो होंति[3] ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारिसमया।

बीइंदियादि जाव सण्णिपचिंदिओ त्ति एदेसिं लद्धिअपज्जत्तयाणं जहण्णएगंताणुवड्ढिजोगा एदे। सो[4] कस्स ? विदियसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स। सो[5] केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ ।
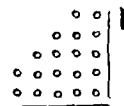
बीइंदियादि जाव सण्णिपंचिंदिओ त्ति एदेसिं णिव्वत्तिअपज्जत्तयाणं जहण्णया एयंताणुवड्ढिजोगा। सो कस्स ? विदियसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स। सो केवचिरं

सूक्ष्म व बादर लब्ध्यपर्याप्तकोंके ये जघन्य परिणामयोग हैं (मूलमें)। वे किसके होते हैं ? वे परभविक आयुके बन्ध योग्य प्रथम समयसे लेकर उपरिम भवस्थितिमें वर्तमान जीवके होते हैं। वे कितने काल होते हैं। वे जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय होते हैं।

सूक्ष्म व बादर निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंके ये जघन्य परिणामयोग हैं (मूलमें)। वे किसके होते हैं ? वे शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें रहनेवालेके होते हैं। वे कितने काल होते हैं ? वे जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे चार समय होते हैं।

द्वीन्द्रियको आदि लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तक इन लब्ध्यपर्याप्तकोंके ये जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग हैं। वह किसके होता है ? वह तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें वर्तमान जघन्य योगवालेके होता है। वह कितने काल होता है। वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होता है (संदृष्टि मूलमें देखिये)।

द्वीन्द्रियको आदि लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तक इन निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंके ये जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग हैं। वह किसके होता है ? वह तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें वर्त-

---

१ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिषु 'परिणामजोगा कस्स' इति पाठ। २ ताप्रतौ 'सो' इति पाठः। ३ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ का-ताप्रतिषु 'होदि' इति पाठ। ४ ताप्रतौ 'जहण्णिया एगताणुवड्ढिजोगा सो' इति पाठ। ५ आ-का-ताप्रतिषु 'सो' इत्येतत् पद नोपलभ्यते।

कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेणेगसमओ ।

बीइंदियादि जाव सण्णिपंचिंदिया त्ति एदेसिं लद्धिअपज्जत्ताणमेदे जहण्णपरिणामजोगा—

सो कस्स ? आउगबंधपाओग्गपढमसमयप्पहुडि तदियभागे वट्टमाणस्स । सो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण चत्तारिसमया ।

बेइंदियादिसण्णिपंचिंदिया त्ति एदेसिं णिव्वत्तिपज्जत्तयाणं एदे जहण्णया परिणामजोगा । सो कस्स ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पढमसमए वट्टमाणस्स । सो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारिसमया । एसा जहण्णवीणा परूविदा । उक्कस्सवीणा वि एवं चेव परूवेदव्वा । णवरि जम्हि उक्कस्सेण चत्तारिसमया तम्हि बेसमया वत्तव्वा ।

नाम जघन्य योगवालेके होता है । वह कितने काल होता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होता है (संदृष्टि मूलमें देखिये) ।

द्वीन्द्रियको आदि लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तक इन लब्ध्यपर्याप्तकोंके ये जघन्य परिणामयोग हैं (संदृष्टि मूलमें देखिये) । वह किसके होता है ? वह आयुबन्धके योग्य प्रथम समयसे लेकर तृतीय भागमें वर्तमान जीवके होता है । वह कितने काल होता है । वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय होता है ।

द्वीन्द्रियको आदि लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तक इन निर्वृत्तिपर्याप्तकोंके ये जघन्य परिणामयोग होते हैं । वह किसके होता है ? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें रहनेवालेके होता है । वह कितने काल होता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय होता है । यह जघन्य वीणाकी प्ररूपणा की गई है । उत्कृष्ट वीणाकी भी प्ररूपणा इसी प्रकार ही करना चाहिये । विशेषता केवल इतनी है कि यहांपर जहां उत्कर्षसे चार समय कहे गये हैं वहां यहांपर दो समय कहना चाहिये ।

---

१ [illegible] । [illegible] 'उक्कस्सेण [illegible] एवं' [illegible] 'उक्कस्सवीणा एवं' [illegible] 'उक्कस्सवीणए एवं' इति पाठः ।

सुहुमादिसण्णि त्ति लद्धिअपज्जत्ताणं जहाकमेण जहण्णुक्कस्सउववादजोगा—
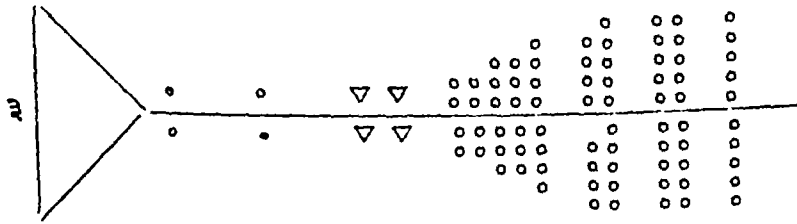
सो कस्स ? पढमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स उक्कस्सउववादजोगिस्स। केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ।

सुहुमादिसण्णि त्ति णिव्वत्तिअपज्जत्ताण[1] जहाकमेण जहण्णुक्कस्सउववादजोगा— सो कस्स ? पढमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णुक्कस्सउववादजोगे वट्टमाणस्स। सो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ ∘▽ ∘▽ ।

सुहुम-बादराण लद्धिअपज्जत्ताण जहाक्कमेण एदे जहण्णुक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगा— सो कस्स ? बिदियसमयतब्भवत्थस्स एयंताणुवड्ढिकालचरिमसमए वट्टमाणस्स। सो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। सुहुम-बादराणं णिव्वत्तिअपज्जत्ताण जहाकमेण

सूक्ष्मको आदि लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तक लब्ध्यपर्याप्तकोंके यथाक्रमसे जघन्य व उत्कृष्ट उपपादयोग ये हैं (संदृष्टि मूलमें देखिये)। वह किसके होता है ? वह तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें वर्तमान जघन्य व उत्कृष्ट योगवालेके होता है। वह कितने काल होता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होता है।

सूक्ष्मको आदि लेकर संज्ञी तक निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंके यथाक्रमसे जघन्य व उत्कृष्ट उपपादयोग ये हैं। वह किससे होता है ? वह तद्भवस्थ होनेके प्रथम समयमें वर्तमान जघन्य व उत्कृष्ट योगमें रहनेवाले जीवके होता है। वह कितने काल होता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होता है।

सूक्ष्म व बादर लब्ध्यपर्याप्तकोंके यथाक्रमसे ये जघन्य व उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग हैं। वह किसके होता है ? वह एकान्तानुवृद्धियोगकालके अन्तिम समयमें वर्तमान जीवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होता है। वह कितने काल होता है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होता है।

सूक्ष्म व बादर निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंके यथाक्रमसे जघन्य व उत्कृष्ट एकान्तानु-

---

१ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ काप्रतिषु '-सण्णित्ति अपज्जत्ताण ', ताप्रतौ ' सण्णि त्ति णि लद्धिअपज्जताण ' इति पाठ.।

जहण्णुक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगा एदे ▽ ▽ । सो कस्स ? बिदियसमयतब्भवत्थस्स चरिमसमयअपज्जत्तस्स । सो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । तदुवरि सुहुम-बादरलद्धिअपज्जत्ताणं जहाकमेण एदे जहण्णुक्कस्सपरिणामजोगा । सो कस्स ? आउअबंधपाओग्गकाले जहण्णुक्कस्सेण परिणामजोगेसु वट्टमाणस्स । केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण जहाकमेण चत्तारिसमया बेसमया । तदुवरि सुहुम-बादरणिव्वत्तिअपज्जत्ताणं जहाकमेण जहण्णुक्कस्सपरिणामजोगा ▽ ▽ । तत्थ जहण्णपरिणामजोगो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पढमसमए होदि । ण च एसो णियमो, उवरि वि जहण्णपरिणामजोगसंभवादो । उक्कस्सपरिणामजोगो परंपरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स होदि । जहण्णपरिणामजोगो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारिसमओ । उक्कस्सजोगो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बेसमया ।

बेइंदियादिसण्णिलद्धिअपज्जत्ताणं जहाकमेण एदे जहण्णएयंताणुवड्ढिजोगा ▽ ▽ १६६९ । सो कस्स ? बिदियसमयतब्भवत्थस्स जहण्णएगंताणुवड्ढिजोगे वट्टमाणस्स । सो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । तदुवरि तेसिं चेव जहाकमेण

वृद्धियोग ये हैं (मूलमें देखिये) । यह किसके होता है ? यह तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें वर्तमान चरमसमयवर्ती अपर्याप्तके होता है । यह कितने काल होता है ? यह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होता है ।

इसके आगे सूक्ष्म व बादर लब्ध्यपर्याप्तोंके यथाक्रमसे ये जघन्य व उत्कृष्ट परिणामयोग हैं । यह किसके होता है ? यह आयुबन्धकके योग्य कालमें जघन्य व उत्कर्षसे परिणामयोगोंमें रहनेवाले जीवके होता है । यह कितने काल होता है ? यह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे क्रमशः चार व दो समय होता है ।

इसके आगे सूक्ष्म व बादर निर्वृत्त्यपर्याप्तोंके यथाक्रमसे जघन्य व उत्कृष्ट परिणामयोग ये हैं । उनमें जघन्य परिणामयोग शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें होता है । परन्तु यह नियम नहीं है क्योंकि आगे भी जघन्य परिणामयोग सम्भव है । उत्कृष्ट परिणामयोग परम्परापर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवके होता है । जघन्य परिणामयोग जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय होता है । उत्कृष्ट परिणामयोग जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होता है ।

द्वीन्द्रियको आदि लेकर संज्ञी लब्ध्यपर्याप्तकोंके यथाक्रमसे ये जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग होते हैं (मूलमें देखिये) । यह किसके होता है ? यह जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगोंमें वर्तमान जीवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होता है । यह कितने काल होता है ? यह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होता है ।

इसके आगे उन्हीं जीवोंके ही यथाक्रमसे उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग ये हैं ।

उक्कस्सएगंताणुवड्ढिजोगा । सो कस्स ? अंतोमुहुत्तुववण्णस्स से काले आउअं बंधिहिदि त्ति ट्ठिदस्स । सो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ ।
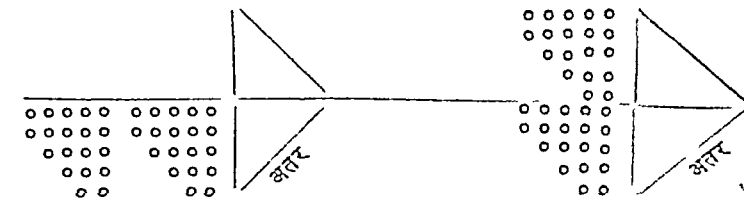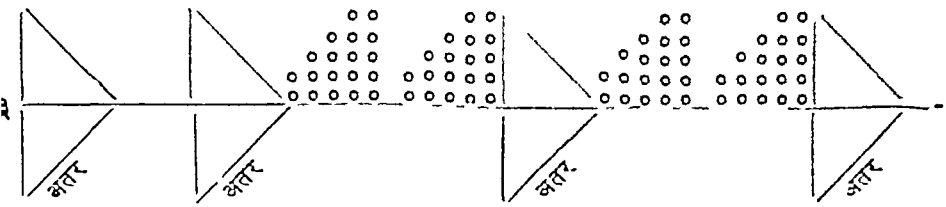
एदेसिं छण्णं पि अतराणं पमाण सेडीए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? एगवारेण सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजोगपक्खेवप्पवेसादो । तं पि कुदो णव्वदे ? हेट्ठिमजोगट्ठाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदे उवरिमजोगट्ठाणुप्पत्तीदो[1] ।

वेइंदियादिसण्णि त्ति लद्धिअपज्जत्ताणं जहाकमेण एदे जहण्णपरिणामजोगा । सो कस्स ? सगभवट्ठिदीए तदियतिभागे वट्टमाणस्स । तदुवरि तेसिं चेव उक्कस्सपरिणामजोगा ।

वह किसके होता है ? वह उत्पन्न होनेके अन्तर्मुहूर्त पश्चात् अनन्तर समयमें आयुको बांधनेके अभिमुख हुए जीवके होता है । वह कितने काल होता है । वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय होता है ।

इन छहों अन्तरालोंका (संदृष्टि मूलमें देखिये) प्रमाण श्रेणिका असंख्यातवा भाग है, क्योंकि, एक वारमें श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र योगप्रक्षेपोंका प्रवेश है ।

शंका— वह भी कहांसे जाना जाता है ?

समाधान— चूंकि अधस्तन योगस्थानको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर उपरिम योगस्थान उत्पन्न होता है, अत इसी हेतुसे वह जाना जाता है ।

द्वीन्द्रियको आदि लेकर संज्ञी तक लब्ध्यपर्याप्तकोंके यथाक्रमसे ये जघन्य परिणामयोग हैं । वह किसके होता है ? वह अपनी भवस्थितिके तृतीय भागमें वर्तमान जीवके होता है । उसके आगे उन्हींके उत्कृष्ट परिणामयोग हैं । वे किसके होते हैं ? वे

---

१ अप्रतौ ' जोगट्ठाणुववत्तीदो ' इति पाठ ।

ते कस्स ? सगजीविदतिभागे वट्टमाणस्स । ते दो वि केवचिरं कालादो होंति ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारि-बेसमया । तदुवरि बीइंदियादिसण्णि त्ति णिव्वत्तिअपज्जत्ताणं जहण्णुक्कस्सएयंताणुवड्ढिजोगा— जहण्णओ बिदियसमयतब्भवत्थस्स, उक्कस्सओ चरिमसमयअपज्जत्तयस्स । जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । तदुवरि तेसिं चेव णिव्वत्तिअपज्जत्ताण जहण्णपरिणामजोगा । सो कस्स ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमयप्पहुडि उवरि वट्टमाणस्स होदि । सो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चत्तारिसमया । तदुवरि तेसिं चेव जहाकमेण उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणाणि । सो कस्स ? परंपरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स । सो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बेसमया । एवं जहण्णुक्कस्सजोगाणं सव्वपरत्थाणप्पाबहुगं समत्तं ।

पदेसअप्पाबहुए त्ति जहा जोगअप्पाबहुगं णीदं तधा णेदव्वं । णवरि पदेसा अप्पाए त्ति भाणिदव्वं ॥ १७४ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— जहा जोगस्स सत्थाण-परत्थाण-सव्वपरत्थाणभेदेण जहण्णु

अपने जीवितके तृतीय भागमें वर्तमान जीवके होते हैं । वे दोनों ही कितने काल होते हैं ? वे जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे क्रमशः चार व दो समय होते हैं ।

इसके आगे द्वीन्द्रियको आदि लेकर संज्ञी तक निर्वृत्त्यपर्याप्तोंके जघन्य व उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धियोग होते हैं । इनमें जघन्य तो द्वितीय समय तद्भवस्थके और उत्कृष्ट चरमसमयवर्ती अपर्याप्तके होता है । इनका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय है ।

इसके आगे उन्हीं निर्वृत्त्यपर्याप्तोंके जघन्य परिणामयोग होते हैं । वह किसके होता है ? वह शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेके प्रथम समयसे लेकर आगेके कालमें रहनेवाले जीवके होता है । वह कितने काल होता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय होता है ।

इसके आगे उन्हींके यथाक्रमसे उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान होते हैं । वह किसके होता है ? वह परम्परापर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवके होता है । वह कितने काल होता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय होता है । इस प्रकार जघन्योत्कृष्ट योगोंमें सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

जिस प्रकार योगअल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार प्रदेशअल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि योगके स्थानमें यहां 'प्रदेश' ऐसा कहना चाहिये ॥ १७४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— जिस प्रकार योग अर्थात् स्वस्थान परस्थान और

क्कस्सजोगाणमप्पाबहुगं परूविदं तहा जोगकारणेण जीवस्स ढुक्कमाणकम्मपदेसाणं पि अप्पाबहुगं परूविदव्व, सव्वत्थ कारणाणुसारिकज्जुवलंभादो। जदि कारणाणुसारी चेव कज्ज होदि तो समय पडि जोगवसेण ढुक्कमाणकम्मपदेसेहि असंखेज्जेहि होदव्वं, जोगम्मि असंखेज्जाणं अविभागपडिच्छेदाणमुवलंभादो त्ति वुत्ते — ण, एगजोगाविभागपडिच्छेदे[1] वि अणंतकम्मपदेसायड्ढणसत्तिदंसणादो[2]। जोगादो कम्मपदेसाणमागमो होदि त्ति कधं णव्वदे? एदम्हादो चेव पदेसअप्पाबहुगसुत्तादो णव्वदे। ण च पमाणंतरमवेक्खदे, अणवत्थापसंगादो। तेण गुणिदकम्मंसिओ तप्पाओग्गउक्कस्सजोगेहि चेव हिंडावेदव्वो, अण्णहा बहुपदेससंचयाणुववत्तीदो। खविदकम्मंसिओ वि तप्पाओग्गजहण्णजोगपंतीए खग्गधारसरिसीए पयट्टावेदव्वो, अण्णहा कम्म-णोकम्मपदेसाणं थोवत्ताणुववत्तीदो।

जोगट्ठाणपरूवणदाए तत्थ इमाणि दस अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति ॥ १७५ ॥

एत्थ जोगो चउव्विहो— णामजोगो ठवणजोगो दव्वजोगो भावजोगो चेदि। णाम-

---

सर्वपरस्थानके भेदसे जघन्य व उत्कृष्ट योगोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार योगके निमित्तसे जीवके आनेवाले कर्मप्रदेशोंके भी अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, सब जगह कारणके अनुसार ही कार्य पाया जाता है।

शंका— यदि कार्य कारणका अनुसरण करनेवाला ही होता है तो प्रतिसमय योगके वशसे आनेवाले कर्मप्रदेश असंख्यात होने चाहिये, क्योंकि, योगमें असंख्यात अविभागप्रतिच्छेद पाये जाते हैं?

समाधान— नहीं, क्योंकि, योगके एक अविभागप्रतिच्छेदमें भी अनन्त कर्मप्रदेशोंके आकर्षणकी शक्ति देखी जाती है?

शंका— योगसे कर्मप्रदेशोंका आगमन होता है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— वह इसी प्रदेशाल्पबहुत्वसूत्रसे जाना जाता है, किसी अन्य प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता; क्योंकि, वैसा होनेपर अनवस्था दोषका प्रसंग आता है।

इसी कारण गुणितकर्मांशिकको तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट योगोंसे ही घुमाना चाहिये, क्योंकि, इसके विना उसके बहुत प्रदेशोंका संचय घटित नहीं होता। क्षपितकर्मांशिकको भी खड्गधारा सदृश तत्प्रायोग्य जघन्य योगोंकी पंक्तिसे प्रवर्ताना चाहिये, क्योंकि, अन्य प्रकारसे कर्म और नोकर्मके प्रदेशोंकी अल्पता नहीं बनती।

योगस्थानोंकी प्ररूपणामें ये दस अनुयोगद्वार जानने योग्य हैं ॥ १७५ ॥

यहां योग चार प्रकार है— नामयोग, स्थापनायोग, द्रव्ययोग और भावयोग।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'पडिच्छेदो' इति पाठ। २ अ-आ काप्रतिषु 'पदेसायवण', ताप्रतौ 'पदेसायदण' इति पाठ।

ठवणजोगा सुगमा त्ति ण तेसिमत्थो वुच्चदे। दव्वजोगो दुविहो आगमदव्वजोगो णोआगम दव्वजोगो चेदि। तत्थ आगमदव्वजोगो णाम जोगपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो। णोआगमदव्व जोगो तिविहो जाणुगसरीर भविय-तव्वदिरित्तदव्वजोगो चेदि। जाणुगसरीर-भवियदव्वजोगा सुगमा। तव्वदिरित्तदव्वजोगो अणेयविहो। तं जहा — सूर-णक्खत्तजोगो चंद-णक्खत्तजोगो गह-णक्खत्तजोगो कोणंगारजोगो चुण्णजोगो मंतजोगो इच्चेवमादओ। तत्थ भावजोगो दुविहो आगमभावजोगो णोआगमभावजोगो चेदि। तत्थ आगमभावजोगो जोगपाहुडजाणओ उवजुत्तो। णोआगमभावजोगो तिविहो गुणजोगो संभवजोगो जुंजणजोगो चेदि। तत्थ गुणजोगो दुविहो सच्चित्तगुणजोगो अच्चित्तगुणजोगो चेदि। तत्थ अच्चित्तगुणजोगो जहा रूव-रस गंध फासादीहि पोग्गलदव्वजोगो, आगासादीणमप्पप्पणो गुणेहि सह जोगो वा। तत्थ सच्चित्तगुणजोगो पंचविहो — ओदइओ ओवसमिओ खइओ खओवसमिओ पारिणामिओ चेदि। तत्थ गदि लिंग-कसायादीहि जीवस्स जोगो ओदइयगुणजोगो। ओवसमियसम्मत्त-संजमेहि जीवस्स जोगो ओवसमियगुणजोगो। केवलणाण-दंसण-जहाक्खादसंजमादीहि जीवस्स जोगो खइयगुणजोगो णाम। ओहि-मणपज्जवादीहि जीवस्स जोगो खओवसमिय

नाम और स्थापना योग चूंकि सुगम हैं अतः उनका अर्थ नहीं कहते हैं। द्रव्ययोग दो प्रकार है — आगमद्रव्ययोग और नोआगमद्रव्ययोग। इनमें योगप्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्ययोग कहलाता है। नोआगमद्रव्ययोग तीन प्रकार है — ज्ञायकशरीर भावी और तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्ययोग। ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्ययोग सुगम हैं। तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्ययोग अनेक प्रकार है। यथा — सूर्य-नक्षत्रयोग चन्द्र नक्षत्रयोग ग्रह नक्षत्रयोग कोण-अंगारयोग चूर्णयोग व मन्त्रयोग इत्यादि। भावयोग दो प्रकारका है — आगमभावयोग और नोआगमभाव-योग। इनमेंसे योगप्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावयोग कहा जाता है। नोआगमभावयोग तीन प्रकार है — गुणयोग सम्भवयोग और योजनायोग। इनमेंसे गुणयोग दो प्रकारका है — सचित्तगुणयोग और अचित्तगुणयोग। इनमेंसे अचित्तगुणयोग — जैसे रूप रस गन्ध और स्पर्श आदि गुणोंसे पुद्गलद्रव्यका योग, अथवा आकाश आदि द्रव्योंका अपने अपने गुणोंके साथ योग। इनमेंसे सचित्तगुण-योग पांच प्रकारका है — औदयिक औपशमिक क्षायिक क्षायोपशमिक और पारि-णामिक। इनमेंसे गति, लिंग और कषाय आदिकोंसे जो जीवका योग होता है वह औदयिक सचित्तगुणयोग है। औपशमिक सम्यक्त्व और संयमसे जो जीवका योग होता है वह औपशमिक सचित्तगुणयोग कहा जाता है। केवलज्ञान केवलदर्शन एवं यथाख्यातसंयम आदिकोंसे होनेवाला जीवका योग क्षायिक सचित्तगुणयोग कहा जाता है। अवधि व मनः-पर्यय आदिकोंके साथ होनेवाले जीवके योगको क्षायोपशमिक सचित्तगुणयोग कहते हैं।

* ते. ५५.

गुणजोगो णाम । जीव-भवियत्तादीहि जोगो पारिणामियगुणजोगो णाम । इंदो मेरुं चालइदुं समत्थो त्ति एसो संभवजोगो णाम । जो सो जुंजणजोगो सो तिविहो— उववादजोगो एगंताणुवड्ढिजोगो परिणामजोगो चेदि । एदेसु जोगेसु जुंजणजोगेण अहियारो, सेसजोगेहिंतो कम्मपदेसाणमागमणाभावादो ।

णाम-ट्ठवण दव्व भावभेदेण ट्ठाणं चदुव्विहं । णाम ट्ठवणट्ठाणाणि सुगमाणि त्ति तेसिमत्थो ण वुच्चदे । दव्वट्ठाणं दुविहं आगम णोआगमदव्वट्ठाणभेदेण[1] । तत्थ आगमदो दव्वट्ठाणं ट्ठाणपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो[2] । णोआगमदव्वट्ठाणं तिविहं जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तट्ठाणभेएण । तत्थ जाणुगसरीर भवियट्ठाणाणि सुगमाणि । तव्वदिरित्तदव्वट्ठाणं तिविहं[3] — सच्चित्त अच्चित्त-मिस्सणोआगमदव्वट्ठाणं चेदि । जं तं सच्चित्तणोआगमदव्व-ट्ठाणं तं दुविहं बाहिरमब्भंतरं चेदि । जं तं बाहिरं तं दुविहं धुवमद्धुवं चेदि । जं तं धुवं तं सिद्धाणमोगाहणट्ठाणं । कुदो ? तेसिमोगाहणाए वड्ढि हाणीणमभावेण थिरसरूवेण अवट्ठाणादो । जं तमद्धुवं सच्चित्तट्ठाणं तं संसारत्थाणं जीवाणमोगाहणा । कुदो ? तत्थ वड्ढि-हाणीणमुवलंभादो । जं तमब्भंतरं सच्चित्तट्ठाणं तं दुविहं संकोच विकोचणप्पयं तव्विहीणं चेदि ।

जीवत्व व भव्यत्व आदिके साथ होनेवाला योग पारिणामिक सचित्तगुणयोग कहलाता है । इन्द्र मेरु पर्वतको चलानेके लिये समर्थ है, इस प्रकारका जो शक्तिका योग है वह सम्भवयोग कहा जाता है । जो योजना-(मन, वचन व कायका व्यापार) योग है वह तीन प्रकारका है— उपपादयोग, एकान्तानुवृद्धियोग और परिणामयोग । इन योगोंमें यहां योजनायोगका अधिकार है, क्योंकि, शेष योगोंसे कर्मप्रदेशोंका आगमन सम्भव नहीं है ।

नाम, स्थापना, द्रव्य और भावके भेदसे स्थान चार प्रकार है । इनमें नाम व स्थापना स्थान सुगम हैं, अत एव उनका अर्थ नहीं कहते । द्रव्य स्थान दो प्रकार है— आगमद्रव्यस्थान और नोआगमद्रव्यस्थान । उनमें स्थानप्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यस्थान कहा जाता है । नोआगमद्रव्यस्थान ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्त स्थानके भेदसे तीन प्रकार है । उनमें ज्ञायकशरीर और भावी स्थान सुगम हैं । तद्व्यतिरिक्त द्रव्यस्थान तीन प्रकार है— सचित्त, अचित्त और मिश्र नोआगमद्रव्यस्थान । जो सचित्त नोआगमद्रव्यस्थान है वह दो प्रकार है— बाह्य और अभ्यन्तर । इनमें जो बाह्य है वह दो प्रकार है— ध्रुव और अध्रुव । जो ध्रुव है वह सिद्धोंका अवगाहनास्थान है, क्योंकि, वृद्धि और हानिका अभाव होनेसे उनकी अवगाहना स्थिर स्वरूपसे अवस्थित है । जो अध्रुव सचित्तस्थान है वह संसारी जीवोंकी अवगाहना है, क्योंकि, उसमें वृद्धि और हानि पायी जाती है । जो अभ्यन्तर सचित्तस्थान है वह दो प्रकार है— संकोच विकोचात्मक और तद्विहीन । इनमें जो

---

१ अ-आप्रत्योः 'ट्ठवणभेदेण' इति पाठः । २ अ-आ-काप्रतिषु 'णुवजुत्तो' इति पाठः । ३ आप्रतौ 'दव्वट्ठाणं तव्वदिरित्त तिविहं' इति पाठः ।

जं तं संकिलेस-विसोहिअप्पयमब्भंतरसच्चित्तट्ठाणं तं सव्वेसिं सजोगिजीवाणं जीवदव्वं। जं तं तव्विहीणमब्भंतरं सच्चित्तट्ठाणं तं केवलणाण-दंसणहराणं अमोक्खट्ठिदिबंधपरिणयाणं[2] सिद्धाणं अजोगिकेवलीणं वा जीवदव्वं। कधं[3] जीवदव्वस्स जीवदव्वमभिण्णट्ठाणं होदि? ण, सदो वदिरित्तदव्वाणमण्णदव्वट्ठाणहेदुत्ताभावादो[5] सगतिकोडिपरिणामभेदणा भेदभत्तेण सव्वदव्वाणमवट्ठाणुवलंभादो। जं तमचित्तदव्वट्ठाणं तं दुविहं रूवि-अचित्तदव्वट्ठाणमरूवि-अचित्तदव्वट्ठाणं चेदि। जं तं रूविअचित्तदव्वट्ठाणं तं दुविहं अब्भंतरं बाहिरं चेदि। जं तमब्भंतरं [तं] दुविहं जहद्दुत्ति अजहद्दुत्तियं चेदि। जं तं जहद्दुत्तियमब्भंतरट्ठाणं तं किण्ह-णील-रुहिर-हालिद्द-सुक्किल-सुरहि-दुरहिगंध-तित्त-कडुव-कसायंबिल-महुर-णिद्ध-लुक्ख-सीदुसुणादिभेदेण अणेयविहं। जं तमजहद्दुत्तिरूविअचित्तट्ठाणं तं पोग्गलमुत्ति-वण्ण-गंध-रस-फास-अणुवजोगत्तादिभेदेण अणेयविहं। जं तं बाहिररूविअचित्तदव्वट्ठाणं तमेगागासपदेसादिभेदेण असंखेज्जवियप्पं।

संक्लेश विशोधात्मक अभ्यन्तर सचित्तस्थान है वह योग युक्त सब जीवोंका जीव द्रव्य है। जो तद्विहीन अभ्यन्तर सचित्तस्थान है वह केवलज्ञान व केवलदर्शनको धारण करनेवाले एवं मोक्ष व स्थितिबन्धसे अपरिणत ऐसे सिद्धोंका अथवा अयोग केवलियोंका जीवद्रव्य है।

शंका— जीवद्रव्यका जीवद्रव्य अभिन्न स्थान कैसे हो सकता है?

समाधान— नहीं क्योंकि, अपनेसे भिन्न द्रव्योंके अन्य द्रव्यस्थानका हेतुत्व न होनेसे अपने त्रिकोटि (उत्पाद व्यय व ध्रौव्य) स्वरूप परिणामके कथंचित् भेदाभेद रूपसे सब द्रव्योंका अवस्थान पाया जाता है।

जो अचित्त द्रव्यस्थान है वह दो प्रकार है— रूपी अचित्तद्रव्यस्थान और अरूपी अचित्तद्रव्यस्थान। इनमें जो रूपी अचित्तद्रव्यस्थान है वह दो प्रकार है— अभ्यन्तर और बाह्य। जो अभ्यन्तर रूपी अचित्तद्रव्यस्थान है वह दो प्रकार है— जहद्वृत्तिक और अजहद्वृत्तिक। जो जहद्वृत्तिक अभ्यन्तर रूपी अचित्तद्रव्यस्थान है वह कृष्ण नील रुधिर, हारिद्र शुक्ल सुरभिगन्ध दुरभिगन्ध तिक्त कटुक, कषाय आम्ल मधुर, स्निग्ध रूक्ष शीत व उष्ण आदिके भेदसे अनेक प्रकार है। जो अजहद्वृत्तिक अभ्यन्तर रूपी अचित्त द्रव्यस्थान है वह पुद्गलका मूर्तित्व वर्ण गन्ध रस स्पर्श व उपयोगहीनता आदिके भेदसे अनेक प्रकार है। जो बाह्य रूपी अचित्तद्रव्यस्थान है वह एक आकाशप्रदेश आदिके भेदसे असंख्यात भेद रूप है।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'संकेल' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'परिणयाणं' ताप्रतौ 'परिणामाणं' इति पाठः। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'जीवदव्वं दव्वं कधं' ताप्रतौ 'जीवदव्वं [दव्वं]। कधं (धं)' इति पाठः। ४ अ-आ-ताप्रतिषु 'पदी' इति पाठः। ५ ताप्रतौ '-अण्णट्ठाणहेदुत्ताभावादो' इति पाठः। ६ अ-आ-काप्रतिषु 'पंचुवजोगादिभेदेण' इति पाठः।

जं तमरूवि-यचित्तदव्वट्ठाणं त दुविहं अब्भतरं बाहिरं चेदि। जं तमब्भंतरमरूवि-अचित्तदव्वट्ठाण त धम्मत्थिय-अधम्मत्थिय-आगासत्थिय-कालदव्वाणमप्पणो सरूवावट्ठाण-हेदुपरिणामा। जं त बाहिरमरूविअचित्तदव्वट्ठाणं त धम्मत्थिय-अधम्मत्थिय-कालदव्वेहि ओट्ठद्धागासपदेसा। आगासत्थियस्स णत्थि बाहिरट्ठाण, आगासावगाहिणो[1] अण्णस्स दव्वस्स अभावादो। ज तं मिस्सदव्वट्ठाण त लोगागासो।

भावट्ठाणं दुविह आगम णोआगमभावट्ठाणभेदेण। तत्थ आगमभावट्ठाण णाम ट्ठाणपाहुडजाणओ उवजुत्तो। णोआगमभावट्ठाणमोदइयादिभेदेण पचविहं। एत्थ ओदइय-भावट्ठाणेण अहियारो, अघादिकम्माणमुदएण तप्पाओग्गेण जोगुप्पत्तीदो। जोगो खओव-समिओ त्ति के वि भणति। तं कध घडदे? वीरियतराइयस्सखओवसमेण कत्थ वि जोगस्स वड्ढिमुवलंक्खियं[2] खओवसमियत्तपदुप्पायणादो घडदे।

जोगस्स ट्ठाण जोगट्ठाणं, जोगट्ठाणस्स परूवणदा जोगट्ठाणपरूवणदा[3], तीए

जो अरूपी अचित्तद्रव्यस्थान है वह दो प्रकार है— अभ्यन्तर अरूपी अचित्त-द्रव्यस्थान और बाह्य अरूपी अचित्तद्रव्यस्थान। जो अभ्यन्तर अरूपी अचित्तद्रव्यस्थान है वह धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और काल द्रव्योंके अपने स्वरूपमें अवस्थानके हेतुभूत परिणामों स्वरूप है। जो बाह्य अरूपी अचित्त द्रव्यस्थान है वह धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय व काल द्रव्यसे अवष्टब्ध आकाशप्रदेशों स्वरूप है। आकाशास्तिकायका बाह्य स्थान नहीं है, क्योंकि, आकाशको स्थान देनेवाले दूसरे द्रव्यका अभाव है। जो मिश्रद्रव्यस्थान है वह लोकाकाश है।

भावस्थान आगम और नोआगम भावस्थानके भेदसे दो प्रकार है। उनमें स्थानप्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावस्थान है। नोआगमभाव-स्थान औदयिक आदिके भेदसे पांच प्रकार है। यहा औदयिक भावस्थानका अधिकार है, क्योंकि, योगकी उत्पत्ति तत्प्रायोग्य अघातिया कर्मोंके उदयसे है।

शका— योग क्षायोपशमिक है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। वह कैसे घटित होता है?

समाधान— कहींपर वीर्यान्तरायके क्षयोपशमसे योगकी वृद्धिको पाकर चूंकि उसे क्षायोपशमिक प्रतिपादन किया गया है, अतएव वह भी घटित होता है।

योगका स्थान योगस्थान, योगस्थानकी प्ररूपणता योगस्थनप्ररूपणता, उस

---

१ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-काप्रतिषु 'ओट्ठद्धागासपदेसा आगासावगाहिणो', ताप्रतौ 'ओट्ठद्धागासपदेस-त्थियस्स णत्थि बाहिरट्ठाण, आगासावगाहिणो' इति पाठ। २ मप्रतौ 'वड्ढिमुवलंविय' इति पाठ। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'जोगट्ठाणदा' इति पाठ।

जोगट्ठाणपरूवणदाए दस अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति। किमट्ठमेसा जोगट्ठाणपरूवणा कीरदे? पुव्विल्लम्हि अप्पाबहुगम्मि सव्वजीवसमासाणं जहण्णुक्कस्सजोगट्ठाणाणं थोवबहुत्तं चेव जाणाविदं। केत्तिएहि अविभागपडिच्छेदेहि फद्दएहि वग्गणाहि वा जहण्णुक्कस्सजोगट्ठाणाणि होंति त्ति ण वुत्तं। जोगट्ठाणाणं छच्चेव अंतराणि अप्पाबहुगम्मि परूविदाणि। तदो तेसिमण्णत्थ णिरंतरं वड्ढी होदि त्ति णव्वदे। सा च वड्ढी सव्वत्थ किमवट्ठिदा किमणवट्ठिदा[1] किं वा वड्ढीए पमाणमिदि एदं पि तत्थ ण परूविदं। तदो एदेसिमपरूविदत्थाणं परूवणट्ठं जोगट्ठाणपरूवणा कीरदे। किं जोगो णाम? जीवपदेसाणं परिप्फंदो संकोच-विकोचब्भमणसरूवओ। ण जीवगमणं जोगो, अजोगिस्स अघादिकम्मक्खएण उड्ढं गच्छंतस्स वि सजोगत्तप्पसंगादो। सो च जोगो मण-वचि-कायजोगभेदेण तिविहो। तत्थ बज्झत्थचिंतावावदमणादो समुप्पण्णजीवपदेसपरिप्फंदो मणजोगो णाम। भासावग्गणक्खंधे भासारूवेण परिणामेंतस्स जीवपदेसाणं परिप्फंदो वचिजोगो णाम। वात-पित्त-

योगस्थानप्ररूपणतामें दस अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं।

शंका — यहां योगप्ररूपणा किसलिये की जाती है?

समाधान — पूर्वोक्त अल्पबहुत्वमें सब जीवसमासोंके जघन्य व उत्कृष्ट योगस्थानोंका अल्पबहुत्व ही बतलाया गया है। किन्तु कितने अविभागप्रतिच्छेदों स्पर्द्धकों अथवा वर्गणाओंसे जघन्य व उत्कृष्ट योगस्थान होते हैं यह वहां नहीं कहा गया है। योगस्थानोंके छह ही अन्तर अल्पबहुत्वमें कहे गये हैं। इससे दूसरी जगह उनके निरन्तर वृद्धि होती है ऐसा जाना जाता है। परन्तु वह वृद्धि सब जगह क्या अवस्थित होती है या अनवस्थित तथा वृद्धिका प्रमाण क्या है, यह भी वहां नहीं कहा गया है। इसलिये इन अप्ररूपित अर्थोंके प्ररूपणार्थ योगस्थानप्ररूपणा की जाती है।

शंका — योग किसे कहते हैं?

समाधान — जीवप्रदेशोंका जो संकोच-विकोच व परिभ्रमण रूप परिस्पन्दन होता है वह योग कहलाता है। जीवके गमनको योग नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ऐसा माननेपर अघातिया कर्मोंके क्षयसे ऊर्ध्व गमन करनेवाले अयोगकेवलीके सयोगत्वका प्रसंग आवेगा।

वह योग मन वचन व कायके भेदसे तीन प्रकार है। उनमें बाह्य पदार्थके चिन्तनमें प्रवृत्त हुए मनसे उत्पन्न जीवप्रदेशोंके परिस्पन्दको मनयोग कहते हैं। भाषा वर्गणाके स्कन्धोंको भाषा स्वरूपसे परिणमानेवाले व्यक्तिके जो जीवप्रदेशोंका परिस्पन्द

१ अ-आ-काप्रतिषु 'किमवट्ठिदा किं वड्ढीए', ताप्रतौ 'किमवट्ठिदा किमवट्ठिदा' इति पाठः।

सेंभादीहि जणिदपरिस्समेण जादजीवपरिप्फंदो कायजोगो णाम । जदि एवं तो तिण्णं पि जोगाणमक्कमेण वुत्ती पावदि त्ति भणिदे— ण एस दोसो, जदट्ठं जीवपदेसाणं पढमं परिप्फंदो जादो अण्णम्मि जीवपदेसपरिप्फंदसहकारिकारणे जादे वि तस्सेव पहाणत्तदंसणेण तस्स तव्ववएसविरोहाभावादो । तम्हा जोगट्ठाणपरूवणा संबद्धा चेव, णासंबद्धा त्ति सिद्धं । दसण्हमणिओगद्दाराण णामणिद्देसट्ठमुवरिम सुत्तमागदं—

अविभागपडिच्छेदपरूवणा वग्गणपरूवणा[3] फद्दयपरूवणा अंतरपरूवणा ठाणपरूवणा अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा समयपरूवणा वड्ढिपरूवणा अप्पाबहुए त्ति[4] ॥ १७६ ॥

एत्थ दससु अणिओगद्दारेसु अविभागपडिच्छेदपरूवणा चेव किमट्ठं पुव्वं परूविदा? ण, अणवगएसु अविभागपडिच्छेदेसु उवरिमअधियाराण परूवणोवायाभावादो । तदणंतरं

होता है वह वचनयोग कहलाता है । वात, पित्त व कफ आदिके द्वारा उत्पन्न परिश्रमसे जो जीवप्रदेशोंका परिष्पन्द होता है वह काययोग कहा जाता है ।

शंका— यदि ऐसा है तो तीनों ही योगोंका एक साथ अस्तित्व प्राप्त होता है?

समाधान— ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जीवप्रदेशपरिष्पन्दके अन्य सहकारी कारणके होते हुए भी जिसके लिये जीवप्रदेशोंका प्रथम परिष्पन्द हुआ है उसकी ही प्रधानता देखी जानेसे उसकी उक्त संज्ञा होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

इस कारण योगस्थानप्ररूपणा सम्बद्ध ही है, असम्बद्ध नहीं है, यह सिद्ध है । उन दस अनुयोगद्वारोंके नामनिर्देशके लिये आगेका सूत्र प्राप्त होता है—

अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणा, वर्गणाप्ररूपणा, स्पर्द्धकप्ररूपणा, अन्तरप्ररूपणा, स्थानप्ररूपणा, अनन्तरोपनिधा, परम्परोपनिधा, समयप्ररूपणा, वृद्धिप्ररूपणा और अल्पबहुत्व, ये उक्त दस अनुयोगद्वार हैं ॥ १७६ ॥

शंका— यहां दस अनुयोगद्वारोंमें पहिले अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणाका ही निर्देश किसलिये किया गया है?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अविभागप्रतिच्छेदोंके अज्ञात होनेपर आगेके अधिकारोंकी प्ररूपणाका कोई अन्य उपाय सम्भव नहीं है ।

---

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-काप्रतिषु 'तस्सव तव्ववएस', ताप्रतौ 'तस्सेव तव्ववएस' इति पाठः । २ अ-आ काप्रतिषु 'त जहा जोग', ताप्रतौ 'तं जहाजोग-' इति पाठ । ३ अ-आ काप्रतिषु 'वग्गपरूवणा' इति पाठः । ४ अविभाग वग्ग फड्डग अतर ठाण अणतरोवणिहा । जोगे परपरा-वुड्ढि समय-जीवप्पबहुग च ॥ क. प्र. १, ५.

वग्गणपरूवणा किमट्ठं परूविदा ? ण एस दोसो, अणवगयासु वग्गणासु फद्दयपरूवणाणुव वत्तीदो। फद्दएसु अणवगएसु अंतरपरूवणा[१]णमुवायामावादो सेसाणियोगद्दारेसु फद्दयपरूवणा पुव्वं चेव कदा। फद्दयबहुत्तणिमित्तभूदअंतरे अणवगए बहुफद्दयाहिट्ठिदट्ठाणादीणं परूवणो वायाभावादो सेसाणिओगद्दारेहिंतो पुव्वमेव अंतरपरूवणा कदा। ठाणेसु अणवगएसु अणंतरोवणिधादीणमवगमोवायाभावादो पुव्वं ट्ठाणपरूवणा कदा। अणंतरोवणिधाए अणव गदाए परंपरोवणिधावगतु ण सक्किज्जदि त्ति पुव्वमणंतरोवणिधा परूविदा। परंपरोवणिधाए अणवगयदाए समय-वड्ढि-अप्पाबहुगाणमवगमोवायाभावादो परंपरोवणिधा परूविदा। समएसु अणवगएसु उवरिमअहियाराणमुवायाभावादो समयपरूवणा पुव्वं परूविदा। वड्ढिपरूवणाए अणवगयाए तस्सावट्ठाणकालस्सवगमोवायाभावादो अप्पाबहुवादो पुव्वं वड्ढिपरूवणा कदा। एवं परूविदाणं सव्वेसिं थोवबहुत्तजाणावणट्ठमप्पाबहुगपरूवणा कदा।

अविभागपडिच्छेदपरूवणाए एक्केक्कम्हि जीवपदेसे[२] केवडिया जोगाविभागपडिच्छेदा ? ॥ १७७ ॥

शंका — इसके पश्चात् वर्गणाप्ररूपणाकी प्ररूपणा किसलिये की गई है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि वर्गणाओंके अज्ञात होनेपर स्पर्धकों की प्ररूपणा नहीं बन सकती।

स्पर्धकोंके अज्ञात होनेपर अन्तरप्ररूपणा आदिकोंके जाननेका कोई उपाय न होनेसे शेष अनुयोगद्वारोंमें स्पर्धकप्ररूपणा पहिले ही की गई है। स्पर्धकबहुत्वके कारणभूत अन्तरके अज्ञात होनेपर बहुत स्पर्धकोंसे अधिष्ठित स्थान आदि अनुयोग द्वारोंकी प्ररूपणाका कोई उपाय न होनेसे शेष अनुयोगद्वारोंसे पहिले ही अन्तरप्ररूपणा की गई है। स्थानोंके अज्ञात होनेपर अनन्तरोपनिधा आदिकोंके जाननेका कोई उपाय न होनेसे पहिले स्थानप्ररूपणा की गई है। अनन्तरोपनिधाके अज्ञात होनेपर परम्परोपनिधाका जानना शक्य नहीं है, अतः उससे पहिले अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा की गई है। परम्परोपनिधाके अज्ञात होनेपर समय वृद्धि और अल्पबहुत्वके जाननेका कोई उपाय न होनेसे परम्परोपनिधाकी प्ररूपणा की गई है। समयोंके अज्ञात होनेपर आगेके अधिकारोंका उपाय नहीं बनता, अतएव पीछेसे समयप्ररूपणा कही गई है। वृद्धि प्ररूपणाके अज्ञात होनेपर वहां अवस्थानकालके जाननेका कोई उपाय नहीं है, अतः अल्पबहुत्वसे पहिले वृद्धिप्ररूपणा की गई है। इस क्रमसे प्ररूपित सब अधिकारोंके अल्पबहुत्वको बतलानेके लिये अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गई है।

अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणाके अनुसार एक एक जीवप्रदेशमें कितने योगाविभाग प्रतिच्छेद होते हैं ? ॥ १७७ ॥

---

१ प्रतिषु 'अंतरेवणिधादीण-' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'पदेस' इति पाठः।

एदमासंकासुत्तं जोगाविभागपडिच्छेदसंखाविसयं । एक्केक्कम्हि जीवपदेसे जोगाविभागपडिच्छेदा किं संखेज्जा किमसंखेज्जा किमणंता होंति त्ति एत्थ तिविहा आसंका होदि । एदस्स णिण्णयत्थमुत्तरसुत्तमागद—

असंखेज्जा लोगा जोगाविभागपडिच्छेदा[1] ॥ १७८ ॥

जोगाविभागपडिच्छेदो णाम किं ? एक्कम्हि जीवपदेसे जोगस्स जा जहण्णिया वड्ढी सो जोगाविभागपडिच्छेदो[2] । तेण पमाणेण एगजीवपदेसट्ठिदजहण्णजोगे पण्णाए छिज्जमाणे असंखेज्जलोगमेत्ता जोगाविभागपडिच्छेदा होंति । [3]एगजीवपदेसट्ठिदउक्कस्सजोगे वि एदेण पमाणेण छिज्जमाणे असंखेज्जलोगमेत्ता चेव अविभागपडिच्छेदा होंति, एगजीवपदेसट्ठिदजहण्णजोगादो एगजीवपदेसट्ठिदउक्कस्सजोगस्स असंखेज्जगुणत्तुवलभादो । एगजीवपदेसट्ठिदजहण्णजोगे असंखेज्जलोगेहि खंडिदे तत्थ एगखण्डमविभागपडिच्छेदो णाम ।

यह योगाविभागप्रतिच्छेदविषयक आशंकासूत्र है । एक एक जीवप्रदेशमें योगाविभागप्रतिच्छेद क्या संख्यात हैं, क्या असंख्यात हैं और क्या अनन्त हैं; इस प्रकार यहां तीन प्रकारकी आशंका होती है । इसके निर्णयार्थ उत्तर सूत्र प्राप्त हुआ है—

एक एक जीवप्रदेशमें असंख्यात लोक प्रमाण योगाविभागप्रतिच्छेद होते हैं ॥ १७८ ॥

शंका— योगाविभागप्रतिच्छेद किसे कहते हैं ?

समाधान— एक जीवप्रदेशमें योगकी जो जघन्य वृद्धि है उसे योगाविभागप्रतिच्छेद कहते हैं ।

उस प्रमाणसे एक जीवप्रदेशमें स्थित जघन्य योगको बुद्धिसे छेदनेपर असंख्यात लोक प्रमाण योगाविभागप्रतिच्छेद होते हैं । एक जीवप्रदेशमें स्थित उत्कृष्ट योगको भी इसी प्रमाणसे छेदनेपर असंख्यात लोक प्रमाण ही अविभागप्रतिच्छेद होते हैं, क्योंकि, एक जीवप्रदेशमें स्थित जघन्य योगकी अपेक्षा एक जीवप्रदेशमें स्थित उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणा पाया जाता है । एक जीवप्रदेशमें स्थित जघन्य योगको असंख्यात लोकोंसे खण्डित करनेपर उनमेंसे एक खण्ड अविभागप्रतिच्छेद कहलाता

---

१ पण्णाछेयणछिन्ना लोगासंखेज्जगप्पएससमा । अविभागा एक्केक्के होंति पएसे जहन्नेण ॥ क. प्र. १, ६.

२ कोऽविभागप्रतिच्छेदः ? जीवप्रदेशस्य कर्मादानशक्तौ जघन्यवृद्धिः, योगस्याविकृतत्वात् । गो. क. जी. प्र. २२८. तत्र यस्यांशस्य प्रज्ञाच्छेदनकेन विभागः कर्तुं न शक्यते सोंऽशोऽविभाग उच्यते । किमुक्तं भवति ? इह जीवस्य वीर्यं केवलिप्रज्ञाच्छेदनकेन छिद्यमानं छिद्यमानं यदा विभागं न प्रयच्छति तदा सोऽन्तिमोंऽशोऽविभाग इति । क. प्र. (मलय) ४, ५.

३ ताप्रतौ ' होंति । एगजीवपदेसट्ठिदजहण्णजोगो परिणामए (पण्णाए) छिज्जमाणे असंखेज्जलोगमेत्ता जोगाविभागपडिच्छेदा होंति । एग- ' इति पाठः ।

तेण पमाणेण एक्केक्कम्हि जीवपदेसे असंखेज्जलोगमेत्ता जोगाविभागपडिच्छेदा होंति त्ति वुत्तं होदि । जहा कम्मपदेसेसु सगजहण्णगुणस्स अणंतिमभागो अविभागपडिच्छेदसण्णिदो जादो तहा एत्थ वि एगजीवपदेसजहण्णजोगस्स अणंतिमभागो अविभागपडिच्छेदो किण्ण जायदे ? ण एस दोसो, कम्मगुणस्सेव जोगस्स अणंतिमभागवड्ढीए अभावादो । जोगे पण्णाए छिज्जमाणे जो असो विभाग ण पच्छदि सो अविभागपडिच्छेदो त्ति के वि भणंति । तण्ण घडदे, पुव्वमविभागपडिच्छेदे अणवगए पण्णच्छेदणाणुववत्तीदो । उववत्तीए वा कम्मा विभागपडिच्छेदा इव अणंता जोगाविभागपडिच्छेदा होज्ज । ण च एवं, असंखेज्जा लोगा जोगाविभागपडिच्छेदा इदि सुत्तेण सह विरोहादो । एदेण सुत्तेण वग्गपरूवणा कदा, एगजीवपदेसाविभागपडिच्छेदाण वग्गववएसादो ।

एवदिया जोगाविभागपडिच्छेदा ॥ १७९ ॥

एक्केक्कम्हि जीवपदेसे जोगाविभागपडिच्छेदा असंखेज्जलोगमेत्ता होंति त्ति कट्टु लोगमेत्ते जीवपदेसे ठवेदूण तप्पाओग्गअसंखेज्जलोगेहि गहिदकरणुप्पाइदेहि गुणिदे एवदिया

है । इस प्रमाणसे एक एक जीवप्रदेशमें असंख्यात लोक प्रमाण योगाविभागप्रतिच्छेद होते हैं यह अभिप्राय है ।

शंका— जिस प्रकार कर्मप्रदेशोंमें अपने जघन्य गुणके अनन्तवें भागकी अविभागप्रतिच्छेद संज्ञा होती है उसी प्रकार यहां भी एक जीवप्रदेश सम्बन्धी जघन्य योगके अनन्तवें भागकी अविभागप्रतिच्छेद संज्ञा क्यों नहीं होती ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है क्योंकि जिस प्रकार कर्मगुणके अनन्त भागवृद्धि पायी जाती है वैसे वह यहां सम्भव नहीं है ।

योगको बुद्धिसे छेदनेपर जो अंश विभागको नहीं प्राप्त होता है वह अविभागप्रतिच्छेद है ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । वह घटित नहीं होता क्योंकि पहिले अविभागप्रतिच्छेदके अज्ञात होनेपर बुद्धिसे छेद करना घटित नहीं होता । अथवा यदि वह घटित होता है ऐसा स्वीकार किया जाय तो जैसे कर्मके अविभागप्रतिच्छेद अनन्त होते हैं वैसे ही योगके अविभागप्रतिच्छेद भी अनन्त होना चाहिये । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि वैसा होनेपर असंख्यात लोक प्रमाण योगके अविभागप्रतिच्छेद होते हैं इस सूत्रसे विरोध होगा । इस सूत्र द्वारा वर्गोंकी प्ररूपणा की गई है क्योंकि एक जीवप्रदेशके अविभागप्रतिच्छेदोंकी वर्ग यह संज्ञा है ।

एक योगस्थानमें इतने मात्र योगाविभागप्रतिच्छेद होते हैं ॥ १७९ ॥

एक एक जीवप्रदेशमें योगाविभागप्रतिच्छेद असंख्यात लोक मात्र होते हैं ऐसा करके लोक मात्र जीवप्रदेशोंको स्थापित कर ग्रहीत करणके द्वारा उत्पादित तत्प्रायोग्य

जोगाविभागपडिच्छेदा एक्केक्कम्हि जोगट्ठाणे हवंति। अणुभागट्ठाणं व अणंतेहि अविभाग पडिच्छेदेहि जोगट्ठाणं ण होदि, किंतु असंखेज्जेहि जोगाविभागपडिच्छेदेहि होंति त्ति जाणाविय[1]) समत्ता अविभागपडिच्छेदपरूवणा।

वग्गणपरूवणदाए असंखेज्जलोगजोगाविभागपडिच्छेदाणमेया वग्गणा भवदि[2] ॥ १८० ॥

किमट्ठमेसा वग्गणपरूवणा आगदा? किं सव्वे जीवपदेसा जोगाविभागपडिच्छेदेहि सरिसा आहो विसरिसा त्ति पुच्छिदे सरिसा अत्थि विसरिसा वि अत्थि त्ति जाणावणट्ठ वग्गणपरूवणा आगदा। असंखेज्जलोगमेत्तजोगाविभागपडिच्छेदाणमेया वग्गणा होदि त्ति भणिदे जोगाविभागपडिच्छेदेहि सरिसधणियसव्वजीवपदेसाण जोगाविभागपडिच्छेदासंभवादो असंखेज्जलोगमेत्ताविभागपडिच्छेदपमाणो[3] एया वग्गणा होदि त्ति घेत्तव्वं[4]। एवं सव्ववग्गणाण

असंख्यात लोकोंसे गुणित करनेपर इतने मात्र योगाविभागप्रतिच्छेद एक एक योगस्थानमें होते हैं। अनुभागस्थानके समान योगस्थान अनन्त अविभागप्रतिच्छेदोंसे नहीं होता, किन्तु वह असंख्यात योगाविभागप्रतिच्छेदोंसे होता है, यह जतलाया गया है। अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणा समाप्त हुई है।

वर्गणाप्ररूपणाके अनुसार असख्यात लोक मात्र योगाविभागप्रतिच्छेदोंकी एक वर्गणा होती है ॥ १८० ॥

शंका — वर्गणाप्ररूपणाका अवतार किसलिये हुआ है?

समाधान — क्या सब जीवप्रदेश योगाविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा सदृश है या विसदृश हैं, ऐसा पूछनेपर उत्तरमें 'वे सदृश भी हैं और विसदृश भी हैं' इस बातके ज्ञापनार्थ वर्गणाप्ररूपणाका अवतार हुआ है।

असंख्यात लोक मात्र योगाविभागप्रतिच्छेदोंकी एक वर्गणा होती है, ऐसा कहनेपर योगाविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा समान धनवाले सब जीवप्रदेशोंके योगाविभागप्रतिच्छेद असम्भव होनेसे असख्यात लोक मात्र अविभागप्रतिच्छेदोंके बराबर एक वर्गणा होती है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। इसी प्रकार सब वर्गणाओंमें प्रत्येक

१ अ-आ-काप्रतिषु 'जाणाविय' इति पाठ। २ जेसिं पएसाण समा अविभागा सव्वतो य थोवतमा। ते वग्गणा जहन्ना अविभागहिया परंपरओ॥ क प्र १, ७ ३ अ आ काप्रतिषु 'पडिच्छेदापमाणो' इति पाठ। ४ येषां जीवप्रदेशानां समास्तुल्यसख्या वीर्याविभागा भवन्ति, सर्वतश्च सर्वेभ्योऽपि चान्येभ्योऽपि जीवप्रदेशगत वीर्याविभागेभ्य स्तोकतमा, ते जीवप्रदेशा घनीकृतलोकासख्येयभागवर्त्यसख्येयप्रतरगतप्रदेशराशिप्रमाणा समुदिता एका वर्गणा। क प्र. (मलय) १ ७.

पत्तेय पमाणपरूवणं कायव्वं, विसेसाभावादो ।

एवमसंखेज्जाओ वग्गणाओ सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ ॥

जोगाविभागपडिच्छेदेहि सरिससव्वजीवपदेसे घेत्तूण एगा वग्गणा होदि । पुणो अण्णे वि जीवपदेसे जोगाविभागपडिच्छेदेहि अण्णोण्णं समाणे पुव्विल्लवग्गणजीवपदेस-जोगाविभागपडिच्छेदेहिंतो अहिए उवरि तुल्लपमाणवग्गणाणमेगजीवपदेसजोगाविभागपडिच्छेदेहिंतो ऊणे घेत्तूण बिदिया वग्गणा होदि । एवमणेण विहाणेण गहिदसव्ववग्गणाओ सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । कधमेदं णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । ण च पमाणं पमाणंतरेण साहिज्जदि, अणवत्थापसंगादो । असंखेज्जपदरमेत्तजीवपदेसेहि एगा जोगवग्गणा होदि त्ति कधमेदं णव्वदे ? सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ एगजोगट्ठाणसव्ववग्गणाओ होंति त्ति सुत्तादो णव्वदे । तं जहा— सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गणसलागासु जदि लोगमेत्तजीवपदेसा लब्भंति तो एगवग्गणाए [केत्तिए] जीवपदेसे लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदइच्छाए ओवट्टिदाए असंखेज्जपदरमेत्ता जीवपदेसा एक्केक्किस्से वग्गणाए होंति ।

वर्गणाके प्रमाणकी प्ररूपणा करना चाहिये क्योंकि उसमें कोई विशेषता नहीं है ।

इस प्रकार श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण असंख्यात वर्गणायें होती हैं ॥ १८१ ॥

योगाविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा समान सब जीवप्रदेशोंको ग्रहण कर एक वर्गणा होती है । पुनः योगाविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा परस्पर समान पूर्व वर्गणा सम्बन्धी जीवप्रदेशोंके योगाविभागप्रतिच्छेदोंसे अधिक परन्तु आगे कही जानेवाली वर्गणाओंके एक जीवप्रदेश सम्बन्धी योगाविभागप्रतिच्छेदोंसे हीन ऐसे दूसरे भी जीवप्रदेशोंको ग्रहण करके दूसरी वर्गणा होती है । इस प्रकार इस विधानसे ग्रहण की गई सब वर्गणायें श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

शंका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— वह इसी सूत्रसे जाना जाता है । किसी एक प्रमाणको दूसरे प्रमाणसे सिद्ध नहीं किया जाता क्योंकि इस प्रकारसे अनवस्थाका प्रसंग आता है ।

शंका— असंख्यात प्रतर मात्र जीवप्रदेशोंकी एक योगवर्गणा होती है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— वह एक योगस्थानकी सब वर्गणायें श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र होती हैं इस सूत्रसे जाना जाता है । वह इस प्रकारसे— श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र वर्गणाशलाकाओंमें यदि लोक प्रमाण जीवप्रदेश पाये जाते हैं तो एक वर्गणामें कितने जीवप्रदेश पाये जावेंगे इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर असंख्यात प्रतर प्रमाण जीवप्रदेश एक एक वर्गणामें होते हैं । सब वर्गणाओंकी दीर्घता

ण च सव्ववग्गणाणं दीहत्तं समाण, आदिवग्गणप्पहुडि विसेसहीणसरूवेण अवट्ठाणादो। कधमेदं णव्वदे ? आइरियपरंपरागदुवदेसादो। एत्थ गुरूवदेसबलेण छहि अणियोगद्दारेहि वग्गणजीवपदेसाणं परूवणा कीरदे। तं जहा— परूवणा पमाणं सेडी अवहारो भागाभागो अप्पाबहुग चेदि छअणिओगद्दाराणि। तत्थ परूवणा— पढमाए वग्गणाए अत्थि जीवपदेसा। बिदियाए वग्गणाए अत्थि जीवपदेसा। एवं णेदव्व जाव चरिमवग्गणेत्ति। परूवणा गदा।

पमाणं वुच्चदे— पढमाए वग्गणाए जीवपदेसा असंखेज्जपदरमेत्ता। बिदियाए वग्गणाए जीवपदेसा असंखेज्जपदरमेत्ता। एवं णेयव्वं जाव चरिमवग्गणेत्ति। पमाण-परूवणा गदा।

सेडिपरूवणा दुविहा अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि। तत्थ अणंतरोवणिधा उच्चदे। तं जहा—पढमाए वग्गणाए जीवपदेसा बहुवा। बिदियाए वग्गणाए जीवपदेसा विसेसहीणा। को विसेसो ? दोगुणहाणीहि सेडीहि असंखेज्जदिभागमेत्ताहि पढमवग्गणा-जीवपदेसेसु खंडिदेसु तत्थ एगखंडमेत्तो। एवं विसेसहीणा होदूण सव्ववग्गणजीवपदेसा

समान नहीं है, क्योंकि, प्रथम वर्गणाको आदि लेकर आगेकी वर्गणायें विशेष हीन स्वरूपसे अवस्थित हैं।

शंका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— वह आचार्यपरम्परागत उपदेशसे जाना जाता है।

यहां गुरुके उपदेशके बलसे छह अनुयोगद्वारोंसे वर्गणा सम्बन्धी जीवप्रदेशोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व, ये छह अनुयोगद्वार हैं। उनमें प्ररूपणा— प्रथम वर्गणामें जीवप्रदेश हैं, द्वितीय वर्गणामें जीवप्रदेश हैं, इस प्रकार अन्तिम वर्गणा तक ले जाना चाहिये। प्ररूपणा समाप्त हुई।

प्रमाणका कथन करते हैं— प्रथम वर्गणामें जीवप्रदेश असंख्यात प्रतर मात्र हैं। द्वितीय वर्गणामें जीवप्रदेश असंख्यात प्रतर मात्र हैं। इस प्रकार अन्तिम वर्गणा तक ले जाना चाहिये। प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है— अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा। उनमें अनन्तरोपनिधाका कथन करते हैं— प्रथम वर्गणामें जीवप्रदेश बहुत हैं। उससे द्वितीय वर्गणामें जीवप्रदेश विशेष हीन हैं। विशेषका प्रमाण कितना है ? श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र दो गुणहानियों द्वारा प्रथम वर्गणा सम्बन्धी जीवप्रदेशोंको खण्डित करनेपर उनमेंसे वह एक खण्ड प्रमाण है। इस प्रकार अन्तिम वर्गणा तक सब वर्गणाओंके जीवप्रदेश विशेष हीन होकर जाते हैं। विशेषता इतनी है कि एक एक

गच्छंति जाव चरिमवग्गणेत्ति। णवरि गुणहाणिं पडि विसेसो दुगुणहीणो होदूण गच्छदि त्ति घेत्तव्वं, गुणहाणिअद्धाणस्स अवट्ठिदत्तादो।

परंपरोवणिधा उच्चदे। तं जहा — पढमवग्गणाए जीवपदेसेहिंतो तदो सेडीए असंखेज्जदिभागं गंतूण ट्ठिदवग्गणाए जीवपदेसा दुगुणहीणा। एवमवट्ठिदअद्धाणं गंतूण अणंतराणंतरं दुगुणहीणा होदूण गच्छंति जाव चरिमवग्गणेत्ति। एत्थ तिण्णि अणियोगद्दाराणि परूवणा पमाणमप्पाबहुगं चेदि। तत्थ परूवणं वुच्चदे। तं जहा — अत्थि एगजीवपदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि च। परूवणा गदा।

एगजीवपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं सेडीए असंखेज्जदिभागो[1]। णाणाजीवपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो[2]। पमाणं गदं।

सव्वत्थोवाओ णाणाजीवपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरसलागाओ। एगजीवपदेसगुणहाणिट्ठाणमसंखेज्जगुणं। सेडिपरूवणा गदा।

अवहारो वुच्चदे — पढमाए वग्गणाए जीवपदेसपमाणेण सव्वजीवपदेसा केवचिरेण

गुणहानिके प्रति विशेष दुगुणा हीन होकर जाता है ऐसा ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि गुणहानिअध्वान अवस्थित है।

परम्परोपनिधाका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है — प्रथम वर्गणाके जीवप्रदेशोंकी अपेक्षा उससे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र आगे जाकर स्थित वर्गणामें जीवप्रदेश दुगुणे हीन हैं। इस प्रकार अवस्थित (श्रेणिका असंख्यातवां भाग) अध्वान जाकर अनन्तर अनन्तर वे दुगुणे हीन होकर अन्तिम वर्गणा तक जाते हैं। यहां तीन अनुयोगद्वार हैं — प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व। उनमें प्ररूपणा कही जाती है। वह इस प्रकार है — एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर और नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर हैं। प्ररूपणा समाप्त हुई।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर श्रेणिके असंख्यातवें भाग है। नानाजीवप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरशलाकायें पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र हैं। प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई।

नानाजीवप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरशलाकायें सबसे स्तोक हैं। उनसे एकप्रदेशगुणहानिस्थान असंख्यातगुणा है। श्रेणिप्ररूपणा समाप्त हुई।

अवहारका कथन करते हैं — प्रथम वर्गणा सम्बन्धी जीवप्रदेशोंके प्रमाणसे

---

१ अप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिषु 'असंखेज्जदिभागो' इति पाठः।

२ सेढिअसंखियभागं गंतुं अद्धद्ध हवंति इक्कइयं। पल्लासंखियभागे नाणागुणहाणिठाणाणि॥ क. प्र. ५, १

कालेण अवहिरिज्जंति ? दिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जंति सेडीए संखेज्जदिभागमेत्तकालेण वा। एत्थ दिवड्ढबंधणविहाणं जाणिदूण वत्तव्वं। बिदियाए वग्गणाए जीवपदेसपमाणेण केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? सादिरेयदिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जंति। एवं गंतूण बिदियगुणहाणिपढमवग्गणाए जीवपदेसपमाणेण केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? तिण्णिगुणहाणिट्ठाणंतरपमाणेण अवहिरिज्जंति, एगगुणहाणिं चडिदो त्ति एगरूवं विरलिय दुगुणिय दिवड्ढगुणहाणीओ गुणिदे तिण्णिगुणहाणिसमुप्पत्तीदो। एदस्सुवरि सादिरेयतिण्णिगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जंति। एवं णेयव्वं जाव बिदियगुणहाणिं चडिदो त्ति। तदो तदियगुणहाणिपढमवग्गणजीवपदेसेहि सव्वपदेसा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? छग्गुणहाणिकालेण, दोगुणहाणीयो चडिदो त्ति दोरूवाणि विरलेदूण विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा दिवड्ढगुणहाणीए गुणिदाए छगुणहाणिसमुप्पत्तीदो। पुणो एवं णेदव्वं जाव चरिमवग्गणेत्ति। एत्थ वग्गणजीवपदेसाण संदिट्ठी एसा ठवेदव्वा—

२५६	२४०	२२४	२०८	१९२	१७६	१६०	१४४

। एवं उवरिमगुण-

सब जीवप्रदेश कितने कालसे अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे डेढ़गुणहानिस्थानान्तरकालसे अथवा श्रेणिके संख्यातवें भाग मात्र कालसे अपहृत होते हैं। यहां द्व्यर्धबन्धनविधानको जानकर कहना चाहिये। द्वितीय वर्गणा सम्बन्धी जीवप्रदेशोंके प्रमाणसे सब जीवप्रदेश कितने कालसे अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे साधिक डेढ़गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होते हैं। इस प्रकार जाकर द्वितीय गुणहानि सम्बन्धी प्रथम वर्गणाके जीवप्रदेशोंके प्रमाणसे वे कितने कालसे अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे तीन गुणहानिस्थानान्तर प्रमाण कालसे अपहृत होते हैं, क्योंकि, एक गुणहानि गया है, अतः एक रूपका विरलन करके दुगुणा कर उससे डेढ़ गुणहानियोंको गुणित करनेपर तीन गुणहानियोंकी उत्पत्ति है। इसके आगे वे साधिक तीन गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होते हैं। इस प्रकार द्वितीय गुणहानि जाने तक ले जाना चाहिये। तत्पश्चात् तृतीय गुणहानिकी प्रथम वर्गणा सम्बन्धी जीवप्रदेशोंसे सब प्रदेश कितने कालसे अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे छह गुणहानिकालसे अपहृत होते हैं, क्योंकि, दो गुणहानियां गया है अतः दो रूपोंका विरलन करके दुगुणा करके उनकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे डेढ़गुणहानियोंको गुणित करनेपर छह गुणहानियां उत्पन्न होती हैं। आगे अन्तिम वर्गणा तक इसी प्रकारसे ले जाना चाहिये। यहां वर्गणाओं सम्बन्धी जीवप्रदेशोंकी संदृष्टि इस प्रकार स्थापित करना चाहिये— प्र. व. २५६, द्वि. व. २४०, तृ. व. २२४, च. व. २०८, पं. व. १९२, ष. व. १७६, स. व. १६०, अ. व. १४४।

---

१ ताप्रतौ 'त्थ (छ) गुणहाणि' इति पाठः।

हाणीओ वि ठविय घेत्तव्वाओ। एदेसु सव्वजीवपदेसेसु पढमवग्गणजीवपदेसपमाणेण कदेसु दिवड्ढगुणहाणिमेत्ता होंति। तस्स पमाणमेदं [१२६४]। पुणो सव्वदव्वपमाणमेदं [३१००]। सेसस्स उवसंहारभंगो। अधवा पढमवग्गणजीवपदेसपमाणेण सव्ववग्गणजीवपदेसा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति? दिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण। बिदियाए वग्गणाए जीवपदेसपमाणेण सव्वजीवपदेसा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति? सादिरेयदिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण अवहिरिज्जंति। तं जहा— दिवड्ढगुणहाणिं विरलिय सव्वदव्वं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि पढमणिसेयपमाणं पावदि। पुणो एदस्स हेट्ठा णिसेगभागहारं विरलिय पढमणिसेगपमाणं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स एगगोविसेसपमाणं पावदि। एदमुवरिमपढमणिसेगविक्खंभ-दिवड्ढगुणहाणिआयदखेत्तं अवणिय पुध ट्ठवेदव्वं [diagram]। एसा अवणिदफाली गोवुच्छविसेसविक्खंभा णिसेयभागहारस्स तिण्णि चदुब्भागा आयदा बिदियणिसेयपमाणेण कीरमाणा एगबिदियणिसेयपमाणं होदि, गुणहाणिअद्धरूवूणमेत्तगोवुच्छविसेसाणमभावादो। तेत्तिएसु संतेसु भागहारम्मि एगा पक्खेवसलागा लब्भदि। ण च

इस प्रकार उपरिम गुणहानियोंको भी स्थापित करके ग्रहण करना चाहिये। इन सब जीवप्रदेशोंको प्रथम वर्गणा सम्बन्धी जीवप्रदेशोंके प्रमाणसे करनेपर वे डेढ़ गुणहानि प्रमाण होते हैं। उनका प्रमाण यह है — १२१० + ५४ = १२६४। सर्व द्रव्यका प्रमाण यह है— ३१००। शेषका उपसंहारभंग है।

अथवा प्रथम वर्गणा सम्बन्धी जीवप्रदेशोंके प्रमाणसे सब वर्गणाओं सम्बन्धी जीवप्रदेश कितने कालसे अपहृत होते हैं? उक्त प्रमाणसे वे डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होते हैं। द्वितीय वर्गणा सम्बन्धी जीवप्रदेशोंके प्रमाणसे सब जीवप्रदेश कितने कालसे अपहृत होते हैं? उक्त प्रमाणसे वे साधिक डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होते हैं। यथा— डेढ़ गुणहानिका विरलन करके सब द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर रूपके प्रति प्रथम निषेकका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः इसके नीचे निषेकभागहारका विरलन करके प्रथम निषेकके प्रमाणको समखण्ड करके देनेपर एक एक रूपके प्रति एक एक विशेषका प्रमाण प्राप्त होता है। उपरिम प्रथम निषेक प्रमाण विस्तृत और डेढ़ गुणहानि आयत इस क्षेत्रको अलग करके पृथक् स्थापित करना चाहिये। गोपुच्छविशेष प्रमाण विस्तृत और निषेकभागहारके तीन चतुर्थ भाग मात्र आयत इस अपनीत फालिको द्वितीय निषेकके प्रमाणसे करनेपर वह एक द्वितीय निषेक प्रमाण होती है, क्योंकि उसमें गुणहानिके अर्ध भागमेंसे एक कम करनेपर जो प्राप्त हो उतने गोपुच्छविशेषोंका अभाव है। उतने मात्र होनेपर भागहारमें एक प्रक्षेप

---

१ [illegible] गुणहाणीओ [illegible] इति पाठः। २ [illegible] वेदिदव्व इति पाठः।

एत्तियमत्थि । तेण किंचूणचदुब्भागेणूणएगरूवे दिवड्ढगुणहाणीए पक्खित्ते विदियणिसे
भागहारो होदि । तदियवग्गणपमाणेण सव्ववग्गणजीवपदेसा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जति
सादिरेयदिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जति । तं जहा— पुव्विल्लखेत्त
णिसेयविसेसविक्खंभ-दिवड्ढगुणहाणिआयददोफालीसु अवणिदासु अवणिदसेसं तदियणिसे
विक्खंभ-दिवड्ढगुणहाणिआयदं होदूण चेट्ठदि । पुणो अवणिददोफालीसु तप्पमाणेण कदा
सादिरेयएगरूवपक्खेवो होदि । एवं जाणिय वत्तव्वं । एवं णेयव्वं जाव चरिमगुणहा
चरिमवग्गणेत्ति । एवं भागहारपरूवणा समत्ता ।

भागाभागो वुच्चदे— पढमाए वग्गणाए जीवपदेसा सव्ववग्गणजीवपदेसा
केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो । विदियाए वग्गणाए जीवपदेसा सव्ववग्गणजी
पदेसाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो । एवं णेदव्वं जाव चरिमवग्गणेत्ति । ए
भागाभागपरूवणा समत्ता ।

अप्पाबहुगं उच्चदे— सव्वत्थोवा चरिमाए वग्गणाए जीवपदेसा । पढमाए व

शलाका पायी जाती है । परन्तु इतना है नहीं, इसलिये कुछ कम चतुर्थ भागसे ही
एक अंकको डेढ़ गुणहानिमें मिलानेपर द्वितीय निषेकका भागहार होता है ।

तृतीय वर्गणाके प्रमाणसे सब वर्गणाओंके जीवप्रदेश कितने कालसे अपह
होते हैं । उक्त प्रमाणसे वे साधिक द्व्यर्धगुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होते है
यथा— पूर्व क्षेत्रमेंसे निषेकविशेष प्रमाण विस्तृत और डेढ़ गुणहानि आयत दो फालिय
को अलग कर देनेपर शेष क्षेत्र तृतीय निषेक प्रमाण विस्तृत और डेढ़ गुणहा
आयत होकर स्थित रहता है । फिर घटाई हुई दो फालियोंको उसके प्रमाणसे कर
पर साधिक एक रूप प्रक्षेप होता है । इस प्रकार जान करके कहना चाहिये । इ
प्रकार चरम गुणहानिकी चरम वर्गणा तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार भागहा
प्ररूपणा समाप्त हुई ।

भागाभाग कहा जाता है— प्रथम वर्गणाके जीवप्रदेश सब वर्गणाओं सम्बन्
जीवप्रदेशोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे सब वर्गणाओं सम्बन्धी जीवप्रदेशोंके अ
ख्यातवें भागमात्र हैं । द्वितीय वर्गणाके जीवप्रदेश सब वर्गणाओं सम्बन्धी जीवप्रदेशों
कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? उक्त प्रदेश उनके असंख्यातवें भाग मात्र हैं । इस प्रकार चर
वर्गणा तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार भागाभागप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्व कहा जाता है— चरम वर्गणाके जीवप्रदेश सबसे स्तोक हैं । उन

---

१ अ-आ काप्रतिषु 'कलाय इति पाठः ।

णाए जीवपदेसा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो [वा] गुणगारो। अपढम-अचरिमासु वग्गणासु जीवपदेसा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? किंचूणदिवड्ढगुणहाणीओ गुणगारो सेडीए असंखेज्जदिभागो वा। अपढमासु वग्गणासु जीवपदेसा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? चरिमवग्गणाए ऊणपढमवग्गणमेत्तेण। सव्वासु वग्गणासु जीवपदेसा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? चरिमवग्गणमेत्तेण। अप्पाबहुगपरूवणा गदा।

एवमसंखेज्जपदरमेत्तजीवपदेसे घेत्तूण एगा जोगवग्गणा होदि त्ति सिद्धं। एवं साधिदएगेगवग्गणाजीवपदेसेसु असंखेज्जलोगमेत्तेहि अप्पप्पणो जोगाविभागपडिच्छेदेहि गुणिदेसु एगेगवग्गणजोगाविभागपडिच्छेदा होंति। पढमवग्गणाए अविभागपडिच्छेदेहिंतो बिदियवग्गणअविभागपडिच्छेदा विसेसहीणा। केत्तियमेत्तेण? पढमवग्गणाएगजीवपदेसाविभागपडिच्छेदे णिसेगविसेसेण गुणिय पुणो तत्थ बिदियगोवुच्छाए अवणिदाए जं सेसं तेत्तियमेत्तेण। बिदियवग्गणाविभागपडिच्छेदेहिंतो तदियवग्गणअविभागपडिच्छेदा विसेसहीणा।

प्रथम वर्गणाके जीवप्रदेश असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? नाना गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर द्विगुणा करके परस्पर गुणा करनेपर जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है अथवा पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उनसे अप्रथम व अचरम वर्गणाओंमें जीवप्रदेश असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? गुणकार कुछ कम डेढ़ गुणहानियां अथवा श्रेणिका असंख्यातवां भाग है। उनसे अप्रथम वर्गणाओंमें जीवप्रदेश विशेष अधिक हैं। कितने मात्र विशेषसे वे अधिक हैं? चरम वर्गणासे हीन प्रथम वर्गणा मात्रसे वे अधिक हैं। उनसे सब वर्गणाओंमें जीवप्रदेश विशेष अधिक हैं। कितने मात्र विशेषसे वे अधिक हैं? चरम वर्गणा मात्रसे वे अधिक हैं। अल्पबहुत्वप्ररूपणा समाप्त हुई।

इस प्रकार असंख्यात प्रतर मात्र जीवप्रदेशोंको ग्रहण कर एक योगवर्गणा होती है यह सिद्ध हो गया। इस प्रकार सिद्ध किये गये एक एक वर्गणाके जीवप्रदेशोंको असंख्यात लोक प्रमाण अपने योगाविभागप्रतिच्छेदोंसे गुणित करनेपर एक एक वर्गणाके योगाविभागप्रतिच्छेद होते हैं।

प्रथम वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंसे द्वितीय वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेद विशेष हीन हैं। कितने मात्र विशेषसे वे हीन हैं? प्रथम वर्गणा सम्बन्धी एक जीवप्रदेशके अविभागप्रतिच्छेदोंको निषेकविशेषसे गुणित कर फिर उसमेंसे द्वितीय गोपुच्छको कम करनेपर जो शेष रहे उतने मात्रसे वे विशेष अधिक हैं। द्वितीय वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंसे तृतीय वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेद

एत्तियमत्थि। तेण किंचूणचदुब्भागेणूणएगरूवे दिवड्ढगुणहाणीए पक्खित्ते बिदियणिसेग-भागहारो होदि। तदियवग्गणपमाणेण सव्ववग्गणजीवपदेसा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जति? सादिरेयदिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जति। तं जहा— पुव्विल्लखेत्तम्हि णिसेयविसेसविक्खंभ-दिवड्ढगुणहाणिआयददोफालीसु अवणिदासु अवणिदसेसं तदियणिसेग-विक्खंभ-दिवड्ढगुणहाणिआयदं होदूण चेट्ठदि। पुणो अवणिददोफालीसु तप्पमाणेणं कदासु सादिरेयएगरूवपक्खेवो होदि। एवं जाणिय वत्तव्वं। एवं णेयव्वं जाव चरिमगुणहाणि-चरिमवग्गणेत्ति। एवं भागहारपरूवणा समत्ता।

भागाभागो वुच्चदे— पढमाए वग्गणाए जीवपदेसा सव्ववग्गणजीवपदेसाणं केवडिओ भागो? असंखेज्जदिभागो। बिदियाए वग्गणाए जीवपदेसा सव्ववग्गणजीव-पदेसाणं केवडिओ भागो? असंखेज्जदिभागो। एवं णेदव्वं जाव चरिमवग्गणेत्ति। एवं भागाभागपरूवणा समत्ता।

अप्पाबहुगं उच्चदे— सव्वत्थोवा चरिमाए वग्गणाए जीवपदेसा। पढमाए वग्ग-

शलाका पायी जाती है। परन्तु इतना है नहीं, इसलिये कुछ कम चतुर्थ भागसे हीन एक अंकको डेढ़ गुणहानिमें मिलानेपर द्वितीय निषेकका भागहार होता है।

तृतीय वर्गणाके प्रमाणसे सब वर्गणाओंके जीवप्रदेश कितने कालसे अपहृत होते हैं। उक्त प्रमाणसे वे साधिक द्व्यर्धगुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होते हैं। यथा— पूर्व क्षेत्रमेंसे निषेकविशेष प्रमाण विस्तृत और डेढ़ गुणहानि आयत दो फालियों को अलग कर देनेपर शेष क्षेत्र तृतीय निषेक प्रमाण विस्तृत और डेढ़ गुणहानि आयत होकर स्थित रहता है। फिर घटाई हुई दो फालियोंको उसके प्रमाणसे करने पर साधिक एक रूप प्रक्षेप होता है। इस प्रकार जान करके कहना चाहिये। इस प्रकार चरम गुणहानिकी चरम वर्गणा तक ले जाना चाहिये। इस प्रकार भागहार प्ररूपणा समाप्त हुई।

भागाभाग कहा जाता है— प्रथम वर्गणाके जीवप्रदेश सब वर्गणाओं सम्बन्धी जीवप्रदेशोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं? वे सब वर्गणाओं सम्बन्धी जीवप्रदेशोंके असंख्यातवें भागमात्र हैं। द्वितीय वर्गणाके जीवप्रदेश सब वर्गणाओं सम्बन्धी जीवप्रदेशोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं? उक्त प्रदेश उनके असख्यातवें भाग मात्र हैं। इस प्रकार चरम वर्गणा तक ले जाना चाहिये। इस प्रकार भागाभागप्ररूपणा समाप्त हुई।

अल्पबहुत्व कहा जाता है— चरम वर्गणाके जीवप्रदेश सबसे स्तोक हैं। उनसे

१ अ-आ काप्रतिषु 'कलासु' इति पाठ ।

णाए जीवपदेसा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो [वा] गुणगारो। अपढम-अचरिमासु वग्गणासु जीवपदेसा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? किंचूणदिवड्ढगुणहाणीओ गुणगारो सेडीए असंखेज्जदिभागो वा। अपढमासु वग्गणासु जीवपदेसा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? चरिमवग्गणाए ऊणपढमवग्गणमेत्तेण। सव्वासु वग्गणासु जीवपदेसा विसेसाहिया। केत्तिय मेत्तेण? चरिमवग्गणमेत्तेण। अप्पाबहुगपरूवणा गदा।

एवमसंखेज्जपदरमेत्तजीवपदेसे घेत्तूण एगा जोगवग्गणा होदि त्ति सिद्धं। एवं साविदएगेगवग्गणाजीवपदेसेसु असंखेज्जलोगमेत्तेहि अप्पप्पणो जोगाविभागपडिच्छेदेहि गुणिदेसु एगेगवग्गणजोगाविभागपडिच्छेदा होंति। पढमवग्गणाए अविभागपडिच्छेदेहिंतो बिदियवग्गणअविभागपडिच्छेदा विसेसहीणा। केत्तियमेत्तेण? पढमवग्गणाएगजीवपदेसा विभागपडिच्छेदे णिसेगविसेसेण गुणिय पुणो तत्थ बिदियगोवुच्छाए अवणिदाए जं सेसं तेत्तियमेत्तेण। बिदियवग्गणअविभागपडिच्छेदेहिंतो तदियवग्गणअविभागपडिच्छेदा विसेसहीणा।

प्रथम वर्गणाके जीवप्रदेश असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? नाना गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर द्विगुणा करके परस्पर गुणा करनेपर जो राशि उत्पन्न हो वतना गुणकार है अथवा पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उनसे अप्रथम व अचरम वर्गणाओंमें जीवप्रदेश असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? गुणकार कुछ कम डेढ़ गुणहानियां अथवा श्रेणिका असंख्यातवां भाग है। उनसे अप्रथम वर्गणाओंमें जीवप्रदेश विशेष अधिक हैं। कितने मात्र विशेषसे वे अधिक हैं? चरम वर्गणासे हीन प्रथम वर्गणा मात्रसे वे अधिक हैं। उनसे सब वर्गणाओंमें जीवप्रदेश विशेष अधिक हैं। कितने मात्र विशेषसे वे अधिक हैं? चरम वर्गणा मात्रसे वे अधिक हैं। अल्पबहुत्वप्ररूपणा समाप्त हुई।

इस प्रकार असंख्यात प्रतर मात्र जीवप्रदेशोंको ग्रहण कर एक योगवर्गणा होती है यह सिद्ध हो गया। इस प्रकार सिद्ध किये गये एक एक वर्गणाके जीवप्रदेशोंको असंख्यात लोक प्रमाण अपने योगाविभागप्रतिच्छेदोंसे गुणित करनेपर एक एक वर्गणाके योगाविभागप्रतिच्छेद होते हैं।

प्रथम वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंसे द्वितीय वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेद विशेष हीन हैं। कितने मात्र विशेषसे वे हीन हैं? प्रथम वर्गणा सम्बन्धी एक जीवप्रदेशके अविभागप्रतिच्छेदोंको निषेकविशेषसे गुणित कर फिर उसमेंसे द्वितीय गोपुच्छको कम करनेपर जो शेष रहे उतने मात्रसे वे विशेष अधिक हैं। द्वितीय वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंसे तृतीय वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेद

केत्तियमेत्तेण ? बिदियवग्गणएगजीवपदेसाविभागपडिच्छेदे एगगोवुच्छविसेसेण गुणिय पुणो तत्थ तदियगोवुच्छमवणिदे संते जं सेस तत्तियमेत्तेण । एव जाणिदूण णेदव्वं जाव पढम-फद्दयचरिमवग्गणेत्ति । पुणो पढमफद्दयचरिमवग्गणाविभागपडिच्छेदेहिंतो बिदियफद्दयआदि-वग्गणाए जोगाविभागपडिच्छेदा किंचूणदुगुणमेत्ता । एत्थ कारणं चिंतिय वत्तव्वं । बिदियफद्दयम्मि हेट्ठिमअणंतरादीदजोगपडिच्छेदेहिंतो उवरिमणंतरवग्गणाए जोगाविभाग-पडिच्छेदा विसेसहीणा । एवं गंतूण बिदियफद्दयचरिमवग्गणाविभागपडिच्छेदेहिंतो तदिय-फद्दयपढमवग्गणाए अविभागपडिच्छेदा किंचूणदुभागब्भहिया । एव उवरिं पि जाणिदूण णेदव्वं । णवरि फद्दयाणमादिवग्गणाविभागपडिच्छेदा अणतरहेट्ठिमवग्गणाविभागपडिच्छेदेहिंतो तिभागब्भहियं[1]-पंचभागब्भहियसरूवेण गच्छंति त्ति घेत्तव्वं ।

संपहि एत्थ एगजीवपदेसाविभागपडिच्छेदाण वग्गो त्ति सण्णा, समाणजोगसव्व-जीवपदेसाविभागपडिच्छेदाण च वग्गणा[2] त्ति सण्णा सिद्धा । ण च एत्थ सरिसधणियसव्वजीव-पदेससमूहो चेव वग्गणा होदि त्ति एयंतो । किंतु दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे एगो वि

विशेष हीन हैं । कितने मात्र विशेषसे वे हीन हैं ? द्वितीय वर्गणा सम्बन्धी एक जीवप्रदेशके अविभागप्रतिच्छेदोंको एक गोपुच्छविशेषसे गुणित कर फिर उनमेंसे तृतीय गोपुच्छको कम करनेपर जो शेष रहे उतने मात्रसे वे विशेष हीन हैं । इस प्रकार जानकर प्रथम स्पर्धककी चरम वर्गणा तक ले जाना चाहिये । पुन. प्रथम स्पर्धककी चरम वर्गणा सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेदोंसे द्वितीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणा के योगाविभागप्रतिच्छेद कुछ कम दुगुणे मात्र हैं । यहा कारण विचार कर कहना चाहिये । द्वितीय स्पर्धकमें नीचेकी अव्यवहित अतीत वर्गणाके योगाविभागप्रतिच्छेदोंसे उपरिम अव्यवहित वर्गणाके योगाविभागप्रतिच्छेद विशेष हीन हैं । इस प्रकार जाकर द्वितीय स्पर्धककी अन्तिम वर्गणा सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेदोंसे तृतीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेद कुछ कम द्वितीय भागसे अधिक हैं । इस प्रकार ऊपर भी जानकर ले जाना चाहिये । विशेष इतना है कि स्पर्धकोंकी प्रथम वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेद उससे अव्यवहित अधस्तन वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंसे तृतीय भाग अधिक व पंचम भाग अधिक स्वरूपसे जाते हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

अब यहां एक जीवप्रदेशके अविभागप्रतिच्छेदोंकी वर्ग यह संज्ञा, तथा समान योगवाले सब जीवप्रदेशोंके योगाविभागप्रतिच्छेदोंकी वर्गणा यह सज्ञा सिद्ध है । समान धनवाले सब जीवप्रदेशोंका समूह ही वर्गणा हो, ऐसा यहा एकान्त नहीं है । किन्तु द्रव्यार्थिकनयका अवलम्बन करनेपर एक भी जीवप्रदेश वर्गणा होता है,

---

१ अ-काप्रत्योः 'तिभागब्भधिय' इति पाठ । २ अ-का-ताप्रतिषु 'पडिच्छेदाण वग्गणा' इति पाठ ।

जीवपदेसो वग्गणा होदि, जोगाविभागपडिच्छेदेहि समाणासेसजीवपदेसाणमेत्थेव अंतब्भावादो। किंतु सुत्ते एवं ण वुत्तं। पज्जवट्ठियणयमवलंबिय सुत्ते किमट्ठं देसणा कदा? ओकड्डुक्कड्डणादि हाणि-वड्ढीओ जोगस्स होंति त्ति जाणावणट्ठं कदा। असंखेज्जलोगाविभागपडिच्छेदाणमेया वग्गणा होदि त्ति सुत्ते परूविदं सामण्णेण। तेण एदम्हादो सरिसधणियणाणाजीवपदेसे घेत्तूण एगा वग्गणा होदि त्ति ण णव्वदि[1] त्ति वुत्ते वुच्चदे — एदेण सुत्तेण एगोळीए सरिसधणाए चेव वग्गणा त्ति परूविदं, अण्णहा अविभागपडिच्छेदपरूवण-वग्गणपरूवणाणं विसेसाभावप्पसंगादो वग्गणाणमसंखेज्जपदरमेत्तपरूवणत्तप्पसंगादो च। किं च कसायपाहुडपच्छिमक्खंधसुत्तादो णव्वदे जहा सरिसधणियसव्वजीवपदेसा वग्गणा होदि त्ति। किं तं सुत्तं? चउत्थसमए लोगं पूरेदि। लोगे पुण्णे एगा वग्गणा जोगस्से त्ति। लोगमेत्तजीवपदेसाणं लोगे पुण्णे समजोगो होदि त्ति वुत्तं होदि। एवं वग्गणपरूवणा समत्ता।

क्योंकि योगाविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा समान सब जीवप्रदेशोंका इसमें ही अन्तर्भाव हो जाता है। किन्तु सूत्रमें इस प्रकार कहा नहीं है।

शंका — पर्यायार्थिकनयका अवलम्बन करके सूत्रमें किसलिये देशना की गई है?

समाधान — अपकर्षण उत्कर्षण द्वारा योगके हानि और वृद्धि होती है इस बातको बतलानेके लिये सूत्रमें पर्यायार्थिकनयका आलम्बन करके उक्त देशना की गई है।

शंका — असंख्यात लोक प्रमाण अविभागप्रतिच्छेदोंकी एक वर्गणा होती है ऐसा सूत्रमें सामान्यसे प्ररूपणा की गई है। इसलिये इससे समान धनवाले नाना जीवप्रदेशोंको ग्रहण कर एक वर्गणा होती है ऐसा नहीं जाना जाता है?

समाधान — ऐसा कहनेपर उत्तर देते हैं कि इस सूत्र द्वारा समान धनवाली एक पंक्तिको ही वर्गणा ऐसा कहा गया है क्योंकि इसके बिना अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणा और वर्गणाप्ररूपणामें कोई विशेषता न रहनेका प्रसंग तथा वर्गणाओंके असंख्यात प्रतर मात्र प्ररूपणाका भी प्रसंग आता है। दूसरे कषायप्राभृतके पश्चिमस्कन्ध अधिकारके सूत्रसे भी जाना जाता है कि समान धनवाले सब जीवप्रदेश वर्गणा होते हैं।

शंका — वह सूत्र कौनसा है?

समाधान — चतुर्थ समयमें लोकको पूर्ण करता है। लोकके पूर्ण होनेपर योगकी एक वर्गणा रहती है। लोक मात्र जीवप्रदेशोंके लोकपूरणसमुद्घात होने पर समयोग होता है यह अभिप्राय है।

इस प्रकार वर्गणाप्ररूपणा समाप्त हुई।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'त्ति णव्वदि' इति पाठः। २ अप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिषु '[illegible]' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'समयं तदा' इति पाठः। ४ तदो चउत्थसमए लोगं पूरेदि। लोगे पुण्णे एक्का वग्गणा जोगस्स समजोगो त्ति णायव्वो। जयध. (प. वि.) अ. प. ११११

फद्दयपरूवणाए असंखेज्जाओ वग्गणाओ सेडीए असंखेज्जदि-भागमेत्तीयो तमेगं फद्दयं होदि ॥ १८२ ॥

संखेज्जवग्गणाहि एगं फद्दयं ण होदि त्ति जाणावणट्ठमसंखेज्जाओ वग्गणाओ त्ति णिद्दिट्ठं। पलिदोवम-सागरोवमादिपमाणवग्गणाहि एगं फद्दयं ण होदि त्ति जाणावणट्ठं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताहि वग्गणाहि एगं फद्दयं होदि त्ति भणिदं। फद्दयमिदि किं वुत्तं होदि? क्रमवृद्धिः क्रमहानिश्च[1] यत्र विद्यते तत्स्पर्द्धकम्[2]। को एत्थ कमो णाम? सग-सगजहण्णवग्गाविभागपडिच्छेदेहिंतो एगेगाविभागपडिच्छेदवुड्ढी, उक्कस्सवग्गाविभाग-पडिच्छेदेहिंतो एगेगाविभागपडिच्छेदहाणी च कमो णाम[3]। दुप्पहुडीण वड्ढी हाणी च अक्कमो। पढमफद्दयपढमवग्गणाए एगवग्गअविभागपडिच्छेदेहिंतो विदियवग्गणाए एग-

स्पर्धकप्ररूपणाके अनुसार श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र जो असंख्यात वर्गणायें हैं उनका एक स्पर्धक होता है ॥ १८२ ॥

संख्यात वर्गणाओंसे एक स्पर्धक नहीं होता है, इस बातको जतलानेके लिये सूत्रमें 'असंख्यात वर्गणायें' ऐसा निर्देश किया है। पल्योपम व सागरोपम आदिके बराबर वर्गणाओंसे एक स्पर्धक नहीं होता, इस बातके ज्ञापनार्थ 'श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र वर्गणाओंसे एक स्पर्धक होता है, ऐसा कहा है।

शंका— स्पर्धकसे क्या अभिप्राय है?

समाधान— जिसमें क्रमवृद्धि और क्रमहानि होती है वह स्पर्धक कहलाता है।

शंका— यहां 'क्रम' का अर्थ क्या है?

समाधान— अपने अपने जघन्य वर्गके अविभागप्रतिच्छेदोंसे एक एक अविभागप्रतिच्छेदकी वृद्धि और उत्कृष्ट वर्गके अविभागप्रतिच्छेदोंसे एक एक अविभाग-प्रतिच्छेदकी जो हानि होती है उसे क्रम कहते हैं। दो व तीन आदि अविभागप्रतिच्छेदों की हानि व वृद्धिका नाम अक्रम है।

प्रथम स्पर्धक सम्बन्धी प्रथम वर्गणाके एक वर्ग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेदोंसे द्वितीय वर्गणाके एक वर्ग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद एक अविभागप्रतिच्छेदसे अधिक

१ ताप्रतौ 'क्रमवृद्धिर्हानिश्च' इति पाठः। २ स्पर्धन्त इवोत्तरोत्तरवृद्ध्या वर्गणा अत्रेति स्पर्धकम्। क. प्र. (मलय) १, ८. ३ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिषु 'सग सगजहण्णवग्गाविभागपडिच्छेदवुड्ढी वुक्कस्स वग्गाविभागपडिच्छेदहाणी च कमो णाम' इति पाठः।

वग्गाविभागपडिच्छेदा रूवुत्तरा । बिदियादो तदियवग्गो अविभागपडिच्छेदुत्तरो । तदियादो चउत्थो वि अविभागपडिच्छेदुत्तरो । एवं णेयव्वं जाव चरिमवग्गणाएगवग्गअविभागपडिच्छेदो त्ति । तत्तो उवरि णियमा कमवड्ढिवोच्छेदो । एवं सव्वफद्दयाणं परूवेदव्वो । जदि एवं घेप्पदि तो एगवग्गोलीए चेव फद्दयत्तं पसज्जदे, तत्थेव कमवड्ढि-कमहाणीणं दंसणादो । ण च एवं, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि फद्दयाणि अघेत्तूणं असंखेज्जपदरमेत्तफद्दयप्पसंगादो, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गणाहि एगं फद्दयं होदि त्ति सुत्तेण सह विरोहप्पसंगादो च । तम्हा णेदं घडदि त्ति वुत्ते वुच्चदे— एगवग्गोलिं घेत्तूण ण एगं फद्दयं होदि । किंतु सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तीओ वग्गणाओ घेत्तूण एगं फद्दयं होदि, असंखेज्जाहि वग्गणाहि एगं फद्दयं होदि त्ति सुत्ते उवदिट्ठत्तादो । एवं घेप्पमाणे कमवड्ढि-कमहाणीओ फिट्टंति त्ति णासंकणिज्जं, एगवग्गोलीए दव्वट्ठियणयावलंबणेण सगंतोक्खित्तासेसवग्गाए कमवड्ढि

है । द्वितीय वर्गणाके एक वर्ग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेदोंसे तृतीय वर्गणाके एक वर्ग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद एक अविभागप्रतिच्छेदसे अधिक हैं । तृतीय वर्गणाके एक व । सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेदोंसे चतुर्थ वर्गणाके एक वर्ग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद एक अविभागप्रतिच्छेदसे अधिक हैं । इस प्रकार अन्तिम वर्गणाके एक वर्ग सम्बन्धी अविभाग प्रतिच्छेदों तक ले जाना चाहिये । इसके आगे नियमसे क्रमवृद्धिका व्युच्छेद हो जाता है । इसी प्रकार सब स्पर्धकोंके कहना चाहिये ।

शंका— यदि इस प्रकार ग्रहण करते हैं तो एक वर्गपंक्तिके ही स्पर्धक होनेका प्रसंग आयेगा क्योंकि उसमें ही क्रमवृद्धि और क्रमहानि देखी जाती है । परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि इस प्रकारसे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र स्पर्धक न होकर असंख्यात जगप्रतर प्रमाण स्पर्धकोंके होनेका प्रसंग आयेगा तथा श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र वर्गणाओंसे एक स्पर्धक होता है इस सूत्रके साथ विरोध होनेका भी प्रसंग आयेगा । इस कारण यह घटित नहीं होता ?

समाधान— इस शंकाका उत्तर देते हैं कि एक वर्गपंक्तिको ग्रहण कर एक स्पर्धक नहीं होता है किन्तु श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र वर्गणाओंको ग्रहण कर एक स्पर्धक होता है, क्योंकि, असंख्यात वर्गणाओंसे एक स्पर्धक होता है ऐसा सूत्रमें उपदेश किया गया है । इस प्रकार ग्रहण करनेपर क्रमवृद्धि और क्रमहानि नष्ट होती है ऐसी आशंका नहीं करना चाहिये, क्योंकि द्रव्यार्थिकनयकी अपेक्षासे अपने भीतर समस्त वर्गणाओंको रखनेवाली एक वर्गपंक्ति सम्बन्धी क्रमवृद्धि व क्रम

१ आप्रतौ 'चरिमवग्गणाए एग-' इति पाठः । २ अ-आ-काप्रतिषु 'घत्तोणं' ताप्रतौ 'घ (अ) घेत्तूण' इति पाठः । ३ अ-आ-का-ताप्रतिषु 'च' इत्येतत्पदं नास्ति मप्रतौ त्वस्ति तत् । ४ अ-आ-काप्रतिषु 'घडदा' इति पाठः ।

फद्दयपरूवणाए असंखेज्जाओ वग्गणाओ सेडीए असंखेज्जदि-भागमेत्तीयो तमेगं फद्दयं होदि ॥ १८२ ॥

संखेज्जवग्गणाहि एगं फद्दयं ण होदि त्ति जाणावणट्ठमसंखेज्जाओ वग्गणाओ त्ति णिद्दिट्ठं । पलिदोवम-सागरोवमादिपमाणवग्गणाहि एगं फद्दयं ण होदि त्ति जाणावणट्ठं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताहि वग्गणाहि एगं फद्दयं होदि त्ति भणिदं । फद्दयमिदि किं वुत्तं होदि ? क्रमवृद्धिः क्रमहानिश्च[1] यत्र विद्यते तत्स्पर्द्धकम्[2] । को एत्थ कमो णाम ? सग-सगजहण्णवग्गाविभागपडिच्छेदेहिंतो एगेगाविभागपडिच्छेदवुड्ढी, उक्कस्सवग्गाविभाग-पडिच्छेदेहिंतो एगेगाविभागपडिच्छेदहाणी च कमो णाम[3] । दुप्पहुडीणं वड्ढी हाणी च अक्कमो । पढमफद्दयपढमवग्गणाए एगवग्गअविभागपडिच्छेदेहिंतो विदियवग्गणाए एग-

स्पर्धकप्ररूपणाके अनुसार श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र जो असंख्यात वर्गणायें हैं उनका एक स्पर्धक होता है ॥ १८२ ॥

संख्यात वर्गणाओंसे एक स्पर्धक नहीं होता है, इस बातको बतलानेके लिये सूत्रमें 'असंख्यात वर्गणायें' ऐसा निर्देश किया है। पल्योपम व सागरोपम आदिके बराबर वर्गणाओंसे एक स्पर्धक नहीं होता, इस बातके ज्ञापनार्थ 'श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र वर्गणाओंसे एक स्पर्धक होता है, ऐसा कहा है।

शंका— स्पर्धकसे क्या अभिप्राय है ?

समाधान— जिसमें क्रमवृद्धि और क्रमहानि होती है वह स्पर्धक कहलाता है।

शंका— यहां 'क्रम' का अर्थ क्या है ?

समाधान— अपने अपने जघन्य वर्गके अविभागप्रतिच्छेदोंसे एक एक अविभागप्रतिच्छेदकी वृद्धि और उत्कृष्ट वर्गके अविभागप्रतिच्छेदोंसे एक एक अविभाग-प्रतिच्छेदकी जो हानि होती है उसे क्रम कहते हैं। दो व तीन आदि अविभागप्रतिच्छेदों की हानि व वृद्धिका नाम अक्रम है।

प्रथम स्पर्धक सम्बन्धी प्रथम वर्गणाके एक वर्ग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेदोंसे द्वितीय वर्गणाके एक वर्ग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद एक अविभागप्रतिच्छेदसे अधिक

---

१ ताप्रतौ 'क्रमवृद्धिर्हानिश्च' इति पाठः । २ स्पर्धन्त इवोत्तरोत्तरवृद्धया वर्गणा अत्रेति स्पर्धकम् । क. प्र. (मलय) १, ८. ३ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ का-ताप्रतिषु 'सग-सगजहण्णवग्गाविभागपडिच्छेदवुड्ढी उक्कस्सवग्गाविभागपडिच्छेदहाणी च कमो णाम' इति पाठः ।

वग्गाविभागपडिच्छेदा रूवुत्तरा। बिदियादो तदियवग्गो अविभागपडिच्छेदुत्तरो। तदियादो चउत्थो वि अविभागपडिच्छेदुत्तरो। एवं णेयव्वं जाव चरिमवग्गणाएगवग्गअविभागपडिच्छेदो त्ति। तदो उवरि णियमा कमवड्ढिवोच्छेदो। एवं सव्वफद्दयाणं परूवेदव्वो। जदि एवं घेप्पदि तो एगवग्गोलीए चेव फद्दयत्तं पसज्जदे, तत्थेव कमवड्ढि-कमहाणीणं दंसणादो। ण च एवं, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि फद्दयाणि मोत्तूण असंखेज्जपदरमेत्तफद्दयप्पसंगादो, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गणाहि एगं फद्दयं होदि त्ति सुत्तेण सह विरोहप्पसंगादो च। तम्हा णेदं घडदि त्ति वुत्ते वुच्चदे— एगवग्गोलिं घेत्तूण ण एगं फद्दयं होदि। किंतु सेडीए असंखे॰भागमेत्तीओ वग्गणाओ घेत्तूण एगं फद्दयं होदि, असंखेज्जाहि वग्गणाहि एगं फद्दयं होदि त्ति सुत्ते उवदिट्ठत्तादो। एवं घेप्पमाणे कमवड्ढि-कमहाणीओ फिट्टंति त्ति आसंकणिज्जं, एगवग्गोलीए दव्वट्ठियणयावलंबणेण सगंतोक्खित्तासेसवग्गाए कमवड्ढि

है। द्वितीय वर्गणाके एक वर्ग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेदोंसे तृतीय वर्गणाके एक वर्ग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद एक अविभागप्रतिच्छेदसे अधिक हैं। तृतीय वर्गणाके एक वर्ग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेदोंसे चतुर्थ वर्गणाके एक वर्ग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद एक अविभागप्रतिच्छेदसे अधिक हैं। इस प्रकार अन्तिम वर्गणाके एक वर्ग सम्बन्धी अविभाग प्रतिच्छेदों तक ले जाना चाहिये। इसके आगे नियमसे क्रमवृद्धिका व्युच्छेद हो जाता है। इसी प्रकार सब स्पर्धकोंके कहना चाहिये।

शंका— यदि इस प्रकार ग्रहण करते हैं तो एक वर्गपंक्तिके ही स्पर्धक होनेका प्रसंग आवेगा क्योंकि उसमें ही क्रमवृद्धि और क्रमहानि देखी जाती है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि इस प्रकारसे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र स्पर्धक न होकर असंख्यात जगप्रतर प्रमाण स्पर्धकोंके होनेका प्रसंग आवेगा तथा श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र वर्गणाओंसे एक स्पर्धक होता है इस सूत्रके साथ विरोध होनेका भी प्रसंग आवेगा। इस कारण यह घटित नहीं होता?

समाधान— इस शंकाका उत्तर देते हैं कि एक वर्गपंक्तिको ग्रहण कर एक स्पर्धक नहीं होता है किन्तु श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र वर्गणाओंको ग्रहण कर एक स्पर्धक होता है, क्योंकि असंख्यात वर्गणाओंसे एक स्पर्धक होता है ऐसा सूत्रमें उपदेश किया गया है। इस प्रकार ग्रहण करनेपर क्रमवृद्धि और क्रमहानि नष्ट होती है ऐसी आशंका नहीं करना चाहिये; क्योंकि द्रव्यार्थिकनयकी अपेक्षासे अपने भीतर समस्त वर्गणाओंको रखनेवाली एक वर्गपंक्ति सम्बन्धी क्रमवृद्धि व क्रम

---

१ काप्रती 'चरिमवग्गणाए एग-' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'घत्तेूण' ताप्रतौ 'घ (ब) त्तूण' इति पाठः। ३ अ-आ-का-ताप्रतिषु 'च' इत्येतत्पदं नास्ति, मप्रतौ त्वस्ति तत्। ४ अ-आ-काप्रतिषु 'भरता' इति पाठः।

कमहाणीहि ट्ठिदसेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गणाहि एगं फद्दयं होदि त्ति वक्खाणादो। अहवा 'अवयवेषु प्रवृत्ताः शब्दाः समुदायेष्वपि वर्त्तन्ते' इति न्यायात् स्पर्द्धकलक्षणोपलक्षितत्वात्प्राप्तस्पर्द्धकव्यपदेशवर्गपंक्तितोऽभेदात्समुदायस्यापि स्पर्द्धकत्व न विघटते। अहवा पचवण्णसमण्णियस्स कागस्स जहा कसणं गुण पडुच्च कसणो कागो त्ति वुच्चदे तहा फद्दयं वग्गणाविभागपडिच्छेदे पडुच्च कमवड्ढिविरहिद पि वग्गाविभागपडिच्छेदे अस्सिदूण कमवड्ढिसमण्णिदमिदि वुच्चदे।

एवमसंखेज्जाणि फद्दयाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥

संखेज्जेहि फद्दएहि जोगट्ठाण ण होदि, असंखेज्जेहि चेव फद्दएहि होदि त्ति जाणावणट्ठ असंखेज्जणिद्देसो कदो। सेडीए असखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वयणेण पलिदोवम-सागरोवमादीणं पडिसेहो कदो। सव्वेसिं फद्दयाण वग्गणाओ सरिसाओ, अण्णहा फद्दय-तराण सरिसत्ताणुववत्तीदो। एवं फद्दयपरूवणा समत्ता।

हानि स्वरूपसे स्थित श्रेणिके असख्यातवें भाग मात्र वर्गणाओंके द्वारा एक स्पर्धक होता है, ऐसा व्याख्यान है। अथवा, अवयवोंमें प्रवृत्त हुए शब्द समुदायोंमें भी प्रवृत्त होते हैं, इस न्यायसे स्पर्धकलक्षणसे उपलक्षित होनेके करण स्पर्धक सज्ञाको प्राप्त हुई वर्गपंक्तिसे अभिन्न होनेके कारण समुदायके भी स्पर्धकपना नष्ट नहीं होता। अथवा, जिस प्रकार पाच वर्ण युक्त काकको कृष्ण गुणकी अपेक्षा करके 'कृष्ण काक' ऐसा कहा जाता है, उसी प्रकार वर्गणाओंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा क्रमवृद्धिसे रहित भी स्पर्धक वर्गके अविभागप्रतिच्छेदोंका आश्रय करके क्रमवृद्धि युक्त है, अत. उसे स्पर्धक कहा जाता है।

इस प्रकार एक योगस्थानमें श्रेणिके असख्यातवें भाग मात्र असंख्यात स्पर्धक होते हैं ॥ १८३ ॥

संख्यात स्पर्धकोंसे योगस्थान नहीं होता है, किन्तु असख्यात स्पर्धकोंसे ही होता है, इस बातके ज्ञापनार्थ असख्यात पदका निर्देश किया है। 'श्रेणिके असख्यातवें भाग मात्र' इस वचनसे पल्योपम व सागरोपम आदिकोंका निषेध किया गया है। सब स्पर्धकोंकी वर्गणायें सदृश होती हैं, क्योंकि, इसके विना स्पर्धकोंके अन्तरोंकी समानता घटित नहीं होती। इस प्रकार स्पर्धकप्ररूपणा समाप्त हुई।

---

१ अ-का ताप्रतिषु 'लक्षितत्वतत्प्राप्त-', आप्रतौ 'लक्षितत्वात्तत्प्राप्त' इति पाठ २ प्रतिषु 'पत्तितो भेदात्' इति पाठ। ३ प्रतिषु 'सण्णिदमिदि' पाठ। ४ अ-आ काप्रतिषु 'संखेज्जाहि' इति पाठः।

अंतरपरूवणदाए एक्केक्कस्स फद्दयस्स केवडियमंतरं ? असंखेज्जा लोगा अंतरं[1] ॥ १८४ ॥

किमट्ठमंतरपरूवणा कीरदे ? पढमफद्दयस्सुवरि पढमफद्दए चेव वड्ढिदे बिदियफद्दयं होदि त्ति जाणावणट्ठं । पढमफद्दओ चेव वड्ढदि त्ति कधं णव्वदे ? पढमफद्दयपढमवग्गणाए एगवग्गादो बिदियफद्दयपढमवग्गणाए एगवग्गो दुगुणो चेव होदि त्ति गुरूवएसादो । पढम-बिदियफद्दयाणं विक्खंभा सरिसा । बिदियफद्दयआयामादो पुण पढमफद्दयआयामो विसेसाहिओ । तम्हा पढमफद्दयस्सुवरि पढमफद्दए चेव वड्ढिदे बिदियफद्दयं होदि त्ति ण घडदे । सरिसधणियं मोत्तूण जदि वि एगोली चेव फद्दयमिदि घेप्पदि तो वि पढमफद्दयस्सुवरि पढमफद्दए चेव वड्ढिदे[2] बिदियफद्दयं ण उप्पज्जदि, कमवड्ढीए अभावेण फद्दयाभावप्पसंगादो त्ति ? ण एस दोसो, बिदियफद्दयम्मि अविया वग्गा

अन्तरप्ररूपणाके अनुसार एक एक स्पर्धकका कितना अन्तर होता है ? असंख्यात लोक प्रमाण अन्तर होता है ॥ १८४ ॥

शंका— अन्तरप्ररूपणा किसलिये की जाती है ?

समाधान— प्रथम स्पर्धकके ऊपर प्रथम स्पर्धकके ही बढ़ जानेपर द्वितीय स्पर्धक होता है इस बातके ज्ञापनार्थ अन्तरप्ररूपणा की जाती है ।

शंका— प्रथम स्पर्धकके ऊपर प्रथम स्पर्धक ही बढ़ता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणा सम्बन्धी एक वर्गसे द्वितीय स्पर्धक सम्बन्धी प्रथम वर्गणाका एक वर्ग दुगुणा ही होता है इस प्रकारके गुरुके उपदेशसे वह जाना जाता है ।

शंका— प्रथम और द्वितीय स्पर्धकका विष्कम्भ सदृश है । परन्तु द्वितीय स्पर्धकके आयामसे प्रथम स्पर्धकका आयाम विशेष अधिक है । इसीलिये प्रथम स्पर्धकके ऊपर प्रथम स्पर्धकके ही बढ़ जानेपर द्वितीय स्पर्धक होता है यह घटित नहीं होता । समान धनवालेको छोड़कर यद्यपि एक वर्गपंक्ति ही स्पर्धक है ऐसा ग्रहण किया जाता है, तो भी प्रथम स्पर्धकके ऊपर प्रथम स्पर्धकके ही बढ़नेपर द्वितीय स्पर्धक नहीं उत्पन्न होता, क्योंकि वैसा होनेपर क्रमवृद्धिका अभाव होनेसे स्पर्धकके अभावका प्रसंग आता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है क्योंकि द्वितीय स्पर्धककी सब वर्गणाओं

१ [illegible] । [illegible] ॥ क. ॥ १८
२ अ-आ-काप्रतिषु [illegible] इति पाठः ।

सव्वासु वग्गणासु अत्थि तेत्तियमेत्तवग्गेसु पढमफद्दयवग्गपमाणेसु 'एकदेशविकृता-वनन्यवत्' इति[1] न्यायात् दव्वट्ठियणएण वा पढमफद्दयसण्णिदेसु एत्तियमेत्तेसु चेव पढमफद्दयआदिवग्गेसु पुव्विल्लणाएण लद्धपढमफद्दयववएसेसु पक्खित्तेसु बिदियफद्दय-समुप्पत्तीदो। असंखेज्जा लोगा फद्दयंतरमिदि वुत्तं, तत्थ जदि पढमफद्दयचरिमवग्गणाए बिदियफद्दयआदिवग्गणाए च अंतरं फद्दयंतरमिदि घेप्पदि तो पढमफद्दयआदिवग्गणाए एगवग्गाविभागपडिच्छेदा फद्दयवग्गणसलागूणा अंतरं होदि। अह पढमफद्दयचरिमवग्गस्स बिदियफद्दयचरिमवग्गस्स च अंतरं जदि फद्दयंतरमिदि घेप्पदि तो पढमफद्दयआदिवग्गा-विभागपडिच्छेदा रूवूणा फद्दयंतरं होदि। एवमसंखेज्जा लोगांतरपमाणं।

एवदियमंतरं ॥ १८५ ॥

एत्थ चेव-सद्दो अज्झाहारेयव्वो, एवदियं चेव अंतरं होदि त्ति। तेण सिद्धं सव्वफद्दयंतराणं सरिसत्तं। एत्थ दव्वट्ठियणयावलंबणाए एगवग्गस्स सरिसत्तणेण सगतो-

में जितने वर्ग हैं प्रथम स्पर्धकके वर्गोंके बराबर उतने मात्र वर्गोंकी "एक देश विकृतिके होनेपर भी वह अनन्य (अभिन्न) के समान ही रहता है" इस न्यायसे अथवा द्रव्यार्थिकनयकी अपेक्षा 'प्रथम स्पर्धक' संज्ञा है, उनमें पूर्वोक्त न्यायसे, 'प्रथम स्पर्धक' संज्ञाको प्राप्त हुए इतने मात्र ही प्रथम स्पर्धक सम्बन्धी आदि वर्गोंके मिलानेपर द्वितीय स्पर्धक उत्पन्न होता है।

स्पर्धकोंका अन्तर असंख्यात लोक मात्र है, ऐसा सूत्रमें कहा गया है। वहां यदि प्रथम स्पर्धककी अन्तिम वर्गणा और द्वितीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके अन्तरको स्पर्धकोंका अन्तर ग्रहण करते हैं तो स्पर्धककी जितनी वर्गणाशलाकायें हैं उतनेसे कम प्रथम स्पर्धक सम्बन्धी प्रथम वर्गणाके एक वर्ग सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेद प्रमाण अन्तर होता है। अथवा, प्रथम स्पर्धकके अन्तिम वर्ग और द्वितीय स्पर्धकके अन्तिम वर्गके अन्तरको यदि स्पर्धकोंका अन्तर ग्रहण किया जाता है तो एक कम प्रथम स्पर्धक सम्बन्धी प्रथम वर्गके अविभागप्रतिच्छेद मात्र स्पर्धकोंका अन्तर होता है। इस प्रकार अन्तरका प्रमाण असंख्यात लोक है।

स्पर्धकोंके बीच इतना अन्तर होता है ॥ १८५ ॥

यहां 'चेव' शब्दका अध्याहार करना चाहिये, इसलिये 'इतना ही अन्तर होता है' ऐसा सूत्रका अर्थ हो जाता है। इसीलिये समस्त स्पर्धकोंके अन्तरोंके समानता सिद्ध होती है। यहां द्रव्यार्थिकनयके अवलम्बनसे समानता होनेके कारण सदृश

१ आप्रतौ 'विकर्तवनन्यमिति', ताप्रतौ 'विकृतमनन्यवदिति' इति पाठः।

विक्खंभसरिसधणियस्स वग्गणसण्णं काऊण एगोलीए फद्दयसण्णं काऊण णिक्खेवाइरिय परूविदगाहाणमत्थं भणिस्सामो । तं जहा — एत्थ ताव एसा संदिट्ठी ठवेदव्वा —

११		१९	०	२७		३५	०	४३	०	५१	०	५९
१ १०		१८	०	२६	०	३४	०	४२	०	५०	०	५८
९९९	०	१७	०	२५	०	३३	०	४१	०	४९	०	५७
८८८८	०	१६	०	२४	०	३२	०	४०	०	४८	०	५६

पढमिच्छसलागगुणा तस्सादीवग्गणा चरिमसुद्धा ।
सेसेण चरिमहीणा सेसेगूण तमागासं ॥ २० ॥

सव्वफद्दयाणमादिवग्गणाओ फद्दयंतराणि च आणावणट्ठमेसा गाहा परूविदा । संपहि एदिस्से गाहाए अत्थो वुच्चदे । तं जहा — 'पढमिच्छसलागगुणा तस्सादी वग्गणा' पढमा आदिवग्गणेत्ति वुत्तं होदि । इच्छसलागाओ णाम इच्छिदफद्दयसंखा, तीए[1] आदिवग्गणं गुणिदे तत्थ आदिवग्गणा होदि । पढमफद्दयस्स आदिवग्गणा

पक्षालोंको प्रथम भीतर रखनवाले एक वर्गकी वर्गणा संज्ञा व एक वर्गपंक्तिकी स्पर्धक संज्ञा करके निक्षेपाचार्य द्वारा कही गई गाथाओंका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— पहिले यहां इस संदृष्टिको स्थापित करना चाहिये (मूलमें देखिये) ।

प्रथम स्पर्धककी आदिम वर्गणाको अभीष्ट स्पर्धकशलाकाओंसे गुणित करनेपर वहांकी आदिम वर्गणाका प्रमाण होता है । इसमेंसे पिछले स्पर्धककी चरम वर्गणाको कम करनेपर जो शेष रहे उतनी चूंकि आगेके स्पर्धककी प्रथम वर्गणासे पिछले स्पर्धककी अन्तिम वर्गणा हीन है अतः उस शेषमेंसे एक कम करनेपर अवशेष आकाश अर्थात् स्पर्धकोंके अन्तरका प्रमाण होता है ॥ २० ॥

सब स्पर्धकोंकी आदिम वर्गणाओंको और स्पर्धकोंके अन्तरोंको बतलानेके लिये इस गाथाकी प्ररूपणा की गई है । अब इस गाथाका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— यहां पढम से अभिप्राय प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणासे है । इच्छित शलाकाओंसे अभिप्राय अभीष्ट स्पर्धकसंख्यासे है । उस संख्यासे आदिम वर्गणाको गुणित करनेपर वहांकी आदिम वर्गणाका प्रमाण होता है । उदाहरणार्थ— प्रथम

---

1 अ-आ-काप्रतिषु 'पढमिच्छ- शब्दो 'पद (ड) मिच्छ- इति पाठः । 2 अ-आ-काप्रतिषु 'पढमिच्छ- शब्दो 'पद (ड) मिच्छ- इति पाठः । 3 प्रतिषु तीएए इति पाठः ।

अट्ठ, तं दोहि रूवेहि गुणिदे बिदियफद्दयस्स आदिवग्गणा होदि |१६|। 'चरिमसुद्धा' पढमफद्दयस्स चरिमवग्गणं |११| एत्थ सोहिदे जं सेसं तेण सेसेण 'चरिमहीणा' चरिमवग्गणा बिदियफद्दयस्स पढमवग्गणादो हीणा होदि। एव होदि त्ति कट्टु एदम्हि सेसे एगूणे कदे तमागासं होदि, तस्स फद्दयस्स आगासमंतरं तमागासं, फद्दयंतरं होदि त्ति वुत्त होदि |४|। संपहि पढमफद्दयआदिवग्गणाए इच्छसलागाहि तीहि गुणिदाए तदियफद्दयस्स आदिवग्गणा होदि |२४|। पुणो एत्थ चरिमसुद्धा त्ति वुत्ते बिदियफद्दयस्स चरिमवग्गणा |१९| सोहेयव्वा[1]। सुद्धमेसं |५|। एदेण सेसेण चरिमवग्गणा हीणा कट्टु तत्थ एगूणे कदे तमागासं तं फद्दयंतरं होदि |४|। एवमुवरिं पि जाणिदूण वत्तव्वं।

जत्थिच्छसि सेसाणं आदीदो आदिवग्गणं णादुं।
जत्तो तत्थ सहेदुं[2] पढमादि अणंतरं जाणे ॥ २१ ॥

अणंतरहेट्ठिमफद्दयआदिवग्गणादो अणंतरं उवरिमफद्दयस्स आदिवग्गणपरूवणट्ठमिमा

स्पर्धककी आदिम वर्गणाका प्रमाण आठ है, उसको अभीष्ट स्पर्धककी संख्या रूप दो (२) अंकोंसे गुणित करनेपर द्वितीय स्पर्धककी आदिम वर्गणा (१६) होती है। 'चरिमसुद्धा' अर्थात् इसमेंसे प्रथम स्पर्धककी अन्तिम वर्गणा (११) को कम करनेपर जो (१६-११=५) शेष रहे उतनी प्रथम स्पर्धककी चरम वर्गणा द्वितीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणासे हीन होती है। इस प्रकार है, ऐसा समझकर इस शेषमेंसे एक कम करनेपर वह आकाश होता है। 'तस्स आगासं तमागासं' इस विग्रहके अनुसार तस्स अर्थात् विवक्षित स्पर्धकका आकाश अर्थात् अन्तर (४) होता है, यह उसका अभिप्राय है।

अब प्रथम स्पर्धककी आदिम वर्गणाको इच्छित तृतीय स्पर्धककी तीन शलाकाओंसे गुणा करनेपर तृतीय स्पर्धककी आदिम वर्गणा (२४) होती है। फिर इसमेंसे 'चरिमसुद्धा' पदके अनुसार द्वितीय स्पर्धककी चरम वर्गणा (१९) को कम करना चाहिये। इस प्रकार घटानेसे जो शेष (५) रहता है उतनी इस शेषसे चूंकि चरम वर्गणा हीन है, अतः उसमेंसे एक कम करनेपर वह आकाश अर्थात् स्पर्धकका अन्तर (४) होता है। इस प्रकार आगे भी जानकर कहना चाहिये।

जहां जहां जिस स्पर्धककी प्रथम वर्गणासे शेष स्पर्धकोंकी आदि वर्गणा जानना अभीष्ट हो वहां वहां पिछले स्पर्धककी वर्गणाको प्रथम वर्गणा सहित करनेपर अनन्तर स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है ॥ २१ ॥

अनन्तर पूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणासे अनन्तर उपरिम स्पर्धककी प्रथम

---

१ प्रतिषु 'सोहियव्वा' इति पाठः। २ प्रतिषु 'सहेट्ठ' इति पाठः।

गाहा आगदा। 'जत्थिच्छसि'[1] त्ति वुत्ते जत्थ जत्थ इच्छसि त्ति वुत्तं होदि। 'तत्तो' आदिफद्दयादिवग्गणादो सेसाणं फद्दयाणमादिवग्गणं णादुं तत्थ 'सहेहि'[2] सहिदो कायव्वा पढमादिफद्दयस्स आदिवग्गणा। एवं कदे अणंतरमुवरिमं जं फद्दयं तस्स आदिवग्गणा होदि। एदस्स उदाहरणं— बिदियफद्दयस्स आदिवग्गणाए पढमफद्दयस्स आदिवग्गणाए पक्खित्ताए तदियफद्दयस्स आदिवग्गणा होदि[3] [२४]। तत्थ पुणो वि पढमफद्दयआदिवग्गणाए पक्खित्ताए चउत्थफद्दयस्स आदिवग्गणा होदि। एवं णेयव्वं जाव चरिमवग्गणेत्ति।

बिदियादिवग्गणा पुण जावदिरूवेहि होदि संगुणिदा।
तावदिमफद्दयस्स दु जुम्मस्स स वग्गणा होदि ॥ १२ ॥

बिदियफद्दयस्स आदिवग्गणादो सेससव्वजुम्मफद्दयाणमादिवग्गणाओ उप्पायण-हेदुमेसा गाहा आगदा। 'बिदियादिवग्गणा' बिदियफद्दयस्स आदिवग्गणा त्ति वुत्तं होदि। 'जावदिरूवेहि होदि संगुणिदा' जेत्तिएहि रूवेहि गुणिदा होदि, तावदिमजुम्मफद्दयस्स

वर्गणाके प्ररूपणार्थ यह गाथा आई है। 'जत्थिच्छसि' ऐसा कहनेपर जहां जहां अभीष्ट हो यह अर्थ होता है। 'तत्तो' अर्थात् जिस किसी भी स्पर्धककी प्रथम वर्गणासे शेष स्पर्धकोंकी प्रथम वर्गणाको जाननेके लिये अपनेसे नीचेके स्पर्धककी प्रथम वर्गणाको प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणासे सहित करना चाहिये [अभिप्राय यह है कि विवक्षित स्पर्धकसे पूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणामें प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके मिलानेपर आगेके स्पर्धककी प्रथम वर्गणाका प्रमाण होता है]। इसका उदाहरण— द्वितीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणामें प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाको मिलानेपर तृतीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है (१६ + ८ = २४)। इसमें फिरसे भी प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके मिलानेपर चतुर्थ स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है। इस प्रकार अन्तिम वर्गणा तक ले जाना चाहिये।

द्वितीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणाको जितने अंकोंसे गुणित किया जाता है उतनेवें युग्म स्पर्धककी वह प्रथम वर्गणा होती है ॥ १२ ॥

द्वितीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणासे शेष सब युग्म स्पर्धककी आदिम वर्गणाओंके आनयनार्थ यह गाथा आई है। 'बिदियादिवग्गणा' का अर्थ द्वितीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणा है। 'जावदिरूवेहि होदि संगुणिदा' अर्थात् जितने अंकोंसे वह गुणित की जाती है 'तावदिमजुम्मफद्दयस्स' अर्थात् उतनेवें युग्म स्पर्धककी प्रथम वर्गणा

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'जत्थिच्छसि' इति पाठः। २ प्रतिषु 'चोद्दं भणिद' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'एदस्स उदाहरणं — — तदियफद्दयस्स आदिवग्गणा होदि' इत्येतावान् पाठस्त्रुटितो जातः।

अट्ठ, तं दोहि रूवेहि गुणिदे विदियफद्दयस्स आदिवग्गणा होदि |१६|। 'चरिमसुद्धा' पढमफद्दयस्स चरिमवग्गण |११| एत्थ सोहिदे जं सेसं तेण सेसेण 'चरिमहीणा' चरिमवग्गणा विदियफद्दयस्स पढमवग्गणादो हीणा होदि। एव होदि त्ति कट्टु एदम्हि सेसे एगूणे कदे तमागास होदि, तस्स फद्दयस्स आगासमंतरं तमागास, फद्दयंतर होदि त्ति वुत्त होदि |४|। सपहि पढमफद्दयआदिवग्गणाए इच्छसलागाहि तीहि गुणिदाए तदियफद्दयस्स आदिवग्गणा होदि |२४|। पुणो एत्थ चरिमसुद्धा त्ति वुत्ते विदियफद्दयस्स चरिमवग्गणा |१९| सोहेयव्वा[1]। सुद्धमेसं |५|। एदेण सेसेण चरिमवग्गणा हीणा कट्टु तत्थ एगूणे कदे तमागास तं फद्दयतरं होदि |४|। एवमुवरिं पि जाणिदूण वत्तव्वं।

जत्थिच्छसि सेसाण आदीदो आदिवग्गण णादु।
जत्तो तत्थ सहेट्ठ[2] पढमादि अणतरं जाणे ॥ २१ ॥

अणंतरहेट्ठिमफद्दयआदिवग्गणादो अणंतर उवरिमफद्दयस्स आदिवग्गणपरूवणट्ठमिमा

स्पर्धककी आदिम वर्गणाका प्रमाण आठ है, उसको अभीष्ट स्पर्धककी सख्या रूप दो (२) अंकोंसे गुणित करनेपर द्वितीय स्पर्धककी आदिम वर्गणा (१६) होती है। 'चरिमसुद्धा' अर्थात् इसमेंसे प्रथम स्पर्धककी अन्तिम वर्गणा (११) को कम करनेपर जो (१६-११=५) शेष रहे उतनी प्रथम स्पर्धककी चरम वर्गणा द्वितीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणासे हीन होती है। इस प्रकार है, ऐसा समझकर इस शेषमेंसे एक कम करनेपर वह आकाश होता है। 'तस्स आगास तमागासं' इस विग्रहके अनुसार तस्स अर्थात् विवक्षित स्पर्धकका आकाश अर्थात् अन्तर (४) होता है, यह उसका अभिप्राय है।

अब प्रथम स्पर्धककी आदिम वर्गणाको इच्छित तृतीय स्पर्धककी तीन शलाकाओंसे गुणा करनेपर तृतीय स्पर्धककी आदिम वर्गणा (२४) होती है। फिर इसमेंसे 'चरिमसुद्धा' पदके अनुसार द्वितीय स्पर्धककी चरम वर्गणा (१९) को कम करना चाहिये। इस प्रकार घटानेसे जो शेष (५) रहता है उतनी इस शेपसे चूंकि चरम वर्गणा हीन है, अत: उसमेंसे एक कम करनेपर वह आकाश अर्थात् स्पर्धकका अन्तर (४) होता है। इस प्रकार आगे भी जानकर कहना चाहिये।

जहां जहां जिस स्पर्धककी प्रथम वर्गणासे शेष स्पर्धकोंकी आदि वर्गणा जानना अभीष्ट हो वहां वहां पिछले स्पर्धककी वर्गणाको प्रथम वर्गणा सहित करने पर अनन्तर स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है ॥ २१ ॥

अनन्तर पूर्व स्पर्धककी प्रथम वर्गणासे अनन्तर उपरिम स्पर्धककी प्रथम

---

१ प्रतिषु 'साहेयव्वा' इति पाठः। २ प्रतिषु 'सहेट्ठ' इति पाठः।

'धुवं मोत्तु' णिच्छएण मुच्चा सोहिए त्ति च सुत्ते होदि। सुद्धसेसम्मि 'ओज' ओजफद्दए आदि वग्गणा होदि। भावत्थो— एक्कम्हि दोरूवे पक्खित्ते पढमफद्दयादिवग्गणाए गुणिदाए विदियओजफद्दयआदिवग्गणा होदि [२४]। कदत्थमद' फद्दयमिदि वुत्ते पक्खेवसलागसहिदे धुवरूवे [३] आदि [१] एद 'मोत्तुं' णिच्छएण अवणिदे सेस दोण्णि होंति [२]। विदियस्स ओजफद्दयस्स आदिवग्गणा' आदा त्ति सिद्धं। पुणो पुव्विल्लतिण्णं रूवाणमुवरि दोरूवेसु पक्खित्तेसु पंच होंति [५]। एदेहि आदिवग्गण गुणिदे पंचमफद्दयस्स आदिवग्गणा होदि। ओजफद्दएसु कदत्थमेदमोजफद्दयमिदि वुत्ते वुच्चदे— एत्थ हेट्ठिमपुव्वमाणिय इच्छिदोजोजफद्दयसलागाओ त्ति आदी होदि। एदासु पंचसु अवणिदासु सेस तिण्णि होंति, तदियस्स ओजफद्दयस्स आदिवग्गणा एसा त्ति तेण सिद्धं। पुणो पंचसु रूवेसु दोरूवपक्खेवे कदे सत्त होंति। एदेहि पढमफद्दयआदिवग्गणाए गुणिदाए सत्तमफद्दयस्स आदिवग्गणा होदि। तत्थ तिण्णिमादिमवणिदे सेस चत्तारि होंति, चउत्थओजफद्दयस्स

प्रमाणका ध्रुवं मोत्तु अर्थात् निश्चयसे घटा देनेपर जो शेष रहे उसमें आदि ओज स्पर्धककी यह आदि वर्गणा होती है। भावार्थ— एकमें दो अंकोंको मिलाकर उससे प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाको गुणित करनेपर द्वितीय ओज स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है [८×(२+१)=२४]।

शंका— यह कितनेवां ओज स्पर्धक है ?

समाधान— ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि प्रक्षेपशलाकाओं सहित ध्रुव अंक (२ + १ = ३) मेंसे आदिका प्रमाण जो एक (१) है इसको निश्चयसे घटा देनेपर शेष दो (२) रहते हैं अतः वह द्वितीय ओज स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है यह सिद्ध है।

फिर पूर्वोक्त तीन अंकोंके ऊपर दो अंकोंके मिलानेपर पांच (५) होते हैं। इनसे प्रथम वर्गणाको गुणित करनेपर पांचवें स्पर्धककी आदि वर्गणा होती है। ओज स्पर्धकोंमें यह कौनसा ओज स्पर्धक है ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि यहां अधस्तन पूर्वके ओज स्पर्धकोंको लाकर स्थापित दो ओजस्पर्धकशलाकायें 'आदि' होती हैं। इनको पांचमेंसे घटा देनेपर शेष तीन रहते हैं अतः यह तृतीय ओज स्पर्धककी प्रथम वर्गणा है यह सिद्ध है।

फिर पांच अंकोंमें दो अंकोंका प्रक्षेप करनेपर सात होते हैं। इनसे प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाको गुणित करनेपर सातवें स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है। इसमेंसे 'आदि' स्वरूप तीनको घटानेपर शेष चार रहते हैं अत एव यह चतुर्थ

---

१ अ-आप्रत्योः 'कदत्थेदं' इति पाठः। २ प्रतिषु 'ओजफद्दयादिवग्गणा' इति पाठः। ३ अ-आप्रत्योः 'पदे दो' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'सत्तमफद्दयस्स' इति पाठः।

आदिवग्गणा जायदे। तं जहा— विदियफद्दयस्स आदिवग्गणा | १६ | दोहि गुणिदा | ३२ | विदियजुम्मफद्दयस्स आदिवग्गणा होदि। सा चेव तीहि गुणिदा | ४८ | तदियजुम्मफद्दयस्स आदिवग्गणा होदि। एवं जाणिदूण णेदव्वं जाव चरिमजुम्मफद्दयो त्ति।

दो-दोरूवक्खेवं धुवरूवे[1] कादु[2]मादिम गुणिद[3]।

पक्खेवसलागसमाणे ओजे आदिं धुवं गोत्तु ॥ २३ ॥

आदिफद्दयस्स आदिवग्गणादो सेसओजफद्दयाणमादिवग्गणाओ जाणावणट्ठमेसा गाहा आगदा। धुवरूवमेगं, तत्थ धुवरूवे दो-दोरूवपक्खेवं[4] कादूण किच्चा आदिवग्गणाए पढमफद्दयस्स आदिवग्गणं पदुप्पादए इदि वुत्तं होदि। एवं गुणिदे ओजफद्दयस्स आदिवग्गणा होदि। सा वुप्पण्णओजफद्दयस्स आदिवग्गणा कइत्थस्स ओजफद्दयस्सेत्ति वुत्ते वुच्चदे— 'पक्खेवसलागसमाणे' पक्खेवसलागसहिदे धुवरूवे आदिं हेट्ठिमओजफद्दयपमाण

होती है। यथा— द्वितीय स्पर्धककी प्रथम वर्गणा (१६) को दोसे गुणित करनेपर द्वितीय युग्म स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है (१६ × २ = ३२)। उसीको तीनसे गुणित करनेपर तृतीय युग्म स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है (१६ × ३ = ४८)। इस प्रकार जानकर चरम युग्म स्पर्धक तक ले जाना चाहिये।

ध्रुव रूपमें दो दो अंकोंका प्रक्षेप करके उससे प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाको गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतना प्रक्षेपशलाकाओंसे युक्त ध्रुव रूपमेंसे पिछले ओज स्पर्धकोंके प्रमाणको नियमसे घटानेपर जो शेष रहे उतनेवें ओज स्पर्धककी प्रथम वर्गणाका प्रमाण होता है ॥ २३ ॥

प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणासे शेष ओज स्पर्धकोंकी प्रथम वर्गणाओंके ज्ञापनार्थ यह गाथा आई है। ध्रुव रूपसे अभिप्राय एक अंकका है, उस एक अंकमें दो दो अंकोंका प्रक्षेप करके उससे आदि वर्गणा अर्थात् प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाको गुणित करे। इस प्रकार गुणा करनेपर ओज स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है।

शंका— वह उत्पन्न हुई ओज स्पर्धककी प्रथम वर्गणा कितनेवें ओज स्पर्धककी होती है?

समाधान— ऐसी शंका करनेपर उत्तर देते हैं कि 'प्रक्षेपशलाका समान' अर्थात् प्रक्षेपशलाकाओंसे युक्त ध्रुव अंकमें आदि अर्थात् पिछले ओज स्पर्धकके

---

१ प्रतिषु 'रूव' इति पाठः। २ का-ताप्रत्योः 'कादि' इति पाठः। ३ अ-काप्रत्योः 'गुण', ताप्रतौ 'गुणए' इति पाठः। ४ ताप्रतौ 'खेव' इति पाठः। ५ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आप्रत्योः 'आदिवग्गणाए फद्दयफद्दयस्स', काप्रतौ 'आदिवग्गणाए फद्दय फद्दयस्स', ताप्रतौ 'आदिवग्गणाए फद्दयस्स' इति पाठः।

'धुवं मोत्तुं' णिच्छएण सुण्णा सोहिए त्ति भ वुत्तं होदि। सुद्धसेसम्मि 'ओजं' ओजफद्दए आदि वग्गणा होदि। भावत्थो— एक्कम्हि दोरूवे पक्खिविय पढमफद्दयादिवग्गणाए गुणिदाए विदियओजफद्दयआदिवग्गणा होदि [२४]। कदत्थमेदं' फद्दयमिदि वुत्ते पक्खेवसलागसहिदे धुवरूवे [३] आदि [१] एदं 'मोत्तुं' णिच्छएण अवणिदे सेसं दोण्णि होंति [२]। विदियस्स ओजफद्दयस्स आदिवग्गणा' एसा त्ति सिद्धं। पुणो पुव्विल्लतिण्णं रूवाणमुवरि दोरूवेसु पक्खित्तेसु पंच होंति [५]। एदेहि आदिवग्गणं गुणिदे पंचमफद्दयस्स आदिवग्गणा होदि। ओजफद्दएसु कदत्थमेदमोजफद्दयमिदि वुत्ते वुच्चदे— एत्थ हेट्ठिमपुव्वभाणिय ठविददोओजफद्दयसलागाओ त्ति आदी होदि। एदासु पंचसु अवणिदासु सेसं तिण्णि होंति, तदियस्स ओजफद्दयस्स आदिवग्गणा एसा त्ति तेण सिद्धं। पुणो पंचसु रूवेसु दोरूवपक्खेवे कदे सत्त होंति। एदेहि पढमफद्दयआदिवग्गणाए गुणिदाए सत्तमफद्दयस्स आदिवग्गणा होदि। तत्थ तिण्णिआदिमवणिदे सेसं चत्तारि होंति, तदित्थमोजफद्दयस्स

अथवा 'धुवं मोत्तुं' अर्थात् निश्चयसे घटा देनेपर जो शेष रहे उतने मात्र ओज स्पर्धककी यह आदि वर्गणा होती है। भावार्थ— एकमें दो अंकोंको मिलाकर उससे प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाको गुणित करनेपर द्वितीय ओज स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है [८×(२+१)=२४]।

शंका— यह कितनेवाँ ओज स्पर्धक है?

समाधान— ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि प्रक्षेपशलाका सहित ध्रुव अंक (२+१=३) मेंसे आदिका प्रमाण जो एक (१) है उसको निश्चयसे घटा देनेपर शेष दो (२) रहते हैं। अतः यह द्वितीय ओज स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है यह सिद्ध है।

फिर पूर्वोक्त तीन अंकोंके ऊपर दो अंकोंके मिलानेपर पांच (५) होते हैं। इससे प्रथम वर्गणाको गुणित करनेपर पांचवें स्पर्धककी आदि वर्गणा होती है। ओज स्पर्धकोंमें यह कौनसा ओज स्पर्धक है ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि यहां अधस्तन पूर्वके ओज स्पर्धकोंको लाकर स्थापित दो ओजस्पर्धकशलाकायें 'आदि' होती हैं। इनको पांचमेंसे घटा देनेपर शेष तीन रहते हैं। अतः यह तृतीय ओज स्पर्धककी प्रथम वर्गणा है यह सिद्ध है।

फिर पांच अंकोंमें दो अंकोंका प्रक्षेप करनेपर सात होते हैं। इससे प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाको गुणित करनेपर सातवें स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है। इसमेंसे 'आदि' स्वरूप तीनको घटानेपर शेष चार रहते हैं। अत एव यह चतुर्थ

---

१ अप्रतौ कदत्थेदं इति पाठः। २ मप्रतिषु 'ओजफद्दयआदिवग्गणा' इति पाठः। ३ अप्रतौ अवे सेसं दव इति पाठः। ४ ताप्रतौ तदभ्रयस्स इति पाठः।

आदिवग्गणा सा होदि । एवं जाणिदूण परूवणा कायव्वा जाव सिस्सो णिरारेगो जादो त्ति ।

विसमगुणादेगूण दलिदे जुम्माणि तत्थ फद्दयाणि[1] ।

ते चेव रूवसहिदा ओजे उभओ[2] त्ति सव्वाणि ॥ २४ ॥

णिरुद्धओजफद्दयादो हेट्ठिमओज-जुम्मफद्दयाण पमाणपरूवणट्ठमेसा गाहा आगदा । तं जहा— विसमगुणादो ओजफद्दयगुणगारादो त्ति वुत्तं होदि । 'एगूण' एगं अवणिय दलिदे हेट्ठिमजुम्मफद्दयाणि होंति । तत्थ रूवे पक्खित्ते ओजफद्दयाणि । दोसु वि मेलाविदेसु सव्वफद्दयपमाणं होदि । एत्थ उदाहरणं— तिण्णि ठविय |३| एगूणं करिय दलिदे जुम्मफद्दयं होदि |१| । पुणो एत्थ रूवे पक्खित्ते ओजफद्दयाणि होंति |२| । पुणो दोसु वि एगट्ठं कदेसु सव्वफद्दयाणि होंति |३| । पुणो पंच ट्ठविय |५| एगूणं करिय दलिदे जुम्मफद्दयाणि होंति |२| । पुणो एत्थ एगरूवे पक्खित्ते ओजफद्दयाणि होंति |३| । दोसु वि एगट्ठं कदेसु सव्वफद्दयाणि होंति |५| । एवमुवरि जाणिदूण णेदव्वं जाव चरिमओजफद्दए त्ति । एवं फद्दयंतरपरूवणा समत्ता ।

ओज स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है । इस प्रकार जानकर शिष्यके शंका रहित होने तक प्ररूपणा करना चाहिये ।

विषमगुण अर्थात् ओज स्पर्धकके गुणकारमेंसे एक कम करके आधा करनेपर युग्म स्पर्धकोंका प्रमाण आता है । उनमें ही एक अंकके मिला देनेपर ओज स्पर्धकोंका प्रमाण हो जाता है । उक्त दोनों स्पर्धकोंके प्रमाणको जोड़नेसे समस्त स्पर्धकोंकी संख्या प्राप्त होती है ॥ २४ ॥

विवक्षित ओज स्पर्धकसे पिछले ओज और युग्म स्पर्धकोंके प्रमाणको बतलानेके लिये यह गाथा आई है । यथा— विषमगुणसे अर्थात् ओज स्पर्धकगुणकारमेंसे एगूण अर्थात् एक कम करके आधा करनेपर अधस्तन युग्म स्पर्धकोंका प्रमाण होता है । उसमें एक अंकके मिलानेपर ओज स्पर्धकोंका प्रमाण होता है । उन दोनोंको मिला देनेपर समस्त स्पर्धकोंका प्रमाण होता है । यहां उदाहरण— विवक्षित द्वितीय ओज स्पर्धकके गुणकार रूप तीन (३) संख्याको स्थापित कर उसमेंसे एक कम करके आधा करनेपर युग्म स्पर्धक होता है ($\frac{३-१}{२}$=१) । फिर इसमें एक अंकको मिलानेपर ओज स्पर्धकोंका प्रमाण होता है (१+१=२) । इन दोनोंको इकट्ठा कर देनेपर समस्त स्पर्धकोंका प्रमाण होता है (१+२=३) ।

पुनः पांच (५) को स्थापित कर उसमेंसे एक कम करके आधा करनेपर युग्म स्पर्धकोंका प्रमाण होता है ($\frac{५-१}{२}$=२) । इसमें एक अंकके मिला देनेसे ओज स्पर्धकोंका प्रमाण होता है (२+१=३) । दोनोंको इकट्ठा कर देनेपर समस्त स्पर्धकोंका प्रमाण होता है (२+३=५) । इस प्रकार आगे भी जानकर अन्तिम ओज स्पर्धक तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार स्पर्धकोंकी अन्तरप्ररूपणा समाप्त हुई ।

१ [illegible] २ अप्रतौ '[illegible]चओ', आ-का-ताप्रतिषु 'उचओ' इति पाठः ।

ठाणपरूवणदाए असंखेज्जाणि फद्दयाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि, तमेगं जहण्णयं जोगट्ठाणं भवदि[1] ॥ १८६ ॥

सव्वेसिं जीवाणं जोगो किमेयवियप्पो चेव आहो अणेयवियप्पो त्ति पुच्छिदे एयवियप्पो ण होदि, अणेयवियप्पो त्ति जाणावणट्ठं ठाणपरूवणा आगदा। तत्थ[2] असंखेज्जाणि फद्दयाणि घेत्तूण जहण्णजोगट्ठाणं होदि त्ति वयणेण संखेज्जाणंतफद्दयाणं पडिसेहो कदो। सेडीए असंखेज्जदिभागवयणेण पलिदोवम-सागरोवमादिफद्दयाणं पडिसेहो कदो। संपहि जहण्णट्ठाणस्स वग्गणाणमविभागपडिच्छेदपरूवणाए परूवणा पमाणमप्पाबहुगमिदि तिण्णि अणियोगद्दाराणि भवंति। तं जहा— पढमाए वग्गणाए अत्थि अविभागपडिच्छेदा। [3]बिदियाए वग्गणाए अत्थि अविभागपडिच्छेदा। एवं णेयव्वं जाव चरिमवग्गण त्ति। परूवणा गदा।

पढमाए वग्गणाए अविभागपडिच्छेदा केत्तिया? असंखेज्जलोगमेत्ता। बिदियवग्गणाए वि असंखेज्जलोगमेत्ता। एवं णेदव्वं जाव चरिमवग्गणे त्ति। संपहि एत्थ पढम-

---

स्थानप्ररूपणाके अनुसार श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र जो असंख्यात स्पर्धक हैं उनका एक जघन्य योगस्थान होता है ॥ १८६ ॥

सब जीवोंका योग क्या एक भेद रूप ही है या अनेक भेदरूप है ऐसा पूछनेपर उत्तरमें कहते हैं कि यह एक भेद रूप नहीं है किन्तु अनेक भेद रूप है, इस बातके ज्ञापनार्थ स्थानप्ररूपणाका अवतार हुआ है। वहां असंख्यात स्पर्धकोंको ग्रहण करके एक जघन्य योगस्थान होता है इस कथनसे संख्यात व अनन्त स्पर्धकोंका प्रतिषेध किया गया है। श्रेणिके असंख्यातवें भाग इस वचनसे पल्योपम व सागरोपम आदि प्रमाण स्पर्धकोंका प्रतिषेध किया गया है।

अब जघन्य स्थान सम्बन्धी वर्गणाओंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी प्ररूपणामें प्ररूपणा प्रमाण और अल्पबहुत्व ये तीन अनुयोगद्वार हैं। वे इस प्रकार हैं— प्रथम वर्गणामें अविभागप्रतिच्छेद हैं। द्वितीय वर्गणामें अविभागप्रतिच्छेद हैं। इस प्रकार अन्तिम वर्गणा तक ले जाना चाहिये। प्ररूपणा समाप्त हुई।

प्रथम वर्गणामें कितने अविभागप्रतिच्छेद हैं? असंख्यात लोक मात्र हैं। द्वितीय वर्गणामें भी वे असंख्यात लोक मात्र हैं। इस प्रकार अन्तिम वर्गणा तक ले जाना चाहिये। अब यहां प्रथम स्पर्धकके प्रमाणानुगमको करेंगे। वह इस प्रकार

---

१ असंखेज्जपएसिय फड्डयविसयं ठाणमिह [illegible]। [illegible] गो. क. २२४. सेढीअसंखियभागं फड्डयाणं जहण्णयं ठाणं। [illegible] क. प्र. १, ९.

२ अप्रतौ 'तत्थ' इत्येतत्पदं नास्ति। ३ ताप्रतौ 'बिदियाए वग्गणाए अत्थि अविभागपडिच्छेदा' इत्येतद् वाक्यं नास्ति।

आदिवग्गणा सा होदि। एवं जाणिदूण परूवणा कायव्वा जाव सिस्सो णिरारेगो जादो त्ति।

विसमगुणादेगूणं दलिदे जुम्मम्मि तत्थ फद्दयाणि[1]।
ते चेय रूवसहिदा ओजे उभओ[2] वि सव्वाणि ॥ २४ ॥

णिरुद्धओजफद्दयादो हेट्ठिमओज-जुम्मफद्दयाण पमाणपरूवणट्ठमेमा गाहा आगदा। तं जहा— विसमगुणादो ओजफद्दयगुणगारादो त्ति वुत्तं होदि। 'एगूणं' एग अवणिय दलिदे हेट्ठिमजुम्मफद्दयाणि होंति। तत्थ रूवे पक्खित्ते ओजफद्दयाणि। दोसु वि मेलाविदेसु सव्वफद्दयपमाण होदि। एत्थ उदाहरण— तिण्णि ठविय |३| एगूण करिय दलिदे जुम्मफद्दय होदि |१|। पुणो एत्थ रूवे पक्खित्ते ओजफद्दयाणि होति |२|। पुणो दोसु वि एक्कदो कदेसु सव्वफद्दयाणि होंति |३|। पुणो पंच ट्ठविय |५| एगूणं करिय दलिदे जुम्मफद्दयाणि होंति |२|। पुणो एत्थ एगरूव पक्खित्ते ओजफद्दयाणि होंति |३|। दोसु वि एक्कदो कदेसु सव्वफद्दयाणि होति |५|। एवमुवरि जाणिदूण णेदव्व जाव चरिमओजफद्दए त्ति। एवं फद्दयंतरपरूवणा समत्ता।

ओज स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है। इस प्रकार जानकर शिष्यके शंका रहित होने तक प्ररूपणा करना चाहिये।

विषमगुण अर्थात् ओज स्पर्धकके गुणकारमेंसे एक कम करके आधा करनेपर वहां युग्म स्पर्धकोंका प्रमाण आता है। उनमें ही एक अंकके मिला देनेपर ओज स्पर्धकोंका प्रमाण हो जाता है। उक्त दोनों स्पर्धकोंके प्रमाणको जोड़नेसे समस्त स्पर्धकोंकी संख्या प्राप्त होती है ॥ २४ ॥

विवक्षित ओज स्पर्धकसे पिछले ओज और युग्म स्पर्धकोंके प्रमाणको बतलानेके लिये यह गाथा आई है। यथा— विषमगुणसे अर्थात् ओज स्पर्धकगुणकारमेंसे एकोन अर्थात् एक कम करके आधा करनेपर अधस्तन युग्म स्पर्धकोंका प्रमाण होता है। उसमें एक अंकके मिलानेपर ओज स्पर्धकोंका प्रमाण होता है। उन दोनोंको मिला देनेपर समस्त स्पर्धकोंका प्रमाण होता है। यहा उदाहरण— विवक्षित द्वितीय ओज स्पर्धकके गुणकार रूप तीन (३) संख्याको स्थापित कर उसमेंसे एक कम करके आधा करनेपर युग्म स्पर्धक होता है ($\frac{३-१}{२}$ = १)। फिर इसमें एक अंकको मिलानेपर ओज स्पर्धकोंका प्रमाण होता है (१ + १ = २)। इन दोनोंको इकट्ठा कर देनेपर समस्त स्पर्धकोंका प्रमाण हो जाता है (१ + २ = ३)।

फिर पांच (५) को स्थापित कर उसमेंसे एक कम करके आधा करनेपर युग्म स्पर्धक होते हैं ($\frac{५-१}{२}$ = २)। इनमें एक अंकके मिला देनेसे ओज स्पर्धकोंका प्रमाण हो जाता है (२ + १ = ३)। दोनोंको इकट्ठा कर देनेपर समस्त स्पर्धकोंका प्रमाण हो जाता है (२ + ३ = ५)। इस प्रकार आगे भी जानकर अन्तिम ओज स्पर्धक तक ले जाना चाहिये। इस प्रकार स्पर्धकोंकी अन्तरप्ररूपणा समाप्त हुई।

---

१ ताप्रतौ 'फद्दाणि' इति पाठः। २ अप्रतौ 'ओजे चओ', आ-का ताप्रतिषु 'उचओ' इति पाठः।

ठाणपरूवणदाए असंखेज्जाणि फद्दयाणि सेडीए असंखेज्जदि भागमेत्ताणि, तमेगं जहण्णयं जोगट्ठाणं भवदि[1] ॥ १८६ ॥

सव्वेसिं जीवाणं जोगो किमेयवियप्पो चेव आहो अणेयवियप्पो त्ति पुच्छिदे एयवियप्पो ण होदि, अणेयवियप्पो त्ति जाणावणट्ठं ठाणपरूवणा आगदा। तत्थ[2] असंखेज्जाणि फद्दयाणि घेत्तूण जहण्णजोगट्ठाणं होदि त्ति वयणेण संखेज्जाणंतफद्दयाणं पडिसेहो कदो। सेडीए असंखेज्जदिभागवयणेण पलिदोवम-सागरोवमादिफद्दयाणं पडिसेहो कदो। संपहि जहण्णट्ठाणस्स वग्गणाणमविभागपडिच्छेदपरूवणाए परूवणा पमाणमप्पाबहुगमिदि तिण्णि अणियोगद्दाराणि भवंति। तं जहा— पढमाए वग्गणाए अत्थि अविभागपडिच्छेदा। [3]बिदियाए वग्गणाए अत्थि अविभागपडिच्छेदा। एवं णेयव्वं जाव चरिमवग्गणे त्ति। परूवणा गदा।

पढमाए वग्गणाए अविभागपडिच्छेदा केत्तिया? असंखेज्जलोगमेत्ता। बिदियवग्गणाए वि असंखेज्जलोगमेत्ता। एवं णेदव्वं जाव चरिमवग्गणे त्ति। संपहि एत्थ पढम

स्थानप्ररूपणाके अनुसार श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र जो असंख्यात स्पर्धक हैं उनका एक जघन्य योगस्थान होता है ॥ १८६ ॥

सब जीवोंका योग क्या एक भेद रूप ही है या अनेक भेदरूप है ऐसा पूछनेपर उत्तरमें कहते हैं कि वह एक भेद रूप नहीं है किन्तु अनेक भेद रूप है, इस बातके ज्ञापनार्थ स्थानप्ररूपणाका अवतार हुआ है। वहां असंख्यात स्पर्धकोंको ग्रहण करके एक जघन्य योगस्थान होता है इस कथनसे संख्यात व अनन्त स्पर्धकोंका प्रतिषेध किया गया है। श्रेणिके असंख्यातवें भाग इस वचनसे पल्योपम व सागरोपम आदि प्रमाण स्पर्धकोंका प्रतिषेध किया गया है।

अब जघन्य स्थान सम्बन्धी वर्गणाओंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी प्ररूपणामें प्ररूपणा प्रमाण और अल्पबहुत्व ये तीन अनुयोगद्वार हैं। वे इस प्रकार हैं— प्रथम वर्गणामें अविभागप्रतिच्छेद हैं। द्वितीय वर्गणामें अविभागप्रतिच्छेद हैं। इस प्रकार अन्तिम वर्गणा तक ले जाना चाहिये। प्ररूपणा समाप्त हुई।

प्रथम वर्गणामें कितने अविभागप्रतिच्छेद हैं? असंख्यात लोक मात्र हैं। द्वितीय वर्गणामें भी वे असंख्यात लोक मात्र हैं। इस प्रकार अन्तिम वर्गणा तक ले जाना चाहिये। अब यहां प्रथम स्पर्धकके प्रमाणानुगमको करेंगे। वह इस प्रकार

---

१ पल्लासंखेज्जदिमा इत्यादि ... । ... गो. क. २२४ ... ॥ क. प्र. १, ८.

२ अप्रतौ 'तत्थ सेडीए' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'बिदियाए वग्गणाए अत्थि अविभागपडिच्छेदा' इतीदं वाक्यं नास्ति।

फद्दयपमाणाणुगमं कस्सामो । तं जहा — जहण्णफद्दयस्स आदिवग्गणायाममादिवग्गणवग्गेण गुणिय पुणो एगफद्दयवग्गणसलागाहिं चदुगुणेगगुणहाणिफद्दयसलागभागहीणाहि गुणिदे आदिफद्दयमागच्छदि । त जहा — पढमफद्दयस्स आदिवग्गणायामे आदिवग्गेण गुणिदे पढमफद्दयआदिवग्गणा होदि । पुणो पढमवग्गणादो विदियादिवग्गणाओ विसेसहीणाओ । केत्तियमेत्तेण ? सग-सगहेट्ठिमवग्गणायामेणूणगोवुच्छविसेसगुणिदसगं-सगवग्गमेत्तेण । [तेण] कारणेण पुव्वमाणिदपढमवग्गणाए एगफद्दयवग्गणसलागाहि गुणिदाए सादिरेयफद्दयमागच्छदि । केत्तियमेत्तेण सादिरेगं ? जहण्णवग्गगुणिदवग्गणविसेसादिउत्तररूवूणवग्गणसलागगच्छसंकलणाए । एदमवणिय पुणो एत्थ विदियणिसेगादिउत्तररूवूणवग्गणसलागसंकलणाए गोवुच्छविसेससादिउत्तरदुरूवूणवग्गणसलागगच्छदुगुणसंकलणासकलणूणियाए पक्खित्ताए जहण्णफद्दयमागच्छदि । एव सव्वफद्दयाण पमाणमाणेयव्व जाव चरिमगुणहाणिचरिमफद्दए त्ति । एत्थ ताव पढमगुणहाणिफद्दयाण जोगाविभागपडिच्छेदमेलावणविहाणं वत्तइस्सामो । त जहा— जहण्णफद्दयादिउत्तरगुणहाणिफद्दयसलागाण

है— जघन्य स्पर्धक सम्बन्धी प्रथम वर्गणाके आयामको प्रथम वर्गणाके वर्गसे गुणित कर फिर उसे एक स्पर्धककी जितनी वर्गणाशलाकायें हैं उनमेंसे एक गुणहानिकी चौगुणी स्पर्धकशलाकाओंको कम कर देनेपर जितनी शेष रहें उनसे गुणित करनेपर प्रथम स्पर्धकका प्रमाण आता है। वह इस प्रकारसे— प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणाके आयामको प्रथम वर्गसे गुणित करनेपर प्रथम स्पर्धककी प्रथम वर्गणा होती है। आगे प्रथम वर्गणासे द्वितीयादिक वर्गणायें विशेष हीन हैं। कितने मात्रसे वे हीन हैं? अपनी अपनी अधस्तन वर्गणाके आयामसे रहित गोपुच्छविशेषसे गुणित अपने अपने वर्गोंका जितना प्रमाण हो उतने मात्रसे वे हीन हैं। इस कारण पूर्वमें लायी हुई प्रथम वर्गणाको एक स्पर्धककी वर्गणाशलाकाओंसे गुणित करनेपर साधिक स्पर्धकका प्रमाण आता है। कितने मात्रसे साधिक? जघन्य वर्गसे गुणित वर्गणाविशेषादि उत्तर एक कम वर्गणाशलाकाओंकी गच्छसकलनासे वह साधिक है। इसको कम करके फिर इसमें गोपुच्छविशेषादि उत्तर दो रूपोंसे कम वर्गणाशलाकाओंके गच्छकी दुगुणी सकलना संकलनासे हीन ऐसी द्वितीय निषेकादि उत्तर एक कम वर्गणाशलाकाओंकी संकलनाको मिला देनेपर जघन्य स्पर्धकका प्रमाण आता है। इस प्रकार अन्तिम गुणहानिके अन्तिम स्पर्धक तक सब स्पर्धकोंके प्रमाणको ले आना चाहिये।

यहां पहले प्रथम गुणहानिके स्पर्धकोंके योगाविभागप्रतिच्छेदोंके मिलानेके विधानको कहते हैं। वह इस प्रकार है— जघन्य स्पर्धकसे लेकर आगेकी गुणहानि

१ प्रतिषु 'गुणिदे दव्वय' इति पाठ । २ ताप्रतौ 'गोवुच्छगुणिदविसेससग-' इति पाठ ।

गच्छसंकलणाए आणिदाए एत्तियं होदि | ० / १६ | १९ | ८ | ४ | ९९ / २ | । पुणो एत्थ अहियाविभागपडिच्छेदाणमाणयणं[1] वुच्चदे। तं जहा— जहण्णवग्गगुणएगवग्गणविसेसादिउत्तररूवूणफद्दयवग्गणसलागगच्छसंकलणा[2] पढमफद्दयम्मि अवणिज्जमाणजोगाविभागपडिच्छेदा होंति[3]। तेसिं पमाणमेदं | ८ | १६ | ३ / १ | ४ / १ | । पुणो बिदियफद्दयम्मि ऊणपमाणाणयणं वुच्चदे। तं जहा— एगफद्दयवग्गणसलागवग्गमेत्तवग्गणविसेसेहि दोजहण्णवग्गे गुणिय पुध ट्ठविदे एत्तियं होदि | ८ | २ | ० / १६ | ४४ | । पुणो एगवग्गणविसेसादिउत्तररूवूणफद्दयवग्गणसलागगच्छसंकलणमेत्तविसेसेहि दोजहण्णवग्गे गुणिय पुध ट्ठवेदव्वं। तस्स पमाणमेदं | ८ | २ | ० / १९ | ३ | ४ / २ | । पुव्विल्लरासिस्स पस्से एदं पि ट्ठवेदव्वं। बिदियफद्दयम्मि अवणिज्जमाणअविभागपडिच्छेदा होंति ।

सम्बन्धी स्पर्धकशलाकाओंकी गच्छसंकलनाके लानेपर वह इतनी होती है (मूलमें देखिये)। अब यहां अधिक अविभागप्रतिच्छेदोंके आनयनका विधान कहा जाता है। वह इस प्रकार है— जघन्य वर्गसे गुणित एक वर्गणाविशेषादि-उत्तर रूप कम स्पर्धकवर्गणाशलाका स्वरूप गच्छके संकलन प्रमाण प्रथम स्पर्धकमें कम किये जानेवाले योगाविभागप्रतिच्छेद होते हैं। उनका प्रमाण यह है (मूलमें देखिये)।

अब द्वितीय स्पर्धकमें कम किये जानेवाले योगाविभागप्रतिच्छेदोंके प्रमाणके लानेका विधान कहा जाता है। यथा— एक स्पर्धककी वर्गणाशलाकाओंके वर्ग मात्र वर्गणाविशेषोंसे दो जघन्य वर्गोंको गुणित करके पृथक् स्थापित करनेपर इतना होता है (मूलमें देखिये)। अब एक वर्गणाविशेषादि उत्तर एक कम स्पर्धककी वर्गणाशलाका रूप गच्छकी संकलनाका जितना प्रमाण हो उतने मात्र विशेषोंसे दो जघन्य वर्गोंको गुणित करके पृथक् स्थापित करना चाहिये। उसका प्रमाण यह है (मूलमें देखिये)। पूर्व राशिके पासमें इसको भी स्थापित करना चाहिये। द्वितीय स्पर्धकमें कम किये जानेवाले अविभागप्रतिच्छेद होते हैं।

---

१ अप्रतौ '-णायणं' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'वुच्चदे' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'संकलण' इति पाठः। ४ [illegible] इति पाठः। [illegible] (धौ. म.) ११९. ५ ताप्रतौ | ८ | १६ | १ / १ | ४ / ४ | अ-काप्रत्योः | | १६ | १ / १ | ४ / ४ / १ | आप्रतौ | ८ | ० | १६ | १ | ४४ / २ | एवंविधात्र संदृष्टिरस्ति।
६ ताप्रतौ [illegible] इति पाठः। ७ ताप्रतौ | ८ | १ | १६ | १४ / २ | एवं विधात्र संदृष्टिः।
८ [illegible] १ इति पाठः। [illegible] (धौ. म.) १११
* दे. ५९

संपहि तदियफद्दयम्मि अवणिज्जमाणअविभागपडिच्छेदे भणिस्सामो। त जहा— फद्दयवग्गणसलागवग्गमेत्तदोवग्गणविसेसेहि तिण्णिजहण्णवग्गे गुणिय पुध ठवेदव्व

८	३	० १६	४४	२

। पुणो रूवूणफद्दयवग्गणसलागसंकलणमेत्तवग्गणविसेसेहि तिण्णिजहण्णवग्गे गुणिय पुव्विल्लरासिस्स पस्से ठवेदव्व

८	३	० १६	३	४ २

। एदासिं दोण्हं रासीणं समूहो तदियफद्दयम्मि अवणिज्जमाण अविभागपडिच्छेदाण पमाणं होदि[1]। एव पढमगुणहाणीए फद्दय पडि इच्छिदफद्दयादो हेट्ठिमफद्दयसलागाहि फद्दयवग्गणवग्गगुणिदमेत्तवग्गणविसेसेहि य फद्दयसलागमेत्तजहण्णवग्गा गुणिदो, पुणो अण्णे वि रूवूणवग्गणसलागसंकलणमेत्तवग्गण-विसेसेहि गुणिदफद्दयसलागमेत्तजहण्णवग्गा च, एदाहि दोहि रासीहि ऊणा सव्वफद्दयाण-मविभागपडिच्छेदा होंति। पुणो एदाओ दो वि पतीओ पुध पुध मेलाविदे पढमगुणहाणि पढमपतीए ऊणअवसेसाविभागपडिच्छेदाण समासो एत्तिओ होदि

८	० १६	४४	९	९	९ ३

। कुदो ? गुणहाणिफद्दयसलागाणं रूवूणाण दुगुणसकलणासकलण-

अब तृतीय स्पर्धकमें कम किये जानेवाले अविभागप्रतिच्छेदोंको कहते हैं। यथा— स्पर्धककी वर्गणाशलाकाओंके वर्ग मात्र दो वर्गणाविशेषोंसे तीन जघन्य वर्गोंको गुणित कर पृथक् स्थापित करना चाहिये (मूलमें देखिये)। फिर एक कम स्पर्धक वर्गणाशलाकासंकलनका जितना प्रमाण हो उतने मात्र वर्गणा विशेषोंसे तीन जघन्य वर्गोंको गुणित कर पूर्व राशिके पासमें स्थापित करना चाहिये (मूलमें देखिये)। इन दोनों राशियोंका समूह तृतीय स्पर्धकमें कम किये जानेवाले योगाविभागप्रतिच्छेदोंका प्रमाण होता है। इस प्रकार प्रथम गुणहानिके प्रत्येक स्पर्धकमें, विवक्षित स्पर्धकके नीचेकी स्पर्धकशलाकाओंके द्वारा तथा स्पर्धक सम्बन्धी वर्गणाओंके वर्गके द्वारा गुणित वर्गणाविशेषोंका जितना प्रमाण हो उतने वर्गणाविशेषोंसे स्पर्धकशलाका मात्र जघन्य वर्गोंको गुणित करे, फिर एक कम वर्गणाशलाकासकलनाका जितना प्रमाण हो उतने वर्गणाविशेषोंसे स्पर्धक-शलाका मात्र अन्य भी जघन्य वर्गोंको गुणित करे, इन दोनों राशियोंसे रहित समस्त स्पर्धकोंके अविभागप्रतिच्छेद होते हैं। फिर इन दोनों ही पंक्तियोंको पृथक् पृथक् मिलानेपर प्रथम गुणहानिकी प्रथम पंक्तिसे हीन शेष अवि-भागप्रतिच्छेदोंका जोड़ इतना होता है (मूलमें देखिये)। कारण कि वे एक कम गुणहानिस्पर्धकशलाकाओंकी दूनी संकलनासकलनासे गुणित स्पर्धकवर्गणाशलाकाओंके

---

१ पुन जघन्यवर्गमात्रविशेषाणां रूपोनैकस्पर्धकवर्गणाशलाकागच्छसकलन त्रिगुणित व वि ३/२ । ४/१ । २ पुनर्जघन्यवर्गमात्रविशेष –एकस्पर्धकवर्गणाशलाकावर्गेण रूपोनगच्छसकलनेन ३/२ । ३/१ द्विगुणेन च २/२ । ३/१ । २ गुणित व वि ४ । ४ । ३ । २ एतौ द्वौ राशी तृतीयस्पर्धकऋणम् । गो क (जी प्र) २२९

२ मप्रतिपाठोऽयम् । अप्रतौ त्रुटितोऽत्र पाठ , आ-काप्रत्यो '-सलागमेत्त जहण्णवग्ग गुणिदा', ताप्रतौ 'सलागमेत्त जहण्णवग्ग गुणिद' इति पाठ ।

गुणिदफद्दयवग्गणसलागवग्गगुणवग्गणविसेसमेत्तजहण्णवग्गपमाणत्तादो । पुणो[1] अवरो वि पक्खित्तो होदि

८	०	३	४	९	९
	१६		२		२

। कुदो ? फद्दयसलागसंकलणाए रूवूणवग्गणसलागसंकलणगुणिदवग्गणविसेसमेत्तजहण्णवग्गपमाणत्तादो । एदस्स अणंतरमणिदरासिस्स मेलावणट्ठं पुव्विल्लरासिअंतिमगुणगारम्मि एगरूवस्स संखेज्जदिभागो पक्खिविदव्वो । एगेगुत्तरकमेण ट्ठिदअविभागपडिच्छेदा वि एगजहण्णवग्गस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता । ते वि आणिदूणाणिय अभावदव्वम्मि अवणिय पुणो त अभावदव्वं एदम्मि पढमगुणहाणिदव्वम्मि

८		१६	४	९	९
	१६				२

सोहिज्जमाणे वग्गणविसेसस्स गुणगारसरूवेण ट्ठिददोगुणहाणीयो विसिलेसिय तस्सुवरि दोरूवाणि अंते ठवेदव्वाणि

८	०	४	४	९	९	९	२
	१६					२	

। पुणो एदम्मि सरिसच्छेदं काऊण अवणिदे अवसेसं एत्तियं होदि

८	०	४	४	९	९	९	४
	१६						६

। एदं ताव पुध ट्ठवेदव्वं ।

संपहि बिदियगुणहाणिफद्दयाणमाणयणक्कमो वुच्चदे । तं जहा — पढमगुणहाणिपढमफद्दयद्धं ठविय बिदियगुणहाणिपढमादिफद्दयाणमुप्पायणट्ठं रूवाहिय-दुरूवाहियादीहि

वर्गसे वर्गणाविशेषको गुणित करनेपर जो राशि प्राप्त हो उतने मात्र जघन्य वर्गोंके बराबर है। दूसरा भी इतना है (मूलमें देखिये)। कारण कि स्पर्धकशलाकासंकलना रूप कम वर्गणाशलाकासंकलनासे गुणित वर्गणाविशेषका जितना प्रमाण हो उतने मात्र जघन्य वर्गोंके बराबर है। अनन्तर कही गई इस राशिके मिलानेके लिये पूर्व राशिके अन्तिम गुणकारमें एक रूपके संख्यातवें भागको मिलाना चाहिये। एक एक अधिक क्रमसे स्थित अविभागप्रतिच्छेद भी एक जघन्य वर्गके असंख्यातवें भाग मात्र होते हैं। इनको भी लाकर अभावद्रव्यमेंसे कम करके फिर उस अभावद्रव्यको इस प्रथम गुणहानिके द्रव्यमेंसे (मूलमें देखिये) कम करते समय वर्गणाविशेषके गुणकार स्वरूपसे स्थित दो गुणहानियोंको विश्लेषित करके उनके दो रूपोंको अन्तमें स्थापित करना चाहिये (मूलमें देखिये)। फिर इसको समान खण्ड करके घटा देनेपर शेष इतना रहता है (मूलमें देखिये)। इसको पृथक् स्थापित करना चाहिये।

अब द्वितीय गुणहानिके स्पर्धकोंके लानेका क्रम कहा जाता है। वह इस प्रकार है— प्रथम गुणहानि सम्बन्धी प्रथम स्पर्धकके अर्ध भागको स्थापित करके द्वितीय गुणहानिके प्रथम-द्वितीयादि स्पर्धकोंको उत्पन्न करानेके लिये एक रूप अधिक,

---

१ तासौ पुणो इति पाठः। २ अप्रतिवन्निज्जन्म। अ-आ-का-ताप्रतिषु | ८ / १ | इति पाठः।

गुणहाणिफद्दयसलागाहि गुणिदे थोरुच्चएण बिदियगुणहाणिदव्वं होदि। पुणो एदासिं फद्दयाणं मेलावणविहाणं कस्सामो। तं जहा— फद्दयसलागासु अहियरूवे अवणिय पुध ट्ठविदे एगादिएगुत्तरकमेण जहण्णफद्दयद्धस्स गुणगारा[1] होदूण चेट्ठंति। अवसेसं पि गुणहाणिफद्दयसलागाहि गुणिदमेत्तं होदूण चेट्ठदि। पुणो फद्दयसलागगुणिदजहण्णफद्दयद्धं बिदियगुणहाणिसव्वफद्दयसलागाहि गुणिदे आदिमपंतिदव्वं होदि। पुणो फद्दयसलागसकलणगुणिदजहण्णफद्दयद्धे ट्ठविदे बिदियपंती मिलिदूणागच्छदि[2]। तेसिं दोण्ण पि दव्वाण संदिट्ठीए अंकट्ठवणा एसा

८	०	२	१६	४	९	९	८	०	२	१६	४	९
	१६							१६				

९
२
[3]। एत्थतणरूवाहियत्तमप्पहाणं कादूण दो वि दव्वाणि सरिसच्छेदं कादूण मेलाविदे थोरुच्चएण बिदियगुणहाणिदव्वं मिलिदं होदि। तं च एदं

८	०	१६	४	९	९	३
	१६					४

।

एत्थ अहियाविभागपडिच्छेदाणमाणयणकमो वुच्चदे। तं जहा—पढमगुणहाणिवग्गणविसेसद्धं चदुसु ट्ठाणेसु चत्तारिपंतीओ पढम-बिदियाओ रूवूणेगगुणहाणिफद्दय-

---

दो रूप अधिक इत्यादि गुणहानिस्पर्धकशलाकाओंसे गुणित करनेपर संक्षेपसे द्वितीय गुणहानिका द्रव्य होता है। अब इन स्पर्धकोंके मिलानेके विधानको कहते हैं। वह इस प्रकार है— स्पर्धकशलाकाओंमेंसे अधिक रूपोंको कम करके पृथक् स्थापित करनेपर एकको आदि लेकर एक अधिक क्रमसे जघन्य स्पर्धकके अर्ध भागके गुणकार होकर स्थित होते हैं। शेष भी गुणहानिकी स्पर्धकशलाकाओंसे गुणित करनेपर जितना प्रमाण प्राप्त हो उतना मात्र होकर स्थित होता है। फिर स्पर्धकशलाकाओंसे गुणित जघन्य स्पर्धकके अर्ध भागको द्वितीय गुणहानिकी समस्त स्पर्धकशलाकाओंसे गुणित करनेपर प्रथम पंक्तिका द्रव्य होता है। पुनः स्पर्धकशलाकाओंकी संकलनासे गुणित जघन्य स्पर्धकके अर्ध भागको स्थापित करनेपर द्वितीय पंक्तिका द्रव्य मिलकर आता है। उन दोनों ही द्रव्योंकी अंकस्थापना संदृष्टिमें यह है (मूलमें देखिये)। यहांकी रूपाधिकताको गौण करके दोनों ही द्रव्योंको समान खण्ड करके मिलानेपर संक्षेपसे द्वितीय गुणहानिका सम्मिलित द्रव्य होता है। वह यह है (मूलमें देखिये)।

यहां अधिक अविभागप्रतिच्छेदोंके लानेका क्रम कहते हैं। वह इस प्रकार है— प्रथम गुणहानि सम्बन्धी वर्गणाविशेषके अर्ध भागकी चार स्थानोंमें चार रचित पंक्तियोंमेंसे प्रथम व द्वितीय पंक्ति एक कम एक गुणहानिकी स्पर्धकशलाकाओंके बराबर आयत

---

१ प्रतिषु ‘ गुणगारो ’ इति पाठः। २ ताप्रतौ ‘ मिलिदूण गच्छदि ’ इति पाठः।

३ सप्रतिपाठोऽयम्। अप्रतौ

०	१६	४	९	९	३
१६				२	४

, आ-का-ताप्रतिषु

०	४	९	९
१६			२

इति पाठः।

सलागायामाओ तदियचउत्थाओ संपुण्णायामाओ उड्ढायारेण ठविय तत्थ पढमपंती एगादि एगुत्तरएगफद्दयवग्गणसलागवग्गगुणहाणिफद्दयसलागाहि गुणेयव्वा। बिदियपंती एगादि एगुत्तरदुगुणसंकलणागुणिदएगफद्दयवग्गणवग्गेण गुणेदव्वा। तदियपंती वि फद्दयसलागगुणरूवूणवग्गणसलागसंकलणाए गुणेयव्वा। चउत्थपंती वि एगादिएगुत्तररूवेहि गुणरूवूणवग्गणसलागसंकलणाए गुणेयव्वा। अंतिमदोपंतीसु पढमट्ठाणट्ठिददव्वं बिदियगुणहाणिपढमफद्दयम्मि अहियं होदि। चदुसु वि पंतीसु बिदियादियट्ठाणट्ठिददव्वं बिदियादिफद्दएसु अहियं होदि। पुणो एदासिं चदुण्णं पंतीणं मेलावणविहाणं कस्सामो। तं जहा— रूवूणफद्दयसलागसंकलणाए पढमपंतिपढमट्ठाणट्ठिददव्वे गुणिदे पढमपंतिदव्वमागच्छदि। तस्स पमाणमेदं

८	०/१६	२	४	४	९	९	९/२

। पुणो रूवूणफद्दयसलागसंकलणासंकलणाए दुगुणाए बिदियपंतिपढमट्ठाणट्ठिददव्वे गुणिदे बिदियपंतीए सव्वदव्वं पिंडिदूणागच्छदि। तं च एदं

८	०/१६	२	४	४	९	९	९/६	२

। पुणो तदियपंतीए पढमदव्वे फद्दयसलागाहि गुणिदे तदियपंतिदव्वं सव्वमागच्छदि। तस्स

तथा तृतीय व चतुर्थ पंक्ति सम्पूर्ण आयत इस प्रकार चार पंक्तियोंको ऊर्ध्वाकारसे स्थापित कर उनमेंसे प्रथम पंक्तिको एकको आदि लेकर उत्तरोत्तर एक-एक अधिक एक स्पर्धककी वर्गणाशलाकाओं वर्गों व गुणहानिकी स्पर्धकशलाकाओंसे गुणित करना चाहिये। द्वितीय पंक्तिको एकको आदि लेकर एक अधिक दुगुणी संकलनासे गुणित एक स्पर्धककी वर्गणाके वर्गसे गुणित करना चाहिये। तृतीय पंक्तिको भी स्पर्धकशलाकाओंसे गुणित एक कम वर्गणाशलाकासंकलनासे गुणा करना चाहिये। चतुर्थ पंक्तिको भी एकको आदि लेकर उत्तरोत्तर एक एक अधिक रूपोंसे गुणित एक कम वर्गणाशलाका संकलनासे गुणित करना चाहिये। अन्तिम दो पंक्तियोंमें प्रथम स्थानमें स्थित द्रव्य द्वितीय गुणहानिके प्रथम स्पर्धकमें अधिक होता है। चारों ही पंक्तियोंमें द्वितीयादि स्थानोंमें स्थित द्रव्य प्रथम गुणहानिके द्वितीयादि स्पर्धकोंमें अधिक होता है।

अब हम चार पंक्तियोंके मिलानेके विधानको कहते हैं। वह इस प्रकार है— एक कम स्पर्धकशलाकासंकलनासे प्रथम पंक्तिके प्रथम स्थानमें स्थित द्रव्यको गुणित करनेपर प्रथम पंक्तिका द्रव्य आता है। उसका प्रमाण यह है (मूलमें देखिये) फिर एक कम स्पर्धकशलाकासंकलना-संकलनाको दूना करके उससे द्वितीय पंक्तिके प्रथम स्थानमें स्थित द्रव्यको गुणित करनेपर द्वितीय पंक्तिका सब द्रव्य एकत्रित होकर आता है। वह यह है (मूलमें देखिये)। फिर तृतीय पंक्तिके प्रथम स्थानमें स्थित द्रव्यको स्पर्धकशलाकाओंसे गुणित करनेपर तृतीय पंक्तिका सब द्रव्य आता

संदिट्ठी एसा

८	०	२	३	४	९	९
	१६			२		

। फद्दयसलागसंकलणाए चउत्थपंति-पढमदव्वे गुणिदे तप्पंतीए सव्वदव्वमागच्छदि। तस्स ठवणा

८	०	२	३	४	९	९
	१६			२		२

। पुणो एदेसु पढम-बिदियपंतीणं दव्वाणि पहाणाणि, इदरदोपंतीणं दव्वाणि अप्पहाणाणि। तदो आदिमदोपंतीण दव्वाणि मेलाविय एगरूवासंखेज्जभाग पक्खिविय फद्दयविसेसस्स हेट्ठिमदोरूवेहि अंतिमच्छेद गुणिय ट्ठवेदव्वं। त च एद

८	०	४	४	९	९	९	५
	१६					१२	

। पुणो 'पुव्विल्लबिदियगुणहाणिदव्वम्मि गुणगारं होदूण ट्ठिददोगुणहाणीयो पुव्वं व विसिलेसं कादूण दोरूवेहि[1] अंतिमअंसं[2] गुणिय सरिसच्छेदं कादूण पुव्विल्लअहियदव्वं अवणिय पढमगुणहाणिदव्वस्स पस्से ठवेदव्वं। तं च एदं

८	०	४	४	९	९	९	१३
	१६						१२

। पुणो तदियगुणहाणिदव्वे आणिज्जमाणे पढमगुणहाणीए आदिफद्दयचदुब्भाग दुप्पडिरासिं कादूण तत्थेगरासिं गुणहाणिफद्दयसलागवग्गदुगुणेण गुणिय अवर पि तस्स चेव संकलणाए गुणिय

है। उसकी संदृष्टि यह है (मूलमें देखिये)। स्पर्धकशलाकासंकलनासे चतुर्थ पंक्तिके प्रथम द्रव्यको गुणित करनेपर उस पंक्तिका सब द्रव्य आता है। उसकी स्थापना (मूलमें देखिये)। अब इनमें प्रथम व द्वितीय पंक्तिके द्रव्य प्रधान हैं, अन्य दो पंक्तियोंके द्रव्य अप्रधान हैं। इसलिये प्रथम दो पंक्तियोंके द्रव्योंको मिलाकर एक रूपके असंख्यातवें भागको मिलाकर स्पर्धकविशेषके अधस्तन दो रूपों द्वारा अन्तिम खण्डको गुणित कर स्थापित करना चाहिये। वह यह है (मूलमें देखिये)। पुनः पूर्वोक्त द्वितीय गुणहानिके द्रव्यमें गुणकार होकर स्थित दो गुणहानियोंको पूर्वके समान विश्लेषित करके दो रूपोंके द्वारा अन्तिम भागको गुणित कर व समानखण्ड करके उसमेंसे पूर्वके अधिक द्रव्यको घटाकर प्रथम गुणहानि सम्बन्धी द्रव्यके पासमें स्थापित करना चाहिये। वह यह है (मूलमें देखिये)। फिर तृतीय गुणहानिके द्रव्यको लाते समय प्रथम गुणहानिके प्रथम स्पर्धकके चतुर्थ भागकी दो प्रतिराशियां करके उनमें एक राशिको दूने गुणहानिस्पर्धकशलाकावर्गसे गुणित करके तथा दूसरी राशिको भी उसीका संकलनासे गुणित करके स्थापित करनेपर संक्षेपसे तृतीय गुणहानिका द्रव्य होता

---

१ अप्रतौ 'दोहि रूवेहि' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्। अ आ-काप्रतिषु 'अंतिमसगुणिय', ताप्रतौ 'अंतिम सगुणिय' इति पाठः।

| ८ | ०/१६ | ४ | ४ | ९ | ९ | ९ | २/८ | ८ | ०/१६ | ४ | ४ | ९ | ९ | ९ | २/२४ | ८ | ०/१६ | ३ | ४/२ | ९ | ९ | २/४ | ८ | ०/१६ | ३ | ४/२ | ११/८ | । पुणो आदिल्लदोदव्वाणि सरिसच्छेदाणि कादूण मेलाविय एगरूवासंखेज्जदिभागं पक्खिविय ठवेदव्वं | ८ | ०/१६ | ४ | ४ | ९ | ९ | ९ | ८/२४ | । पुणो एद पुव्विल्लदव्वम्मि पुव्वं व अवणिय दोगुणहाणिदव्वाणं पस्से ठवेदव्व | ८ | ०/१६ | ४ | ४ | ९ | ९ | ९ | २२/२४ | । पुणो चउत्थगुणहाणिदव्वे आणिज्जमाणे पढमफद्दयस्स अट्ठमभागं दोसु ट्ठाणेसु ठविय तत्थेगं फद्दयसलागतिगुणवग्गेण गुणिय अवर पि तेसिं चेव सकलणाए गुणिय ठवेदव्वं[1] | ८ | ०/१६ | १६/८ | ४ | ९ | ९ | ३ | । अवर पि एदं | ८ | ०/१६ | १६/८ | ४ | ९ | ९/२[2] | । एदाणि दो वि मेलाविदे थूलत्थेण चउत्थगुणहाणिदव्वं होदि। त च एद | ८ | १६ | ४ | ९ | ९ | ७/१६ | ।

पुणो एत्थ अहियदव्वाणयणं वुच्चदे। त जहा— पढमगुणहाणिवग्गणविसेस-अट्ठमभागं चउसु[3] ट्ठाणेसु चदुपंतिआयारेण रचेदूण तत्थादिमपती आदिप्पहुडि तिगुणफद्दय-सलागाहि गुणएगादिएगुत्तरवग्गणवग्गेण[4] गुणेयव्वा। विदिया वि एगादिरूवाण दुगुण-

---

मिलाकर उसमें एक रूपके असख्यातवें भागका प्रक्षेप कर स्थापित करना चाहिये (मूलमें देखिये)। फिर इसको पूर्वके द्रव्यमेंसे पहिलेके ही समान कम करके दो गुणहानियोंके द्रव्योंके पासमें स्थापित करना चाहिये (मूलमें देखिये)। फिर चतुर्थ गुणहानिके द्रव्यको लाते समय प्रथम स्पर्धकके आठवें भागको दो स्थानोंमें स्थापित कर उनमेंसे एकको स्पर्धकशलाकाओंके तिगुणे वर्गसे गुणित कर तथा दूसरेको भी उनकी ही सकलनासे गुणित कर स्थापित करना चाहिये। इन दोनोंको मिलानेपर स्थूल रूपसे चतुर्थ गुणहानिका द्रव्य होता है। वह यह है (मूलमें देखिये)।

अब यहां अधिक द्रव्यके लानेका विधान कहते हैं। वह इस प्रकार है— प्रथम गुणहानिके वर्गणाविशेषके आठवें भागको चार स्थानोंमें चार पक्तियोंके आकारसे रचकर उनमेंसे प्रथम पक्तिको आदिसे लेकर तिगुणी स्पर्धकशलाकाओंसे गुणित एकको आदि लेकर एक एक अधिक वर्गणावर्गसे गुणित करना चाहिये। दूसरी

---

१ ताप्रतावतोऽग्रे 'तं च एद' इत्यधिक. पाठोऽस्ति। २ मप्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु | १/२ | इति पाठ। ३ ताप्रतौ 'अट्ठमभागचउसु' इति पाठ। ४ आ-ताप्रत्यो 'गुणे एगादि' इति पाठ।

संकलणागुणवग्गणवग्गेण गुणेयव्वा। तदिया वि तिगुणफद्दयसलागगुणरूवूणवग्गणसंकलणाए गुणेयव्वा। चउत्था वि ताए चेव संकलणाए एगादिएगुत्तररूवगुणिदाए गुणेयव्वा। पुणो एदेसिं पंतिआयारेण ट्ठिददव्वाणं मेलावणे कीरमाणे पंतीणं आदिदव्वाणि जहाकमेण रूवूणफद्दयसलागसंकलणाए च तस्स दुगुणसंकलणासंकलणाए च फद्दयसलागाहि य तासिं संकलणाए च गुणेयव्वाणि। वग्गणविसेसस्स हेट्ठिमअट्ठरूवेहि अतिमच्छेदं गुणियं मेलाविदे सव्वपिंडमेदं

८		४	४	९	९	९	११
	१६						४८

। पुव्विल्लदव्वम्मि सरिसच्छेदं कादूण पुव्वविहाणेणवणिदे सेसमेत्तियं होदि

८	०	४	४	९	९	९	२१
	१६						४८

। संपहि उवरिमगुणहाणीणं दव्वे उप्पाइज्जमाणे तासिं तासिं हेट्ठिमगुणहाणिसलागअण्णोण्णब्भत्थरासिणा पढमगुणहाणिआदिफद्दयं खंडिय तत्थ एगखंडं गुणहाणिफद्दयसलागवग्गेण गुणिय पुणो तप्पहुडिहेट्ठिमगुणहाणिसलागदुगुणरूवूणवग्गेण च गुणिय पुध ट्ठविय पुणो अहियदव्वे आणिज्जमाणे आदिगुणहाणिवग्गणविसेसं इच्छिदगुणहाणिहेट्ठिमअण्णोण्णब्भत्थरासिणा खंडिय पुणो तप्पहुडिहेट्ठिमगुणहाणिसलागतिगुणरूवूणछब्भागगुणहाणिफद्दयसलाग

—

पंक्तिको भी एक आदिक रूपोंकी दुगुणी संकलनासे गुणित वर्गणाके वर्गसे गुणित करना चाहिये। तृतीय पंक्तिको भी तिगुणी स्पर्धकशलाकाओंसे गुणित एक कम वर्गणाके संकलनसे गुणित करना चाहिये। चतुर्थ पंक्तिको भी एकको आदि लेकर एक-एक अधिक रूपोंसे गुणित उक्त संकलनासे ही गुणित करना चाहिये। फिर पंक्तिके आकारसे स्थित इन द्रव्योंको मिलाते समय पंक्तियोंके प्रथम द्रव्योंको क्रमशः एक कम स्पर्धकशलाकाओंकी संकलना उसकी दूनी संकलनसंकलना स्पर्धकशलाकाओं तथा उनकी संकलनासे गुणित करना चाहिये। वर्गणाविशेषके अधस्तन आठ रूपोंसे अन्तिम अंशको गुणित करके मिलानेपर समस्त पिण्डप्रमाण यह होता है (मूलमें देखिये)। इसे पहिलेके द्रव्यमेंसे समान खण्ड करके पूर्व रीतिसे कम करनेपर शेष इतना रहता है (मूलमें देखिये)।

अब उपरिम गुणहानियोंके द्रव्यको उत्पन्न कराते समय उन उनकी अधस्तन गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिका प्रथम गुणहानिके प्रथम स्पर्धकमें भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध हो उसको गुणहानिस्पर्धकशलाकाओंके वर्गसे गुणित करके फिरसे उसको आदि लेकर अधस्तन गुणहानिशलाकाओंके दूने रूपोंसे हीन अर्ध भागसे गुणित करके पृथक् स्थापित करना चाहिये। फिर अधिक द्रव्यको लाते समय प्रथम गुणहानिके वर्गणाविशेषको विवक्षित गुणहानिसे अधस्तन गुणहानिकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे खण्डित कर फिर उसको आदि लेकर अधस्तन गुणहानिशलाकाओंके तिगुने रूपोंसे कम छठे भाग मात्र गुणहानिस्पर्धकशलाकाओंके घनसे गुणित वर्गणाके वर्गसे

—

१ काप्रतौ 'दुगुणिय' इति पाठः। २ प्रतिषु 'विहाणेणवणिदे' इति पाठः।

घणगुणिदवग्गणवग्गेण गुणिदे तम्मि तम्मि गुणहाणिम्मि अहियदव्वपमाणं होदि[1]। पुणो एद अहियदव्वं पुव्विल्लथूलत्तेणाणिदसव्वगुणहाणिदव्वेसु अवणिज्जमाणे गुणगार होदूण ट्ठिददो-गुणहाणीयो[2] विसिलेसिय तत्थतणदोरूवेहि अंतिमअंसं गुणिय सरिसच्छेद कादूणवणिय हेट्ठिम-गुणण्णोण्ण[3]ब्भत्थरासिणा अंतिमच्छेदे गुणिदे पढमादि जाव चरिमगुणहाणि त्ति ताव दव्वपमा-णाणि होंति। ताणि सव्वगुणहाणीसु गुणहाणिफद्दयसलागघण[4]गुणवग्गणवग्गेण गुणिदवग्गण-विसेसमेत्ताणि सव्वत्थ सरिसाणि होंति। पुणो एदेसिं गुणगाररूवाणि पढमगुणहाणिप्पहुडि जाव चरिमगुणहाणि त्ति ताव चत्तारिरूवादिणवोत्तरकमगदंसाणि छरूवादिदुगुणं[5]-दुगुणकमगदच्छेदाणि भवंति ताव

८	०	४	४	९	९
	१६				

। एद पढमगुणहाणिप्पहुडि जाव चरिमगुणहाणि त्ति गुणिज्जमाण। पुणो एदस्स गुणगाररूवाणि एदाणि

४	१३	२२[6]	३१	४०	४९	५८	६८	७६	८५	९४	१०३
६	१२	२४	४८	९६	१९२	३८४	७६८	१५३६	३०७२	६१४४	१२२८८

।

पुणो एदेसिं मेलावणट्ठ दोसुत्तगाहा। तं जहा —

गुणित करनेपर उस उस गुणहानिमें अधिक द्रव्यका प्रमाण होता है। फिर इस अधिक द्रव्यको पहिले स्थूल रूपसे निकाले हुए सब गुणहानियोंके द्रव्योंमेंसे कम करते समय गुणकार होकर स्थित दो गुणहानियोंको विश्लेषित कर वहाके दो रूपोंसे अन्तिम अंशको गुणित करके व समान खण्ड करके उसे कम कर अधस्तन गुणकारकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे अन्तिम अंशको गुणित करनेपर प्रथम गुणहानिसे लेकर अन्तिम गुणहानि पर्यन्त द्रव्योंके प्रमाण प्राप्त होते हैं। वे सब द्रव्यप्रमाण समस्त गुणहानियोंमें गुणहानि-स्पर्धकशलाकाओंके घनसे गुणित वर्गणाके वर्गसे वर्गणाविशेषको गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतने मात्र होकर सर्वत्र समान होते हैं।

पुनः इनके गुणकारभूत अंक प्रथम गुणहानिसे लेकर अन्तिम गुणहानि तक चार रूपोंको आदि लेकर नौ-नौ अधिक क्रमसे जाते हुए अश तथा छहको आदि लेकर दूने दूने क्रमसे जाते हुए हार स्वरूप होते हैं। प्रथम गुणहानिको लेकर अन्तिम गुणहानि तक यह (मूलमें देखिये) गुणिज्य-मान राशि है। इसके गुणकार अंक ये हैं— $\frac{४}{६}$, $\frac{१३}{१२}$, $\frac{२२}{२४}$, $\frac{३१}{४८}$, $\frac{४०}{९६}$, $\frac{४९}{१९२}$, $\frac{५८}{३८४}$, $\frac{६७}{७६८}$, $\frac{७६}{१५३६}$, $\frac{८५}{३०७२}$, $\frac{९४}{६१४४}$, $\frac{१०३}{१२२८८}$। इनको मिलानेके लिये ये दो सूत्र गाथायें इस प्रकार हैं—

१ ताप्रतौ 'तम्मि तम्मि २ गुण' इति पाठ। २ अ आ काप्रतिषु 'ट्ठिदयोवगुणहाणीयो' इति पाठः। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'गुणोण्ण' इति पाठ। ४ ताप्रतौ 'सलागपु (घ) ण' इति पाठ। ५ प्रतिषु 'छरूवाणि दुगुण' इति पाठ। ६ ताप्रतौ $\frac{२१}{४४}$ इति पाठः।

भागं हरेज्ज[1]। केण ? पडिणा— पुव्विल्लपडिरासिठविदरासिणा। किंविसिट्ठेण ? आदिमच्छेदद्ध-गुणिदेणेत्ति वुत्ते[2] आदिमच्छेद छरूवाणि, तस्सद्धं तिण्णि, तेहि गुणिय भागे गहिदे सरिस-मवणिय लद्धं किंचूणसत्तिभागचत्तारिरूवाणि ताणि पुव्विल्लदव्वस्स गुणगारं ठविदे सव्व-गुणहाणीण दव्वं मिलिदूणागच्छदि। पुणो एदं तेरासियकमेण जहण्णफद्दयपमाणेण[3] कदे किंचूणछब्भागब्भहियफद्दयसलागदोवग्गमेत्त होदि। त च एद

९	९	१३/६

।

अहवा अणेण[4] लहुकरणविहाणेण जहासरूवमाणिज्जदे। तं जहा— पढमगुणहाणिदव्व पुव्वुत्तविहिणा जहासरूवेणाणिदे एत्तियं होदि

८	०/१६	४	४	९	९	९	२/३

।[5] पुणो एत्थतणदोरूवाणि एगगुणहाणिफद्दयसलागाओ एगफद्दय-वग्गणसलागाओ च अण्णोण्णं गुणिदे दोगुणहाणीयो होंति। ताओ वग्गणविसेसस्स गुणगारं[6] ठविदे एत्तिय होदि

८	०/१६	१६	४	९	९/३

। पुणो विदियगुणहाणिपढमादि-फद्दयाणमुप्पायणट्ठ पढमगुणहाणिपढमफद्दयद्धस्स ठविदगुण गाररूवाहियादिफद्दयसलागासु एगादिएगुत्तररूवाणि अवणिय गुणहाणिसलागगच्छसकलण-

---

करे ? 'पडिणा' अर्थात् पूर्वकी प्रतिराशि रूपसे स्थापित राशिसे। कैसी प्रतिराशिसे ? 'आदिमछेदद्धगुणिदेण' अर्थात् आदिम छेद छह अंक, उसके आधे तीन, उनसे गुणित करके भाग देनेपर समान राशिको कम करके कुछ कम तृतीय भाग सहित जो चार रूप प्राप्त होते हैं उनको पूर्व द्रव्यका गुणकार स्थापित करनेपर समस्त गुणहानियोंका द्रव्य मिलकर आता है। अब इसको त्रैराशिक क्रमसे जघन्य स्पर्धकके प्रमाणसे करनेपर वह कुछ कम छठे भागसे अधिक स्पर्धकशलाकाके दो वर्ग प्रमाण होता है। वह यह है (मूलमें देखिये)।

अथवा, इस लघुकरणविधानसे स्वरूपानुसार गुणहानिद्रव्यको निकालते हैं। वह इस प्रकार है— पूर्वोक्त विधिसे प्रथम गुणहानिके द्रव्यको स्वरूपानुसार निकालनेपर वह इतना होता है (मूलमें देखिये)। फिर यहांके दो रूपों, एक गुणहानिकी स्पर्धकशलाकाओं, तथा एक स्पर्धककी वर्गणाशलाकाओंको परस्पर गुणित करनेपर दो गुणहानिया होती हैं। उनको वर्गणाविशेषका गुणकार स्थापित करनेपर इतना होता है (मूलमें देखिये)। पुन द्वितीय गुणहानिके प्रथमादिक स्पर्धकोंको उत्पन्न करानेके लिये प्रथम गुणहानि सम्बन्धी प्रथम स्पर्धकके अर्ध भागके स्थापित गुणकार स्वरूप एक रूप अधिक दो रूप अधिक इत्यादि क्रमसे जानेवाली स्पर्धकशलाकाओंमेंसे एकको आदि लेकर उत्तरोत्तर एक एक अधिक रूपोंको घटा करके और गुणहानिशलाकाओंकी गच्छसंकलनाको

---

१ मप्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'हारेज्ज' इति पाठ। २ अ आ काप्रतिषु 'वुत्त' इति पाठ। ३ ताप्रतौ 'जहण्णत्तफद्दय' इति पाठ। ४ अ ताप्रत्यो 'अण्णेण' इति पाठ। ५ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का ताप्रतिषु

४	९	९	२/३

इति पाठ.। ६ ताप्रतौ 'गुणहाणि' इति पाठ।

माणिय पुणो एदम्मि पढमगुणहाणिसमासदव्वस्सद्धम्मि अवणिदे पढमगुणहाणिदव्वस्सद्धं होदि । तं चेदं

८	०	१६	४	९	९
	१६				६

। पुणो अवसेसं पि आणिज्जमाणे तग्गुणहाणिपढमवग्गणजीवपदेसपमाणेण कदे सादिरेगगुणहाणितिण्णिचदुब्भागपमाणं होदि । पुणो गुणहाणिफद्दयसलागाहि गुणिदे एत्तियं होदि

८	०	१६	२५	२
	६	२	४	

। पुणो पणुवीसरूवेसु एगरूवमवणिय पुध ताव ठवेदव्वं । पुणो विसिलेस करिय पुव्विल्लदव्वेण सह सरिसच्छेदं काऊण मेलाविदे विदियगुणहाणिसव्वदव्वमेत्तियं होदि

८	०	१६	४	९	०	१३
	१६					२४

।

पुणो तदियगुणहाणिदव्वे आणिज्जमाणे तदियगुणहाणिपढमादिफद्दयाणमुप्पायणट्ठं पढमगुणहाणिपढमफद्दयचउब्भागस्स ठविदगुणगारगुणहाणिफद्दयसलागदुगुणरूवाहियादिसु एगादिएगुत्तररूवाणि अवणिय पुणो एदासिं गुणहाणिफद्दयसलागगच्छसंकलणमाणिय पढमगुणहाणिसमासदव्वस्स चउब्भागमवणिदे अवसेसं पढमगुणहाणिदव्वस्स चउब्भागो होदि । तं चेदं

८	०	१६	४	९	९
	१६				१२

। अवसेसदव्वं पि आणिज्जमाणे तग्गुणहाणिपढमवग्गणजीवपदेसपमाणेण उवरिमजीवपदेसेसु कदेसु गुणहाणितिण्णिचदुब्भागसादिरेयपमाणं होदि । पुणो दुगुणफद्दयसलागाहि गुणिदे एत्तियं

लाकर फिर इसमेंसे प्रथम गुणहानि सम्बन्धी समासद्रव्यके अर्ध भागको घटा देनेपर प्रथम गुणहानिके द्रव्यका अर्ध भाग होता है। वह यह है — (मूलमें देखिये)। फिर शेषको भी निकालते समय उस गुणहानिकी प्रथम वर्गणाके जीवप्रदेशोंके प्रमाणसे करनेपर वह साधिक एक गुणहानिके तीन चतुर्थ भाग (¾) प्रमाण होता है। फिर उसे गुणहानिकी स्पर्धकशलाकाओंसे गुणित करनेपर इतना होता है (मूलमें देखिये)। पुनः पच्चीस रूपोंमेंसे एक रूपको कम करके पृथक् स्थापित करना चाहिये। फिर इसको विश्लेषित करके पहिलेके द्रव्यके साथ समीकरण करके मिलानेपर द्वितीय गुणहानिका सब द्रव्य इतना होता है (मूलमें देखिये)।

अब तृतीय गुणहानिके द्रव्यको लाते समय तृतीय गुणहानिके प्रथमादिक स्पर्धकोंको उत्पन्न करानेके लिये प्रथम गुणहानि सम्बन्धी प्रथम स्पर्धकके चतुर्थ भागके स्थापित गुणकार स्वरूप दूने दूने रूपोंसे अधिक आदि क्रमसे आनेवाली गुणहानिस्पर्धकशलाकाओंमेंसे एकको आदि लेकर एक एक अधिक रूपोंको कम करके फिर इनकी गुणहानिस्पर्धकशलाकाओं सम्बन्धी गच्छसंकलनाको लाकर प्रथम गुणहानि सम्बन्धी समासद्रव्यके चतुर्थ भागको कम करनेपर शेष रहा प्रथम गुणहानिके द्रव्यका चतुर्थ भाग होता है। वह यह है (मूलमें देखिये)। शेष द्रव्यको भी निकालते समय उस गुणहानि सम्बन्धी प्रथम वर्गणाके जीवप्रदेशोंके प्रमाणसे उपरिम जीव प्रदेशोंके करनेपर गुणहानिके तीन चतुर्थ भागसे कुछ अधिक होता है। फिर इसको

होदि पुणो

८	० / १६	१६ / ४	२५ / ४	९	२

। पुणो एत्थ पणुवीसरूवे रूवमवणिय पुध ट्ठविय अवसेसं विसिलेसं करिय तीहि रूवेहि अंतिमदोरूवाणि गुणिय पुव्विल्लदव्वेण सरिसछेदं कादूण मेलाविदे तदियगुणहाणिसव्वदव्वपमाणं होदि। तं च एदं

८	० / १६	१६	४	९	९	२२ / ४८

।

पुणो एदेण बीजपदेण जाव चरिमगुणहाणि त्ति ताव सव्वगुणहाणीणं दव्वपमाणं पुध पुध आणिज्जमाणे सव्वगुणहाणीणं गुणिज्जमाणं गुणहाणिफद्दयसलागवग्गगुणिदपढमगुणहाणिजहण्णफद्दयपमाणं। एदस्स गुणगाररूवाणि णवोत्तरसाणि दुगुणछेदाणि होदूण गच्छंति। पुणो सव्वगुणहाणिगुणगारे मेलाविज्जमाणे पढमगुणहाणिगुणगारतिभागरूवं हेट्ठुवरि चदुहि गुणिय तप्पहुडिसव्वगुणगारा ठवेदव्वा। ते च एदे

४ / १२	१३ / २४	२२ / ४८	३१ / ९६	४० / १९२	४९ / ३८४	५८ / ७६८	६७[2] / १५३६

। पुणो एदे[3] गुणगारे पुव्विल्लदोसुत्तगाहाहि मेलाविदे किंचूणछब्भागब्भहियदोरूवाणि आगच्छंति। पुणो फद्दयसलागवग्गगुणिदजहण्णफद्दयस्स गुणगारं ठविय पुव्व-

---

दुगुणी स्पर्धकशलाकाओंसे गुणित करनेपर इतना होता है (मूलमें देखिये)। पुनः यहां पच्चीस रूपोंमेंसे एक रूपको कम करके पृथक् स्थापित कर और शेषको विश्लेषित करके तीन रूपोंसे अन्तिम दो रूपोंको गुणित कर पहिलेके द्रव्यके समान खण्ड करके मिलानेपर तृतीय गुणहानिके सब द्रव्यका प्रमाण होता है। वह यह है (मूलमें देखिये)।

अब इस बीज पदसे अन्तिम गुणहानि पर्यन्त सब गुणहानियोंके द्रव्यप्रमाणको पृथक् पृथक् निकालते समय सब गुणहानियोंकी गुणिज्यमान राशि गुणहानिकी स्पर्धकशलाकाओंके वर्गसे गुणित प्रथम गुणहानिके जघन्य स्पर्धक प्रमाण है। इसके गुणकार रूप उत्तरोत्तर नौ नौ अधिक अंश व दुगुणे हार होकर जाते हैं। फिर सब गुणहानियोंके गुणकारको मिलाते समय प्रथम गुणहानि सम्बन्धी गुणकारभूत त्रिभाग रूपको नीचे ऊपर चारसे गुणित कर उसको आदि लेकर सब गुणकारोंको स्थापित करना चाहिये। वे ये हैं— $\frac{४}{१२}, \frac{१३}{२४}, \frac{२२}{४८}, \frac{३१}{९६}, \frac{४०}{१९२}, \frac{४९}{३८४}, \frac{५८}{७६८}, \frac{६७}{१५३६}$। अब इन गुणकारोंको पूर्वोक्त दो मूल गाथाओं द्वारा मिलानेपर कुछ कम छठे भागसे अधिक दो रूप आते हैं। पश्चात् स्पर्धकशलाकाओंके वर्गसे गुणित जघन्य स्पर्धकके गुणकारको

---

१ अ आ काप्रतिषु 'गुणिज्जमाण गुणहाणि' इति पाठ। २ ताप्रतौ $\frac{६७}{१५३५}$। ३ ताप्रतौ 'एदेण' इति पाठः।

भवणिदव्वाणि मेलाविय पक्खित्ते वि किंचूणरूवमागम्महियाणि चव रोरूवाणि गुणगार होंति । एवं पमाणपरूवणा समत्ता ।

संपहि अप्पाबहुगं वत्तइस्सामो— सव्वत्थोवा पढमाए वग्गणाए अविभागपडिच्छेदा । चरिमाए वग्गणाए अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । अथवा पदेसलागाणमसंखेज्जदिभागो । तं जहा— पढमवग्गणायाम ठविय एगवग्गेण गुणिदे पढमवग्गणा होदि । पुणो पढमवग्गणायामं किंचूणरूवण्णसंखेज्ज रासिणा खंडिदे तत्थेगखंडं चरिमवग्गणायामं होदि । तम्मि फद्दयसलागगुणिदजहण्णवग्गेण गुणिदे चरिमवग्गणा होदि । ताए पढमवग्गणाए भागे हिदाए किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासिणा ओवट्टिदफद्दयसलागाओ आगच्छंति । अपढम अचरिमासु वग्गणासु अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? पढमगुणहाणिफद्दयाणं अविभागपडिच्छेदेहिंतो चउत्थादिगुणहाणिफद्दयाविभागपडिच्छेदाणं सखेज्जभागहाणि संखेज्ज गुणहाणि असंखेज्जगुणहाणिसरूवेण अवट्ठाणाणुवलंभादो । अचरिमासु वग्गणासु अविभाग पडिच्छेदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पढमवग्गणमेत्तेण । अपढमासु वग्गणासु अविभाग

स्थापित कर उसमें पहिलेके घटाये हुए द्रव्योंको मिलाकर प्रक्षिप्त करनेपर भी कुछ कम छह मात्र अधिक दो रूप ही गुणकार होते हैं । इस प्रकार प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं— प्रथम वर्गणामें अविभागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं । अन्तिम वर्गणामें उनसे असंख्यातगुणे अविभागप्रतिच्छेद हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग है । अथवा वह स्पर्धकशलाकाओंके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । यथा— प्रथम वर्गणाके आयामको स्थापित कर उसे एक वर्गसे गुणित करनेपर प्रथम वर्गणा होती है । फिर प्रथम वर्गणाके आयामको कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशिसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण अन्तिम वर्गणाका आयाम होता है । इस स्पर्धकशलाकाओंसे गुणित जघन्य वर्ग गुणा करनेपर अन्तिम वर्गणा होती है । इसमें प्रथम वर्गणाका भाग देनेपर कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशिसे अपवर्तित स्पर्धकशलाकायें आती हैं । अप्रथम अचरम वर्गणाओंमें चरम वर्गणाके अवि भागप्रतिच्छेदोंसे असंख्यातगुणे अविभागप्रतिच्छेद होते हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग है क्योंकि प्रथम गुणहानि सम्बन्धी स्पर्धकोंके अविभाग प्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा चतुर्थादि गुणहानियों सम्बन्धी स्पर्धकोंके अविभागप्रतिच्छेदोंका संख्यात भागहानि संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानि रूपसे अवस्थान पाया जाता है । इनसे अचरम वर्गणाओंमें अविभागप्रतिच्छेद विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे वे अधिक हैं । प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे वे अधिक हैं । अप्रथम वर्गणाओंमें

पडिच्छेदा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? पढमवग्गणाए ऊणचरिमवग्गणमेत्तेण। सव्वासु वग्गणासु अविभागपडिच्छेदा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? पढमवग्गणमेत्तेण।

सव्वत्थोवा पढमफद्दयस्स जोगाविभागपडिच्छेदा। चरिमफद्दयजोगाविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। अपढम-अचरिमफद्दयाणं जोगाविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। अचरिम-फद्दएसु जोगाविभागपडिच्छेदा विसेसाहिया। अपढमफद्दयाणं जोगाविभागपडिच्छेदा विसे-साहिया। सव्वफद्दयाणं जोगाविभागपडिच्छेदा विसेसाहिया। एवं सुहुमणिगोदस्स जहण्ण-मुववादट्ठाणं[1] परूविदं।

एवमसंखेज्जाणि जोगट्ठाणाणि सेडीए असंखेज्जदिभाग-मेत्ताणि ॥ १८७ ॥

उववादजोगट्ठाणाणि चोद्दसण्णं जीवसमासाणं पुध पुध सेडीए असंखेज्जदिभाग-मेत्ताणि। तेसिं चेव एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि च सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। परिणामजोग-ट्ठाणाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति परूविदं होदि। एवं ठाणसंखापरूवणा समत्ता।

अणंतरोवणिधाए जहण्णए जोगट्ठाणे फद्दयाणि थोवाणि ॥

अविभागप्रतिच्छेद उनसे विशेष अधिक हैं। कितने प्रमाणसे अधिक हैं ? चरम वर्गणामेंसे प्रथम वर्गणाको कम करनेपर जो शेष रहे उतने मात्रसे वे अधिक हैं। उनसे सब वर्गणाओंमें अविभागप्रतिच्छेद विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे अधिक हैं ? प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे वे अधिक हैं।

प्रथम स्पर्धकके योगविभागप्रतिच्छेद सबमें स्तोक हैं। उनसे चरम स्पर्धकके योगाविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे अप्रथम-अचरम स्पर्धकोंके योगाविभाग-प्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे अचरम स्पर्धकोंमें योगाविभागप्रतिच्छेद विशेष अधिक हैं। उनसे अप्रथम स्पर्धकोंके योगाविभागप्रतिच्छेद विशेष अधिक हैं। उनसे सब स्पर्धकोंके योगाविभागप्रतिच्छेद विशेष अधिक हैं। इस प्रकार सूक्ष्म निगोद जीवके जघन्य उपपादस्थानकी प्ररूपणा की है।

इस प्रकार वे योगस्थान असंख्यात हैं जो श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं ॥१८७॥

चौदह जीवसमासोंके उपपादयोगस्थान पृथक् पृथक् श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं उनके ही एकान्तानुवृद्धियोगस्थान भी श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं, परिणामयोगस्थान भी श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं, यह भी इसीसे प्ररूपित होता है। इस प्रकार स्थानसंख्याप्ररूपणा समाप्त हुई।

अनन्तरोपनिधाके अनुसार जघन्य योगस्थानमें स्पर्धक स्तोक हैं ॥ १८८ ॥

---

१ का-ताप्रत्योः 'मुववाद ट्ठाणं' इति पाठः।

एसा अणंतरोवणिधा किमट्ठमागदा? एदाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजोगट्ठाणाणि किं विसेसाहियकमेण ट्ठिदाणि किं संखेज्जगुणकमेण किमसंखेज्जगुणकमेण किमणंतगुणकमेण ट्ठिदाणि त्ति पुच्छिदे एदेण कमेण ट्ठिदाणि त्ति जाणावणट्ठमणंतरोवणिधा आगदा। जहण्णए जोगट्ठाणे फद्दयाणि थोवाणि त्ति भणिदे एत्थ फद्दयसंखा किं चरिमफद्दयपमाणेण किं ठाणस्स दुचरिमफद्दयपमाणेण एवं गंतूण किं ठाणस्स जहण्णफद्दयपमाणेण किं जहासरूवेण ट्ठिदफद्दयपमाणेण घेप्पदि त्ति? ण ताव चरिमफद्दयपमाणेण दुचरिमादिफद्दयपमाणेण ण जहासरूवेण ट्ठिदफद्दयपमाणेण वा फद्दयसंखा घेप्पदे, किंतु जहण्णजोगट्ठाणजहण्णफद्दयपमाणेण फद्दयसंखा घेत्तव्वा। कधमेदं णव्वदे? जहण्णट्ठाणफद्दएहिंतो बिदियजोगट्ठाणफद्दयाणमण्णहा विसेसाहियत्ताणुववत्तीदो। जहण्णट्ठाणचरिमफद्दयपमाणेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेसु फद्दएसु जहण्णट्ठाणम्मि वड्ढिदेसु बिदियजोगट्ठाणं उप्पज्जदि त्ति किण्ण

शंका — यह अनन्तरोपनिधा किसलिये प्राप्त हुई है?

समाधान — श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र ये योगस्थान क्या विशेषाधिक क्रमसे स्थित हैं, क्या संख्यातगुणे क्रमसे स्थित हैं, क्या असंख्यातगुणे क्रमसे और क्या अनन्त गुणे क्रमसे स्थित हैं, ऐसा पूछनेपर — वे इस क्रमसे स्थित हैं इसके ज्ञापनार्थ अनन्तरोपनिधा प्राप्त हुई है।

शंका — जघन्य योगस्थानमें स्पर्धक स्तोक हैं ऐसा कहनेपर यहां स्पर्धक-संख्या क्या स्थान सम्बन्धी चरम स्पर्धकके प्रमाणसे, क्या द्विचरम स्पर्धकके प्रमाणसे इस प्रकार जाकर क्या स्थान सम्बन्धी जघन्य स्पर्धकके प्रमाणसे और क्या यथा-स्वरूपसे स्थित स्पर्धकके प्रमाणसे ग्रहण की जाती है?

समाधान — उक्त स्पर्धकसंख्या न चरम स्पर्धकके प्रमाणसे, न द्विचरम स्पर्धकके प्रमाणसे और न यथास्वरूपसे स्थित स्पर्धकके प्रमाणसे ही ग्रहण की जाती है, किन्तु वह जघन्य योगस्थान सम्बन्धी जघन्य स्पर्धकके प्रमाणसे ग्रहण की जाती है।

शंका — यह कैसे जाना जाता है?

समाधान — चूंकि जघन्य स्थान सम्बन्धी स्पर्धकोंकी अपेक्षा द्वितीय योगस्थान सम्बन्धी स्पर्धकोंके विशेषाधिकपना अन्यथा बन नहीं सकता अतः इसीसे जाना जाता है कि उक्त स्पर्धकसंख्या जघन्य योगस्थान सम्बन्धी जघन्य स्पर्धकके प्रमाणसे ग्रहण की गई है।

शंका — जघन्य स्थान सम्बन्धी चरम स्पर्धकके प्रमाणसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र स्पर्धकोंके जघन्य स्थानमें बढ़ जानेपर द्वितीय योगस्थान उत्पन्न होता है ऐसा क्यों नहीं ग्रहण करते?

---

१ [illegible] । अ-आ-का-ताप्रतिषु [illegible] इति पाठः।

पडिच्छेदा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? पढमवग्गणाए ऊणचरिमवग्गणमेत्तेण। सव्वासु वग्गणासु अविभागपडिच्छेदा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? पढमवग्गणमेत्तेण।

सव्वत्थोवा पढमफद्दयस्स जोगाविभागपडिच्छेदा। चरिमफद्दयजोगाविभागपडिच्छेदा असखेज्जगुणा। अपढम-अचरिमफद्दयाण जोगाविभागपडिच्छेदा असखेज्जगुणा। अचरिम-फद्दएसु जोगाविभागपडिच्छेदा विसेसाहिया। अपढमफद्दयाणं जोगाविभागपडिच्छेदा विसेसाहिया। सव्वफद्दयाणं जोगाविभागपडिच्छेदा विसेसाहिया। एव सुहुमणिगोदस्स जहण्ण-मुववादट्ठाण[1] परूविद।

एवमसंखेज्जाणि जोगट्ठाणाणि सेडीए असंखेज्जदिभाग-मेत्ताणि ॥ १८७ ॥

उववादजोगट्ठाणाणि चोद्दसण्ण जीवसमासाण पुध पुध सेडीए असखेज्जदिभाग-मेत्ताणि। तेसिं चेव एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि च सेडीए असखेज्जदिभागमेत्ताणि। परिणामजोग-ट्ठाणाणि सेडीए असखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति परूविद होदि। एव ठाणसंखापरूवणा समत्ता।

अणंतरोवणिधाए जहण्णए जोगट्ठाणे फद्दयाणि थोवाणि ॥

अविभागप्रतिच्छेद उनसे विशेष अधिक हैं। कितने प्रमाणसे अधिक हैं ? चरम वर्गणामेंसे प्रथम वर्गणाको कम करनेपर जो शेष रहे उतने मात्रसे वे अधिक हैं। उनसे सब वर्गणाओंमें अविभागप्रतिच्छेद विशेष अधिक हैं। कितने मात्रसे अधिक हैं ? प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे वे अधिक हैं।

प्रथम स्पर्धकके योगविभागप्रतिच्छेद सबमें स्तोक हैं। उनसे चरम स्पर्धकके योगाविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे अप्रथम अचरम स्पर्धकोंके योगाविभाग-प्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे अचरम स्पर्धकोंमें योगाविभागप्रतिच्छेद विशेष अधिक हैं। उनसे अप्रथम स्पर्धकोंके योगाविभागप्रतिच्छेद विशेष अधिक हैं। उनसे सब स्पर्धकोंके योगाविभागप्रतिच्छेद विशेष अधिक हैं। इस प्रकार सूक्ष्म निगोद जीवके जघन्य उपपादस्थानकी प्ररूपणा की है।

इस प्रकार वे योगस्थान असख्यात हैं जो श्रेणिके असख्यातवें भाग मात्र हैं ॥१८७॥

चौदह जीवसमासोंके उपपादयोगस्थान पृथक् पृथक् श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं, उनके ही एकान्तानुवृद्धियोगस्थान भी श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं, परिणामयोगस्थान भी श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं, यह भी इसीसे प्ररूपित होता है। इस प्रकार स्थानसंख्याप्ररूपणा समाप्त हुई।

अनन्तरोपनिधाके अनुसार जघन्य योगस्थानमें स्पर्धक स्तोक हैं ॥ १८८ ॥

णिम्मला दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा। जहण्णिया तेउक्काइयरासी असंखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। तेउक्काइयाणं कायट्ठिदी असंखेज्जगुणा। ओहिणिबद्ध खेत्तस्स अण्णोण्णगुणगारसलागाओ असंखेज्जगुणाओ। तस्सेव वग्गसलागा असंखेज्ज गुणा। तस्सेव अद्धच्छेदणया असंखेज्जगुणा। ओहिणाणस्स भेदा असंखेज्जगुणा। अज्झव साणाणं गुणगारसलागाओ असंखेज्जगुणाओ। तेसिं चेव वग्गसलागा असंखेज्जगुणा। तेसिं चेव छेदणा असंखेज्जगुणा। अज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि। णिगोदसरीराण मण्णोण्णगुणगारसलागाओ असंखेज्जगुणाओ। तेसिं वग्गसलागाओ असंखेज्जगुणाओ। तेसिं छेदणा असंखेज्जगुणा। तदो णिगोदसरीराणि असंखेज्जगुणाणि। णिगोदकायट्ठिदी असंखेज्जगुणा। अणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि। जोगाविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। एदे जोगाविभागपडिच्छेदा च परियम्मे वग्गसमुट्ठिदा त्ति परूविदा, एदेसु जोगाविभागपडिच्छेदेसु जोगगुणगारेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणोवट्टिदेसु जहण्ण जोगट्ठाणाविभागपडिच्छेदा होंति। ते वि कदजुम्मा। कुदो? जोगगुणगारस्स कदजुम्मत्तादो। जोगट्ठाणफद्दयसलागाओ वि कदजुम्माओ, अण्णहा जोगट्ठाणफद्दयाविभागपडिच्छेदाणं वग्ग

संख्यातगुणे हैं। उनसे जघन्य तेजकायिक राशि असंख्यातगुणी है। उससे वही उत्कृष्ट विशेष अधिक है। उससे तेजकायिकोंकी कायस्थिति असंख्यातगुणी है। उससे अवधिज्ञानके विषयभूत क्षेत्रकी अन्योन्यगुणकारशलाकायें असंख्यातगुणी हैं। उनसे उसकी ही वर्गशलाकायें असंख्यातगुणी हैं। उनसे उसके ही अर्धच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे अवधिज्ञानके भेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे अध्यवसानोंकी गुणकारशलाकायें असंख्यातगुणी हैं। उनसे उनकी ही वर्गशलाकायें असंख्यातगुणी हैं। उनसे उनके ही अर्धच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे अध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं। उनसे निगोदशरीरोंकी अन्योन्यगुणकारशलाकायें असंख्यातगुणी हैं। उनसे उनकी वर्गशलाकायें असंख्यातगुणी हैं। उनसे उनके अर्धच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे निगोदशरीर असंख्यातगुणे हैं। उनसे निगोदोंकी कायस्थिति असंख्यातगुणी है। उससे अनुभाग बन्धाध्यवसायस्थान असंख्यातगुणे हैं। उनसे योगाविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। ये योगाविभागप्रतिच्छेद परिकर्ममें वर्गसमुत्थित बतलाये गये हैं। इन योगाविभाग प्रतिच्छेदोंको पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र योगगुणकारसे अपवर्तित करनेपर जघन्य योगस्थानके अविभागप्रतिच्छेद होते हैं। वे भी कृतयुग्म हैं, क्योंकि, योग गुणकार कृतयुग्म है। योगस्थानकी स्पर्धकशलाकायें भी कृतयुग्म हैं, क्योंकि, इसके बिना योगस्थान सम्बन्धी स्पर्धकोंके अविभागप्रतिच्छेद वर्गसमुत्थित नहीं बन सकते।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'वग्गसदेण', ताप्रतौ 'वग्गसलाग' इति पाठः। २ अ-आप्रत्योः 'वग्गसदेण', का-ताप्रत्योः 'वग्गसलाग' इति पाठः।

घेप्पदे ? ण, जोगट्ठाणम्मि जहण्णेण उक्कड्डिज्जमाणे चरिमफद्दयादो असंखेज्जदिभागमेत्ताणि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजहण्णजोगट्ठाणजहण्णफद्दयाणि होंति त्ति गुरूवएसादो णव्वदे[1]। विदियजोगट्ठाणम्मि फद्दयविण्णासवड्ढी णत्थि दोसु वि ट्ठाणेसु फद्दयाणि सरिसाणि त्ति। तदो जहण्णजोगट्ठाणफद्दयाणि थोवाणि त्ति भणिदे जहण्णजोगट्ठाणं जहण्णफद्दयमाणेण कदे उवरिमजोगट्ठाणजहण्णफद्दएहिंतो थोवाणि फद्दयाणि होंति त्ति भणिदं होदि। जहण्ण-फद्दयाविभागपडिच्छेदेहि जहण्णजोगट्ठाणअविभागपडिच्छेदेसु भागे हिदेसु णिरग्गं होदूण सिज्झदि त्ति कधं णव्वदे ? जहण्णफद्दय-जहण्णजोगट्ठाणाविभागपडिच्छेदाणं कदजुम्मत्त-दंसणादो। कधं तेसिं कदजुम्मत्तं णव्वदे ? अप्पाबहुगदंडयादो। तं जहा— सव्वत्थोवा तेउकाइयाणमण्णोण्णगुणगारसलागाओ। तेउकाइयवग्गसलागाओ असंखेज्जगुणाओ। तेसिं-मद्धछेदणयसलागाओ संखेज्जगुणाओ। तेउकाइएसु जहण्णेण पवेसया जहण्णेण तत्तो णिग्गच्छमाणा च जीवा दो वि तुल्ला असंखेज्जगुणा। उक्कस्सिया पवेसणा उक्कस्सिया

समाधान— नहीं, क्योंकि, योगस्थानमें जघन्यसे उत्कर्षण होनेपर चरम स्पर्धककी अपेक्षा असंख्यातवें भाग मात्र होकर भी अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र जघन्य योगस्थान सम्बन्धी जघन्य स्पर्धक होते हैं, इस प्रकार गुरुके उपदेशसे जाना जाता है कि द्वितीय योगस्थानमें स्पर्धकविन्यासकी वृद्धि नहीं है, किन्तु दोनों ही स्थानोंमें स्पर्धक समान हैं। इसीलिये जघन्य योगस्थान सम्बन्धी स्पर्धक स्तोक हैं, ऐसा कहनेपर जघन्य योगस्थानको जघन्य स्पर्धकके प्रमाणसे करनेपर उपरिम योगस्थानोंके जघन्य स्पर्धकोंकी अपेक्षा वे स्तोक हैं, यह अभिप्राय है।

शंका— जघन्य स्पर्धक सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेदोंका जघन्य योगस्थानके अविभागप्रतिच्छेदोंमें भाग देनेपर निरग्र होकर सिद्ध होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— क्योंकि, जघन्य स्पर्धक और जघन्य योगस्थान सम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेदोंके कृतयुग्मपना देखा जाता है। अत इसीसे वह जाना जाता है।

शंका— उनका कृतयुग्मपना कैसे जाना जाता है ?

समाधान—वह अल्पबहुत्वदण्डकसे जाना जाता है। यथा— तेजकायिक जीवोंकी अन्योन्यगुणकारशलाकायें सबमें स्तोक हैं। उनसे तेजकायिक जीवोंकी वर्गशलाकायें असंख्यातगुणी हैं। उनसे उनकी अर्धच्छेदशलाकायें संख्यातगुणी हैं। तेजकायिक जीवोंमें जघन्यसे प्रविष्ट होनेवाले व उनमेंसे निकलनेवाले जीव दोनों ही तुल्य होकर असंख्यातगुणे हैं। उत्कर्षसे प्रवेश करनेवाले व उत्कर्षसे निकलनेवाले दोनों ही तुल्य होकर उनसे

---

१ अ-आप्रत्योः 'णव्वदे', क-मप्रत्योः 'णव्जदे', ताप्रतौ 'णव्व (घेप्प) दे' इति पाठ　२ अ-आ-काप्रतिषु 'ओगट्ठाणाणिविभाग' इति पाठ ।

णिग्गमा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा। जहण्णिया तेउक्काइयरासी असंखेज्जगुणा। सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया। तेउक्काइयाणं कायट्ठिदी असंखेज्जगुणा। ओहिणिबद्धखेत्तस्स अण्णोण्णगुणगारसलागाओ असंखेज्जगुणाओ। तस्सेव वग्गसलागा असंखेज्जगुणा। तस्सेव अद्धच्छेदणया असंखेज्जगुणा। ओहिणाणस्स भेदा असंखेज्जगुणा। अज्झवसाणाणं गुणगारसलागाओ असंखेज्जगुणाओ। तेसिं चेव वग्गसलागा असंखेज्जगुणा। तेसिं चेव छेदणा असंखेज्जगुणा। अज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि। णिगोदसरीराणं अण्णोण्णगुणगारसलागाओ असंखेज्जगुणाओ। तासिं वग्गसलागाओ असंखेज्जगुणाओ। तेसिं छेदणा असंखेज्जगुणा। तदो णिगोदसरीराणि असंखेज्जगुणाणि। णिगोदकायट्ठिदी असंखेज्जगुणा। अणुभागबंधज्झवसायट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि। जोगाविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा। एदे जोगाविभागपडिच्छेदा च परियम्मे वग्गसमुट्ठिदा त्ति परूविदा, एदेसु जोगाविभागपडिच्छेदेसु जोगगुणगारेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणोवट्टिदेसु जहण्ण जोगट्ठाणाविभागपडिच्छेदा होंति। ते वि कदजुम्मा। कुदो? जोगगुणगारस्स कदजुम्मत्तादो। जोगट्ठाणफद्दयसलागाओ वि कदजुम्माओ, अण्णहा जोगट्ठाणफद्दयाविभागपडिच्छेदाण वग्ग

संख्यातगुणे हैं। उनसे जघन्य तेजस्कायिक राशि असंख्यातगुणी है। उससे वही उत्कृष्ट विशेष अधिक है। उससे तेजस्कायिकोंकी कायस्थिति असंख्यातगुणी है। उससे अवधिज्ञानके विषयभूत क्षेत्रकी अन्योन्यगुणकारशलाकायें असंख्यातगुणी हैं। उनसे उसकी ही वर्गशलाकायें असंख्यातगुणी हैं। उनसे उसके ही अर्धच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे अवधिज्ञानके भेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे अध्यवसानोंकी गुणकारशलाकायें असंख्यातगुणी हैं। उनसे उनकी ही वर्गशलाकायें असंख्यातगुणी हैं। उनसे उनके ही अर्धच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे अध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं। उनसे निगोदशरीरोंकी अन्योन्यगुणकारशलाकायें असंख्यातगुणी हैं। उनसे उनकी वर्गशलाकायें असंख्यातगुणी हैं। उनसे उनके अर्धच्छेद असंख्यातगुणे हैं। उनसे निगोदशरीर असंख्यातगुणे हैं। उनसे निगोदोंकी कायस्थिति असंख्यातगुणी है। उससे अनुभागबन्धाध्यवसायस्थान असंख्यातगुणे हैं। उनसे योगाविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं। ये योगाविभागप्रतिच्छेद परिकर्ममें वर्गसमुत्थित बतलाये गये हैं। इन योगाविभागप्रतिच्छेदोंको पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र योगगुणकारसे अपवर्तित करनेपर जघन्य योगस्थानके अविभागप्रतिच्छेद होते हैं। वे भी कृतयुग्म हैं, क्योंकि, योग गुणकार कृतयुग्म है। योगस्थानकी स्पर्धकशलाकायें भी कृतयुग्म हैं, क्योंकि, इसके बिना योगस्थान सम्बन्धी स्पर्धकोंके अविभागप्रतिच्छेद वर्गसमुत्थित नहीं बन सकते।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'वग्गखंध', ताप्रतौ 'वग्गखंध' इति पाठः। २ अ-आप्रत्योः 'वग्गखंधा', क-ताप्रत्योः 'वग्गखंधा' इति पाठः।

समुट्ठिदत्ताणुववत्तीदो त्ति । एत्थ किं जोगट्ठाणाणि बहुवाणि आहो एगफद्दयवग्गणाओ त्ति पुच्छिदे जोगट्ठाणाणि थोवाणि । एयफद्दयवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । कधमेदं णव्वदे ? अप्पाबहुगवयणादो । तं जहा— सव्वत्थोवाणि जोगट्ठाणाणि । एयफद्दयवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । अंतर-णिरंतरद्धाणं[1] असंखेज्जगुणं । फद्दयाणि विसेसाहियाणि एगरूवेण । णाणाफद्दयवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । जीवपदेसा असंखेज्जगुणा । अविभागपडिच्छेदा असंखेज्जगुणा त्ति ।

बिदिए जोगट्ठाणे फद्दयाणि विसेसाहियाणि ॥ १८९ ॥

जहण्णजोगट्ठाणपक्खेवभागहारेण सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तेण कदजुम्मेण जहण्ण जोगट्ठाणजहण्णफद्दएसु ओवट्टिदेसु एगो जोगपक्खेवो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्त-जहण्णफद्दयपमाणो वड्ढिहाणीणमभावेण अवट्ठिदो आगच्छदि । एदम्हि पक्खेवे जहण्णट्ठाणं पडिरासिय पक्खित्ते बिदियजोगट्ठाणं होदि । तेण पढमजोगट्ठाणफद्दएहिंतो बिदियजोगट्ठाण-फद्दयाणि विसेसाहियाणि त्ति वुत्तं । एदेहि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजहण्णफद्दएहि चरिमफद्दयादो उवरि अण्णमपुव्वं फद्दयं[2] ण उप्पज्जदि, चरिमफद्दयाविभागपडिच्छेदेहिंतो

यहां क्या योगस्थान बहुत हैं या एक स्पर्धककी वर्गणायें बहुत हैं, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं कि योगस्थान स्तोक हैं । उनसे एक स्पर्धककी वर्गणायें असंख्यातगुणी हैं ।

शंका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— वह अल्पबहुत्वके कथनसे जाना जाता है । यथा— योगस्थान सबसे स्तोक हैं । उनसे एक स्पर्धककी वर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । उनसे अन्तर-निरन्तरध्वान असंख्यातगुणा है । उनसे स्पर्धक एक संख्यासे विशेष अधिक हैं । उनसे नाना स्पर्धकवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । उनसे जीवप्रदेश असंख्यातगुणे हैं । उनसे अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हैं ।

दूसरे योगस्थानमें स्पर्धक विशेष अधिक हैं ॥ १८९ ॥

जघन्य योगस्थान सम्बन्धी प्रक्षेपभागहारका जो कि श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण व कृतयुग्म है, जघन्य स्पर्धकोंमें भाग देनेपर अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र जघन्य स्पर्धक प्रमाण एक योगप्रक्षेप आता है । यह योगप्रक्षेप वृद्धि व हानिका अभाव होनेसे अवस्थित है । इस प्रक्षेपमें जघन्य स्थानको प्रतिराशि करके मिलानेपर द्वितीय योग-स्थान होता है । इसीलिये प्रथम योगस्थानके स्पर्धकोंसे द्वितीय योगस्थानके स्पर्धक विशेष अधिक हैं, ऐसा कहा गया है । इन अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र जघन्य स्पर्धकोंसे चरम स्पर्धकसे आगे अपूर्व स्पर्धक नहीं उत्पन्न होता, क्योंकि, चरम स्पर्धक-के अविभागप्रतिच्छेदोंसे प्रक्षेपके अविभागप्रतिच्छेद असंख्यातगुणे हीन पाये जाते हैं ।

---

१ प्रतिषु 'अंतरणिरंतरद्धाए' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'अण्णमपुव्वफद्दयं' इति पाठः ।

पक्खेवाविभागपडिच्छेदाणमसंखेज्जगुणहीणत्तुवलंभादो । तेणेदे पक्खेवाविभागपडिच्छेदा लोगमेत्तजीवपदेसेसु जहासरूवेण विहंजिदूण[1] पदंति त्ति[2] घेत्तव्वं । एत्थ पक्खेवविहंजणं वुच्चदे—

प्रक्षेपकसंक्षेपेण विभक्ते यद्धनं समुपलब्धम् ।
प्रक्षेपास्तेन गुणा प्रक्षेपसमानि खण्डानि[3] ॥ २५ ॥

एदेण सुत्तेण पक्खेवविभागे भण्णमाणे एत्थ पढमफद्दयसव्ववग्गणजीवपदेसेसु पुध पुध एक्केण गुणिय, पुणो बिदियफद्दयवग्गणजीवपदेसु पुध पुध दोहि गुणिय, तदियफद्दयवग्गणजीवपदेसेसु पुध पुध तीहि गुणिय, एवमेगुत्तरादिकमेण गुणेदव्वं जाव चरिमफद्दयवग्गणजीवपदेसा त्ति । ते सव्वे जीवपदेसे मेलाविय पुणो तेहि एगपक्खेवाविभागपडिच्छेदेसु ओवट्टिदेसु जहण्णजोगट्ठाणजहण्णफद्दयाविभागपडिच्छेदाणमसंखेज्जदिभागमेत्ता असंखेज्जलोगाविभागपडिच्छेदा लब्भंति । एदं लद्धं जहण्णजोगट्ठाणवग्गणमेत्तमुवरुवरि पडिरासिय तत्थ पढमरासिं जहण्णफद्दयजहण्णवग्गणजीवपदेसेहि गुणिद पडिरासिदजहण्णट्ठाणस्स

इसलिये ये प्रक्षेपअविभागप्रतिच्छेद यथास्वरूपसे लोक मात्र जीवप्रदेशोंमें विभक्त होकर गिरते हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिये । यहां प्रक्षेपविभाजनका कथन करते हैं—

किसी एक राशिके विवक्षित राशि प्रमाण खण्ड करनेके लिये प्रक्षेपोंको जोड़ कर उसका उक्त राशिमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उससे प्रक्षेपोंको गुणित करनेपर प्रक्षेपोंके समान खण्ड होते हैं ॥ २५ ॥

इस सूत्रसे प्रक्षेपविभागके करते समय यहां प्रथम स्पर्धक सम्बन्धी सब वर्गणाओंके जीवप्रदेशोंको पृथक् पृथक् एकसे गुणित कर, फिर द्वितीय स्पर्धक सम्बन्धी वर्गणाओंके जीवप्रदेशोंको पृथक् पृथक् दोसे गुणित करके तृतीय स्पर्धक सम्बन्धी वर्गणाओंके जीवप्रदेशोंको पृथक् पृथक् तीनसे गुणित करके इस प्रकार उत्तरोत्तर एक अधिक क्रमसे अन्तिम स्पर्धक सम्बन्धी वर्गणाओंके जीवप्रदेशों तक गुणित करना चाहिये । इन सब जीवप्रदेशोंको मिलाकर फिर उनके द्वारा एक प्रक्षेप सम्बन्धी अविभाग प्रतिच्छेदोंको अपवर्तित करनेपर जघन्य योगस्थान सम्बन्धी जघन्य स्पर्धकके अविभागप्रतिच्छेदोंके असंख्यातवें भाग मात्र असंख्यात लोक प्रमाण अविभागप्रतिच्छेद प्राप्त होते हैं । जघन्य योगस्थानकी वर्गणा मात्र इस लब्धको आगे आगे प्रतिराशि करके उनमें प्रथम राशिको जघन्य स्पर्धक सम्बन्धी जघन्य वर्गणाके जीवप्रदेशोंसे गुणित कर प्रतिराशिभूत जघन्य स्थानके जघन्य स्पर्धक सम्बन्धी जघन्य वर्गणाके

---

१ अ-आप्रत्योः 'विहंजिदूण' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'पदंति (पडंति) त्ति' इति पाठः । ३ ष. खं. पु. १ पृ. १२८. ४ ताप्रतौ 'चरिमफद्दयजीव' इति पाठः । ५ अ-आप्रत्योः 'जहण्णट्ठाणस्से' इति पाठः । ६ ताप्रतौ 'मेत्तुवरि पडिरासिय' इति पाठः । ७ अ-आ-ताप्रतिषु 'गुणिदपडिरासिद' इति पाठः ।

जहण्णफद्दयजहण्णवग्गणाए वग्गेसु समखंड कादूण दिण्णे बिदियट्ठाणपढमफद्दयस्स जहण्ण-वग्गणा होदि। बिदियरासिं बिदियवग्गणजीवपदेसेहि गुणिय पडिरासिदजहण्णट्ठाणस्स बिदियवग्गणवग्गाण समखंड कादूण दिण्णे बिदियठाणस्स बिदियवग्गणमुप्पज्जदि। एदेण विहाणेण बिदियट्ठाणसव्ववग्गणाओ उप्पाएदव्वाओ। णवरि बिदियफद्दयट्ठिदपडिरासीओ दुगुणिय गुणेदव्वाओ। एवमुवरि फद्दयं पडि रूवुत्तरकमेण गुणणकिरिया कायव्वा। एव कदे बिदियजोगट्ठाणमुप्पण्णं होदि। एत्तियाणं जोगाविभागपडिच्छेदाणं कुदो वड्ढी? अण्णेसिं जीवाणं समयं पडि ढुक्कमाणणोकम्मादो वीरियंतरायक्खओवसमादो च।

तदिए जोगट्ठाणे फद्दयाणि विसेसाहियाणि ॥ १९० ॥

एत्थ विसेसो पुव्विल्लपक्खेवो चेव। एदम्हि पक्खेवे बिदियजोगट्ठाण पडिरासिय पक्खित्ते तदियजोगट्ठाण होदि। एत्थ वि पक्खेवो पुव्व व विरलेदूण विहंजिय सव्व-वग्गणाणं दादव्वो।

एवं विसेसाहियाणि विसेसाहियाणि जाव उक्कस्सट्ठाणेत्ति ॥

एवमुप्पण्णुप्पण्णजोगट्ठाणं पडिरासिय अवट्ठिदपक्खेवं पक्खिविय सेडीए असखेज्जदि-

---

वर्गोंको समखण्ड करके देनेपर द्वितीय स्थान सम्बन्धी प्रथम स्पर्धककी जघन्य वर्गणा होती है। द्वितीय राशिको द्वितीय वर्गणाके जीवप्रदेशोंसे गुणित कर प्रतिराशि-भूत जघन्य स्थान सम्बन्धी द्वितीय वर्गणाके वर्गोंको समखण्ड करके देनेपर द्वितीय स्थानकी द्वितीय वर्गणा उत्पन्न होती है। इस विधानसे द्वितीय स्थानकी सब वर्गणाओंको उत्पन्न कराना चाहिये। विशेष इतना है कि द्वितीय स्पर्धक सम्बन्धी प्रतिराशियोंको दुगुणित कर गुणित करना चाहिये। इसी प्रकार आगे प्रत्येक स्पर्धकके एक एक अधिकताके क्रमसे गुणन क्रिया करना चाहिये। इस प्रकार करनेपर द्वितीय योगस्थान उत्पन्न होता है।

शंका— इतने मात्र योगाविभागप्रतिच्छेदोंकी वृद्धि किस कारणसे होती है?

समाधान— अन्य जीवोंके प्रतिसमय आनेवाले नोकर्म और वीर्यान्तरायके क्षयोपशमसे उक्त वृद्धि होती है।

तृतीय स्थानमें स्पर्धक विशेष अधिक होते हैं ॥ १९० ॥

यहां विशेष पूर्वोक्त प्रक्षेप ही है। इस प्रक्षेपको द्वितीय योगस्थानको प्रति-राशि करके उसमें मिलानेपर तृतीय योगस्थान होता है। यहां भी प्रक्षेपको पहिलेके ही समान विरलित करके विभाजित कर सब वर्गणाओंको देना चाहिये।

इस प्रकार उत्कृष्ट स्थान तक वे उत्तरोत्तर विशेष अधिक विशेष अधिक होते गये हैं ॥ १९१ ॥

इस प्रकार उत्तरोत्तर उत्पन्न हुए योगस्थानको प्रतिराशि करके उसमें अव-स्थित प्रक्षेपको मिलाकर उत्कृष्ट योगस्थानके उत्पन्न होने तक श्रेणिके असंख्यातवें

मागमेत्तजोगट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि जाव उक्कस्सजोगट्ठाणमुप्पण्णेत्ति । एवं पक्खेवेसु अवट्ठिदकमेण वड्ढमाणेसु केत्तियाणि जोगट्ठाणाणि गंतूण एगमपुव्वफद्दयं होदि त्ति पुच्छिदे सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि जोगट्ठाणाणि गंतूणुप्पज्जदि, साहियचरिमजोगफद्दयमेत्त-वड्ढीए विणा अपुव्वफद्दयाणुप्पत्तीदो । चरिमफद्दए च जोगपक्खेवा सेडीए असंखेज्जदिभाग-मेत्ता अत्थि, एगजोगपक्खेवेण चरिमफद्दए भागे हिदे सेडीए असंखेज्जदिभागुवलंभादो । तेण तप्पाओग्गसेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तपक्खेवेसु वड्ढिदेसु तत्थ पुव्विल्लफद्दएहिंतो रूवाहियफद्दयाणं चरिमफद्दयम्मि जत्तिया जीवपदेसा अत्थि तत्तियमेत्तअणंतरहेट्ठिमफद्दयवग्गणे वड्ढिदपक्खेवेहिंतो घेत्तूण उवरि जहाकमेण ठवेदूण पुणो चरिमफद्दयजीवपदेसमेत्ते चेव गहणट्ठाणगहणवग्गे तत्तो घेत्तूण तत्थेव जहाकमेण पक्खिविय सेसं पुण्णं च असंखेज्ज-लोगेण खंडिय उदूमणिदट्ठाणफद्दयवग्गणजीवपदेसेहि पुध पुध गुणिय इच्छिदवग्गणजीव-पदेसाणं समखंडं कादूण दिण्णे अणिदट्ठाणमुप्पज्जदि त्ति घेत्तव्वं । एत्तो प्पहुडि उवरि एगेगपक्खेवेसु वड्ढमाणेसु फद्दयाणि अवट्ठिदाणि चेव होदूण सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्त-

---

भाग मात्र योगस्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये ।

शंका — इस प्रकार अवस्थितक्रमसे प्रक्षेपोंकी वृद्धि होनेपर कितने योगस्थान जाकर एक अपूर्व स्पर्धक होता है ?

समाधान — ऐसी शंका होनेपर उत्तर देते हैं कि वह श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थान जाकर उत्पन्न होता है क्योंकि साधिक चरम योगस्पर्धक मात्र वृद्धिके बिना अपूर्व स्पर्धक उत्पन्न नहीं होता । चरम स्पर्धकमें योगप्रक्षेप श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं क्योंकि एक योगप्रक्षेपका चरम स्पर्धकमें भाग देनेपर श्रेणिका असंख्यातवां भाग पाया जाता है । इस कारण तत्प्रायोग्य श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण प्रक्षेपोंकी वृद्धि हो जानेपर वहां पूर्वके स्पर्धकोंकी अपेक्षा एक अधिक स्पर्धकोंके अन्तिम स्पर्धकमें जितने जीवप्रदेश हैं उतने मात्र अनन्तर अधस्तन स्पर्धकके वर्गोंको वृद्धिप्राप्त प्रक्षेपोंमेंसे ग्रहण करके ऊपर यथाक्रमसे स्थापित कर फिर उनमेंसे चरम स्पर्धकके जीवप्रदेशोंके बराबर ही ग्रहण स्थान सम्बन्धी ग्रहण वर्गोंको ग्रहण करके उसमें ही यथाक्रमसे मिलाकर शेषको पहिलेके समान ही असंख्यात लोकसे खण्डित करनेपर जो प्राप्त हो उसको विवक्षित स्थान सम्बन्धी स्पर्धककी वर्गणाओंके जीवप्रदेशोंसे पृथक् पृथक् गुणित करके इच्छित वर्गणा के जीवप्रदेशोंको समखण्ड करके देनेपर विवक्षित स्थान उत्पन्न होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिये । यहांसे आगे एक एक प्रक्षेपके बढ़नेपर स्पर्धक अवस्थित ही होकर श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र स्थान उत्पन्न होते हैं । फिर इस प्रकार अपूर्व

---

१ अ-आ-काप्रतिषु पढिद इति पाठः ।

ट्ठाणाणि समुप्पज्जंति । पुणो एवमपुव्वफद्दयमुप्पज्जदि । एव णेयव्वं जाव चरिमजोगट्ठाणेत्ति । |१|२|३|४|५|६|७|८|९|१०|११|१२|१३|१४|१५| ।

सपहि एवमेगादिएगुत्तरकमेण जहण्णफद्दयसलागाओ ठविय संकलणसुत्तकमेण मेलाविय |१२०| जहण्णट्ठाणजहण्णफद्दयसलागाणं पमाणं किण्ण परूविदं ? ण एस दोसो, एदासिं फद्दयसलागाणमसंखेज्जदिभागमेत्ताण चेव जहण्णट्ठाणम्मि जहण्णफद्दयसलागाणमुवलंभादो । तं कधं णव्वदे ? पढमगुणहाणिअविभागपडिच्छेदेहिंतो चउत्थादिगुणहाणिअविभागपडिच्छेदाण संखेज्जभागहीणादिकमेण गमणदंसणादो । तम्हा जहण्णट्ठाणम्मि तप्पाओग्गसेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तजहण्णफद्दयाणि अत्थि त्ति घेत्तव्वं ।

विसेसो पुण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि फद्दयाणि ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो, पुव्वं परूविदत्तादो । एवमणंतरोवणिधा समत्ता ।

परंपरोवणिधाए जहण्णजोगट्ठाणफद्दएहिंतो तदो सेडीए असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणवड्ढिदा[1] ॥ १९३ ॥

स्पर्धक उत्पन्न होता है । इस प्रकार आन्तिम योगस्थान तक ले जाना चाहिये ।

शंका— अब १+२+३+४+५+६+७+८+९+१०+११+१२+१३+१४+१५ इस प्रकार एकको आदि लेकर एक अधिक क्रमसे जघन्य स्पर्धकशलाकाओंको स्थापित कर संकलनसूत्रके अनुसार मिलाकर ($\frac{१५+१६}{२} \times १५ = १२०$) जघन्य स्थान सम्बन्धी जघन्य स्पर्धककी शलाकाओंका प्रमाण क्यों नहीं बतलाया ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इन स्पर्धकशलाकाओंके असंख्यातवें भाग मात्र ही जघन्य स्पर्धकशलाकायें जघन्य स्थानमें पायी जाती हैं ।

शंका— वह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— चूंकि प्रथम गुणहानिके अविभागप्रतिच्छेदोंसे चतुर्थ आदि गुणहानियोंके अविभागप्रतिच्छेदोंका संख्यातभाग हीन आदिके क्रमसे गमन देखा जाता है, अत एव इसीसे उसका परिज्ञान हो जाता है ।

इसीलिये जघन्य स्थानमें तत्प्रायोग्य श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र जघन्य स्पर्धक हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

विशेषका प्रमाण अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र स्पर्धक हैं ॥ १९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, क्योंकि, पहिले उसकी प्ररूपणा की जा चुकी है । इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

परम्परोपनिधाके अनुसार जघन्य योगस्थान सम्बन्धी स्पर्धकोंकी अपेक्षा उससे श्रेणिके असंख्यातवें भाग स्थान जाकर वे दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते हैं ॥१९३॥

१ सेढिअसंखियभागं गंतुं गंतुं हवंति दुगुणाई । पल्लासंखियभागो णाणागुणहाणिठाणाणि ॥ क. प्र. १, १०

एसा परंपरोवणिधा किमट्ठमागदा ? एवं पक्खेवुत्तरकमेण सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु जोगट्ठाणेसु समुप्पण्णेसु किं जहण्णजोगट्ठाणादो उक्कस्सजोगट्ठाणं विसेसाहियं संखेज्जगुणं असंखेज्जगुणं वेत्ति पुच्छिदे असंखेज्जगुणमिदि जाणावणट्ठमागदा। तं जहा— जहण्णजोगट्ठाणपक्खेवभागहारं सेडीए असंखेज्जदिभागं विरलेदूण जहण्णजोगट्ठाणं समखंडं कादूण दिण्णे विरलणरूवं पडि एगजोगपक्खेवपमाणं पावदि। पुणो तत्थ एगपक्खेवं घेत्तूण जहण्णट्ठाणं पडिरासिय पक्खित्ते[1] बिदियट्ठाणं होदि। बिदियपक्खेवं घेत्तूण बिदियट्ठाणं पडिरासिय पक्खित्ते तदियजोगट्ठाणं होदि। पुणो तदियपक्खेवं घेत्तूण तदियजोगट्ठाणं पडिरासिय पक्खित्ते चउत्थजोगट्ठाणं होदि। एवं णेदव्वं जाव विरलणमेत्तपक्खेवा सव्वे पविट्ठा त्ति। ताधे दुगुणवड्ढिट्ठाणमुप्पज्जदि।

[2]एवं दुगुणवड्ढिदा दुगुणवड्ढिदा जाव उक्कस्सजोगट्ठाणे त्ति ॥

पुणो पुव्विल्लदुगुणवड्ढिजोगट्ठाणपक्खेवभागहारं जहण्णजोगट्ठाणपक्खेवभागहारादो

शंका— यह परम्परोपनिधा किसलिये प्राप्त हुई है ?

समाधान— उक्त विधिसे प्रक्षेप अधिक क्रमसे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र योगस्थानोंके उत्पन्न होनेपर 'उत्कृष्ट योगस्थान क्या जघन्य योगस्थानकी अपेक्षा विशेष अधिक है, संख्यातगुणा है अथवा असंख्यातगुणा है' ऐसा पूछनेपर वह असंख्यातगुणा है इस बातके ज्ञापनार्थ परम्परोपनिधा प्राप्त हुई है। वह इस प्रकारसे—

श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण जघन्य योगस्थानके प्रक्षेपभागहारका विरलन कर जघन्य योगस्थानको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक विरलनरूपके प्रति एक योगप्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है। अब उनमेंसे एक प्रक्षेपको ग्रहण कर जघन्य योगस्थानको प्रतिराशि करके उसमें मिला देनेपर द्वितीय स्थान होता है। द्वितीय प्रक्षेपको ग्रहण कर द्वितीय स्थानको प्रतिराशि करके उसमें मिला देनेपर तृतीय योगस्थान होता है। पश्चात् तृतीय प्रक्षेपको ग्रहण कर तृतीय योगस्थानको प्रतिराशि करके उसमें मिला देनेपर चतुर्थ योगस्थान होता है। इस प्रकार विरलन मात्र सब प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होने तक ले जाना चाहिये। तब दुगुणी वृद्धिका स्थान उत्पन्न होता है।

इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थान तक वे दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते चले जाते हैं ॥ १९४ ॥

अब जघन्य योगस्थानके प्रक्षेपभागहारसे दुगुणे पूर्वोक्त दुगुणवृद्धि युक्त

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'पडिरासियपक्खित्ते' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु नास्य स्वतन्त्ररूपेण निर्देशो भिन्न सूत्रत्वेन।

दुगुणं विरलिय दुगुणवड्ढिजोगट्ठाणं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एगेगपक्खेवो पावदि । ते घेत्तूण उप्पण्णुप्पण्णजोगट्ठाण पडिरासिय कमेण पक्खित्ते पुव्विल्लद्धाणादो दुगुणमद्धाणं गंतूण चदुग्गुणवड्ढी उप्पज्जदि । पुणो जहण्णजोगट्ठाणपक्खेवभागहारं चदुगुणं विरलिय चदुगुणजोगट्ठाण समखंड करिय दिण्णे रूव पडि एगेगपक्खेवो पावदि । पुणो एदे घेत्तूण पुव्व व पक्खित्ते चदुग्गुणमद्धाण गतूण अट्ठगुणवड्ढिजोगट्ठाणमुप्पज्जदि । एवं णेदव्व जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेत्ति । गुणहाणिअद्धाणपमाणजाणावणट्ठं णाणागुणहाणिसलागाण पमाणपरूवणट्ठं च उत्तरसुत्त भणदि—

एगजोगदुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतरं सेडीए असंखेज्जदिभागो, णाणाजोगदुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १९५ ॥

एत्थ ताव गुणहाणिअद्धाणपमाणाणयणविहाण वुच्चदे । तं जहा— एगादिदुगुण-दुगुणकमेण णाणागुणहाणिसलागमेत्तायामेण ट्ठिदरूवाण | १ | २ | ४ | ८ | १६ | ३२ | ६४ | १२८ | २५६ | ५१२ | १०२४ | २०४८ | ४०९६ | सव्वसमासो एत्तियो होदि | ८१९१ | । एदेण जोगट्ठाणद्धाणे | ६५५२८ | भागे हिदे पढमगुणहाणिअद्धाण सेडीए

योगस्थानके प्रक्षेपभागहारका विरलन करके दुगुणी वृद्धि युक्त योगस्थानको समखण्ड करके देनेपर रूपके प्रति एक एक प्रक्षेप प्राप्त होता है । उनको ग्रहण कर उत्तरोत्तर उत्पन्न हुए योगस्थानको प्रतिराशि करके क्रमसे उसमें मिलानेपर पूर्व स्थानसे दुगुणा अध्वान जाकर चतुर्गुणी वृद्धि उत्पन्न होती है । पश्चात् चतुर्गुणित जघन्य योगस्थानके प्रक्षेपभागहारका विरलन करके चतुर्गुणित योगस्थानको समखण्ड करके देनेपर रूपके प्रति एक एक प्रक्षेप प्राप्त होता है । पश्चात् इनको ग्रहण कर पूर्वके ही समान मिलानेपर चौगुणा अध्वान जाकर अठगुणी वृद्धि युक्त योगस्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थान तक ले जाना चाहिये । गुणहानिअध्वानप्रमाणके ज्ञापनार्थ और नानागुणहानिशलाकाओंके प्रमाणके प्ररूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

एक-योग-दुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण और नाना-योग-दुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ १९५ ॥

यहां पहले गुणहानिअध्वानके प्रमाणके लानेका विधान कहते हैं । वह इस प्रकार है— एकको आदि लेकर दुगुणे दुगुणे क्रमसे नानागुणहानिशलाका मात्र आयामसे स्थित १ + २ + ४ + ८ + १६ + ३२ + ६४ + १२८ + २५६ + ५१२ + १०२४ + २०४८ + ४०९६ रूपोंका सर्वयोग ८१९१ इतना होता है । इसका योगस्थानाध्वानमें भाग देनेपर (६५५२८ ÷ ८१९१ = ८) प्रथम गुणहानिका अध्वान श्रेणिके असंख्यातवें भाग आता है ।

असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । एदं ठविय पुव्विल्लदुगुण-दुगुणगदरूवेहि गुणिदे तदियस्स गुणहाणिट्ठाणंतरमागच्छदि । संपहि गुणहाणिसलागासु आणिज्जमाणासु पढमगुणहाणिणा [८] जोगट्ठाणद्धाण खंडिय लद्ध रूवाहियं काऊण अद्धच्छेदणए कदे जत्तियाओ[1] अद्ध-च्छेदणसलागाओ तत्तियमेत्ताणि णाणागुणहाणिट्ठाणंतराणि । एत्थ अप्पाबहुअपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णाणाजोगदुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि । एगजोगदुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ १९९ ॥

एत्थ गुणगारो सेडीए असंखेज्जदिभागो । एवमेदे पुव्वं परूविदसव्वाहियारा सव्वजीवसमासाणमुववादजोगट्ठाणाणं एगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणं परिणामजोगट्ठाणाणं च पुध पुध परूवेदव्वा । सुहुमणिगोदजहण्णजोगट्ठाणप्पहुडि जाव सण्णिपंचिंदियपज्जत्तउक्कस्स-परिणामजोगट्ठाणेत्ति एदेसिं सव्वजीवसमासाणमुववादजोगट्ठाणाणि एगंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि परिणामजोगट्ठाणाणि च एगसेडिआगारेण छहि अंतरेहि सहिदाणि रचेदूण एदेसिं ट्ठाणाणमुवरि अणंतरोवणिधादिअणियोगद्दाराणि पुव्वं व परूवेदव्वाणि । णवरि अणंतरोवणिधे भण्णमाणे

इसको स्थापित कर पूर्वोक्त दुगुण दुगुणे गये हुए रूपोंसे गुणित करनेपर तृतीयका गुणहानि-स्थानान्तर आता है। अब गुणहानिशलाकाओंको लाते समय प्रथम गुणहानि (८) द्वारा योगस्थानाध्वानको खण्डित करनेपर जो लब्ध हो उसे एक रूपसे अधिक करके अर्धच्छेद करनेपर जितनी अर्धच्छेदशलाकायें हों उतने मात्र नाना गुणहानिस्थानान्तर होते हैं। यहां अल्पबहुत्वके प्ररूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

नानायोगद्विगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर स्तोक हैं। उनसे एकयोगद्विगुणवृद्धि-हानि स्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ १९९ ॥

यहां गुणकार श्रेणिका असंख्यातवां भाग है। इस प्रकार पूर्वप्ररूपित इन सब अधिकारोंकी प्ररूपणा सब जीवसमासों सम्बन्धी उपपादयोगस्थानों एकान्तानुवृद्धियोगस्थानों और परिणामयोगस्थानोंके विषयमें पृथक् पृथक् करना चाहिये। सूक्ष्म निगोदके जघन्य योगस्थानसे लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तके उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान तक इन सब जीवसमासोंके उपपादयोगस्थान एकान्तानुवृद्धियोगस्थान और परिणामयोगस्थानोंकी एक श्रेणिके आकारसे छह अन्तरोंसे सहित रचना करके इन स्थानोंके ऊपर अनन्तरोप-निधा आदि अनुयोगद्वारोंकी पहिलेके ही समान प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा करते समय छह अन्तरोंका उल्लंघन करके

---

१ प्रतिषु 'एवं' इति पाठः। २ प्रतिषु 'जेत्तियाओ' इति पाठः।

छअंतराणि उल्लंघिय वत्तव्वं, तत्थ हेट्ठिमजोगट्ठाणे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदे उवरिमजोगट्ठाणुप्पत्तीदो।

सपहि देसामासियभावेण एदेहि अणियोगद्दारेहि सूचिदअवहारकालादिपरूवणमेत्थ कस्सामो। त जहा— जहण्णजोगट्ठाणपमाणेण सव्वजोगट्ठाणाणि केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जति? सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तेण। त जहा— जहण्णजोगट्ठाणादो पक्खेवुत्तर-कमेण गदसव्वजोगट्ठाणाणि छण्णमतराणमभावेण पुव्विल्लदीहत्तादो सादिरेयदीहभावाणि ट्ठविय मूलग्गसमासं कादूण अद्धिय[1] ट्ठविदे पुव्विल्लायाममेत्तउक्कस्सजोगट्ठाणद्धाणि जहण्ण-जोगट्ठाणद्धाणि[2] च लब्भति। पुणो अद्धियएगखडस्सुवरि विदियखडे ठविदे पुव्विल्लाया-मद्धमेत्ताणि जहण्णजोगट्ठाणाणि उक्कस्सजोगट्ठाणाणि च होंति। एव होंति त्ति कादूण रचिदजोगट्ठाणद्धाणद्धेण[3] रूवाहियजोगगुणगारगुणिदेण जहण्णजोगट्ठाणे गुणिदे जहण्ण-जोगट्ठाणपमाणेण सव्वजोगट्ठाणाणि आगच्छति। पुणो रूवाहियजोगगुणगारगुणिदजोगट्ठाण-द्धाणद्धेण पुव्विल्लरासिम्हि भागे हिदे जहण्णजोगट्ठाणमागच्छदि। तेण जहण्णजोगट्ठाणस्स सेडीए असखेज्जदिभागो भागहारो होदि त्ति वुत्तं।

कथन करना चाहिये, क्योंकि, वहा अधस्तन योगस्थानको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर उपरिम योगस्थानकी उत्पत्ति है।

अब देशामर्शक स्वरूपसे इन अनुयोगद्वारोंके द्वारा सूचित अवहारकाल आदिकी प्ररूपणा यहां करते हैं। वह इस प्रकार है— जघन्य योगस्थानके प्रमाणसे सब योग-स्थान कितने कालसे अपहृत होते है? वे श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र कालसे अपहृत होते हैं। यथा— जघन्य योगस्थानसे आगे प्रक्षेप अधिक क्रमसे गये हुए सब योगस्थानोंको छह अन्तरोंका अभाव होनेसे पूर्वकी दीर्घतासे साधिक दीर्घता युक्त स्थापित कर मूलाग्रसमास करके आधा कर स्थापित करनेपर वे पूर्वके आयाम प्रमाण उत्कृष्ट योगस्थानोंके आधे और जघन्य योगस्थानोंके आधे प्राप्त होते हैं। पुन. अर्धित एक खण्डके ऊपर द्वितीय खण्डको स्थापित करनेपर चूंकि पूर्वोक्त आयामसे अर्ध आयाम प्रमाण जघन्य योगस्थान और उत्कृष्ट योगस्थान होते हैं, अत एव रूप अधिक योगगुण-कारसे गुणित ऐसे रचित योगस्थानाध्वानके अर्ध भागसे जघन्य योगस्थानको गुणित करनेपर जघन्य योगस्थानके प्रमाणसे सब योगस्थान आते हैं। पुन. एक अधिक योगगुण-कारसे गुणित योगस्थानाध्वानके अर्ध भागका पूर्वोक्त राशिमें भाग देनेपर जघन्य योगस्थान आता है। इसी कारण जघन्य योगस्थानका भागहार श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है, ऐसा कहा गया है।

---

१ प्रतिषु 'लद्धिय' इति पाठ। २ आप्रतौ 'उक्कस्सजोगट्ठाणद्धाणि उक्कस्सजोगजहण्णजोगट्ठाण-द्धाणाणि' इति पाठः। ३ ताप्रतौ 'जोगट्ठाणद्धाणेण' इति पाठ।

बिदियजोगट्ठाणपमाणेण अवहिरिज्जमाणे विसेसहीणेण कालेण अवहिरिज्जंति। एवं णेदव्वं जाव पढमदुगुणवड्ढि त्ति। पुणो तण पमाणेण अवहिरिज्जमाणे पुव्विल्लभाग हारादो अद्धमेत्तेण कालेण अवहिरिज्जंति। एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेत्ति। पुणो उक्कस्सजोगट्ठाणपमाणेण सव्वजोगट्ठाणाणि केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति? रचिदजोग ट्ठाणद्धाणस्स जोगगुणगारेण खंडिय तत्थ एगखंडे रूवाहियजोगगुणगारेण गुणिदे जं लद्धं तत्तियमेत्तेण कालेण अवहिरिज्जंति। एत्थ कारणं जाणिय वत्तव्वं। जहण्णजोगट्ठाणप्पहुडि उवरि सव्वत्थ अवहारकाले आणिज्जमाणे भागहारपरिहाणी जाणिदूण कायव्वा। एवं भागहारपरूवणा गदा।

पढमजोगट्ठाणफद्दयाणि सव्वजोगट्ठाणफद्दयाणं केवडिओ भागो? असंखेज्जदिभागो। एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेत्ति, असंखेज्जदिभागत्तणेण विसेसाभावादो। भागाभाग परूवणा गदा।

सव्वत्थोवाणि जहण्णजोगट्ठाणफद्दयाणि। उक्कस्सजोगट्ठाणफद्दयाणि असंखेज्ज-गुणाणि। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, जोगगुणगारो त्ति वुत्तं होदि।

द्वितीय योगस्थानके प्रमाणसे अपहृत करनेपर सब योगस्थान विशेष हीन कालसे अपहृत होते हैं। इस प्रकार प्रथम द्विगुणवृद्धि तक ले जाना चाहिये। पश्चात् उक्त प्रमाणसे अपहृत करनेपर वे पूर्व भागहारकी अपेक्षा अर्ध भाग प्रमाण कालसे अपहृत होते हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थान तक ले जाना चाहिये। अब उत्कृष्ट योगस्थानके प्रमाणसे सब योगस्थान कितने कालसे अपहृत होते हैं? रचित योग स्थानके अर्ध भागको योगगुणकारसे खण्डित कर उसमें एक खण्डको रूपाधिक योग गुणकारसे गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतने मात्र कालसे वे अपहृत होते हैं। यहां कारणका कथन जानकर करना चाहिये। जघन्य योगस्थानसे आदि लेकर आगे सब जगह अवहारकालको लाते समय भागहारकी हानि जानकर करना चाहिये। इस प्रकार भागहारकी प्ररूपणा समाप्त हुई।

प्रथम योगस्थानके स्पर्धक सब योगस्थानोंके स्पर्धकोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं? वे सब योगस्थान सम्बन्धी स्पर्धकोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थान तक ले जाना चाहिये, क्योंकि असंख्यातवें भागकी अपेक्षा वहां और कोई विशेषता नहीं है। भागाभागप्ररूपणा समाप्त हुई।

जघन्य योगस्थानके स्पर्धक सबमें स्तोक हैं। उनसे उत्कृष्ट योगस्थानके स्पर्धक असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है।

---

१ ताप्रतौ 'वुत्तं' इत्येतत्पदं नास्ति।

अजहण्ण-अणुक्कस्सजोगट्ठाणफद्दयाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । अणुक्कस्सजोगट्ठाणफद्दयाणि विसेसाहियाणि जहण्णजोगट्ठाणफद्दएहि ऊणउक्कस्सजोगट्ठाणफद्दयमेत्तेण । सव्वजोगट्ठाणफद्दयाणि विसेसाहियाणि जहण्णजोगट्ठाणफद्दयमेत्तेण । एवं परंपरोवणिधा समत्ता ।

समयपरूवणदाए चदुसमइयाणि जोगट्ठाणाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥ १९७ ॥

एत्थ समयपरूवणदाए त्ति किमट्ठं वुच्चदे ? पुव्वुद्दिट्ठअहियारसंभालणट्ठं । समयपरूवणा किमट्ठमागदा ? समएहि विसेसिदजोगट्ठाणाणं पमाणपरूवणट्ठं, समएहि परूवणदा समयपरूवणदा, तीए 'समयपरूवणदाए' त्ति सद्दवुप्पत्तीदो । जेसु जोगट्ठाणेसु जीवा चत्तारिसमयमुक्कस्सेण परिणमंति ताणि जोगट्ठाणाणि चदुसमइयाणि त्ति भणंति । तेसिं पमाणं सेडीए असंखेज्जदिभागो, एवं वुत्ते सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्तप्पहुडि जाव पंचिंदियलद्धिअपज्जत्तओ त्ति एदेसिं परिणामजोगट्ठाणाणं एइंदियादि जाव सण्णिपंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तजहण्णपरिणामजोगट्ठाणप्पहुडि उवरि तप्पाओग्गसेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणं णिरंतर

इस गुणकारसे अभिप्राय योगगुणकारका है । उत्कृष्ट योगस्थानके स्पर्धकोंसे अजघन्य-अनुत्कृष्ट योगस्थानोंके स्पर्धक असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार श्रेणिका असंख्यातवां भाग है । उनसे अनुत्कृष्ट योगस्थानोंके स्पर्धक जघन्य योगस्थानके स्पर्धकोंसे हीन उत्कृष्ट योगस्थान सम्बन्धी स्पर्धकों मात्र विशेषसे अधिक हैं । उनसे सब योगस्थानोंके स्पर्धक जघन्य योगस्थानके स्पर्धकों मात्र विशेषसे अधिक हैं । इस प्रकार परम्परोपनिधा समाप्त हुई ।

समयप्ररूपणताके अनुसार चार समय रहनेवाले योगस्थान श्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ १९७ ॥

शंका— सूत्रमें 'समयपरूवणदाए' यह पद किसलिये कहा गया है ?

समाधान— उक्त पद पूर्वोद्दिष्ट अधिकारका स्मरण करानेके लिये कहा गया है ।

शंका— समयप्ररूपणा किसलिये प्राप्त हुई है ?

समाधान— समयोंसे विशेषताको प्राप्त हुए योगस्थानोंके प्रमाणको बतलानेके लिये समयप्ररूपणाका अवतार हुआ है, क्योंकि, समयोंसे प्ररूपणता समयप्ररूपणता, उस समयप्ररूपणतासे, ऐसी यहां शब्दकी व्युत्पत्ति है ।

जिन योगस्थानोंमें जीव उत्कर्षसे चार समय परिणमते हैं वे चतुःसामायिक अर्थात् चार समय रहनेवाले योगस्थान कहे जाते हैं । उनका प्रमाण श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र है, ऐसा कहनेपर सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकको आदि लेकर पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक तक इनके परिणामयोगस्थानोंका तथा एकेन्द्रियको आदि लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकके जघन्य परिणामयोगस्थानसे लेकर आगे तत्प्रायोग्य श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र निरन्तर गये हुए परिणामयोग-

गहणं परिणामजोगट्ठाणाणं च गहणं, ओववादएयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणं च ण गहणं; तत्थेगसमयं मोत्तूण उवरि अवट्ठाणाभावादो ।

पंचसमइयाणि जोगट्ठाणाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥ १९८ ॥

जाणि जोगट्ठाणाणि एगसमयमादि कादूण जाव उक्कस्सेण पंचसमओ त्ति जीवा परिणमंति ताणि पंचसमइयाणि णाम । तेसिं पि पमाणं सेडीए असंखेज्जदिभागो । एदाणि जोगट्ठाणाणि उवरि भण्णमाणछसमइयादिजोगट्ठाणाणि च एइंदियादिपंचिंदियावसाणाणं परिणामजोगेसु जोजेदव्वाणि, ण सेसेसु ।

एवं छसमइयाणि सत्तसमइयाणि अट्ठसमइयाणि जोगट्ठाणाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥ १९९ ॥

पंचसमइयजोगट्ठाणेहिंतो उवरिमाणि छ-सत्त-अट्ठसमयाणं पाओग्गाणि जाणि जोगट्ठाणाणि तेसिं पमाणं पुध पुध सेडीए असंखेज्जदिभागो ।

पुणरवि सत्तसमइयाणि छसमइयाणि पंचसमइयाणि चदुसमइयाणि उवरि तिसमइयाणि बिसमइयाणि जोगट्ठाणाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥ २०० ॥

स्थानोंका भी ग्रहण करना चाहिये । उपपादयोगस्थानों और एकान्तानुवृद्धियोगस्थानोंका ग्रहण नहीं करना चाहिये, क्योंकि उनका एक समयको छोड़कर आगे अवस्थान सम्भव नहीं है ।

पंचसामयिक योगस्थान श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं ॥ १९८ ॥

जिन योगस्थानोंमें जीव एक समयको आदि लेकर उत्कर्षसे पांच समय तक परिणमते हैं वे पंचसामयिक कहलाते हैं । उनका भी प्रमाण श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र है । इन योगस्थानोंको तथा आगे कहे जानेवाले षट्सामयिक आदि योगस्थानोंको एकेन्द्रियसे लेकर पंचेन्द्रिय तकके परिणामयोगोंमें जोड़ना चाहिये, शेषोंमें नहीं ।

इसी प्रकार षट्सामयिक, सप्तसामयिक व अष्टसामयिक योगस्थान श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं ॥ १९९ ॥

पंचसामयिक योगस्थानोंसे आगेके छह सात व आठ समयोंके योग्य जो योगस्थान हैं उनका प्रमाण पृथक् पृथक् श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र है ।

फिर भी सप्तसामयिक, षट्सामयिक, पंचसामयिक, चतुःसामयिक तथा उपरिम त्रिसामयिक व द्विसामयिक योगस्थान श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं ॥ २०० ॥

जवमज्झादो हेट्ठिमाणं सत्तसमइयादिजोगट्ठाणाण पुव्वं पमाण परूविद[1]। पुणो जवमज्झादो उवरिमाणं सत्त छ पंच-चदुसमइयजोगट्ठाणाण[2] तेसिं चेव पमाणं[3] परूवेमि त्ति जाणावणट्ठ 'पुणरवि' गहण कद। एदेहि पुव्व परूविदजोगट्ठाणेहिंतो तिसमइय-विसमइय जोगट्ठाणाणि उवरि होंति त्ति जाणावणट्ठ उवरिमद्दणिद्देसो[4] कदो। अथवा एसो उवरिसद्दो मज्झदीवओ। तेण सव्वत्थ सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तहेट्ठिमचदुसमइयजोगट्ठाणाणं उवरि पचसमइयजोगट्ठाणाणि होंति। तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमुवरि छसमइयाणि होंति। तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमुवरि सत्तसमइयाणि। तेसिं सेडीए असंखेज्जदि-भागमेत्ताणमुवरि अट्ठसमइयाणि। तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमुवरि पुणरवि सत्तसमइयाणि। तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमुवरि छसमइयाणि। तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमुवरि पचसमइयाणि। तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमुवरि चदुसमइयाणि। तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमुवरि तिसमइयाणि। तेसिं सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमुवरि विसमइयाणि जोगट्ठाणाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति

यवमध्यसे नीचेके सप्तसामयिक आदि योगस्थानोंका प्रमाण पूर्वमें कहा जा चुका है। अब यवमध्यसे ऊपरके जो सात, छह, पांच और चार समय निरन्तर प्रवर्तनेवाले योग-स्थान हैं उनके ही प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ सूत्रमें 'पुणरवि' पदका ग्रहण किया गया है। इन पूर्वप्ररूपित योगस्थानोंमेंसे तीन समय व दो समय निर-न्तर प्रवर्तनेवाले योगस्थान ऊपर होते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ 'उवरि' शब्दका निर्देश किया है। अथवा, यह 'उवरि' शब्द मध्यदीपक है। इस कारण सर्वत्र श्रेणिके असं-ख्यातवें भाग मात्र नीचेके चार समयवाले योगस्थानोंके ऊपर पांच समयवाले योग-स्थान होते हैं। श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उन योगस्थानोंके ऊपर छह समय रहनेवाले योगस्थान होते हैं। श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उनके ऊपर सात समय रहनेवाले योगस्थान होते हैं। श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उनके ऊपर आठ समय रहनेवाले योगस्थान होते हैं। श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उक्त योग स्थानोंके ऊपर फिरसे भी सात समय रहनेवाले योगस्थान होते हैं। श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उनके ऊपर छह समय रहनेवाले योगस्थान होते हैं। श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उनके ऊपर पांच समय रहनेवाले योगस्थान होते हैं। श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उनके ऊपर चार समय रहनेवाले योगस्थान होते हैं। श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उनके ऊपर तीन समय रहनेवाले योगस्थान होते हैं। श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र उनके ऊपर दो समय रहनेवाले योगस्थान

१ आप्रतौ 'पुव्व परूविदं पमाण' इति पाठ। २ अ-आ-काप्रतिषु 'पच-दुसमइय-' इति पाठ। ३ प्रतिषु 'पमाणाण' इति पाठ। ४ अ आ-काप्रतिषु 'उवरि सत्तणिद्देसो', ताप्रतौ 'उवरि' [सत्त] वि णिद्देसो' इति पाठः।

जोगट्ठाणाणि। एवं समयपरूवणा समत्ता।

वड्ढिपरूवणदाए अत्थि असंखेज्जभागवड्ढि-हाणी संखेज्जभागवड्ढि-हाणी[1] संखेज्जगुणवड्ढि-हाणी असंखेज्जगुणवड्ढि-हाणी ॥

वड्ढिपरूवणा किमट्ठमागदा ? जोगट्ठाणेसु एत्तियाओ वड्ढि-हाणीओ अत्थि एत्तियाओ णत्थि त्ति जाणावणट्ठमागदा। णेदं पओजणं, परंपरोवणिधादो चेव तदवगमादो ? ण, दुगुण-दुगुणजोगट्ठाणपदुप्पायणे तिस्से वावारादो। जोगट्ठाणवड्ढि-हाणीणं पमाणपरूवणट्ठं तासिं कालपरूवणट्ठं च वड्ढिपरूवणा आगदा त्ति सिद्धं।

संपहि एत्थ वड्ढिपरूवणं कस्सामो। तं जहा— जहण्णजोगट्ठाणपक्खेवभागहारं विरलेदूण जहण्णजोगट्ठाणं समखंडं कादूण दिण्णे रूवं पडि एगेगजोगपक्खेवो पावदि। पुणो तत्थ एगपक्खेवं घेत्तूण जहण्णजोगट्ठाणं पडिरासिय पक्खित्ते असंखेज्जभागवड्ढी होदि।

श्रेणिके असंख्यातवें भाग मात्र हैं, यह जानना चाहिये। इस प्रकार समयप्ररूपणा समाप्त हुई।

वृद्धिप्ररूपणाके अनुसार योगस्थानोंमें असंख्यातभागवृद्धि-हानि, संख्यातभागवृद्धि-हानि, संख्यातगुणवृद्धि-हानि और असंख्यातगुणवृद्धि-हानि; ये वृद्धियां व हानियां होती हैं ॥ २०१ ॥

शंका— वृद्धिप्ररूपणा किसलिये प्राप्त हुई है ?

समाधान— योगस्थानोंमें इतनी वृद्धि-हानियां हैं और इतनी नहीं हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ यह वृद्धिप्ररूपणा प्राप्त हुई है।

शंका— यह कोई प्रयोजन नहीं है, क्योंकि, परम्परोपनिधासे ही उसका ज्ञान हो जाता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, परम्परोपनिधाका व्यापार दुगुणे दुगुणे योगस्थानोंका परिज्ञान करानेमें है। योगस्थानोंकी वृद्धि व हानिका प्रमाण बतलानेके लिये तथा उनके कालकी भी प्ररूपणा करनेके लिये वृद्धिप्ररूपणा प्राप्त हुई है यह सिद्ध है।

अब यहां वृद्धिकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— जघन्य योगस्थानके प्रक्षेपभागहारका विरलन कर जघन्य योगस्थानको समखण्ड करके देनेपर रूपके प्रति एक एक योगप्रक्षेप प्राप्त होता है। अब उनमेंसे एक योगप्रक्षेपको ग्रहण करके जघन्य योगस्थानको प्रतिराशि कर उसमें मिला देनेपर असंख्यातभागवृद्धि होती है। द्वितीय

---

१ संखेज्जभागवड्ढी-हाणी इत्येतावान् पाठः मप्रतिप्रत्यनुसारेण योजितः।

बिदियपक्खेव बिदियजोगट्ठाणं पडिरासिय पक्खित्ते वि असंखेज्जभागवड्ढी चेव होदि। एवं पक्खेवभागहारमुक्कस्ससंखेज्जमेत्तखंडाणि कादूण तत्थ एगखंडम्मि जत्तिया पक्खेवा अत्थि ते रूवूणा जाव पविसंति ताव असंखेज्जभागवड्ढी चेव होदि। एत्थ जहण्णजोगट्ठाणं पेक्खिदूण असंखेज्जभागवड्ढी समत्ता।

पुणो संपुण्णेगखंडमेत्तपक्खेवेसु पविट्ठेसु जहण्णजोगट्ठाणं पेक्खिदूण संखेज्ज-भागवड्ढीए आदी जादा। पुणो बिदियखंडमेत्तपक्खेवेसु पविट्ठेसु संखेज्जभागवड्ढी चेव। एवं ताव संखेज्जभागवड्ढी चेव गच्छदि जाव रूवूणविरलणमेत्तपक्खेवा पविट्ठा त्ति। एत्थ संखेज्जभागवड्ढीए समत्ती जादा।

तदो अण्णेगे[1] पक्खेवे पविट्ठे जहण्णजोगट्ठाणं[2] पेक्खिदूण संखेज्जगुणवड्ढीए आदी जादा। एत्तो प्पहुडि उवरि संखेज्जगुणवड्ढी ताव गच्छदि जाव जहण्णपरित्तासंखेज्जच्छेद-णयमेत्तगुणहाणीणं चरिमजोगट्ठाणेत्ति। तत्तो अणंतरउवरिमजोगट्ठाणं जहण्णजोगट्ठाणं पेक्खिदूण जहण्णपरित्तासंखेज्जगुणं होदि। एत्थ असंखेज्जगुणवड्ढीए आदी जादा। एत्तो प्पहुडि उवरिमसव्वजोगट्ठाणाणि जहण्णजोगट्ठाणं पेक्खिदूण असंखेज्जगुणाणि चेव,

---

योगस्थानको प्रतिराशि करके उसमें द्वितीय प्रक्षेपको मिला देनेपर भी असंख्यातभागवृद्धि ही होती है। इस प्रकार प्रक्षेपभागहारके उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण खण्ड करके उनमेंसे एक खण्डमें जितने प्रक्षेप हैं वे एक रूपसे हीन होकर जब तक प्रविष्ट होते हैं तब तक असंख्यातभागवृद्धि ही होती है। यहां जघन्य योगस्थानकी अपेक्षा करके असंख्यात-भागवृद्धि समाप्त हो जाती है।

पुनः सम्पूर्ण एक खण्ड प्रमाण प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होनेपर जघन्य योगस्थानकी अपेक्षा करके संख्यातभागवृद्धिका आदि स्थान होता है। पश्चात् द्वितीय खण्ड मात्र प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होनेपर संख्यातभागवृद्धि ही रहती है। इस प्रकार रूप कम विरलन राशिके बराबर प्रक्षेपोंके प्रविष्ट होने तक संख्यातभागवृद्धि ही चली जाती है। यहां संख्यातभागवृद्धिकी समाप्ति हो जाती है।

तत्पश्चात् एक अन्य प्रक्षेपके प्रविष्ट होनेपर जघन्य योगस्थानकी अपेक्षा करके संख्यातगुणवृद्धिका आदि स्थान होता है। यहांसे लेकर आगे जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर गुणहानियोंके अन्तिम योगस्थान तक संख्यात-गुणवृद्धि ही चली जाती है। उससे आगेका अनन्तर योगस्थान जघन्य योगस्थानकी अपेक्षा करके जघन्य परीतासंख्यातसे गुणित होता है। यहां असंख्यातगुणवृद्धिका आदि स्थान होता है। यहांसे लेकर आगेके सब योगस्थान जघन्य योगस्थानकी अपेक्षा करके असंख्यातगुणित ही हैं, क्योंकि, यहां दूसरी वृद्धियोंका अभाव है। इस

---

१ ताप्रतौ 'अणेगे' इति पाठः। २ प्रतिषु 'जहण्णजोगट्ठाणाणं' इति पाठः।

तत्थण्णवड्ढीणमभावादो। एवं जहण्णजोगट्ठाणमस्सिदूण जहा चत्तारिवड्ढीओ परूविदाओ तहा सव्वजोगट्ठाणाणि पुध पुध अस्सिदूण समयाविरोहेण चत्तारिवड्ढिपरूवणा कायव्वा ।

तिण्णिवड्ढि-तिण्णिहाणीओ[1] केवचिरं कालादो होंति ? जहण्णेण एगसमय ॥ २०२ ॥

तिण्णिवड्ढि तिण्णिहाणीओ त्ति वुत्ते आदिल्लाणं तिण्हं गहणं कायव्वं, असंखेज्जगुणवड्ढि-हाणीणमुवरि पुध परूवणदंसणादो। असंखेज्जभागवड्ढीए जहण्णेण एगसमयमच्छिदूण विदियसमए सेसतिण्णं वड्ढीणमेगवड्ढिं चदुण्णं हाणीणमेयदमहाणिं वा गदस्स असंखेज्जभागवड्ढिकालो जहण्णेण एगसमओ होदि। एवं सेसदोवड्ढीणं तिण्णिहाणीणं च एगसमय परूवणा कायव्वा।

उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो[1] ॥ २०३ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा— एगजीवो जम्हि कम्हि वि जोगट्ठाणे ट्ठिदो असंखेज्जभागवड्ढिजोगं गदो। तत्थ एगसमयमच्छिदूण विदियसमए तत्तो असंखेज्जदि

प्रकार जघन्य योगस्थानका आश्रय करके जैसे चार वृद्धियोंकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही पृथक् पृथक् सब योगस्थानोंका आश्रय करके समयाविरोधपूर्वक चार वृद्धियोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

तीन वृद्धियां और तीन हानियां कितने काल होती हैं ? जघन्यसे वे एक समय होती हैं ॥ २०२ ॥

तीन वृद्धियां और तीन हानियां' ऐसा कहनेपर आदिकी तीन वृद्धि हानियोंको ग्रहण करना चाहिये क्योंकि असंख्यातगुणवृद्धि और हानिकी पृथक् प्ररूपणा देखी जाती है। असंख्यातभागवृद्धिपर जघन्यसे एक समय रहकर द्वितीय समयमें शेष तीन वृद्धियोंमें किसी एक वृद्धि अथवा चार हानियोंमें किसी एक हानिको प्राप्त होनेपर असंख्यातभागवृद्धिका काल जघन्यसे एक समय होता है। इसी प्रकार शेष दो वृद्धियों और तीन हानियोंके एक समयकी प्ररूपणा करना चाहिये।

उत्कर्षसे उक्त हानि-वृद्धियोंका काल आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ॥२०३॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है— एक जीव जिस किसी भी योगस्थानमें स्थित होकर असंख्यातभागवृद्धियोगको प्राप्त हुआ। वहां एक समय रहकर दूसरे समयमें उससे असंख्यातवें भागसे अधिक योगको प्राप्त हुआ। इस प्रकार

---

१ ताप्रतौ 'चत्तारिवड्ढीओ तहा' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'समयाविरोहेण' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'तिण्णिवड्ढि-तिण्णिहाणी' इति पाठः। ४ अप्रतौ 'मस्सिदूण' इति पाठः। ५ अ-आ-काप्रतिषु '-जोगवड्ढितिण्णिहाणीणं' इति पाठः। ६ ... ॥ क. प. १ ११

मागुत्तरजोगं गदो। एवं दोण्णमसंखेज्जभागवड्ढिसमयाणमुवलद्धी जादा। तदो तदियसमए तत्तो असंखेज्जदिभागुत्तरमण्णजोगं गदो। तत्थ तिण्णिमसंखेज्जभागवड्ढिसमयाणमुवलद्धी जादा। एवं णिरंतरमसंखेज्जभागवड्ढिं ताव कुणदि जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो त्ति। तदो उवरिमसमए णिच्छएण अण्णवड्ढीणमण्णहाणीणं वा गच्छदि त्ति। एवं सेसवड्ढि-हाणीण पि सगणामणिद्देसं काऊण उक्कस्सकालपरूवणा कायव्वा।

असंखेज्जगुणवड्ढि-हाणी केवचिरं कालादो होंति? जहण्णेण एगसमओ ॥ २०४ ॥

असंखेज्जगुणवड्ढिमसंखेज्जगुणहाणिं वा एगसमयं काऊण अणप्पिदवड्ढि-हाणीण गदस्स एगसमओ होदि।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २०५ ॥

असंखेज्जगुणवड्ढीए असंखेज्जगुणहाणीए वा सुट्ठु जदि बहुअं कालमच्छदि तो अंतोमुहुत्तं चेव। पुणो उवरिमसमए णिच्छएण अण्णवड्ढि-हाणीओ गच्छदि त्ति जवमज्झादो हेट्ठिमचदुसमइय-उवरिमतिसमइय-बिसमइयजोगट्ठाणेसु चत्तारिवड्ढि-हाणीयो अत्थि त्ति। तत्थच्छणकालो जहण्णेण एगसमयं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। सेसजोगट्ठाणेसु परियट्टणकालो

असंख्यातभागवृद्धिके दो समयोंकी उपलब्धि हुई। पश्चात् तृतीय समयमें उसकी अपेक्षा असंख्यातवें भागसे अधिक दूसरे योगको प्राप्त हुआ। वहां असंख्यातभागवृद्धिके तीन समय उपलब्ध होते हैं। इस प्रकार उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग काल तक निरन्तर असंख्यातभागवृद्धिको करता है। तत्पश्चात् आगेके समयमें निश्चयसे दूसरी वृद्धियों या हानियोंको प्राप्त होता है। इसी प्रकार शेष वृद्धि हानियोंके भी अपने नामका निर्देश कर उत्कृष्ट कालकी प्ररूपणा करना चाहिये।

असंख्यातगुणवृद्धि और हानि कितने काल होती हैं? जघन्यसे वे एक समय होती हैं॥ २०४॥

असंख्यातगुणवृद्धि अथवा असंख्यातगुणहानिको एक समय करके अविवक्षित वृद्धि या हानिको प्राप्त होनेपर एक समय होता है।

उक्त वृद्धि व हानि उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होती है॥ २०५॥

असंख्यातगुणवृद्धि अथवा हानिपर यदि बहुत अधिक काल रहे तो वह अन्तर्मुहूर्त तक ही रहता है। इसके पश्चात् आगेके समयमें निश्चयसे दूसरी वृद्धि या हानिको प्राप्त होता है। इसी कारण यवमध्यसे नीचेके चार समय रहनेवाले और ऊपरके तीन समय व दो समय रहनेवाले योगस्थानोंमें चार वृद्धियां और हानियां होती हैं। वहां रहनेका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। शेष योगस्थानोंमें

जहण्णेण एगसमयमुक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो, तत्थ असंखेज्जभागवड्ढिं मोत्तूण अण्णवड्ढीणमभावादो ।

एत्तो जवमज्झादो उवरिमचदुसमयपाओग्गजोगट्ठाणेसु परिणममाणस्स असंखेज्ज-भागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढीओ चेव होंति । कधमेदं णव्वदे ? सव्वजीवसमासाणं जहण्ण-परिणामजोगट्ठाणप्पहुडि जाव अप्पप्पणो उक्कस्सपरिणामजोगट्ठाणेत्ति एदाणि जोगट्ठाणाणि अस्सिदूण उवरि भण्णमाणअप्पाबहुगसुत्तम्मि जवमज्झादो हेट्ठिम उवरिमचदुसमयजोग-ट्ठाणाणि सरिसाणि त्ति णिद्दिट्ठत्तादो । जोगट्ठाणे च हेट्ठिमसव्वद्धाणादो सादिरेयमद्धाणं गंतूण उवरिमदुगुणवड्ढी उप्पज्जदि । एवं सदि हेट्ठा उवरिमचदुसमयादिजोगट्ठाणाणि पढमगुणहाणि-मेत्ताणि जदि होंति तो उवरिमचदुसमइयाणं चरिमसमए दुगुणवड्ढी समुप्पज्जेज्ज[1] । ण च एवं, तहाविहोवदेसाभावादो । पुणो केरिसो उवदेसो त्ति पुच्छिदे उच्चदे — उवरिमचदुसमइय-जोगट्ठाणाणं चरिमजोगट्ठाणादो हेट्ठा असंखेज्जदिभागमेत्तमोसरिय दुगुणवड्ढी होदि त्ति उवरिमचदुसमयपाओग्गेसु दो चेव वड्ढीओ होंति त्ति एसो पवाइज्जंतउवएसो । पवाइज्जंत

परिवर्तनका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, क्योंकि यहां असंख्यातभागवृद्धिको छोड़कर दूसरी वृद्धियोंका अभाव है ।

अब यवमध्यसे ऊपरके चार समय योग्य योगस्थानोंमें परिणमन करनेवालेके असंख्यातभागवृद्धि और संख्यातभागवृद्धि ही होती है ।

शंका — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — सब जीवसमासोंके जघन्य परिणामयोगस्थानसे लेकर अपने अपने उत्कृष्ट परिणामयोगस्थान तक इन योगस्थानोंका आश्रय करके आगे कहे जाने वाले अल्पबहुत्वसूत्रमें यवमध्यसे नीचेके और ऊपरके चार समय योग्य योगस्थान सदृश हैं, ऐसा निर्देश किया गया है । और योगस्थानमें अधस्तन समस्त अध्वानसे साधिक अध्वान जाकर उपरिम दुगुणवृद्धि उत्पन्न होती है । ऐसा होनेपर अधस्तन व उपरिम चतुःसामयिक आदि योगस्थान यदि प्रथम गुणहानि मात्र होते हैं तो ऊपरके चतुःसामयिक योगस्थानोंके अन्तिम समयमें दुगुणवृद्धि उत्पन्न हो सकती है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि वैसा उपदेश नहीं है । तो फिर कैसा उपदेश है, ऐसा पूछनेपर कहते हैं कि ऊपरके चार समय योग्य योगस्थानोंमें अन्तिम योगस्थानसे नीचे असंख्यातवें भाग मात्र उतर कर दुगुणवृद्धि होती है । अत एव ऊपरके चार समय योग्य योगस्थानोंमें दो ही वृद्धियां होती हैं, ऐसा प्रवाह्यमान उपदेश है ।

---

१ [illegible] इति पाठः । २ अ-आ-काप्रतिषु [illegible], ताप्रतौ [illegible] इति पाठः । ३ अ-आ-काप्रतिषु [illegible] इति पाठः ।

उवएसो त्ति कुदो णव्वदे ? पवाइज्जतउवएसेण जहण्णेण एगसमगो, उक्कस्सेण एक्कारस समया । अण्णदरेण उवएसेण जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पण्णारस समया त्ति पदेसबंधसुत्तादो त्ति । तेण णव्वदि[1] जहा उवरिमचदुसमइयजोगट्ठाणेसु दो चेव वड्ढीओ, संखेज्जगुणवड्ढी णत्थि त्ति ।

संपहि एदेणेव सुत्तेण सूचिदवड्ढिकालाणमप्पाबहुगं वुच्चदे । तं जहा— सव्वत्थोवो असंखेज्जभागवड्ढि-हाणिकालो । संखेज्जभागवड्ढि-हाणिकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? असंखेज्जभागवड्ढि [-हाणि] विसयादो संखेज्जभागवड्ढि हाणिविसयस्स संखेज्जगुणत्तुवलंभादो त्ति । विसयगुणगाराणुसारी कालगुणगारो किण्ण वुत्तो ? ण, परियट्टणभेदेण कालस्स असंखेज्जगुणत्तं पडि विरोहाभावादो । संखेज्जगुणवड्ढि-संखेज्जगुणहाणीणं[2] कालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? संखेज्जभागवड्ढि हाणिविसयादो संखेज्जगुणवड्ढि-हाणीण विसयस्स संखेज्जगुणत्तुवलंभादो । असंखेज्जगुणवड्ढि हाणिकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए

शंका— यह परम्पराप्राप्त उपदेश है, यह कहांसे जाना जाता है ?

समाधान— परम्पराप्राप्त उपदेशके अनुसार जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे ग्यारह समय हैं। अन्यतर उपदेशके अनुसार जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पन्द्रह समय हैं, इस प्रदेशबन्धसूत्रसे वह जाना जाता है ।

इसीसे जाना जाता है कि ऊपरके चार समय योग्य योगस्थानोंमें दो ही वृद्धियां होती हैं, संख्यातगुणवृद्धि नहीं होती ।

अब इसी सूत्रसे सूचित वृद्धिकालोंके अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है— असंख्यातभागवृद्धि और हानिका काल सबमें स्तोक है । उससे संख्यातभागवृद्धि और हानिका काल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, असंख्यातभागवृद्धि व हानिके विषयसे संख्यातभागवृद्धि और हानिका विषय संख्यातगुणा पाया जाता है ।

शंका— विषयगुणकारके समान कालके गुणकारको क्यों नहीं कहा ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, परिवर्तनके भेदसे कालके असंख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

उससे संख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणहानिका काल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है , क्योंकि, संख्यातभागवृद्धि और हानिके विषयसे संख्यातगुणवृद्धि और हानिका विषय संख्यातगुणा पाया जाता है । उससे असंख्यातगुणवृद्धि और हानिका काल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुण-

१ अप्रतौ ' णव्वदे ' इति पाठः । २ ताप्रतौ ' विरोहाभावादो । संखेज्जगुणहाणीणं ' इति पाठ ।

असंखेज्जदिभागो। कुदो ? संखेज्जगुणवड्ढि-हाणिविसयादो असंखेज्जगुणवड्ढि-हाणिविसयस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। वड्ढि-हाणिकालो विसेसाहियो। केत्तियमेत्तेण ? सेसवड्ढी-हाणिकालमेत्तेण। एवं वड्ढिपरूवणा समत्ता।

अप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाणि अट्ठसमइयाणि जोगट्ठाणाणि ॥

अप्पाबहुगपरूवणा किमट्ठमागदा ? अट्ठसमइयादिजोगट्ठाणाणं सेडीए असंखेज्जदिभागत्तणेण अवगदपमाणाणं थोवबहुत्तपरूवणट्ठं। सव्वत्थोवाणि' त्ति भणिदे उवरि भण्णमाणजोगट्ठाणेहिंतो थोवाणि त्ति घेत्तव्वं होदि।

दोसु वि पासेसु सत्तसमइयाणि जोगट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ २०७ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। उवरि वुच्चमाणअप्पाबहुगपदेसेसु सव्वत्थ एसो चेव गुणगारो वत्तव्वो।

कार आवलीका असंख्यातवां भाग है क्योंकि, संख्यातगुणवृद्धि और हानिके विषयसे असंख्यातगुणवृद्धि और हानिका विषय असंख्यातगुणा पाया जाता है। वृद्धि और हानिका काल उससे विशेष अधिक है। कितने मात्र विशेषसे वह अधिक है ? यह शेष वृद्धियों और हानियोंके काल मात्र विशेषसे अधिक है। इस प्रकार वृद्धिप्ररूपणा समाप्त हुई।

अल्पबहुत्वके अनुसार आठ समय योग्य योगस्थान सबमें स्तोक हैं ॥ २०६ ॥

शंका— अल्पबहुत्वप्ररूपणा किसलिये प्राप्त हुई है ?

समाधान— श्रेणिके असंख्यातवें भाग स्वरूपसे जिनका प्रमाण ज्ञात हो चुका है उन अष्टसामयिक आदि योगस्थानोंका अल्पबहुत्व बतलानेके लिये अल्पबहुत्व प्ररूपणा प्राप्त हुई है।

सबमें स्तोक हैं ऐसा कहनेपर आगे कहे जानेवाले योगस्थानोंसे स्तोक हैं यह अभिप्राय ग्रहण किया गया है।

दोनों ही पार्श्वभागोंमें सात समय योग्य योगस्थान दोनों ही तुल्य व उनसे असंख्यातगुणे हैं ॥ २०७ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वपदोंमें सर्वत्र यही गुणकार कहना चाहिये।

---

१ प्रतौ 'सव्वत्थवा' इति पाठः। २ अ-आ-प्रत्योः भण्णमाणजोगेण- ताप्रतौ भण्णमाण [जो] गेण इति पाठः।

दोसु वि पासेसु छसमइयाणि जोगट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ २०८ ॥

दोसु वि पासेसु पंचसमइयाणि जोगट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ २०९ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

दोसु वि पासेसु चदुसमइयाणि जोगट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ २१० ॥

उवरि तिसमइयाणि जोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि[1] ॥ २११ ॥

एत्थ उवरि त्ति णिद्देसो किमट्ठं कदो ? उवरि भण्णमाणतिसमइय-बिसमइयजोगट्ठाणाणि[2] जवमज्झादो उवरि चेव होंति, हेट्ठा ण होंति त्ति जाणावणट्ठं ।

बिसमइयाणि जोगट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ २१२ ॥

दोनों ही पार्श्वभागोंमें छह समय योग्य योगस्थान दोनों ही तुल्य व उनसे असख्यातगुणे हैं ॥ २०८ ॥

दोनों ही पार्श्वभागोंमें पांच समय योग्य योगस्थान दोनों ही तुल्य व उनसे असंख्यातगुणे हैं ॥ २०९ ॥

ये दोनों ही सूत्र सुगम हैं ।

दोनों ही पार्श्वभागोंमें चार समय योग्य योगस्थान दोनों ही तुल्य व उनसे असंख्यातगुणे हैं ॥ २१० ॥

उनसे तीन समय योग्य उपरिम योगस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ २११ ॥

शका— यहा ' उपरि ' शब्दका निर्देश किसलिये किया है ?

समाधान— आगे कहे जानेवाले तीन समय और दो समय योग्य योगस्थान यवमध्यसे ऊपर ही होते हैं, नीचे नहीं होते; इस बातके ज्ञापनार्थ सूत्रमें ' उवरि ' शब्दका निर्देश किया है ।

उनसे दो समय योग्य योगस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ २१२ ॥

---

१ अ आ-काप्रतिषु ' असखेज्जगुणाणि ' इत्येतत्पद नोपलभ्यते । २ मप्रतिपाठोऽयम् । अप्रतौ ' तिसमइय-जोगट्ठाण ', आ ताप्रत्यो ' तिसमइयजोगट्ठाणाणि ', काप्रतौ ' तिसमइयाणि जोगट्ठाणाणि ' इति पाठ ।

सुगमं । एवमप्पाबहुगपरूवणा समत्ता ।

जाणि चेव जोगट्ठाणाणि ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि । णवरि पदेसबंधट्ठाणाणि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि ॥ २१३ ॥

एदेहि अणियोगद्दारेहि[1] जोगट्ठाणपरूवणाए परूविदाए किमट्ठमिदं सुत्तमागदं ? वुच्चदे— एदाणि सवित्थरेण परूविदजोगट्ठाणाणि चेव पदेसबंधकारणाणि, ण अण्णाणि त्ति जाणाविय गुणिदकम्मंसिओ उक्कस्सजोगेसु चेव, खविदकम्मंसिओ जहण्णजोगेसु चेव हिंडाविदो । तस्स सफलत्तपरूवणदुवारेण बंधमस्सिदूण जहण्ण-अणुक्कस्सदव्वाणं ट्ठाणपरूवणट्ठमागदं । एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे ताव जोगट्ठाणाणं सव्वेसिं पि रचणा कायव्वा । एवं काऊण एदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा— जाणि चेव जोगट्ठाणाणि त्ति भणिदे जत्तियाणि जोगट्ठाणाणि त्ति वुत्तं होदि । ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि त्ति भणिदे तत्तियाणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि त्ति घेत्तव्वं । तं जहा— जहण्णजोगेण अट्ठ बंधतस्स तेणेग णाणा

यह सूत्र सुगम है । इस प्रकार अल्पबहुत्वप्ररूपणा समाप्त हुई ।

जो योगस्थान हैं वे ही प्रदेशबन्धस्थान हैं । विशेष इतना है कि प्रदेशबन्धस्थान प्रकृतिविशेषसे विशेष अधिक हैं ॥ २१२ ॥

शंका— इन अनुयोगद्वारोंसे योगस्थानप्ररूपणाके कर चुकनेपर फिर यह सूत्र किसलिये आया है ?

समाधान— इस शंकाका उत्तर कहते हैं । विस्तारसे कहे गये ये योगस्थान ही प्रदेशबन्धके कारण हैं अन्य नहीं हैं ऐसा बतला कर गुणितकर्मांशिकको उत्कृष्ट योगोंमें ही और क्षपितकर्मांशिकको जघन्य योगोंमें ही जो घुमाया है उसकी सफलताकी प्ररूपणा द्वारा बन्धका आश्रय करके जघन्य अनुत्कृष्ट द्रव्योंके स्थानोंकी प्ररूपणाके लिये उक्त सूत्र प्राप्त हुआ है ।

इस सूत्रका अर्थ कहते समय प्रथमतः सभी योगस्थानोंकी रचना करना चाहिये । ऐसा करके इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— जाणि चेव जोगट्ठाणाणि ऐसा कहनेपर जितने योगस्थान हैं ऐसा उसका अर्थ होता है । ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि ऐसा कहनेपर उतने ही प्रदेशबन्धस्थान हैं यह अर्थ ग्रहण करना चाहिये । यथा— जघन्य योगसे आठ कर्मोंको बांधनेवालेके यह

---

१ अ-आ-काप्रतिषु अणियोगदारेहि इति पाठः ।

वरणीयस्स पदेसबंधट्ठाणं होदि । पुणो पक्खेवुत्तरजोगट्ठाणेण विदिएण बंधमाणस्स बिदिय पदेसबंधट्ठाणं होदि । एदेण कमेण णेयव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेत्ति । एवं णीदे जोगट्ठाण-मेत्ताणि चेव णाणावरणीयस्स पदेसबंधट्ठाणाणि लद्धाणि हवंति । तदो जाणि चेव जोग-ट्ठाणाणि ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि त्ति सिद्धं । एवमाउअवज्जाणं सव्वकम्माणं वत्तव्वं । णवरि आउअस्स उववाद-एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि मोत्तूण सेसपरिणामजोगट्ठाणमेत्ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि वत्तव्वाणि ।

' णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि ' त्ति एदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा— एत्थ ताव संदिट्ठीए जहण्णजोगदव्वमट्ठसट्ठिसदमेत्तं होदि |१६८| । सव्वजोगट्ठाणाणं पमाणं संदिट्ठीए छत्तीसुत्तरतिसदमेत्तं होदि |३३६| । पुव्वमेत्तियमेत्ताणि पदेसबंधट्ठाणाणि णाणावरणीएण लद्धाणि ।

संपहि जहा एदेहिंतो विसेसाहियाणि णाणावरणीयपदेसबंधट्ठाणाणि होंति तहा परूवेमो— जहण्णजोगेण अट्ठ पयडीओ बंधमाणस्स णाणावरणभंगो । संदिट्ठीए एक्कवीस |२१| । सत्त बंधमाणस्स णाणावरणभंगो । चउवीस |२४| । संपहि एत्थ दोण्हं दव्वाणं सरिसत्तं णत्थि । पुणो कधं होदि त्ति भणिदे जहण्णजोगट्ठाणादो सत्तभागब्भहियजोगट्ठाणेण

ज्ञानावरणीयका एक प्रदेशबन्धस्थान होता है । पश्चात् प्रक्षेप अधिक द्वितीय योगस्थानसे बांधनेवालेके द्वितीय प्रदेशबन्धस्थान होता है । इस क्रमसे उत्कृष्ट योगस्थान तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार ले जानेपर योगस्थानोंके बराबर ही ज्ञानावरणीयके प्रदेशबन्ध-स्थान प्राप्त होते हैं । अत एव जितने ही योगस्थान हैं उतने ही प्रदेशबन्धस्थान हैं, यह सिद्ध है । इसी प्रकार आयुको छोड़कर सब कर्मोंके कहना चाहिये । विशेषता यह है कि आयु कर्मके उपपाद और एकान्तानुवृद्धि योगस्थानोंको छोड़कर शेष परिणाम-योगस्थानोंके बराबर ही प्रदेशबन्धस्थानोंको कहना चाहिये ।

' णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि ' इस सूत्रांशका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— यहां संदृष्टिमें जघन्य योगके द्रव्यका प्रमाण एक सौ अड़सठ है (१६८) । सब योगस्थानोंका प्रमाण संदृष्टिमें तीन सौ छत्तीस (३३६) है । पहिले ज्ञानावरणीयके द्वारा इतने मात्र प्रदेशबन्धस्थान प्राप्त किये गये हैं ।

अब जिस प्रकार इनसे विशेष अधिक ज्ञानावरणीयके प्रदेशबन्धस्थान होते हैं उसे बतलाते हैं— जघन्य योगसे आठ प्रकृतियोंको बांधनेवालेकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । संदृष्टिमें इनके लिये इक्कीस (२१) अंक हैं । सात प्रकृतियों-को बांधनेवालेकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । इसके लिये संदृष्टिमें चौबीस (२४) अंक हैं । अब यहां दोनों द्रव्योंके सदृशता नहीं है । फिर कैसे सदृशता होती है, ऐसा पूछनेपर कहते हैं कि जघन्य योगस्थानसे सातवें भाग अधिक योगस्थानके द्वारा

अट्ठ बंधमाणस्स[1] णाणावरणदव्वं जहण्णजोगट्ठाणेण सत्त बंधमाणस्स णाणावरणदव्वं च सरिसं होदि । एवं सरिसं कादूण अट्ठविहबंधगो अट्ठपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण सत्तविहबंधगो जहण्णजोगट्ठाणादो सत्तपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण पुणो बंधावेदव्वो । एवं बंधे दोण्णं णाणावरणदव्वं सरिसं होदि । एत्थ सत्तसु जोगट्ठाणेसु छज्जोगट्ठाणाणि अपुणरुत्ताणि लब्भंति । सत्तमजोगट्ठाणं पुणरुत्तं, अट्ठविहबंधगदव्वेण समाणत्तादो । तेण तमवणेदव्वं । पुणो वि अट्ठविहबंधगो अट्ठपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण बंधमाणो, सत्तपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण बंधमाणो[2] सत्तविहबंधगो च, सरिसा । एत्थ वि छ-अपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति । सत्तमं पुणरुत्तं होदि । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेण बंधमाणअट्ठविहबंधगणाणावरणदव्वेण तत्तो अट्ठमभागहीणजोगट्ठाणेण बंधमाणसत्तविहबंधगणाणावरणदव्वं सरिसं जादे त्ति । एत्थ अपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणेसु आणिज्जमाणेसु अट्ठमभागहीणसव्वजोगट्ठाणद्धाणमिच्छा कायव्वा । किमट्ठं भागे कीरदे ? एत्तियमेत्तजोगट्ठाणेहि[5] सत्तविहबंधगो उक्कस्सजोगट्ठाणं ण पत्तो त्ति ।

आठको बांधनेवालेका ज्ञानावरणद्रव्य और जघन्य योगस्थानसे सात प्रकृतियोंको बांधनेवालेका ज्ञानावरणद्रव्य सदृश होता है। इस प्रकार सदृश करके आठ प्रक्षेप अधिक योगस्थानसे अष्टविध बन्धकको तथा जघन्य योगस्थानकी अपेक्षा सात प्रक्षेप अधिक योगस्थानसे सप्तविध बन्धकको फिरसे बंधाना चाहिये। इस प्रकार बन्ध होनेपर दोनोंका ज्ञानावरणद्रव्य सदृश होता है। यहां सात योगस्थानोंमें छह योगस्थान अपुनरुक्त पाये जाते हैं। सातवां योगस्थान पुनरुक्त है क्योंकि वह अष्टविध बन्धकके द्रव्यसे समान है। अत एव उसका कम करना चाहिये। फिरसे भी आठ प्रक्षेप अधिक योगस्थानसे बांधनेवाला अष्टविध बन्धक और सात प्रक्षेप अधिक योगस्थानसे बांधनेवाला सप्तविध बन्धक ये दोनों सदृश हैं। यहां भी छह अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं। सातवां स्थान पुनरुक्त है। इस प्रकार तब तक ले जाना चाहिये जब तक कि उत्कृष्ट योगस्थानसे बांधनेवाले अष्टविध बन्धकके ज्ञानावरणद्रव्यसे उसकी अपेक्षा आठवें भागसे हीन योगस्थान द्वारा बांधनेवाले सप्तविध बन्धकका ज्ञानावरणद्रव्य समान न हो जावे। यहां अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थानोंके लाते समय आठवें भागसे रहित समस्त योगस्थानाध्वानको इच्छा राशि करना चाहिये।

शंका— आठवें भागसे हीन किसलिये किया जाता है ?

समाधान— चूंकि इतने मात्र योगस्थानोंसे सप्तविध बन्धक उत्कृष्ट योगस्थानको नहीं प्राप्त हुआ है अत एव उतना हीन किया गया है।

---

१ अप्रतौ 'बंधमाणिस्स' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'बंधमाणस्सदव्व' इति पाठः। ३ अ-आ-काप्रतिषु 'कायव्वा' ताप्रतौ 'कायव्वा (कादव्वा)' इति पाठः। ४ अ-आ-काप्रतिषु 'किमट्ठ' इति पाठः। ५ अप्रतौ 'एत्तियमेत्तेहि जोगट्ठाणेहि', ताप्रतौ 'एत्तियमेत्तेहि जोगट्ठाणेहि' इति पाठः।

संपहि सत्तसु जोगट्ठाणेसु जदि छ-अपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति तो अट्ठमभागहीणसव्व-जोगट्ठाणाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सव्वजोगट्ठाणाणं छ-अट्ठ-भागा लब्भंति $\frac{6}{8}$। पुणो सत्तविहबंधगे पक्खेवुत्तरकमेण उवरिमजोगट्ठाणेहि बंधाविदे सव्वजोगट्ठाणाणमट्ठमभागमेत्तपदेसबंधगट्ठाणाणि णाणावरणीयस्स लब्भंति $\frac{1}{8}$। पुणो एदं पुव्विल्लट्ठाणेसु पक्खित्ते सत्त-अट्ठभागा होंति $\frac{7}{8}$। संपहि एत्थ एत्तियाणि चेव णाणावरणपदेसबंधट्ठाणाणि लद्धाणि।

संपहि सत्त-छव्विहबंधगे अस्सिदूण लब्भमाणट्ठाणाणं परूवणं कस्सामो। तं जहा— जहण्णजोगट्ठाणेण बंधमाणछव्विहबंधगणाणावरणीयदव्वेण तत्तो छब्भागुत्तरजोगट्ठाणेण बंधमाणसत्तविहबंधगणाणावरणदव्वं सरिसं होदि। पुणो सत्तपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण बंधमाणसत्तविहबंधगस्स णाणावरणीयदव्वेण छव्विहबंधगस्स छजोगट्ठाणाणि चडिदूण बंधमाणस्स णाणावरणदव्वं सरिसं होदि। एत्थ पंचपदेसबंधट्ठाणाणि अपुणरुत्ताणि लब्भंति। छट्ठं पुणरुत्तं, तेण तमवणेदव्वं। एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेण सत्तबंधमाणणाणावरणीयदव्वेण उक्कस्सट्ठाणादो सत्तमभागहीणजोगट्ठाणेण बंधमाणछव्विहबंधगस्स णाणा-

---

अब सात योगस्थानोंमें यदि छह अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं तो आठवें भागसे रहित सब योगस्थानोंमें कितने अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जावेंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर सब योगस्थानोंके आठ भागोंमेंसे छह भाग ($\frac{6}{8}$) प्राप्त होते हैं। पुन सप्तविध बन्धकको प्रक्षेप अधिक क्रमसे उपरिम योगस्थानोंके द्वारा बंधानेपर सब योगस्थानोंके आठवें भाग मात्र ($\frac{1}{8}$) ज्ञानावरणीयके प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं। फिर इसको पूर्वोक्त स्थानोंमें मिलानेपर सात बटे आठ भाग ($\frac{7}{8}$) होते हैं। अब यहा इतने ही ज्ञानावरणके प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं।

अब सप्तविध और षड्विध बन्धकोंका आश्रय करके पाये जानेवाले स्थानोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— जघन्य योगस्थानसे बांधनेवाले षड्विध बन्धकके ज्ञानावरणद्रव्यसे उसकी अपेक्षा छठे भागसे अधिक योगस्थान द्वारा बांधनेवाले सप्तविध बन्धकका ज्ञानावरणद्रव्य समान होता है। पुन सात प्रक्षेपोंसे अधिक योगस्थान द्वारा बांधनेवाले सप्तविध बन्धकके ज्ञानावरणद्रव्यसे षड्विध बन्धकके छह योगस्थान चढ़कर बांधनेवालेका ज्ञानावरणद्रव्य समान होता है। यहा पाच प्रदेशबन्धस्थान अपुनरुक्त पाये जाते हैं। छठा स्थान पुनरुक्त होता है, अत उसको कम करना चाहिये। इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थानसे बांधनेवाले सप्तविध बन्धकके ज्ञानावरण-द्रव्यसे उत्कृष्ट स्थानकी अपेक्षा सातवें भागसे हीन योगस्थान द्वारा बांधनेवाले षड्विध बन्धकके ज्ञानावरणद्रव्यके समान हो जाने तक ले जाना चाहिये।

चरमदव्वं सरिसं जादं'[1] त्ति । पुणो अट्ठविहबंधगाहिदजोगट्ठाणादो हेट्ठिमट्ठाणेसु उप्पण्णअपुण-
रुत्तट्ठाणाणि भणिस्सामो । तं जहा— छसु जोगट्ठाणेसु जदि पंचअपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणाणि
लब्भंति तो सत्तभागहीणजोगट्ठाणेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए
सव्वजोगट्ठाणाणं पंच सत्तभागा लब्भंति $\frac{5}{7}$ । पुणो अट्ठविहबंधगे पक्खेवुत्तरकमेण उवरिम-
जोगट्ठाणे बंधाविदे सत्तभागमेत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति । पुणो एदाणि पुव्विल्लट्ठाणेसु
[पक्खित्ते] छ-सत्तभागमेत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति $\frac{6}{7}$ । अट्ठविह-सत्तविहबंधगाणं
सण्णिकासो णत्थि, पुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणुप्पत्तीदो । एत्थ पुणरुत्तकारणं जाणिदूण
वत्तव्वं । $1 \quad \frac{7}{8} \quad \frac{6}{7}$ एदेसिं सरिसच्छेदं कादूण मेलाविदे एत्तियं होदि $2\frac{41}{56}$ । पुणो
एदेसिमसंखेज्जदिभागमेत्ताणि आउअबंधस्स चउव्विहबंधस्स
च अप्पाओग्गाणि उववाद-एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि एत्थ पक्खिविदव्वाणि । एवं
पक्खित्ते जोगट्ठाणेहिंतो णाणावरणीयस्स पदेसबंधट्ठाणाणि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि त्ति

अब अष्टविध बन्धकमें स्थित योगस्थानसे नीचेके स्थानोंमें उत्पन्न अपुनरुक्त स्थानोंको कहते हैं। यथा— छह योगस्थानोंमें यदि पांच अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं तो सातवें भागसे हीन योगस्थानोंमें वे कितने पाये जावेंगे इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर सब योगस्थानोंके सात भागोंमेंसे पांच भाग प्राप्त होते हैं— $\frac{5}{7}$। पश्चात् अष्टविध बन्धकको प्रक्षेप अधिक क्रमसे उपरिम योगस्थानके बंधानेपर सातवें भाग मात्र प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं। अब इनको पूर्वके स्थानोंमें मिलानेपर सात भागोंमेंसे छह भाग प्रमाण प्रदेशबन्धस्थान प्राप्त होते हैं $\frac{5}{7} + \frac{1}{7} = \frac{6}{7}$। अष्टविध और सप्तविध बन्धकोंमें समानता नहीं है क्योंकि वहां पुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थानोंकी उत्पत्ति है। यहां पुनरुक्त होनेके कारणको जानकर कहना चाहिये। $1 + \frac{7}{8} + \frac{6}{7}$ इनके समान छेद करके मिलानेपर इतना होता है $\frac{56}{56} + \frac{49}{56} + \frac{48}{56} = \frac{153}{56} = 2\frac{41}{56}$। अब इसमें इसके असंख्यातवें भाग मात्र आयुबन्ध और चतुर्विध बन्धके अयोग्य उपपाद और एकान्तानुवृद्धि योगस्थानोंको मिलाना चाहिये। इस प्रकार मिलानेपर योगस्थानोंकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयके प्रदेशबन्धस्थान प्रकृति विशेषसे विशेष अधिक हैं यह सिद्ध होता है। इसी प्रकार शेष कर्मोंके भी सम्बन्धमें

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'जादो' इति पाठः।

संपहि सत्तसु जोगट्ठाणेसु जदि छ-अपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति तो अट्ठमभागहीणसव्व-जोगट्ठाणाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सव्वजोगट्ठाणाणं छ-अट्ठ-भागा लब्भंति $\frac{6}{8}$। पुणो सत्तविहबंधगे पक्खेवुत्तरकमेण उवरिमजोगट्ठाणेहि बंधाविदे सव्वजोगट्ठाणाणमट्ठमभागमेत्तपदेसबंधगट्ठाणाणि णाणावरणीयस्स लब्भंति $\frac{1}{8}$। पुणो एदं पुव्विल्लट्ठाणेसु पक्खित्ते सत्त-अट्ठभागा होंति $\frac{7}{8}$। संपहि एत्थ एत्तियाणि चेव णाणावरणपदेसबंधट्ठाणाणि लद्धाणि।

संपहि सत्त-छव्विहबंधगे अस्सिदूण लब्भमाणट्ठाणाणं परूवणं कस्सामो। तं जहा— जहण्णजोगट्ठाणेण बंधमाणछव्विहबंधगणाणावरणीयदव्वेण तत्तो छब्भागुत्तरजोगट्ठाणेण बंध-माणसत्तविहबंधगणाणावरणदव्वं सरिसं होदि। पुणो सत्तपक्खेवाहियजोगट्ठाणेण बंधमाण-सत्तविहबंधगस्स णाणावरणीयदव्वेण छव्विहबंधगस्स छजोगट्ठाणाणि चडिदूण बंधमाणस्स णाणावरणदव्वं सरिसं होदि। एत्थ पंचपदेसबंधट्ठाणाणि अपुणरुत्ताणि लब्भंति। छट्ठं पुणरुत्तं, तेण तमवणेदव्वं। एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सजोगट्ठाणेण सत्तबंधमाणणाणा-वरणीयदव्वेण उक्कस्सट्ठाणादो सत्तमभागहीणजोगट्ठाणेण बंधमाणछव्विहबंधगस्स णाणा-

---

अब सात योगस्थानोंमें यदि छह अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं तो आठवें भागसे रहित सब योगस्थानोंमें कितने अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जावेंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर सब योगस्थानोंके आठ भागोंमेंसे छह भाग ($\frac{6}{8}$) प्राप्त होते हैं। पुन सप्तविध बन्धकको प्रक्षेप अधिक क्रमसे उपरिम योगस्थानोंके द्वारा बंधानेपर सब योगस्थानोंके आठवें भाग मात्र ($\frac{1}{8}$) ज्ञानावरणीयके प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं। फिर इसको पूर्वोक्त स्थानोंमें मिलानेपर सात बटे आठ भाग ($\frac{7}{8}$) होते हैं। अब यहां इतने ही ज्ञानावरणके प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं।

अब सप्तविध और षड्विध बन्धकोंका आश्रय करके पाये जानेवाले स्थानोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— जघन्य योगस्थानसे बाधनेवाले षड्विध बन्धकके ज्ञानावरणद्रव्यसे उसकी अपेक्षा छठे भागसे अधिक योगस्थान द्वारा बाधने-वाले सप्तविध बन्धकका ज्ञानावरणद्रव्य समान होता है। पुन. सात प्रक्षेपोंसे अधिक योगस्थान द्वारा बाधनेवाले सप्तविध बन्धकके ज्ञानावरणद्रव्यसे षड्विध बन्धकके छह योगस्थान चढ़कर बाधनेवालेका ज्ञानावरणद्रव्य समान होता है। यहा पाच प्रदेशबन्धस्थान अपुनरुक्त पाये जाते हैं। छठा स्थान पुनरुक्त होता है, अत उसको कम करना चाहिये। इस प्रकार उत्कृष्ट योगस्थानसे बाधनेवाले सप्तविध बन्धकके ज्ञानावरण-द्रव्यसे उत्कृष्ट स्थानकी अपेक्षा सातवें भागसे हीन योगस्थान द्वारा बाधनेवाले षड्विध बन्धकके ज्ञानावरणद्रव्यके समान हो जाने तक ले जाना चाहिये।

वरणदव्वं सरिसं जादं' त्ति । पुणो छव्विहबंधगद्धिदजोगट्ठाणादो हेट्ठिमट्ठाणेसु उप्पण्णअपुण रुत्तट्ठाणाणि भणिस्सामो । तं जहा— छसु जोगट्ठाणेसु जदि पंचअपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति तो सत्तभागहीणजोगट्ठाणेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सव्वजोगट्ठाणाणं पंच सत्तभागा लब्भंति $\frac{५}{७}$ । पुणो छव्विहबंधगे पक्खेवुत्तरकमेण उवरिम जोगट्ठाणे बंधाविदे सत्तभागमेत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति । पुणो एदाणि पुव्विल्लट्ठाणेसु [पक्खित्ते] छ-सत्तभागमेत्तपदेसबंधट्ठाणाणि लब्भंति $\frac{६}{७}$ । अट्ठविह-छव्विहबंधगाणं सण्णिकासो णत्थि, पुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणुप्पत्तीदो । एत्थ पुणरुत्तकारणं जाणिदूण वत्तव्वं । $१ \mid \frac{७}{८} \mid \frac{६}{७}$ एदेसिं सरिसच्छेदं कादूण मेलाविदे एत्तियं होदि $२\frac{४१}{५६}$ । पुणो एदेसिमसंखेज्जदिभागमेत्ताणि आउअबंधस्स चउव्विहबंधस्स च अप्पाओग्गाणि उववाद एयंताणुवड्ढिजोगट्ठाणाणि एत्थ पक्खिविदव्वाणि । एवं पक्खित्ते जोगट्ठाणेहिंतो णाणावरणीयस्स पदेसबंधट्ठाणाणि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि त्ति

अब छहविध बन्धकसे स्थित योगस्थानसे नीचेके स्थानोंमें उत्पन्न अपुनरुक्त स्थानोंको कहते हैं । यथा— छह योगस्थानोंमें यदि पांच अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं तो सातवें भागसे हीन योगस्थानोंमें वे कितने पाये जावेंगे इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर सब योगस्थानोंके सात भागोंमेंसे पांच भाग प्राप्त होते हैं— $\frac{५}{७}$ । पश्चात् छहविध बन्धकके प्रक्षेप अधिक क्रमसे उपरिम योगस्थानके बंधानेपर सातवें भाग मात्र प्रदेशबन्धस्थान पाये जाते हैं । अब इनको पूर्वके स्थानोंमें मिलानेपर सात भागोंमेंसे छह भाग प्रमाण प्रदेशबन्धस्थान प्राप्त होते हैं $\frac{५}{७} + \frac{१}{७} = \frac{६}{७}$ । अष्टविध और छहविध बन्धकोंमें समानता नहीं है क्योंकि यहां पुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थानोंकी उत्पत्ति है । यहां पुनरुक्त होनेके कारणको जानकर कहना चाहिये । $१ + \frac{७}{८} + \frac{६}{७}$ इनके समान छेद करके मिलानेपर इतना होता है $\frac{५६}{५६} + \frac{४९}{५६} + \frac{४८}{५६} = \frac{१५३}{५६} = २\frac{४१}{५६}$ । अब इसमें इनके असंख्यातवें भाग मात्र आयुबन्ध और चतुर्विध बन्धके अयोग्य उपपाद और एकान्तानुवृद्धि योगस्थानोंको मिलाना चाहिये । इस प्रकार मिलानेपर योगस्थानोंकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयके प्रदेशबन्धस्थान प्रकृति विशेषसे विशेष अधिक हैं यह सिद्ध होता है । इसी प्रकार शेष कर्मोंके भी समभ्यमें

१ अ-काप्रत्योः 'जादो ' इति पाठः ।

सिद्धं। एवं सेसकम्माणं पि वत्तव्वं। णवरि आउअस्स पयडिविसेसेण विसेसाहियत्तं णत्थि, अट्ठविहबंधगं मोत्तूण अण्णत्थ तस्स बंधाभावादो।

मोहणीयस्स पुण छव्विहबंधगेण सण्णिकासो णत्थि त्ति सत्तट्ठविहबंधगाणं सण्णिकासे कीरमाणे अपुणरुत्तपदेसबंधट्ठाणाणि जोगट्ठाणेहिंतो विसेसाहियाणि $1\frac{7}{8}$। सुत्ते पुण एसो विसेसो ण परूविदो। सव्वकम्माणं पि पयडिविसेसेण पदेसबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि त्ति वुत्तं कधं घडदे? ण, संखेज्जगुणे वि विसेसाहियत्तं पडि विरोहाभावादो। ण आउएण विअहिचारो, पाधण्णेण[1] फलावलंवणादो। अथवा एसत्थो[2] ण एदस्स सुत्तस्स होदि, सबाहत्तादो। कधं सबाहत्तं? पयडिविसेसो णाम पयडिसहाओ। ण तस्स पयडिसण्णिकासववएसो अत्थि, अण्णत्थ तहाणुवलंभादो। पयडिसण्णिकासे कीरमाणे वि जोगट्ठाणेहिंतो ण सव्वकम्मपदेसबंधट्ठाणाणं सादिरेयत्तमत्थि, मोहणीयं मोत्तूण अण्णत्थ तदणुवलंभादो। तदो एवमेदस्स अत्थो घेत्तव्वो— तम्हा जाणि चेव जोगट्ठाणाणि ताणि चेव

कहना चाहिये। विशेष इतना है कि प्रकृतिविशेषसे आयुके विशेष अधिकता नहीं है, क्योंकि, अष्टविध बन्धकको छोड़कर अन्यत्र उसके बन्धका अभाव है।

परन्तु मोहनीय कर्मके षड्विध बन्धकके साथ चूंकि समानता नहीं है, अतः सप्तविध और अष्टविध बन्धकोंकी समानता करते समय अपुनरुक्त प्रदेशबन्धस्थान योगस्थानोंसे विशेष ($1\frac{7}{8}$) अधिक हैं। परन्तु सूत्रमें यह विशेषता नहीं बतलाई गई है।

शंका— सब कर्मोंके भी प्रदेशबन्धनस्थान प्रकृतिविशेषसे विशेष अधिक हैं, यह कथन कैसे घटित होता है?

समाधान— नहीं, क्योंकि, संख्यातगुणितमें भी विशेष अधिकताके प्रति कोई विरोध नहीं है। आयु कर्मसे व्यभिचार आता हो, सो भी बात नहीं है, क्योंकि, यहां प्रधान रूपसे फलका अवलम्बन किया है। अथवा यह अर्थ इस सूत्रका नहीं है, क्योंकि, वह बाधायुक्त है।

शंका— वह बाधित कैसे है?

समाधान— प्रकृतिविशेषका अर्थ प्रकृतिस्वभाव है। उसकी प्रकृतिसन्निकर्ष संज्ञा नहीं है, क्योंकि, दूसरी जगह वैसा पाया नहीं जाता। प्रकृतिसन्निकर्ष करनेपर भी योगस्थानोंकी अपेक्षा सब कर्मप्रदेशबन्धस्थानोंके साधिकता नहीं बनती, क्योंकि, मोहनीयको छोड़कर अन्य कर्मोंमें वह पायी नहीं जाती।

इस कारण इस सूत्रका अर्थ इस प्रकार ग्रहण करना चाहिये— अत एव 'जाणि चेव जोगट्ठाणाणि ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि' ऐसा कहनेपर योगस्थानोंसे

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'पावण्ण' इति पाठः। २ मप्रतिपाठोऽयम्, प्रतिषु 'एदरवत्थो' इति पाठः।

पदेसबंधट्ठाणाणि त्ति वुत्ते जोगट्ठाणेहिंतो सव्वकम्मपदेसबंधट्ठाणाणमेगत्तं परूविदं, पदेसा बज्झंति एदेणेत्ति जोगट्ठाणस्सेव पदेसबंधट्ठाणत्तब्भुवगमादो। बज्झणं बंधो त्ति किण्ण घेप्पदे ? ण, पदेसबंधट्ठाणाणमाणंतियप्पसंगादो[1]। जदि जोगादो पदेसबंधो होदि तो सव्वकम्माणं पदेसपिंडस्स समाणत्तं पावदि, एयकारणत्तादो। ण च एवं, पुव्विल्लअप्पाबहुएण सह विरोहादो त्ति। एवं पच्चवट्ठिदसिस्सस्स अणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्तावयवो आगदो 'णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि' त्ति। पयडी णाम सहावो, तस्स विसेसो भेदो, तेण पयडिविसेसेण कम्माणं पदेसबंधट्ठाणाणि समाणकारणत्ते वि पदेसेहि विसेसाहियाणि[2]। तं जहा— एगजोगेणागदएगसमयपबद्धम्मि सव्वत्थोवो आउअभागो। णामा-गोदभागा तुल्ला विसेसाहिया। णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयाण भागो तुल्लो विसेसाहियो। मोहणीयभागो विसेसाहिओ। वेयणीयभागो विसेसाहिओ। सव्वत्थ विसेसपमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण हेट्ठिम-हेट्ठिमभागे खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तं होदि। वुत्तं च—

सब कर्मप्रदेशबन्धस्थानोंकी एकता बतलाई गई है क्योंकि प्रदेश जिसके द्वारा बंधते हैं वह प्रदेशबन्ध है इस निरुक्तिके अनुसार योगस्थानकी ही प्रदेशबन्धस्थान संज्ञा प्राप्त है।

शंका— बन्धनं बंधो ऐसा भावसाधन रूप अर्थ क्यों नहीं ग्रहण किया जाता है ?

समाधान— नहीं क्योंकि इस प्रकारसे प्रदेशबन्धस्थानोंके अनन्त होनेका प्रसंग आता है।

यदि योगसे प्रदेशबन्ध होता है तो सब कर्मोंके प्रदेशसमूहके समानता प्राप्त होती है क्योंकि इन सबके प्रदेशबन्धका एक ही कारण है। परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि ऐसा होनेपर पूर्वोक्त अल्पबहुत्वके साथ विरोध आता है। इस प्रत्यवस्था युक्त शिष्यके लिये उक्त सूत्रके 'णवरि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि' इस उत्तर अवयवका अवतार हुआ है। प्रकृतिका अर्थ स्वभाव है उसके विशेषसे अभिप्राय भेदका है। उस प्रकृतिविशेषसे कर्मोंके प्रदेशबन्धस्थान एक कारणके होनेपर भी प्रदेशोंसे विशेष अधिक हैं। यथा— एक योगसे आये हुए एक समयप्रबद्धमें सबसे स्तोक भाग आयु कर्मका है। नाम व गोत्रका भाग तुल्य व आयुके भागसे विशेष अधिक है। ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय व अन्तरायका भाग तुल्य होकर उससे विशेष अधिक है। उससे मोहनीयका भाग विशेष अधिक है। उससे वेदनीयका भाग विशेष अधिक है। सब जगह विशेषका प्रमाण आवलीके असंख्यातवें भागसे नीचे नीचेके भागको खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड मात्र होता है। कहा भी है—

---

१ अ-आप्रत्योः 'भावंतियप्पसंगादो' इति पाठः। २ अ-आप्रत्योः 'पदेसे वि विसेसाहियाणि', काप्रतौ 'पदेसे विसेसाहियाणि', ताप्रतौ 'पदेसेवि (हि)', मप्रतौ 'पदेसेहि वि विसेसाहियाणि' इति पाठः।

परिशिष्ट

आउअभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहियो ।
आवरणमंतराए भागो अहिओ दु मोहे वि ॥ २८ ॥

सव्वुवरि वेयणीए[1] भागो अहिओ दु कारणं किंतु ।
पयडिविसेसो कारण णो अण्णं तदणुवलभादो[2] ॥ २९ ॥

एवं वेयणदव्वविहाणेत्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

आयुका भाग स्तोक है। उससे नाम और गोत्रका भाग विशेष अधिक होता हुआ परस्पर समान है। उससे ज्ञानावरण दर्शनावरण और अन्तरायका भाग अधिक है। उससे अधिक भाग मोहनीयका है। वेदनीयका भाग सबसे अधिक है। किन्तु इसका कारण प्रकृतिविशेष है, अन्य नहीं है, क्योंकि, वह पाया नहीं जाता ॥ २८-२९ ॥

इस प्रकार वेदनाद्रव्यविधान नामक यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

---

१ अ-आ-काप्रतिषु ' मोहणीए ', ताप्रतौ ' मोहणीए (वेयणीए)' इति पाठ । २ आउगभागो थोवो णामा गोदे समो तदो अहियो । घादितिये वि य तत्तो मोहे तत्तो तदो तदिये ॥ सुह दुक्खणिमित्तादो बहुणिज्जरगो त्ति वेयणीयस्स । सव्वेहिंतो बहुग दव्वं होदि त्ति णिद्दिट्ठं ॥ गो क १९२-१९३ कमसो वुड्ढठिईण भागो दलियस्स होई सविसेसो । तइयस्स सव्वजेट्ठो तस्स फुडत्तं जओ णप्पे ॥ प स १, ५७८

वेयणणिक्खेवाणिओगद्दारसुत्ताणि

१

वेयणाणिक्खेवाणिओगद्दारसुत्ताणि

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
७०	पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेहि ठिदिखंडयघादेहि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण कालेण कम्म हदसमुप्पत्तियं कादूण पुणरवि बादरपुढविजीवपज्जत्तएसु उववण्णो	२९२
७१	एवं णाणाभवग्गहणेहि अट्ठ संजमकंडयाणि अणुपालइत्ता चदुक्खुत्तो कसाए उवसामइत्ता पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि संजमासंजमकंडयाणि सम्मत्तकंडयाणि च अणुपालइत्ता एवं संसरिदूण अपच्छिमे भवग्गहणे पुणरवि पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो।	२९४
७२	सव्वलहुं जोणिणिक्खमणजम्मणेण जादो अट्ठवस्सीओ।	२९५
७३	संजमं पडिवण्णो।	,,
७४	तत्थ भवट्ठिदिं पुव्वकोडिं देसूणं संजममणुपालइत्ता थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति य खवणाए अब्भुट्ठिदो।	,,
७५	चरिमसमयछदुमत्थो जादो। तस्स चरिमसमयछदुमत्थस्स णाणावरणीयवेदणा दव्वदो जहण्णा।	२९६
७६	तव्वदिरित्तमजहण्णा।	२९९
७७	एवं दंसणावरणीय मोहणीय-अंतराइयाणं। णवरि विसेसो मोहणीयस्स खवणाए अब्भुट्ठिदो चरिमसमयसकसाई जादो। तस्स चरिमसमयसकसाइस्स मोहणीयवेयणा दव्वदो जहण्णा।	३१३
७८	तव्वदिरित्तमजहण्णा।	३१४
७९	सामित्तेण जहण्णपदे वेदणीयवेयणा दव्वदो जहण्णिया कस्स?	३१६
८०	जो जीवो सुहुमणिगोदजीवेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणियकम्मट्ठिदिमच्छिदो।	३१६
८१	तत्थ य संसरमाणस्स बहुआ अपज्जत्तभवा, थोवा पज्जत्तभवा।	,,
८२	दीहाओ अपज्जत्तद्धाओ, रहस्साओ पज्जत्तद्धाओ।	,,
८३	जदा जदा आउअं बंधदि तदा तदा तप्पाओग्गउक्कस्सएण जोगेण बंधदि।	,,
८४	उवरिल्लीणं ठिदीणं णिसेयस्स जहण्णपदे हेट्ठिल्लीणं ठिदीणं णिसेयस्स उक्कस्सपदे।	,,
८५	बहुसो बहुसो जहण्णाणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि।	३१७
८६	बहुसो बहुसो मंदसंकिलेसपरिणामो भवदि।	,,
८७	एवं संसरिदूण बादरपुढविजीवपज्जत्तएसु उववण्णो।	,,
८८	अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो।	,,
८९	अंतोमुहुत्तेण कालगदसमाणो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो।	,,
९०	सव्वलहुं जोणिणिक्खमणजम्मणेण जादो अट्ठवस्सीओ।	,,
९१	संजमं पडिवण्णो।	,,
९२	तत्थ य भवट्ठिदिं पुव्वकोडिं देसूणं संजममणुपालइत्ता थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति मिच्छत्तं गदो।	,,
९३	सव्वत्थोवाए मिच्छत्तस्स असंजमद्धाए अच्छिदो।	,,
९४	मिच्छत्तेण कालगदसमाणो दसवाससहस्साउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो।	,,

चूलियासुत्ताणि

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	ओगाहणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि।	५०३
२०८	दोसु वि पासेसु छसमइयाणि ओगाहणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि।	५०४
२०९	दोसु वि पासेसु पंचसमइयाणि ओगाहणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि।	,,
२१०	दोसु वि पासेसु चदुसमइयाणि ओगाहणाणि दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि।	
२११	उवरि तिसमइयाणि ओगाहणाणि असंखेज्जगुणाणि।	,,
२१२	बिसमइयाणि ओगाहणाणि असंखेज्जगुणाणि।	५०५
२१३	जाणि चेव ओगाहणाणि ताणि चेव पदेसबंधट्ठाणाणि। णवरि पदेसबंधट्ठाणाणि पयडिविसेसेण विसेसाहियाणि।	५०५

२ अवतरण-गाथा-सूची

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहां
११	अट्ठासीदिं बारस	११२	
१	अत्थो पदेण गम्मइ	१८	
५	अवहारेणोवहिद	८४	
१८	आउअभागो थोवा	१८७	
२८	,,	५१२	
११	इच्छहिदायामेण य	९२	
२१	उत्तरगुणिदं इच्छं	४७१	
१५	एकोत्तरपदवृद्धो	९३	ष खं पु ५ पृ १९१ क. पा. १, पृ १००
७	ओठम्मि फालिसंखे	९०	
१७	खवए य खीणमोहे	३८२	जयध अ प ११७ गो जी. ६७.
३	चोद्दस बादरजुम्मं	२१	
२१	जत्थिच्छसि सेसाणं	४५८	
८	तिण्णं दसेण गुणिदा	९१	
४	तेरस पण णव पण णव	११	
२१	दो दोरूवक्खेवं	४६	
१४	पणमट्ठुत्तरगुणिद	१५	
२	पदमिच्छसलागगुणा	४१७	
२	पदमीमांसा संखा	१९	
२७	पक्खेवकसायपद	४८५	ष खं पु १ पृ ११८
१	फासणमाणमहिया	९०	
९	फासीसंखं तिगुणिय	९१	
२२	बिदियादिवग्गणा पुण	४५९	
१०	बहुणिच्छागुणिदं	९१	
२५	विरलिदइच्छं बिगुणिय	४७५	
२४	विसमगुणादेगूणं	४६२	
१६	सम्मत्तुप्पत्ती वि य	२८२	
१९	सव्वुवरि वेयणीए	१८७	
२९	सव्वुवरि ,,	५१२	
१२	सोलसयं चउवण्णं	११२	

३ न्यायोक्तियां

४ ग्रन्थोल्लेख

१ उच्चारणा

२ कसायपाहुड

३ कालविहाण

१४ अनिर्दिष्टनाम

१५ आचार्यपरम्परागत उपदेश

१६ गुरूपदेश

१७ उपदेशाभाव

५ पारिभाषिक शब्द-सूची

१४ अनिर्दिष्टनाम

१ 'एए छच्च समाणा' इच्चेएण कयएकारत्तादो। — २
२ तं पि कुदो? 'जोगा पयडि पदेसा' त्ति सुत्तादो। — ३७
३ वत्तिकम्मट्ठिदिअणुसारिणी सत्तिकम्मट्ठिदि त्ति वयणादो। — ४२
४ ण, वत्तिट्ठिदिअणुसारिसत्तिट्ठिदीए, अधियाए अभावादो । — १०९
५ एदम्हादो अविरुद्धाइरियवयणादो णव्वदे जहा [जीव] जवमज्झहेट्ठिमअद्धाणादो उवरिमअद्धाण विसेसाहियमिदि। — ७५
६ ण च एदाहि वड्ढि हाणीहि विणा अंतोमुहुत्तद्धमच्छदि, त्ति वयणादो। — ९९
७ णाणागुणहाणिसलागाओ त्ति कध णव्वदे? अविरुद्धाइरियवयणादो। — ११८
८ 'पदगतमवेक्ष्या' एदेण सुत्तेण आणिदाए । — २५३

१५ आचार्यपरम्परागत उपदेश

१ ण, गुणिदकम्मसिए उक्कस्सेण एगो चेव समयपबद्धो वड्ढदि हायदि त्ति आइरियपरंपरागयउवएसादो। — २१५
२ आइरियपरंपरागदुपदेसादो वा णव्वदे जहा सचयादो एत्थ णिज्जरिददव्व मसंखेज्जगुणमिदि। — २८३
३ कधमेदं णव्वदे? आइरियपरम्परागदुवदेसादो। — ४४४

१६ गुरूपदेश

१ तं पि कुदो णव्वदे? त्ति गुरूवदेसादो। — ६४
२ कुदो णव्वदे? परमगुरूवदेसादो। — ७४
३ ण च एवं, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीओ जीवगुणहाणीओ होंति त्ति परमगुरूवदेसादो। — १०६
४ खविदकम्मसियम्मि उक्कस्सेण एगो चेव समयपबद्धो वड्ढदि त्ति गुरूवएसादो। — ३०४
५ जहण्णदव्वस्सुवरि उक्कस्सेण एगो चेव समयपबद्धो वड्ढदि त्ति गुरूवदेसादो। — ३०६
६ खविदकम्मंसियस्स दिवड्ढगुणहाणिमेत्ता एइंदियसमयपबद्धा अत्थि त्ति गुरूवदेसादो। — ३८६
७ पढमफद्दओ चेव वड्ढदि त्ति कधं णव्वदे? त्ति गुरूवएसादो। — ४५५
८ त्ति गुरूवएसादो णव्वदे। — ४८२

१७ उपदेशाभाव

१ तत्थ अणतरोवणिधा ण सक्कदे णादुं, त्ति उवदेसाभावादो। — २२१
२ " णेदुं " — २२३